हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

८६

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०७२, शक संवत् १९३७
सन् २०१५-२०१६, जय हिन्द संवत् ६८-६९

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा
शनि

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
टाईटल पर रुचिका पब्लिकेशन्स का होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य
९५.००

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण चण्डीगढ़ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52′, अक्षांश उ. 30° 44′ के आधार पर किया गया है। अतः विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमशः पूर्वापरक्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि–साधनार्थ इष्टकालादि–ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग 3½ मि. क्रमशः घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अतः यह जान लेना चाहिए कि– यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे**– सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेज़ी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30′ पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी–पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा–मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी–पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि–नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी–पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ़ के सूर्योदय से व्यतीत घटी–पलात्मक काल बतलाते हैं। किञ्च– घण्टा–मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– घण्टा–मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं–00मि के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा–मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी) परवर्ती वार का काल समझना चाहिए। **जैसे**– मान लीजिए– पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो रही है। इसका अभिप्राय है– यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी–पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रातः 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= वक्री), इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी–पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि–नक्षत्र–योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, प्राचीन– पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं– **यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि–नक्षत्र व योग के आगे घटी–पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा–मिनटात्मक में ––(डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी–पलात्मक तथा घण्टा–मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर भूकेन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ.	–अस्त।
अं	–अंश।
उ.	–उदित, उत्तर।
क.	–कला।
कृ.	–कृष्णपक्ष, कृत्तिका(नक्षत्र)।
क्रां.सा.	–क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.	–गोधूलि (लग्न)।
ति.	–तिथि।
द.	–दक्षिण।
दा.	–दानपूजन।
दि.	–दिन।
दि.ल.	–दिन का लग्न।
प्रा.	–प्रारम्भ।
भ.	–भद्रा।
मा.	–मार्गी।
मि.	–मिनट।
रा.	–रात्रि।
ल.	–लग्न।
व.	–वक्री।
वा.	–वार।
वि.	–विकला।
वै.	–वैष्णवों के लिए।
स.	–व्रत सबके लिए।
शु.	– शुक्लपक्ष, शुक्रवार, – शुक्र (ग्रह)।
सं.	–संक्रान्ति, संवत्।
सां.का.	–साम्पातिक काल।
स्मा.	–स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरण प्रवेश, उदयास्त, लोप–दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित "**प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला(हरियाणा), Pin-134 109** के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की जाती है।

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

गुरु संवत्सर विशेषांक

विक्रम संवत् २०७२, शक संवत् १९३७
सन् २०१५-२०१६, जय हिन्द संवत् ६८-६९

पंचांग-प्रवर्तकः
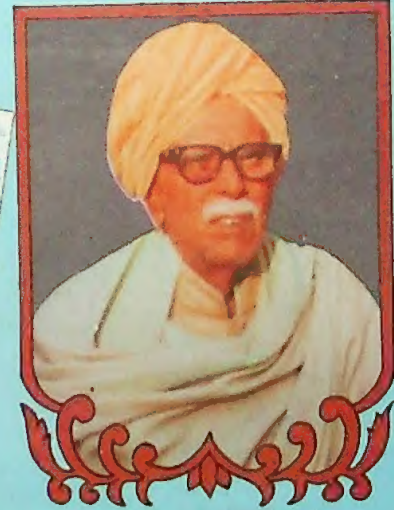
दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा
शनि

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
459, खारी बावली, दिल्ली -6 फोन : 23977110

मूल्य
९५.००

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

संक्षिप्त विषयसूची (सं. २०७२ वि.)

इसवर्ष की नई विशेष सामग्री

गुरु–संवत्सर विशेषांक*

*इस विशेषांक की विषयसूची के लिए पृष्ठ 283 भी देखें।

'अभिजित् प्रकाशन',

Kothi No. 59, Sector 6, Panchkula (HARYANA)

की अब तक प्रकाशित पुस्तकों के विज्ञापनपृष्ठ बारे निर्देश पृष्ठ 283 पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप – जगद्गुरु – श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे- महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म– श्रीशक्तिधरशर्म– श्रीमदिन्दुशेखर– शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध–स्फुट– गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र– दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रत–पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष– गणितादि–विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं " दृक्सिद्धान्तभास्करः ' इति विरुदेन पूर्वमेव समाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड– पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक–लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः

'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2073 वि.) में विशेष– अगले वर्ष (सं. 2073 वि.) के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में भी अनेक ज्ञानवर्धक विषय एवं महत्त्वपूर्ण विषयसामग्री देने का हमारा पूरा प्रयास रहेगा। – संपादक

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक " व्रत–पर्व विवेक" पर आधारित)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
जनवरी (सन् 2015 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2015 ई. प्रारम्भ	1 जन.	गु.
पौषी पूर्णिमा	5 जन.	चं.
माघस्नान प्रारम्भ	5 जन.	चं.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	8 जन.	गु.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर)	13 जन.	मं.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	बु.
मौनी अमावस	20 जन.	मं.
गौरी तृतीया (गौंतरी)	22 जन.	गु.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	23 जन.	शु.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	24 जन.	श.
लक्ष्मी एवं सरस्वती पूजन	24 जन.	श.
रथसप्तमी /आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	26 जन.	चं.
भीष्माष्टमी	27 जन.	मं.
भीष्म द्वादशी	31 जन.	श.
फरवरी (सन् 2015 ई.)		
माघी पूर्णिमा	3 फर.	मं.
माघस्नान समाप्त	3 फर.	मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	17 फर.	मं.
होलाष्टक प्रारम्भ	26 फर.	गु.
मार्च (सन् 2015 ई.)		
गोविन्द द्वादशी	2 मार्च	चं.
होलिकादहन	5 मार्च	गु.
होलाष्टक समाप्त	5 मार्च	गु.
वसन्तोत्सव	6 मार्च	शु.
वारुणीपर्व	18 मार्च	बु.
महाविषुव दिन	20 मार्च	शु.
चान्द्र संवत् 2071 वि. पूर्ण	20 मार्च	शु.
चान्द्र संवत् 2072 वि. प्रा.	21 मार्च	श.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	21 मार्च	श.
वर्षफलश्रवण	21 मार्च	श.
तैलाभ्यंग / ध्वजारोहण	21 मार्च	श.
गौरी तृतीया (गणगौर)	22 मार्च	र.
आन्दोलन तृतीया	22 मार्च	र.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	24 मार्च	मं.
नागपंचमी	24 मार्च	मं.
हयव्रत	24 मार्च	मं.
स्कन्द षष्ठी	25 मार्च	बु.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	27 मार्च	शु.
श्रीरामनवमी	28 मार्च	श.
वासन्त नवरात्र समाप्त	28 मार्च	श.
नवरात्र–व्रतपारणा	29 मार्च	र.
दोलोत्सव	31 मार्च	मं.
विष्णुदमनोत्सव	31 मार्च	मं.
अप्रैल (सन् 2015 ई.)		
अनंग त्रयोदशी	1 अप्रै.	बु.
श्रीमहावीर जयन्ती	2 अप्रै.	गु.
शिवदमनोत्सव	3 अप्रै.	शु.
चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य)	4 अप्रै.	श.
वैशाखस्नान प्रारम्भ	4 अप्रै.	श.
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	मं.
श्रीपरशुराम जयन्ती	20 अप्रै.	चं.
अक्षय तृतीया	21 अप्रै.	मं.
श्रीगंगा–जन्म	25 अप्रै.	श.
श्रीजानकी–जयन्ती	27 अप्रै.	चं.
मई (सन् 2015 ई.)		
श्रीनृसिंह–जयन्ती	2 मई	श.
श्रीकूर्म–जयन्ती	3 मई	र.
वैशाखी पूर्णिमा	4 मई	चं.
श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा	4 मई	चं.
वैशाखस्नान समाप्त	4 मई	चं.
भद्रकाली एकादशी (पं.)	14 मई	गु.
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष)	17 मई	र.
भावुका अमावस	18 मई	चं.
रम्भा तृतीया	20 मई	बु.
अरण्य षष्ठी	23 मई	श.
विन्ध्यवासिनी–पूजा	24 मई	र.
श्रीगंगा दशहरा	28 मई	गु.
निर्जला एकादशी व्रत	29 मई	शु.
जून (सन् 2015 ई.)		
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	2 जून	मं.
जुलाई (सन् 2015 ई.)		
रथयात्रा (पुरी)	17 जुला.	शु.
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	17 जुला.	शु.
कुमार षष्ठी	21 जुला.	मं.
विवस्वत् सप्तमी	23 जुला.	गु.
गुप्त नवरात्र समाप्त	25 जुला.	श.
श्री विष्णु शयनोत्सव	27 जुला.	चं.
कोकिला व्रत	30 जुला.	गु.
शिवशयनोत्सव	30 जुला.	गु.
गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा)	31 जुला.	शु.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रा.	31 जुला.	शु.
अगस्त (सन् 2015 ई.)		
श्रावण शिवरात्रि	12 अग.	बु.
हरियाली अमावस	14 अग.	शु.
मधुस्रवा तृतीया, संधारा तीज	17 अग.	चं.
नागपंचमी	19 अग.	बु.
श्रीदुर्गाष्टमी	23 अग.	र.
ऋक् उपाकर्म	28 अग.	शु.
रक्षाबन्धन (राखी)	29 अग.	श.
शुक्ल–कृष्ण–यजु उपाकर्म	29 अग.	श.
श्रावणी पूर्णिमा	29 अग.	श.
सितंबर (सन् 2015 ई.)		
कज्जली तृतीया	1 सितं.	मं.
बहुला चतुर्थी	1 सितं.	मं.
श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी	1 सितं.	मं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स.)	5 सितं.	श.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	6 सितं.	र.
श्रीगुग्गा नवमी	6 सितं.	र.
कुशोत्पाटिनी अमावस	13 सितं.	र.
पिठोरी अमावस	13 सितं.	र.
कुम्भमहापर्व (सिंहस्थ पर्व) नासिक (महाराष्ट्र)	13 सितं.	र.
साम उपाकर्म	15 सितं.	मं.
गौरी तृतीया	16 सितं.	बु.
हरितालिका तृतीया	16 सितं.	बु.
कलंक चतुर्थी	17 सितं.	गु.
सिद्धिविनायक व्रत	17 सितं.	गु.
ऋषि पंचमी	18 सितं.	शु.
सूर्यषष्ठी व्रत	19 सितं.	श.
श्रीराधाष्टमी	21 सितं.	चं.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	21 सितं.	चं.
बाबा श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)	22 सितं.	मं.
श्रीवामन जयन्ती	25 सितं.	शु.
अनन्त चतुर्दशी	27 सितं.	र.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	27 सितं.	र.
पूर्णिमा श्राद्ध	27 सितं.	र.
चन्द्रग्रहण	28 सितं.	चं.
महालय (पितृपक्ष) प्रारम्भ	28 सितं.	चं.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

(1 जनवरी, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक)

अक्तूबर (सन् 2015 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
चन्द्रषष्ठी व्रत	2 अक्तू.	शु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	4 अक्तू.	र.
महालय श्राद्ध समाप्त	12 अक्तू.	चं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	13 अक्तू.	मं.
उपाङ्गललिता व्रत	17 अक्तू.	श.
सरस्वती आवाहन	18 अक्तू.	र.
सरस्वती पूजन	19 अक्तू.	चं.
सरस्वती के लिए बलिदान	20 अक्तू.	मं.
सरस्वती विसर्जन	21 अक्तू.	बु.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	21 अक्तू.	बु.
महानवमी (पूजा एवं उपवास के लिए)	21 अक्तू.	बु.
महानवमी (बलिदान के लिए)	22 अक्तू.	गु.
नवरात्र समाप्त	22 अक्तू.	गु.
विजयादशमी (दशहरा)	22 अक्तू.	गु.
भरतमिलाप	23 अक्तू.	शु.
कोजागर व्रत	26 अक्तू.	चं.
शरत् पूर्णिमा	26 अक्तू.	चं.
महर्षि वाल्मीकि–जयन्ती	27 अक्तू.	मं.
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	27 अक्तू.	मं.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	30 अक्तू.	शु.

नवम्बर (सन् 2015 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
अहोई अष्टमी (पंजाब)	3 नवं.	मं.
गोवत्स द्वादशी	7 नवं.	श.
धन त्रयोदशी	9 नवं.	चं.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ. भा.)	9 नवं.	चं.
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)	10 नवं.	मं.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मीपूजा	11 नवं.	बु.
गोवर्धनपूजा, बलिपूजा,	12 नवं.	गु.
अन्नकूट, गोक्रीड़ा	12 नवं.	गु.
यमद्वितीया, भाई दूज	13 नवं.	शु.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	13 नवं.	शु.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	17 नवं.	मं.
गोपाष्टमी	19 नवं.	गु.
अक्षय नवमी	20 नवं.	शु.
कूष्माण्ड नवमी	20 नवं.	शु.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	21 नवं.	श.
हरिप्रबोधोत्सव	23 नवं.	चं.
तुलसी विवाह	23 नवं.	चं.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि-समाप्त	23 नवं.	चं.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	24 नवं.	मं.
भीष्म पंचक समाप्त	25 नवं.	बु.
कार्तिक पूर्णिमा	25 नवं.	बु.
श्री गुरुनानक जयन्ती	25 नवं.	बु.
कार्तिकस्नान समाप्त	25 नवं.	बु.
त्रिपुरोत्सव	25 नवं.	बु.

दिसंबर (सन् 2015 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	3 दिसं.	गु.
स्कन्द–गुह षष्ठी	16 दिसं.	बु.
चम्पा षष्ठी	17 दिसं.	गु.
मित्र सप्तमी	17 दिसं.	गु.
श्रीगीता जयन्ती	21 दिसं.	चं.
श्रीदत्त जयन्ती	24 दिसं.	गु.

जनवरी (सन् 2016 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
इंग्लिश नववर्ष 2016 ई. प्रारम्भ	1 जन.	शु.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर)	13 जन.	बु.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	गु.
पौषी पूर्णिमा	23 जन.	श.
माघस्नान प्रारम्भ	23 जन.	श.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	27 जन.	बु.

फरवरी (सन् 2016 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
मौनी अमावस	8 फर.	चं.
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	9 फर.	मं.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	11 फर.	गु.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	11 फर.	गु.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	12 फर.	शु.
लक्ष्मी एवं सरस्वती पूजन	12 फर.	शु.
रथसप्तमी /आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	14 फर.	र.
भीष्माष्टमी	15 फर.	चं.
गुप्त नवरात्र समाप्त	16 फर.	मं.
भीष्म द्वादशी	19 फर.	शु.
माघी पूर्णिमा	22 फर.	चं.
माघस्नान समाप्त	22 फर.	चं.

मार्च (सन् 2016 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	7 मार्च	चं.
खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य)	9 मार्च	बु.
होलाष्टक प्रारम्भ	16 मार्च	बु.
महाविषुव दिन	20 मार्च	र.
गोविन्द द्वादशी	20 मार्च	र.
होलिकादहन	23 मार्च	बु.
होलाष्टक समाप्त	23 मार्च	बु.
वसन्तोत्सव	24 मार्च	गु.

अप्रैल (सन् 2016 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
वारुणीपर्व	5 अप्रैल	मं.
चान्द्र संवत् 2072 वि. पूर्ण	7 अप्रैल	गु.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

आगामी वर्ष (वि. सं. 2073) के लिए

नाम मेला/पर्व	तारीख
सन् 2016 ई.	
नवरात्र प्रारम्भ	8 अप्रै.
श्रीदुर्गाष्टमी	14 अप्रै.
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	13 अप्रै.
श्री रामनवमी	15 अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	19 अप्रै.
श्री परशुराम जयन्ती	8 मई
श्री बुद्ध जयन्ती	21 मई
कुम्भ महापर्व उज्जैन	21 मई
श्री गंगा दशहरा	14 जून
गुरु पूर्णिमा	19 जुला.
रक्षाबन्धन	18 अग.
संकष्ट चतुर्थी	21 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	24 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	25 अग.
श्राद्ध प्रारम्भ	16 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	1 अक्तू.
श्री दुर्गाष्टमी	9 अक्तू.
दशहरा (विजयादशमी)	11 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	15 अक्तू.
श्री वाल्मीकि जयन्ती	16 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	19 अक्तू.
दीपावली	30 अक्तू.
भाई दूज	1 नवं.
श्री गुरु नानक जयन्ती	14 नवं.
श्री भैरवाष्टमी	21 नवं.
(सन् 2017 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	1 फर.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	10 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	24 फर.

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक) –(प्रो. प्रियव्रत शर्मा)

एकादशी व्रत

(सन् 2015 ई.)	
पौष शुक्ल	1 जन.
माघ कृष्ण	16 जन.
माघ शुक्ल	30 जन.
फाल्गुन कृष्ण	15 फर.
फाल्गुन शुक्ल	1 मार्च
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	16 मार्च
चैत्र शुक्ल	31 मार्च
वैशाख कृष्ण	15 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	29 अप्रै.
ज्येष्ठ कृष्ण	14 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	29 मई
प्र. आषाढ़ कृष्ण (स्मा.)	12 जून
प्र. (अधिक) आषाढ़ शुक्ल	28 जून
द्वि.(अधिक) आषाढ़ कृष्ण	12 जुला.
द्वि.(शुद्ध) आषाढ़ शुक्ल	27 जुला.
श्रावण कृष्ण	10 अग.
श्रावण शुक्ल	26 अग.
भाद्रपद कृष्ण	8 सितं.
भाद्रपद शुक्ल	24 सितं.
आश्विन कृष्ण	8 अक्तू.
आश्विन शुक्ल (स्मा.)	23 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	7 नवं.
कार्तिक शुक्ल	22 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	7 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	21 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
पौष कृष्ण (स्मा.)	5 जन.
पौष शुक्ल	20 जन.
माघ कृष्ण	4 फर.
माघ शुक्ल	18 फर.
फाल्गुन कृष्ण	5 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	19 मार्च
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	3 अप्रै.

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2015 ई.)	
माघ कृष्ण	6 जन.
माघ शुक्ल	21 जन.
फाल्गुन कृष्ण	4 फर.
फाल्गुन शुक्ल	19 फर.
चैत्र कृष्ण	6 मार्च
चैत्र शुक्ल	21 मार्च
वैशाख कृष्ण	5 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	19 अप्रै.
ज्येष्ठ कृष्ण	5 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	19 मई
प्र. आषाढ़ कृष्ण	3 जून
प्र. (अधिक) आषाढ़ शुक्ल	17 जून
द्वि.(अधिक) आषाढ़ कृष्ण	3 जुला.
द्वि.(शुद्ध) आषाढ़ शुक्ल	17 जुला.
श्रावण कृष्ण	1 अग.
श्रावण शुक्ल	15 अग.
भाद्रपद कृष्ण	30 अग.
भाद्रपद शुक्ल	14 सितं.
आश्विन कृष्ण	29 सितं.
आश्विन शुक्ल	13 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	28 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	12 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	26 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	12 दिसं.
पौष कृष्ण	26 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
पौष शुक्ल	10 जन.
माघ कृष्ण	24 जन.
माघ शुक्ल	09 फर.
फाल्गुन कृष्ण	23 फर.
फाल्गुन शुक्ल	10 मार्च
चैत्र कृष्ण	24 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2015 ई.)	
पौष	4 जन.
माघ	3 फर.
फाल्गुन	5 मार्च
चैत्र	3 अप्रै.
वैशाख	3 मई
ज्येष्ठ	2 जून
प्र. (अधिक) आषाढ़	1 जुला.
द्वि. (शुद्ध) आषाढ़	30 जुला.
श्रावण	29 अग.
भाद्रपद	27 सितं.
आश्विन	27 अक्तू.
कार्तिक	25 नवं.
मार्गशीर्ष	24 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
पौष	23 जन.
माघ	22 फर.
फाल्गुन	22 मार्च

दशावतार जयन्तियां (सन् 2015 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	22 मार्च
श्रीरामनवमी	28 मार्च
श्रीपरशुराम जयन्ती	20 अप्रै.
श्रीनृसिंह जयन्ती	2 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	3 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	4 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	20 अग.
⊗ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	5 सितं.
श्रीवराह जयन्ती	16 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	25 सितं.

⊗ अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द – विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं ।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2015 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	8 जन.
फाल्गुन	7 फर.
चैत्र	9 मार्च
वैशाख	8 अप्रै.
ज्येष्ठ	7 मई
प्र. आषाढ़	5 जून
द्वि. आषाढ़	5 जुला.
श्रावण	3 अग.
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	1 सितं.
आश्विन	1 अक्तू.
कार्तिक	30 अक्तू.
मार्गशीर्ष	29 नवं.
पौष	28 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	27 जन.
फाल्गुन	26 फर.
चैत्र	27 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(2015 ई.)	
माघ	23 जन.
फाल्गुन	22 फर.
चैत्र	23 मार्च
वैशाख	22 अप्रै.
ज्येष्ठ	21 मई
प्र. (अधिक) आषाढ़	20 जून
द्वि. (शुद्ध) आषाढ़	19 जुला.
श्रावण	18 अग.
भाद्रपद	17 सितं.
आश्विन	17 अक्तू.
कार्तिक	15 नवं.
मार्गशीर्ष	15 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
पौष	13 जन.
माघ	11 फर.
फाल्गुन	12 मार्च

प्रदोष व्रत

(सन् 2015 ई.)	
पौष शुक्ल	2 जन.
माघ कृष्ण	18 जन.
माघ शुक्ल	1 फर.
फाल्गुन कृष्ण (सोम)	16 फर.
फाल्गुन शुक्ल (भौम.)	3 मार्च
चैत्र कृष्ण	18 मार्च
चैत्र शुक्ल	1 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	16 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	1 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	15 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	31 मई
प्र. आषाढ़ कृष्ण	14 जून
प्र. (अ.) आषाढ़ शुक्ल (सोम)	29 जून
द्वि.(अ.) आषाढ़ कृष्ण (सोम)	13 जुला.
द्वि.(शुद्ध) आषाढ़ शुक्ल	29 जुला.
श्रावण कृष्ण (भौम)	11 अग.
श्रावण शुक्ल	27 अग.
भाद्रपद कृष्ण	10 सितं.
भाद्रपद शुक्ल	25 सितं.
आश्विन कृष्ण (शनि)	10 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	25 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण (सोम)	9 नवं.
कार्तिक शुक्ल (सोम)	23 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (भौम)	8 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	23 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
पौष कृष्ण	7 जन.
पौष शुक्ल	21 जन.
माघ कृष्ण (शनि)	6 फर.
माघ शुक्ल (शनि)	20 फर.
फाल्गुन कृष्ण	6 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	20 मार्च
चैत्र कृष्ण (भौम)	5 अप्रै.

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2015 ई.)

मास	तिथि
माघ	18 जन.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	17 फर.
चैत्र	18 मार्च
वैशाख	17 अप्रै.
ज्येष्ठ	16 मई
प्र. आषाढ़	14 जून
द्वि.(अधिक)आषाढ़	14 जुला.
श्रावण	12 अग.
भाद्रपद	11 सितं.
आश्विन	11 अक्तू.
कार्तिक	9 नवं.
मार्गशीर्ष	9 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
पौष	8 जन.
माघ	6 फर.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	7 मार्च
चैत्र	5 अप्रै.

पूर्णिमा व्रत (सन् 2015 ई.) (स्नान–दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

मास	तिथि
पौष	5 जन.
माघ	3 फर.
फाल्गुन	5 मार्च
चैत्र	4 अप्रै.
वैशाख	4 मई
ज्येष्ठ	2 जून
प्र. (अधिक) आषाढ़	2 जुला.
द्वि. (शुद्ध) आषाढ़	31 जुला.
श्रावण	29 अग.
भाद्रपद	28 सितं.
आश्विन	27 अक्तू.
कार्तिक	25 नवं.
मार्गशीर्ष	25 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
पौष	23 जन.
माघ	22 फर.
फाल्गुन	23 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2015 ई.)

मास	तिथि
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	14 अप्रै.
ज्येष्ठ	15 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	17 अग.
आश्विन	17 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	16 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान–दानार्थ) (2015 ई.)

मास	तिथि
माघ (भौमवती)	20 जन.
फाल्गुन	18 फर.
चैत्र	20 मार्च
वैशाख (शनैश्चरी)	18 अप्रै.
ज्येष्ठ (सोमवती)	18 मई
प्र. आषाढ़ (भौमवती)	16 जून
द्वि.(अधिक)आषाढ़	16 जुला.
श्रावण	14 अग.
भाद्रपद	13 सितं.
आश्विन (सोमवती)	12 अक्तू.
कार्तिक	11 नवं.
मार्गशीर्ष	11 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
पौष (शनैश्चरी)	9 जन.
माघ (सोमवती)	8 फर.
फाल्गुन	9 मार्च
चैत्र	7 अप्रै.

मासिक श्रीदुर्गाष्टमी व्रत (2015 ई.)

मास	तिथि
माघ	27 जन.
फाल्गुन	26 फर.
चैत्र	27 मार्च
वैशाख	26 अप्रै.
ज्येष्ठ	26 मई
प्र. आषाढ़	24 जून
द्वि. (शुद्ध) आषाढ़	24 जुला.
श्रावण	23 अग.
भाद्रपद	21 सितं.
आश्विन	21 अक्तू.
कार्तिक	19 नवं.
मार्गशीर्ष	18 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
पौष	17 जन.
माघ	15 फर.
फाल्गुन	16 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत (2015 ई.)

मास	तिथि
माघ	13 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	13 मार्च
वैशाख	12 अप्रै.
ज्येष्ठ	11 मई
प्र. आषाढ़	9 जून
द्वि. (अधिक) आषाढ़	8 जुला.
श्रावण	6 अग.
भाद्रपद	5 सितं.
आश्विन	4 अक्तू.
कार्तिक	3 नवं.
मार्गशीर्ष (श्रीभैरवाष्टमी)	3 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
पौष	2 जन.
माघ	1 फर.
फाल्गुन	1 मार्च
चैत्र	31 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी

श्रीसंगमेश्वर महादेव अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी)

(2015 ई.)	
माघ	18 जन.
फाल्गुन	17 फर.
चैत्र	18 मार्च
वैशाख	17 अप्रै.
ज्येष्ठ	16 मई
प्र. आषाढ़	14 जून
द्वि. (अधिक) आषाढ़	14 जुला.
श्रावण	12 अग.
भाद्रपद	10 सितं.
आश्विन	10 अक्तू.
कार्तिक	9 नवं.
मार्गशीर्ष	9 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
पौष	8 जन.
माघ	6 फर.
फाल्गुन	7 मार्च
चैत्र	5 अप्रै.

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध (सन् 2015 ई.)

तिथि	दिनांक
प्रोष्ठपदी / ⊙पूर्णिमा	27 सितं.
प्रतिपदा	28 सितं.
द्वितीया	29 सितं.
तृतीया / भरणी	30 सितं.
चतुर्थी	1 अक्तू.
पंचमी	2 अक्तू.
षष्ठी	3 अक्तू.
सप्तमी	4 अक्तू.
अष्टमी	5 अक्तू.
*नवमी	6 अक्तू.
दशमी	7 अक्तू.
एकादशी	8 अक्तू.
✳ द्वादशी / संन्यासियों का श्राद्ध, मघा श्राद्ध,	9 अक्तू.
त्रयोदशी	10 अक्तू.
✖ चतुर्दशी	11 अक्तू.
सर्वपितृ, अमावस, पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध	12 अक्तू.
नाना / नानी का श्राद्ध	13 अक्तू.

*सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी हो।

✳ संन्यासी का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी क्यों न हो।

✖ शस्त्र–विष आदि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

⊙ "जिनकी मृत्युतिथि पूर्णिमा हो, उनका महालय श्राद्ध प्रोष्ठपदी पूर्णिमा को करना चाहिए"–यह शास्त्रीय मत है। लेकिन पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का महालय सर्वपितृ अमा को करने की लोक–परम्परा है।

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2015 ई.)

त्योहार	तिथि
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.
पाम सण्डे	29 मार्च
गुड फ्राई डे	3 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	5 अप्रै.
क्रिस्मस डे	25 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.

चैत्र	31 मार्च	चैत्र	5 अप्रै.		मृत्युतिथि वालों का महालय सर्वपितृ अमा को करने की लोक–परम्परा है।

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक)

जैन व्रतपर्व

(सन् 2015 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	18 जन.
मर्यादा महोत्सव	26 जन.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	28 मार्च
श्री महावीर जयन्ती	2 अप्रै.
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	28 अप्रै.
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	22 जुला.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	31 जुला.
चातुर्मास्य व्रत–नियम आदि प्रारम्भ	31 जुला.
श्रीजयाचार्य निर्वाण–दिवस	9 सितं.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	10 सितं.
संवत्सरी महापर्व	17 सितं.
श्रीकालू निर्वाण–दिवस	19 सितं.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	22 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण–दिवस	26 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण–दिवस	11 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	14 नवं.
ज्ञानपंचमी	16 नवं.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि–समाप्त	25 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षादिवस	6 दिसं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षादिवस	30 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	4 जन.
श्रीमेरुत्रयोदशी	6 फर.
मर्यादा महोत्सव	14 फर.

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् 2015 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द	12 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	12 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	22 जन.
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	3 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	14 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	20 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	5 मार्च
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रै.
श्रीवल्लभाचार्य	15 अप्रै.
श्रीछत्रपति शिवाजी	20 अप्रै.
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	23 अप्रै.
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	24 अप्रै.
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	21 मई
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	22 अग.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
महाराज अग्रसेन जी	13 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	23 अक्तू.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाई बाबा	23 नवं.
श्रीवीर वैरागी	24 नवं.
(सन् 2016 ई.)	
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
स्वामी विवेकानन्द	31 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	31 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	10 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	22 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	4 मार्च
श्रीरामकृष्ण परमहंस	10 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	23 मार्च

मुस्लिम त्योहार

(सन् 2015 ई.)	
ईद–ए–मिलाद	4 जन.
ईद–ए–मौलाद	9 जन.
फतिहायज़दहुम	1 फर.
जन्म श्री हज़रत अली	3 मई
शब–ए–मिराज	17 मई
शब–ए–बरात	3 जून
रमज़ान का पहला दिन	19 जून
शहादत–ए–हज़रत अली	9 जुला.
शब–ए–कद्र	15 जुला.
जमतुल विदा	17 जुला.
ईद–उल–फित्र	18 जुला.
इदुलज्जुहा	25 सितं.
मुहर्रम (ताज़िया)	24 अक्तू.
चेहल्म	2 दिसं.
आखिरी चहार शम्बा	9 दिसं.
शहादत–ए–इमाम हसन	11 दिसं.
ईद–ए–मिलाद	24 दिसं.
ईद–ए–मौलाद	29 दिसं.
(सन् 2016 ई.)	
फतिहायज़दहुम	22 जन.

सूचना

सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे–पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

क्या किससे पूछें ?

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें।

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त्त, व्रतपर्व, तेज़ी–मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि किससे सम्पर्क साधा जाए। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है– यह हम यहां स्पष्ट किए देते हैं–

(i) तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरणप्रवेश, वक्रता–मार्गिता, उदयास्त, लोप–दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व–निर्णय, विवाहादि मुहूर्त्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त–गणित–फलित–सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ मुझसे सम्पर्क करें।

उत्तर के लिए मुझे जवाबी पत्र या Postal Stamps आदि न भेजें। आपकी उचित शंकाओं का निवारण मैं अपने व्यय से ही करुंगा। लेकिन मैं इसके लिए किसी भी तरह से बाधित नहीं हूँ–यह ध्यान में रखें।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A., 'अभिजित् प्रकाशन, 59/6,
P.O. पंचकूला– 134 109, Phone-0172-2565 303

(ii) राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिकदलों के चुनावचक्र में जय–पराजय, राजनेताओं का उत्थान–पतन; पाक्षिक–मासिक–वार्षिक फलादेश, यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति–विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वगैरह की जानकारी एवम् वायदा–हाज़र बाज़ार के चांस, सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज; तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचांग में प्रकाशित वार्षिक–मासिक–पाक्षिक–दैनिक तेज़ी–मन्दी– सम्बन्धी पूछताछ के लिए हमसे सम्पर्क कीजिए–

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
ज़िला मोहाली (पंजाब), PIN 140 103,
PHONE: 0160-2641 277,

इसके अतिरिक्त पंचांग में प्रकाशित अन्य किसी लेख आदि के विषय में अपनी शंकाओं के निवारणार्थ उसके लेखक से ही सम्पर्क करना चाहिए।

–सम्पादक मण्डल

सिक्ख–पर्व (सं. 2072 वि.) (सन् 2015–16 ई.)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा अनुसार तारीख			सिक्ख–पर्व संशोधित नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (2015–16 ई.)			
	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	संक्रान्ति*
श्री गुरु नानकदेव जी	25 नवं., 2015 ई.	अवतार दिन से	7 अक्तू., 2015 ई.	*25 नवं., 2015 ई.	अवतार दिन से	22 सितम्बर	*शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, श्री अमृतसर की ओर से प्रकाशित मासिक-पत्रिका 'गुरुमत प्रकाश' (अप्रैल, 2010 ई.) के पृष्ठ 89 के अनुसार तारा अंकित पर्व और संक्रान्ति अब पुरातन परम्परा (विक्रमी) के अनुसार ही हुआ करेंगे।
श्री गुरु अंगददेव जी	19 अप्रै., 2015 ई.	2 अक्तू. 2015 ई.	23 मार्च, 2015 ई.	18 अप्रैल	18 सितम्बर	16 अप्रैल	
श्री गुरु अमरदास जी	3 मई, 2015 ई.	21 मार्च. 2015 ई.	28 सितं., 2015 ई.	23 मई	16 अप्रैल	16 सितम्बर	
श्री गुरु रामदास जी	29 अक्तू., 2015 ई.	26 सितं, 2015 ई.	16 सितं., 2015 ई.	9 अक्तूबर	16 सितम्बर	16 सितम्बर	
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	11 अप्रै., 2015 ई.	15 सितं., 2015 ई.	22 मई, 2015 ई.	2 मई	16 सितम्बर	22 मई*	
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	3 जून, 2015 ई.	11 मई, 2015 ई.	24 मार्च. 2015 ई.	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च	
श्री गुरु हरिराय जी	20 फर., 2016 ई.	5 अप्रै. 2016 ई.	4 नवं. 2015 ई.	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर	
श्री गुरु हरकिशन जी	8 अग., 2015 ई.	4 नवं., 2015 ई.	3 अप्रै., 2015 ई.	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल	
श्री गुरु तेग़बहादुर जी	9 अप्रै., 2015 ई.	3 अप्रै., 2015 ई.	16 दिसं., 2015 ई.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवम्बर	
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	16 जन., 2016 ई.	14 दिसं., 2015 ई.	16 नवं., 2015 ई.	16 जन., 2016 ई.*	24 नवम्बर	16 नवं., 2015 ई.*	
खालसापंथ साजना दिवस	वैशाख 1, मुताबिक	14 अप्रैल, 2015 ई.		14 अप्रैल, 2015 ई.*			
प्रथम प्रकाश गुरुग्रन्थ साहिब जी	भाद्र. शुक्ल 1, मुताबिक	14 सितंबर, 2015 ई.		1 सितंबर, 2015 ई.			
गुरुग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल 2, मुताबिक	13 नवंबर, 2015 ई.		13 नवंबर, 2015 ई.*			

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

						(सन् 2016 ई.)	
इंग्लिश नववर्ष (2015 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	विशु (केरल)	14 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	21 अक्तू.	इंग्लिश नववर्ष (2016 ई.) प्रारम्भ	1 जन.
ईद–ए–मिलाद	4 जन.	जन्म श्रीहजरत अली	3 मई	दशहरा	22 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	15 जन.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	4 मई	मुहर्रम (ताज़िया)	24 अक्तू.	पोंगल	15 जन.
पोंगल	15 जन.	रथयात्रा (पुरी)	17 जुला.	श्रीवाल्मीकि–जयन्ती	27 अक्तू.	*अ. दि. श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	16 जन.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	जमतुलविदा	17 जुला.	दीपावली	11 नवं.	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	3 फर.	इदुल–फित्र	18 जुला.	भाई दूज	13 नवं.	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	22 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	17 फर.	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	बलि. दि. श्रीगुरु तेग़बहादुर जी	24 नवं.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	21 मार्च
होला, वसन्तोत्सव	6 मार्च	ओणम् (केरल)	28 अग.	श्रीगुरुनानक जयन्ती	25 नवं.	वसन्तोत्सव	24 मार्च
गुड़ी पड़वा	21 मार्च	रक्षाबन्धन (राखी)	29 अग.	ईद–ए–मिलाद	24 दिसं.		
श्रीराम नवमी	28 मार्च	श्रीगणेश चतुर्थी	1 सितं.	क्रिसमस डे	25 दिसं.		
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	2 अप्रै.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	5 सितं.				
गुड फ्राई डे	3 अप्रै.	इदुलज्जुहा	25 सितं.				
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.				

* श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी का अवतारपर्व संशोधित नानकशाही Calander के अनुसार पौष शुक्ल सप्तमी को ही मनाया जाना चाहिए।

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2015 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2015 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) –पं.	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) –पं.	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
वसन्त पंचमी	24 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2015 ई.	
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	1 फर.
ब. सं. बा. बिशन सिंह जी रौणी वाले/सं. बा. हरभजन सिंह जी कोहरियां वाले-कोहरियां प्रा.	3 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	17 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	17 फर.
मार्च 2015 ई.	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	6 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	10 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	11 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	12 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	19 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
माईसरखाना (पं.)	26 मार्च
मेला नरीसैंमरी, मथुरा (उ.प्र.)	27 मार्च
श्रीमनसादेवी (हरि.)	27 मार्च
बहुफोर्ट (जम्मू–काश्मीर)	27 मार्च

नाम मेला/पर्व (सन् 2015 ई.)	तारीख
ज्वालामुखी (हरचोवाल–गुरदासपुर)	27 मार्च
अप्रैल 2015 ई.	
माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	2 अप्रै.
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	3 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	3 अप्रै.
कशाधा नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	16 अप्रै.
पिंजौर (हरि.)	18 अप्रै.
ज.दि. भाई दित्त सिंह ज्ञानी	21 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	29 अप्रै.
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण (हि.प्र.) प्रा.	29 अप्रै.
मई 2015 ई.	
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	15 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	15 मई
ज. दि. सं. बा. तेजा सिंह जी, बदरीपुर, पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	15 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	19 मई
पुण्यतिथि सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्त– सरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	23 मई
क्षीर भवानी (जम्मू–काश्मीर)	26 मई
श्रीगंगा दशहरा	28 मई
सपोर यात्रा– धारलदा (उधमपुर)	28 मई
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	29 मई
पीपलू , ऊना (हि.प्र.)	29 मई
मेला पीरभीखनशाह (घड़ाम,पटियाला) प्रा.	30 मई
जून 2015 ई.	
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	2 जून
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांज) सोलन	15 जून

नाम मेला/पर्व (सन् 2015 ई.)	तारीख
यादगारी दिवस बीबी शरण कौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	29 जून
जुलाई 2015 ई.	
ब. सं. बा. तेजा सिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/ बडू साहिब (हि. प्र.) प्रा.	1 जुला.
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुला.
जयन्ती सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्त–सरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	21 जुला.
शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	25 जुला.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली) पं.	31 जुला.
मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	31 जुला.
अगस्त 2015 ई.	
ब. सं. बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
ज. दि. सं. बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल, पटियाला	5 अग.
बरसी सं. बाबा प्यारा सिंह जी गु. श्री अमरगढ़ साहिब, चमकौर साहिब प्रा.	5 अग.
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	19 अग.
ब. सं. बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.
श्रीनयना देवी (हि. प्र.)	23 अग.
श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	23 अग.
ब.सं.बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	29 अग.
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	30 अग.
सितंबर 2015 ई.	
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	5 सितं.
ब. भा. दित्त सिंह ज्ञानी, नन्दपुर-कलौड़ (पं.)	6 सितं.
कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	10 सितं.

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2015 ई.)	तारीख
कुम्भ महापर्व नासिक (महा.)	13 सितं.
श्रीगोसाईआणां, कुराली (पंजाब)	15 सितं.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रारम्भ	17 सितं.
मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	18 सितं.
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	18 सितं.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	19 सितं.
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	21 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	25 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	27 सितं.
छपार (पं.)	27 सितं.
श्रीगोईदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	28 सितं.
अक्तूबर 2015 ई.	
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	11 अक्तू.
फल्गु (हरि.)	12 अक्तू.
पर्वत मेला (मण्डी–हि.प्र.)	18 अक्तू.
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	21 अक्तू.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	21 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर) पं.	21 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	22 अक्तू.
ब. सं. बा. गुरुचरण सिंह जी, गु. अमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	24 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	26 अक्तू.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	26 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	26 अक्तू.
नवंबर 2015 ई.	
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	6 नवं.
बाल मेला	14 नवं.
दीपावली (अमृतसर)	11 नवं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2015 ई.)	तारीख
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	21 नवं.
धनेश्वर मेला, सिरमौर (हि.प्र.)	22 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	22 नवं.
ज. दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	24 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर) प्रा.	25 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर–पं.)	25 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	25 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	25 नवं.
दिसम्बर 2015 ई.	
ब. सं. बा. विसाखा सिंह, दुदेहर सा.(तरनतारन)	5 दिसं.
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	10 दिसं.
ब. सं. बा. राम सिंह/ बूटा सिंह, नानकसर चीमा	20 दिसं.
ब. बीबी तेज कौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ सा.	24 दिसं.
ज. दि. सं. बा. किशन सिंह जी (राड़ा सा. वाले), मसीतां (सिरसा–हरि.)	24 दिसं.
जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	28 दिसं.
ब. सं. बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.
जनवरी सन् 2016 ई.	
लोहड़ी दांऊ (मोहाली) –पं.	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़,) –पं.	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.

नाम मेला/पर्व (सन् 2016 ई.)	तारीख
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणा) –पं. प्रा.	30 जन.
फरवरी 2016 ई.	
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
वसन्तपंचमी	12 फर.
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	20 फर.
मार्च 2016 ई.	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	7 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	7 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	24 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	28 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	29 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	31 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	6 अप्रै.

कुम्भ महापर्व 'उज्जैन' की पूर्व सूचना

आगामी वर्ष सं. 2073 वि. में वैशाख पूर्णिमा, शनिवार को 21 मई, 2016 ई. के दिन 'उज्जैन' कुम्भमहापर्व (जिसे सिंहस्थपर्व भी कहा जाता है।) का योग है। इसकी स्नान–दान–जप आदि के लिए तिथियों का निर्देश अगले वर्ष (सं. 2073 वि.) के पंचांग में विस्तारपूर्वक किया जाएगा।

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

[भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2072 वि.) (भा. स्टैं. टा.)]

नगर	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (I.S.T.)													श्रीकृष्णजन्माष्टमी स्मार्त–वैष्णव
	8 अप्रै., 2015 ई. घं. मि.	7 मई, 2015 ई. घं. मि.	5 जून 2015 ई. घं. मि.	5 जुला. 2015 ई. घं. मि.	3 अग. 2015 ई. घं. मि.	1 सितं. 2015 ई. घं. मि.	1 अक्तू. 2015 ई. घं. मि.	30 अक्तू. 2015 ई. घं. मि.	29 नवं. 2015 ई. घं. मि.	28 दिसं. 2015 ई. घं. मि.	27 जन. 2016 ई. घं. मि.	26 फर. 2016 ई. घं. मि.	27 मार्च, 2016 ई. घं. मि.	चन्द्रोदय 5 सितंबर, 2015 ई. (I.S.T.) घं. मि.
अजमेर	22 21	22 05	21 46	22 05	21 29	20 52	21 05	20 37	21 09	20 46	21 15	21 39	22 05	24 00
अमृतसर	22 29	22 14	21 53	22 08	21 29	20 48	20 56	20 27	21 00	20 39	21 12	21 41	22 11	23 54
अलवर	22 14	21 59	21 39	21 58	21 21	20 43	20 55	20 27	20 59	20 37	21 06	21 31	21 58	23 54
अलीगढ़	22 09	21 53	21 34	21 52	21 15	20 37	20 49	20 20	20 53	20 30	21 00	21 25	21 53	23 48
अहमदाबाद	22 24	22 08	21 49	22 11	21 37	21 02	21 18	20 51	21 23	20 58	21 24	21 45	22 09	24 18
अयोध्या	21 51	21 35	21 16	21 35	21 00	20 22	20 35	20 07	20 39	20 16	19 45	21 09	21 35	23 34
आगरा	22 08	21 53	21 33	22 52	21 16	20 37	20 50	20 22	20 54	20 31	21 00	21 25	21 52	23 49
इन्दौर	22 10	21 54	21 35	21 57	21 24	20 48	20 05	20 38	21 10	20 45	21 11	21 32	21 55	24 05
इलाहाबाद	21 49	21 34	21 14	21 35	21 00	20 22	20 37	20 09	20 41	20 18	20 45	21 09	21 34	23 36
उज्जैन	22 11	21 55	21 36	21 58	21 24	20 49	21 05	20 38	21 10	20 45	20 11	21 33	21 56	24 05
उदयपुर(रा.)	22 22	22 06	21 47	22 08	21 33	20 57	21 13	20 44	21 16	20 52	20 19	21 42	22 07	24 11
ऊना	22 24	22 09	21 49	22 03	21 24	20 43	20 51	20 22	20 55	20 34	21 07	21 36	22 06	23 49
कपूरथला	22 26	22 11	21 51	22 06	21 27	20 46	20 55	20 25	20 58	20 37	21 09	21 38	22 09	23 53
करनाल	22 17	22 02	21 41	21 58	21 20	20 40	20 50	20 21	20 54	20 32	21 03	21 31	22 00	23 48
कांगड़ा	22 24	22 09	21 49	22 03	21 24	20 42	20 51	20 21	20 54	20 33	21 06	21 36	22 07	23 48
कानपुर	21 59	21 43	21 24	21 43	21 08	20 30	20 43	20 15	20 47	20 24	19 53	20 17	21 43	23 37
कुरुक्षेत्र	22 20	22 04	21 43	21 59	21 21	20 40	20 50	20 20	20 53	20 32	21 04	21 32	22 02	23 49
कुल्लू	22 19	22 05	21 44	21 59	21 20	20 39	20 47	20 18	20 51	20 30	21 03	21 32	22 02	23 45
कोटा	22 14	21 58	21 39	21 59	21 24	20 47	21 02	20 34	21 06	20 43	21 10	21 33	21 59	24 01
कोलकाता	21 18	21 02	20 43	21 05	20 32	19 57	20 14	19 46	20 18	19 54	20 19	20 40	21 04	23 14
गुरदासपुर	22 27	22 12	21 52	22 06	21 27	20 45	20 54	20 24	20 57	20 36	21 09	21 39	22 10	23 51
ग्वालियर	22 06	21 50	21 31	21 50	21 15	20 38	20 51	20 23	20 55	20 32	21 00	21 24	21 50	23 50
चण्डीगढ़	22 19	22 04	21 43	21 59	21 21	20 40	20 50	20 20	20 53	20 32	21 04	21 32	22 02	23 48
चम्बा	22 24	22 09	21 50	22 04	21 24	20 42	20 50	20 20	20 53	20 32	21 06	21 36	22 08	23 49
चूरु	22 22	22 06	21 46	22 04	21 27	20 48	21 03	20 30	21 05	20 41	21 11	21 37	22 05	23 59
चेन्नई	21 31	21 21	21 03	21 32	21 06	20 35	20 59	20 34	21 05	20 37	20 56	21 09	21 26	24 01
जम्मू	22 31	22 16	21 55	22 09	21 29	20 47	20 55	20 25	20 58	20 37	21 11	21 41	22 13	23 52
जयपुर	22 17	22 01	21 41	22 00	21 25	20 46	21 00	20 31	21 04	20 41	21 09	21 34	22 01	23 59
जालन्धर	22 25	22 10	21 50	22 05	21 26	20 45	20 54	20 24	20 57	20 36	21 09	21 38	22 08	23 52
जैसलमेर	22 37	22 20	22 02	22 21	21 45	21 07	21 20	20 52	21 24	21 01	21 30	21 55	22 27	24 19
जोधपुर	22 27	20 22	21 52	22 12	21 36	20 58	21 12	20 44	21 16	20 53	21 21	21 46	22 12	24 11
दरभंगा	21 34	21 18	20 59	21 18	20 43	20 05	20 19	19 51	20 23	20 00	20 28	20 52	21 18	23 18
दिल्ली	22 14	21 58	21 38	21 56	21 19	20 40	20 51	20 22	20 55	20 33	21 03	21 29	21 57	23 50

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

[भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2072 वि.) (भा. स्टैं. टा.)]

नगर	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (I.S.T.)													श्रीकृष्णजन्माष्टमी स्मार्त–वैष्णव
	8 अप्रै., 2015 ई.	7 मई, 2015 ई.	5 जून 2015 ई.	5 जुला. 2015 ई.	3 अग. 2015 ई.	1 सितं. 2015 ई.	1 अक्तू. 2015 ई.	30 अक्तू. 2015 ई.	29 नवं. 2015 ई.	28 दिसं. 2015 ई.	27 जन. 2016 ई.	26 फर. 2016 ई.	27 मार्च, 2016 ई.	चन्द्रोदय 5 सितंबर, 2015 ई. (I.S.T.)
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
देहरादून	22 14	21 59	21 38	21 54	21 16	20 35	20 45	20 15	20 48	20 27	20 59	21 27	21 57	23 43
नाहन	22 17	22 02	21 41	20 57	21 19	20 38	20 48	20 18	20 51	20 30	21 02	21 30	22 00	23 46
पटना	21 36	21 20	21 01	21 21	20 46	20 09	20 23	19 55	20 27	20 04	20 31	20 55	21 21	23 22
पटियाला	22 21	22 06	21 45	22 01	21 23	20 42	20 52	22 22	20 55	20 34	21 06	21 34	22 04	23 50
पठानकोट	20 27	22 12	21 53	22 06	21 26	20 44	20 52	20 22	20 55	20 35	21 08	21 38	22 09	23 50
पुणे	22 12	21 55	21 37	22 02	21 32	20 59	21 19	20 53	21 24	20 58	21 21	21 38	21 59	24 20
फगवाड़ा	22 26	22 21	21 50	22 05	21 26	20 45	20 53	20 24	20 57	20 36	21 09	21 38	22 08	23 53
फिरोज़पुर	22 28	22 13	21 51	22 08	21 30	20 49	20 59	20 29	21 02	20 41	21 13	21 41	22 11	23 57
बंगलोर	21 49	21 32	21 14	21 43	21 16	20 46	21 10	20 45	21 16	20 49	21 07	21 21	21 37	24 13
बरेली	22 05	21 49	21 29	21 47	21 10	20 31	20 42	20 13	20 46	20 24	20 54	21 20	21 48	23 41
बिलासपुर (हि.प्र.)	22 21	22 06	21 45	22 00	21 21	20 40	20 48	20 19	20 52	20 31	21 04	21 37	22 03	23 48
बीकानेर	22 29	22 14	21 53	22 11	21 34	20 55	21 08	20 40	21 12	20 50	21 18	21 44	22 12	24 07
बून्दी	22 15	21 59	21 40	22 00	21 25	20 48	21 02	20 33	21 05	20 42	21 10	21 34	21 58	24 00
भटिण्डा	22 26	22 11	21 50	22 06	21 28	20 47	20 57	20 27	21 00	20 39	21 11	21 39	22 09	23 56
भरतपुर	22 10	21 55	21 36	21 54	21 18	20 40	20 53	20 24	20 57	20 34	21 03	21 28	21 55	23 52
भोपाल	22 04	21 48	21 29	21 51	21 17	20 42	20 58	20 31	20 03	20 38	20 04	21 26	21 49	23 58
मण्डी (हि.प्र.)	22 21	22 06	21 45	22 00	21 21	20 40	20 48	20 19	20 52	20 31	21 04	21 37	22 03	23 42
मथुरा	22 09	21 54	21 34	22 53	21 17	20 38	20 51	20 23	20 55	20 32	21 01	22 26	21 53	23 51
मुम्बई	22 17	22 00	21 42	22 07	21 36	21 03	21 23	20 56	21 28	21 02	21 25	21 43	22 04	24 24
रोपड़	22 20	22 05	21 44	22 00	21 22	20 41	20 51	20 21	20 54	20 33	21 05	21 33	22 03	23 49
रोहतक	22 16	22 00	21 40	21 58	21 21	20 42	20 53	22 24	20 57	20 35	21 05	21 31	21 59	23 52
लखनऊ	21 56	21 40	21 20	21 39	21 04	20 26	20 39	20 10	20 43	20 20	20 48	21 13	21 40	23 38
लुधियाना	22 23	22 07	21 47	22 03	21 25	20 44	20 54	20 24	20 57	20 36	21 08	21 36	22 06	23 51
वाराणसी	21 45	21 30	21 10	21 30	20 56	20 18	20 32	20 04	20 36	20 13	20 40	21 04	21 29	23 31
शिमला	22 18	22 03	21 43	21 58	21 20	20 39	20 48	20 18	20 51	20 30	21 02	21 31	22 01	23 46
श्रीनगर (का.)	22 34	22 19	21 58	22 11	21 30	20 47	20 53	20 22	20 56	20 36	21 11	21 43	22 15	23 50
संगरूर	22 23	22 08	23 47	22 03	21 25	20 44	20 54	20 24	20 57	20 36	21 08	21 36	22 06	23 52
सहारनपुर	22 15	22 00	21 39	21 56	21 18	20 38	20 48	20 19	20 52	20 30	21 01	21 29	21 58	23 46
सीकर	22 20	22 05	21 45	23 04	21 28	20 49	21 02	20 34	21 06	20 43	21 12	21 37	22 04	24 02
हरिद्वार	22 12	21 58	21 37	21 53	21 15	20 35	20 45	20 16	20 49	20 27	20 59	21 26	21 55	23 44
हिसार	22 21	20 16	21 45	22 03	21 25	20 46	20 57	20 28	21 00	20 38	21 09	21 36	22 04	23 55
होशियारपुर	22 25	22 10	21 49	22 04	21 25	20 44	20 52	20 23	20 56	20 34	21 07	21 36	22 07	23 50

हिसार	22 21	20 16	21 45	22 03	21 25	20 46	20 57	20 28	21 00	20 38	21 09	21 36	22 04	23 55
होशियारपुर	22 25	22 10	21 49	22 04	21 25	20 44	20 52	20 23	20 56	20 34	21 07	21 36	22 07	23 50

सन्दिग्ध व्रत–पर्व–व्यवस्था (सं. 2072 वि.)

लेखक– प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला(हरियाणा)–134109

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत–पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए, – प्रियव्रत शर्मा)
(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

(1) अनङ्ग त्रयोदशी (चैत्र शु. 13)

पूर्वविद्धा चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन यह पर्व मनाया जाता है– **"तत्र त्रयोदशी पूर्वविद्धा ग्राह्या"–'धर्मसिन्धु'। इस वर्ष 1 अप्रैल, 2015 ई. को त्रयोदशी पूर्व(द्वादशी)विद्धा है। इसलिए यह व्रत इसी दिन लिखा गया है।**

(2) वटसावित्री व्रत (ज्येष्ठ अमा)

उ. भारत में यह व्रत ज्येष्ठी अमा को और द. भारत में ज्येष्ठी पूर्णिमा को किया जाता है। इन दोनों परम्पराओं में यह पूर्व (चतुर्दशी)–विद्धा अमा या पूर्णिमा के दिन ही किया जाता है। '**ब्रह्मवैवर्त्त पुराण**' का **वाक्य है–**

"भूतविद्धा न कर्त्तव्या दर्शः पूर्णा कदाचन।
वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठ सावित्रीव्रतमुत्तमम्।।"

इसलिए यह व्रत उ. भारत में इस वर्ष 17 मई, 2015 ई. को **किया जाएगा, जहाँ अमा चतुर्दशीविद्धा है।**

ध्यान रहे– यहां वेध त्रिमुहूर्त्तात्मक ही लिया जाता है– **"भूतोष्टादशनाड़ीभिः दूषयत्युत्तरां तिथिम......"** वाला वेध यहां नहीं लिया जाएगा। स्पष्टता के लिए '**धर्मसिन्धु**' आदि देखें।

(3) अरण्यषष्ठी (ज्येष्ठ शुक्ल–षष्ठी)

यह व्रत सप्तमीविद्धा षष्ठी में किया जाता है, **अतः इस वर्ष इसे 23 मई 2015 ई. को लिखा गया है।** क्योंकि 24 मई को षष्ठी तीन मुहूर्त्त **से कम होने के कारण सप्तमीविद्धा नहीं है।**

(4) प्र. आषाढ़ कृष्ण एकादशी

यह एकदशी 12 जून, 2015 ई. को अरुणोदय के समय दशमी से विद्धा है, अतः वैष्णव लोग 12 जून, 2015 ई. के दिन एकादशी व्रत न करके 13 जून, 2015 ई. को करेंगे। लेकिन स्मार्त्त लोग, जो '**अरुणोदये दशमीवेध' वर्जित नहीं करते, वे तो 12 जून, 2015 ई. को ही यह व्रत रखेंगे। गरुड़पुराण का वचन है–**

"दशमीशेष–संयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः।
नैवोपोष्यं वैष्णवेन तद्दिनैकादशीव्रतम्।।"

11 जून को अरुणोदयकाल पंजाब आदि में सूर्योदय से पूर्व 3 घं. 47 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

(5) कुमार षष्ठी (आषाढ़ शुक्ल षष्ठी)

पूर्व(पंचमी)विद्धा आषाढ़ शुक्ल–षष्ठी के दिन यह व्रत किया जाता है। **वसिष्ठ** का वचन है–

"कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिश्चतुर्दशी।
एताः पूर्वयुताःकार्याः तिथ्यन्ते पारणं भवेत्।।"

यह षष्ठी इस वर्ष 21 जुलाई, 2015 ई. को पंचमीविद्धा है। इसलिए यह व्रत इसी दिन लगाया गया है।

ध्यान रहे– यहाँ सूर्योदयानन्तर त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी पंचमी का ही वेध विचारा जाएगा, **"नागोद्वादश–नाड़ीभिः......"** वाला वेध यहाँ लागू नहीं होता। (एतदर्थ **"धर्मसिन्धु" या "पुरुषार्थचिन्तामणि"** देखें।)

(6) रक्षाबन्धन (श्रावण–पूर्णिमा)

रक्षाबन्धन अपराह्णव्यापिनी भद्रारहित श्रावण–पूर्णिमा में किया जाता है–**"भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।"**

इस वर्ष श्रावण पूर्णिमा के दिन (29 अगस्त, 2015 ई. को) 13 घं. 50 मि. (भा.स्टैं.टा.) तक भद्रा है और अपराह्ण 13 घं. 40 मि. से 16 घं. 13 मि. तक है। अतः यहाँ भद्रासमाप्ति यानि 13 घं. 50 मिं. के बाद 16 घं. 13 मि. तक रक्षाबन्धन के लिए शुभ काल है। इसी अवधि में रक्षाबन्धन करना चाहिए।

(7) दूर्वाष्टमी (भाद्र. शुक्ल–अष्टमी)

रौहिणमुहूर्त्त (दिन के नवम मुहूर्त्त) में व्याप्त पूर्व (सप्तमी) विद्धा भाद्र. शुक्ल अष्टमी के दिन यह व्रत स्त्रियों द्वारा किया जाता है। सिंहस्थ सूर्यकाल में यह उत्तम माना गया है। अगस्त्य तारा के लोप (अस्त) काल में ही यह व्रत किया जाता है। यदि भाद्र. शुक्ल अष्टमी से पहिले ही यह उदित (दृश्य) हो जाए तब इस व्रत को भाद्र शुक्ल पक्ष से निकटतम पूर्ववर्त्ती ऐसे भाद्र. कृष्ण या श्रावण शुक्लपक्ष की रौहिणव्यापिनी सप्तमीविद्धा अष्टमी के दिन करने का शास्त्रादेश है, जब अगस्त्य लुप्त (अस्त) हो। इस वर्ष (सं. 2072 वि. में) भाद्र. कृष्ण पंचमी को ही अगस्त्य उदित हो गया है, **अतः उक्त नियमानुसार इस वर्ष यह दूर्वाव्रत रौहिणव्यापिनी सप्तमीविद्धा श्रावण शुक्ल अष्टमी, शनिवार (22 अगस्त, 2015 ई.) को किया जाएगा।** इस दिन पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि प्रदेशों में अगस्त्य अस्त रहेगा।

(8) पूर्णिमा महालयश्राद्ध (भाद्र. शुक्ल–पूर्णिमा)

पूर्णिमा का महालयश्राद्ध अपराह्णव्यापिनी भाद्र. पूर्णिमा को होता है, क्योंकि यह पार्वण है– **"पार्वणं त्वपराह्णके"**। इस वर्ष 27 सितम्बर, 2015 ई. को भाद्र. पूर्णिमा अपराह्णव्यापिनी है, अतः यह श्राद्ध इसी दिन होगा।

(9) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (आश्विन कृष्ण–चतुर्थी)

चन्द्रोदयव्यापिनी कृष्ण चतुर्थी को श्रीगणेशचतुर्थी व्रत होता है। दोनों दिन चतुर्थी चन्द्रोयव्यापिनी न हो तो यह व्रत दूसरे दिन होता है। इस वर्ष आश्विन कृष्ण चतुर्थी दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी नहीं है। इसलिए यहां **श्रीगणेशचतुर्थी व्रत दूसरे दिन 1 अक्तूबर, 2015 ई. को लिखा गया है।**

(10) आश्विन नवरात्र प्रारम्भ (आश्वि. शुक्ल–प्रतिपदा)

अमा में नवरात्रारम्भ, घटस्थापन सर्वथा निषिद्ध है। यदि शुक्ल प्रतिपदा एक मुहूर्त से अल्प हो तभी अमा में नवरात्रारम्भ होगा, अन्यथा नहीं। सूर्योदयानन्तर 10 घटी तक अथवा अभिजित् मुहूर्त्त घटस्थापन के लिए विहितकाल है। प्रतिपदा की पहिली 16 घड़ियां तथा चित्रा, वैधृति योगों के पूर्वार्ध भाग में भी नवरात्रारम्भ का निषेध है। यदि घटस्थापन के लिए उपरोक्त विहित काल को इस निषिद्ध काल से बचाया न जा सके तो इन निषिद्ध कालों की उपेक्षा करते हुए घटस्थापन इसी विहित काल (सूर्योदयानन्तर 10 घटी अथवा अभिजित् मुहूर्त्त) में ही कर लेना चाहिए । ऐसी शास्त्रानुमति है–**"प्रतिपदाद्यषोडश–नाडी–निषेधः चित्रा – वैधृतियोग–निषेधश्च उक्तकालानुरोधेन सति सम्भवे पालनीयः।"**–
(धर्मसिन्धु)

इस वर्ष 13 अक्तूबर, 2015 ई. को प्रतिपदा की वृद्धि है। अतः इस दिन नवरात्रारम्भ होगा। लेकिन यहाँ प्रतिपदा की आदिम 16 घटी एवं चित्रा, वैधृति के पूर्वार्ध भागों द्वारा घटस्थापन के लिए विहित सूर्योदयानन्तरवर्त्ती 10 घटीकाल तथा अभिजित् मुहूर्त–दोनों दूषित हैं। अतः पूर्वोक्त निर्देशानुसार यहाँ इन निषिद्ध कालों की उपेक्षा करते हुए **इस दिन 13 अक्तूबर, 2015 ई. को ही सूर्योदयानन्तर 10 घटी पर या अभिजित् मुहूर्त्त में घटस्थापन कर लेना चाहिए।**

(11) उपांगललिता व्रत (आश्विन शुक्ल पंचमी)

यह व्रत अपराह्णव्यापिनी आश्विन शुक्ल पंचमी के दिन किया जाता है। यदि पंचमी दो दिन समान या असमानरूप से अपराह्णव्यापिनी हो तो यह व्रत पहले दिन करने का शास्त्रादेश है।

इस वर्ष 17 और 18 अक्तूबर, 2015 ई.–दोनों दिन पंचमी समानरूप से अपराह्ण को व्याप्त कर रही है, अतः **इस वर्ष यह व्रत 17 अक्तूबर, 2015 ई. को होगा।**

(12) श्रीसत्यनारायण व्रत (आश्विन–पूर्णिमा)

सत्यनारायण व्रत नक्तव्रत है । यह प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा के दिन होता है। इस वर्ष आश्विनपूर्णिमा केवल 27 अक्तूबर, 2015 ई. को प्रदोष के प्रारम्भक्षण (सूर्यास्तकाल) को स्पर्शमात्र करती है। लेकिन यह इस दिन गौण प्रदोषकाल सायाह्न को पूरा व्याप्त कर रही है। अतः यह व्रत इस दिन ही होगा। **कालमाधवकार** ने तो नक्तव्रत की तिथि की दोनों दिन प्रदोष में अव्याप्ति होने पर भी यह व्रत दूसरे दिन ही माना है–

"प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिर्दिनद्वये ।
अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा ।।"

(13) शरत्पूर्णिमा (आश्विन–पूर्णिमा)

प्रदोष एवं अर्धरात्रिव्यापिनी आश्विन–पूर्णिमा में शरत्पूर्णिमा व कोजागर व्रत होता है। इस वर्ष यह तिथि 26 अक्तूबर, 2015 ई. को पूर्णतया अर्धरात्रि को व्याप्त करती है। 27 अक्तूबर, 2015 ई. को तो यह प्रदोष को केवल स्पर्शमात्र करती है। अतः 26 अक्तूबर, 2015 ई. को ही ये दोनों पर्व होंगे।

(14) यम–प्रीत्यर्थ दीपदान (कार्त्तिक कृष्ण–त्रयोदशी)

प्रदोषव्यापिनी कार्त्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन प्रदोष में यम को दीपदान किया जाता है। **इस वर्ष 9 नवंबर, 2015 ई. को त्रयोदशी प्रदोषव्यापिनी है । अतः इसी दिन यम–दीपदान होगा।**

(15) भीष्मपंचक प्रारम्भ (कार्त्तिक शुक्ल–एकादशी)

कार्त्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक का काल भीष्मपंचक कहलाता है। इन पांच दिनों में व्रताचरणपूर्वक पूर्वाह्ण में विष्णुपूजा और मध्याह्न में भीष्मपितामह के लिए एकोद्दिष्टश्राद्ध किया जाता है। यहां यदि एकादशी से पूर्णिमा तक की पांच तिथियों में से कोई एक तिथि क्षय हो जाए तो 'भीष्मपंचक' केवल चार दिनों का रह जाता है। इस स्थिति में निबन्धकारों ने यह परामर्श दिया है कि–'भीष्मपंचक' का प्रारम्भ दशमीयुता एकादशी से किया जाए, ताकि श्राद्धार्थ पांच दिन प्राप्त हों–"....**यदि क्षयवशेन शुद्धैकादश्यामारम्भे पौर्णमास्यां पंचदिनात्मकव्रत–समाप्तिर्न घटते तदा विद्धैकादश्यामपि आरम्भः"** । – **(धर्मसिन्धु)**

इस वर्ष यहाँ पूर्णिमा का क्षय है। **अतः इस नियमानुसार भीष्मपंचक का प्रारम्भ यहाँ दशमीयुता एकादशी के दिन 21 नवंबर, 2015 ई. को किया गया है।**

(16) तुलसी-विवाह

कार्तिक शुक्ल एकादशी (देव-प्रबोधिनी एकादशी) की पारणा वाले दिन प्रबोधोत्सव मनाया जाता है। **"इसी दिन अथवा इससे अग्रिम चार (द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा वाले) दिनों में से किसी भी दिन विवाहनक्षत्र में तुलसी-विवाह करना चाहिए"**–ऐसा शास्त्रनिर्देश है। लेकिन प्रबोधोत्सव के साथ एकादशी–व्रतपारणा वाले दिन पूर्व-रात्रि में अर्धरात्रि से पहिले ही, तुलसी-विवाह करने की परम्परा है– ऐसा **धर्मसिन्धुकार** का निर्देश है। यदि पारणा के दिन पूर्वरात्रिकाल में विवाहनक्षत्र न हो तो (बिना उसके) भी पूर्वरात्रि में तुलसीविवाह पारणा के दिन कर लेना चाहिए– ऐसा भी निर्देश है। **इस वर्ष पारणा (प्रबोधोत्सव) के दिन 23 नवंबर, 2015 ई. को पूर्वरात्रि में विवाहनक्षत्र अश्विनी प्राप्त है । अतः इसी समय तुलसीविवाह होगा।**

(17) मित्रसप्तमी (मार्ग. शुक्ल सप्तमी)

षष्ठीविद्धा मार्ग. शुक्ल सप्तमी के दिन **मित्रसप्तमी** होती है। इस वर्ष यह सप्तमी **17 दिसम्बर, 2015 ई.** को षष्ठीविद्धा है। इसलिए यह पर्व इसी दिन लिखा गया है।

(18) होलिका–दहन

इस वर्ष (सं. 2072 वि. मे) होलिकादहन 23 मार्च, 2016 ई., बुधवार को 17 घं. 00 मि. से 17 घं. 30 मि. (I.S.T.) तक के काल में होगा। (एतदर्थ विशेषलेख पृष्ठ 285 पर देखें।)

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2015 से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2015 ई.	घं.	मि.	2015 ई.	घं.	मि.	2015 ई.	घं.	मि.	2015 ई.	घं.	मि.	2015 ई.	घं.	मि.	2015 ई.	घं.	मि.	2015–16 ई.	घं.	मि.	2015–16 ई.	घं.	मि.
7 जन.	13	46	9 जन.	19	28	6 मई	12	40	8 मई	13	02	1 सितं.	7	13	3 सितं.	2	48	28 दिसं.	11	49	30 दिसं.	14	58
17 जन.	8	36	19 जन.	5	51	15 मई	4	34	17 मई	0	52	10 सितं.	5	07	12 सितं.	10	20	7 जन.	8	56	9 जन.	10	00
25 जन.	12	59	27 जन.	11	10	24 मई	0	02	26 मई	5	19	20 सितं.	5	50	22 सितं.	7	34	16 जन.	2	32	17 जन.	23	57
3 फर.	20	31	6 फर.	2	16	2 जून	19	51	4 जून	19	22	28 सितं.	17	54	30 सितं.	12	21	24 जन.	20	44	26 जन.	23	39
13 फर.	17	57	15 फर.	16	30	11 जून	10	58	13 जून	8	25	7 अक्तू.	10	58	9 अक्तू.	16	18	3 फर.	18	08	5 फर.	19	43
21 फर.	22	02	23 फर.	18	34	20 जून	8	31	22 जून	13	21	17 अक्तू.	11	42	19 अक्तू.	14	10	12 फर.	9	07	14 फर.	5	32
3 मार्च	2	33	5 मार्च	8	29	30 जून	4	31	2 जुला.	3	30	26 अक्तू.	5	01	27 अक्तू.	23	25	21 फर.	3	59	23 फर.	7	22
13 मार्च	1	09	15 मार्च	1	12	8 जुला.	16	19	10 जुला.	14	09	3 नवं.	17	52	5 नवं.	22	47	2 मार्च	2	37	4 मार्च	5	19
21 मार्च	9	02	23 मार्च	4	23	17 जुला.	16	24	19 जुला.	21	06	13 नवं.	17	26	15 नवं.	19	38	10 मार्च	18	21	12 मार्च	13	14
30 मार्च	8	44	1 अप्रै.	14	45	27 जुला.	13	50	29 जुला.	13	08	22 नवं.	14	28	24 नवं.	9	58	19 मार्च	9	49	21 मार्च	13	46
9 अप्रै.	6	51	11 अप्रै.	7	36	4 अग.	22	38	6 अग.	19	40	1 दिसं.	2	22	3 दिसं.	6	22	29 मार्च	9	40	31 मार्च	13	23
17 अप्रै.	19	49	19 अप्रै.	15	09	13 अग.	23	13	16 अग.	4	06	11 दिसं.	0	24	13 दिसं.	1	50	7 अप्रै.	5	20	— — —	— — —	
26 अप्रै.	15	53	28 अप्रै.	21	39	23 अग.	22	35	25 अग.	22	59	19 दिसं.	21	13	21 दिसं.	18	09						

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2015 से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2015 ई.	घं.	मि.	2015 ई.	घं.	मि.	2015 ई.	घं.	मि.	2015 ई.	घं.	मि.	2015–16 ई.	घं.	मि.	2015–16 ई.	घं.	मि.	2016 ई.	घं.	मि.	2016 ई.	घं.	मि.
22 जन.	8	50	26 जन.	11	47	8 जून	3	41	12 जून	9	39	23 अक्तू.	0	49	27 अक्तू.	2	13	7 मार्च	14	51	11 मार्च	15	42
18 फर.	19	58	22 फर.	20	00	5 जुला.	10	01	9 जुला.	15	07	19 नवं.	7	34	23 नवं.	12	17	4 अप्रैल	1	15	8 अप्रैल	2	21
18 मार्च	6	59	22 मार्च	6	29	1 अग.	18	30	5 अग.	20	57	16 दिसं.	12	55	20 दिसं.	19	45	— — —	— — —		— — —	— — —	
14 अप्रैल	15	53	18 अप्रैल	17	22	29 अग.	4	52	2 सितं.	4	49	12 जन.	19	18	17 जन.	1	13						
11 मई	22	19	16 मई	2	41	25 सितं.	15	35	29 सितं.	15	00	9 फर.	4	11	13 फर.	7	12						

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2015 से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक)

2015 ई.	रविवार की तारीखें					2015 ई.	रविवार की तारीखें					2015 ई.	रविवार की तारीखें					2016 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	4	11	18	25	—	मई	3	10	17	24	31	सितंबर	6	13	20	27	—	जनवरी	3	10	17	24	31
फरवरी	1	8	15	22	—	जून	7	14	21	28	—	अक्तूबर	4	11	18	25	—	फरवरी	7	14	21	28	—
मार्च	1	8	15	22	29	जुलाई	5	12	19	26	—	नवंबर	1	8	15	22	29	मार्च	6	13	20	27	—
अप्रैल	5	12	19	26	—	अगस्त	2	9	16	23	30	दिसंबर	6	13	20	27	—	अप्रैल	3	10	17	24	—

कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व नासिक (त्र्यम्बक)

[भाद्रपद अमा, रविवार सं. २०७२ वि. (१३ सितंबर, २०१५ ई.)]

(कुम्भपर्व का उद्गम, माहात्म्य एवम् स्नानतिथियां)

लेखक -प्रियव्रत शर्मा

हिन्दुओं के सभी प्राचीन उत्सव धार्मिक आधार लिए हुए हैं। वे मनोरंजन के साथ-साथ मानव के चरित्र को आवश्यक विधियों की ओर प्रवृत्त और निषेधों से निवृत्त कर एक ऐसे अनुशासन में निबद्ध करते हैं, जिससे मानव ऐहलौकिक और पारलौकिक अभ्युदय एवं निःश्रेयस् प्राप्त करता है। वे शारीरिक स्वास्थ्य और आत्मिक शुद्धि पर समानरूपेण बल देते हैं। इन उत्सवों में चार कुम्भपर्वों का स्थान विशालता और अलौकिक माहात्म्य की दृष्टि से वस्तुतः मूर्धन्य है। ये धार्मिक पर्व अपने अद्वितीय माहात्म्य के कारण प्रत्येक द्वादशाब्दी में एक-एक बार हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग, नासिक में अपार जनसमूह को आकृष्ट करने के लिए भारत में ही नहीं, अपितु समस्त विश्व में विख्यात हैं । यदि हम इन्हें विश्व के सबसे बडे **'जनसंगम'** कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अन्य सभी हिन्दु पर्वोत्सवों की भांति ये कुम्भपर्व भी ग्रहों की राशि-नक्षत्रों में विशेष स्थितियों से सम्बद्ध हैं। इन कुम्भपर्वों की तिथियों का निर्धारण सूर्य, गुरु और चन्द्र की विभिन्न स्थितियों पर निर्भर करता है।

कुम्भपर्व क्यों मनाए जाते हैं ?

समुद्रमन्थन से प्राप्त अमृतकलश को इन्द्र का पुत्र जयन्त राक्षसों से दूर देवताओं की अनुमति से लेकर भागा तो राक्षसों और देवताओं के मध्य अमृतप्राप्ति के लिए बारह दिव्य दिन (बारह सौर वर्ष) तक घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध के दौरान अमृतकलश को राक्षसों से बचाने के लिए कभी प्रयाग, कभी उज्जैन, कभी हरिद्वार और कभी गोदावरी तट पर नासिक (त्र्यम्बक)में छुपाया गया। इसलिए इन चारों स्थलों पर बारह सौर वर्षों में एक-एक बार कुम्भपर्व मनाया जाता है। इस अमृतकलश को देवासुरसंग्राम के दिनों में सूर्य ने फूटने से बचाया और गुरु (बृहस्पति) ने इसकी देखभाल (सुरक्षा) की एवम् चन्द्रमा ने भी राक्षसों को इससे वंचित रखने के लिए पूरा प्रयास किया । यही कारण है कि इन तीनों की विशेष राशियों में स्थिति के समय इन चार स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं। कहीं ऐसा भी लिखा है कि- दैत्य-देवों की छीना-झपटी में अमृतकलश से अमृत की चार बूंदें हरिद्वार आदि इन चार तीर्थस्थलों में गिरीं, इसलिए इन स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं।

इस गाथा के अतिरिक्त एक और गाथा भी है। कश्यप ऋषि की दो पत्नियां कद्रु एवं विनता थीं। इन दोनों में आपसी द्वेष बहुत था। एक बार इन दोनों में शर्त लगी। कद्रु का कहना था कि सूर्य के घोड़े काले हैं और विनता का कहना था, घोड़े सफेद हैं। कद्रु का पुत्र नागराज था और विनता का पुत्र गरुड़ । नागराज ने अपनी माता को जिताने के लिए सूर्यलोक में जाकर घोड़ों को अपने काले शरीर से ढक लिया। इस प्रकार उसने अपनी माता को विजयी बना दिया । विनता को शर्त के अनुसार कद्रु की दासी बनना पड़ा । गरुड़ अपनी मां के दासीभाव से बहुत क्षुब्ध रहते थे। उन्होंने अपनी माता के दासीभाव से मुक्ति के लिए नागलोक में जाकर अमृतकुम्भ लाने का प्रयत्न किया । रास्ते मे हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा दिव्य त्र्यम्बकेश्वर (नासिक) में अमृतकुम्भ को रखकर, उन्हें वहां इन्द्र के साथ युद्ध करना पड़ा। १२ दिव्य दिनों तक युद्ध चलता रहा । इस युद्ध के दौरान इन स्थानों पर अमृत गिरने से इनका धार्मिक महत्त्व बना । इसी कारण इन चारों स्थानों पर कुम्भपर्व प्रारम्भ हुए। पुराणों में अन्य कथाएं भी हैं । परन्तु सभी में अमृत का पात्र इन्हीं चार स्थानों पर रखने अथवा अमृत के बूंद इन्हीं स्थानों पर गिरने आदि का आख्यान एक-सा है, भले ही किसी ने किसी के साथ लड़ने के लिए पात्र वहां रखा अथवा अमृत का पात्र वहां छिपा दिया । धर्मशास्त्र भी एक से वाक्यों से कुम्भपर्व के स्थानों का महत्त्व बखानते हैं कि वहां स्नान करने से अमृतत्व की प्राप्ति होती है, इत्यादि। पुराणों में अन्य कथाएं भी हैं, जिनका सम्बन्ध कुम्भपर्वों से है।

इस वर्ष (सं. २०७२ वि. में) नासिक (त्र्यम्बक) में कुम्भ महापर्व का योग बन रहा है। जब भाद्रपद अमा के समय सूर्य और गुरु दोनों सिंह राशि में स्थित हों, तब नासिक (त्र्यम्बक) में गोदावरी के तट पर कुम्भ महापर्व (जिसे सिंहस्थ महापर्व भी कहा जाता है) मनाया जाता है – जैसा कि ये पुराणवाक्य बतलाते हैं –

**" सिंह-राशिगते सूर्ये सिंह-राशौ बृहस्पतौ।
गोदावर्यां भवेत् कुम्भः पुनरावृत्ति-वर्जनः।। "**

तथा;-

" सिंहे गुरुस्तथा भानुः चन्द्रः चन्द्रक्षयस्तथा ।
गोदावर्यां तदा कुम्भो जायतेऽवनिमण्डले ।। "

इस वर्ष (सं.२०७२ वि. में) १३ सितंबर, २०१५ ई. को भाद्रपद अमा के दिन सूर्य, गुरु और चन्द्र- तीनों सिंह राशि में उपलब्ध होंगे, अतः इस दिन नासिक (त्र्यम्बक) में गोदावरी की पावनधारा में देश-विदेश के साधु सन्त पधारकर स्नान करेंगे । इन पुण्यात्मा महात्माओं के दर्शन तथा कुम्भपर्व पर गोदावरी में स्नान द्वारा पुण्य एवं मोक्षप्राप्ति हेतु लाखों धार्मिक लोग नासिक में एकत्र होंगे ।

इस महापर्व की मुख्य स्नानतिथियां इस प्रकार हैं-

(१) श्रावण शुक्ल- तृतीया, चन्द्रवार (१७ अग., सन् २०१५ ई.) :- इस दिन सूर्य सिंहराशि में प्रवेश करेगा । सिंहसंक्रान्ति के पुण्यकाल में गोदावरी में स्नान कर दान -जप करने का माहात्म्य होगा । संक्रान्ति का पुण्यकाल इस दिन ६ घं. ०१ मि. से १८ घं. ४६ मि. (भा.स्टैं.टा.) तक रहेगा । लेकिन स्नान सूर्योदय से पूर्व अरुणोदयकाल में करना चाहिए, ऐसा शास्त्रनिर्देश है । दान-जप सूर्योदयानन्तर किए जा सकते हैं । सौरमास की दृष्टि से यह कुम्भस्नान की पहली तिथि है ।

(२) श्रावण-पूर्णिमा, शनिवार (२९ अग., सन् २०१५ ई.):- इसदिन श्रावणी पूर्णिमा है । इस दिन गोदावरी में स्नान करने का परम माहात्म्य माना गया है ।

(३) भाद्र. कृष्ण-अष्टमी, शनिवार (५ सितं., सन् २०१५ ई.):- स्मार्तों एवं वैष्णवों के श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत की यह तिथि स्नान-दान आदि के लिए परम पुण्यप्रद मानी गई है । अतः इसदिन श्रद्धालु जनता को परम पुनीत गोदावरी के प्रवाह में स्नान करने के पश्चात् दान-जप आदि के परम पुण्य को संचित करने से चूकना नहीं चाहिए ।

(४) भाद्रपद अमा, रविवार (१३ सितं., सन् २०१५ ई.):- यह कुम्भपर्व की प्रमुख स्नान-तिथि है। साधु महात्माओं की प्रमुख शाहीयात्रा (शोभायात्रा) भी आज ही निकलेगी । यहां भी अरुणोदयकाल में स्नान करके दान-जप करना चाहिए। यदि अरुणोदयकाल में अधिक जनसम्मर्द के कारण गोदावरी- स्नान सम्भव न हो तो इस दिन सूर्योदय से सूर्यास्तकाल तक (किसी भी समय) गोदावरी में स्नान से पूर्ण पुण्य प्राप्त होगा । क्योंकि यह पूरा दिन कुम्भ के योग वाला है।

(५) भाद्रपद शुक्ल-चतुर्थी, गुरुवार (१७ सितं., सन् २०१५ ई.):- इसदिन सूर्यदेव कन्याराशि में प्रविष्ट होंगे। कन्यासंक्रान्ति के पुण्यकाल में गोदावरी में स्नानोपरान्त दान-जप आदि का माहात्म्य शास्त्रों में बताया गया है। इस संक्रान्ति का पुण्यकाल इसदिन पूरा दिन (सूर्योदय से सूर्यास्त तक) रहेगा।

(६) भाद्र. शुक्ल-पंचमी, शुक्रवार (१८ सितं., सन् २०१५ ई.) - यह भी कुम्भपर्व की स्नानतिथि है। इसदिन **'ऋषिपंचमी'** नामक विशेष पर्व है । ऋषि- पंचमी के दिन इस महापर्व के स्नान-दानादि का विशेष महत्त्व है ।

ऊपर हमने छोटी-बड़ी मुख्य स्नान-तिथियों की चर्चा कर दी है । इन स्नानतिथियों के अतिरिक्त २० अग., २०१५ ई. को श्रीकल्कि जयन्ती; २३ अग., २०१५ ई. को श्रीदुर्गाष्टमी; १ सितं., २०१५ ई. को श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी एवम् १६ सितं., २०१५ ई. को श्रीवराह जयन्ती; २१ सितं. २०१५ ई. को राधाष्टमी और इन दिनों घटित होने वाले सभी एकादशी व्रतों के दिनों में भी परमपावन गोदावरी में स्नान करने का विशेष महत्त्व धर्मशास्त्रों में प्रतिपादित है । सम्भव हो तो उपरोक्त सभी स्नानतिथियों के दिनों में गोदावरी में स्नान करने का प्रयत्न करना चाहिए । जो धर्मनिष्ठ लोग इस कुम्भपर्व पर लगभग एक-मास तक नासिक (त्र्यम्बक) में प्रवास करेंगे, वे पूरा भाद्रपद मास प्रतिदिन इस परम पुण्यसलिला गोदावरी में स्वेष्ट के ध्यानार्चन-नमनादि सहित स्नान करेंगे ही, क्योंकि वे जानते हैं कि- यह अक्षय एवम् अनंत पुण्यार्जन का उनके लिए एक पुनीत अवसर है ।

स्नान का काल

जैसा कि ऊपर भी लिख चुके हैं - तीर्थ आदि पर स्नान का मुख्यकाल 'अरुणोदयकाल' है। सूर्योदय के बाद किए गए स्नान का माहत्म्य कम है। लेकिन यह नियम सामान्य तिथिस्नान के लिए है। कुम्भपर्व आदि की स्नानतिथियों में स्नान सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त कभी भी किया जा सकता है। जिसका माहात्म्य (पुण्य) पूर्ण माना गया है । अतः कुम्भपर्व की स्नानतिथियों के दिन अरुणोदयकाल में ही गोदावरी आदि में स्नान करना है, ऐसा ज्यादा आग्रह नहीं होना चाहिए ।

नासिक कुम्भपर्व का माहात्म्य

नासिक **श्रीराम भगवान्** की वासभूमि रहा है। १४ वर्ष के वनवासकाल में उनके और श्री सीता माता के पावन चरणरज से यह धरा नितान्त परिपूत है। अतः इस भूमि पर घटित होने वाले कुम्भपर्व को विशेष माहात्म्य वाला माना जाता है। **स्कन्दपुराण** में लिखा है कि- **महामुनि कश्यप** ऋषि के निर्देशानुसार **भगवान् श्री राम** ने अपने पिता **दशरथ** का श्राद्ध नासिक में गोदावरी के तट पर ही किया था। अतः मर्यादा पुरुषोत्तम **भगवान् श्री राम** के संचार से परम पावन इस तीर्थस्थल पर इस विशेष पर्वयोग में किया गया स्नान-दान-जप निश्चय ही अनन्त फलदायक है।

नोट- इस महापर्व पर पधारे धार्मिक लोगों को चाहिए कि- वे इस पावन, पुण्यसलिला गोदावरी के तट पर अपने प्रिय पूर्वजों को पिण्डदान करना न भूलें ।

जो लोग नासिक न जा सकें

जो श्रद्धालु लोग अस्वास्थ्य या अन्य किसी अपरिहार्य विवशतावश नासिक जाने में असमर्थ हों, उन्हें कुम्भ महापर्व की केवल प्रमुख स्नानतिथि (१३ सितं., २०१५ ई.) के दिन समीपस्थ किसी समुद्र, महानदी, नदी, तालाब, बावड़ी अथवा अपने स्नानागार में ही नासिक, गोदावरी का ध्यान करते हुए स्नान करना चाहिए। शास्त्रों का कहना है-इससे भी वे लोग कुम्भपर्व स्नान का माहात्म्य प्राप्त कर लेंगे ।

पुण्य एवं मोक्ष के इच्छुक धार्मिक लोग कटिबद्ध रहें-

आगामी संवत् 2073 वि. में वैशाख-पूर्णिमा, शनिवार, 21 मई, 2016 ई. के दिन 'उज्जैन' कुम्भमहापर्व (जिसे सिंहस्थपर्व भी कहा जाता है।) का योग है। स्नान-दान-जप आदि के लिए इसकी तिथियों का निर्देश अगले वर्ष (सं. 2073 वि.) के पंचांग में विस्तारपूर्वक किया जाएगा।

ग्रहण–विवरण (सं. 2072 वि.)

लेखक–प्रियव्रत शर्मा,

वि. सं. 2072 (21 मार्च, सन् 2015 से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक की अवधि) में निम्नांकित चार ग्रहण भूमण्डल पर दिखाई पड़ेंगे–

(i) खग्रास चन्द्रग्रहण (4 अप्रैल, 2015 ई.)
(ii) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (13 सितंबर, 2015 ई.)
(iii) खग्रास चन्द्रग्रहण (28 सितंबर, 2015 ई.)
(iv) खग्रास सूर्यग्रहण (9 मार्च, 2016 ई.)

इन 4 ग्रहणों में से 13 सितंबर, 2015 ई. वाले खण्डग्रास सूर्यग्रहण को छोड़ शेष तीनों ग्रहण भारतवर्ष में दिखाई देंगे।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहण का संक्षिप्त विवरण

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (13 सितंबर, 2015 ई.)–यह ग्रहण भाद्रपद–अमावस्, रविवार के दिन 13 सितम्बर, सन् 2015 ई. को द. ध्रुवप्रदेश, द. मेडागास्कर, मोज़म्बिक, ज़िम्बावे, द. अफ्रीका, नामिविया, बोट्सवाना देशों तथा हिन्दमहासागर के बहुत बड़े भाग में खण्डग्रास के रूप में देखा जा सकेगा।

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(i) खग्रास चन्द्रग्रहण (4 अप्रैल, 2015 ई.)– यह ग्रहण चैत्री पूर्णिमा शनिवार को 4 अप्रैल, सन् 2015 ई. के दिन समस्त भारत में ग्रस्तोदय होगा। इसका खग्रास रूप भारत के पूर्वोत्तरी छोर पर बसे आसाम, अरुणाचल, नागालैण्ड, मिज़ोरम आदि प्रदेशों तथा अण्डेमान–निकोबार आदि द्वीप समूह में केवल पांच मिनट के लिए देखा जा सकेगा। इसके स्पर्शादि काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं–

	घं.	मि.
स्पर्श	15	46
खग्रास–आरम्भ	17	28
ग्रहण–मध्य	17	30
खग्रास–समाप्त	17	33
मोक्ष	19	15

(4 अप्रैल, 2015 ई.)

परमग्रासमान 1.005

खग्रासकाल 5 मिनट . पर्वकाल 3घं. 29मि.

सामने दिया ग्रहणचित्र (1) देखें–इसमें इस ग्रहण के दिन भारत के विभिन्न

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (4 अप्रैल, 2015 ई.)

[चन्द्रोदयकाल (भा.स्टैं.टा.)]
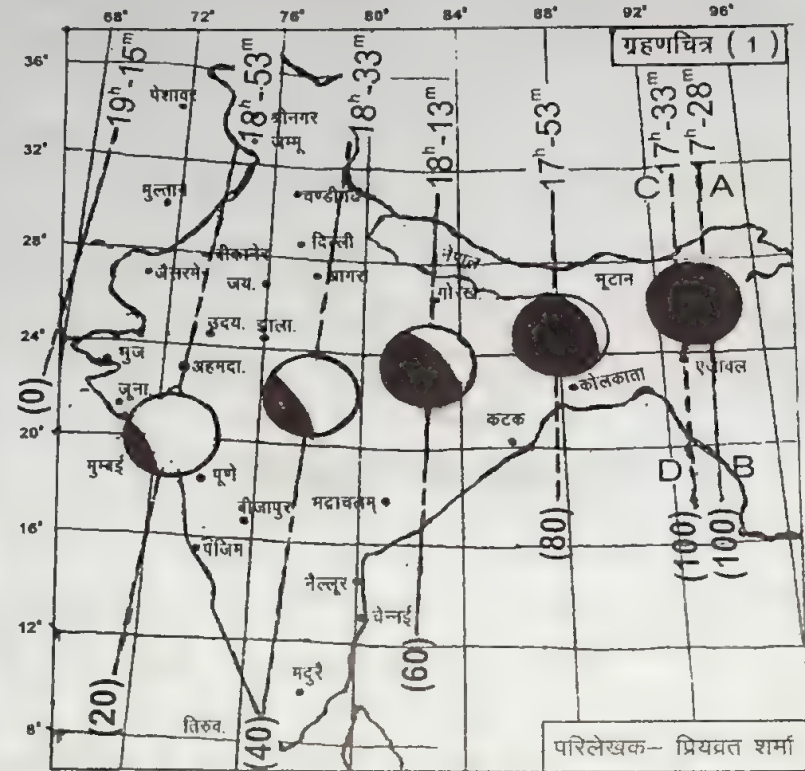
भग्नरेखाओं के ऊपर चन्द्रोदयकाल और उनके नीचे कोष्ठक में तात्कालिक ग्रास दिया गया है । 'A-B' रेखा पर स्थित नगरों में चन्द्रोदय के समय खग्रास प्रारम्भ और 'C-D' रेखा वाले नगरों में चन्द्रोदय के समय खग्रास समाप्त हो रहा होगा।

भागों में चन्द्रोदयकाल एवम् उस समय ग्रहण का ग्रासमान दिखाया गया है। चित्र में दी गई भग्न रेखाओं के ऊपरी प्रान्त में चन्द्रोदयकाल और इनके निचले प्रान्त में कोष्ठक (ब्रेकेट) के भीतर तात्कालिक (चन्द्रोदयकालिक) प्रतिशत ग्रासमान दिया गया है। इसी चित्र में दी गई 'A-B' रेखा पर स्थित नगरों में चन्द्रोदय के समय खग्रास का प्रारम्भ एवम् 'C-D' रेखा पर स्थित नगरों में चन्द्रोदय के समय खग्रास समाप्त हो रहा होगा। खग्रास का यह रूप केवल 5 मिनट तक ही देखा जा सकेगा। चित्र में दी गई 19घं 15मि चन्द्रोदयवाली भग्नरेखा से पश्चिमस्थ देशों में यह ग्रहण दिखलाई नहीं देगा। हां, पाकिस्तान के पूर्वीभाग एवं काश्मीर, पंजाब, राजस्थान एवम् गुजरात से सटे भाग में इसे चन्द्रोदय के समय कुछ मिनटों के लिए अवश्य देखा जा सकेगा।

आगे पृष्ठ.. **29** .पर दिए गए कोष्ठक में इस ग्रहण के दिन (**4** अप्रैल, सन् **2015** ई. को) भारत के कुछ प्रमुख नगरों का चन्द्रोदयकाल तथा ग्रहण का पर्वकाल (चन्द्रोदय से ग्रहणसमाप्ति तक का काल) दिया गया है।

पृष्ठ.. **27**.....पर भारत के कुछ नगरों में ग्रहण की चन्द्रोदयकालिक ग्रासाकृतियां तथा ग्रहण के स्पर्शादि की दिशाएं दर्शाई गई हैं।

ग्रहणसूतक :– इस ग्रहण का सूतक 4 अप्रैल, 2015 ई. को 3 घं. 46 मि. (I.S.T.) से ही प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफल–यह ग्रहण हस्त नक्षत्र एवं कन्या राशि में घटित होगा। अतः जन्मनक्षत्र हस्त एवं कन्या राशि वाले व्यक्तियों के लिए यह चन्द्रग्रहण विशेषरूप से नेष्ट फलप्रद रहेगा।

विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस खग्रास चन्द्रग्रहण का फल नीचे कोष्ठक में देखें–

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	सुख	अपमान	मृत्युतुल्य कष्ट	स्त्री/पतिकष्ट

इस खग्रास चन्द्रग्रहण का अन्य विशेष फल इस प्रकार है–

यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा, अतः सर्दी में होने वाली फसलों को हानि पहुंचेगी एवं प्रधान नेताओं को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। क्योंकि यह ग्रहण खग्रास भी है, अतः कहीं अकाल व जनहानि भी संभव है :–

" ग्रस्तावुदितास्तमितौ शारदधान्यावनीश्वरक्षयदौ।
सर्वग्रस्तो दुर्भिक्षमरकदः पाप–सन्दृष्टः ।।"

ग्रहण के समय चन्द्र पर दृष्टि– ग्रहण के समय कन्या–राशि में स्थित चन्द्र से राहु का सन्निकर्ष एवं सूर्य, बुध, केतु से भी समसप्तक है। अतः खड़ी फसलों की हानि हो। कविजनों, लेखकों, गायकों को कष्ट रहे व त्रिपुरा एवं धान्य उपज वाले प्रमुख प्रदेशों में विशेष संकटापन्न स्थिति बने। ऐसा **'बृहत्संहिता'** अनुसार समझें–

" षष्ठे तु सस्य–कवि–लेखक–गेयसक्तान्।
हन्त्यश्मकत्रिपुर–शालियुतांश्च देशान् ।।"

चैत्रमास में ग्रहणफल– चित्रकार, पेंटर, लेखक, गायक, विज्ञापनकर्ता/मॉडल, वैश्यवर्ग, अभिनेता, शरीर–सौष्ठव से आजीविका–उपार्जन करने वाले, वेदाध्यापक/पाठक, ज्यूलर्स, पौण्ड्र, औड्र, अश्मक व कैकेय देशवासी परेशानी में रहें। कहीं खूब वर्षा, कहीं सूखा, कही बाढ़, कहीं छिड़काव (विचित्र वर्षा) हो–

"चैत्र्यां तु चित्रकार–लेखक–गेयसक्तान्
रूपोपजीवि–निगमज्ञ–हिरण्य–पण्यान्।
पौण्ड्रौड्र–कैकेयजना नव चाश्मकांश्च
ताप : स्पृशत्यमरपोऽत्र विचित्रवर्षी।।"

अयनफल–यह ग्रहण उत्तरायण में घटित होने से उच्चवर्ग (जाति) एवं राजा (शासकों) के लिए कष्टप्रद है

वारफल– शनिवार को ग्रहण होने से ज्वार एवं काली चीजों से लाभ होगा। पीली, लाल (तांबा, सोना आदि) वस्तुओं एवं पशुओं के व्यापार से दो मास में लाभ होगा–

"शनौ युगन्धरिलाभः श्यामवस्तु–महर्घता।
पीतरक्त–स्वर्ण–ताम्र महिषादिक–संग्रहे।।
मासद्वये भवेल्लाभ इत्युक्तं ज्ञानिभिः पुरा।"

नक्षत्रफल– यह ग्रहण हस्त नक्षत्र में घटित होगा। चना, चावल, आदि के व्यापारी लाभान्वित होंगे ।

ग्रहण का अन्य फल–. हस्त नक्षत्र में ग्रहण होने से व्यापारी, वुद्धिजीवि एवं कलाकार वर्ग के लिए यह ग्रहण श्रेष्ठ नहीं।

(ii) खग्रास चन्द्रग्रहण (28 सितंबर, 2015 ई.)–यह ग्रहण भाद्र. पूर्णिमा, चन्द्रवार को 28 सितम्बर, सन् 2015 ई. के दिन अफ्रीका, मैक्सिको, उ. अमेरिका, कनाडा, अलास्का, यूरोप, अरबदेश, इराक, ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि में दिखाई पडेगा। भारत में केवल गुजरात, राजस्थान के पश्चिमी भाग में चन्द्रास्त से पहले इसका अत्यल्प ग्रास सिर्फ आठ–नौ मिनट के लिए ही दीख सकेगा।

इसके स्पर्श आदि काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं–

(28 सितम्बर, 2015 ई.)

	घं.	मि.
स्पर्श	6	37
खग्रास–आरम्भ	7	41
ग्रहण–मध्य	8	17
खग्रास–समाप्त	8	53
मोक्ष	9	57

परमग्रासमान
1.282

खग्रासकाल 1घं 12मि , पर्वकाल 3घं 20मि

पृष्ठ 25 पर ग्रहणचित्र (2) देखिए– इसमें अंकित 'क–ख' रेखा पर स्थित नगरों में चन्द्रग्रहण प्रारम्भ होते ही चन्द्र अस्त हो जाएगा, अतः इस रेखा से पूर्व में स्थित भारत के किसी भी स्थल पर यह ग्रहण नहीं दिखेगा। इस रेखा से पश्चिम में स्थित राजस्थान व गुजरात के कुछ भाग में ही यह चन्द्रास्त के समय 8–9 मिनटों के लिए दिखाई देगा। इस रेखा के आस–पास बसे राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र के कुछ नगरों का इस दिन चन्द्रास्तकाल जानने के लिए सामने दिया कोष्ठक देखें।

यह चन्द्रग्रहण चन्द्रवार को घटित हो रहा है, अतः यह **'चूड़ामणि चन्द्रग्रहण'** है । चूडामणि ग्रहण का शास्त्रों में भारी माहात्म्य वर्णित है, अतः राजस्थान एवम् गुजरात के उस भाग में, जहां यह दृश्य होगा, इस ग्रहणकाल में स्नान–दानादि का विशेष माहात्म्य माना जाएगा।

ग्रहणसूतक :– इस ग्रहण का सूतक 27 सितम्बर, 2015 ई. को 18 घं 37 मि. (I.S.T.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफल–यह ग्रहण 28 सितम्बर, 2015 ई., चन्द्रवार को उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र एवं मीन राशि में घटित होगा। अतः जन्म या नामनक्षत्र उत्तराभाद्रपदा एवं जन्म व नामराशि मीन वाले व्यक्तियों के लिए यह चन्द्रग्रहण विशेषरूप से नेष्ट फलप्रद रहेगा। **विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे कोष्ठक में देखें**–

जन्म / नाम राशि	भेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	हानि	धनलाभ	कष्ट	चिन्ता	सुख	स्त्री / पतिकष्ट	मृत्युतुल्य कष्ट	अपमान	सुख	लाभ	हानि	घात

चन्द्रगहण (28 सितम्बर, 2015 ई.)
ग्रहणचित्र (2) में निर्दिष्ट चन्द्रास्त–रेखा 'क–ख' के पार्श्ववर्ती गुजरात, राजस्थान एवम् महाराष्ट्र के कुछ नगरों में चन्द्रास्तकाल (भा.स्टैं.टा.)

नगर	चन्द्रास्त * घं.	मि.	नगर	चन्द्रास्त * घं.	मि.
अहमदाबाद	6	28	पुणे	6	22
कोल्हापुर	6	21	बड़ौदा	6	25
जयपुर	6	15	बाड़मेर	6	33
जामनगर	6	38	बीकानेर	6	25
जालौर	6	27	बीजापुर	6	14
जूनागढ़	6	37	भावनगर	6	30
जैसलमेर	6	35	भुज	6	40
जोधपुर	6	27	मुंबई	6	27
द्वारिका	6	42	राजकोट	6	35
नागौर	6	24	रापर	6	36
नासिक	6	23	सूरत	6	27
पानाजी	6	22			

* बिम्बशीर्ष दृश्य।

ग्रहण का अन्य विशेष फल इस प्रकार है–

मीन राशि में ग्रहण होने से समुद्रतटवर्ती प्रदेशों, समुद्री पदार्थों (मोती, मूंगा, पैट्रोलियम, रत्नादि) के उपजीवियों, जंगली जीवों, बुद्धिजीवी वर्ग, पानी से रोजी कमाने वालों (मछुवारों, नाविक, जलयान से सम्बद्ध मर्चेण्ट, नेवी आदि) किंवा खगोल वैज्ञानिकों को कष्ट होता है–

" मीने सागर–कूल सागरजल–द्रव्याणि वन्यान् जनान्।
प्राज्ञान् वार्युपजीविनश्च भफलं कुर्मोण–देशाद् वदेत्।।
मीनोपरागे पीड्यन्ते, जलद्रव्याणि सागराः ।
शिलोपजीविनो लोका भविद्यायां च पण्डिताः।।"

कूर्मचक्रानुसार ईशान दिशा में स्थित देशों के लिए यह ग्रहण विशेष उपद्रव–कारक है। तदनुसार उ. ध्रुव के नीचे पर्वतीय प्रदेश, वर्तमान काश्मीर, रामगंगा से सरयू के मध्य का भाग, कुमाऊँ क्षेत्र, चिनाब व जेहल्म का नीचला भाग, किरात (आर्यावर्त देश), बिहार एवं चीन, नेपाल, मलेशिया, फिलिपीन्स के लिए यह ग्रहण प्राकृतिक आपदाएं एवं यहां के शासकों के लिए कठिन परिस्थितियां पैदा करे।

अयनफल– यह ग्रहण दक्षिणायन में हो रहा है। अतः वैश्यवर्ग, व्यापारी एवं सफाई कर्मचारी आदि सेवधर्मियों के लिए कष्टप्रद है। ईशान–कोण में म्लेच्छों, सैनिकों एवं बिजली किंवा अग्नि से आजीविका कमाने वाले उद्योगपतियों को भी परेशानी अनुभव होगी।

ग्रहण के समय चन्द्र पर ग्रहदृष्टि– ग्रहणसमय मीनराशिस्थ चन्द्र पर सूर्य, बुध, राहु की दृष्टि है। खड़ी फसलों को हानि किंवा अनेक प्रकार की राजनैतिक या प्राकृतिक परेशानियां उपस्थित होने का भय है।

आश्विन मास में ग्रहणफल– चीन, अरबराष्ट्र, पाकिस्तान, काश्मीर, समुद्रतटवर्ती देश आपदाग्रस्त रहें।

यह ग्रहण कहीं ग्रस्तोदित, कहीं खग्रास एवं कहीं ग्रस्तास्त होगा। किंच– सूर्य, बुध, राहु की मीनस्थ चन्द्र पर दृष्टि भी है।

सर्दी में होने वाली फसलों का नाश एवं शासकों के सामने विकट परिस्थितियां उपस्थित हों। कहीं अकाल की स्थिति व कहीं प्राकृतिक प्रकोप किंवा उग्रवादजन्य जनधनहानि भी संभव है–

" ग्रस्तावुदितास्तमितौ शारदधान्यावनीश्वरक्षयदौ।
सर्वग्रस्तो दुर्भिक्षमरकदः पाप–सन्दृष्टः।।"

उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र में ग्रहणफल– नमक आदि के व्यापारी तीन मास में लाभान्वित हों–

"लाभस्त्रिमासि निर्दिष्टमुभायां लवणादितः।"

वारफल –यह ग्रहण चन्द्रवार को होने से अन्न, घी तेल एवं तिल आदि के संग्रह से लाभ हो।

योगफल –यह ग्रहण वृद्धियोग में घटित हो रहा है। प्रतिष्ठित व्यक्ति को यशलाभ हो एवं खड़ी फसलों को हानि पहुंचे तथा मंहगाई बहुत रहे।

इस ग्रहण में विशेष –यह चन्द्रग्रहण चन्द्रवार को घटित होने से 'चूड़ामणि चन्द्रग्रहण' कहलाएगा। इस ग्रहण की समयावधि में दान, जप, मन्त्रसाधना एवं होमादि से विशेष पुण्य उपलब्धि होती है–

"बहुफलं जपदान–हुतादिके स्मृति–पुराणविदः प्रवदन्ति हि ।"

अपि च– यह चन्द्रग्रहण भाद्र. शुक्ल पूर्णिमा अर्थात् प्रतिपदा–श्राद्ध (महालयारम्भ) वाले दिन घटित हो रहा है। अतः ग्रहण के समय गंगा (तीर्थ) स्नान करके जपदान, मन्त्रजाप, शिवार्चन एवं अपने पूर्वजों (पितरों) का श्राद्ध अवश्य करें। इस समय किया गया दान भूदानतुल्य है। सभी ब्राह्मणों को दिया गया दान ब्रह्मयज्ञ के समान फलद है । ग्रहणकाल में स्नान करते समय घर में परमपावनी गंगा का ध्यान करते हुए स्नान करें–यह महापुण्यप्रद माना गया है । जो इस विधि को नहीं मानता, उसे पतित ही समझें। **'ज्योतिर्निबन्धकार'** ने लिखा है –

"चन्द्र – सूर्यग्रहे यस्तु स्नानं दानं शिवार्चनम्।
न करोति पितुः श्राद्धं नरोऽसौ पतितो भवेत् ।।
सर्वं भूमिसमं दानं सर्वे ब्रह्मसमा द्विजाः ।
सर्वं गंगाजलं तोयं ग्रहणे नात्र संशय :।।"

(iii) खग्रास सूर्यग्रहण (9 मार्च, सन् 2016 ई.) – यह ग्रहण फाल्गुनी अमावस, बुधवार को 9 मार्च, सन् 2016 ई. के दिन पश्चिमोत्तरी भाग को छोड़ शेष पूरे भारत में प्रातःकाल खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा। भारत

के अतिरिक्त यह ग्रहण ऑस्ट्रेलिया, न्यूगायना, पलाऊ, सिंगापुर, मलेशिया, इण्डोनेशिया, थाईलैंड, ताइवान, जापान, चीन, म्यांमार एवं श्रीलंका आदि में दिखाई देगा। इसकी खग्रास आकृति केवल इण्डोनेशिया एवं प्रशान्त व हिन्दमहासागर में दिखाई देगी।

भारत तथा बंगलादेश, नेपाल, भूटान और श्रीलंका के प्रसिद्ध लगभग 250 नगरों के लिए इस ग्रहण के स्पर्श, मध्य एवं मोक्ष के काल तथा ग्रहण–मध्यकालिक ग्रासमान आगे 3 पृष्ठों (32...–...34) पर दिया गया है। यहां जिन नगरों के आगे केवल स्पर्शकाल अथवा स्पर्शकाल और मध्यकाल (परम ग्रासकाल) दोनों के साथ बिन्दु (Black-dot) लगी है, उन नगरों में सूर्य ग्रस्त ही उदित होगा, वहां बिन्दु वाले स्पर्श/मध्यकाल सूर्योदय से पहिले ही घटित हो जाएंगे और वहां केवल मोक्षकाल ही यदि मध्यकाल बिन्दुरहित है तो वह भी सूर्योदयानन्तर देखा जा सकेगा। **जैसे**– आगरा के आगे स्पर्शकाल (5 घं. 39 मि.) और मध्यकाल (6 घं. 11 मि.) – दोनों बिन्दु से अंकित हैं, अतः समझना चाहिए, आगरा में यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा और ये दोनों घटनाएं (ग्रहण– स्पर्श और ग्रहणमध्य) सूर्योदय से पहिले ही वहां घटित हो जाएंगी, अतः ये वहां दृश्य नहीं होंगी। केवल ग्रहण–मोक्षकाल (6घं. 45 मि.) ही वहां सूर्योदयानंतर देखा जा सकेगा। जिस नगर का स्पर्शकाल बिन्दुरहित है, उस नगर में सूर्य ग्रस्त उदित नहीं होगा। वहां ये सभी (स्पर्श, मध्य, मोक्षकाल) घटनाएं सूर्योदयानंतर देखी जा सकेंगी। जिस नगर के आगे यहां स्पर्श आदि कोई भी काल नहीं दिया गया है, उस नगर में सूर्यग्रहण दृश्य नहीं होगा।

पृष्ठ...26... पर **ग्रहणचित्र (3)** में दर्शाया गया है कि – यह ग्रहण भारत के किन–किन स्थलों पर सूर्योदय के समय प्रारम्भ होगा ? सूर्योदय के समय भारत में कहां–कहां ग्रहण–मध्यकाल (परमग्रास मानकाल) होगा ? यह भी इस चित्र में दर्शाया गया है। इस चित्र में दी गई वक्र रेखा **'क–ख'** पर स्थित नगरों में यह ग्रहण सूर्योदय के समय समाप्त हो जाएगा, जिससे इस रेखा से पश्चिम में स्थित नगरों में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा, किन्तु चित्र में दी गई **'क–च'** रेखा से ऊपर भी यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। चित्र में दी गई **'क–घ'** रेखा से पूर्व में स्थित नगरों में यह ग्रहण सूर्योदय के बाद ही प्रारम्भ होगा। अर्थात् वहां यह ग्रहण ग्रस्तोदय नहीं होगा, जबकि शेष भारतीय स्थलों पर सूर्य ग्रस्त ही उदित होगा।

पृष्ठ...26...पर **ग्रहणचित्र (4)** दिया गया है। उससे पाठक स्पष्टता से जान सकेंगे कि – यह ग्रहण भारत के किन–किन प्रदेशों तथा प्रदेशभागों में दिखाई पड़ेगा ?

पृ..28..पर भारत के 5 नगरों में इस ग्रहण की मध्यकालीन ग्रास आकृतियां दर्शाई गई हैं। भारत में सूर्य दक्षिण की ओर से ग्रस्त दिखाई देगा।

सूर्य ग्रस्तोदित हो तो ग्रहण का पर्वकाल (स्नान, दान, जपादि का अनुष्ठानकाल) सूर्योदय से ही प्रारम्भ माना जाता है और वह ग्रहणमोक्ष तक चलता है। जहां सूर्य ग्रस्तोदित न हो (यानि सूर्योदयानंतर ग्रहणारम्भ हो) वहां पर्वकाल ग्रहणस्पर्श से ग्रहणमोक्ष तक होता है। आगे पृष्ठ **30** से **31** पर भारत, बंगलादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका के लगभग 250 नगरों के सूर्योदय एवं पर्वकाल दिए गए हैं।

विशेष नोट :– कृपया सूर्यग्रहण को बिना उपकरण के नंगी आँखों (Naked eyes) से भूल कर भी न देखें।

ग्रहणसूतक :– इस ग्रहण का सूतक 8 मार्च, सन् 2016 ई. को 17 घं. 4 मि. (अर्थात् सायं 5 घं. 4 मि.) से शुरू होगा।

ग्रहण का राशिफल–क्योंकि यह सूर्यग्रहण **पू. भा. नक्षत्र**, साध्य योग एवं **कुम्भस्थ चन्द्र के समय** घटित हो रहा है, अतः जन्म या नामनक्षत्र पू. भा. एवं जन्म व नामराशि कुंभ वाले व्यक्तियों के लिए विशेष कष्टप्रद है। **विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिये इस सूर्यग्रहण का फल नीचे कोष्ठक में दिया गया है–**

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	लाभ	सुख	अपमान	मृत्युतुल्य कष्ट	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात	हानि

सूर्यग्रहण का अन्य फल– यह ग्रहण फाल्गुन अमावस बुधवार को पू. भा. नक्षत्र एवं कुंभराशिस्थ चन्द्र के समय घटित होगा, अतः यह ग्रहण सीमान्त, पर्वतीय एवं पश्चिमी भूभाग में रहने वाले लोगों व राजनीतिज्ञों के लिए कष्टप्रद है।

वारफल – बुधवार को सूर्यग्रहण होने से लाल रंग की चीजें सुपारी आदि के संग्रह से लाभ मिलेगा –

"बुधे मूंग–रक्तवस्तुसंग्रहाल्लाभः।"

मासफल – क्योंकि यह ग्रहण फाल्गुन मास में हो रहा है, अतः–**"फाल्गुने दुःखकृत्।"** राजा एवं प्रजा में रोग एवं अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से कष्ट हो।

ग्रहणसमय–ग्रहस्थितिफल – इस सूर्यग्रहण के समय सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शुक्र एवं केतु–ये सब एकत्र हैं। इन पर शनियुत मंगल की दृष्टि भी है; अतः जनजीवनोपयोगी वस्तुएं मंहगी होंगी। कहीं आगे अकाल की स्थिति के आसार भी बनेंगे। प्रधाननेताओं के लिए भी कष्टप्रद संकेत मिलेगा। कहीं विश्व में शासनसत्ता में परिवर्तन भी संभव है–

"एकराशिस्थिताः ह्येते सौम्य–शुक्र–दिनाधिपाः।
सर्वधान्य–महर्घत्वं मेघाः स्वल्प–जलप्रदा ः।।"

ग्रहण के बारे में क्रूरग्रहसंयुक्त सूर्य का फल इस प्रकार है–

"क्रूरग्रहसंयुक्ते सूर्येन्द्वोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः।
राष्ट्रभंगं विजानीयात् प्राहुर्प्राज्ञा मुनीश्वराः।।"

लेकिन गुरु की सूर्यादि ग्रहों पर दृष्टि होने से ये उल्लिखित नेष्टफल हमारे देश में निष्क्रिय हो जाते हैं; ऐसा **'बृहत्संहिता'** में लिखा है–

"यदशुभमवलोकनाभिरुक्तं ग्रहजनितं ग्रहणे प्रमोक्षणे वा।
सुरपति–गुरुणावलोकिते तच्छममुपयाति जलैरिवाग्निरिद्धः।।"
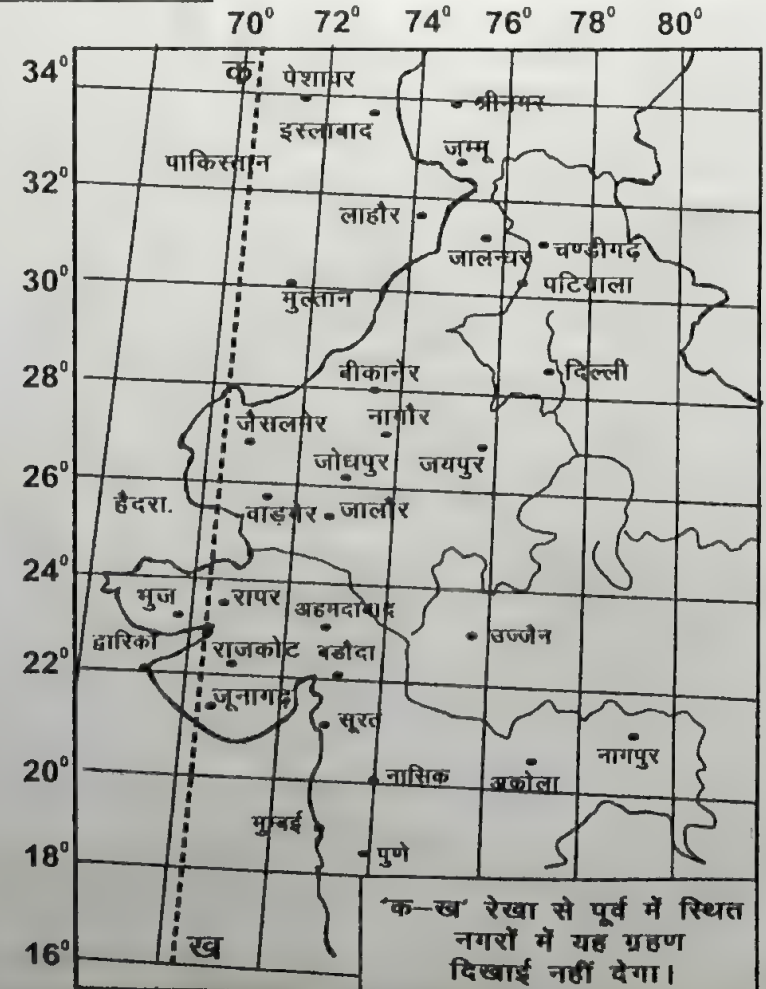
ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण (9 मार्च, 2016 ई.)
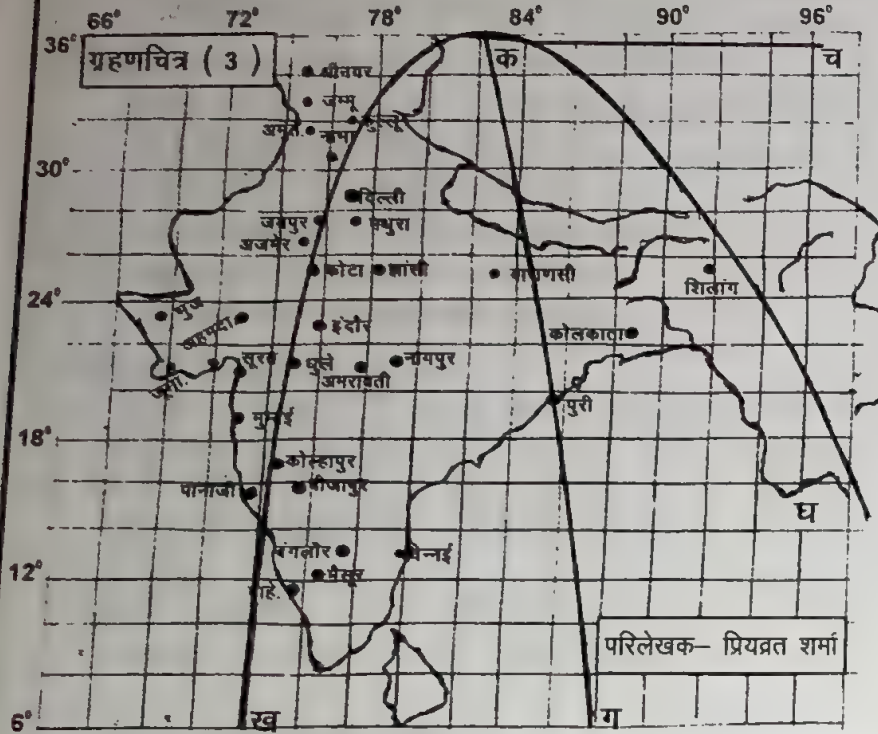
'क–च' रेखा से ऊपर यह ग्रहण नहीं होगा।

'क–घ' रेखा पर स्थित नगरों में यह ग्रहण सूर्योदय के समय प्रारम्भ होगा। इस रेखा से पश्चिम में ग्रहण ग्रस्तोदय होगा एवं इससे पूर्व में यह सूर्योदय के बाद प्रारम्भ होगा।

'क–ग' रेखा पर स्थित नगरों में सूर्योदय के समय ग्रहणमध्य (ग्रहण का परमग्रास) होगा। इस रेखा से पश्चिम में ग्रहण का परमग्रास नहीं दीखेगा।

'क–ख' रेखा पर स्थित नगरों में ग्रहण सूर्योदय के समय समाप्त हो जाएगा, जिससे इस रेखा से पश्चिमस्थ भारतीय नगरों तथा अन्य प्रदेश–देशों में यह ग्रहण दृश्य नहीं होगा।

सूर्यग्रहण (9 मार्च, 2016 ई.)

ग्रहणचित्र (4)
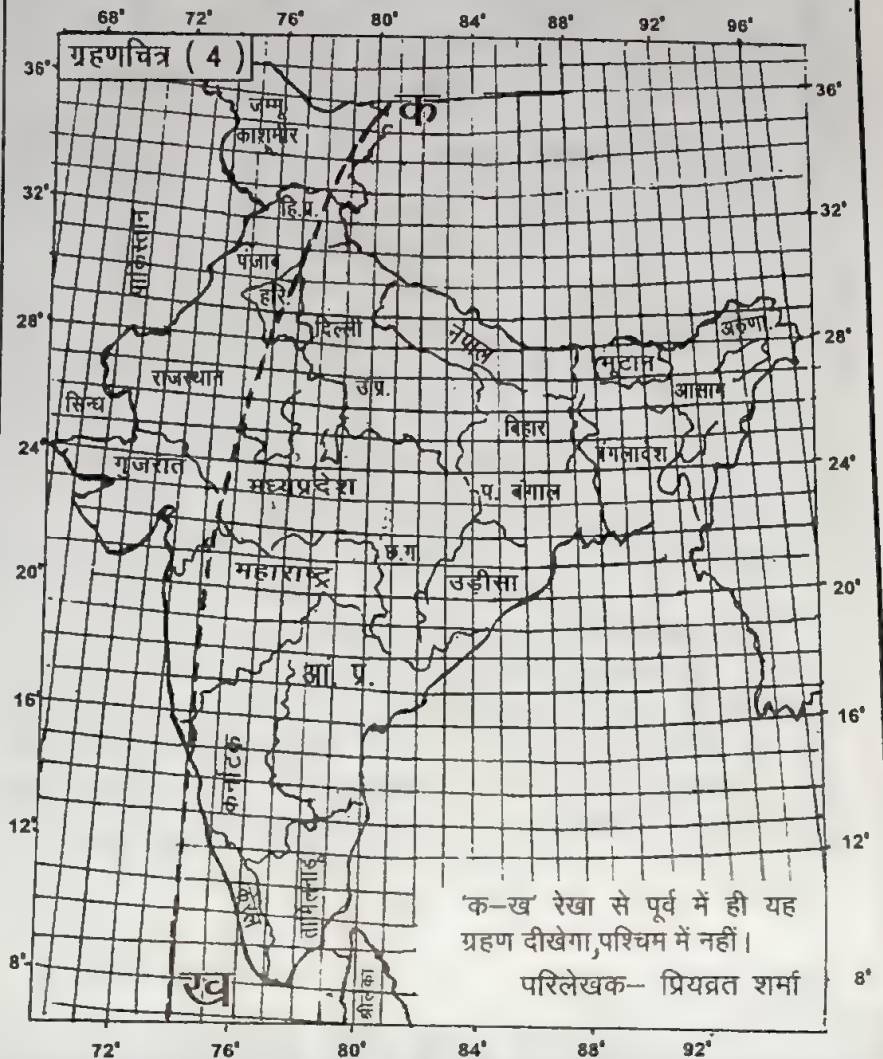
'क–ख' रेखा से पूर्व में ही यह ग्रहण दीखेगा,पश्चिम में नहीं।

परिलेखक– प्रियव्रत शर्मा

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण
(4 अप्रैल, 2015 ई.)

स्पर्श, खग्रास आरम्भ, समाप्ति एवम् मोक्ष की दिशाएं

उत्तर

खग्रास समाप्ति → चन्द्र ← खग्रासारम्भ

पूर्व — चन्द्र

स्पर्श → चन्द्र ← मोक्ष

दक्षिण
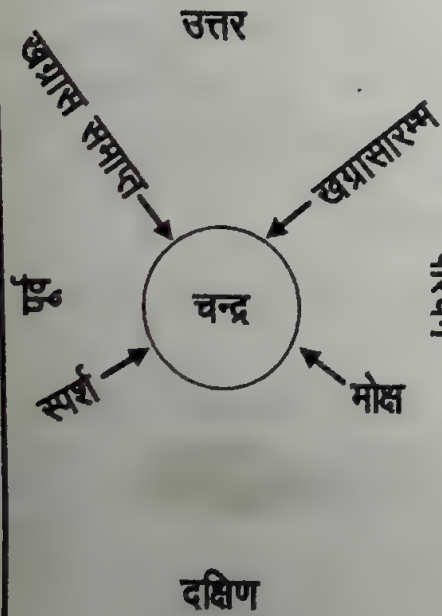
ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (4 अप्रैल, 2015 ई.)
(कुछ नगरों में चन्द्रोदयकालीन ग्रासमान)

उत्तर

पूर्व / पश्चिम

चण्डीगढ़	दिल्ली	शिमला	देहरादून
18 घं. 42 मि.	18 घं. 39 मि.	18 घं. 41 मि.	18 घं. 36 मि.
35%	35%	35%	45%
पटना	**वाराणसी**	**कोलकाता**	**इम्फाल**
70%	60%	80%	100%
18 घं. 05 मिं.	18 घं. 13 मि.	17 घं. 53 मि.	17 घं. 28 मि.

दक्षिण

(ग्रास की दिशाएं लगभग हैं।) परिलेखक—प्रियव्रत शर्मा,

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (9 मार्च, 2016 ई.)

(कुछ नगरों में ग्रहण–मध्यकालिक ग्रास आकृतियां)
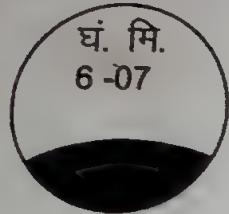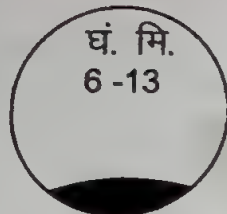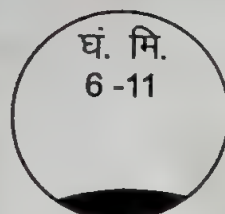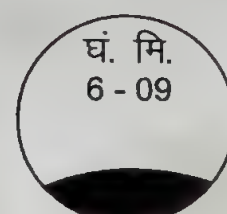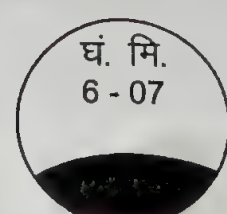
(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है ।)

ग्रहणादर्श

लेखक– प्रियव्रत शर्मा

[सन् 2016 से सन् 2050 ई. तक भारत में दृश्य सूर्य–चन्द्रग्रहणों का सांगोपांग विवरण]

इस पुस्तक में सन् 2016 से सन् 2050 ई. तक (35 वर्षों में) भारतभूमि पर दिखलाई पड़ने वाले सभी सूर्य–चन्द्र-ग्रहणों का सर्वाङ्गीण विवेचन है। चन्द्रग्रहण के स्पर्श, मध्य, मोक्ष और खग्रासारम्भ–समाप्ति के सेकण्ड तक शुद्ध काल, ग्रासमान तथा ग्रस्तोदय, ग्रस्तास्त ग्रहण वाले भारतीय स्थलों के अक्षांश–रेखांश निर्दिष्ट हैं।

इस 35 वर्षीय अवधि में भारतीय क्षेत्र में घटित होने वाले सूर्यग्रहणों के विभिन्न अक्षांश– रेखांशीय स्थलों के स्पर्श, मध्य, मोक्ष के सेकण्ड तक शुद्ध काल तथा परमग्रासमान पृथक्–पृथक् कोष्ठकों में दिए गए हैं। सूर्यग्रहण के ग्रस्तोदयास्तवाले स्थलों के अक्षांश–रेखांशों को भी पृथक् कोष्ठकों में दिया गया है। खग्रास एवम् कंकण सूर्यग्रहणों के प्रारम्भ–समाप्तिकाल तथा खग्रास– कंकण ग्रहण के पथ (पट्टी) की दक्षिणोत्तरी सीमाओं के अक्षांश, रेखांश किंच खग्रास–कंकणग्रहण के मार्ग (पट्टी) की मध्यवर्ती रेखाओं के अक्षांश–रेखांश भी दिए गए हैं, जिनकी मदद से यह अनायास जाना जा सकता है कि– भारत में अमुक खग्रास या कंकण ग्रहण कहां–कहां, कब– कब दिखाई देगा तथा किन स्थलों पर खग्रास, कंकण ग्रहण की अवधि कितनी होगी ? इसके साथ ही भारत के प्रसिद्ध 225 नगरों में प्रत्येक सूर्यग्रहण के स्पर्श, मोक्ष आदि काल भी पृथक् कोष्ठक में प्रदर्शित हैं।

यहां दिए गए सूर्यग्रहण के विभिन्न अक्षांश–रेखांशीय स्पर्श–मोक्षादि के कालों द्वारा कोई भी व्यक्ति भारतमानचित्र पर स्पर्श–मोक्षादिदर्शक रेखाएं भी आसानी से अंकित कर सकता है और उनसे किसी भी नगर / ग्राम में उस सूर्यग्रहण के स्पर्शादि काल एक ही दृष्टि में तुरन्त जान सकता है।

ग्रहण विश्व के अन्य किन–किन देशों में दृश्य होगा, इसका निर्देश करने वाले भूगोल चित्र भी दिए गए हैं।

भारतीय भूभाग पर दृश्य सूर्य–चन्द्रग्रहणों के सभी खगोलीय चमत्कारों (**Celestial Phenomena**) का इसके सदृश स्पष्ट एवं परिपूर्ण विवेचन आपको अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा, यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

भारतीय पञ्चाङ्गकारों के लिए तो यह प्रकाशन वरदान सिद्ध होगा। यह बहुत शीघ्र प्रकाशित होगा– प्रतीक्षा कीजिए।

चन्द्रोदय (भा.स्टैं.टा.) (4 अप्रैल, 2015 ई.)

नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय-काल घं. मि.	पर्वकाल घं. मि.
अगरतला	17 38	1 37	कोयम्बटूर	18 32	0 43	झुंझुनु	18 46	0 29	बाड़मेर	19 02	0 13	लुधियाना	18 46	0 29
अनन्तपुर	18 31	0 54	कोलकाता	17 52	1 23	डिब्रूगढ़	17 25	1 50	बीकानेर	18 55	0 20	वडोदरा	18 52	0 23
अम्बाला	18 41	0 34	कोल्हापुर	18 47	0 28	तिरुवनन्तपुरम्	18 31	0 44	बीजापुर	18 40	0 35	वर्धा	18 30	0 45
अमृतसर	18 50	0 25	कोहिमा	17 28	1 47	दिल्ली	18 39	0 36	बैंगलोर	18 30	0 45	वाराणसी	18 13	1 02
अलवर	18 41	0 34	खन्ना (पं)	18 44	0 31	देहरादून	18 36	0 39	भावनगर	18 57	0 18	विजयवाडा	18 19	0 56
अलीगढ़	18 35	0 40	गंगटोक	17 51	1 24	धर्मशाला	18 45	0 30	भुज	19 08	0 07	विशाखापटनम्	18 09	1 06
अहमदाबाद	18 55	0 20	गान्धीनगर	18 55	0 20	नागपुर	18 27	0 48	भुवनेश्वर	17 59	1 16	शिमला	18 41	0 34
आगरा	18 35	0 40	गुड़गांव	18 40	0 35	नान्देड़	18 34	0 41	भोपाल	18 35	0 40	शिलांग	17 37	1 38
इन्दौर	18 42	0 33	गुवाहाटी	17 38	1 37	नाभा	18 43	0 32	मण्डी (हि.प्र.)	18 42	0 33	शोलापुर	18 48	0 27
इम्फाल	17 28	1 47	गोरखपुर	18 13	1 02	नाहन	18 41	0 34	मदुरै	18 27	0 48	श्रीनगर (का.)	18 52	0 23
इलाहाबाद	18 18	0 57	ग्वालियर	18 34	0 41	नैनीताल	18 30	0 45	मथुरा	18 38	0 37	संगरूर	18 46	0 31
ईटानगर	17 30	1 45	चण्डीगढ़	18 42	0 33	नैल्लूर	18 21	0 54	मा. आबू	18 56	0 19	सतारा	18 47	0 28
उज्जैन	18 42	0 33	चूरू	18 45	0 30	पंचकूला	18 41	0 34	मुज़फ्फरनगर	18 38	0 37	सलीम	18 28	0 47
उदयपुर (राज.)	18 52	0 23	चेन्नई	18 19	0 56	पटना	18 05	1 10	मुम्बई	18 53	0 22	सहारनपुर	18 38	0 37
ऐजावल	17 32	1 43	जबलपुर	18 25	0 50	पटियाला	18 43	0 32	मेरठ	18 37	0 38	सिरसा	18 49	0 26
औरंगाबाद	18 43	0 32	जमशेदपुर	17 59	1 16	पठानकोट	18 47	0 28	मैसूर	18 34	0 41	सीकर	18 47	0 28
कटक	18 01	1 14	जम्मू	18 51	0 24	पाण्डिचेरी	18 21	0 54	मोहाली	18 43	0 32	सूरत	18 53	0 22
कपूरथला	18 48	0 27	जयपुर	18 44	0 31	पणजी	18 47	0 28	यवतमाल	18 33	0 42	हमीरपुर (उ.प्र.)	18 26	0 49
कठुआ	18 48	0 27	जलगांव	18 42	0 33	पानीपत	18 40	0 35	रतलाम	18 45	0 30	हरिद्वार	18 36	0 39
कांगड़ा	18 45	0 30	जामनगर	19 06	0 09	पुणे	18 48	0 27	राउरकेला	18 06	1 09	हिसार	18 46	0 29
कानपुर	18 25	0 50	जालन्धर	18 47	0 28	पुरी	18 00	1 15	रांची	18 03	1 12	हैदराबाद (आं.प्र)	18 29	0 46
कुराली (पं.)	18 43	0 32	जैसलमेर	19 04	0 11	फरीदकोट	18 50	0 25	राजकोट	19 03	0 12	होशियारपुर	18 46	0 29
कुरुक्षेत्र	18 56	0 19	जोधपुर	18 55	0 20	फरीदाबाद	18 39	0 36	रायपुर	18 17	0 58			
कुल्लू	18 42	0 33	जोरहाट	17 28	1 47	फिरोजपुर	18 54	0 21	रोपड़	18 44	0 31			
कोटा	18 43	0 32	झांसी	18 33	0 42	बठिंडा	18 49	0 26	लखनऊ	18 23	1 52			

ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण (9 मार्च, 2016 ई.)

[सूर्योदय (भा. स्टैं. टा.) , पर्वकाल]

नगर	सूर्योदय काल घं. मि.	पर्व-काल मि.	नगर	सूर्योदय काल घं. मि.	पर्व-काल मि	नगर	सूर्योदय काल घं. मि.	पर्व-काल मि.	नगर	सूर्योदय काल घ मि	पर्व-काल मि.	नगर	सूर्योदय काल घं. मि.	पर्व-काल मि.
अकोला	6 39	8	उज्जैन	6 45	2	कैथल	6 45	2	छतरपुर	6 30	17	त्रिवेन्दम् (के.)	6 35	12
अगरतला	5 43	69	उदयपुर (रा.)	6 54	–	कोचीन	6 39	–	छपरा	6 10	37	थानेसर	6 43	–
अजमेर	6 50	–	उन्नाव	6 28	18	कोटखाई	6 41	–	जबलपुर	6 28	19	दतिया	6 35	11
अनन्तनाग (का.)	6 51	–	ऊधमपुर (का.)	6 52	–	कोटा	6 46	–	जमशेदपुर	6 03	46	दरभंगा	6 05	43
अनूपशहर (उ.प्र)	6 37	8	ऊना	6 47	–	कोंडैकनाल	6 34	13	जम्मू	6 52	–	दार्जिलिंग	5 57	51
अमरावती (म.)	6 36	11	एटा	6 35	10	कोयम्बटूर	6 36	11	जयपुर	6 47	–	दिल्ली	6 41	3
अमरोहा (उ. प्र.)	6 36	8	ऐज़ावल	5 37	76	कोलकाता	5 54	56	जामनगर	7 08	–	देवबन्द	6 40	4
अमृतसर	6 52	–	कटक	6.03	47	कोहिमा	5 33	77	जालन्धर	6 49	–	देवरिया	6 15	32
अमेठी (उ.प्र.)	6 22	24	कटनी	6 26	21	खन्ना	6 46	–	जालोर	6 59	–	देवास (म.प्र.)	6 44	3
अम्बाला	6 44	–	कठुआ (का.)	6 50	–	खुर्जा	6 39	6	जोरहाट	5 33	73	देवप्रयाग	6 37	6
अयोध्या	6 21	25	कन्नौज	6 30	16	गंगटोक	5 55	53	जीन्द	6 44	–	देहरादून	6 39	4
अर्की (हि.प्र.)	6 42	0	कपूरथला	6 49	–	गया	6 09	39	जैसलमेर	7 06	–	द्वारिका	7 12	–
अलवर	6 43	–	करनाल	6 43	–	गाजियाबाद	6 40	4	जोधपुर	6 57	–	धनबाद	6 02	47
अलीगढ़	6 38	7	कांगड़ा	6 47	–	गुड़गांव	6 42	3	झरिया	6 02	47	धर्मशाला	6 46	–
अल्मोडा	6 32	12	कांचीपुरम्	6 26	22	गुंटकल	6 35	13	झालटापाटन	6 44	12	धूरी	6 48	–
अहमदाबाद	6 57	–	काठियावाड़	7 04	–	गुरदासपुर	6 50	–	झालावाड़	6 52	–	नरैना	6 53	–
आगरा	6 38	7	कानपुर	6 27	19	गुआहाटी	5 42	69	झांसी	6 35	11	नवलगढ़	6 49	–
आजमगढ़	6 16	31	कारगिल	6 47	–	गोरखपुर	6 16	30	झुंझुनु	6 48	–	नागपुर	6 30	18
आबू	6 58	–	कालका	6 43	–	ग्वालियर	6 36	10	टूटिकोरिन	6 30	17	नागोर	6 55	–
आरा (बि.)	6 11	36	काशी	6 17	30	चण्डीगढ़	6 44	–	टोंक	6 46	–	नाथद्वारा	6 54	–
इटारसी	6 37	10	किशनगढ़ (रा.)	7 08	–	चम्बा	6 47	–	डिब्रूगढ़	5 30	70	नाभा	6 46	–
इटावा	6 34	12	कुराली (पं.)	6 45	–	चितौड़गढ़	6 50	–	डीडवाना	6 52	–	नारनौल	6 45	–
इन्दौर	6 45	2	कुरुक्षेत्र	6 44	–	चूरु	6 50	–	डूंगरपुर	6 53	–	नालागढ़	6 44	–
इम्फाल	5 33	80	कुल्लू	6 44	–	चीरापूंजी	5 42	69	तंजावर	6 27	20	नाहन	6 42	–
ईटानगर	5 35	72	केप कैमोरिन	6 33	14	चेन्नई	6 24	24	तिरुपति	6 28	20	नासिक	6 52	–

ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण (9 मार्च, 2016 ई.)

[सूर्योदय (भा. स्टैं. टा.) , पर्वकाल]

नगर	सूर्योदय काल घं. मि.	पर्व-काल मि.	नगर	सूर्योदय काल घं. मि.	पर्व-काल मि.	नगर	सूर्योदय काल घं. मि.	पर्व-काल मि.	नगर	सूर्योदय काल घं. मि.	पर्व-काल मि.
नीमच	6 49	–	बंगलोर	6 34	13	मन्दसोर	6 48	–	लखनऊ	6 26	20
नैनीताल	6 32	12	बदायूं	6 33	12	मसूरी	6 39	4	लुधियाना	6 47	–
पंचकूला	6 43	–	बलिया	6 12	35	महेन्द्रगढ	6 45	–	वडोदरा (गु.)	6 55	–
पटना	6 08	39	बाड़मेर	7 03	–	मारवाड़ जं.	6 54	–	वाराणसी	6 17	30
पटियाला	6 45	–	बांसवाड़ा	6 50	–	मालेरकोटला	6 47	–	विजयवाड़ा	6 24	24
पठानकोट	6 49	–	बिजनौर	6 37	7	मिर्जापुर	6 19	28	विशाखापत्तनम्	6 13	36
पानाजी	6 50	–	बिलासपुर (म.प्र.)	6 19	29	मुंगेर	6 03	45	वेरावल	7 05	–
पाण्डिचेरी	6 24	24	बिलासपुर (हि.प्र.)	6 44	–	मुज़फ्फरनगर	6 39	5	शाहदरा	6 41	3
पानीपत	6 42	–	बीकानेर	6 57	–	मुम्बई	6 55	–	शिमला	6 42	–
पालमपुर	6 46	–	बीजापुर	6 43	5	मुरादाबाद	6 35	9	शिलांग	5 41	70
पाली	6 55	–	बुलन्दशहर	6 38	7	मेरठ	6 39	5	शोलापुर	6 42	6
पिलानी	6 48	–	बून्दी	6 46	–	मैसूर	6 37	10	श्रीनगर (का.)	6 53	–
पुंछ	6 55	–	बृन्दावन	6 39	6	मैंगलोर (क.)	6 46	1	संगरूर	6 47	–
पुणे	6 50	–	बठिण्डा	6 51	–	मोगा	6 50	–	सरहिन्द	6 45	–
पुरनिया	5 59	49	भरतपुर	6 40	5	रतनगढ़	6 51	–	सहारनपुर	6 41	2
पुरी	6 04	46	भागलपुर	6 01	47	रतलाम	6 48	–	सागर	6 33	14
पोरबन्दर	7 09	–	भिवानी	6 45	–	राजकोट	7 05	–	सांगानेर	6 47	–
पोर्ट ब्लेअर	5 33	81	भीनमाल	7 00	–	रांची	6 07	42	सिरसा	6 51	–
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	6 21	25	भुज(गु.)	7 09	–	रामपुर बुशहर	6 40	–	सीकर	6 49	–
प्रयाग	6 21	26	भुवनेश्वर	6 04	46	रामेश्वरम्	6 26	21	सूरत	6 56	–
फरीदकोट	6 52	–	भुसावल	6 44	3	रायपुर (छ.ग.)	6 20	28	सूरतगढ़	6 54	–
फरीदाबाद	6 41	4	भोपाल	6 38	9	रिवाड़ी	6 43	–	सोलन	6 42	–
फाज़िल्का	6 55	–	मण्डी (हि.प्र.)	6 44	–	रीवां	6 25	22	हमीरपुर (उ.प्र.)	6 28	18
फिरोज़पुर	6 52	–	मथुरा	6 39	6	रोपड़	6 45	–	हमीरपुर (हि.प्र.)	6 46	–
फुलेरा	6 49	–	मदुरै	6 31	16	रोहतक	6 43	–	हरिद्वार	6 38	5

नगर	सूर्योदय काल घं. मि.	पर्व-काल मि.
हाथरस	6 38	7
हापुड़	6 39	5
हांसी	6 46	–
हिसार	6 47	–
हैदराबाद	6 32	16
होशंगाबाद	6 37	10
होशियारपुर	6 48	–
कुछ विदेशी नगर		
नेपाल		
काठमाण्डू	6 09	37
धनकुटा	6 01	47
पोखरा	6 14	31
रामेछाप	6 06	41
बंगलादेश		
चिटगांग	5 41	71
जैस्सोर	5 51	60
ढाका	5 46	65
बालूरघाट	5 54	55
राजशाही	5 54	56
सिल्हिट	5 42	69
भूटान		
थिम्फू	5 50	58
श्रीलंका		
कैण्डी	6 20	27
कोलम्बो	6 24	23
गाले	6 21	26
जाफना	6 24	23
बट्टीकलोआ	6 16	31

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (9 मार्च, 2016 ई.)

[भारत, नेपाल, भूटान, बंगलादेश और श्रीलंका के प्रमुख नगरों के लिए स्पर्शादिकाल एवं परम ग्रासमान (प्रतिशत)] (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

नगर	स्पर्श घं. मि	मध्य घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	परमग्रास मान प्रतिशत	नगर	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	मोक्ष घ. मि.	परमग्रास मान प्रतिशत	नगर	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि	मोक्ष घं. मि.	परमग्रास मान प्रतिशत
अकोला	5 23 •	6 04 •	6 47	37	उदयपुर (राज.)	—	—	—	—	कोचीन	5 07 •	5 55 •	6 47	67
अगरतला	5 30 •	6 09	6 52	26	उन्नाव	5 34 •	6 10 •	6 46	21	कोटा	—	—	—	—
अजमेर	—	—	—	—	ऊधमपुर (ज.का.)	—	—	—	—	कोलकाता	5 27 •	6 07	6 50	29
अनंतनाग (ज.का.)	—	—	—	—	ऊना	—	—	—	—	कोहिमा	5 36	6 13	6 53	21
अनूपशहर (उ.प्र.)	5 42 •	6 13 •	6 45	17	एटा	5 40 •	6 12 •	6 45	19	खन्ना	—	—	—	—
अमरावती (म.)	5 24 •	6 04 •	6 47	36	ऐजावल	5 30 •	6 10	6 53	26	खुर्जा	5 42 •	6 12 •	6 45	18
अमरोहा (उ.प्र.)	5 44 •	6 13 •	6 44	16	कटक	5 22 •	6 04 •	6 50	35	गंगटोक	5 40 •	6 13	6 48	18
अमृतसर	—	—	—	—	कटनी	5 30 •	6 07 •	6 47	28	गया	5 32 •	6 09	6 48	24
अमेठी (उ.प्र.)	5 36 •	6 10 •	6 46	22	कठुआ (ज.का.)	—	—	—	—	गाजियाबाद	5 43 •	6 13 •	6 44	17
अम्बाला	—	—	—	—	कन्नौज	5 38 •	6 11 •	6 46	20	गुंटकल	5 13 •	5 59 •	6 48	52
अयोध्या	5 38 •	6 11 •	6 46	20	कपूरथला	—	—	—	—	गुड़गांव	5 42 •	6 13 •	6 45	17
अर्की (हि.प्र.)	5 51 •	6 16 •	6 42	11	करनाल	—	—	—	—	गुरदासपुर	—	—	—	—
अल्मोड़ा	5 46 •	6 14 •	6 44	14	कांगड़ा	—	—	—	—	गुवाहटी	5 37 •	6 13	6 51	20
अलवर	—	—	—	—	कांचीपुरम्	5 09 •	5 56 •	6 48	58	गोरखपुर	5 38 •	6 11 •	6 46	20
अलीगढ	5 41 •	6 12 •	6 45	18	काठियावाड़	—	—	—	—	ग्वालियर	5 35 •	6 10 •	6 46	22
अहमदाबाद	—	—	—	—	कानपुर	5 37 •	6 10 •	6 46	21	चण्डीगढ़	—	—	—	—
आगरा	5 39 •	6 11 •	6 45	20	कारगिल	—	—	—	—	चम्बा	—	—	—	—
आजमगढ़	5 36 •	6 10 •	6 47	22	कालका	—	—	—	—	चितौडगढ़	—	—	—	—
आबू	—	—	—	—	किशनगढ़ (राज.)	—	—	—	—	चिरापूंजी	5 34 •	6 12	6 51	22
आरा (बि.)	5 34 •	6 10 •	6 47	22	कुराली (पं.)	—	—	—	—	चूरू	—	—	—	—
इटारसी	5 27 •	6 06 •	6 47	32	कुरुक्षेत्र	—	—	—	—	चेन्नई	5 09 •	5 56 •	6 48	57
इटावा	5 38 •	6 11 •	6 46	21	कुल्लू	—	—	—	—	छतरपुर	5 32 •	6 08 •	6 47	25
इन्दौर	5 28 •	6 06 •	6 47	32	केप कैमोरिन	5 04 •	5 53 •	6 47	73	छपरा	5 35 •	6 10 •	6 47	22
इम्फाल	5 33 •	6 12	6 53	23	कैथल	—	—	—	—	जबलपुर	5 28 •	6 06 •	6 47	30
इलाहाबाद	5 34 •	6 09 •	6 47	23	कोक्खै	—	—	—	—	जम्मू	—	—	—	—
ईटानगर	5 40	6 15	6 52	18	कोयम्बटूर	5 08 •	5 55 •	6 47	64	जमशेदपुर	5 27 •	6 07	6 49	29
उज्जैन	5 29 •	6 07 •	6 47	31	कोडैकनाल	5 07 •	5 55 •	6 47	66	जयपुर	—	—	—	—

नोट :– • बिन्दु (Black-dot) से अंकित स्पर्शकाल वाले नगर में सूर्य ग्रस्त उदित होगा, इसलिए वहां स्पर्श (ग्रहणारम्भ) और मध्य (ग्रहणमध्य) की घटनाएं सूर्योदय से पहिले घटित होंगी। जिस नगर के आगे स्पर्श, मध्य और मोक्ष के काल नहीं दिए गए हैं, उस नगर में यह ग्रहण नहीं दीखेगा। ध्यान दें– यह सूर्यग्रहण कुरुक्षेत्र, शिमला, चंडीगढ़ आदि कुछ नगरों में ज्योतिषशास्त्रीय सूर्योदय के समय समाप्त होगा, लेकिन किरणवक्रीभवन के कारण इन नगरों में इसकी समाप्ति सूर्योदय के 3–4 मिनट बाद होगी, जो सामान्य दृष्टिग्राह्य नहीं होगी। इस प्रकार के अल्पग्रास को शास्त्र अनादेश्य (न बतलाने योग्य) बतलाते हैं।

के अंग स्पर्श, मध्य और मोक्ष के काल नहीं दिए गए है, उस नगर में यह ग्रहण नहीं दीखेगा। ध्यान दें— यह सूर्यग्रहण कुरुक्षेत्र, शिमला, चंडीगढ़ आदि कुछ नगरों में ज्योतिषशास्त्रीय सूर्योदय के समय समाप्त होगा, लेकिन किरणवक्रीभवन के कारण इन नगरों में इसकी समाप्ति सूर्योदय के 3–4 मिनट बाद होगी, जो सामान्य दृष्टिग्राह्य नहीं होगी। इस प्रकार के अल्पग्रास को शास्त्र अनादेश्य (न बतलाने योग्य) बतलाते हैं।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (9 मार्च, 2016 ई.)

[भारत, नेपाल, भूटान, बंगलादेश और श्रीलंका के प्रमुख नगरों के लिए स्पर्शादिकाल एवं परम ग्रासमान (प्रतिशत)] (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

नगर	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	परमग्रास मान प्रतिशत	नगर	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	परमग्रास मान प्रतिशत	नगर	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	परमग्रास मान प्रतिशत
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.			घं. मि.	घं. मि.	घ मि.			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	
जामनगर	–	–	–	–	देहरादून	5 48 •	6 15 •	6 43	13	पोरबंदर	–	–	–	–
जालन्धर	–	–	–	–	धनबाद	5 30 •	6 08	6 49	27	पूना	–	–	–	–
जालौर	–	–	–	–	धर्मशाला	–	–	–	–	पोर्टब्लेयर	5 05 •	5 57	6 54	58
जींद	–	–	–	–	धूरी	–	–	–	–	प्रतापगढ़(उ.प्र.)	5 35 •	6 10 •	6 46	22
जैसलमेर	–	–	–	–	नरैना	–	–	–	–	फरीदकोट	–	–	–	–
जोधपुर	–	–	–	–	नवलगढ़	–	–	–	–	फरीदाबाद	5 42 •	6 13 •	6 45	17
जोरहाट	5 39	6 15	6 52	19	नागपुर	5 24 •	6 04 •	6 48	35	फाज़िल्का	–	–	–	–
झरिया	5 30 •	6 08	6 49	26	नागौर	–	–	–	–	फिरोजपुर	–	–	–	–
झांसी	5 34 •	6 09 •	6 46	24	नाथद्वारा	–	–	–	–	फुलेरा	–	–	–	–
झालरापाटन	5 32 •	6 08 •	6 46	27	नाभा	–	–	–	–	बंगलौर	5 10 •	5 57 •	6 47	58
झालावाड़	–	–	–	–	नारनौल	–	–	–	–	बठिण्डा	–	–	–	–
झुंझुनू	–	–	–	–	नालागढ़	–	–	–	–	बदायूं	5 41 •	6 12 •	6 45	18
टूटिकोरिन	5 05 •	5 54 •	6 47	70	नासिक	–	–	–	–	बलिया	5 35 •	6 10 •	6 47	22
टोंक	–	–	–	–	नाहन	–	–	–	–	बासवाड़ा	–	–	–	–
डिब्रूगढ़	5 42	6 16	6 52	17	नीमच	–	–	–	–	बिजनौर	5 45 •	6 14 •	6 44	15
डीडवाना	–	–	–	–	नैनीताल	5 45 •	6 14 •	6 44	15	बिलासपुर (म.प्र.)	5 25 •	6 05 •	6 48	32
डूंगरपुर	–	–	–	–	पंचकूला	–	–	–	–	बिलासपुर (हि.प्र.)	–	–	–	–
तंजावर	5 07 •	5 55 •	6 47	64	पटना	5 34 •	6 10 •	6 47	22	बीकानेर	–	–	–	–
तिरुपति	5 10 •	5 57 •	6 48	56	पटियाला	–	–	–	–	बीजापुर	5 16 •	6 00 •	6 48	48
त्रिवेन्द्रम्	5 05 •	5 54 •	6 47	72	पठानकोट	–	–	–	–	बुलन्दशहर	5 42 •	6 13 •	6 45	17
थानेसर	–	–	–	–	पाण्डिचेरी	5 08 •	5 56 •	6 48	60	बूंदी	–	–	–	–
दतिया	5 34 •	6 09 •	6 46	24	पानाजी	–	–	–	–	भरतपुर	5 39 •	6 11 •	6 45	20
दरभंगा	5 36 •	6 11	6 48	21	पानीपत	–	–	–	–	भागलपुर	5 34 •	6 10	6 48	23
दार्जिलिंग	5 39 •	6 13	6 48	18	पालमपुर	–	–	–	–	भिवानी	–	–	–	–
द्वारिका	–	–	–	–	पाली	–	–	–	–	भीनमाल	–	–	–	–
दिल्ली	5 43 •	6 13 •	6 44	17	पिलानी	–	–	–	–	भुज	–	–	–	–
देवप्रयाग	5 48 •	6 15 •	6 43	13	पुंछ	–	–	–	–	भुवनेश्वर	5 21 •	6 04 •	6 50	36
देवबंद	5 46 •	6 14 •	6 44	14	पुणे	–	–	–	–	भुसावल	5 24 •	6 04 •	6 47	36
देवरिया	5 37 •	6 11 •	6 47	20	पुरनिया	5 35 •	6 11	6 48	21	भोपाल	5 29 •	6 07 •	6 47	30
देवास	5 28 •	6 06 •	6 47	31	पुरी	5 20 •	6 03 •	6 50	37	मंगलोर	5 11 •	5 57 •	6 47	60

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (9 मार्च, 2016 ई.)

[भारत, नेपाल, भूटान, बंगलादेश और श्रीलंका के प्रमुख नगरों के लिए स्पर्शादिकाल एवं परम ग्रासमान (प्रतिशत)] (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

नगर	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	परमग्रास मान प्रतिशत
मण्डी (हि.प्र.)	–	–	–	–
मथुरा	5 40 •	6 12 •	6 45	20
मदुरै	5 06 •	5 54 •	6 47	67
मंदसोर	–	–	–	–
मसूरी	5 49 •	6 15 •	6 43	13
महेन्द्रगढ	–	–	–	–
मानेसर	–	–	–	–
मारवाड (राज)	–	–	–	–
मालेरकोटला	–	–	–	–
मिर्जापुर	5 33 •	6 09 •	6 47	24
मुंगेर	5 34 •	6 10	6 48	23
मुजफ्फरनगर	5 46 •	6 14 •	6 44	15
मुम्बई	–	–	–	–
मुरादाबाद	5 44 •	6 13 •	6 44	16
मेरठ	5 44 •	6 14 •	6 44	16
मैसूर	5 10 •	5 56 •	6 47	60
मोगा	–	–	–	–
रतनगढ़	–	–	–	–
रतलाम	–	–	–	–
रांची	5 28 •	6 07 •	6 49	28
राजकोट	–	–	–	–
रामपुर बुशहर	–	–	–	–
रामेश्वरम्	5 05 •	5 34 •	6 47	68
रायपुर (छ.ग.)	5 24 •	6 04 •	6 48	34
रीवां	5 31 •	6 08 •	6 47	26
रेवाड़ी	–	–	–	–
रोपड़	–	–	–	–
रोहतक	–	–	–	–

नगर	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	परमग्रास मान प्रतिशत
लखनऊ	5 38 •	6 11 •	6 46	20
लुधियाना	–	–	–	–
वड़ोदरा	–	–	–	–
वाड़मेर	–	–	–	–
वाराणसी	5 34 •	6 09 •	6 47	23
विजयवाड़ा	5 15 •	6 00 •	6 48	47
विशाखापत्तनम्	5 16 •	6 01 •	6 49	43
वृंदावन	5 40 •	6 12 •	6 45	19
वेरावल	–	–	–	–
शाहदरा	5 43 •	6 13 •	6 44	17
शिमला	–	–	–	–
शिलौंग	5 35 •	6 12	6 51	21
शोलापुर	5 18 •	6 01 •	6 48	46
श्रीनगर (ज.का.)	–	–	–	–
संगरूर	–	–	–	–
सरहिन्द	–	–	–	–
सहारनपुर	5 47 •	6 15 •	6 43	14
सागर	5 30 •	6 07 •	6 47	28
सांगानेर	–	–	–	–
सिरसा	–	–	–	–
सिलीगुड़ी	5 38 •	6 12	6 48	19
सीकर	–	–	–	–
सूरत	–	–	–	–
सूरतगढ़	–	–	–	–
सोलन	–	–	–	–
हमीरपुर (उ.प्र.)	5 35 •	6 10 •	6 46	23
हमीरपुर (हि.प्र.)	–	–	–	–
हरिद्वार	5 47 •	6 15 •	6 43	14

नगर	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	परमग्रास मान प्रतिशत
हाथरस	5 40 •	6 12 •	6 45	19
हापुड	5 43 •	6 13 •	6 44	17
हांसी	–	–	–	–
हैदराबाद	5 16 •	6 00 •	6 48	46
हिसार	–	–	–	–
होशंगाबाद	5 28 •	6 06 •	6 47	31
होशियारपुर	–	–	–	–
कुछ विदेशी नगर				
नेपाल				
काठमाण्डू	5 41 •	6 13	6 46	17
धनकुटा	5 39 •	6 12	6 48	19
पोखरा	5 42 •	6 13 •	6 45	16
रामेछाप	5 40 •	6 12	6 47	18
बंगलादेश				
चिट्टागोंग	5 26 •	6 08	6 52	29
जैस्सोर	5 29 •	6 08	6 51	27
ढाका	5 30 •	6 09	6 51	26
बालूरघाट	5 34 •	6 10	6 49	23
राजशाही	5 31 •	6 09	6 50	25
सिल्हिट	5 33 •	6 11	6 51	23
सिहोर	5 28 •	6 08	6 50	28
थिम्फू (भूटान)	5 41 •	6 14	6 48	17
श्रीलंका				
कैण्डी	5 02 •	5 52 •	6 47	74
कोलम्बो	5 02 •	5 52 •	6 47	75
गाले	5 01 •	5 51 •	6 47	78
जाफना	5 05 •	5 54 •	6 47	67
बट्टीकलोआ	5 02 •	5 52 •	6 47	72

रोपड़	—	—	—	—	हमीरपुर (हि.प्र.)	—	—	—	—	जाफना	5 05 •	5 54 •	6 47	67
रोहतक	—	—	—	—	हरिद्वार	5 47 •	6 15 •	6 43	14	बट्टीकलोआ	5 02 •	5 52 •	6 47	72

संवत् 2072 वि. की कुल जन्म–वर्ष–प्रश्न–मुहूर्त्त–कुण्डलियां

इन कुण्डलियों के श्रमसाध्य निर्माण में भारी सहयोग के लिए 'श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय'– कुराली (पं.) के अनुभवी कार्यकर्ता, **ग्राम सुन्हाड़–सौर, सोलन (हि.प्र.) [सम्प्रति वार्ड–1, कुराली (मोहाली)पं.]** निवासी प्रबुद्ध विद्वान् आचार्य **श्रीकृष्ण शर्मा, M.A.,** शास्त्री, वेदाचार्य, साहित्याचार्य को आशीर्वाद–पुरस्सर धन्यवाद दिए बिना मैं नहीं रह सकता–

– प्रियव्रत शर्मा

यद्यपि जातकपद्धति एवम् ताजिक ग्रन्थों में द्वादश–भाव– साधनपूर्वक बनाई गई भावकुण्डली द्वारा भावफलादेश कहने का निर्देश है, तथापि लगभग सभी दैवज्ञ जातक–जन्मकालिक, प्रश्नकालिक, वर्षप्रवेश–कालिक तथा विवाहादि मुहूर्त्तकालिक आदि राशि–कुण्डलियों को ही फलादेशार्थ प्रयुक्त करने की परम्परा बनाए हुए हैं। जन्म, प्रश्न, वर्षप्रवेश या मुहूर्त्तकालीन लग्नराशि को प्रथम भावराशि तथा तदुत्तरवर्त्ती राशियों को क्रमशः द्वितीय आदि भावों की राशियां मानकर बनाई गई जन्मकुण्डली द्वारा ही समस्त फलादेश कहने का बहुत बड़ा सम्प्रदाय फलित ज्योतिष में व्यापक प्रभाव बनाए हुए है। सच बात तो यह है– फलित में भावचक्र तो केवल सिद्धान्तरूप में ही दिखाई पड़ता है, इसका प्रयोगात्मक रूप तो लगभग लुप्त सा ही हो गया है। इसे दृष्टि में रखते हुए यहां सं. 2072 वि. में बनने वाली सभी (कुल 220) कुण्डलियां दी जा रही हैं। **"किस तारीख के कितने बजे से किस तारीख के कितने बजे तक "**– कौन–सी कुण्डली बनती है (यानी सूर्यादि ग्रह किन–किन राशियों में स्थित हैं), यह भारतीय स्टैंडर्ड टाईम अनुसार प्रत्येक कुण्डली के ऊपर यहां निर्दिष्ट है। इन कुण्डलियों के आधार पर दैवज्ञ लोग इस वर्ष में उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली (जन्मकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली), इस वर्ष घटित होने वाले वर्षप्रवेश–कालानुसारी वर्षप्रवेशकुण्डली (वर्षप्रवेशकालिक ग्रहस्थिति– कुण्डली) तथा अभीष्टकालिक प्रश्नकुण्डली (प्रश्नकालिक ग्रहस्थिति– कुण्डली) एवं अभीष्ट विवाहादि मुहूर्त्तकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली तुरन्त जान सकेंगे और तात्कालिक स्थानीय लग्न ज्ञात कर इन ग्रहस्थिति–कुण्डलियों को लग्नकुण्डलियां अनायास बना सकेंगे।

क्योंकि, ये कुण्डलियां भारतीय स्टैण्डर्ड टाईमानुसार हैं, अतः भारत में इन्हें बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जाएगा। यदि इन्हें भारत से अन्य किसी देश के लिए प्रयोग में लाना हो तब उस देश के स्थानीय स्टैण्डर्ड टाईम को भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में बदलकर, इन्हें प्रयोग में लाइए। **स्पष्टता के लिए आगे उदाहरण दे रहे हैं। पहले भारतस्थलीय उदाहरण लेते हैं–**

उदाहरण (1)– चण्डीगढ़(U.T.)में 16 अप्रैल, 2015 ई. को प्रातः 10 घं. 50 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर उत्पन्न होने वाले/हुए जातक की जन्मकुण्डली ज्ञात करनी है ?

क्योंकि, इस जातक का जन्म **"14 अप्रैल, 15 घं. 53 मि. से 16 अप्रैल, 16 घं. 54 मि."** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक कुण्डली (ग्रहस्थिति–कुण्डली) यहां दी गई इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किञ्च–** चण्डीगढ़ में 16 अप्रैल को प्रातः 10 घं. 50 मि.(भा. स्टैं. टा.) पर मिथुन लग्न है। अतः इस जातक की जन्मलग्न–कुण्डली यह बनी–

4 गु.
2 शु.
5
3
1सू.मं.बु.
6 रा.
12 के.
7
9
चं. 11
श. 8
10

अब भारतेतर देश का उदाहरण लेते हैं–

उदाहरण (2)– 10 सितं., 2015 ई. को Rome (Italy) में 14 घं. 25 मि. पर पैदा हुए/होने वाले जातक की जन्मलग्नकुण्डली ज्ञात करनी है ?

Rome (Italy) में इस समय D.S.T. (ग्रीष्मकालीन समय) चल रहा होगा, जो क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घंटा आगे रहता है। स्पष्ट है– इस जातक का जन्मसमय यहां स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार 13 घं. 25 मि. होगा। Italy के स्टैं. टा. से भा. स्टैं. टा. 4 घं. 30 मि. आगे रहता है, अतः इस जातक की जन्मकालिक भारतीय तारीख 10 सितं. 2015 ई. और जन्मकाल 17 घं. 55 मि. (भा. स्टैं. टा.) बना। क्योंकि, इस जातक का जन्म भा.स्टैं.टा. अनुसार **"8 सितं., 20 घं. 38 मि. से 11 सितं. 07 घं. 33 मि. "** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक–कुण्डली (ग्रहस्थिति– कुण्डली) यहां दी गई इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किञ्च–** Rome में इसके जन्म के समय लग्न

(शेष पृष्ठ... 45 ......पर)

20 मार्च से 30 अप्रैल, सन् 2015 ई.

20 मार्च, 15 घं. 07 मि. से 22 मार्च 6 घं. 28 मि.

2 | चं.12सू.के. मं.
3 | 1 शु. | 11 बु.
4 गु. | 10
5 | 7 | 9
6 रा. | श. 8

22 मार्च, 6 घं. 29 मि. से 23 मार्च, 22 घं. 46 मि.

2 | मं. 12 सू. के.
3 | चं. 1 शु. | 11 बु.
4 गु. | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

23 मार्च, 22 घं. 47 मि. से 24 मार्च, 8 घं. 34 मि.

2 | के. 12 सू.
3 | मं. चं. 1 शु. | 11बु.
4 गु. | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

24 मार्च, 8 घं. 35 मि. से 26 मार्च, 14 घं. 10 मि.

2 चं. | सू. 12 के.
3 | मं. 1 शु. | 11बु.
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

26 मार्च, 14 घं. 11 मि. से 28 मार्च, 1 घं. 34 मि.

2 | सू. 12 के.
चं.3 | मं. 1 शु. | 11बु.
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

28 मार्च, 1 घं. 35 मि. से 28 मार्च, 23 घं. 34 मि.

2 | सू. 12 के. बु.
चं.3 | मं. 1 शु. | 11
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

28 मार्च, 23 घं. 35 मि. से 31 मार्च 11 घं. 39 मि.

2 | सू. 12 के. बु.
3 | मं. 1 शु. | 11
गु. 4 चं. | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

31 मार्च, 11 घं. 40 मि. से 3 अप्रैल, 0 घं. 36 मि.

2 | सू. 12 के. बु.
3 | मं. 1 शु. | 11
गु. 4 | 10
5 चं. | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

3 अप्रैल, 0 घं. 37 मि. से 5 अप्रैल, 12 घं. 50 मि.

2 | सू. 12 के. बु.
3 | मं. 1 शु. | 11
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9
चं. रा. 6 | श. 8

5 अप्रैल, 12 घं. 51 मि. से 6 अप्रैल, 19 घं. 43 मि.

2 | सू. 12 के. बु.
3 | मं. 1 शु. | 11
गु. 4 | 10
5 | चं. 7 | 9
रा. 6 | श. 8

6 अप्रैल, 19 घं. 44 मि. से 7 अप्रैल. 23 घं. 19 मि.

2 शु. | सू. 12 के. बु.
3 | मं. 1 | 11
गु. 4 | 10
5 | चं. 7 | 9
रा. 6 | श. 8

7 अप्रैल. 23 घं. 20 मि. से 10 अप्रैल, 7 घं. 28 मि.

2 शु. | सू. 12 के. बु.
3 | मं. 1 | 11
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8 चं.

10 अप्रैल 7 घं. 29 मि. से 12 अप्रैल 8 घं. 39 मि.

2 शु. | सू. 12 के. बु.
3 | मं. 1 | 11
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9 चं.
रा. 6 | श. 8

12 अप्रैल 8 घं. 40 मि. से 12 अप्रैल 12 घं. 57 मि.

2 शु. | सू. 12 के.
3 | मं. 1 बु. | 11
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9 चं.
रा. 6 | श. 8

12 अप्रैल 12 घं. 58 मि. से 14 अप्रैल 13 घं. 45 मि.

2 शु. | सू. 12 के.
3 | मं. 1 बु. | 11
गु. 4 | 10 चं.
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

14 अप्रैल 13 घं. 46 मि. से 14 अप्रैल 15 घं. 52 मि.

2 शु. | 12 के.
3 | सू. मं. 1 बु. | 11
गु. 4 | 10 चं.
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

14 अप्रैल 15 घं. 53 मि. से 16 अप्रैल 16 घं. 54 मि.

2 शु. | 12 के. चं.
3 | सू. मं. 1 बु. | 11
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

16 अप्रैल 16 घं. 55 मि. से 18 अप्रैल 17 घं. 21 मि.

2 शु. | 12 के. चं.
3 | सू. मं. 1 बु. | 11
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

18 अप्रैल 17 घं. 22 मि. से 20 अप्रैल 18 घं. 53 मि.

2 शु. | 12 के.
3 | सू. मं. 1 बु. चं. | 11
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

20 अप्रैल 18 घं. 54 मि. से 22 अप्रैल 23 घं. 08 मि.

चं. 2 शु. | 12 के.
3 | सू. मं. 1 बु. | 11
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

22 अप्रैल 23 घं. 09 मि. से 25 अप्रैल 7 घं. 10 मि.

2 शु. | 12 के.
3 चं. | सू. मं. 1 बु. | 11
गु. 4 | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

25 अप्रैल 7 घं. 11 मि. से 27 अप्रैल 12 घं. 04 मि.

2 शु. | 12 के.
3 | सू. मं. 1 बु. | 11
गु. 4 चं. | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

27 अप्रैल 12 घं. 05 मि. से 27 अप्रैल 18 घं. 36 मि.

बु. 2 शु. | 12 के.
3 | सू. 1 मं. | 11
गु. 4 चं. | 10
5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

27 अप्रैल 18 घं. 37 मि. से 30 अप्रैल 7 घं. 31 मि.

बु. 2 शु. | 12 के.
3 | सू. 1 मं. | 11
गु. 4 | 10
चं. 5 | 7 | 9
रा. 6 | श. 8

30 अप्रैल से 14 जून, सन् 2015 ई.

30 अप्रैल 7 घं. 32 मि. से 2 मई 19 घं. 37 मि.
बु. 2 शु. | 12 के. | 3 | सू. 1 मं. | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 चं. | श. 8

2 मई, 19 घं. 38 मि. से 2 मई, 20 घं. 32 मि.
बु. 2 शु. | 12 के. | 3 | सू. 1 मं. | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 चं. | 9 | रा. 6 | श. 8

2 मई, 20 घं. 33 मि. से 3 मई, 23 घं. 52 मि.
बु. 2 | 12 के. | 3 शु. | सू. 1 मं. | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 चं. | 9 | रा. 6 | श. 8

3 मई, 23 घं. 53 मि. से 5 मई, 5 घं. 32 मि.
मं. बु. 2 | 12 के. | 3 शु. | सू. 1 | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 चं. | 9 | रा. 6 | श. 8

5 मई, 5 घं. 33 मि. से 7 मई, 13 घं. 02 मि.
मं. बु. 2 | 12 के. | 3 शु. | सू. 1 | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8 चं.

7 मई, 13 घं. 03 मि. से 9 मई, 18 घं. 29 मि.
मं. बु. 2 | 12 के. | 3 शु. | सू. 1 | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 | 9 चं. | रा. 6 | श. 8

9 मई, 18 घं. 30 मि. से 11 मई, 22 घं. 18 मि.
मं. बु. 2 | 12 के. | 3 शु. | सू. 1 | 11 | गु. 4 | 10 चं. | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

11 मई, 22 घं. 19 मि. से 14 मई, 0 घं. 49 मि.
मं. बु. 2 | 12 के. | 3 शु. | सू. 1 | 11 चं. | गु. 4 | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

14 मई, 0 घं. 50 मि. से 15 मई, 10 घं. 36 मि.
मं. बु. 2 | 12 के. चं. | 3 शु. | सू. 1 | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

15 मई, 10 घं. 37 मि. से 16 मई, 2 घं. 40 मि.
बु. 2 सू. मं. | 12 के. चं. | 3 शु. | 1 | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

16 मई, 2 घं. 41 मि. से 18 मई, 4 घं. 51 मि.
बु. 2 सू. मं. | 12 के. | 3 शु. | 1 चं. | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

18 मई, 4 घं. 52 मि. से 20 मई, 8 घं. 48 मि.
बु.2 सू. चं. मं. | 12 के. | 3 शु. | 1 | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

20 मई, 8 घं. 49 मि. से 22 मई, 15 घं. 52 मि.
बु. 2 सू. चं. मं. | 12 के. | 3 शु. | 1 | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

22 मई, 15 घं. 53 मि. से 25 मई, 2 घं. 26 मि.
बु. 2 सू. मं. | 12 के. | 3 शु. | 1 | 11 | गु. 4 चं. | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

25 मई, 2 घं. 27 मि. से 27 मई, 15 घं. 09 मि.
बु. 2 सू. मं. | 12 के. | 3 शु. | 1 | 11 | गु. 4 | 10 | चं. 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

27 मई, 15 घं. 10 मि. से 30 मई, 3 घं. 24 मि.
बु. 2 सू. मं. | 12 के. | 3 शु. | 1 | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 | 9 | चं. 6 रा. | श. 8

30 मई, 3 घं. 25 मि. से 30 मई, 20 घं. 54 मि.
बु. 2 सू. मं. | 12 के. | 3 शु. | 1 | 11 | गु. 4 | 10 | 5 | 7 चं. | 9 | 6 रा. | श. 8

30 मई, 20 घं. 55 मि. से 1 जून, 13 घं. 06 मि.
सू. 2 बु. मं. | 12 के. | 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 चं. | 9 | 6 रा. | श. 8

1 जून, 13 घं. 07 मि. से 3 जून, 19 घं. 48 मि.
सू. 2 बु. मं. | 12 के. | 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 | 6 रा. | श. 8 चं.

3 जून, 19 घं. 49 मि. से 6 जून, 0 घं. 18 मि.
सू. 2 बु. मं. | 12 के. | 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 चं. | 6 रा. | श. 8

6 जून, 0 घं. 19 मि. से 8 जून, 3 घं. 40 मि.
सू. 2 बु. मं. | 12 के. | 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | चं. 10 | 5 | 7 | 9 | 6 रा. | श. 8

8 जून, 3 घं. 41 मि. से 10 जून, 6 घं. 39 मि.
सू. 2 बु. मं. | 12 के. | 3 | 1 | 11चं. | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 | 6 रा. | श. 8

10 जून, 6 घं. 40 मि. से 12 जून, 9 घं. 38 मि.
सू. 2 बु. मं. | चं. 12 के. | 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 | 6 रा. | श. 8

12 जून, 9 घं. 39 मि. से 14 जून, 13 घं. 03 मि.
सू. 2 बु. मं. | 12 के. | 3 | 1 चं. | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 | 6 रा. | श. 8

14 जून से 23 जुलाई, सन् 2015 ई.

14 जून, 13 घं. 04 मि. से 15 जून, 17 घं. 10 मि.
चं. सू. 2 बु. मं. | 12 के. | 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 | 6 रा. | श. 8

15 जून, 17 घं. 11 मि. से 16 जून, 1 घं. 07 मि.
चं. 2 बु. मं. | 12 के. | 3 सू. | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 | 6 रा. | श. 8

16 जून, 1 घं. 08 मि. से 16 जून, 17 घं. 41 मि.
चं. 2 बु. | 12 के. | 3 सू. मं. | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 | 6 रा. | श. 8

16 जून, 17 घं. 42 मि. से 19 जून, 00 घं. 38 मि.
2 बु. | 12 के. | चं. 3 सू. मं. | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 | 6 रा. | श. 8

19 जून, 00 घं. 39 मि. से 21 जून, 10 घं. 39 मि.
2 बु. | 12 के. | मं. सू. 3 | चं. | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

21 जून, 10 घं. 40 मि. से 23 जून, 23 घं. 06 मि.
2 बु. | 12 के. | मं. सू. 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | चं. 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

23 जून, 23 घं. 07 मि. से 26 जून, 11 घं. 41 मि.
2 बु. | 12 के. | मं. सू. 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 चं. | श. 8

26 जून, 11 घं. 42 मि. से 28 जून, 21 घं. 47 मि.
2 बु. | 12 के. | मं. सू. 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 चं. | 9 | रा. 6 | श. 8

28 जून, 21 घं. 48 मि. से 1 जुलाई, 4 घं. 17 मि.
2 बु. | 12 के. | मं. सू. 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8 चं.

1 जुलाई, 4 घं. 18 मि. से 3 जुलाई, 7 घं. 51 मि.
2 बु. | 12 के. | मं. सू. 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 | 5 | 7 | चं. 9 | रा. 6 | श. 8

3 जुलाई, 7 घं. 52 मि. से 5 जुलाई, 9 घं. 47 मि.
2 बु. | 12 के. | मं. सू. 3 | 1 | 11 | गु. 4 शु. | 10 चं. | 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

5 जुलाई, 9 घं. 48 मि. से 5 जुलाई, 10 घं. 00 मि.
2 बु. | 12 के. | मं. सू. 3 | 1 | 11 | गु. 4 | 10 चं. | शु. 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

5 जुलाई, 10 घं. 01 मि. से 5 जुलाई, 12 घं. 12 मि.
2 बु. | 12 के. | मं. सू. 3 | चं. | 1 | 11 | गु. 4 | 10 | शु. 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

5 जुलाई, 12 घं. 13 मि. से 7 जुलाई, 12 घं. 07 मि.
2 | 12 के. | 3 सू. बु. मं. | चं. | 1 | 11 | गु. 4 | 10 | शु 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

7 जुलाई, 12 घं. 08 मि. से 9 जुलाई, 15 घं. 06 मि.
2 | चं. 12 के. | 3 सू. बु. मं. | 1 | 11 | गु. 4 | 10 | शु 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

9 जुलाई, 15 घं. 07 मि. से 11 जुलाई, 19 घं. 17 मि.
2 | 12 के. | 3 सू. बु. मं. | 1 चं. | 11 | गु. 4 | 10 | शु 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

11 जुलाई, 19 घं. 18 मि. से 14 जुलाई, 00 घं. 55 मि.
2 चं. | 12 के. | 3 सू. बु. मं. | 1 | 11 | गु. 4 | 10 | शु 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

14 जुलाई, 00 घं. 56 मि. से 14 जुलाई, 6 घं. 25 मि.
2 | 12 के. | चं. 3 सू. बु. मं. | 1 | 11 | गु. 4 | 10 | शु 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

14 जुलाई, 6 घं. 26 मि. से 16 जुलाई, 8 घं. 28 मि.
2 | 12 के. | चं. 3 सू. बु. मं. | 1 | 11 | 4 | 10 | गु. शु 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

16 जुलाई, 8 घं. 29 मि. से 17 जुलाई, 4 घं. 01 मि.
2 | 12 के. | 3 सू. बु. मं. | 1 | 11 | चं. 4 | 10 | गु. शु 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

17 जुलाई, 4 घं. 02 मि. से 18 जुलाई, 18 घं. 30 मि.
2 | 12 के. | मं. बु. 3 | 1 | 11 | चं. 4 सू. | 10 | गु. शु 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

18 जुलाई, 18 घं. 31 मि. से 20 जुलाई, 23 घं. 01 मि.
2 | 12 के. | मं. बु. 3 | 1 | 11 | 4 सू. | 10 | गु. शु चं. 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

20 जुलाई, 23 घं. 02 मि. से 21 जुलाई, 6 घं. 48 मि.
2 | 12 के. | मं. 3 | 1 | 11 | बु. 4 सू. | 10 | गु. शु चं. 5 | 7 | 9 | रा. 6 | श. 8

21 जुलाई, 06 घं. 49 मि. से 23 जुलाई, 19 घं. 43 मि.
2 | 12 के. | मं. 3 | 1 | 11 | बु. 4 सू. | 10 | गु. शु 5 | 7 | 9 | रा. 6 चं. | श. 8

23 जुलाई से 04 सितंबर, सन् 2015 ई.

23 जुलाई, 19 घं. 44 मि. से 26 जुलाई, 6 घं. 40 मि.	26 जुलाई, 6 घं. 41 मि. से 28 जुलाई, 13 घं. 50 मि.	28 जुलाई, 13 घं. 51 मि. से 30 जुलाई, 17 घं. 19 मि.	30 जुलाई, 17 घं. 20 मि. से 31 जुलाई, 2 घं. 18 मि.	31 जुलाई, 2 घं. 19 मि. से 1 अगस्त, 18 घं. 29 मि.	1 अगस्त, 18 घं. 30 मि. से 3 अगस्त, 19 घं. 11 मि.
2, 12 के.	2, 12 के.	2, 12 के.	2, 12 के.	2, 12 के.	2, 12 के.
मं. 3, 1, 11	मं. 3, 1, 11	मं. 3, 1, 11	मं. 3, 1, 11	3, 1, 11	3, 1, चं.11
बु. 4 सू., 10	बु. 4 सू., 10	बु. 4 सू., 10	बु. 4 सू., 10 चं.	मं. सू. 4 बु., 10 चं.	मं. सू. 4 बु., 10
गु. शु 5, 7 चं., 9	गु. शु 5, 7, 9	गु. शु 5, 7, 9 चं.	गु. शु 5, 7, 9	गु. शु 5, 7, 9	गु. शु 5, 7, 9
रा. 6, श. 8	रा. 6, श. 8 चं.	रा. 6, श. 8	रा. 6, श. 8	रा. 6, श. 8	रा. 6, श. 8

3 अगस्त, 19 घं. 12 मि. से 4 अगस्त, 18 घं. 14 मि.	4 अगस्त, 18 घं. 15 मि. से 5 अगस्त, 20 घं. 56 मि.	5 अगस्त, 20 घं. 57 मि. से 8 अगस्त, 00 घं. 39 मि.	8 अगस्त, 00 घं. 40 मि. से 10 अगस्त, 6 घं. 41 मि.	10 अगस्त, 6 घं. 42 मि. से 12 अगस्त, 14 घं. 58 मि.	12 अगस्त, 14 घं. 59 मि. से 13 अगस्त, 17 घं. 22 मि.
2, चं. 12 के.	2, चं. 12 के.	2, 12 के.	चं. 2, 12 के.	2, 12 के.	2, 12 के.
3, 1, 11	3, 1, 11	3, चं. 1, 11	3, 1, 11	3 चं., 1, 11	3, 1, 11
सू. 4 मं., 10	मं. सू. 4, 10	सू. 4 मं., 10	सू. 4 मं., 10	सू. 4 मं., 10	चं. सू. 4 मं., 10
गु. बु. शु 5, 7, 9	गु. बु. शु 5, 7, 9	गु. बु.शु 5, 7, 9	गु. बु.शु 5, 7, 9	गु. बु.शु 5, 7, 9	गु. बु.शु 5, 7, 9
रा. 6, श. 8	रा. 6, श. 8	रा. 6, श. 8	रा. 6, श. 8	रा. 6, श. 8	रा. 6, श. 8

13 अगस्त, 17 घं. 23 मि. से 15 अगस्त, 1 घं. 27 मि.	15 अगस्त, 1 घं. 28 मि. से 17 अगस्त, 12 घं. 24 मि.	17 अगस्त, 12 घं. 25 मि. से 17 अगस्त, 13 घं. 48 मि.	17 अगस्त, 13 घं. 49 मि. से 20 अगस्त, 2 घं. 53 मि.	20 अगस्त, 2 घं. 54 मि. से 22 अगस्त, 14 घं. 42 मि.	22 अगस्त, 14 घं. 43 मि. से 23 अगस्त, 8 घं. 37 मि.
2, 12 के.	2, 12 के.	2, 12 के.	2, 12 के.	2, 12 के.	2, 12 के.
3, 1, 11	3, 1, 11	3, 1, 11	3, 1, 11	3, 1, 11	3, 1, 11
चं. सू. 4 मं., 10	मं. सू. 4 शु., 10	शु. 4 मं., 10	शु. 4 मं., 10	शु. 4 मं., 10	शु. 4 मं., 10
बु. शु. गु. 5, 7, 9	चं. बु. गु. 5, 7, 9	गु. बु. सू. 5 चं., 7, 9	गु. बु. सू. 5, 7, 9	गु. बु. सू. 5, 7 चं., 9	गु. बु. सू. 5, 7, 9
रा. 6, श. 8	6 रा., 8 श.	6 रा., श. 8	चं. 6 रा., श. 8	6 रा., 8 श.	6 रा., चं. 8 श.

23 अगस्त, 8 घं. 38 मि. से 24 अगस्त, 23 घं. 10 मि.	24 अगस्त, 23 घं. 11 मि. से 27 अगस्त, 3 घं. 37 मि.	27 अगस्त, 3 घं. 38 मि. से 29 अगस्त, 4 घं. 51 मि.	29 अगस्त, 4 घं. 52 मि. से 31 अगस्त, 4 घं. 36 मि.	31 अगस्त, 4 घं. 37 मि. से 2 सितंबर, 4 घं. 48 मि.	2 सितंबर, 4 घं. 49मि. से 4 सितंबर, 7 घं. 01 मि.
2, 12 के.	2, 12 के.	2, 12 के.	2, 12 के.	2, चं. 12 के.	2, 12 के.
3, 1, 11	3, 1, 11	3, 1, 11	3, 1, चं.11	3, 1, 11	3, 1 चं., 11
शु. 4 मं., 10	शु. 4 मं., 10	शु. 4 मं., 10 चं.	शु. 4 मं., 10	शु. 4 मं., 10	शु. 4 मं., 10
गु. सू. 5, 7, 9	गु. सू. 5, 7, 9 चं.	गु. सू. 5, 7, 9	गु. सू. 5, 7, 9	गु. सू. 5, 7, 9	गु. सू. 5, 7, 9
बु. 6 रा., चं. 8 श.	बु. 6 रा., 8 श.	बु. 6 रा., 8 श.	बु. 6 रा., 8 श.	बु. 6 रा., 8 श.	बु. 6 रा., 8 श.

04 सितंबर से 20 अक्तूबर, सन् 2015 ई.

4 सितंबर, 7 घं. 02 मि. से 6 सितंबर, 12 घं. 15 मि.

2 चं. | 12 के.
3 | 1 | 11
शु. 4 मं. | 10
गु. सू. 5 | 7 | 9
बु. 6 रा. | 8 श.

6 सितंबर, 12 घं. 16 मि. से 8 सितंबर, 20 घं. 37 मि.

2 | 12 के.
3 चं. | 1 | 11
शु. 4 मं. | 10
गु. सू. 5 | 7 | 9
बु. 6 रा. | 8 श.

8 सितंबर, 20 घं. 38 मि. से 11 सितंबर, 7 घं. 33 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
शु. 4 मं. चं. | 10
गु. सू. 5 | 7 | 9
बु. 6 रा. | 8 श.

11 सितंबर, 7 घं. 34 मि. से 13 सितंबर, 20 घं. 06 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
शु. 4 मं. | 10
गु. सू. 5 चं. | 7 | 9
बु. 6 रा. | 8 श.

13 सितंबर, 20 घं. 07 मि. से 15 सितंबर, 21 घं. 28 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
शु. 4 मं. | 10
गु. सू. 5 | 7 | 9
बु. 6 चं. रा. | 8 श.

15 सितंबर, 21 घं. 29 मि. से 16 सितंबर, 9 घं. 11 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
शु. 4 | 10
गु. सू. 5 मं. | 7 | 9
बु. 6 चं. रा. | 8 श.

16 सितंबर, 9 घं. 12 मि. से 17 सितंबर, 12 घं. 18 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
शु. 4 | 10
गु. सू. 5 मं. | 7 चं. | 9
बु. 6 रा. | 8 श.

17 सितंबर, 12 घं. 19 मि. से 18 सितंबर, 21 घं. 22 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
शु. 4 | 10
गु. 5 मं. | 7 चं. | 9
बु. सू. 6 रा. | 8 श.

18 सितंबर, 21 घं. 23 मि. से 21 सितंबर, 7 घं. 3 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
शु. 4 | 10
गु. 5 मं. | 7 | 9
बु. सू. 6 रा. | चं. 8 श.

21 सितंबर, 7 घं. 04 मि. से 23 सितंबर, 13 घं. 06 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
शु. 4 | 10
गु. 5 मं. | 7 | 9 चं.
बु. सू. 6 रा. | 8 श.

23 सितंबर, 13 घं. 07 मि. से 25 सितंबर, 15 घं. 34 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
शु. 4 | 10 चं.
गु. 5 मं. | 7 | 9
बु. सू. 6 रा. | 8 श.

25 सितंबर, 15 घं. 35 मि. से 27 सितंबर, 15 घं. 37 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11 चं.
शु. 4 | 10
गु. 5 मं. | 7 | 9
बु. सू. 6 रा. | 8 श.

27 सितंबर, 15 घं. 38 नि. से 29 सितंबर, 14 घं. 59 मि.

2 | चं. 12 के.
3 | 1 | 11
शु. 4 | 10
गु. 5 मं. | 7 | 9
बु. सू. 6 रा. | 8 श.

29 सितंबर, 15 घं. 00 मि. से 1 अक्तूबर, 4 घं. 13 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 चं. | 11
शु. 4 | 10
गु. 5 मं. | 7 | 9
बु. सू. 6 रा. | 8 श.

1 अक्तूबर, 4 घं. 14 मि. से 1 अक्तूबर, 15 घं. 38 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 चं. | 11
4 | 10
गु. 5 शु. मं. | 7 | 9
बु. सू. 6 रा. | 8 श.

1 अक्तूबर, 15 घं. 39 मि. से 3 अक्तूबर, 19 घं. 13 मि.

चं. 2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 | 10
गु. 5 शु. मं. | 7 | 9
बु. सू. 6 रा. | 8 श.

3 अक्तूबर, 19 घं. 14 मि. से 6 अक्तूबर, 2 घं. 37 मि.

2 | 12 के.
3 चं. | 1 | 11
4 | 10
गु. 5 शु. मं. | 7 | 9
बु. सू. 6 रा. | 8 श.

6 अक्तूबर, 2 घं. 38 मि. से 8 अक्तूबर, 13 घं. 25 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 चं. | 10
गु. 5 शु. मं. | 7 | 9
बु. सू. 6 रा. | 8 श.

8 अक्तूबर, 13 घं. 26 मि. से 11 अक्तूबर, 2 घं. 10 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 | 10
गु. 5 शु. मं. चं. | 7 | 9
बु. सू. 6 रा. | 8 श.

11 अक्तूबर, 2 घं. 11 मि. से 13 अक्तूबर, 15 घं. 10 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 | 10
गु. 5 शु. मं. | 7 | 9
चं. बु. सू. 6 रा. | 8 श.

13 अक्तूबर, 15 घं. 11 मि. से 16 अक्तूबर, 3 घं. 08 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 | 10
गु. 5 शु. मं. | चं. 7 | 9
सू. बु. 6 रा. | 8 श.

16 अक्तूबर, 3 घं. 09 मि. से 18 अक्तूबर, 0 घं. 15 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 | 10
गु. 5 शु. मं. | 7 | 9
सू. बु. 6 रा. | 8 श. चं.

18 अक्तूबर, 0 घं. 16 मि. से 18 अक्तूबर, 13 घं. 11 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 | 10
गु. 5 शु. मं. | 7 सू. | 9
बु. 6 रा. | 8 श. चं.

18 अक्तूबर, 13 घं. 12 मि. से 20 अक्तूबर, 20 घं. 32 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 | 10
गु. 5 शु. मं. | 7 सू. | चं. 9
बु. 6 रा. | 8 श.

20 अक्तूबर से 30 नवंबर, सन् 2015 ई.

20 अक्तूबर, 20 घं. 33 मि. से 23 अक्तूबर, 00 घं. 48मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | चं.10 | गु. 5 शु. मं. | 7 सू. | 9 | बु.6 रा. | 8 श.

23 अक्तूबर, 0 घं. 49 मि. से 25 अक्तूबर, 2 घं. 18मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11चं. | 4 | 10 | गु. 5 शु. मं. | 7 सू. | 9 | बु.6 रा. | 8 श.

25 अक्तूबर, 2 घं. 19 मि. से 27 अक्तूबर, 2 घं. 12 मि.
2 | 12 के.चं. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | गु. 5 शु. मं. | 7 सू. | 9 | बु.6 रा. | 8 श.

27 अक्तूबर, 2 घं. 13 मि. से 29 अक्तूबर, 2 घं. 13 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 चं. | 11 | 4 | 10 | गु. 5 शु. मं. | 7 सू. | 9 | बु.6 रा. | 8 श.

29 अक्तूबर, 2 घं. 14 मि. से 29 अक्तूबर, 22 घं. 42 मि.
2 चं. | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | गु. 5 शु. मं. | 7 सू. | 9 | बु.6 रा. | 8 श.

29 अक्तूबर, 22 घं. 43 मि. से 31 अक्तूबर, 4 घं. 20 मि.
2 चं. | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | गु. 5 शु. मं. | बु. 7 सू. | 9 | 6 रा. | 8 श.

31 अक्तूबर, 4 घं. 21 मि. से 2 नवंबर, 10 घं. 09 मि.
2 | 12 के. | चं.3 | 1 | 11 | 4 | 10 | गु. 5 शु. मं. | बु. 7 सू. | 9 | 6 रा. | 8 श.

2 नवंबर, 10 घं. 10 मि. से 3 नवंबर, 7 घं. 29 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 चं. | 10 | गु. 5 शु. मं. | बु. 7 सू. | 9 | 6 रा. | 8 श.

3 नवंबर, 7 घं. 30 मि. से 3 नवंबर, 8 घं. 06 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 चं. | 10 | मं. 5 गु. | बु. 7 सू. | 9 | शु. 6 रा. | 8 श.

3 नवंबर, 8 घं. 07 मि. से 4 नवंबर, 20 घं. 02 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 चं. | 10 | 5 गु. मं. | बु. 7 सू. | 9 | शु. 6 रा. | 8 श.

4 नवंबर, 20 घं. 03 मि. से 7 नवंबर, 8 घं. 38 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | चं. 5 गु. मं. | बु. 7 सू. | 9 | शु. 6 रा. | 8 श.

7 नवंबर, 8 घं. 39 मि. से 9 नवंबर, 21 घं. 37 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 गु. मं. | बु. 7 सू. | 9 | शु. 6 चं. रा. | 8 श.

9 नवंबर, 21 घं. 38 मि. से 12 नवंबर, 9 घं. 11 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 गु. मं. | बु. 7 सू. चं. | 9 | शु.6 रा. | 8 श.

12 नवंबर, 9 घं. 12 मि. से 14 नवंबर, 18 घं. 43 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 गु. मं. | बु. 7 सू. | 9 | शु.6 रा. | 8 श. चं.

14 नवंबर, 18 घं. 44 मि. से 17 नवंबर, 00 घं. 02 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 गु. मं. | बु. 7 सू. | 9 चं. | शु.6 रा. | 8 श.

17 नवंबर, 00 घं. 03 मि. से 17 नवंबर, 2 घं. 11 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 गु. मं. | बु. 7 | 9 चं. | शु.6 रा. | सू. 8 श.

17 नवंबर, 2 घं. 12 मि. से 17 नवंबर, 7 घं. 29 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 चं. | 5 गु. मं. | बु. 7 | 9 | शु.6 रा. | सू. 8 श.

17 नवंबर, 7 घं. 30 मि. से 19 नवंबर, 7 घं. 33 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 चं. | 5 गु. मं. | 7 | 9 | शु.6 रा. | बु. सू. 8 श.

19 नवंबर, 7 घं. 34 मि. से 21 नवंबर, 10 घं. 48 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11चं. | 4 | 10 | 5 गु. मं. | 7 | 9 | शु.6 रा. | बु. सू. 8 श.

21 नवंबर, 10 घं. 49 मि. से 23 नवंबर, 12 घं. 16 मि.
2 | चं.12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 गु. मं. | 7 | 9 | शु.6 रा. | बु. सू. 8 श.

23 नवंबर, 12 घं. 17 मि. से 25 नवंबर, 13 घं. 03 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 चं. | 11 | 4 | 10 | 5 गु. मं. | 7 | 9 | शु.6 रा. | बु. सू. 8 श.

25 नवंबर, 13 घं. 04 मि. से 27 नवंबर, 14 घं. 49 मि.
2 चं. | 12 के. | 3 | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 गु. मं. | 7 | 9 | शु.6 रा. | बु. सू. 8 श.

27 नवंबर, 14 घं. 50 मि. से 29 नवंबर, 19 घं. 25मि.
2 | 12 के. | 3 चं. | 1 | 11 | 4 | 10 | 5 गु. मं. | 7 | 9 | शु.6 रा. | बु. सू. 8 श.

29 नवंबर, 19 घं. 26 मि. से 30 नवंबर, 7 घं. 46 मि.
2 | 12 के. | 3 | 1 | 11 | चं. 4 | 10 | 5 गु. मं. | 7 | 9 | शु.6 रा. | बु. सू. 8 श.

30 नवंबर, 2015 से 12 जनवरी, सन् 2016 ई.

30 नवंबर, 7 घं. 47 मि. से 2 दिसंबर, 4 घं. 00 मि.	2 दिसंबर, 4 घं. 01 मि. से 4 दिसंबर, 15 घं. 59 मि.	4 दिसंबर, 16 घं. 00 मि. से 6 दिसंबर, 12 घं. 00 मि.	6 दिसंबर, 12 घं. 01 मि. से 7 दिसंबर, 4 घं. 59 मि.	7 दिसंबर, 5 घं. 00 मि. से 9 दिसंबर, 16 घं. 28 मि.	9 दिसंबर, 16 घं. 29 मि. से 12 दिसंबर, 1 घं. 19 मि.
2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.
3 · 1 · 11	3 · 1 · 11	3 · 1 · 11	3 · 1 · 11	3 · 1 · 11	3 · 1 · 11
चं. 4 · 10	4 · 10	4 · 10	4 · 10	4 · 10	4 · 10
5 गु. · 7 शु. · 9 बु.	5 गु. चं. · 7 शु. · 9 बु.	5 गु. चं. · 7 शु. · 9 बु.	5 गु. चं. · 7 शु. · 9 बु.	5 गु. · चं. 7 शु. · 9 बु.	5 गु. · 7 शु. · 9 बु.
मं. 6 रा. · सू. 8 श.	मं. 6 रा. · सू. 8 श.	मं. 6 रा. · सू. 8 श.	मं. 6 रा. · सू. 8 श.	मं. 6 रा. · सू. 8 श.	मं. 6 रा. · सू. चं. 8 श.

12 दिसंबर, 1 घं. 20 मि. से 14 दिसंबर, 7 घं. 53 मि.	14 दिसंबर, 7 घं. 54 मि. से 16 दिसंबर, 12 घं. 54 मि.	16 दिसंबर, 12 घं. 55 मि. से 16 दिसंबर, 14 घं. 41 मि.	16 दिसंबर, 14 घं. 42 मि. से 18 दिसंबर, 16 घं. 48 मि.	18 दिसंबर, 16 घं. 49 मि. से 20 दिसंबर, 19 घं. 44 मि.	20 दिसंबर, 19 घं. 45 मि. से 22 दिसंबर, 22 घं. 04 मि.
2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · चं. 12 के.	2 · 12 के.
3 · 1 · 11	3 · 1 · 11	3 · 1 · 11 चं.	3 · 1 · 11 चं.	3 · 1 · 11	3 · चं. 1 · 11
4 · 10	4 · चं. 10	4 · 10	4 · 10	4 · 10	4 · 10
5 गु. · 7 शु. · चं. 9 बु.	5 गु. · 7 शु. · 9 बु.	5 गु. · 7 शु. · 9 बु.	5 गु. · 7 शु. · सू. 9 बु.	5 गु. · 7 शु. · सू. 9 बु.	5 गु. · 7 शु. · सू. 9 बु.
मं. 6 रा. · सू. 8 श.	मं. 6 रा. · सू. 8 श.	मं. 6 रा. · सू. 8 श.	मं. 6 रा. · 8 श.	मं. 6 रा. · 8 श.	मं. 6 रा. · 8 श.

22 दिसंबर, 22 घं. 05 मि. से 24 दिसंबर, 5 घं. 55 मि.	24 दिसंबर, 5 घं. 56 मि. से 25 दिसंबर, 0 घं. 45 मि.	25 दिसंबर, 0 घं. 46 मि. से 25 दिसंबर, 15 घं. 14 मि.	25 दिसंबर, 15 घं. 15 मि. से 26 दिसंबर, 23 घं. 51 मि.	26 दिसंबर, 23 घं. 52 मि. से 27 दिसंबर, 5 घं. 17 मि.	27 दिसंबर, 5घं. 18 मि. से 29 दिसंबर, 13 घं. 01 मि.
चं. 2 · 12 के.	चं. 2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.
3 · 1 · 11	3 · 1 · 11	3 चं. · 1 · 11	3 चं. · 1 · 11	3 चं. · 1 · 11	3 · 1 · 11
4 · 10	4 · 10	4 · 10	4 · 10	4 · 10 बु.	चं. 4 · 10 बु.
5 गु. · 7 शु. · सू. 9 बु.	5 गु. · मं. 7 शु. · सू. 9 बु.	5 गु. · मं. 7 शु. · सू. 9 बु.	5 गु. · मं. 7 · सू. 9 बु.	5 गु. · मं. 7 · सू. 9	5 गु. · मं. 7 · सू. 9
मं. 6 रा. · 8 श.	6 रा. · 8 श.	6 रा. · 8 श.	6 रा. · शु. 8 श.	6 रा. · शु. 8 श.	6 रा. · शु. 8 श.

29 दिसंबर, 13 घं. 02 मि. से 1 जनवरी, 0 घं. 11 मि.	1 जनवरी, 0 घं. 12 मि. से 3 जनवरी, 13 घं. 06 मि.	3 जनवरी, 13 घं. 07 मि. से 6 जनवरी, 0 घं. 56 मि.	6 जनवरी, 0 घं. 57 मि. से 8 जनवरी, 9 घं. 46 मि.	8 जनवरी, 9 घं. 47 मि. से 10 जनवरी, 15 घं. 31 मि.	10 जनवरी, 15 घं. 32 मि. से 12 जनवरी, 19 घं. 17 मि.
2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.	2 · 12 के.
3 · 1 · 11	3 · 1 · 11	3 · 1 · 11	3 · 1 · 11	3 · 1 · 11	3 · 1 · 11
4 · 10 बु.	4 · 10 बु.	4 · 10 बु.	4 · 10 बु.	4 · 10 बु.	4 · चं. 10 बु.
चं. 5 गु. · मं. 7 · सू. 9	5 गु. · मं. 7 · सू. 9	5 गु. · मं. 7 चं. · सू. 9	5 गु. · मं. 7 · सू. 9 चं.	5 गु. · मं. 7 · सू. 9 चं.	5 गु. · मं. 7 · सू. 9
6 रा. · शु. 8 श.	चं. 6 रा. · शु. 8 श.	6 रा. · शु. 8 श.	6 रा. · शु. 8 श.	6 रा. · शु. 8 श.	6 रा. · शु. 8 श.

12 जनवरी से 19 फरवरी, सन् 2016 ई.

12 जनवरी, 19 घं. 18 मि. से 14 जनवरी, 15 घं. 00 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 | चं. 10 बु.
5 गु. | मं. 7 | सू. 9
6 रा. | शु. 8 श.

14 जनवरी, 15 घं. 01 मि. से 14 जनवरी, 22 घं. 15 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11 चं.
4 | 10
5 गु. | मं. 7 | सू. 9 बु.
6 रा. | शु. 8 श.

14 जनवरी, 22 घं. 16 मि. से 15 जनवरी, 1 घं. 25 मि.

2 | चं. 2 के.
3 | 1 | 11
4 | 10
5 गु. | मं. 7 | सू. 9 बु.
6 रा. | शु. 8 श.

15 जनवरी, 1 घं. 26 मि. से 17 जनवरी, 1 घं. 12 मि.

2 | चं. 2 के.
3 | 1 | 11
4 | 10 सू.
5 गु. | मं. 7 | बु. 9
6 रा. | शु. 8 श.

17 जनवरी, 1 घं. 13 मि. से 19 जनवरी, 4 घं. 30 मि.

2 | 2 के.
3 | 1 चं. | 11
4 | 10 सू.
5 गु. | मं. 7 | बु. 9
6 रा. | शु. 8 श.

19 जनवरी, 4 घं. 31 मि. से 19 जनवरी, 6 घं. 20 मि.

2 चं. | 2 के.
3 | 1 | 11
4 | 10 सू.
5 गु. | मं. 7 | बु. 9
6 रा. | शु. 8 श.

19 जनवरी, 6 घं. 21 मि. से 21 जनवरी, 8 घं. 32 मि.

2 चं. | 12 के.
3 | 1 | 11
4 | 10 सू.
5 गु. | मं. 7 | बु.9शु.
6 रा. | 8 श.

21 जनवरी, 8 घं. 33 मि. से 23 जनवरी, 14 घं. 01 मि.

2 | 12 के.
3 चं. | 1 | 11
4 | 10 सू.
5 गु. | मं. 7 | बु.9शु.
6 रा. | 8 श.

23 जनवरी, 14 घं. 02 मि. से 25 जनवरी, 21 घं. 53 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 चं. | 10 सू.
5 गु. | मं. 7 | बु.9शु.
6 रा. | 8 श.

25 जनवरी, 21 घं. 54 मि. से 28 जनवरी, 8 घं. 35 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 | 10 सू.
चं. 5 गु. | मं. 7 | बु.9शु.
6 रा. | 8 श.

28 जनवरी, 8 घं. 36 मि. से 30 जनवरी, 1 घं. 51 मि.

2 | 12 के.
3 | 1 | 11
4 | 10 सू.
5 गु. | मं. 7 | बु.9शु.
चं. 6 रा. | 8 श.

30 जनवरी, 1 घं. 52 मि. से 30 जनवरी, 21 घं. 17 मि.

2 | 12
3 | 1 | 11 के.
4 | 10 सू.
5गु.रा. | मं. 7 | बु.9शु.
चं. 6 | 8 श.

30 जनवरी, 21 घं. 18 मि. से 2 फरवरी, 9 घं. 40 मि.

2 | 12
3 | 1 | 11 के.
4 | 10 सू.
5गु.रा. | मं. 7 चं. | बु.9शु.
6 | 8 श.

2 फरवरी, 9 घं. 41 मि. से 4 फरवरी, 19 घं. 17 मि.

2 | 12
3 | 1 | 11 के.
4 | 10 सू.
5गु.रा. | मं. 7 | बु.9शु.
6 | चं. 8 श.

4 फरवरी, 19 घं. 18 मि. से 7 फरवरी, 1 घं. 13 मि.

2 | 12
3 | 1 | 11 के.
4 | 10 सू. चं.
5गु.रा. | मं. 7 | बु.9शु.
6 | 8 श.

7 फरवरी, 1 घं. 14 मि. से 9 फरवरी, 3 घं. 05 मि.

2 | 12
3 | 1 | 11 के.
4 | 10 सू. चं.
5गु.रा. | मं. 7 | बु.9शु.
6 | 8 श.

9 फरवरी, 3 घं. 06 मि. से 9 फरवरी, 4 घं. 10 मि.

2 | 12
3 | 1 | 11 के.
4 | चं. बु. 10 सू.
5गु.रा. | मं. 7 | 9 शु.
6 | 8 श.

9 फरवरी, 4 घं. 11 मि. से 11 फरवरी, 5 घं. 40 मि.

2 | 12
3 | 1 | 11 के. चं.
4 | बु. 10 सू.
5गु.रा. | मं. 7 | 9 शु.
6 | 8 श.

11 फरवरी, 5 घं. 41 मि. से 12 फरवरी 14 घं. 48 मि.

2 | 12 चं.
3 | 1 | 11 के.
4 | सू. 10 बु.
5गु.रा. | मं. 7 | 9 शु.
6 | 8 श.

12 फरवरी, 14 घं. 49 मि. से 13 फरवरी 7 घं. 11 मि.

2 | 12 चं.
3 | 1 | 11 के.
4 | बु. सू. 10 शु
5गु.रा. | मं. 7 | 9
6 | 8 श.

13 फरवरी, 7 घं. 12 मि. से 13 फरवरी 14 घं. 24 मि.

2 | 12
3 | 1 चं. | 11 के.
4 | बु. सू. 10 शु
5गु.रा. | मं. 7 | 9
6 | 8 श.

13 फरवरी, 14 घं. 25 मि. से 15 फरवरी 9 घं. 52 मि.

2 | 12
3 | 1 चं. | 11 के. सू.
4 | बु 10 शु
5गु.रा. | मं. 7 | 9
6 | 8 श.

15 फरवरी, 9 घं. 53 मि. से 17 फरवरी 14 घं. 18 मि.

2 चं. | 12
3 | 1 | 11 के. सू.
4 | बु 10 शु
5गु.रा. | मं. 7 | 9
6 | 8 श.

17 फरवरी, 14 घं. 19 मि. से 19 फरवरी 20 घं. 46 मि.

2 | 12
3 चं. | 1 | 11 के. सू.
4 | बु 10 शु
5गु.रा. | मं. 7 | 9
6 | 8 श.

19 फरवरी से 1 अप्रैल, सन् 2016 ई.

अवधि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
19 फरवरी, 20 घं. 47 मि. से 20 फरवरी, 16 घं. 38 मि.	1	2	3	चं. 4	5 गु. रा.	6	मं. 7	8 श.	9	बु 10 शु	11 के. सू.	12
20 फरवरी, 16 घं. 39 मि. से 22 फरवरी, 5 घं. 26 मि.	1	2	3	चं. 4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	बु 10 शु	11 के. सू.	12
22 फरवरी, 5 घं. 27 मि. से 24 फरवरी, 16 घं. 19 मि.	1	2	3	4	चं. 5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	बु 10 शु	11 के. सू.	12
24 फरवरी, 16 घं. 20 मि. से 27 फरवरी, 4 घं. 53 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	चं. 6	7	मं. 8 श.	9	बु 10 शु	11 के. सू.	12
27 फरवरी, 4 घं. 54 मि. से 29 फरवरी, 17 घं. 36 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	चं. 7	मं. 8 श.	9	बु 10 शु	11 के. सू.	12
29 फरवरी, 17 घं. 37 मि. से 2 मार्च, 0 घं. 09 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	7	चं. मं. 8 श.	9	बु 10 शु	11 के. सू.	12
2 मार्च, 0 घं. 10 मि. से 3 मार्च, 4 घं. 19 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	7	चं. मं. 8 श.	9	10 शु	बु. 11 के. सू.	12
3 मार्च, 4 घं. 20 मि. से 5 मार्च, 11 घं. 26 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9 चं.	10 शु	बु. 11 के. सू.	12
5 मार्च, 11 घं. 27 मि. से 7 मार्च, 14 घं. 50 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	10 शु. चं.	बु. 11 के. सू.	12
7 मार्च, 14 घं. 51 मि. से 7 मार्च, 21 घं. 05 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	10 शु.	बु. चं. 11 के. सू.	12
7 मार्च, 21 घं. 06 मि. से 9 मार्च, 15 घं. 40 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	10	बु. शु. चं. 11 के. सू.	12
9 मार्च, 15 घं. 41 मि. से 11 मार्च, 15 घं. 41 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	10	शु. 11 के. बु. सू.	12 च
11 मार्च, 15 घं. 42 मि. से 13 मार्च, 16 घं. 38 मि.	1 चं.	2	3	4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	10	शु. 11 के. बु. सू.	12
13 मार्च, 16 घं. 39 मि. से 14 मार्च, 11 घं. 16 मि.	1	चं. 2	3	4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	10	शु. 11 के. बु. सू.	12
14 मार्च, 11 घं. 17 मि. से 15 मार्च, 19 घं. 57 मि.	1	चं. 2	3	4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	10	के. 11 बु. शु.	सू. 12
15 मार्च, 19 घं. 58 मि. से 18 मार्च, 2 घं. 18 मि.	1	2	चं. 3	4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	10	के. 11 बु. शु.	सू. 12
18 मार्च, 2 घं. 19 मि. से 19 मार्च, 4 घं. 36 मि.	1	2	3	चं. 4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	10	के. 11 बु. शु.	सू. 12
19 मार्च, 4 घं. 37 मि. से 20 मार्च, 11 घं. 33 मि.	1	2	3	चं. 4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	10	11 के. शु.	सू. 12 बु.
20 मार्च, 11 घं. 34 मि. से 22 मार्च, 22 घं. 58 मि.	1	2	3	4	चं. 5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9	10	11 के. शु.	सू. 12 बु.
22 मार्च, 22 घं. 59 मि. से 25 मार्च, 11 घं. 37 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6 चं.	7	मं. 8 श.	9	10	11 के. शु.	सू. 12 बु.
25 मार्च, 11 घं. 38 मि. से 28 मार्च, 0 घं. 22 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	7 चं.	मं. 8 श.	9	10	11 के. शु.	सू. 12 बु.
28 मार्च, 0 घं. 23 मि. से 30 मार्च, 11 घं. 48 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	7	चं. मं. 8 श.	9	10	11 के. शु.	सू. 12 बु.
30 मार्च, 11 घं. 49 मि. से 1 अप्रैल, 3 घं. 23 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9 चं.	10	11 के. शु.	सू. 12 बु.
1 अप्रैल, 3 घं. 24 मि. से 1 अप्रैल, 20 घं. 22 मि.	1	2	3	4	5 गु. रा.	6	7	मं. 8 श.	9 चं.	10	11 के.	सू. 12 बु. शु.

1 से 8 अप्रैल, सन् 2016 ई.

1 अप्रैल, 20 घं. 23 मि. से 3 अप्रैल, 3 घं. 43 मि.	*3 अप्रैल, 3 घं. 44 मि. से 4 अप्रैल, 1 घं. 14 मि.*	*4 अप्रैल, 1 घं. 15 मि. से 6 अप्रैल, 2 घं. 46 मि.*	*6 अप्रैल, 2 घं. 47 मि. से 8 अप्रैल, 2 घं. 20 मि.*
2, सू. 12 बु. शु., 3, 1, 11 के., 4, 10 चं., 5गु.रा., 7, 9, 6, मं. 8 श.	2, सू. 12 शु., 3, बु. 1, 11 के., 4, 10 चं., 5गु.रा., 7, 9, 6, मं. 8 श.	2, सू. 12 शु. चं., 3, बु. 1, 11 के., 4, 10, 5गु.रा., 7, 9, 6, मं. 8 श.	2, सू. 12 शु. चं., 3, बु. 1, 11 के., 4, 10, 5गु.रा., 7, 9, 6, मं. 8 श.

(पृष्ठ 35 का शेष)

वृश्चिक होगा। तदनुसार इसकी कुण्डली यह बनेगी–

अब वर्षकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं–

उदाहरण (3)– भारत (हि.प्र.), सोलन में 15 अगस्त, 1974 ई. (गुरुवार) को 11घं. 14 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर जन्मे एवम् सम्प्रति मोहाली (पंजाब) में रहने वाले जातक की ई. सन् 2015–16 की वर्षकुण्डली जाननी है ?

इस जातक के गताब्द यहां 41 मिले और 42वां वर्षप्रवेश 15 अगस्त, 2015 ई. (शनिवार) को 23घं. 30मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

क्योंकि, इस जातक का वषप्रवेश "15 अगस्त 01 घं. 28 मि. से 17 अगस्त 12घं. 24मि. " के मध्य हुआ है, अतः इसकी वर्षकुण्डली (42वें वर्ष की) यहां दी गई इसी कुण्डली– अनुरूप होगी। किञ्च– इस जातक के निवासस्थान मोहाली (पं.) में इस समय (15 अगस्त, 2015 ई. को 23 घं. 30 मि. पर) वृष लग्न है, अतः इस जातक की वर्षकुण्डली यह बनेगी–

अब प्रश्नकुण्डली का उदाहरण भी ले लेते हैं–

उदाहरण (4)– मान लें, 15 जनवरी, 2016 ई. को 10 घं. 50 मि. (भा.स्टै.टा.)पर आपके पास देहली (भारत) में आकर कोई प्रश्नकर्त्ता कार्यसिद्धि–असिद्धि का प्रश्न करता है। इसकी प्रश्नकुण्डली जाननी है ?

यहां प्रश्नकालिक तारीख 15 जनवरी, 2016 ई. और प्रश्नकाल 10 घं. 50 मि. —→ इस स्तंभ में दिए गए "15 जन. 1 घं. 26 मि. से 17 जन. 1घं. 12 मि." के मध्य पड़ता है, अतः यहां यह प्रश्नकुण्डली इसी अवधि के अंतर्गत आने वाली इस कुण्डली के अनुरूप होगी। किञ्च– यहां प्रश्नस्थल (देहली) में इस समय लग्न मीन है, अतः यहां इस प्रश्नकर्ता की कुण्डली इसतरह बनेगी–

आगे मुहूर्तकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं–

उदाहरण–(5) हमारे इस पंचांग (श्री मार्त्तण्ड) में 3 मार्च, 2016 ई. को पृष्ठ...267 .. पर दिए मेष लग्न वाले विवाहमुहूर्त्त की कुण्डली जाननी है ?

इस (मेष) लग्न का काल इस दिन (3 मार्च, 2016 ई. को) चण्डीगढ़ में 8 घं. 44 मि. से 10 घं. 17 मि. तक है और यह लग्नकाल इस स्तंभ के अन्तर्गत दिए गए " 3 मार्च 4 घं. 20 मि. से 5 मार्च 11 घं. 26 मि." के मध्य पड़ता है, अतः यह मुहूर्त्तकुण्डली यहां दी इसी कुण्डली के अनुरूप इस तरह बनेगी–

इस प्रकार पाठक समझ गए होंगे– जन्म, वर्षप्रवेश, प्रश्न, मुहूर्त्त आदि कालिक लग्नकुण्डलियां बनाना अत्यन्त सरल है।

ध्यान रहे– कुण्डली की ग्रहस्थिति (ग्रहों की राशि आदि) स्थानभेद से नहीं बदलती, केवल लग्न ही बदला करता है।

शनि की साढेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैय्या (लघुकल्याणी) और गुरु–राहु का गोचरफल (सं. 2072 वि.)

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगडा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

शनि की साढ़ेसाती किसे कहते हैं ? समझ लें– शनि की गोचर–स्थिति को ध्यान में रखते हुए जब किसी व्यक्तिविशेष की जन्मराशि किंवा नामराशि से पहले, दूसरे या बारहवें स्थान में शनि हो तो गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जातक 'साढेसाती' के प्रभाव में रहता है। अर्थात् उस व्यक्ति पर साढेसाती चल रही होती है।

व्यक्तिविशेष के लिए साढेसाती का फल इसप्रकार लिखा है–

" राशौ द्वादश–मूर्ध्नि जन्महृदये पादौ द्वितीये शनिः।
नानाक्लेशकरो हि दुर्जनभयं पुत्रान् पशून् पीड़येत्।।"

"शनि की ढैय्या" किसे कहते हैं ? यह भी जान लें–गोचर अनुसार किसी व्यक्तिविशेष की जन्म (चन्द्र) राशि किंवा नामराशि से जब शनिदेव चौथे या आठवें स्थान पर हो तो उस व्यक्तिविशेष पर 'शनि की ढैय्या' चल रही है – ऐसा जानें। ढैय्या का **फल इस प्रकार है;–**

" ढैय्या तु प्रददाति वै रविसुतश्चेद्राशेश्चतुर्थाष्टमे।
व्याधिं बन्धुविरोध–विदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।।"

ध्यान दें– शुभ एवं क्रूरग्रहविचार में गुरु–शुक्र स्थितिविशेष–विचार से शुभ एवं शनि–मंगल अशुभ फलप्रद माने गए हैं ;–

" तेषामतीव शुभदौ गुरु–दानवेज्यौ।
क्रूरौ दिवाकरसुत–क्षितिभौ भवेताम्।।"–(*फलितमार्त्तण्ड*)

शनि लगभग अढाई वर्ष तक एक ही राशि में संचार करने के कारण इसे 'मन्द' किंवा ' शनैश्चरति ' इति 'शनि' की संज्ञा दी गई है। लेकिन शनिग्रह की वक्र एवं मार्गी गति के कारण अनेकदा अपनी अढाई वर्ष के काल में न्यूनाधिकता भी कर देता है। कभी–कभी शनि अपनी वक्र–मार्ग गति एवं अतिचार के कारण एक वर्ष में दो राशियों को भी स्पर्श कर लेता है, जोकि मेदिनी ज्योतिष एवं तत्तद्राशि के व्यक्ति एवं देश के लिए कठिन परिस्थितियों को भी जन्म देता है।

अनेकदा शनि–मंगल दोनों क्रूर ग्रह वर्ष में वक्रगति से चलें या दोनों में से कोई एक वक्रगति से चलकर एकराशि–सम्बन्ध बना ले तो अधिक नेष्ट फलप्रद हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में जातकविशेष को साढेसाती किंवा ढैय्या शारीरिक कष्ट, वायु–रक्त–पित्त–विकार, त्वचारोग, आर्थिक संकट, शत्रुपक्ष से मानसिक परेशानी, दुर्घटना से हानि आदि फल करते हैं। देश–विशेष के लिए राजनीतिज्ञों में विरोध, सत्तासंघर्ष, प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु, आर्थिक/सामाजिक अव्यवस्था, असन्तोष, भूकम्प, तूफान, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति आदि आपदाएं उपस्थित करता है–"क्रूराः वक्राः महाक्रूराः" ।

वृश्चिकराशि में शनि का प्रवेश–संवत् 2071 वि. में 2 नवंबर, सन् 2014 ई. को 20 घं. 54 मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर शतभिषा नक्षत्र एवं कुम्भ राशिस्थ चन्द्र के समय शनिदेव वृश्चिक राशि में पदार्पण करके संवत् 2072 वि. के अन्त तक वृश्चिक राशि में ही विचरण करते रहेंगे।

वृश्चिक राशि में स्थित शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का विचार

आगे दिया गया कोष्ठक देखें–तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि वाले व्यक्ति इसवर्ष साढेसाती के प्रभाव में व सिंह व मेष राशि वाले जातक ढैय्या के प्रभाव में रहेंगे।

वृश्चिक राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(2 नवंबर, सन् 2014 ई. से सं. 2072 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
सिंह	ढैय्या	ताम्र	– –	– –	अचानक धनलाभ, स्त्री–पुत्र से सुख, सम्पत्ति–लाभ, प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहें, सेहत ठीक।
तुला	साढेसाती	रजत	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, धनधान्यसमृद्धि, प्रभावक्षेत्र बढ़े, राजपक्ष से सम्मान, सुख–सम्पत्तिलाभ, घर में मंगलकार्य हों।
वृश्चि.	साढेसाती	लौह	हृदय	– –	शरीरपीड़ा, रक्त–पित्तविकार से परेशानी, स्त्री–कष्ट, पशु किंवा सन्तानपक्ष से कष्ट, व्यापार में हानि एवं राजपक्ष से भय।
धनु	साढेसाती	ताम्र	मस्तक	चढ़ती	व्यापार में प्रचुर लाभ हो। स्त्रीपक्ष एवं पुत्र से सुख, सेहत ठीक, प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहें।
मेष	ढैय्या	सुवर्ण	– –	– –	निजीजन विरोध, शत्रुवृद्धि, गृहक्लेश, रोगों से परेशानी, वृथा खर्च, धननाशभय।

दो राशियों को भी स्पर्श कर लेता है, जोकि मेदिनी ज्योतिष एवं तत्तद्राशि के व्यक्ति

मेष	ढैय्या	सुवर्ण	— —	— —	निजीजन विरोध, शत्रुवृद्धि, गृहक्लेश, रोगों से परेशानी, वृथा खर्च, धनहानिभय।

नोटः– पीछे दिए गए कोष्ठक में जिन राशियों का निर्देश (ज़िक्र) नहीं किया गया है; उन राशि वाले जातकों के लिए इस साल वृश्चिक राशिस्थ शनि की समयावधि में साढेसाती या ढैय्या नहीं है– यह समझ लें।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहिले अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारंम्भ के अढाई वर्ष, मकर को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुंभ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं।

शनिजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा–दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना भी श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभ वेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर रहेगा।

शनि का बीज मन्त्र– "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले "अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर–नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि–मन्त्रजापमहं करोमि"– इस प्रकार संकल्प करके शनि–मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्तसमय (गोधूलि–वेला में) शनि–मन्त्रजाप, स्तोत्रपाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर दान करें और सायंकाल पीपल के नीचे दीपक जलाएं।

मन्त्रजाप की विधि– अनुष्ठान शनिवार को शुरु करें। सूर्यास्तसमय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर पश्चिमाभिमुख होकर (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लोहे के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अञ्जलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली, धूप, लालचन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर " ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"– इस मन्त्र का कुल 23 हजार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी थी को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटे) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें :–

" ॐ नमः कृष्णाय नीलाय शिति–कण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्नि–रूपाय कृतान्ताय च ते नमः।।"

इस मन्त्रोच्चारण के बाद "दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग" से नमस्कार करके घर को जाएं। किसी अच्छे विद्वान् दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) 'नीली' नग या 'नीलम' धारण करना भी ठीक रहेगा।

शनिजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ वैदिक मन्त्र –

"ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु नः। शं शनये नमः ॐ।।"

शनिजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शनैश्चर–स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

" ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च ।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र का पाठ शनिवार को पीपल के नीचे बैठकर एवं अन्य दिनों में भगवान् शंकर से प्रार्थनापूर्वक शिवमंदिर या घर में भी बैठकर प्रातः पढ़ने से साढेसाती व ढैय्या की दुःखद पीड़ा नहीं होती– अनुभूत है।

शनिजन्य नेष्टफल परिहारार्थ तुलादान कराएं–

विधि– शनि ग्रह से पीड़ित व्यक्ति अपने जन्मदिन पर व **शनैश्चरी अमावस** किंवा शनिवार को दिन में लगभग 11/12 बजे गेहूं, काले चने, चावल, बाजरा, कालीदाल (माह), जौ, मूंग आदि (सात) अनाजों से अपने वजन के बराबर तोल कर दान (तुलादान) करें। साथ ही तेल में मुंह देखकर दक्षिणा–सहित शनि का दान लेने वाले (ढौंसी) को दे दें। बाद में **तुलादान** के समय पहने हुए कपड़े भी स्नान करके दान कर दें। नोट– तुलादान से पहिले यदि कोई बहुमूल्य आभूषण आदि शरीर पर धारण किया हुआ हो, वह भी पहिले ही उतार दें, **अन्यथा वह भी दान करना होगा।**

कर्क/सिंह राशिस्थ गुरु का फल

कर्कराशि में गुरु का प्रवेश–सं. 2071 वि. में 19 जून, 2014 ई. को 8 घं. 47 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर पू. भा. नक्षत्र, आयुष्मान् योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव कर्कराशि में प्रविष्ट होकर सं. 2072 वि. में 13 जुलाई, सन् 2015 ई. तक कर्कराशि में ही रहेंगे।

कर्कराशि के गुरु का गोचरफल –

" बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पं मेघः प्रवर्षति।
शासने पारदर्शित्वात् विपक्षिभिर्विग्रहःक्वचित्।।"

अर्थात्–कर्कराशिस्थ (उच्च) का गुरु होने से शासन में पारदर्शिता के कारण विपक्षी दल में विरोधप्रदर्शन की स्थिति नज़र आए। कहीं यथासमय वर्षा न होने किंवा वर्षा की न्यूनता से कृषि को हानि पहुंचे अर्थात् कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी संभव है ।

ध्यान दें– संवतारम्भ में 7 अप्रैल तक गुरु वक्री रहेगा।

कर्क राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल
(19 जून, सन् 2014 ई. से 13 जुला. सन् 2015 ई तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग–भय	सुखप्राप्ति

सिंहराशि में गुरु का प्रवेश–संवत् 2072 वि. में 14 जुलाई, सन् 2015 ई., मंगलवार को मृगशिर नक्षत्र, ध्रुव योग एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय गुरु सिंहराशि में प्रातः 6 बजकर 26 मि. पर प्रवेश करेगा।

सिंहराशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल
(14 जुलाई, सन् 2015 ई. से सं. 2072 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग

सिंहस्थ वक्री गुरु – 8 जनवरी, सन् 2016 ई. को गुरु वक्री होकर संवत् 2072 वि. के अन्त तक वक्री ही रहेगा।

सिंहस्थ वक्री गुरु का फल–

"सिंह-राशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सर्वलोके प्रसन्नता।।"

अर्थात्– सिंहस्थ गुरु के वक्री होने पर सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य रहे एवं सर्वत्र प्रसन्नता का वातावरण रहे। अशुभ ग्रहयुक्त या दृष्ट गुरु शुभफल में न्यूनता करता है। इसी प्रकार शुभयुक्त किंवा शुभदृष्ट गुरु शुभफल में वृद्धि करता है।

गुरुजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ उपाय

गुरुग्रह नेष्टफलप्रद हो तो :–गुरुवार को (विशेषतः गुरुवारी अमावस वाले दिन) केले के वृक्ष को सींचना चाहिए। पीली वस्तु (चना, पीला फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांधकर दान करें। सोना, गुड़, शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरु ग्रह के बीजमन्त्र का 19 हजार जाप करें। गुरु का **जपनीय बीजमन्त्र यह है:– " ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।"** केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। **पीला पुखराज 5/7 रत्ती** पुरुष दाएं हाथ की तर्जनी अंगुली में एवं स्त्रियां बाएं हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करें।

राहु का शुभाशुभ फल

सं. 2071 वि. में 12 जुलाई, सन् 2014 ई. को 21 घं. 51 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर उ.षा. नक्षत्र, वैधृति योग एवं धनुःस्थ चन्द्र के समय राहु कन्या राशि में प्रविष्ट होकर 29 जनवरी, सन् 2016 ई. तक कन्याराशि में ही संचरण करेगा।

कन्याराशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(12 जुलाई, सन् 2014 ई. से 29 जनवरी, सन् 2016 ई. तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धनहानि	राजभय

सिंहराशि में राहु का प्रवेश– 29/30 जनवरी, सन् 2016 ई. को 25 घं. 52 मि.(भा.स्टैं.टा.) पर हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग एवं कन्यास्थ चन्द्र के समय राहु सिंहराशि में प्रवेश करेगा।

सिंहराशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(29/30 जनवरी, सन् 2016 ई. से संवत् 2072 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धनहानि	राजभय	महासुख

राहु जन्माङ्ग या गोचर में नेष्ट फलप्रद हो तो– कम्बल, तिल–तैल, नारियल, लौंग एवम् काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणासहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु का बीजमन्त्र (" **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।**") का 18 हजार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहुशान्त्यर्थ **'गोमेद' 5/7 रत्ती धारण कर सकते हैं।**

अथ नवग्रहस्तोत्रम्

जपाकुसुम–संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव-संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियङ्गु–कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन–सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यःपठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति।।
नर-नारी-नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।

———

श्री पन्नालाल जी ज्योतिषी– एक श्रद्धांजलि

'पंचांग दिवाकर' (जालन्धर) के प्रधान सम्पादक, फलित एवम् मन्त्रशास्त्र पर अनेक ग्रन्थों के लेखक पं. पन्नालाल जी के 15 मई, सन् 2014 ई. को आकस्मिक निधन से ज्योतिष–जगत् को भारी आघात पहुंचा है।

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' (कुराली) का **' सम्पादक परिवार '** उनके सुपुत्रों एवम् अन्य पारिवारिक सदस्यों के प्रति हार्दिक संवेदना/शोक व्यक्त करता है। पं. पन्नालाल जी बहुत मृदुभाषी, सरल प्रकृति के व्यक्ति एवम् भारतीय संस्कृति के अनन्य भक्त थे।

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' के सम्पादक मण्डल की ओर से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए भगवान् से प्रार्थना है एवम् पं. पन्नालाल जी के पारिवारिक सदस्यों को उनका विछोह सहन करने की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

सम्पादक मण्डल,'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग', कुराली (मोहाली) पं.

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2072 वि.)

(ग्रहपरिषद् एवं ग्रहगोचर के आधार पर विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का सर्वेक्षण)

- सं. 2072 वि. का राजा 'शनि' एवम् मन्त्री 'मंगल' होने से विश्व के यवनबहुल राष्ट्रों पाक–अरबराष्ट्र एवम् रूस–उज़बेकिस्तान, यूक्रेन आदि में आन्तरिक अशान्ति व कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन।
- इस 'कीलक ' संवत्सर में कहीं उग्रवादजन्य जनधनहानि एवम् कहीं सीमाप्रान्तों पर युद्धमय वातावरण से अशान्ति रहे।
- 3 मई से 30 जुलाई, 2015 ई. तक, 15 सितं. से नवं., 2015 ई. तक एवम् 20 फरवरी 2016 ई. से संवत् 2072 वि. के अन्त तक शनि–मंगल आदि की स्थिति विश्व में अघटित घटनाओं को जन्म देगी। कहीं समुद्री तूफान, कहीं भूकम्प किंवा अन्य प्राकृतिक प्रकोप व युद्ध से अनेकत्र जनधनहानि का भय है।
- अमेरिका, भारत, पाकिस्तान एवम् कुछ अन्य देशों के प्रधान–नेताओं को राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने हेतु विशेष चर्चा के लिए सम्मति बनानी होगी।
- भारत को चीन–बंगलादेश–पाक–काश्मीर एवम् नेपाल के सीमाप्रान्तों पर सावधान रहना होगा।
- श्री नरेन्द्रमोदी एवम् भाजपाशासित भारत के भविष्य में क्या स्थिति बनेगी ?
- श्रीमती सोनिया गांधी एवम् कांग्रेस की भावी नीति तथा भविष्य ?
- भारत की राजनैतिक–आर्थिक–सामाजिक स्थिति का भविष्य– 'अच्छे दिन' कब आने वाले हैं ?
- विदेशों के साथ भारत की विदेशनीति एवम् भारत की गरिमा का आकलन पढ़ें –''आकाशी कौंसिल'' में ।

पाठको ! यह बृहद् ब्रह्माण्ड विधाता का एक चक्र है, सभी जीव उसके अनुसार ही चलने को विवश हैं। इस प्रकार स्वयं को ईश्वर से पृथक् समझता प्राणी इस चक्र से बन्धा जीवन–मरण से मुक्त नहीं होता। ' श्वेताश्वतरोपनिषद् ' का वचन है:–

''सर्वाजीवे सर्वसंस्थे बृहन्ते अस्मिन् हंसो भ्राम्यते ब्रह्मचक्रे।
पृथगात्मानं प्रेरितारं च मत्वा जुष्टस्ततस्तेनामृतत्वमेति।। ''

इस उपनिषद्वाक्य के अनुसार प्रत्येक प्राणी अपने अस्तित्व की वास्तविकता को ढूंढने के लिए सर्वप्रथम ज्योतिषशास्त्र का आश्रय लेता है।

अज्ञात, अलौकिक शक्ति के परिचायक अनन्तकोटि तारों एव ग्रहों के अदृश्य सकेत से संचालित ब्रह्माण्ड में कभी भूकम्प, समुद्री/बर्फानी तूफान, ज्वालामुखी–विस्फोट एवं जनजीवन में उग्र–विनाशक घटनाएं स्पष्ट अनुभव की गई हैं।

प्रत्येक वर्ष ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर देश–विदेश में घटित होने वाली घटनाओं का चित्रण श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में हम प्रतिवर्ष अपने पाठकों के समक्ष उपस्थित करते आ रहे हैं। यह इस गौरवमय प्रकाशन का 88 वां वर्ष आपके सामने प्रस्तुत है।

श्री वि. संवत् 2072 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठको का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 87 वर्षो तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 88 वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे मे कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। **पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित, समस्या–समाधान, प्रामाणिक ग्रहणगणित, शोधपूर्ण लेखों एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।**

आपके इस लोकप्रिय पंचांग मे प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक, अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारण वर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल, आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांगगणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

[भारत–पाकविभाजन; बंगलादेश का अस्तित्व में आना; श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीलालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना; भारत–पाकयुद्ध; भारत–चीनयुद्ध; विदेशों में घटित होने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र; समय–समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना किंवा ऐतिहासिक भूकम्प; गुजराल सरकार का अपदस्थ होना, भाजपा सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित होना; पाक में श्री नवाज़शरीफ की सरकार का तख्तापलट; अमेरिका में वर्ल्डट्रेड सेंटर एवं पेंटागन पर उग्रवादियों का हमला, अमरीका की कोलम्बिया आन्तरिक शटलयान दुर्घटना; इराक पर अमरीकी हमला और सद्दाम हुस्सैनशासन का अन्त; नेपाल में माओवाद से अशान्ति एवं राजशाही का अन्त; अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री रीगन की मृत्यु; संवत् 2061 वि. में भाजपा एवम् N.D.A. शासन का तख्तापलट एवम् भारत के लोकसभानिर्वाचनों में त्रिशंकु शासनसत्ता की भविष्यवाणी के अतिरिक्त 26 दिसंबर 2004 ई. को तामिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश एवं अण्डेमान–निकोबार में समुद्री सुनामी–लहरों से प्रलयंकारी तबाही की सटीक भविष्यवाणी, 30 अगस्त, 2004 ई. को अमरीका में भूकम्प एवम् अन्य अनेकों अवाक् कर देने वाली सफल भविष्यवाणियां कर देने का शीर्षस्थ स्थान केवल 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' को ही प्राप्त हुआ है ।]

अपि च– संवत् 2063 वि. में इराक के तानाशाह की फांसी की घोषणा; 20 दिसम्बर, 2006 ई. को समुद्रीतूफान, जहाज डूबा, 865 यात्री मारे गए– इस घटना की भविष्यवाणी; भारत–अमेरिका परमाणुकरार में बाधा एवम् प्रधानमन्त्री श्रीमनमोहन सिंह जी के निर्णय में बाधक स्थिति की सूचना; मई से जुलाई 2007 ई. के मध्य पाक आदि मुस्लिम राष्ट्रों में घटित घटनाओं का चित्रण; 30 जून, 2007 ई. को देहली के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्रीसाहिब सिंह के दुर्घटनाग्रस्त होने की भविष्यवाणी, 16 अगस्त, 2007 ई. को पीरु के भयंकर भूकम्प; 21 अगस्त, 2007 ई. में मैक्सिको के भयंकर तूफान; 12 सितम्बर, 2007 को सुमात्रा–इण्डोनेशिया में 7.9 स्केल के भूकम्प, *संवत् 2064 वि.* की भविष्यवाणी के अनुसार उत्तर प्रदेश में बसपा सरकार की स्थापना, नेपाल में माओवादियों के प्रभाव की घोषणा; 27 दिसम्बर, 2007 ई. को पाक में श्रीमती बेनजीर भुट्टो की हत्या की भविष्यवाणी; 12 मई, 2008 ई. को चीन में भयंकर भूकम्प; 3 मई, 2008 ई. को म्यांमार में भूकम्प; सं. 2065 वि. में मुंबई स्थित ताज होटल पर सब से बडे उग्रवादी हमले की भविष्यवाणी; 14 नवम्बर, 2008 ई. को चन्द्रमा पर भारत का तिरंगा फहराना एवं भारत के विश्व की चौथी शक्ति के रूप में उदय की भविष्यवाणी; *सं. 2066 वि. में नेपाल में राजतन्त्र की समाप्ति एवम् गणतन्त्र की स्थापना, सं 2066 वि. में अमरीका में बराक ओबामा के राष्ट्रपति बनने की भविष्यवाणी, श्री मनमोहन सिंह जी का पुनः प्रधानमन्त्री बनना; 12/13 जनवरी, 2010 ई. को हैती के विनाशकारी भूकम्प की भविष्यवाणी; 27 फरवरी, 2010 में चिल्ली में 8.8 रैक्टेयर भूकम्प, 17 जनवरी, 2010 को भारतीय राजनीति के युग पुरुष ज्योतिवसु जी के स्वर्गवास, 15 मई, 2010 ई. को पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत का महाप्रयाण, 5/6 अगस्त, 2010 ई. को लेह–लदाख में बादल फटने से हवाई अड्डे के ध्वस्त होने की भविष्यवाणी, 10/11 अगस्त, 2010 को जापान एवं चीन में भयंकर भूकम्प की भविष्यवाणी, 14 अप्रैल, 2010 ई. को तिब्बत के पठार में भयंकर भूकम्प की भविष्यवाणी; 11 मार्च, 2011 ई. में सदी के सबसे विनाशकारी भूकम्प की भविष्यवाणी सं. 2067 वि. के पृ. 122 पर; 13 जुलाई 2011 मुम्बई में उग्रवादियों द्वारा कहर बरपाने की भविष्यवाणी पृ. 22 पर, 2 मई, 2011 ई. को आतंकवादी लाडेन की भविष्यवाणी सं. 2068 वि. के पंचांग पृ. 29 पर, लीबिया के शासक कर्नल गद्दाफी के मारे जाने की भविष्यवाणी एवम् 24 अक्तूबर, 2011 ई. को तुर्की में भीषण भूकम्प, लाखों लोगों के बेघर होने की भविष्यवाणी पृ. 29 पर; सं. 2069 वि. के पंचांग में 3 अगस्त, सन् 2012 ई. को चीन में भूकम्प पृ. 33–34, 27 अगस्त को उ.प्र., नेपाल, मुम्बई, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवम् केरल में लाखों लोग जलग्रस्त होने की भविष्यवाणी पृ. 100 पर; भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल के निधन की भविष्यवाणी एवम् शिवसेना प्रमुख श्री बालठाकरे के निधन की भविष्यवाणी सं. 2068 वि. के पंचांग पृ. 38, कॉलम 2 पर। 2 जून, सन् 2013 ई. को उत्तराखण्ड में प्राकृतिक भीषण आपदा से महाविनाश की भविष्यवाणी श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2070 वि. के पृ. 44 पर लिखी गई थी।*

इत्यादि अनेकों अवाक् कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा का विस्तृत विवेचन आप गतवर्षों के पंचांगों में पढ़ सकते हैं। स्थानाभाव के कारण सभी गतवर्षों की सफल भविष्यवाणियों की चर्चा करना यहां संभव नहीं है, लेकिन संवत् 2071 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में से भी कुछ भविष्यवाणियों का उल्लेख संक्षेप में कर देना प्रासंगिक रहेगा। यद्यपि भविष्यवाणियों की चर्चा आकाशी कौंसिल में प्रसंगवश कर दी गई है, जो अछूती भविष्यवाणियां रह गई हैं, उन्हें यहां संक्षेप में दे रहे हैं।

(1) संवत् 2071 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में 'प्लवंग' नामक संवत्सर के फलादेश में " भारत में सत्तापरिवर्तन" का संकेत स्पष्टरूप से पहले ही दे दिया गया था। पढ़ें– पृष्ठ 49, कॉलम 2 पर–

" किञ्च– इस ' प्लवंग ' संवत्सर में वर्षा मध्यम हो, जनता में नाना प्रकार के भयंकर रोगों से परेशानी हो, *शासकगण (राजनैतिक दल) परस्पर शक्तिपरीक्षण के लिए कटिबद्ध रहेंगे। राष्ट्रविशेष की सत्ता में (इस संवत् 2071 वि. में) परिवर्तन के भी योग बनते हैं* "

इसवर्ष इबोला एवम् अन्य बीमारियों से भी लोग परेशान रहें. Hindustan Times में 24/7/2014 को लिखा था " **550 dead in encephalitis outbreak**"

(2) इसवर्ष भयंकर अग्निकाण्डों से जनता त्रस्त रही। पढ़ें श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2071 वि. के पर पृ. 50, कॉलम 1 पर–

" इस संवत्सर का राजा एवं मन्त्री– दोनों पदों पर केवल चन्द्रमा का ही अधिकार है। अतः इस संवत्सर में अग्निकाण्ड एवं अनैतिक (चोरी, लूटमार किंवा अपहरण आदि) घटनाएं शासनतन्त्र के लिए सिरदर्द बनेंगी –

" स्वयं राजा स्वयं मन्त्री अग्निचौरादिजं भयम्।"

अग्निकाण्डों की भविष्यवाणी की सत्यता–

(i) कलेसर के जंगलों में लगी आग, 4 एकड़ जंगल जलकर राख,

(पंजाब केसरी–8/6/2014)

(ii) 6 मास में 350 अग्निकाण्डों का दंश झेल चुका है (चण्डीगढ़) शहर–

(पंजाब केसरी– चण्डीगढ़ संस्करण पृ. 3 तारीख 3/7/2014)

(iii) आग से 5 मंज़िला इमारत ढही, 2 फायरमैनों की मौत, 4 घायल–

(पंजाब केसरी–5/7/2014)

इसके इलावा चण्डीगढ एवम् देश के अन्य महानगरों में चौरी, स्नैचिंग एवम् रेप आदि की अनैतिक सैंकडों घटनाएं तो सर्वविदित ही हैं ।

(3) पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इराक एवम् सीरिया आदि यावन राष्ट्रों में कहीं सत्तापरिवर्तन एवम् यूक्रेन आदि में विभाजन की जो स्थिति बन रही है, उस बारे में पढ़ें श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2071 वि., पृ. 50, कॉलम 2 पर–

" सं. 2071 वि. की जगत् लग्नकुण्डली में मेषस्थ सूर्य–केतु का शनि–राहु के साथ समसप्तकयोग बन रहा है, जोकि सीरिया, ईरान, पाकिस्तान एवं अमेरिका के किसी प्रान्त में प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि का संकेत देता है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि यावनराष्ट्रों में कहीं सत्तापरिवर्तन, कहीं देश के विभाजन के लक्षण बनेंगे।"

(i) इराक में स्थिति गंभीर है।

(ii) यूक्रेन विभाजन के कगार पर है।

(iii) पाक अपने ही विरुद्ध उग्रवाद से उलझा हुआ है।

(iv) अमेरिका में अनेकों प्राकृतिक उत्पात हो चुके हैं।

(4) भारतवर्ष में सत्तापरिवर्तन की भविष्यवाणी–

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2071 वि. के पृ. 50, कॉलम 2 पर इन शब्दो में की गई थी–

" भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि उच्चस्थ, स्वभावतः वक्री राहु के साथ तुला राशि में चल रहा है। 2 मार्च, 2014 ई. से ही शनि–राहु वक्रगति से चल रहे हैं। 3 मई, 2014 ई. तक सूर्य, बुध–केतु के साथ शनि–राहु का समसप्तक–योग रहेगा। बुध इस समय अतिचारी है। 19 मई तक कन्याराशिस्थ मंगल वक्रगति से चलेगा। यह ग्रहस्थिति केन्द्रीय शासनतन्त्र में (19 मई, सन् 2014 ई. तक शनि–मंगल के वक्रत्वकाल में) राजनैतिक उलटफेर का संकेत देती है। परिणाम आश्चर्यजनक होंगे।"

भारत में ठीक मई, 2014 ई. में भाजपा ने कांग्रेस सरकार को आश्चर्यजनक रूप से पछाड कर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। इस भविष्यवाणी पर हमें हजारों टैलीफोन एवम् पत्रों द्वारा बधाई प्राप्त हुई है।

(5) इन निम्नांकित प्रदेशों में उग्रवादियों ने जो कहर बरपाए हैं, वह भी सब जानते हैं। काश्मीर में उग्रवादी हमले एवम् भूकम्प से हानि भी हुई है। श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2071 वि.. के पृ. 50, कॉलम 2 पर ही पढ़िए–

" क्योंकि, शनि की दृष्टि इसवर्ष पश्चिमी भूभाग पर है एवं वर्षेश–प्रवेश वृषलग्न एवं व्याघात योग में हुआ है, अतः भारत के उत्तरांचल, महाराष्ट्र, आसाम, मणिपुर, उड़ीसा, जम्मू–काश्मीर, बिहार, दिल्ली, पश्चिमी बंगाल में आतंकी घटनाओं से जनधनहानि के योग भी हैं। भारत के दक्षिणी भूभाग पर समुद्री तूफान एवं कुछ प्रान्तों में भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा से भयंकर जनधनहानि के योग इसवर्ष शासन को स्तब्ध कर सकते हैं।

(6) गांधी वंशवाद एवम् परिवारवाद से मोहभंग होने की भविष्यवाणी भी कम आश्चर्यजनक नही। श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2071 वि.. के पृ. 60, कॉलम 1 पर पढ़िए–

" आगामी लोकसभा निर्वाचन में दो राष्ट्रस्तरीय पार्टियों का शक्तिपरीक्षण आकर्षक घोषणाओं के बावजूद जनतन्त्र में जागृति के रूप में उभर कर आएगा। वंशवाद से जनमानस का मोह भी क्षीण होने लगेगा। यह निर्वाचन गणतन्त्र की विजय के रूप में देखा जाएगा। परिणाम आश्चर्यजनक होंगे। "

श्रीमती सोनिया गांधी एवम् श्री राजीव गांधी परिवार से दशाब्दियों से चल रही कांग्रेसजनों की निष्ठा लोकसभा निर्वाचनों के परिणामों के बाद क्षीण होती नजर

(i) इराक में स्थिति गंभीर है।
(ii) यूक्रेन विभाजन के कगार पर है।

श्रीमती सोनिया गांधी एवम् श्री राजीव गांधी परिवार से दशाब्दियों से चल रही कांग्रेसजनों की निष्ठा लोकसभा निर्वाचनों के परिणामों के बाद क्षीण होती नजर

(7) भारतीय राजनीति एवम् शासनसत्ता के बारे मे तत्कालीन प्रधानमन्त्री **श्री मनमोहन सिंह जी** की ग्रहस्थिति पर विचार करते हुए स्पष्ट घोषणा में सत्तासुख से वञ्चित होने की भविष्यवाणी इस प्रकार श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2071 वि. के पृ. 59, कॉलम 2 पर इस प्रकार 28 अगस्त, 2013 ई. को ही कर दी गई थी–

" आगे राहु की महादशा में मंगलान्तर 1 फरवरी, 2014 ई. तक, तदुपरान्त गुरु में गुरु का अन्तर 18 मार्च, 2016 ई. तक चलेगा। राहु में मंगलान्तर इसवर्ष 19 मई, सन् 2014 ई. तक इनकी सेहत एवं प्रशासकीय–क्षमता को क्षीण कर देगा। आगे सत्ता–सुख से वञ्चित भी होना पड़ेगा– ऐसी ग्रहस्थिति है। "

(8) उग्रवादियों द्वारा *जम्मू–काश्मीर एवम् छत्तीसगढ़* आदि में जो कुछ घटित हो रहा है, वह सब जनता जनार्दन के सामने है। तिब्बत के क्षेत्र में चीन द्वारा एवम् काश्मीर तथा सीमाप्रान्तों पर पाक द्वारा गोलाबारी एवम् सीमातिक्रमण की घटनाए बहुत हो रही हैं, इस विषय में श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2071 वि. के पृ. 56, कॉलम 1 में सावधान रहने की भविष्यवाणी निम्नांकित शब्दों में की गई थी–

" राहु 12 जुलाई को कन्याराशि में प्रवेश करेगा। कन्याराशि भारत की राशि भी कुछ विद्वान् मानते हैं। 14 जुलाई से 3 सितम्बर तक शनि–मंगल ये दोनों क्रूरग्रह तुला राशि में एकसाथ चलेंगे। 26 जुलाई से अगस्त के प्रथम सप्ताह तक बुधग्रह अतिचारी भी रहेगा। अतः जुलाई से सितंबर, 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति भारत के दिल्ली, बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार किंवा छत्तीसगढ़, जम्मू–काश्मीर आदि प्रान्तों एवं महानगरों में भी उग्रवादी ग्रुपों द्वारा भारी जनधनहानि के योग बनाती है।"

" 17 सितंबर को बुधवारी संक्रान्ति तथा 24 सितंबर को बुधवारी अमावस होने से खप्पर योग भी बन रहा है, जो कि कहीं दहशतग्रस्त लोगों द्वारा 27 जुलाई से 24 सितंबर, 2014 ई तक का समय राजनीतिज्ञों किंवा विश्व के प्रतिष्ठित–व्यक्तियों के लिए भारी संघर्षपूर्ण एवं भयावह है। सीमाप्रान्तों पर चीन, पाक आदि विरोधी देशों की गतिविधि से सीमाप्रान्त अशान्त रहेंगे। इसलिए देश के नेतृत्व एवं देश की सैन्यसत्ता को सावधान रहना होगा। शत्रुदेशों को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए सेना को कुछ अधिकार अधिक देने होंगे। "

पाठको ! स्थानाभाव के कारण इस वर्ष की सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा नहीं कर पा रहे हैं, विद्वान् पाठक स्वयं ही मूल्यांकन करें।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रहीं भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यो एव ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनताजनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशो से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2072 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान 'कार्य–कारण के सिद्धान्त' को ही प्राथमिकता प्रदान करता है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक भी अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। अतः सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्यसिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर 'लोकतांत्रिक राज्य' की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण–कर्म–स्वभाव–योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवम् शासनतंत्र पर पड़ता है, उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट–फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं; इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. 2072 की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

इस संवत् (2072 वि.) को शास्त्रो ने ' कीलक ' नामक संज्ञा दी है। 'श्रीवराहमहिर' द्वारा निर्दिष्ट नवमयुग किंवा 'रुद्रविंशति' का यह द्वितीय संवत्सर है। इसका फल संहिताग्रन्थों में इस प्रकार लिखा है--

"काले वर्षति पर्जन्यः राजादेश–प्रवर्तनम्।
कीलके प्रमितं रिष्टं दुर्भिक्षं मरुभूमिषु।।"

अर्थात्– इस वर्ष सन् 2015–16 में समयोचित वर्षा हो, देश में शासनतन्त्र द्वारा सुधारात्मक नए कानून लागु हों। इस वर्ष (सं. 2072 वि. मे) देशहितार्थ शुभकार्य सम्पन्न करने में आर्थिक किंवा विरोधीपक्ष द्वारा रुकावटें पैदा होने से शुभकार्य कम सम्पन्न हों। मरुप्रदेश आदि में (अनेकत्र) दुर्भिक्ष की स्थिति बने।

किञ्च– 'कीलक संवत्सर' में प्राकृतिक आपदा (टिड्डीदल, भूकम्प, विस्फोट, सुनामी आदि) से देश में कृषि एवं जनधनहानि की भी संभावना है। राजनीतिज्ञों में परस्पर खींचातानी किंवा कहीं यावनराष्ट्रों में आन्तरिक कलह, एवं युद्ध की स्थिति रहे। लेकिन कहीं समयानुसार वर्षा हो। कहीं उत्तर एवं पश्चिमी भूभागीय प्रान्तों में (जून से अगस्त, 2015 तक) प्राकृतिक प्रकोप किंवा कहीं अकाल की स्थिति से कृषक परेशान रहें–

कीलकाब्दे त्वीति–भीतिः प्रजाक्षोभ–नृपाहवौ।
तथापि वर्धते लोकः सम–धान्यार्घ–वृष्टिभिः।।"

गतवर्ष संवत 2071 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग में पृष्ट 49, कॉलम 2 में 'प्लवंग' संवत्सर के फल में हमने स्पष्ट घोषणा की थी कि– राजनैतिक दल शक्ति-परीक्षण के लिए कटिबद्ध रहेंगे एवं शासनसत्ता में परिवर्तन के योग हैं –" शासकदल (राजनैतिक–दल) परस्पर शक्ति परीक्षण के लिए कटिबद्ध रहेंगे। राष्ट्रविशेष की सत्ता में (इस संवत् 2071 वि. में) परिवर्तन के भी योग बनते है " तदनुसार 'भारत' में सत्ता–परिवर्तन स्पष्टरूप से आज हम देख रहे हैं।

अपि च– आचार्य वराहमिहिर द्वारा निर्दिष्ट नवमयुग एवं रुद्रविंशति के द्वितीय संवत्सर 'कीलक' नामक संवत्सर मे भारत में व्यवस्थागत जटिलताएं सकारात्मक प्रगतिपद पग उठाने में बाधक मालूम देती हैं। 'भोगीव मन्त्रौषधिरुद्धवीर्यः" अर्थात् –मन्त्ररूपी औषध से कीलित सांप जैसी गतिविधि कीलक संवत्सर में नए शासनतन्त्र की रहेगी।

इस संवत्सर का राजा 'शनि' होने से यावनराष्ट्रों इराक, ईरान, पाक, अफगानिस्तान किंवा इजराइल, यरुशलम आदि देशों एवं रूस, यूक्रेन आदि कुछ देशों में आन्तरिक उपद्रव, अराजकता एवं युद्धात्मक धरातल तैयार करता रहे। क्योंकि शनिग्रह मुस्लिम–यहूदी–इसाई–धर्मावलम्बियों का प्रतिनिधि ग्रह है।

इस संवत्सर का मन्त्री मंगल होने से इस संवत् के राजा–मन्त्री दोनों ग्रह परस्पर शत्रु हैं, जोकि कुछ पड़ौसी देशों में एवं देश में कहीं उग्रवादियों द्वारा विस्फोट– हत्याकाण्डों से किंवा धार्मिक उन्माद, जातीय दंगे कराकर विस्फोट द्वारा भारी जनधनहानि का कारण बन सकते हैं। कुछ प्रान्तों में भारी दुर्भिक्ष की स्थिति भी बना सकते हैं "युद्धदौ शनि–माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।" इस संवत् में भारत के प्रतिष्ठित गणमान्य नेताओं एवं महिमामण्डित व्यक्तियों को भी अपनी सुरक्षा को विशेषतः सुदृढ़ रखना होगा। क्योंकि इसवर्ष की कुछ ग्रहस्थिति प्रतिष्ठित व्यक्तिविशेष के लिए ग्रहगोचर के अनुसार अनुकूल नहीं है। शासक व शासन सावधान रहे।

इसवर्ष सस्येश गुरु, धान्येश बुध, एवं मेघेश चन्द्र होने से कुछ प्रान्तों में बाढ की स्थिति बने, कहीं सूखा भी रहे।

संवत् 2072 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत्–लग्नकुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार सांसारिक घटनाओं पर एक नजर

सं. 2072 वि. की जगत् लग्नकुण्डली में मेषस्थ सूर्य–मंगल–बुध हैं। स्वस्थ मंगल के साथ उच्चस्थ सूर्य बुधादित्ययोग बना रहा है। जगत् में सुख, शान्ति की स्थापना के लिए भारत के सहयोग को प्रशंसनीय बनाता है। कर्कलग्नस्थ गुरु की चन्द्र पर पूर्ण दृष्टि एवं भारत की प्रभावराशि मकर पर शनि एवं गुरु की दृष्टि भारत के शासनतन्त्र को महिमामण्डित करेगी–

" निजोच्चे निजवर्गे वा शुभः पापोऽपि वा भवेत्।
बलवान् दोषविच्छेत्ता हरिरेको यथा गजान्।।"

जगत्लग्न–कुण्डली में शुक्रग्रह का वृश्चिकस्थ शनि के साथ समसप्तकयोग एवं कर्क लग्न में जगत्लग्न का उदय पूर्वीदेशों एवं पूर्वी प्रान्तों में सुख–समृद्धिप्रद तो शास्त्रकारों ने लिखा है, लेकिन उत्तरी एवं दक्षिणी प्रान्तों/देशों में अनेकत्र युद्ध एवं सीमावर्ती भूभागों पर अशान्ति समुन्द्री–तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से किंवा भूकम्प आदि से सम्बन्धित कारणों से छत्तीसगढ महाराष्ट्र, बिहार किंवा महानगरों में जनधनहानि के योग है। अमेरिका, जापान, टर्की, नाइजीरिया फिलिपीन (Asia Pacific Region) में भूकम्प, टायफोन, हैरिकेन आदि से भी जनधन–हानि के संकेत ग्रहस्थिति से मिलते हैं।

शनि की दृष्टि इसवर्ष पश्चिमी देशो की तरफ ही रहेगी। शनि संवत्सर का मालिक (राजा) है। अतः इसका वाहन " भैंसा " होने से पश्चिमी देशों किवा प्रान्तों में भयंकर भूकम्प, सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जनधनहानि होगी। मुस्लिम देश–विशेष में किसी पूर्व शासक (सेनाधिकारी) किंवा विशिष्ट व्यक्ति की हत्या का फरमान जारी हो। यावन–राष्ट्रों में विशेष अशान्ति के योग इसवर्ष शनि–मंगल बना रहे हैं।

जुलाई 2015 ई. से 20 फरवरी, 2016 ई. तक तथा संवत् 2072 वि. के

अन्त तक की ग्रहस्थिति विश्व के लिए विशेष घटनापूर्ण रहेगी। संवत् आरम्भ से ही (अप्रैल, 2015 ई. से लगभग जून के प्रथम सप्ताह तक) राहु–मंगल एव शनि–मगल का षडष्टक तथा इस वर्ष सप्तवायु विचार से 'अतिवह' नमक वायु होने से कही झंझावात, समुद्री–तूफान, चिल्ली, जापान, अमेरिका, इटली, भारत के दक्षिणी भाग, काश्मीर एवं मुस्लिमराष्ट्र में कहीं भारी भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। भारत में इस समयावधि में कही दुर्भिक्ष की स्थिति से कृषकजन परेशान रहेगे। लगभग जुलाई–अगस्त तक समुद्रतटवर्ती भूभाग एवं देश सुनामी आदि से जनधनहानि ग्रस्त रहें–ऐसी ग्रस्थिति है।

जनवरी से अप्रैल, सन् 2016 ई. तक की ग्रहस्थिति विश्व मे हवाई यानदुर्घटनाएं, समुद्री तूफान विशेषतः फिलिपीन्स, चीन, जापान, अमेरिका, पाक एवं भारत के समुद्रतटवर्ती भूभाग में भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग हैं। इस समयावधि में जम्मू–काश्मीर, बिहार, छत्तीसगढ़ एवं महानगरों में उग्रवादी भीषण दुर्घटना भी करेंगे।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की कुण्डली (नं. 1)– (जनवरी, 2015 से दिसम्बर, 2015 ई. के अन्त तक) इस कुण्डली (नं. 1) में शनि एवं गुरु की मंगल–शुक्र पर विशेष दृष्टि है। 26 नवंबर, 2014 से 12 फरवरी, 2015 ई. तक मंगल अतिचारी रहेगा। उच्च मंगल भारत की प्रभावराशि में है। मकर राशि से कर्मेश शुक्र की भी मित्रक्षेत्र में स्थिति यूरोपीय देशों की भारत के लिए मैत्रीपूर्ण–सम्बन्धों एवं व्यापारिक सम्बन्धों को बढ़ावा देने वाली है। 8 दिसम्बर, 2014 ई. को गुरु वक्री हुआ है एवं 8 अप्रैल, 2015 ई. तक वक्री रहेगा। इस समयावधि में शनि भी वक्री ही चलेगा। अतः यूरोपीय देशों में कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। फ्रांस आदि में कहीं अकस्मात् राष्ट्रनायक के विरुद्ध सेना आदि द्वारा विद्रोह संभव है –

"राष्ट्रभंगं विजानीयात् वैरोपद्रव–संकुलम्।
कर्कराशिगतो जीवो यदा वक्री भवेत्तदा।
तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयं राजानो युद्धतत्पराः।।"

अतः इन दिनों कहीं राष्ट्रव्यापी आन्दोलन, कहीं हत्याकाण्ड, कहीं शासक–विरुद्ध सेनाविद्रोह आदि अघटित घटनाएं देखने में आएगी;– ऐसा ग्रहस्थिति से ज्ञात होता है। सर्वज्ञ तो ईश्वर ही है।

3 मई से 15 जून तक शनि–मगल का समसप्तक, इससे पहले 12 अप्रैल, 2015 ई. से शनि–मगल का षडष्टकयोग यूरोपीय देश–विशेष मे आन्तरिक विषमता से देश का मानचित्र संवत् 2072 वि.(सन् 2015/16 ई.) में बदलने का योग बनाते हैं। जिनमें U.K, स्कॉटलैण्ड आयरलेण्ड, यूक्रेन, फ्रांस आदि देश ग्रहस्थिति के अनुसार विशेष चर्चित रहेंगे।

ध्यान रहे– लगभग 16 जून, 2015 ई. से 20 अगस्त, 2015 ई. तक की ग्रहस्थिति यूरापीय देशों मे कहीं भारी तूफान (सुनामी, टाइफून, हैरिकेन, साइक्लोन, फलड्स आदि) किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि का संकेत देती है।

सितम्बर से दिसम्बर, 2015 ई. तक की ग्रहस्थिति यूरोपीय देशों में वैज्ञानिकक्षेत्र किंवा स्पेस–साईंस अथवा जीवविज्ञान में नई उपलब्धियों को देने वाली है। मंगल–राहु की एकराशि में स्थिति एवम् सूर्य–शनि की स्थिति के अनुसार किसी प्रतिष्ठित–व्यक्ति के अपदस्थ किंवा निधन से वातावरण अशान्त रह सकता है। यूरोपीय प्रतिष्ठित–देश इंग्लैण्ड, फ्रांस, यूक्रेन के लिए यह वर्ष आन्तरिक समस्याओं से उलझनपूर्ण रहेगा। ब्रिटेन की टोरी पार्टी को आगे निर्वाचन में भारी क्षति एवम् पराजय का सामना करना पडेगा। इस देश के प्रवासियों को भी समस्याओं का सामना करना पडेगा एवम् यूरोपियन यूनियन से कुछ एक देश राजनैतिक स्थिति के कारण और अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए अलग होंने पर मजबूर भी हो सकते हैं। यह संकेत सूर्य–शुक्र–मंगल एवम् शनि के चार एवम् आगामी सं. 2073 वि. तक की ग्रहस्थिति से मिलता है।

यूरोपीय देशों की कुण्डली (नं. 2)– (1 जनवरी सन 2016 से संवत् 2072 के अन्त तक) की ग्रहस्थिति के अनुसार राहु–चन्द्र लग्नस्थ हैं एवम् लग्नेश बुध, शनि के क्षेत्र में शनि एवम् मंगल की दृष्टि में है। अतः यूरोप के कुछ देशों में किसी देश–विशेष की समस्या को लेकर परस्पर मैत्री–सम्बन्ध शिथिल होंगे। जिसका प्रभाव विश्व के व्यापारिक–क्षेत्र एवम् आर्थिक स्थिति को प्रभावित करेगा। बुध–गुरु का वक्रत्व एवम् शनि का ज्येष्ठा नक्षत्र में चलन, पश्चिमी भूभाग के यूरापीय देशों में युद्धात्मक नीति से जनसंहार की सम्भावना को इस वर्ष (सन् 2016 ई.) में नकारा नहीं जा सकता–

"अनुराधास्थितः सौरिर्ज्येष्ठायां परिवर्तते।
पश्चिमे दारुणो घोरः संहारस्तत्र जायते।।"

जनवरी, सन् 2016 ई. से अप्रैल, सन् 2016 ई. तक देश–विशेष में कहीं समुद्री तूफान, भूकम्प किंवा उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग बन रहे हैं। ये योग

फरवरी, 2016 ई. से लगभग अप्रैल, 2016 ई. के मध्य तक विशेषरूप से कुप्रभावकारी सिद्ध होगे– ऐसा ज्योतिष–दृष्ट्या ज्ञात होता है। कही राष्ट्रो मे परस्पर विरोधात्मक आन्दोलन, हत्याकाण्ड, शासक के विरुद्ध विद्रोह एवम् सत्ता परिवर्तन, देश के मानचित्र बदलने एवम् देश के विघटन आदि का भी इसवर्ष ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है। इंग्लैण्ड, यूक्रेन इसवर्ष विशेषरूप से प्रभावित हो सकते हैं।

सं. 2072 वि.(सन् 2015–16 ई.) में मुस्लिमराष्ट्रों के हालात

कुण्डली (नं. 1) (अर्थात् 26 अक्तूबर, 2014 ई. से इस सवत् 2072 वि. में 14 अक्तूबर सन् 2015 ई. तक) की ग्रहचाल मुस्लिम–राष्ट्रों की गोचर ग्रहस्थिति के हिसाब से इस प्रकार है–24 अक्तूबर को बुध पूर्व में उदित होगा। 2 अक्तूबर से 26 नवंबर, 2014 ई. तक शुक्र अस्त रहेगा। **साथ ही 1 नवंबर को शनि भी अस्त होकर 5 दिसंबर तक अस्त ही रहेगा। मुस्लिम–राष्ट्रविशेष कट्टरपन्थी व तालिबानी देश के रूप में जाने जाएंगे, विशेषतः पाकिस्तान। इस समयावधि में उत्तर कोरिया के साथ दक्षिण कोरिया की युद्ध स्थिति बन सकती है। इसमें रूस एवं अमेरिका की दखलंदाजी संभव है। इस वर्ष ईराक, पाक एवं अफगानिस्तान में शिया–सुन्नी–टकराव खतरा बनकर उभरेगा। कुण्डली (नं. 1) में स्पष्ट भान होता है कि– बलूच–राष्ट्रवाद,** पाकिस्तान द्वारा समर्थित तालिबान, अफगानिस्तान में अपनी पैठ बना लेने की स्थिति में आ जाएगा एवम् सीमाप्रान्तो पर पाक को ही चुनौती देने लगेगा एवं पाक की अर्थव्यवस्था भयकर रूप से चरमरा जाएगी।

26 अक्तू. सन् 2014 ई., रविवार, 17 घं. 36 मि. (सूर्यास्त–समय) (I.S.T.)

कुण्डली (नं. 1) की प्रारम्भिक ग्रह स्थिति के अनुसार वृषराशि का स्वामी (द्वितीयेश) शुक्र नीच सूर्य एवं उच्च शनि के साथ मेल कर रहा है, जो कि वृष राशि-प्रधान देश इराक–ईरान, उ. कोरिया एवं मेष राशि-प्रधान अफ्रीका, अफगानिस्तान तथा कन्या राशि-प्रधान पाक आदि को कठिन परिस्थितियो में लाकर खडा कर देगा। आन्तरिक/साम्प्रदायिक उपद्रव एवम् उग्रवादजन्य भयकर परिणामों से त्रस्त ये देश असुरक्षित अनुभव करेंगे, जिससे अन्य शक्तिसम्पन्न समर्थ देश का दखल भी कठिन परिस्थिति पैदा कर सकता है। वृष राशि–प्रधान एवं कन्या राशि-प्रधान देशों में किसी देश का मानचित्र बदले किंवा विभाजन की स्थिति बने– ऐसा शनि–राहु एवम् नीच सूर्य के मेष पर दृष्टि एवं शुक्र के खलाक्रान्त होने तथा कन्याराशिस्थ राहु के बुध के साथ होने से मालूम देता है। मई से लगभग 30 जुलाई, सन् 2015 ई. तक शनि–मंगल की पोजीशन पाक एवम् अन्य मुस्लिम राष्ट्रविशेष एवम् प्रधान शासकों के लिए तद्देशीय सेना एवम् उग्रवादजन्य अपराधों से संकटापन्न स्थिति को जन्म देगी।

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 2) की ग्रहस्थिति के पहले की ग्रहस्थिति के परिशीलन से (15 सितम्बर से 3 नवम्बर सन् 2015 ई. तक) शनि–राहु के कन्या राशि में रहने पर किसी मुस्लिमराष्ट्र में प्रतिष्ठित व्यक्ति विशेष के अपदस्थ/निधन किंवा देश में अराजकता–जैसा वातावरण बनने का योग है।

15 अक्तूबर, सन् 2015 ई. से संवत् 2072 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति के अनुसार शनि–मंगल का दशम–चतुर्थ–सम्बन्ध (परस्पर दृष्टि–सम्बन्ध) एवम् 3 नवम्बर से मंगल–राहु एवम् शुक्र की कन्याराशि में स्थिति पाक, अफगानिस्तान, सीरिया, ईराक, इरान आदि देशों के लिए भयकर उग्रवाद किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानिप्रद है। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन का समाचार मिले।

15 अक्तू. सन् 2015 ई., वीरवार, 17 घं. 48 मि. (सूर्यास्त–समय) (I.S.T.)

17 नवम्बर से लगभग 6 दिसंबर, सन् 2015 ई. तक सूर्य, शनि, बुध– ये तीनों ग्रह वृश्चिक राशि में आकर कहीं राष्ट्र–विशेष में जनता के अन्तर्कलह, सैन्य संघर्ष एवम् शासकों के विरुद्ध भारी संकटापन्न स्थिति बना देंगे।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में नवमी, पौष शुक्लपक्ष में पूर्णिमा एवम् माघ शुक्लपक्ष में पंचमी तिथि का क्षय होने से दिसम्बर, सन् 2015 ई. से 22 फरवरी, सन् 2016 ई. के मध्य मुस्लिमराष्ट्र में भूकम्प, तूफान, भूखमरी किवा अराजकता से भयकर जनधन–हानि, किसी शासक के अपदस्थ होने किंवा मृत्युकष्ट का सामना करना पडेगा–

" मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभंगं प्रजापीडां दुर्भिक्षं वा समादिशेत्।।"

इस संवत् 2072 वि. में माघ–कृष्ण पंचमी, छठ एवम् सप्तमी क्रमशः शुक्र–शनि एवम् रविवारी होने से यावन(मुस्लिम) राष्ट्र की आन्तरिक स्थिति गम्भीर कष्टमय, अशान्त एवम् शासकों के लिए भयावह है–

" षष्ठी च पंचमी चैव कृष्ण–माघस्य सप्तमी।
शुक्रार्कि–रवि–संयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा।।"

20 फरवरी, सन् 2016 ई. से लगभग 18 जून, 2016 ई. (सं. 2073 वि.) तक मुस्लिम राष्ट्रों में भयंकर मारकाट, सत्तापरिवर्तन, सैनिक–शासन, हत्याकाण्ड एवम् प्राकृतिक प्रकोपजन्य जनधनहानि के योग हैं।

के मेष पर दृष्टि एवं शुक्र के खलाक्रान्त होने तथा कन्याराशिस्थ राहु के बुध के साथ होने से मालूम देता है। मई से लगभग 30 जुलाई, सन् 2015 ई. तक शनि–मंगल की

तक मुस्लिम राष्ट्रों में भयंकर मारकाट, सत्तापरिवर्तन, सैनिक–शासन, हत्याकाण्ड एवम् प्राकृतिक प्रकोपजन्य जनधनहानि के योग हैं।

संवत् 2072 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

सभी शुभाशुभ घटनाएं मनुष्य की पहुंच से बाहिर समझी जाती हैं, लेकिन जो रहस्य साधारणतः इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत–भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष जान लिए जाते हैं। हमारे ऋषियों ने उसी ज्योतिषशास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है;–

" ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तद् ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्।।"– (श्रीमद्भागवतपुराण)

इस प्रकार जगतपिता की अदृश्य, अलौकिक शक्ति ग्रहों के आकर्षण–विकर्षण के आधार पर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम "भवितव्यता" किवा "ईश्वरेच्छा" कहकर स्वीकार करते हैं।

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्नि– ज्वालाओं के अतिरिक्त कुछ न रहे।"

इस प्रकार समस्त घटनाचक्र एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाला ग्रहपुञ्ज प्रकृति किंवा ईश्वर के अनुशासित कार्यक्रम का एक निदर्शन है, जोकि– गोचर ग्रहगति के संकेतानुसार हमें प्रतिवर्ष कुछ लिखने को प्रेरित करता है।

स्वतन्त्र भारत का 68वां वर्ष

(15 अगस्त, 2014 ई. से 20 मार्च, 2015 ई. तक का विवेचन)

स्वतन्त्र भारत के 68वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार कर्क लग्न में सूर्य–शुक्र–गुरु भारत की प्रभावराशि मकर पर दृष्टिपात कर रहे हैं। शुक्र आयेश एवं चतुर्थेश (केन्द्रेश) भी है। सूर्य धनेश होकर लग्नस्थ है। उच्च बृहस्पति नवमेश होकर नवमभाव को देख रहा है। भारत के समक्ष इस समय गहरा आर्थिक संकट तो है ही, लेकिन इस संकट से निजात पाने के लिए नई योजनाएं, नए विचार, नए कार्यक्रम बनेंगे, जिनके कारण भारत इस आर्थिक संकट से मुक्ति पाकर तरक्की की तरफ आगे बढ़ने लगेगा।

कन्या राशि का राहु चन्द्र को देख रहा है एवं 14 जुलाई, 2014 ई. से तुला राशि में स्थित शनि–मंगल का 4 सितंबर, 2014 ई. तक एकसाथ रहना भारत के राजनीतिज्ञों के लिए भयावह अवश्य है। राजनीतिज्ञों के लिए यह समय (14 जुलाई से 4 सितंबर तक का) सीमाप्रान्तों पर चीन किंवा पाकिस्तान व अन्य मुस्लिमराष्ट्रों की आप्तरिक अस्थिरता व सिविलवार से अशान्ति, सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल की गतिविधि से कठिन परिस्थिति पैदा करेगा, जिसका हल सामूहिक पार्टियों के सहयोग की जरूरत चाहेगा। शनि, मंगल एवं शुक्र की स्थिति को दृष्टि में रखते हुए संकेत मिलता है कि–सितम्बर, 2014 ई. से संवत् 2071 वि. के अन्त तक की अवधि में भारत समुद्रीक्षेत्र से तेल एवं गैस प्राप्त कर सकेगा– यह वर्ष की बड़ी उपलब्धि होगी। इस उपरोक्त समय (लगभग 14 जुलाई से सितंबर तक) के दौरान किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का ओहदा खाली होगा एवं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप किंवा उग्रवादी संगठनों द्वारा भारी जनधनहानि का योग भी बन रहा है।

जुलाई से अगस्त तक कहीं वर्षा–बाढ़, कहीं अकालग्रस्त क्षेत्रों में जनधनहानि के योग भी हैं। 17 सितंबर को बुधवारी संक्रान्ति एवं 24 सितंबर, 2014 ई.) को बुधवारी अमावस होने से 'खप्पर–योग' बनता है;– इस प्रकार 5 दिसंबर (सन् 2014 ई.) तक की ग्रहस्थिति पश्चिमी देशो एवं प्रमुख नेताओं के लिए विशेषतः अमेरिका एवं मुस्लिमदेशों के लिए समय भयावह है।

8 दिसम्बर को गुरु वक्री होकर संवत् के अन्त तक वक्री रहेगा। फरवरी, 2015 ई. से मार्च, 2015 ई. तक शनि, राहु एवं मंगल की स्थिति एवं मंगल का अतिचारी होना आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से समय उग्रवाद एवं भूकम्प आदि से भारी क्षतिपूर्ण एवं भयावह मालूम देता है। भगवान् रक्षा करें– यही प्रार्थना है।

हम इस लेख में भारत सरकार को चीन एवम् पाकिस्तान की सैनिक/राजनैतिक कूटनीति से अवगत करा देना भी यहां उचित समझते हैं। इस संवत् 2072 वि. में हमारे देश के मिजोरम, अरुणाचल, सिक्किम, लेह–लद्दाख, काश्मीर प्रदेशों एवम् सीमावर्ती क्षेत्रों पर हमारे सैन्यबल को सुदृढ़ एवम् सुसन्नद्ध रखना नितान्त आवश्यक है। क्योंकि चीन–पाक का सीमातिक्रमण भारत की अस्मिता एवम् सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर सकता है। इन देशों की तथाकथित कूटनीति की अनदेखी किंवा उपेक्षा कहीं हमारा सिर न झुका दे – सरकार सावधान रहे।

स्वतन्त्र भारत का 69वां वर्ष

(15 अगस्त, 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक का विवेचन)

आगे 15 अगस्त, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक की ग्रहस्थिति का विवेचन ग्रहस्थिति के आधार पर संक्षेप से करना भी प्रासंगिक है।

स्वतन्त्र भारत की 69वीं वर्ष–कुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश बुध व्ययस्थान (सूर्य क्षेत्र) में गुरु–चन्द्र के साथ स्थित है। गुरु 12 अगस्त को ही अस्त हो चुका है। अतः भारत के समक्ष आर्थिक–राजनैतिक समस्याओं के बावजूद जनता की पूर्वसंकल्पित समस्याओं को सुलझाना कठिन होगा। जिससे सरकार को विधानसभाई निर्वाचनक्षेत्रों में उस हद तक गरिमापूर्ण सफलता को प्राप्त करना कठिन अवश्य होगा, जिसे वे पहले लोकसभा में पा चुके हैं। क्योंकि मुंथेश गुरु अस्त है। महंगाई को कंट्रोल करना सरकार को अभी सहज संभव नहीं। वर्षांक में आयेश एवम् कर्मेश चन्द्र–बुध बहुत प्रबल नही हैं। आयस्थान में शुक्र अस्त है एवम् मंगल नीच सूर्य के साथ ही है, जोकि योजनाबद्ध, प्रगतिप्रद कार्यों में आर्थिक संकट से बाधाकारक मालूम देते हैं–

"दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेमरक्तं चतुष्पदः।
धान्यानि महर्घाणि नाशं यान्ति च वारिदाः।।"

भारत के कुछ भाग अकालग्रस्त रहने से सरकार की विवशता बढ़ेगी।

धनेश (द्वितीयेश) एवम् नवमेश–शुक्र अस्त होने से भारत सरकार को ब्रिकस अर्थव्यवस्था (विकास बैंक) का सहारा भी पश्चिमी विश्वबैंक एवम् अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष वाली व्यवस्था के समक्ष सफल होता नहीं लगता क्योंकि – वर्षकुण्डली में गुरु–शुक्र ये दोनों अस्त हैं–

" तेषामतीव शुभदौ गुरु – दानवेज्यौ।
क्रूरौ दिवाकर–सुत–क्षितिजौ भवेताम् ।।"

69वीं वर्षकुण्डली में शनि की स्थिति मंगल के क्षेत्र मे ही है एवम् मंगल नीच है । अतः विपक्षीदल (कांग्रेस आदि पार्टियां) मिलकर श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार के एजेण्डों की आलोचना करके सरकार की क्रियाशीलता में वाधक बनेगें। धनेश शुक्र अस्त होने से भारतीय धनिको की स्विट्जरलैण्ड आदि देशों से धन को भारत लाने की योजना असफल रहेगी। अच्छे दिन आने में अभी बहुत प्रतीक्षा करनी पडेगी।

महंगाई पर नियन्त्रण पाना भी सं. 2072 वि. के अन्त तक संभव नही मालूम देता। क्योंकि सारा वर्ष शनि मंगल के क्षेत्र में ही रहेगा, जोकि खाद्यान्न एवम् जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई का ही सूचक है–

" यदि तिष्ठति भौमस्य क्षेत्रे क्रूरग्रहस्तदा।
षण्मासात्तुष–धान्यानां जायते च महर्घता।।"

स्वतन्त्र भारत की वर्षकुण्डली (2) में 15 अगस्त, सन् 2015 ई. से मार्च, सन् 2016 ई. तक चतुर्थेश गुरु मुंथेश होकर चतुर्थभाव को देख रहा है, अतः मोदी सरकार विश्व के प्रतिष्ठित, शक्तिसम्पन्न देशों के साथ मैत्रीपूर्णसम्बन्ध बना लेगी। देश की गरिमा एवम् देश के सम्मान की अभिवृद्धि करने में सक्षम रहेंगी। देश की सैन्यसमृद्धि से देश की अस्मिता के रक्षण में सफल रहेगी। लद्दाख में चीन की घुसपैठ एवं पाक का सीमातिक्रमण आगे देश को सह्य नहीं होगा। आतंकवाद का सामना करने के लिए पांचों ब्रिक्स देश वैचारिक, राजनीतिक अथवा धार्मिक मुद्दों पर आधारित आतंकवाद को सहन नहीं करेंगे। 15 सितंबर से 23 दिसंबर, सन् 2015 ई. तक एवम् फरवरी, 2016 ई. से संवत् 2072 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति सीमाप्रान्तों पर सैन्यगतिविधि एवम् उग्रवाद के पोषक सीमावर्ती देशो ", भारत को सचेत हना होगा। इस समयावधि में प्राकृतिक प्रकोप तूफान, भूकम्प एवम् उग्रवादजन्य जन–धनहानि से भी सावधान रहना आवश्यक है।

भारतीय गणतन्त्र का 66वां वर्ष

भारतीय–गणतन्त्र की 66वें वर्ष–प्रवेशकालीन कुण्डली में मुन्थेश सूर्य एवम् बुध पर बृहस्पति एवम् शनि की दृष्टि है। लग्नस्थ शनि मुंथा को भी देख रहा है। इस प्रकार आगामी गणतन्त्र केन्द्रीय सरकार की गरिमा को एवम् प्रधान–नेतृत्व के लिए उत्कर्षाधायक है। लेकिन चतुर्थ भावस्थ शत्रुक्षेत्रस्थ मंगल सीमाप्रान्तों पर अतिक्रमण चीन–पाक के लिए कठिन परिस्थियों में खड़ा करेगा। सीमाप्रान्तों पर गोलाबारी एवम् शत्रुदेश की गतिविधि को रोकने एवम् अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए सैन्यशक्ति को सुसन्नद्ध रखना पडेगा। शनि मंगल एवम्

सूर्य–शुक्र सीमाप्रान्तों को क्षुब्ध कर देने वाले हैं। भारत को पूर्वोत्तर एवम् पश्चिमी सीमा पर विशेष सतर्क रहना होगा।

गणतन्त्र कुण्डली में द्वितीयेश गुरु उच्च होकर नवमभाव में है, जोकि देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ करने के लिए मोदी सरकार को सक्रिय रहने की स्थिति बनाता है। गणतन्त्र-कुण्डली मे चतुर्थभावेश शनि के शत्रुक्षेत्र में होने से कुछ प्रान्तों के भाव स्वायत्तता से अपनी पहिचान बनाना चाहेंगे। गोरखालैण्ड, वोडोलैण्ड, बुन्देलखण्ड आदि अनेक राज्यों के विभाजन की परिस्थिति से निपटने में सरकार नीति से काम लेगी।

गणतन्त्र कुण्डली के परिशीलन से ज्ञात होता है कि– इस प्रकार अनेकविध कठिन परिस्थितियों के उपस्थित होने पर भी भारत इंजनीयरिंग के विविध क्षेत्रों, सडक, परिवहन एवम् अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रगति, सौर ऊर्जा प्रयोग आदि क्षेत्रों में भी भारत को मोदी सरकार अप्रत्याशित प्रगतिपथ पर ले जाएगी। विदेशों से नए राजनीतिक सम्बन्ध भी देश को उन्नति की ओर अग्रेसर रखेंगे। प्रधानमन्त्री जी के जनता एवम् सरकारी कामकाज की प्रक्रिया में गतिवृद्धि एवम् देश के विकास को तीव्रता प्रदान करने के लिए नए प्रयोग उच्च का गुरु सफल करेगा।

संवत् 2072 वि. में भारत पर गोचर ग्रहस्थिति का प्रभाव

पाठको ! ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त ब्रह्माण्ड देश–समाज एवम् व्यक्ति की स्थिति ठीक उस तिनके की भान्ति ही अनुभव की गई है, जो वायुवेग से प्रताड़ित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर–उधर भागता फिरता है। नैषधचरित में स्पष्ट लिखा है–

"अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मना।।"–(नैषधचरित)

यह बात भी नितांत सत्य है कि– ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि– आकाशीय **पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है – इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।**

ग्रहगतिजन्य संकेतों का अध्ययन करके हम मनीषी–महर्षियों के द्वारा निर्दिष्ट–सिद्धान्तों के अनुसार भारत की राजनीति एवम् अन्य पड़ौसी देशों के साथ सम्बन्धों पर अपने विचार लिखने की चेष्टा कर रहे हैं। विद्वज्जनों के आशीर्वाद की याचना है,क्योंकि ग्रहगतिजन्य संकेतो को ठीक–ठीक पकड़ने में अनेकधा चूक भी हो सकती है, तो विद्वज्जन स्वयं संकेत को सुधारकर हमें आशीर्वाद दें;– प्रार्थना है।

संवत् 2072 वि. का शुभारम्भ कर्क लग्न में हो रहा है। इस वर्ष जगतलग्न का प्रारम्भ भी कर्क लग्न से ही हो रहा है। संवत् की प्रारम्भ–कालीन कुण्डली मे लग्नेश चन्द्र, मंगल, सूर्य एवम् केतु के साथ मीनस्थ है एवम् लग्नस्थ उच्च गुरु की इन पर विशेष दृष्टि भी है। साथ ही पंचम भावस्थ शनि पर भी गुरु की विशेष दृष्टि है। सप्तम–भाव पर बृहस्पति की नीच दृष्टि है। **ध्यान दें– भारत की प्रभावराशि मकर एवम् प्रभावराशीश शनि पर गुरु की दृष्टि होने से इस विक्रमी संवत् (2072) में भारत विश्व के प्रतिष्ठित राष्ट्रों अमेरिका आदि के साथ मैत्रीपूर्ण एवम् व्यावसायिक सम्बन्ध स्थापित करके प्रगतिपथ पर अग्रेसर रहेगा–**

शुभ संवत् 2072 वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

(20 मार्च, सन् 2015 ई., 15 घं. 7 मि.) (I.S.T.)

**" यदा शुभग्रहैर्दृष्टं लग्नं स्यात्तु शुभावहम्।
धन–धान्यादि सम्पूर्णं राष्ट्रं तु बलवद्दृढम्।।"**

भारत का शासनतन्त्र अपनी सैन्यबल एवम् समृद्धि के पथ पर नई शासनसत्ता में ख्याति को प्राप्त करेगा। शासन के सचेत रहने पर भी भारत को **उत्तरी–पश्चिमी प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोप (भूकम्प, भूस्खलन, समुद्री तूफान) किंवा उग्रवादजन्य दुर्घटनाओं से जनधनहानि एवम् अशान्ति के योग शासनतन्त्र को क्षुब्ध करेंगे।** इस संवत् की ग्रहस्थिति कुछ क्षेत्रों के सूखाग्रस्त रहने एवम् जुलाई–अगस्त में कुछ क्षेत्रों में भयंकर बाढ़ से विनाशकारक दृश्य उपस्थित करेगी।

संवत् 2072 वि. का राजा महाक्रूर एवम् यावन–प्रतिनिधिग्रह शनि तथा मन्त्री भूमिहर मंगल होने से मुस्लिम–राष्ट्र पाकिस्तान, लीबिया, सीरिया, लेबनान, मिश्र, इराक, ईरान आदि में यह वर्ष अनेकत्र आन्तिरिक अशान्ति, कहीं गृहयुद्ध, कहीं सेना के द्वारा दमन (सत्ता हस्तान्तरण), कहीं साम्प्रदायिक (शिया–सुन्नी आदि) कलह से भयंकर युद्धाग्नि प्रज्वलित होगी। भारत के सीमाप्रान्तों काश्मीर, राजस्थान एवम् अन्य सीमाप्रान्तों पर भी कुछ सीमावर्ती देश सैन्यबल प्रयोग के लिए विवश कर देंगे। उत्तरी एवम् पश्चिमी सीमाओं पर सेना को सतर्क रहना होगा।

संवत् के आरम्भ में ही शनि–मंगल का षडष्टकयोग 2 मई, 2015 ई. तक एवम् आगे लगभग जून के मध्य तक शनि–मंगल का समसप्तकयोग होने से ब्रिक्स देश आतंकवाद के मसले पर भारत को सहयोग देंगे। लेकिन मौजूदा ग्रहस्थिति के अनुसार संयुक्तराष्ट्रसंघ एवम् अमेरिका के प्रयासों के बावजूद इजराइल एवम् हमास युद्ध अभी रुकने की उम्मीद नहीं, क्योंकि हमास और ईराक के आतंकवादी संगठन आइ. ऐस. आइ. ऐस. के बीच गहरा सम्बन्ध है।

शनि–मंगल की पोजीशन को देखते हुए भारत को विकास व सुरक्षा की

दृष्टि से तालिबान को उकसाने वाले देशों विशेषत: पाक–अफगानिस्तान की नीति को समझना होगा एवम् इन्हें इस बारे में समझाना भी होगा।

30 मई से 13 अगस्त तक गुरु–शुक्र कर्कराशि में ही रहेंगे। इस ग्रहस्थिति से कहीं अतिवृष्टि से भयंकर जनधनहानि किंवा कुछ क्षेत्र सूखे का शिकार होंगे। सीमांप्रान्तों पर चीन व पाक की गतिविधि अशान्ति का कारण भी बनेगी–

"गुरु–शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेत् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः।।"

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया, 21 मई को आर्द्रा नक्षत्र होने से आगे अगस्त, 2015 ई. तक कहीं महावृष्टि से बाढ के कारण जनधनहानि एवम् कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष की स्थिति बनने के योग हैं–

" ज्येष्ठशुक्ल–तृतीयायामार्द्रानक्षत्रकं भवेत्।
तदा वृष्टिर्महाघोरा क्वचिद्दुर्भिक्ष–कारिणी।।"

15 जून से 30 जुलाई, 2015 ई. तक शनि–मंगल का षडष्टकयोग चलेगा। यह योग पश्चिमी प्रान्तों एवम् पश्चिमी देशों में भयंकर प्राकृतिक आपदा (समुद्री तूफान, भूकम्प, यानदुर्घटना आदि) व आतंकवादियों द्वारा विनाश का संकेत देता है। भारत एवम् पश्चिमी देशों के लिए ग्रहस्थिति अनुकूल नहीं है।

17 जून से 16 जुलाई, 2015 ई. तक मलमास में सूर्य के आश्लेषा में एवम् सूर्य–मंगल के आर्द्रा में आने पर अतिवृष्टि (प्राकृतिक आपदा, कहीं अग्निकाण्ड, भूकम्प एवम् भूस्खलनादि) से भारी हानि के योग बनते हैं। इन दिनों में यात्रा न करें तो ठीक है।

30 जुलाई से 15 सितम्बर तक मंगल कर्क राशि में संचार करेगा। इस समयावधि में बुध, सूर्य एवम् शुक्र भी कुछ–कुछ समय के लिए मंगल के साथ मेल करेंगे। अतः महंगाई को कन्ट्रोल करने में शासनतन्त्र नाकामयाब रहेगा। महंगाई से जनता परेशान रहेगी।

नोट करें, कि– 5 अगस्त को शुक्र एवम् 12 अगस्त, 2015 ई. को गुरु ग्रह भी अस्त हो रहा है। श्रावण कृष्ण नवमी (8 अगस्त) के दिन शनिवार है तथा श्रावण कृष्ण चतुर्थीतिथि का क्षय होने से अगस्त एवम् आगे कार्तिक मास में (लगभग अक्तूबर/नवंबर, 2015 ई. में) किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होगा या आकस्मिक दुर्घटना किंवा उग्रवादजन्य घटना से दुःखद अन्त होने का योग है–

"श्रावणे नवमीयुक्तः शनिः सन्तापकारकः।
छत्रभंगं विजानीयात् आश्विनान्ते न संशयः।।"

" श्रावणे कृष्णपक्षे च क्षीणा काऽपि तिथिर्भवेत्।
तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगः प्रजायते।।"

15 सितम्बर से 2 नवम्बर, 2015 ई. तक शनि–मंगल के दशम–चतुर्थ–सम्बन्ध की अवधि में भारत की आन्तरिक किंवा बाह्य सुरक्षा की दृष्टि से नई चुनौतियों का सामना करने के लिए मोदी सरकार को विशेष सुरक्षा–नीति अपनानी होगी। इस समय सीमा पर पोषित आतंकवाद का सामना करने के लिए समीपस्थ राज्य सरकारों को भी हालात का सामना करने में सक्षम रखना होगा।

3 नवम्बर को मंगल कन्या राशि में आकर शुक्र एवम् राहु के साथ एकराशि–सम्बन्ध नवम्बर के अन्त तक बनाएगा। यह समय सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा की दृष्टि से विशेष सावधानी का है। चीन–पाक की कुचाल व कुनीति से सैन्यबल को सावधान रहना होगा। सीमा पर गतिविधि अशान्ति का कारण बन सकती है। इन दिनों उग्रवादी–ग्रुप हानि पहुंचाने की ताक में भी रहेगे। अतः महानगरों मे सुरक्षाक्षेत्र मजबूत रखने होंगे।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष में दशमी तिथि (5/6 दिसम्बर) की वृद्धि एवम् शुक्लपक्ष में नवमी का क्षय है। अतः दिसम्बर, 2015 ई. में यावन किंवा पश्चिमीराष्ट्रों में कहीं युद्धाग्नि से हानि के समाचार मिलेंगे–

" मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभंगं प्रजापीडां दुर्भिक्षं च समादिशेत्।।"

स्पष्ट है–नवम्बर–दिसम्बर, 2015 ई. में कहीं विशिष्ट–व्यक्ति का पद रिक्त हो, सत्ताहस्तान्तरण किंवा रोगादि प्राकृतिक प्रकोप से प्रजा को कष्ट एवम् कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति से जनता परेशान रहे। महंगाई से जनजीवन त्रस्त रहेगा।

16 दिसम्बर को सूर्य धनु में एवम् 23 दिसम्बर को मंगल तुला में किंच 25 दिसम्बर को शुक्र वृश्चिक में आकर अनेक प्रान्तों में दुर्भिक्ष की स्थिति बना सकते हैं, जिससे महंगाई से जनता परेशान रहे–

"महीसुते तुलां याते सर्वधान्यमहर्घता।
माषा मुद्गास्तथा सूत्रं कार्पासादि विशेषतः।।"

तथा च–

" मार्गशीर्षे धनुषि हि यदा याति दिवाकरः।
वृश्चिके च गते शुक्रे तदा दुर्भिक्षकं मतम्।।"

इस वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार विदेशों से काले धन की वापसी की रणनीति पूर्णतः सफल नहीं होगी, जिससे देश की आर्थिक नीति को सुधारने में सरकार की विवशता एवम् श्री मोदी महाभाग की स्थिति मन्त्र से वशीकृत (कीलित) सांप की भांति रहेगी, जो समर्थ होने पर भी कुछ न करने को बाधित रहेगा–" भोगीव मन्त्रोषधि रुद्धवीर्यः।" क्योंकि राजग किंवा महामहिम श्री मोदी सरकार पर हिन्दुत्व किंवा साम्प्रदायिकता का तगमा लगाकर विरोधी सिद्धान्तों वाले विपक्षीदल भी एकजुट

होकर मोदी सरकार से जनता का मोहभंग करने के लिए सक्रिय रहेंगे, जिससे लगभग 31 अगस्त एवम् सितम्बर में होने वाले विधानसभाई उपचुनावों में भाजपा को अधिकतर क्षेत्रों में विशेषतः बिहार में असफलता का सामना करना पड़ सकता है। इस प्रकार नई मोदी–सरकार को आन्तरिक और काश्मीर–पाक–चीन आदिजन्य बाह्य खतरों से भी सावधान रहना जरुरी है। 25 जुलाई, 2014 ई. को यह लाईने लिखते हुए हम सौहार्दपूण शब्दों में सावधान कर देना उचित समझते हैं।

8 जनवरी, 2016 ई को सिंहस्थ गुरु वक्री होगा। इस समय वृश्चिकस्थ शनि की गुरु पर विशेष दृष्टि भी है। 18 जनवरी, सन् 2016 ई को शुक्र–बुध धनुरथ हैं। भारत को उग्रवादजन्य विभीषिका के समाधान के लिए कठोर पग उठाने होंगे, क्योंकि 20 फरवरी, सन् 2016 ई से संवत् 2072 के अन्त तक शनि–मंगल का एक-साथ वृश्चिक राशि मे रहना सीमा–सुरक्षा–दृष्टि से अत्यन्त चिन्तनीय है। उत्तरी काश्मीर, दक्षिण–तिब्बत, अरुणाचल प्रदेश, राजौरी क्षेत्र में भारत को सतर्क रहना होगा। साथ ही फरवरी, 2016 ई. से आगे सितम्बर, 2016 ई. (संवत् 2073 वि.) तक बिहार, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश की काश्मीरी सीमा, जम्मू–काश्मीर एवम् छत्तीसगढ़ में उग्रवाद किवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि के योग भी बनते हैं।

ध्यान दें– सं. 2072 वि. का उत्तरार्ध एवम् संवत् 2073 वि. के पूर्वार्ध में शनि–मंगल की स्थिति विषम समस्याओं को लेकर आ रही है। इससे पहिले सरकार की उदासीनता एवम् आक्रामकता का अभाव लगातार शत्रुदेशो की गतिविधि को बढावा देता रहा है, जोकि राजग सरकार को असह्य रहेगा। समस्या का समाधान करने के लिए अब सरकार दृढ–संकल्प मालूम देगी। " भय बिन प्रीत नहीं " वाली नीति से ही हम शत्रुदेश की गतिविधि का सकारात्मक उत्तर देने में समर्थ होंगे।

महामहिम श्री प्रणवमुखर्जी महाभाग (राष्ट्रपति भारत गणतन्त्र)

महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी का जन्म मिराती (वीरभूम) West Bengal में 11 दिसंबर, 1935 ई. को मिथुन लग्न में हुआ था। इनकी यथालब्ध जन्मकालिक ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

भाग्येश–शनि भाग्यस्थान में एवं कर्मेश गुरु की कर्मस्थान पर विशेष दृष्टि है। यह राजयोगकारक ग्रहस्थिति है। शुक्र की महादशा में राहु के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में इन्हें राष्ट्रपतिपद प्राप्त हुआ।

अब शुक्र–शनि–राहु एवम् मंगल की स्थिति आगामी वर्ष में कुछ कठिन राजनैतिक परिस्थितियों के निराकरण करने के लिए एवम् देश की न्यायिक (न्यायपालिका) प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए इन्हें सुधारात्मक पग उठाने पड़ेंगे। प्रान्त विशेष की अव्यवस्था पर महामहिम को शासनसत्ता को कहीं अपने हाथ में भी लेना पड़ सकता है। शासन, न्यायप्रणाली एवम् अन्य राज्यों के विभाजन की उठ रही चुनौतियां, जोकि आगे कही देश में कटुतापूर्ण मोड़ न ले सकें, उसे हल करने के श्रेय के साथ इन्हें फरवरी, 2015 तक कठोर पग उठाने होंगे। ऐसे सुयोग्य, प्रबुद्ध महामहिम राजनीतिज्ञ महाभाग के संरक्षण में भारत–गणतन्त्र प्रगतिपथ पर ही रहे – यही प्रार्थना है।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

भारतीय जनता पार्टी– गोचर ग्रहस्थिति एवम् भाजपा की स्थापना–कुण्डलीगत–ग्रहस्थिति के अनुसार गतवर्ष सं. 2071 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचाग" में पृष्ठ 58, कॉलम 2 पर हमने तात्कालिक ग्रहस्थिति के अनुसार घोषणा कर दी थी कि– भाजपा सत्ताप्राप्ति की ओर बढ़ेगी, पढ़ें :–

"संवत् 2070 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष शनि–मंगल एवं राहु–ये तीनों क्रूरग्रह लगभग 1 मार्च सन् 2014 ई. से ही 19 मई तक वक्री पोजीशन में रहेंगे। शनि भाजपा की कुण्डली में अष्टमेश एवं नवमेश है। बृहस्पति कर्मेश होकर 18 जून तक मिथुनराशि में ही रहकर भाग्यस्थान को एवं भाग्येश तुलाराशिस्थ शनि को देखेगा। यह योग भाजपा के लिए प्रतिष्ठा देने वाला अवश्य है, ग्रहगति के अनुसार हम घोषणा कर देना उचित समझते हैं कि– कांग्रेस की केन्द्रीय शासन सत्ता तो लकवाग्रस्त छवि के कारण सं. 2071 वि. के प्रारम्भ में ही भाजपा को सत्ताप्राप्ति के लिए अग्रेसर होने के लिए प्रेरित कर सकती है।"

सं. 2072 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भाजपा की स्थापना–कुण्डली में गोचरस्थ (धनस्थानस्थ) कर्क राशि में स्थिति, गुरु की धनेश नीचस्थ चन्द्र पर 14 जुलाई, सन् 2015 ई. तक विशेष दृष्टि रहेगी, जोकि देश की आर्थिक स्थिति को सुव्यवस्थित करने के लिए प्रधान शासकों को नए कानून एवम् अन्य मित्र देशों के साथ औद्योगिक नीति निर्धारित करके देशहित में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी।

ध्यान रहे– देश की आर्थिक, सामाजिक एवम् सामरिक, स्थिति और देश को गरिमा प्रदान करने में राजग सरकार 26 जनवरी, सन् 2017 के लगभग समर्थ

होगी, क्योंकि शनि 26 जनवरी, 2017 ई. को धनुराशि में आकर भाजपा के भाग्यस्थान कुम्भ पर दृष्टिपात करके लगभग दो–अढाई वर्ष भारत–गणतन्त्र को महिमामण्डित करेगा– " **स्थानवृद्धिकरः शनिः।**" इस समयावधि मे तथा भारतीय जनता पार्टी के लिए आगे भी महिमामण्डित रहने का योग है।

नोट– 3 मई से 16 जून, 15 सितम्बर से 23 दिसम्बर, सन् 2015 ई. एवम् 20 फरवरी, सन् 2016 ई. से संवत् के अन्त तक का समय भाजपा एवम् देश के लिए कठिन परिस्थितियों वाला है। इन अवधियों में यानदुर्घना, प्राकृतिक आपदा किंवा उग्रवादियों द्वारा जनधन-हानि भी सम्भव है। प्रधान नेताओं की सुरक्षा भी इन दिनों आवश्यक है। सीमाप्रान्तों पर वातावरण अशान्त होने से भाजपा नेताओं की अग्निपरीक्षा की घड़ी इन्हीं दिनों में है।

कांग्रेस पार्टी– गत वर्ष संवत् 2071 वि. (सन् 2014/15 ई.) की ग्रहस्थिति के आधार पर कांग्रेस पार्टी का जो चित्रण हमने किया था, उसका उल्लेख करना हम प्रासंगिक समझते हैं। पढें– **श्रीमार्त्तण्ड पंचांग**, सं. 2071 वि., पृष्ठ 57 कॉलम 2, पर (कांग्रेस शीर्षक में) – **"संवत् 2071 वि. में गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश गुरु 18 जून, 2014 ई. तक मिथुन राशि में ही रहकर धनुराशि (लग्न) पर पूर्णदृष्टि से देखता रहेगा। जोकि कांग्रेस पार्टी की शासन–सत्ता को दिए गए प्रलोभनों से लाभ की ही आशा में रखेगा। लेकिन शनि, मंगल एवं राहु–ये तीनों क्रूरग्रह वक्रगति से चलेंगे। 2 मार्च, सन् 2014 ई. से 19 मई, 2014 ई. तक गोचर ग्रहस्थिति कांग्रेस पार्टी एवं अधिकारीवर्ग के लिए विशेष प्रतिष्ठाप्रद नहीं है।"**

यह भविष्यवाणी कितनी सही रही ? यह पाठक स्वयं आकलन करें।

कांग्रेस पार्टी की कुण्डली

10 मं.
सू. 8 बु. नेप.
शु.
7 गु.
रा. 11
9
12
6 प्लू. यूरे.
चं.
श. 1
3
5 के.
2
4

अब सं. 2072 वि. की गोचर ग्रहस्थिति को दृष्टि में रखते हुए लिखना पडेगा कि– इस संवत् का वर्षेश शनि कांग्रेस की कुण्डली में व्ययस्थान में है। अधिक समय यह शनि, शुक्र–मंगल एवम् राहु के साथ रहता है। अतः कांग्रेस की यू.पी.ए. गठबन्धन ऐसी विपरीत सिद्धांतों वाली पार्टियों के साथ होंगे, जिनके साथ आगे डूबती नाव में बट्टे डालने वाली बात नजर आएगी। बहुत से सहयोगी दल तो पहले ही वृश्चिक के शनि में कांग्रेस को छोड़ चुके होंगे, आगे इस पार्टी में विवेकहीनता एवम् अवसरवादिता के कारण यह पार्टी 'किंकर्त्तव्य–विमूढ, मालूम देगी। लेकिन जन्मकुण्डली मे मौजूदा ग्रहस्थिति के अनुसार अक्तूबर में किसी प्रान्त विशेष में शनि की दृष्टि के कारण अपनी चिरसंकल्पित सत्ता से इस पार्टी को विजय कर सकता है, क्योंकि कुण्डली मे शनि मारकेश एवम् शत्रुक्षेत्र में, व्ययस्थान में हैं तथा मंगल द्वितीय भाव में शत्रुक्षेत्री है।

ध्यान दें कि– बुध–सूर्य दोनों कांग्रेस कुण्डली के व्ययस्थान में अवश्य है, इस बुधादित्ययोग पर आजकल गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार उच्चस्थ गुरु की दृष्टि है, अतः कुछ प्रान्तों मे अभी जनवरी, 2015 ई. से पहले होने वाले विधानसभाई निर्वाचनों में अपनी स्थिति की दृढता का संकेत दे सकती है, लेकिन कांग्रेस पार्टी कन्याराशि मे बृहस्पति के आने पर सन् 2016/17 ई. में पुनः समर्थ पार्टी के रुप में उभर कर सत्तासीन पार्टी को चुनौती दे सकेगी।

पाठको ! गतवर्ष सं. 2071 वि. के पंचांग में पृ. 58, कॉलम 1 में हमने मोटे अक्षरों में जो घोषणा की थी, उसे यहां उद्धृत कर देना चाहते हैं;–

"4 फरवरी, 2014 ई. को मंगल, शनि, राहु– ये तीनों खलग्रह तुला राशि में 24 मार्च, 2014 ई. तक एकराशि में ही रहेंगे। विशेषतः 1 मार्च से 24 मार्च 2014 ई. तक मंगल वक्रगति से शनि–राहु के साथ चलेगा।

इस समयावधि में (फरवरी से मार्च, 2014 ई. तक) कांग्रेस पार्टी के कई दिग्गज नेता जनता को लुभाने के लिए अनेक वायदे करने पर भी जनता से पूर्ण बहुमत प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे;– परिणाम कांग्रेस पार्टी के लिए आश्चर्यजनक रहेंगे।"

तदनुसार कांग्रेस पार्टी को लोकसभा निर्वाचनों–में केवल 44 सीटों तक ही सिमटना आश्चर्यजनक ही सिद्ध हुआ है।

भारतीय राजनीति के क्षितिज में तीसरे मोर्चे एवम् बसपा का भविष्य

वर्षेश शनि एवम् इसवर्ष के मन्त्री पद पर आसीन मंगल–दोनो शत्रुग्रह हैं। प्रधान नेताओं को अपनी सुरक्षा को मजबूत रखना चाहिए अन्यथा इसवर्ष सवत् 2072 वि में उग्रवादियो द्वारा किसी विशेष दुर्घटना को अंजाम दिया जा सकता है। अतः तीसरे मोर्चे आदि को केवल देश की गति–प्रगति एवम् सुख–समृद्धि के लिए ही प्रयास करने चाहिएं, अन्यथा इनके सभी प्रयास अहितकारी एवम् देश की प्रगति मे बाधक ही रहेंगे।

बहिन मायावती की पार्टी का केन्द्रीय शासनसत्ता से क्षरण तो हो चुका है, लेकिन शुक्र–राहु की स्थिति उ.प्र. में मध्यावधि चुनावो की संभावना होने पर कुछ सीटे लेकर अपनी मौजूदगी दर्ज करा सकती हैं। समाजवादी आदि पार्टियो के मेल से जो तीसरे मोर्चे का गठन किया गया था उस बारे मे हमने **विगतवर्ष के पंचांग सं. 2070 वि., पृष्ठ 46 कॉलम 1 पर स्पष्ट उल्लेख किया था–**

"सं. 2070 वि. में 18 अगस्त, 2013 ई. से लगभग 5 अक्तूबर तक शनि–मंगल का दशम–चतुर्थदृष्टिसम्बन्ध भारत की राजनीति में भारी उलटफेर का

संकेतक है। इस दौरान राजनैतिक पार्टियों की स्वार्थ-परकता एवं सत्तालोलुपता तीसरे मोर्चे का गठन करेगी, जिसका प्रभाव बड़ी पार्टी कांग्रेस पर आंशिकरूप से होगा, लेकिन सत्ताप्राप्ति की महत्त्वाकांक्षा फलवती नहीं होगी। तीसरा मोर्चा कुछ राजनीतिज्ञों के लिए मृगतृष्णामात्र सिद्ध होगा।"

यह दो वर्ष पूर्व की गई भविष्यवाणी शतप्रतिशत सही सिद्ध हो चुकी है।

आम आदमी पार्टी– आम आदमी पार्टी के सचालक श्रीअरविन्द केजरीवाल का जन्म 16 अगस्त, सन् 1968 ई. को रात्रि में 11 बजकर 46 मिनट पर शिवानी (हरियाणा) में हुआ था। इनकी जन्माङ्गगत ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

जन्मकुण्डली श्री अरविन्द केजरीवाल

3 | 1 श. | 4 मं. | 2 चं. | 12 रा. | बु. सू. 5 गु. शु. | 11 | 6 के. | 8 | 10 | 7 | 9

लग्नस्थ उच्च चन्द्रमा एवम् मित्र–सहायक बन्धुस्थान (चतुर्थ स्थान) में बुधादित्ययोग के साथ गुरु–शुक्र का होना शुभ है इनके लिए गोचरानुसार कर्कस्थ गुरु राजयोग दिलाने वाला रहा है, लेकिन तुला राशि के गोचरस्थ शनि–राहु की मंगल पर दृष्टि एवम् कुण्डली मे केमद्रुमयोग ने इन्हें शनि–राहु एवम् मंगल के वक्रत्व कालारम्भ की छाया में ही 14 फरवरी, 2014 ई. तक राजयोग से वञ्चित कर दिया है।

इस समय गुरु की महादशा में शुक्रान्तर में गुरु का प्रत्यन्तर चल रहा है, जो इन्हें गोचर में उच्चस्थ गुरु के कारण राजनैतिक क्षेत्र में तो बना रखेगा, लेकिन गुरु–शुक्र का शत्रुत्व इन्हें सत्तासीन न होने देगा।

कुछ प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ

श्री नरेन्द्रमोदी महाभाग– श्री नरेन्द्रमोदी जी का जन्म 17 सितम्बर, सन् 1950 ई. में गुजरात स्थित महेसाना में 11घं. 00मि A.M. पर हुआ। इनकी जन्मकालिक ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' के पाठकों ने 2071 वि. के पचाग में पृ. 60, कॉलम 1 पर श्री मोदी जी के बारे में पढ़ा होगा कि 2 अक्तूबर, सन् 2013 ई. तक श्री नरेन्द्र मोदी साहिब को अन्तर्द्वन्द का सामना करना पड़ेगा एवम् निजी पार्टी के अन्तर्कलह का भी सामना करना पड़ेगा। पढ़ें एवम् अगस्त 2013 ई. में लिखी गई इन पंक्तियों की सत्यता का आकलन स्वयं करें–

" यथालब्ध जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार इस समय चन्द्र में राहु का अन्तर एवं गुरु का प्रत्यन्तर 2 अक्तूबर, 2013 ई. तक चलेगा। यह ग्रहस्थिति इन्हें भारी अन्तर्द्वन्द में रखेगी। बृहस्पति पञ्चमेश होकर मित्रवर्ग में है एवं राहु योजनास्थान में। स्पष्ट है कि– इन्हें सहयोगी दलों की राजनैतिक स्वीकृति प्राप्त करना कठिन प्रतीत होता है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि– निजी पार्टी के आन्तरिक कलह का भी ये शिकार रहेंगे। दिल्ली आदि अनेक प्रान्तों में इनके व्यक्तित्व का प्रभाव निर्वाचनक्षेत्रों में अनुभव होगा।"

सब जानते हैं कि– बसपा एवम् दक्षिण भारत की क्षेत्रीय पार्टियों ने भी श्रीनरेन्द्रमोदी को सहयोग न देने की घोषणा की थी, साथ ही श्री नीतीशकुमार–लालु प्रसाद जी ने भी श्री मोदी का घोर विरोध किया था। श्री मोदी जी के प्रधानपद के बारे पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आड़वानी जी भी पहले पूर्णतया सहमत न थे। इसप्रकार अर्न्तद्वन्द का सामना करते हुए श्री नरेन्द्रमोदी प्रधानमन्त्रित्व की ओर बढ़ते चले गए।

अब आगे की ग्रहस्थिति पर विचार करना भी प्रासंगिक है– 20 अक्तूबर, 2014 ई. तक श्रीनरेन्द्रमोदी जी के जन्माङ्ग के अनुसार चन्द्रमा में राहु का अन्तर चलेगा। 10 मार्च, 2015 ई. तक श्री नरेन्द्रमोदी जी को चन्द्र में गुरु एवम् शनि के प्रत्यन्तर तक भारी राजनैतिक सुधारात्मक कठिनाइयो का सामना करा पडेगा। अगस्त, 2014 ई. से मार्च, 2015 ई. तक प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्रमोदी जी को अपनी सुरक्षाव्यवस्था को पूर्णरूप से सुदृढ़ रखना होगा, क्योंकि चन्द्र, लग्न में नीच होकर गोचरस्थ शनि के साथ सम्बन्ध करेगा, जोकि उग्रवादजन्य किसी भी कुचेष्टा से हानि का भय बनाता है। वैसे भी इनके लिए सं. 2072 वि. में शनि- मंगल व राहु के साथ एकराशिसम्बन्ध बनने पर इन्हें शत्रुकृत अशान्ति व सीमाप्रान्तीय प्रहारों एवम् अपनी सुरक्षा के लिए सावधान रहना ही होगा। देश की प्रगति एवम् सुरक्षा का महान् दायित्व जनता ने आपके सशक्त स्कन्धों पर रखा है, अतः निम्नांकित समयावधियो में विशेष सावधान रहना जरूरी है।

15 अगस्त से दिसम्बर, 2015 ई. एवम् 20 फरवरी, सन् 2016 ई. से संवत् 2072 वि. के अन्त तक विशेष सावधान रहना होगा। देशहित में अनेक कठिनाइयों का सामना करने पर भी आप सफलता की ओर अग्रेसर रहेंगे।

श्रीनरेन्द्रमोदी जी ने देहली (राष्ट्रपति– प्रांगण) में प्रधानमन्त्री की शपथ 26 मई, सन् 2014 ई. को साय 6 घं. 00 मि. पर: ग्रहण की। इस समय की ग्रहस्थिति इस प्रकार थी– शपथकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नस्थ उच्च शनि राहु के साथ है, लग्नेश शुक्र की लग्न पर पूर्ण दृष्टि भी है–

" यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद् योगकारकौ।।"

यहां शनि केन्द्रश–त्रिकोणेश एवम् शुक्र भी केन्द्रेश है, अतः यह योग श्रीनरेन्द्रमोदी जी को लगभग फरवरी, 2017 ई. से आगे देश को समृद्धि एवम् विश्व में सशक्त देशों में स्थापित कराने का श्रेय प्रदान करेगा। लग्नेश शुक्र केन्द्रश एवम् अष्टमेश भी है, अतः इन्हें अपनी सुरक्षापंक्ति को दृढतम रखना होगा, अचानक उग्रवादजन्य कुकृत्य कहीं देश को हानि न पहुंचा दे, क्योंकि –" **केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरु–शुक्रयोः**"–प्रमाणानुसार श्री मोदी को देश को प्रगतिपथ पर ले जाने के लिए पहले देश की खामियों एवम् आर्थिक/प्रशासनिक व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए काफी दिक्कतों/परेशानियों का सामना करना होगा।

श्रीलालकृष्ण आडवानी– भाजपा के अद्यतनीन पितामह श्रीलालकृष्ण आडवानी जी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार जन्मलग्न एवम् गोचरस्थ शनि–केतु इस संवत् में 23 दिसम्बर, सन् 2015 ई. तक लग्नेश मंगल राहु के साथ मेल करेंगे। आगे 20 फरवरी, सन् 2016 ई. से संवत् 2072 वि. के अन्त तक इनके जन्म लग्न में शनि–मंगल का एकत्र होना स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्तनीय अवश्य है। आगे यदि ईश्वर ने चाहा तो जुलाई, 2015 ई. के बाद सन् 2016 ई. के अन्त तक इनहें विशेष प्रतिष्ठा का स्थान मिल सकता है– ऐसा संकेत ग्रहस्थिति से मिलता है। इनका वरद हाथ देश एवम् भाजपा को दिशानिर्देश देता रहे, यही प्रार्थना है।

श्रीमती सोनिया गांधी– गत सं. 2071 वि. सन् 2014/15 ई. में श्रीमती सोनिया गांधी को राजनैतिक गतिविधि एवम् स्थिति के बारे में जो भी लिखा गया था, वह अक्षरशः सत्यसिद्ध हुआ है। 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग', संवत् 2071 वि., पृष्ट 59, कॉलम 1 पर जो लिखा था, वह आगे उद्धृत है–

"सं. 2071 वि. के प्रारम्भ में वक्री शनि–मंगल–राहु की 19 मई तक की स्थिति श्रीमती सोनियागांधी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति से विपरीत स्थिति को दर्शाती है। अतः इनकी राजनैतिक स्थिति को चिन्ताजनक स्थिति में लाकर खड़ा कर देने वाली है। राजनैतिक क्षेत्र एवं प्रशासकीय दिशाविहीनता एवं कठिनाइयों से भरपूर समय आ रहा है। आगे लगभग जुलाई से 3 सितंबर, 2014 ई. तक का समय श्रीमती सोनिया गांधी की सेहत के लिए चिन्ताजनक है। इनको अपनी स्वास्थ्य–सुरक्षा की दृष्टि से विशेष सावधान रहना अनिवार्य है।"

अब संवत् 2072 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार श्रीमती सोनिया गाधी जी के जन्माङ्ग में लग्नस्थ गोचर में उच्च गुरु की भाग्येश होकर भाग्यस्थान पर विशेष दृष्टि है एवम् आगे 14 जुलाई, सन् 2015 ई के बाद सिंहस्थ गुरु की (भाग्येश होकर) कर्मेश–मगल पर विशेष दृष्टि रहेगी एवम् सिंहस्थ गुरु कर्मस्थान को भी देखेगा। यह ग्रहस्थिति श्रीमती सोनिया गाधी के प्रभावक्षेत्र को पुनः वर्चस्व प्रदान करेगी। लेकिन जन्माङ्ग के पंचम भाव मे वृश्चिकस्थ सूर्य–बुध–केतु के साथ गोचर में शनि–मंगल का इसवर्ष संयोग संवत् 2073 वि. तक इनके परिवार को पूर्ववत् प्रतिष्ठा एवम् कांग्रेस पार्टी में प्रभुत्व स्थापित कराने में अभी बाधक ही मालूम देता है। लेकिन प्रान्तीय मध्यावधि निर्वाचनों में कांग्रेस पार्टी कुछ प्रभाव पकडेगी।

श्रीराहुल गान्धी– जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार श्री राहुल गांधी को लगभग सितम्बर, 2017 ई. के बाद तुला के गुरु एवम् धनुःस्थ शनि की अवधि में सन् 2017/18 ई. में विशेष पदाप्ति योग बनेगा।

गतवर्ष संवत् 2071 के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में श्री राहुल गांधी के बारे में जो लिखा था अक्षरशः सत्यसिद्ध हुआ है। सं. 2071 वि. के पंचांग में पृ. 59, कॉलम 2 पर जो लिखा था, वह उद्धृत कर देना प्रासंगिक है, पढ़ें–

" श्री राहुल गान्धी जी की जन्माङ्गगत ग्रहस्थिति के अनुसार इस समय चन्द्रमा की महादशा में बुधान्तर अगस्त, सन् 2015 ई. तक प्रभावी रहेगा। बुध चन्द्रमा का मित्र है। लेकिन जन्मकालीन कुण्डली में चन्द तृतीयेश होकर सप्तमभाव में नीच है, जोकि विरोधी पक्ष के सामने मनोबल को कमज़ोर करता है। क्योंकि बुध चन्द्रमा के साथ शत्रुभाव रखता है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जन्मकुण्डली में भाग्येश–कर्मेश दोनों का स्वामी शनि तुलाराशि में उच्च एवं राहु के साथ होकर मार्च से 19 मई, 2014 ई. तक वक्रगति से चलता रहेगा एवं साथ ही विपक्षीवर्ग का प्रतिनिधि ग्रह मंगल भी वक्रगति से ही चलेगा। जोकि अभी इन्हें संभावित पदप्राप्ति में बाधक मालूम देता है।"

अभी श्री राहुल गांधी की वर्तमान ग्रहस्थिति तो इनके मनोबल को क्षीण करने वाली एवम् पार्टी में प्रभावी नेतृत्व से विलग करने वाली है । समय पाकर स्थिति संभलेगी।

श्रीमती प्रियंका (वाड्रा) गांधी– इनका जन्म 12 जनवरी, सन् 1972 ई. में रात्रि में 1घ. 59मि. पर देहली में हुआ था। चन्द्रमा (कर्मेश) द्वितीय स्थान में नीच है। भाग्येश बुध, बृहस्पति–सूर्य के साथ तृतीयक्षेत्र में है। " **प्रियंका को लाओ, कांग्रेस बचाओ** "– का नारा भी सन् 2017 ई. तक कोई लाभ न दिला सकेगा। अभी प्रतीक्षा मे ही कल्याण है।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब– इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवम् नामराशि कन्या है। अतः कन्याराशि का राहु, जोकि 12 जुलाई, 2014 ई को कन्या राशि में दाखिल हुआ है, यहां धार्मिक एवम् किसी अन्य विषय को लेकर वातावरण को अशान्त करेगा। आगे 3 मई से 15 जून, सन् 2015 ई. तक शनि–मंगल के साथ समसप्तकयोग में किसी विशेष कारणवश यहां की राजनीति से लोग असन्तुष्ट रहेंगे। उद्योग एवम् आर्थिकस्थिति को सुधारने के लिए केन्द्र से मदद लेनी पड़ेगी। 15 जून से 30 जुलाई, सन् 2015 ई. तक अस्त मंगल सूर्य के साथ मिथुन राशि में रहेगा एवम् वृश्चिकस्थ शनि 2 अगस्त तक वक्री रहेगा। इस ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ क्षेत्र अकालग्रस्त रहेंगे। सरकार को किसानवर्ग को राहत प्रदान करने की घोषणा करनी पड़ेगी।

अगस्त से 7 सितम्बर, 2015 ई. तक शुक्र–गुरु की स्थिति किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदरिक्त होने का योग बनाती है।

15 सितम्बर से नवम्बर, 2015 ई. तक शनि–मगल का दशम–चतुर्थसम्बन्ध भी इस प्रान्त की सुधारात्मक नीतियों को पूर्ण नही होने देगा। प्रधान–नेताओं को महंगाई, साम्प्रदायिकता एवम् राजनैतिक पार्टीविघटन आदि समस्याओं से जूझना पडेगा। 14 जनवरी, 2016 ई. से संवत् 2072 वि. के अन्त तक शनि–सूर्य एवम् विशेषतः 20 फरवरी, 2016 ई. से संवत् 2072 वि. के अन्त तक शनि–मंगल का एकराशि (वृश्चिक में) संचार इस प्रान्त के लिए अघटित घटनाओं वाला सिद्ध होगा।

हरियाणा– हरियाणा की नामराशि मिथुन एवम् प्रभावराशि मीन है। 3 मई से 15 जून, सन् 2015 ई. तक शनि–मंगल का षडष्टक एवम् 15 मई से 14 जून, सन् 2015 ई. तक सूर्य, मंगल, बुध का शनि के साथ समसप्तक यहां राजनीतिक दलों में काफी उलटफेर लाने वाला है। विशेषतः इस समय सत्तासीन कांग्रेस के प्रधान–नेता श्री भूपेन्द्रसिंह हुड्डा के सहयोगी व्यक्ति ही कांग्रेस के विरोध में स्वर उठाने लगेंगे एवम् आगे विधानसभाई निर्वाचनों में विपक्षीदल भाजपा को सहयोग देने के कारण कांग्रेस–सचालित सरकार के लिए चुनौती सिद्ध होंगे। क्योंकि 14 जुलाई से वक्र शनि की दृष्टि सिंहस्थ गुरु (जोकि श्री भूपिन्द्रसिंह हुड्डा जी का राशीश है) पर रहेगी। अतः भरपूर कोशिश के बावजूद भी प्रधाननेता पार्टी को एकजुट व पूर्णरूप से शक्ति प्रदान करने में समर्थ न रहेंगे।

12 अगस्त से 7 सितम्बर तक गुरु अस्त रहेगा एवम् श्रावण कृष्ण पक्ष में चतुर्थी का क्षय होने से कार्तिक मास में (विशेषतः 7 अक्तूबर से 3 नवम्बर के लगभग) यहां के शासनतंत्र में कुछ विशेष रद्दोबदल होने के योग हैं–

" श्रावणे कृष्णपक्षे चेत् तिथिर्कापि क्षया भवेत्।
तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगः प्रजायते।।"

इस समयावधि में भारतीय राजनीति को एक विशेष दिशा मिलेगी एवं स्वच्छ पारदर्शी छवि वाली पार्टी के हाथ ही सत्ता रहेगी। हरियाणा का राजनैतिक इतिहास इस बात का गवाह है कि–राज्य की राजनीति में होने वाले बदलाव हमेशा आश्चर्यजनक ही रहे हैं। भाजपा किसी स्थानीय पार्टी के साथ सत्तासुख भोगने में कामयाब हो सकती है, क्योंकि कांग्रेस एवम् भाजपानीत पार्टी मे मार्जन कम रहेगा। ग्रहगोचर के अनुसार इनैलो पार्टी पहले से गति तो प्राप्त करेगी, किन्तु सत्तासुख से अभी भी वञ्चित रहेगी।

ग्रहस्थिति के अनुसार शिक्षा, वनविभाग, पशुपालन, ऊर्जास्रोत–परिवर्धन में अद्भुत प्रगति एवम् कृषिक्षेत्र मे विशेष उन्नति के लिए एक आदर्शप्रान्त के रूप मे सिद्ध होगा।

ध्यान दें– 29 जनवरी, सन् 2016 ई. को राहु कन्या राशि में आएगा अर्थात् मिथुन राशि से चतुर्थ, (केन्द्र) में रहेगा, जोकि इस प्रान्त की नई योजनाओ को कार्यान्वित करेगा और यह प्रान्त एक आदर्श प्रान्त बन सकेगा।

हिमाचल प्रदेश– इस प्रान्त की नाम राशि कर्क एवम् प्रभाव राशि मीन है। मीनराशि का स्वामी गुरु संवत् के आरम्भ मे उच्चस्थ, वक्री है। इस समय शनि–मगल एवम् राहु–मंगल का षडष्टक योग भी बन रहा है। यह ग्रहस्थिति प्रान्त के प्रमुख नेता के लिए विपक्षीदल से परेशानी का कारण बन सकती है, लेकिन चीफ मिनिस्टर श्री वीरभद्रसिंह जी को विचलित नहीं कर सकेगी।

2 मई से 15 जून, सन् 2015 ई. तक प्रधाननेतृवर्ग के लिए समय कष्टप्रद है, सेहत का इसवर्ष विशेष ध्यान रखना होगा। ध्यान दें– 14 जुलाई से 3 नवम्बर, सन् 2015 ई. तक इस प्रान्त में कहीं काश्मीर या विरोधी देशो की तरफ से सीमा पर तनाव एवम् अतिक्रमण से वातावरण अशान्त हो सकता है। इसी समयावधि (जुलाई से नवबर, 2015 ई तक) उग्रवादजन्य किंवा भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से जनधन-हानि के भी योग बनते हैं।

गतवर्ष सं. 2071 वि. के पंचांग में इस प्रान्त की लोकसभा–निर्वाचनों के विषय में जो घोषणा की थी वह पृ. 61, कॉलम 1 पर 'हिमाचल प्रदेश' शीर्षक के अन्दर इस प्रकार थी, पढ़ें–

" गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जून, 2014 ई. तक हि. प्र. में सत्ताधारी कांग्रेस तथा प्रतिपक्ष भाजपा में राजनैतिक जंग तेज होगी। श्रीशान्ताकुमार एवं श्री प्रेमकुमार धूमल जी का परस्पर सहयोग यहां लोकसभा–निर्वाचनों में रंग ला सकता है। लेकिन सत्तारुढ़पक्ष श्रीवीरभद्र सिंह जी पर विपक्षी विधानसभा के बाहिर एवं अन्दर एकजुट होकर राजनैतिक प्रहार करेंगे।"

तदनुसार लोकसभा–निर्वाचनों में हिमाचल प्रदेश में एक भी सीट कांग्रेस पार्टी प्राप्त नहीं कर सकी–यह पाठक जानते हैं।

आगामी जून से नवम्बर, सन् 2015 ई. तक इस प्रान्त में वायु–वर्षा एवम् यानदुर्घटना आदि से हानि के योग हैं। जनवरी, 2016 ई. से संवत् 2072 वि. के अन्त तक राहु की स्थिति इस प्रान्त में शिक्षा, बागवानी एवम् पर्यटनस्थलों को आकर्षक बनाकर प्रान्त की प्रगति की ओर ले जाने वाली है। आयुर्वैदिक औषध एवम् उद्योगक्षेत्र में भी नए आयाम स्थापित होंगे।

उत्तरप्रदेश– वृष–राशिप्रधान इस प्रान्त पर वक्र शनि की दृष्टि चल रही है। आगे 3 मई से लगभग 16 जून, सन् 2015 ई. तक व अगस्त से नवम्बर, सन् 2015 ई. तक एवम् जनवरी, 2016 से संवत, 2072 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति इस प्रान्त के लिए अघटित घटनाओं वाली है। साम्प्रदायिक तनाव, झगडे, उग्रवाद से जनधनहानि एवम् अन्य अनैतिक घटनाओं के समाधान में उत्तरप्रदेश के शासक निरुत्तर रहेंगे। यहां की शासनसत्ता की चरमराती स्थिति को दृष्टि में रखते हुए इस प्रान्त की शासनसत्ता में केन्द्र व राष्ट्राध्यक्षों को हस्तक्षेप करना पडेगा। स्थिति विषम होने से हालात नियन्त्रण में करने के लिए हस्तक्षेप आवश्यक समझा जाएगा।

जम्मू–काश्मीर– इस प्रान्त की प्रभावराशि तुला एवम् नामराशि मकर है। गतवर्ष के पंचांग में पृ. 61, कॉलम 1 पर इस प्रान्त की वर्तमान स्थिति का जो चित्रण किया गया था वह इस प्रकार है–

" शनि एवं मंगल दोनों वक्री पोजीशन में संवत् के प्रारम्भ से पूर्व ही मार्च, 2014 ई. से 11 जुलाई, 2014 ई. तक तुलाराशि में ही रहेंगे। ध्यान दें– शनि, मंगल, राहु– ये तीनों ग्रह 19 मई तक वक्री चलेंगे। जोकि इस प्रान्त के शासकों के लिए एवं आतंकवादियों द्वारा किए जा रहे कुकृत्यों द्वारा इस प्रान्त को नारकीय स्थिति का आभास कराएंगे। आगे 14 जुलाई से सितम्बर, 2014 ई. तक शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध होने पर यहां उग्रवादियों द्वारा भयंकर खून–खराबा होने के योग बनते हैं एवं साम्प्रदायिक झगड़े भी होंगे। एक वर्गविशेष स्थानान्तरण करने पर विवश होगा। सरकार इस स्थिति का हल करने के लिए असमर्थ मालूम देगी। "

इस प्रान्त में उग्रवाद एवम् अराजकता का जो चित्रण किया गया है, वह शतप्रतिशत घटित हो रहा है।

संवत् 2072 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष शनि–मंगल की स्थिति भी अराजकता एवम् जनवरी, 2016 ई. के लगभग राहु की स्थिति भी पाक–समर्थित उग्रवाद एवम् सीमाप्रान्तों पर पाक–चीन द्वारा सीमातिक्रमण से भयावह स्थिति बनेगी। भारत को सैन्य संरक्षण/प्रतिरक्षण के लिए तैय्यार रहना होगा। इस प्रान्त को विशेष संवैधानिक दर्जा देने की मांग पर विशेष चर्चा होगी। अन्ततः संवैधानिक दर्जा राजनीतिज्ञों की दृष्टि में देशहित में नही समझा जाएगा। यहां के शासकों का अन्तर्मन भी स्थिति को चिन्तनीय बना सकता है।

पाठको ! प्रभुकृपा से भूत–भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोचरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें–

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र–परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुरः।।"

लेख पूर्ण होने की तिथि–
17 अगस्त, सन् 2014 ई.
(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी)

शुभचिन्तक–

इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,
श्रीमार्त्तण्ड भवन, मु. पो. कुराली,
(अजीतगढ़– मोहाली), (पंजाब)।

– – – – –

...एक वनापराव स्थानान्तरण करने पर विवश होगा। सरकार इस स्थिति का हल करने के लिए असमर्थ मालूम देगी। "

संवत् 2072 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षा-विचार

– संयमी शर्मा,

जल, वायु, अनाज किंवा अन्य कृषि–उत्पादन– ये प्राकृतिक चतुष्टयी ही संवत्सर के फल की दिशा व दशा को निर्धारित करती है। यदि वर्ष के ये चार स्तम्भ सुदृढ़ हों तो वर्ष सुदृढ़, जनजीवन स्वस्थ एवं समृद्ध रहेगा;– ऐसी मान्यता है। लेकिन " **जल एवं वायु** "– ये संवत् के प्रमुख स्तम्भों में से हैं। इन्हीं के आधार पर "**अन्न स्तम्भ**" की कल्पना की जा सकती है। जलवायु के बिना प्राणियों के जीवनाधायक अन्न की भी उपज संभव नहीं। अतः सं. 2072 वि. के जलवायु का ग्रहयोग के आधार पर यहां संक्षिप्त निर्देश नीचे दे रहे हैं। **आशा करते हैं कि– यह संक्षिप्त लेख किसानों/बागवानों के लिए एक दिशा–निर्देशक सिद्ध होगा।**

जब सूर्य **आर्द्रा नक्षत्र** में प्रवेश करता है, लगभग उसी समय से ही भारत के प्रान्तों में वर्षा का आगमन माना जाता है।

इसवर्ष (सं. 2072 वि.) में (प्रथम) अधिक आषाढ़–शुक्ल षष्ठी, चन्द्रवार (तदनुसार, 22 जून, सन् 2015 ई.) को सिंहस्थ चन्द्र के समय 16 घं. 45 मि. पर सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

ग्रहचाल के अनुसार सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में मध्याह्न बाद 4 बजकर 45 मि. पर प्रवेश करेगा। अतः **जन–जीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता सहज सुलम रहेगी। वर्षा पर्याप्त होगी– "समर्घत्वं सुवृष्टिकृत्। "** आर्द्राप्रवेशकुण्डली में गुरु–शुक्र एकत्र जलराशि (कर्क) में हैं। अतः इसवर्ष वर्षा काफी अच्छी होगी। लेकिन आयेश-अष्टमेश बुध केन्द्र में है, अतः अनेकत्र बाढ़/वर्षा से भारी हानि के योग भी हैं। **शनि–बुध का समसप्तक एवं चन्द्र पर शनि की दृष्टि वर्षा के विपरीत (इसवर्ष सन् 2015/16 ई. में)कहीं सुनामी, भूकम्प किंवा वायुवेग से समुद्रतटवर्ती प्रान्तों/देशों में भारी (भयंकर) तबाही एवं जनधनहानि का संकेत देते हैं;– इसे प्राकृतिक प्रकोप समझें, जिसके आगे शासनतन्त्र/शासक विवश रहेंगे।** महाराष्ट्र, उड़ीसा, बंगाल, आसाम, बिहार, छत्तीसगढ़ एवं अन्यत्र भी कहीं बाढ़ वर्षा से व कहीं सूखे से अकाल की स्थिति देखने को मिलेगी।

संवत् 2072 वि.में **चतुर्मेघ**–विचार से '**द्रोण**' नामक मेघ है। जोकि समयानुसार अच्छी वर्षा–वायु का संकेत देता है। **नवमेघों में इसवर्ष 'वरुण' नामक मेघ है। "वरुणस्त्वर्णवाकारो वर्षा–वृष्टि– प्रदायकः"** –इस प्रमाणानुसार अनेकत्र प्राकृतिक आपदा किंवा अर्णव(समुद्री)तूफान, बाढ़ आदि से फसलों को हानि पहुंचे एवं कहीं जनधनहानि भी सम्भव है।

इसवर्ष (सं. 2072 वि. में) **रोहिणी का वास 'समुद्र'** में होने से कुछ प्रान्तों में महावृष्टि का योग है। महावृष्टि से अभिप्राय कहीं सुनामी एवं कहीं बाढ़ का संकेत समझें। कहीं वायुवेग, आंधी, तूफान से हानि भी होगी। कहीं ज्वालामुखी–विस्फोट किंवा भूचाल आदि से हानि भी संभव है। हि. प्र. में बादल फटने की घटना से विनाश एवं काश्मीर में भूकम्प से हानि भी संभव है।

इसवर्ष **आवह आदि सप्तवायु**–विचार से **'अतिवह'** संज्ञक वायु है। अतः आंधी–तूफान से देश के दक्षिणी–पश्चिमी भूभाग एवं विश्व के समुद्र–तटवर्ती देशों में समुद्री तूफान (सुनामी), भूचाल किंवा भारी बाढ़–वर्षा से भयंकर जनधनहानि के योग इसवर्ष जनजीवन को अस्त–व्यस्त करेंगे। स्थानीय सरकार इस स्थिति को संभालने में असमर्थ अनुभव करेगी। **भूमध्यगत वायुतरंगों से होने वाले इस प्राकृतिक प्रकोप का परिणाम अनेक देशों के लिए विध्वंसकारी रहेगा।**

संवत् 2072 वि. में जलवायु–विचारार्थ 'जलस्तम्भ' एवं 'वायुस्तंभ' का विचार–

इसवर्ष **'जलस्तम्भ'** 12.23 प्रतिशत होने से महानगरों में पेयजल के

संकट को दूर करने के लिए सरकार को सकारात्मक पग उठाने पड़ेंगे। कुछ प्रान्त अकालग्रस्त भी रहेंगे। बहुजलप्रधान चावलादि की फसल को हानि पहुंचेगी।

इसवर्ष (संवत् 2072 वि. में) 'वायुस्तम्भ' का अभाव भी वर्षा के क्रम को बिगाड़ सकता है। बादल, वर्षा वायु से ही संचालित होते हैं। अतः सरकार के लिए कठिन परिस्थितियां बनेंगी।

इस वर्ष का राजा शनि एवं मन्त्री मंगल होने से राजनैतिक संकट विकट होंगे एवं अशुभ घटनाएं भी घटित होंगी। मेघेश चन्द्र होने से जड़ी–बूटियों एवं कन्दमूल की उपलब्धता अच्छी होगी।

संवत् 2072 वि. में गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार वर्षा एवं वायु

ध्यान दें–यहां (आगे) जिन तारीखों में हमने वर्षा का निर्देश किया है, उन तारीखों में वर्षा यत्र–तत्र अवश्य होगी। स्थानविशेष के लिए वर्षा का विचार करने हेतु सूक्ष्मविचार की आवश्यकता होती है, जोकि समय एवं स्थानाभाव के कारण कर पाना संभव नहीं है।

नोट करें– आजकल **इन्टरनैट** पर जो वर्षाविचार आता है, वह अधिकतर सप्ताह तक सीमित है, **हम जो वर्षा–वायुविचार लिखते हैं, वह केवल ग्रहचाल के अनुसार एकवर्ष पूर्व ही लिखा जाता है, जोकि लगभग पूर्णरूप से सही साबित हो रहा है**– यह पुरातन ऋषियों की ग्रहगणित के चिन्तन का परिणाम है।

संवत् 2072 वि. के प्रारम्भ में ही वृश्चिक राशि का शनि एवं कर्कस्थ गुरु वक्री हैं। कन्यास्थ राहु का मंगल–सूर्य के साथ समसप्तक्योग चल रहा है; जोकि लगभग जून तक महाराष्ट्र, केरल, पूर्वोत्तरीय राज्यों, पश्चिमी बंगाल के पर्वतीय भूभाग, कर्णाटक, कोंकण, गोवा, उड़ीसा, झारखण्ड, रायलसीमा, तामिलनाडु, छत्तीसगढ़, बिहार के इलाकों में बारिश का संकेतक है।

मार्च/अप्रैल(सन् 2015 ई.)– 22 से 24, 27, 29, 30, 31 मार्च एवं अप्रैल 6, 8, 10 से 15, 17, 18 एवं 23 से 29 अप्रैल तक राजस्थान, आसाम, उड़ीसा, मुंबई, उ.प्र. एवं हि.प. के कुछ भागों में बादलचाल एवं वायुवेग के साथ अनेकत्र खण्डवृष्टि के योग हैं।

मई– 2, 3, 4, 8 एवं 10 से 25 और 30 मई को महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमाण्डु, जम्मू–काश्मीर, उ.प्र. एवं हि. प्र. में वायुवेग के साथ बादल–वर्षा के योग हैं। उ.भा. में आंधी–तूफान के साथ अनेकत्र वर्षा हो।

जून– 2, 4, 6, 8, 13 से 15, 17, 18 जून को तथा सूर्य–मंगल के आर्द्रा में होने से 22 से 26 एवं 30 जून को भी पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., चण्डीगढ़, दिल्ली, उ.प्र., महाराष्ट्र एवं उड़ीसा में अनेकत्र बादलचाल एवं वायुवेग के साथ अच्छी वर्षा के योग हैं। लेकिन जून के प्रथम सप्ताह में राजस्थान, पंजाब, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, पश्चिमी उ.प्र. (विशेषतः इलाहाबाद, लखनऊ तथा राजस्थान में धूलभरी आंधियां चलेंगी एवं हरियाणा के कुछ भागों में लू का प्रकोप अनुभव होगा।

नोट– 17 जून को शुक्र के आश्लेषा एवं 26 जून को गुरु के आश्लेषा –4 में आने से कहीं भयंकर अनावृष्टि किंवा कहीं भयंकर बाढ़ से जनधनहानि व दुर्भिक्ष की स्थिति के योग हैं।

जुलाई–1, 2, 5, 6, 7, 8, 9, 13 से 16 एवं 20 से 25 तथा 28, 30, 31 को उत्तरी भारत, राजस्थान, उड़ीसा, उत्तराखण्ड, आसाम, हि.प्र., उ.प्रदेश एवं केन्द्रशासित राज्यों में अच्छी वर्षा के योग हैं। कुछ प्रान्तों में बाढ़ से हानि हो। शनि–राहु एवं बुध की स्थिति इसवर्ष कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष की स्थिति भी बना सकती है।

अगस्त–अग. 1, 2, 4 से 8 व 11 से 23, 26, 27 एवं 30, 31 को नेपाल, दार्जीलिंग, विन्ध्यप्रदेश, उ.प्र. एवं उत्तराखण्ड के कुछ भागों में बादलचाल व खण्डवृष्टि भी हो। उत्तरी भारत में शरद ऋतु के आगमन का आभास भी होने लगेगा।

सितम्बर– 5, 6, 8, 9, 15 से 18 एवं 24 से 27 सितंबर के मध्य भारत के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्रों, नेपाल, दार्जीलिंग, विन्ध्य प्रदेश, उ.प्र. एवं उत्तराखण्ड के कुछ भागों में बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। उत्तरी भारत में शरद ऋतु का आगमन अनुभव होगा। हि.प्र. एवं जम्मू–काश्मीर में कहीं हिमपात भी हो।

अक्तूबर– 1, 2, 3, 7 से 10, 15, 16, 17, 24, 25, 28 एवं

31 अक्तूबर को हि.प्र., जम्मू–काश्मीर, पंजाब, हरियाणा उ.प्र. में कहीं बादलचाल एवं खण्डवृष्टि हो। हिमाचल प्रदेश, काश्मीर एवं उत्तराखण्ड में कहीं हिमपात भी हो।

नवम्बर– 2 से 6, 12, 13, 14, 16, 19, 20, 24 27, 28 एवं 30 नवंबर को पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, जम्मू–काश्मीर में कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो एवं उत्तरीभारत शीतलहर के प्रभाव में रहे। हिमपात से हिमाचल आदि में यातायात बाधित हो।

नोट– राहु एवं मंगल का लगभग 19 नवं. तक एकराशि एवं एकनक्षत्र–सम्बन्ध होने से किसी प्रान्तविशेष में वर्षा का अभाव रहने से सरकार को सूखाग्रस्त क्षेत्र घोषित करना पड़े–

"राहुरंगारकश्चैकराशि– ऋक्षगतौ तथा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते।।"

दिसम्बर (सन् 2015 ई.)– दिसंबर 3, 5, 6, 10, 12, 14, 16, 17, 18, 24, 25, 26, 28 एवं 29 को उत्तरीभारत भयंकर शीत की चपेट में रहेगा। धुन्ध से अनेकत्र यातायात अवरुद्ध होगा। 16, 24 एवं 25 दिसं. के लगभग हिमाचल प्रदेश, काश्मीर एवं उत्तराखण्ड में भारी हिमपात हो एवं अन्यत्र खण्डवृष्टि भी हो।

जनवरी (सन् 2016 ई.)– जनवरी 4, 5, 6, 8, 9, 11, 14, 16, 20, 21, 24, 25, 26, एवं 29 से 31 के मध्य उ.भारत में शीतलहर चले एवं कुछ प्रान्तों में बादलचाल, बून्दाबान्दी व खण्डवृष्टि हो।

फरवरी– फर. 5, 6, 8, 12, 13, 17 से 21, 26 एवं 28 को पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल एवं बर्मा के कुछ भागों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। कुछ अन्य प्रान्तों में बादलचाल व बून्दाबान्दी हो। उत्तरीभारत में अनेकत्र हवा–आंधी का ज़ोर रहे एवं वसन्त ऋतु का आगमन हो।

मार्च– मार्च 1 से 8, 12 से 20 एवं 24, 25, 27, 30 और 31 मार्च को उत्तरीभारत में आसमान साफ रहे। हवा के जोर के साथ वातावरण में कुछ गर्मी के साथ ऋतु–परिवर्तन हो। बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी संभव है। वक्र शनि मंगल के साथ वृश्चिक राशि में एवं वक्र गुरु, राहु– दोनों सिंहस्थ हैं, अतः कुछ प्रान्तों में मौसम बहुत अनिश्चित रहेगा।

नोट– 5 से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई तक चन्द्रमा जलराशि (मीन) में एवं चन्द्र से नवम शनि–मंगल होने से कहीं अतिवृष्टि हो–

" जलराशिस्थिते चन्द्रे यामित्रे नवमे तथा।
अर्कसूनुर्वा भौमश्च अतिवृष्टिं प्रमुंचति।।"

श्री दिलबाग शर्मा का आकस्मिक निधन

(एक शोक–प्रस्ताव)

'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग एवम् ज्योतिष कार्यालय' के कार्यकर्त्ता पं. दिलबाग शर्मा जी के 3 मार्च, सन् 2014 ई. को असामयिक निधन से जो क्षति पहुंची है, वह वास्तव में ही अपूर्णनीय है। उन्होंने लगभग 22 वर्ष तक निरन्तर इस कार्यालय में बड़ी तत्परता से जन्मपत्र–निर्माण एवम् श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के प्रूफ–शोधनादि का कार्य किया है। पं. दिलबाग जी हृद्रुजा के कारण लगभग 35 वर्ष की आयु में ही दो छोटे बच्चों एवं अपनी धर्मपरायणा पत्नी को इस संसार की नश्वरता का बोध कराने के लिए दुःखद स्थिति में छोड़ गए हैं।

'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग एवम् ज्योतिष कार्यालय' के सभी कार्यकर्ता इस दुःखद, अरुन्तुद घटना से भारी खिन्न हैं। मूलरूप से सिणद (कैथल–हरियाणा) निवासी पं. दिलबाग जी बहुत सदाचारी, परिश्रमी, धार्मिक विचारों के एवम् कर्मठ व्यक्ति थे। भगवान् उन्हें अपने चरणों में वास दें एवम् उनके समस्त परिवार को उनका विछोह सहने की क्षमता प्रदान करें– यही प्रार्थना है। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

सम्पादक मण्डल एवम् कार्यकर्ता
'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग एवम् ज्योतिष कार्यालय', कुराली (मोहाली) पं.

व्यापार-विमर्श (संवत् 2072 वि.)

(संवत् 2072 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं एवं शेयर बाज़ारों में आने वाली तेज़ी एवम् मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक :– इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम ' तेज़ी–मंदी ' कहते हैं। 'तेज़ी–मन्दी'– इन दो शब्दों से व्यापारी अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है तो कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को समाज में कभी ऊपर उठाता है तो कभी नीचे गिराता है – "चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः"। कहने का तात्पर्य यह है कि, जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा–यह धारणा भ्रामक है। व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार–चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको कब शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । इस विज्ञान के युग में समस्त संसार का गठबन्धन हो चुका है। किसी भी राष्ट्र की क्रान्ति या राजनैतिक गतिविधि का प्रभाव तत्काल दूसरे राष्ट्र किंवा विश्वजनीन व्यापारक्षेत्र पर अमूमन देखा गया है। आजकल व्यापार के दो भाग महत्त्वपूर्ण हैं; पहला वायदा (सट्टा) एवम् दूसरा हाज़र। अमेरिकी• या विश्व के किसी भी बाज़ार या घटनाओं से विशेषतः सोना, चान्दी, पैट्रोलियम आदि सभी प्रकार के बाज़ारों में जब उठापटक होती है तो लाखों रुपयों का नफा–नुक्सान मिनटों में होता है। इसप्रकार प्रत्येक प्रमुख देश के राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक ग्रहगोचर को अच्छी तरह आंक कर ही हम इस व्यापार–विमर्श में कुछ व्यापारिक तेज़ी–मन्दी लिखने का प्रयास कर रहे हैं।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे। हाज़र एवम् वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां 'व्यापार–विमर्श' में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी–मन्दी का मशवरा देते हैं। व्यापारियो ! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् 2072 वि. में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो आदि के चार एवम् युति/प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि, इस साल जगत् में विशेष लम्बे तेज़ी एवम् मन्दे के रिएक्शन्ज़ आएंगे। इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवम् सोना, चान्दी, तांबा में विशेष लाभ के चांस हैं, टेलीफोन से सम्पर्क करें, फीस भेजें व अभीष्ट रिपोर्ट प्राप्त करें। विदेशी व्यापारी पत्र–द्वारा या टेलीफोन–द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा।

संवत् 2072 वि. में व्यापारिक बन्धु दालवाना, गुड़, ग्वार व सोना, चान्दी आदि धातु; चावल, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज; तेल, तिलहन, घी के व्यापार से धनाढ्य बन सकेंगे– यह हम इसवर्ष के योगायोगों के आधार पर घोषणा कर देना चाहते हैं। अतः *प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टेलीफोन के जरिये समय–समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें।* 'व्यापार–विमर्श' लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें तो अच्छा रहेगा । 'व्यापार–विमर्श 'लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाज़ारों के उतार–चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं।

संवत् 2071 वि. में वायदा व्यापारी एवम् हाजर का काम करने वाले व्यापारी रुई, दालवाना, सरसों, ग्वार, सोना, चान्दी एवम् तांबा में भयंकर तेज़ी से और आश्चर्यजनक तेज़ी एवं मन्दे के Reactions से भरपूर लाभ हमारे ताजा मशवरे से उठा चुके हैं। *व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2015 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी की रिपोर्ट या वायदा/हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़; चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों*

सकेंगे। हाज़र एवम् वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां 'व्यापार–विमर्श' में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके

रिपोर्ट या वायदा/हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़; चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों

किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस Rs.5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर Advance Report प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 50,000/– (पचास हज़ार रु.) है।

Note- व्यापारियों से निवेदन है कि, वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

इसवर्ष रुई के व्यापार में भारी तेजी बनेगी, संपर्क में रहें।

संवत् 2072 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी–मन्दी का आकलन

संवत् 2072 वि. में तेज़ी–मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहिले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? – इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है;–

संवत् 2072 वि. ' **कीलक** ' नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

" काले वर्षति पर्जन्यः राजादेश–प्रवर्तनम्।
कीलके प्रमितं रिष्टं दुर्भिक्षं मरु–भूमिषु।।"

किञ्च–भविष्यफल भास्करानुसार–

"कीलकाब्दे त्वीति–भीतिः प्रजाक्षोभ–नृपावहौ।
तथापि वर्धते लोकः समधान्यार्घ–वृष्टिभिः।।"

अर्थात्– वर्षा समय पर पर्याप्त हो, शासनतन्त्र देश की प्रगति के लिए नए कानून लागू करे। शुभकार्य कम सम्पन्न हों एवं मरुस्थलों में किंवा अन्यत्र भी दुर्भिक्ष की स्थिति बने।

किञ्च– कहीं टिड्डीदल किंवा प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। प्रजा में क्षोभ एवं यावनराष्ट्रों के राजनीतिज्ञों में कहीं वैमत्य किंवा आन्तरिक अशान्ति से व्यापार प्रभावित रहे। लेकिन हमारे देश भारत में धन–धान्यसमृद्धि रहे एवं वर्षा समयानुसार पर्याप्त हो।

इस संवत् (2072 वि.) का राजा 'शनि' एवं मन्त्री 'मंगल' है। ये दोनों परस्पर शत्रुत्व भाव रखते हैं। अतः इसवर्ष राजनैतिक गतिविधि देश के व्यापार को संवत् मध्य में विकटरूप से प्रभावित करेगी। राजनैतिक परिस्थिति को ध्यान में रखकर व्यापार करें। इसवर्ष कपास (रुई) के व्यापारी सम्पर्क में रहें तो करोड़ों का लाभ ले सकेंगे। तेल, तिलहन, सोना, चान्दी एवं दालवाना में इसवर्ष भयंकर तेजी–मन्दी के उछाले आएंगे। लाभप्रद वर्ष है, सम्पर्क में रहें।

वर्तमान संवत् में धान्येश बुध होने से अनाजों की उपज पर्याप्त हो, लेकिन गुड़, खाण्ड, शक्कर महंगे रहें। लेकिन कुछ भूभाग अकालग्रस्त रहे।

इसवर्ष मेघेश चन्द्र होने से देश धन–धान्यसमृद्धि के साथ प्रगतिपथ पर अग्रेसर रहेगा।

इसवर्ष मेघविचार के अनुसार द्रोण एवं वरुण नामक मेघ हैं।

फल– अनेक क्षेत्रों में वर्षा काफी हो, कहीं भारी बाढ़ आदि से खड़ी फसलों को भारी हानि भी पहुंचेगी। परिणामस्वरूप, रुई, कपास, तिलहन, दालवाना, चावल एवं गर्म मसालों के व्यापार में भारी तेजी बनेगी। रुई, सोना,चान्दी, चावल, तेल, तिलहन के व्यापारी साल के शुरु में ही सम्पर्क करें, उत्तम लाभ मिलेगा।

शरत्सस्यजातक–ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष गन्ना, मक्का, ज्वार, अरहर, मूंग, तिल एवं कपास की फसल औसत से कम होगी।

ग्रीष्मसस्यजातक–ग्रहस्थिति के अनुसार गेहूं, जौ, चना, दालें, बाजरा, कपास आदि की उपलब्धता कम होने से तेजी बनेगी।

व्यापारी ध्यान दें– संवत् 2072 वि. में *ग्रहों के वक्र/मार्ग, युति/प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज, गुड़, दालवाना, रुई, कपास, नरमा, मैंथा, तेल एवम् सरसों आदि तिलहन, लाल–कालीमिर्च, जीरा, लौंग, सोना–चान्दी में तेज़ी– मन्दी के भयंकर रिएक्शन्ज़ आएंगे*। **दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़ में से किसी भी जिन्स/धातु की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की**

फीस Rs. 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रति जिन्स/प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी–मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।

सज्जनो ! संवत् 2072 वि. के प्रारम्भ से पहले, संवत् 2071 वि. के अन्तिम चरण की ग्रहस्थिति अनुसार तेल, तिलहन, तांबा, घी, दालवाना एवं शेयरों में तेज़ी के व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

[नोट– संवत् के प्रारम्भ से पहले ही 14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर मंगल, केतु के साथ मेल करेगा। इसी दिन शनि भी वक्रगति से चलने लगता है। अर्थात् संवत् 2072 वि. के प्रारम्भ में ही शनि, गुरु एवं राहु– ये तीनों वक्री हैं। राहु का सूर्य–मंगल के साथ समसप्तकयोग भी चल रहा है। अतः संवत् के प्रारम्भ में राजनैतिक गतिविधि के कारण कुछ बाजार जोरदार मन्दे की तरफ बढ़ेंगे। इस समय हमारे विचार से सोना, अनाज, घी, खाद्य तेल, चीनी मन्दे रहें। **बाजार के रुख को देखकर काम करें।**]

23 मार्च, सन् 2015 ई. को मेषस्थ मंगल के समय सोना, चान्दी, रुई, कपास, बारदाना, गुड़ आदि में जोरदार तेजी बनेगी। 27 मार्च से 31 मार्च तक जोरदार तेजी–मन्दी के झटके आएंगे।

अप्रैल (सन् 2015 ई.)

मासारम्भ में ही शनि–राहु एवं गुरु वक्री हैं। कर्क राशि में स्थित गुरु की शनि एवं मीनस्थ सूर्य–मंगल पर विशेष दृष्टि भी है। अतः राजनैतिक गतिविधि को ध्यान में रखते हुए व्यापार बढ़ावें। हमारे विचारानुसार वायदा एवं हाजर बाजार अचानक नीचे जा सकते हैं। ध्यान दें– यदि बाजार नीचे जाते हैं तो तुरन्त माल का स्टॉक करें, जल्दी ही लाभ मिलेगा। कदाचित् बाजार तेज रहे तो वायदा व्यापारी आगे मन्दा खेलकर लाभ ले सकते हैं।

मासारम्भ में मेषस्थ शुक्र मेष राशि में स्थित मंगल के साथ मेल कर रहा है। इस स्थिति में लोगों की खरीदशक्ति प्रबल होती है कपड़ा, रुई, सूत का उठाव बहुत होगा। फॉरन Export के कोटे का भी ऐलान हो सकता है। 3 अप्रैल को शुक्र कृत्तिका में प्रवेश करेगा। शुक्र का प्रभाव विशेषतः गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, जूट, बारदाना, तिलहन, चान्दी पर अनुभव किया गया है।

4 अप्रैल शनिवार को हस्त नक्षत्र एवं कन्या राशिस्थ चन्द्र के समय चन्द्रग्रहण घटित होगा। इस समय जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, वस्त्र, चान्दी, सोना, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात मन्दे होकर तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

5 अप्रैल को बुध रेवती नक्षत्र में आएगा एवं इस समय सूर्य भी रेवती नक्षत्र में ही है एवं इन पर बृहस्पति की विशेष दृष्टि भी है। अतः केसर, मजीठ, कुसुम्भ, लालचन्दन, लालमिर्च एवं अन्य लाल रंग की चीजों में तेजी एवं गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी व चान्दी में मन्दे का अच्छा झटका आए।

6 अप्रैल को शुक्र वृष राशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। यह इस समय रुई, कपास, में अच्छी मन्दी करेगा, अनाज भी मन्दे रहें। सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। ध्यान दें– शनि की पूर्ण दृष्टि शुक्र पर होने से हमारे विचार से उपरोक्त सभी चीजों में मन्दी की जगह अचानक तेजी भी संभव है– सावधानी से काम करें।

8 अप्रैल को कर्क राशिस्थ गुरु मार्गी होगा। नोट करें– कि 8 दिसंबर, सन् 2014 ई. से गुरु वक्री गति से चल रहा था, साथ ही शनि और राहु भी वक्री ही थे। अतः रुई, कपास, चान्दी के व्यापारियों को हमारा मशवरा है कि– **8 दिसंबर, 2014 ई. से पहले 2/4 महीने में स्टॉक करें और 8 अप्रैल, 2015 ई. तक सौदा सैटल करके पूरा नफा ले लें, आगे हानि में रहेंगे।**

8 अप्रैल को कर्कस्थ गुरु पर मंगल की विशेष दृष्टि है, अतः चावल, अलसी, सरसों, गुड़, खाद्य तेल, शक्कर तेज होंगे। 9 अप्रैल को भी तेल, तिलहन के बाजार तेज ही रहेंगे।

10 अप्रैल को मेष राशि का मंगल अस्त हो रहा है। इसी दिन (अर्थात् 10 अप्रैल को ही) मंगल अस्त होकर भरणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा। अतः गेहूं, चना, चावल, मोठ, बाजरा आदि अनाजों एवम् सोने, चान्दी और रुई में तेजी बनेगी। 11 अप्रैल को मूल नक्षत्र एवं सप्तमीयोग तथा भरणी में मंगल के होन से सोना, तांवा, कांसी, सुपारी, नारियल, पिपलामूल, लालमिर्च– ये सब महंगे होंगे–

"वैशाखे कृष्ण–सप्तम्यां शनिवासरो यदा भवेत्।
भरण्यादि चतुर्ऋक्षे यदा भौमो भविष्यति।।
पिप्पलो नारिकेलं च ताम्रं कांस्यं च पूगजम्।
तथा च रक्तद्रव्याणि महर्घाणि भवन्ति हि।।"

12 अप्रैल को बुध एवं 14 अप्रैल को सूर्य– ये दोनों अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में प्रवेश करेंगे। इस प्रकार सूर्य–बुध–मंगल एकराशिस्थ हैं। अकेला बुध तो बाजारों में मन्दा लाता है। लेकिन सूर्य, मंगल के सम्पर्क में आकर यहां गेहूं, ज्वार, बाजरा, चना, जौ, अलसी, मूंग, मोठ, अरहर, मटर, अलसी, एरण्ड, तिल, तेल, सोना, चान्दी, लोहा, तांबा, लालमिर्च, लालचन्दन, सुपारी, बादाम, गुड़,

खाण्ड, शक्कर, सोना, चान्दी में तेजी करेगा।

[8 से 14 अप्रैल तक वायदा बाजारों में जोरदार तेजी और मन्दी के झटके आएंगे। लेकिन तेजी प्रधान रहेगी। वायदा बाजार तेज ही रहेंगे।]

15 अप्रैल को रोहिणी नक्षत्र का शुक्र आने वाले 12 दिनों में चान्दी, सोना आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल एवं ऊन में मन्दा करेगा। अफीम में तेजी चलेगी।

16 अप्रैल को वक्री शनि अनुराधा नक्षत्र के दूसरे चरण में सूर्य–मंगल के साथ षडष्टकयोग बना रहा है। इन दिनों लालमिर्च, केसर, चन्दन, कपूर तेज होंगे। कपास व ऊन में भी तेजी बनेगी।

18 अप्रैल को बुध भरणी में आता है एवं इस दिन शनैश्चरी अमावस भी है। मंगल–बुध–सूर्य का शनि के साथ षडष्टकयोग भी बना हुआ है। चावल, गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, घी, खाद्य तेलों एवं दालवाना में अच्छी तेजी का झटका आ सकता है।

20 अप्रैल को मेषस्थ चन्द्र के समय सोमवारी चन्द्रदर्शन होने से वस्त्र, रुई, सूत, सोना, चान्दी, चावल, सरसों, अलसी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना एवं अफीम में तेजी बनेगी। 22 अप्रैल तक यह तेजी उत्तम–मध्यम रूप से चलेगी।

21 अप्रैल को अक्षय तृतीया वाले दिन सोने एवं चान्दी के आभूषणों में मन्दा संभव है।

23 अप्रैल को बुध पश्चिम में उदय होगा। ऊनी वस्त्र, रुई एवं शेयरों में 15 दिन में अच्छा मन्दा बनेगा, सावधान रहें।

25 अप्रैल को बुध कृत्तिका नक्षत्र में आएगा। 8 दिन में चान्दी तथा अफीम में खास घटाबढ़ी होकर बाजार मन्दे रहें। अनाजों का रुख पहले कुछ तेजी की तरफ होकर मन्दा बने। रुई में तेजी बने।

26 अप्रैल को मृगशिरा नक्षत्र का शुक्र गेहूं, चना, ज्वार में मन्दा एवं गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी करे। 27 अप्रैल को भरणी नक्षत्र में सूर्य एवं 27 अप्रैल को ही बुध वृष राशि में आकर बाजारों में तेजी करेगा। हमारे विचार के अनुसार सोना, चान्दी, तांबा, मूंगा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, मटर, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी बनेगी।

29 अप्रैल को मंगल कृत्तिका नक्षत्र में आकर मासान्त तक मूंग, मोठ, रुई, चावल, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चान्दी, सूत, ऊन, वस्त्र तेज रखे। रुई में तेजी आकर मन्दी बने।

[नोट– अप्रैल 12, 14, 20, 25, 26, 27, 28 और 29 को शेयर एवं वायदा बाजारों में जोरदार उठापटक चलेगी, जिसमें तेजी प्रधान रहेगी।]

मई (सन् 2015 ई.)

यह मास बाजारों में उठापटक से शुरु होगा। 2 मई को शुक्र मिथुन राशि में आता है। ध्यान दें– अकेला शुक्र कभी–कभी जोरदार मन्दी करता है। शुक्र का विशेष प्रभाव गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन, चीनी पर अनुभव किया गया है। इनमें इस समय अच्छी मन्दी आ सकती है। अलसी, गुड़, घी, चान्दी, सोना, तांबा में जोरदार तेजी–मन्दी के झटके आएंगे। गेहूं, चना, जौ एवं चावलों में इस समय तेजी रहे।

3 मई को मंगल वृष राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा एवं शनि के साथ समसप्तकयोग भी बनाएगा। इस समय वायुवेग के साथ तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से आगे का व्यापार प्रभावित हो सकता है। शनि–मंगल की यह स्थिति बाजारों में अच्छी तेजी ला सकती है। तेलवाना, रुई, कपास, जूट, चान्दी, सोना एवं शेयर बाजारों में उत्तमरूप से घटाबढ़ी चलेगी। पहले तेजी, फिर मन्दी एवं अन्त में तेजी से लाभ मिलेगा। रुई, तिलहन विशेषरूप से प्रभावित होंगे।

हमारे विचार से 3 मई से एक मास के अन्दर सोना, चान्दी, तांबा, जस्ता आदि धातुएं, शेयर बाजार, लाल चन्दन, लालमिर्च, मसाले, रुई, कपास, सूत, कुसुम्भ, चन्दन, कपूर, केसर, तेल, तिलहन, सभी अनाजों और दालवाना में तेजी बनेगी। यह योग 3 मई से 15 जून तक प्रभावी रहेगा। लाभप्रद चांस है।

4 मई को बुध रोहिणी नक्षत्र में आकर मंगल के साथ नक्षत्रभेद कर लेगा। यह भी तेजी देगा। 8 दिन में रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी, लाभ लें। राई, अरहर, सण, ऊनी व रेशमी वस्त्र भी तेज होकर मन्दे हों या मन्दी के बाद इनमें तेजी बने। रुई में तेजी के बाद मन्दी बने।

[मई के प्रथम सप्ताह में शेयर बाजार, तेल, तिलहन, धातुएं, घी, गुड़, चीनी एवं दालवाना में तेजी प्रधान रहेगी। इनमें विशेषतः 3 मई से तेजी रहे।]

8 मई को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। गेहूं आदि अनाजों एवं दालवाना में अचानक मन्दे का वातावरण बनेगा।

10 मई को गुरु आश्लेषा नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर स्वतन्त्ररूप से घी, तेल एवं अन्य वायदा व्यापार में तेजी का वातावरण बनाएगा; सावधानी से

काम करें।

11 मई को सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में आएगा। इस समय मंगल भी कृत्तिका नक्षत्र में ही है एवं बुध, मंगल शनि के साथ समसप्तक–योग बना रहे हैं। लगभग 15 दिन में घी, रुई, सोना, चान्दी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, राई, सरसों तेज रहें।

15 मई को सूर्य वृषराशि में प्रविष्ट होगा। मंगल, बुध भी वृष राशि में ही हैं। इन पर मंगल के शत्रुग्रह शनि की दृष्टि भी है। अतः इस समय वायदा व्यापारी तेजी से लाभ लेंगे, तथा स्टॉकिस्ट भी माल निकाल कर लाभ बुक कर सकते हैं। हमारे मत से इस समय सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तेल एवं तिलहन में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

17 मई को मंगल रोहिणी नक्षत्र में आएगा। इस समय बुध भी रोहिणी नक्षत्र में है। अतः रुई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लालमिर्च, हींग एवं शेयरों में तेजी रहेगी।

19 मई को बुध वक्रगति से चलने लगेगा। वक्र शनि की मंगल, बुध एवं सूर्य पर दृष्टि भी है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहेंगे। ध्यान रहे– 19 मई को मंगलवारी चन्द्रदर्शन भी होगा। अतः अनाज, दालवाना एवं अन्य व्यापारिक वस्तुओं में तेजी रहे। तेल, तिलहन भी तेजी की तरफ रहें। रुई में पहले मन्दी, फिर तेजी बने। सोने–चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो।

[10 से 19 मई तक शेयर बाजार, तेल, तिलहन एवं अनाजों में तेजी से लाभ मिलेगा।]

20 मई को शुक्र पुनर्वसु में प्रविष्ट होगा। 12 दिन में चावल, चीनी, रुई, बिनौला तेज हों। सोना, चान्दी, रुई, कपास, सूत मन्दे हों।

21 मई को वृष राशि का वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा। इसके साथ मंगल भी अस्त है। रुई में 15/20 टका की शीघ्र ही झटके से मन्दी आएगी। पाट, हैसियन एवं शेयरों में भी मन्दी बनेगी। चान्दी में कुछ तेजी संभव है।

23 मई को राहु हस्त 1 एवं केतु उ.भा. 3 में प्रवेश करेगा। यह योग रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, चान्दी, चन्दन, केसर, कसुम्भ में तेजी एवं अनाजों में मन्दे का वातावरण बनाए।

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय मंगल एवं बुध भी मासान्त तक रोहिणी नक्षत्र में ही चलेंगे। अतः इस समय चीनी, गुड़, खाण्ड, घी, तिल, तेल, अलसी, एरण्ड, सरसों, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा,

ऊनी व सूती वस्त्र, सण, सुपारी, मिर्च में अच्छी तेजी बने। 28, 29 एवं 30 मई तक बाजार तेज ही रहेंगे।

30 मई को शुक्र कर्क राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। यह योग 13 अगस्त तक चलेगा। इस समयावधि में कुछ राजनैतिक परेशानियों, प्राकृतिक घटनाओं किंवा यावनक्षेत्रों में अशान्ति के कारण व्यापार में भारी उठापटक चलेगी। सावधानी से काम करें। कर्क राशिस्थ शुक्र रुई में पहले अच्छी मन्दी करे, बाद में तेजी। गेहूं, चना, मटर, अरहर एवं चान्दी में जोरदार मन्दी का झटका आए। शेयर बाजार अस्थिर रहे किंवा नीचे जा सकता है।

नोट– जब शुक्र बुध व गुरु के साथ एकराशिसम्बन्ध करता है, तो बाजारों में फसल व पैदावार अच्छी होने की अफवाहों से मन्दा आता है। शुक्र विशेषतः गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चान्दी आदि में अच्छी तेजी–मन्दी के झटके देता है। यहां शुक्र गुरु के साथ होने से विशेष मन्दी आ सकती है। हां, आश्लेषा नक्षत्र का गुरु शुक्र के साथ मिलकर रुई में जोरदार तेजी भी बना सकता है। रुई के व्यापारी सावधान रहें।

जून (सन् 2015 ई.)

नोट– रुई, चान्दी, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर आदि का स्टॉक पहले ही करने से आगे लाभ मिलेगा।

जून के प्रारम्भ में ही शुक्र के पुष्य में आने पर रुई, सण, रेशम, ऊन व धान्य में तेजी रहे। लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, सिंगरफ, हींग, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर मन्दे होंगे।

4 जून को वक्री शनि अनुराधा के प्रथम चरण में आएगा। शनि का सबसे अधिक प्रभाव तिलहन बाजारों एवं लोहा–मशीनरी से सम्बन्धित शेयरों पर अनुभव किया गया है। इस समय सभी मिर्च–मसाले, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, कपास, सरसों, खाद्य तेल, केसर, चन्दन एवं कपूर आदि में तेजी आएगी। क्योंकि शनि पर मंगल की विशेष दृष्टि भी है।

6 जून को मंगल मृगशिरा नक्षत्र एवं गुरु आश्लेषा नक्षत्र के तृतीय चरण में प्रवेश करेगा। तिल, चान्दी, रुई, घी, तेल एवं प्रत्येक वायदा व्यापारिक वस्तुओ में तेजी का ही वातावरण रहे। नोट करें– आगे 8 जून से मंगल एवं सूर्य दोनों एक–राशि एवं एक ही नक्षत्र में चलेंगे, अतः दालवाना, रुई, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन में अच्छी तेजी की आशा है, सावधानी से काम करके लाभ लें। 8 जून को सूर्य के मृगशिरा नक्षत्र में आने पर रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चान्दी, उड़द मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी, नारियल

एवं सभी फल भी तेज होंगे।

9 जून को बुध पूर्व में उदित होगा। बुध का शनि के साथ **समसप्तकयोग भी है।** अतः रुई में पहले मन्दी होकर 25 दिन के बाद 15 टका के करीब झटके की तेजी बनेगी। गेहूं, चना, तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लालमिर्च में तेजी ही रहे।

11 जून को वृषराशिस्थ बुध के मार्गी होने पर बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है, लेकिन जल्दी ही फिर तेजी बनेगी। मन्दी आते ही माल पकड़ें या आगे वायदा व्यापारी तेजी खेलकर लाभ लें। बुध के मार्गी होने पर रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी बने। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। गेहूं, जौ, चना 8 दिन में तेज हों। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दी की उम्मीद है।

[4 जून से 10 जून तक बाजार तेजी की तरफ रहेंगे। 8, 9, 10 जून को शेयर बाजार तेज रहें। 11 से 14 जून तक शेयर एवं वायदा बाजार उठापटक के साथ मन्दे की तरफ रहें।]

15/16 जून को सूर्य एवं मंगल मिथुन राशि में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाते हैं। यह योग जोरदार तेजी का है। इस समय वायदा एवं हाजर बाजारों में जोरदार तेजी संभव है। रुई, अफीम, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, मूंग, उड़द, गेहूं, चना, चावल आदि अनाज, सोना, चान्दी, तांबा, शेयर, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, जीरा, लौंग, इलायची, खाद्य तेलों में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। **इनके साथ ही गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, कुसुम्भ, मजीठ एवं लाल रंग की चीजों में अच्छी तेजी आएगी।**

[15, 16 जून के लगभग वायदा एवं हाजर के व्यापार किंवा शेयर बाजारों में तेजी से लाभ मिलेगा।]

17 जून को शुक्र आश्लेषा नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एकराशि एवं एकनक्षत्र में लगभग 5 जुलाई तक चलेगा। इस समय बहुत सावधानी से काम करें। रुई, कपास, तिलहन, चान्दी, सोना, शेयर आदि सभी प्रमुख बाजारों में **जोरदार तेजी या मन्दी बन सकती है। हमारा विचार इस समय मन्दी का है, लेकिन बाजार के रुख को देखकर काम करें।**

18 जून गुरुवार को पुनर्वसु नक्षत्र एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय **चन्द्रदर्शन होगा।** रुई, सूत, ऊनी वस्त्र, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, जौ, चना **आदि में तेजी बनेगी।**

21 जून को वर्षा ऋतु प्रारम्भ होगी। बाजारों में तेजी–मन्दी के रुख को देखकर काम करें।

22 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में एवं 25 जून को मंगल भी आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। रुई, सूत, खल, बिनौला, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, नमक में तेजी रहे। चान्दी–सोने में घटाबढ़ी चले।

26 जून को गुरु आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आएगा। घी, तेल एवं प्रत्येक व्यापारिक वस्तु में तेजी का वातावरण रहेगा।

30 जून को मृगशिरा नक्षत्र में बुध के आने पर जोरदार मन्दी या तेजी बनेगी। 8 दिन में रुई में तेजी एवं चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने। गेहूं, तिल, सरसों, उड़द में भी मन्दी रहे।

नोट– यहां बुध पर शनि की दृष्टि भी है। अतः कदाचित् मन्दी की जगह तेजी भी मासान्त में संभव है; बाजार का रुख देखकर काम करें।

जुलाई (सन् 2015 ई.)

नोट– गुरु, शुक्र– ये दोनों महत्त्वपूर्ण ग्रह गत 26 जून से आश्लेषा नक्षत्र में चल रहे हैं और लगभग 5 जुलाई तक एकराशि एवं एकनक्षत्र में रहेंगे। अतः वर्षा का अभाव रहे– " सार्पे न वर्षणं भवेत्। "

किञ्च– " आदित्य–पुष्याश्लेषासु गुरुयोगे प्रासंगिनि।
अनावृष्टिभयं घोरं दुर्भिक्षं सर्वमंडले।।"

इस प्रमाणानुसार कही सामयिक वर्षा के अभाव से दुर्भिक्ष की स्थिति बन सकती है, जिसका कुप्रभाव व्यापार पर प्रत्यक्षरूप से दिखाई देगा।

5 जुलाई को बुध मिथुन राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। मिथुन राशि के अन्तर्गत सभी प्रकार की रुई, कपास, तेलवाना, पाट, बारदाना, हल्दी, बिनौला आदि के बाजार प्रमुखरूप से आते हैं। जब बुध क्रूरग्रहों के साथ मेल करता है, यह अशुभफल देता है। यहां बुध का सूर्य एवं मंगल के साथ मेल हो रहा है। अतः रुई, कपास, सरसों, तारामीरा, विनौला, एरण्ड, अलसी, तिल, खाद्य तेल, हल्दी, पाट, बारदाना में अच्छी तेजी बनेगी। सोने–चान्दी में भी सामान्यतः तेजी ही रहे।

ध्यान दें– 5 जुलाई को ही शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रवेश करेगा। इस पर शनि की विशेष दृष्टि भी है। ये भी जोरदार तेजी की तरफ इशारा करता है। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, सोना, तांबा, लालचन्दन, मजीठ, लालमिर्च,

जीरा, सौंफ, धनिया, घी, चीनी, गुड़, खाण्ड एवं हल्दी में तेजी बनेगी। चान्दी एवं रुई में पहले 4 या 8 दिन कुछ मन्दी के बाद अच्छी तेजी बनेगी।

6 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु में आता है। रुई, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, चीनी, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, बारदाना, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नरियल, माजू, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थ एवं करयाणा तेज रहें।

[1 से 8 जुलाई तक वायदा एवं हाजर बाजार तेज रहें। शेयर बाजारों में अस्थिरता रहे किंवा बाजार कमजोर व उठापटक में रहें।]

9 जुलाई को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आकर गेहूं, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ एवं तिलहन में मन्दा करे। **बाजारों में यह अस्थिरता 13/14 जुलाई तक चल सकती है--सावधानी से काम करें।**

13 जुलाई को बुध पूर्व में अस्त होगा। लगभग 1 मास में अनाज, घी आदि मन्दे हों। रुई में घटाबढ़ी, पहले तेजी, बीच में मन्दी और अन्त में फिर तेजी से लाभ मिले। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

14 जुलाई को गुरु मघा नक्षत्र के प्रथम चरण एवं सिंह राशि में प्रवेश करेगा। **नोट करें-- शुक्र ग्रह भी सिंह राशि में ही है। शुक्र, गुरु-- ये दोनों शत्रुत्वभाव वाले ग्रह एकराशि एवं एक नक्षत्र में ही आ गए हैं। ये 13 अगस्त तक एकराशि, एक नक्षत्र में ही चलेंगे। इस समय भयंकर मन्दी या तेजी की चाल बाजारों में बनेगी। बाजार का रुख देखकर व्यापार करें। हमारा विचार इस समय मन्दी में रहने का है।** गुड़, खाण्ड, चीनी, गेहूं, जौ, चना आदि सभी अनाजों, दालों, सोने, चान्दी, तांबे, लोहे, घी, रुई, लालरंग की वस्तुओं और तिलहन में **अच्छी मन्दी बन सकती है। इस समय यदि व्यापारी स्टॉक करें, तो आगे 4 मास में भारी लाभ मिलने की आशा करें--**

"देवगुरुर्यदा सिंहे बहुसस्या च मेदिनी।
मेघाश्च प्रबलास्तत्र सुभिक्षं धरणीतले।।"

यहां एक बात और ध्यान देने लायक है कि-- वक्री शुक्र भी सिंह राशि में है। कदाचित् यह बाजारों में तेजी भी कर सकता है। अतः बाजार का रुख जांचना जरूरी है।

15 जुलाई को मंगल पुनर्वसु में प्रवेश करेगा। इस समय सूर्य--बुध एवं अमावस को चन्द्र भी पुनर्वसु नक्षत्र में ही है। 16 जुलाई को सूर्य कर्कराशि में आ जाता है। सूत, चान्दी, नमक, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, सरसों, नारियल, चान्दी, सोना आदि तेज रहें। गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल कुछ मन्दे रहें। चान्दी, रुई, कपास, सूत, सण में पुनर्वसु नक्षत्र का बुध 16 जुलाई से 8 दिन के अन्दर जोरदार मन्दा बनाएगा।

18 से 20 जुलाई तक मन्दे के व्यापारी लाभ लेंगे। 20 जुलाई को पुष्य नक्षत्र का सूर्य एवं कर्कराशि का बुध बाजारों में अच्छी मन्दी या तेजी करे। बाजार का रुख देखकर सावधानी से काम करें। इस समय तिल, तेल, सरसों, मघ, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, लौंग, हींग, हल्दी, लाख, सण, ऊनी वस्त्र, सिक्का और सोना में कुछ तेजी बने। रुई, चान्दी, घी, तेल, तिलहन में तेजी के बाद कुछ मन्दी बने।

25 जुलाई को राहु के उ.फा. नक्षत्र में आने पर रुई में 25/30 टका की तेजी बने। लोहा, सीसा, काली वस्तुएं, चान्दी, घी, गुड़, खाण्ड, चावल, केसर एवं सभी अनाज तेज हों।

25 जुलाई को ही शुक्र के वक्री होने पर घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, दालवाना में और तेजी बने।

[20 से 25 जुलाई तक शेयर बाजार भी तेज रहें।]

28 जुलाई को बुध आश्लेषा नक्षत्र में आकर 15 दिन में तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग एवं मूंगफली में तेजी करेगा, क्योंकि बुध एवम् सूर्य-- ये एक राशि में ही हैं।

30 जुलाई को मंगल कर्क राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। मंगल एवम् बुध दोनों अस्त भी हैं। इस प्रकार क्रूर ग्रहयोग भी पूरी तरह तेजीकारक नहीं रहेगा। कुछ चीजों में जोरदार तेजी एवं कुछ चीजों में मन्दी करेगा। साथ ही 30 जुलाई को ही गुरु मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण में आने पर कुछ चीजों में मन्दी और कुछ में तेजी करता है। अतः इस समय गुड़, खाण्ड, चीनी, सोना, चान्दी, लोहा, तांबा मन्दे होकर तेजी की तरफ बढ़ेंगे। रुई में झटके के साथ 30 टका की मन्दी रहे। सभी अनाज, दालें, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें--

"भूमिपुत्रो यदा कर्के सर्वधान्यमहर्घता।।"

इस समय अलसी में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी। 31 जुलाई को बाजार पूर्ववत् चलें।

अगस्त (सन् 2015 ई.)

इस मास में राजनैतिक/ व्यावसायिक नीति को व्यापारी ध्यान में रखकर व्यापार बढ़ावें-- यह हिदायत है।

2 अगस्त को शनि मार्गी होगा। ध्यान रहे– संवत् 2072 के प्रारम्भ से पूर्व 14 मार्च से ही शनि वक्रगति से वृश्चिकराशि में चल रहा था। इस समय शनि–मंगल का नवम–पंचम–सम्बन्ध है। इस समय तेलवाना, रुई, कपास, चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, पाट, बारदाना एवम् खाद्य तेलों में अचानक लाईन बदल सकती है। सावधानी से काम करें। हमारे विचार से इस समय रुई, तेल, तिलहन एवं दालवाना में अचानक मन्दा बन सकता है। फिर 2 मास बाद जोरदार तेजी से लाभ लें।

3 अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आता है। मंगल, सुर्य– ये दोनों इस समय कर्क में ही हैं। सोना, चान्दी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ एवं नील में सामान्यतः तेजी रहे।

4 अगस्त को अस्त बुध मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में दाखिल होकर गुरु ग्रह के साथ मेल करेगा। इस समय गुरु भी मघा नक्षत्र में है। इन पर शनि की विशेष दृष्टि है। इसी दिन मंगल भी पुष्य नक्षत्र में आ रहा है। अतः जौ, चना, गेहूं, सूत, रुई, वस्त्र, सोना, चान्दी, ऊन में तेजी रहे। ध्यान दें– 4/5 अगस्त को सोने में विशेष तेजी का झटका आएगा–लाभ लें। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि में साधरणतया मन्दा सम्भव है।

नोट– 4 अगस्त को गुरु के साथ बुध का मेल बाजारों में अफवाहों से मन्दा भी कर सकता है– सावधान रहें। लेकिन 5 अगस्त के लगभग सोना तेज रहेगा।

5 अगस्त को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। शुक्र वक्री भी है एवं सूर्य, मंगल के साथ भी है। अतः बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी रहेगी। सोना, चान्दी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन में जोरदार मन्दा या तेजी बनेगी, बाजार के रुख को देख लें। यद्यपि यह शुक्रास्त मन्दा करता है, लेकिन क्रूर ग्रहों के साथ होने से हमें यहां तेजी ही मालूम देती है। रुई एवं अनाज तेज ही रहेंगे।

6 अगस्त को बुध पश्चिम में उदित होगा। यहां वर्षा के प्रतिकूल (कहीं अतिवर्षा या कहीं वर्षा के न) होने से दुर्भिक्ष की स्थिति का सामना भी भाद्रपद में करना पड़ सकता है–

" शुक्रस्यास्ते यदि सौम्यः प्रोदयति श्रावणे यदा।
तदा भाद्रपदे मासे मेघो नैव प्रवर्षति।।"

12 अगस्त को मंगल उदित एवम् गुरु अस्त होगा और इसी दिनं बुध पू.फा. में आएगा। इन दिनो मौसम अनुकूल रहेगा। गुड़, खाण्ड, गेहूं, चावल, उड़द, तिल, तेल, अलसी, सरसों आदि तिलहन में तेजी आकर मन्दा बने। रुई, शेयर बाजार तेज रहें। सोना, चान्दी एवं अन्य व्यापारिक वस्तुएं मन्दी हों।

[5 से 12 अगस्त तक शेयर बाजारों में तेजी एवं अन्य व्यापारिक वस्तुओं में प्रायः मन्दा रहे।]

13 अगस्त को वक्री शुक्र आश्लेषा–4 कर्क में आएगा। नोट करें– यहां शुक्र सिंह राशि से कर्क राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ मेल करेगा। अतः बाजारों में मन्दी की उम्मीद होने पर भी यहां हमें तेजी ही मालूम देती है– सावधानी से काम करें। रुई, चावल, अरहर में पहले मन्दी का झटका आकर तेजी बनेगी। अलसी, एरण्ड आदि तिलहन, खाद्य तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी में तेजी ही रहे। चान्दी, जौ, चना, मटर में कुछ मन्दा रह सकता है।

14 अगस्त को गुरु मघा–3 में आएगा। गुड़, खाण्ड, सभी अनाज, दालें, सोना, चान्दी, लोहा, तांबा मन्दे रहें। अलसी में जोरदार घटाबढ़ी चले।

16 अगस्त को रविवारी चन्द्रदर्शन होगा। सोना, चान्दी, रुई, सरसों, तेल, गुड़, खाण्ड, कपास, घी एवं अनाजों में तेजी रहे।

17 अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। सूर्य ग्रह का असर रुई, एरण्ड, अलसी, तेल, मूंगफली, हल्दी, कालीमिर्च, जीरा, सभी अनाजों एवं शेयर बाजारों पर अनुभव किया गया है। सिंहसंक्रान्ति-मुहूर्ती 45 है। यहां हमारे अनुसार तेल, तिलहन, अनाज, सोना, शेयर, कालीमिर्च, अलसी में इस समय मन्दा रहे। वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें।

20 अगस्त को बुध उ.फा. में आएगा एवं इसी दिन (20 अगस्त को ही) शुक्र पूर्व में उदित भी होगा। उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर, रुई, सूत, चान्दी, सोना, चावल में तेजी रहेगी।

22 अगस्त को बुध कन्या राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। कन्या राशि रुई, कपास, तेलवाना, आदि की राशि है। जब राहु के साथ इस राशि में बुध का मेल होता है तो रुई, चान्दी, गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, तेलवाना में अच्छी तेजी से लाभ मिलता है। लाभ ले लें।

25 अगस्त को मंगल आश्लेषा में आएगा। इस समय मंगल, शुक्र– दोनों आश्लेषा नक्षत्र में हैं। मंगल ग्रह खासतौर पर मौसम–जल–वायु को प्रभावित करता है। मंगल, शुक्र का सम्बन्ध रुई, चान्दी, अनाज, गुड़, चीनी, घी, तेलों में तेजीकारक ही रहेगा, क्योंकि वर्षा से कहीं बाढ़ बने व अनेकत्र वर्षा की कमी रहेगी।

[20 से 29 अगस्त तक बाजारों एवं शेयरों में भारी उठापटक रहेगी, सावधानी से काम करें।]

30 अगस्त को गुरु मघा– 4 में आएगा। गुड़, खाण्ड, सभी अनाज, सोना, चान्दी, लोहा मन्दे रहें। अलसी में जोरदार घटाबढ़ी चले।

31 अगस्त को बुध हस्त में एवं सूर्य पू.फा. नक्षत्र में दाखिल होंगे। 14 दिन में जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, गेहूं, जौ, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़ा, रुई , सूत में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। चान्दी में घटाबढ़ी चले।

सितम्बर (सन् 2015 ई.)

मासारम्भ में त्योहारों को मद्देनजर रखते हुए व्यापारी लोग तेल, गुड़, चीनी, घी, तिलहन, खाद्य तेल आदि की खरीद की तरफ बढ़ेंगे। इस समय से पहले (जुलाई/अगस्त में) ही जो मन्दे में स्टॉक करेंगे, लाभ में रहेंगे। सामयिक परिस्थिति के अनुसार यह लिखा गया है, ग्रहस्थिति के आधार पर आगे विवेचन करेंगे।

6 सितंबर को शुक्र मार्गी होगा। इस समय शुक्र नीचस्थ मंगल के साथ है। बाजारों में उठापटक सम्भव है। लेकिन हमारे विचार से चावल, शक्कर, घी, सोना, चान्दी, मोती तेज रहें। रुई, घी, गुड़ के संग्रह से आगे (दिसंबर के लगभग) उत्तम लाभ मिलेगा।

7 सितम्बर को सिंहस्थ गुरु उदित होगा। गुरु सूर्य के साथ व शनि से दृष्ट भी है। " सिंहे तु जनमृतिर्जलवृष्टिरल्पा"– प्रमाणानुसार कहीं प्राकृ-तिक आपदा से हानि के योग हैं। अतः आगे भाद्रपद में दलहन, मोटे अनाज, तेल, तिलहन तेज रहें। सोने में जोरदार मन्दी या तेजी का झटका आएगा– सावधान रहें।

13 सितम्बर को सूर्य के उ.फा. में आने पर 14 दिन में ही रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना,चान्दी, तांबा, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बांस, नील में तेजी हो, क्योंकि सूर्य पर शनि की नज़र भी है।

[1 से 13 सितम्बर तक वायदा एवं हाजर बाजारों में तेजी एवं शेयरों में मन्दी सम्भव है।]

14 सितम्बर को गुरु पू.फा.–1 में आकर गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा गेहूं आदि अनाजों में मन्दी करे। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

15 सितम्बर को मंगल मघा/सिंह में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। यहां इस समय इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी है। अतः बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी। बाजार कीचाल को देखकर व्यापार बढ़ावें। तेलवाना, रुई, कपास, जूट, सोना, चान्दी, तांबा, लोहा, शेयर बाजार मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, अलसी, मूंगफली, राई व गेहूं आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड, लालमिर्च एवं मसाले तेज रहें। इसी दिन (15 सितंबर को ही) चन्द्रदर्शन मंगलवारी होने से तेजी ही करेगा। जब मंगल गुरु का मेल होता है, तो वर्षा की खींच (कमी) रहती है और बाजार तेज होते हैं।

17 सितम्बर को बुध कन्या राशि में वक्री हो रहा है। इसी दिन सूर्य कन्या राशि में बुध, राहु के साथ मेल करेगा। जब बुध सूर्य–राहु के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाता है, तो विशेष योग बनता है। क्योंकि बाजारों में घटाबढ़ी लाने की पावर बुध में विशेषरूप से अनुभव की गई है। जब बुध क्रूर ग्रह के सम्पर्क में आता है, तो तेजी कारक हो जाता है। अतः रुई, कपास, तेल, खाद्य तेल, तिलहन, दालें, मसाले, जीरा, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, मजीठ, सोने, चान्दी में तेजी रहे। आगे बाजार के रुख को देखकर काम करें।

[15 से 23 सितंबर तक वायदा एवं हाजर तथा शेयर बाजारों में तेजी रहे।]

24 सितम्बर को वक्री बुध पश्चिम में अस्त हो जाएगा। चान्दी में सामान्यतः तेजी रहे। लेकिन रुई में 15/20 टका की शीघ्र ही मन्दी बनेगी। पाट, हैसियन एवं शेयर बाजार मन्दे रहेंगे।

26 सितम्बर को राहु उ.फा. एवं केतु उ.भा. में प्रवेश करेंगे। राहु, सूर्य एवं बुध एक साथ है। अतः रुई में 15/30 टका की तेजी बने। काली चीजें, लोहा, शीशा, चान्दी, घी, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा, चन्दन, केसर, कुसुम्भ तेज रहें। दालों एवं तेलों में भी तेजी सम्भव है।

27 सितम्बर को शनि अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। मंगल की शनि पर विशेष दृष्टि है। इसी दिन सूर्य हस्त नक्षत्र में दाखिल होगा। सोना, चान्दी, रुई, कपास, तेलवाना, शेयर बाजार में तेजी बने।

इस समय तिलहन एवं खाद्य तेलों में जोरदार तेजी सम्भव है। गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, नमक, हरड़, हींग, धनिया एवं हल्दी में भी तेजी रहे।

30 सितम्बर को गुरु पू.फा. के द्वितीय चरण में आकर गुड, खाण्ड, शक्कर तथा अनाजों में मन्दा कर सकता है।

30 सितम्बर को ही शुक्र सिंह राशि एवं मघा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस प्रकार शुक्र, गुरु एवं मंगल– ये तीनों ग्रह एक साथ बैठे हैं एवम् इन पर

शनि की विशेष दृष्टि भी है।

सोना, चान्दी, तांबा, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, गेहूं, दालें, लालचन्दन, मजीठ, लालमिर्च तेज होंगे। चान्दी में 3/4 टका की तेजी, रुई में 8/10 दिन मन्दी के बाद तेजी हो।

अक्तूबर (सन् 2015 ई.)

अक्तूबर के प्रारम्भ में ही घी, तेल, गुड़, चीनी, अनाज तेज रहें।

3 अक्तूबर को वक्री बुध उ.फा. में आएगा। इस समय बुध सूर्य, राहु के साथ कन्या राशि में उच्च है। उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर, घी, खाद्यतेल, गुड़, चीनी तेज रहें। रुई और चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दा रहे।

6 अक्तूबर को सिंहराशिस्थ मंगल पू.फा. में आकर बृहस्पति के साथ एकराशि/एकनक्षत्र-सम्बन्ध बनाएगा। इस समय शुक्र भी सिंह राशि में ही है। इन पर शनि की दृष्टि भी है। यह ग्रहस्थिति कहीं अतिवृष्टि किंवा कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बना सकती है। अतः मौसम का प्रभाव व्यापार पर पड़ेगा। आगामी 20 दिनों में तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, सूरजमुखी, सोयाबीन, बिनौला, घी, गुड़, खाण्ड, चीनी, नमक एवं चान्दी में तेजी बनेगी।

8 अक्तूबर को सूर्य, राहु के साथ स्थित बुध पूर्व में उदित होगा। आश्विन में बुध का उदय बादल--वर्षा कराएगा। अनाज मन्दे होकर आगामी 15/20 दिनों में गेहूं, चना, चावल, उड़द, दालें तेज होंगी। इस समय तिलहन, घी, पाट, हैसियन, लालमिर्च एव जीरा में तेजी बने। रुई में मन्दी आकर बाद में 15 टका की तेजी बने। आगामी 15 दिनों में सोना, चान्दी, तांबा, सारी धातुएं तेज होंगी।

[1 से 8 अक्तूबर तक हाजर, वायदा बाजार एवम् शेयरों में तेजी से लाभ मिले।]

9 अक्तूबर को बुध मार्गी हो जाएगा। यहां बाजारों की लाईन अचानक बदल सकती है, वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी; चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी; 8 दिन में गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज होंगे। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, अगर एवं चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थ मन्दे होंगे।

11 अक्तूबर को सूर्य के चित्रा नक्षत्र में आने पर रुई, सोना, चान्दी, मोती आदि रत्न, गुड, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर एवं लाल रंग की चीजें तेज रहें। 12 अक्तूबर को सोमवती अमावस बाजारों में कुछ मन्दा बना सकती है।

13 अक्तूबर मंगलवार को नवरात्र प्रारम्भ होंगे। 14 अक्तूबर बुधवार एवं स्वाती नक्षत्र में चन्द्रदर्शन होगा। सोना, चान्दी, रुई, सूत, सण, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों तेज रहें। अनाज कुछ मन्दे होकर तेज होंगे।

15 अक्तूबर (हिजरी सन् 1437 के प्रारम्भ होने वाले दिन) को बुध हस्त नक्षत्र में अएगा। इस समय भी बुध-राहु दोनों कन्या राशि में ही हैं। रुई, कपास, तेलवाना, घी के बाजारों में मन्दी किंवा तेजी की अफवाहों से जोरदार घटाबढ़ी चलेगी। सावधानी से काम करें। हमारे विचार से गेहूं आदि अनाज मन्दे रहें, लेकिन तेल, तिलहन, गुड़, चीनी, घी में तेजी रहे।

17 अक्तूबर (शनिवार) को सूर्य तुलाराशि, गुरु पू.फा.-3 एवं शुक्र भी पू.फा. नक्षत्र में दाखिल होगा। इस प्रकार मंगल, शुक्र, गुरु- ये तीनों ग्रह पू.फा. नक्षत्र में विचरण कर रहे हैं। अतः गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी--मन्दी के झटके आएंगे। मन्दी प्रधान रह सकती है। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे। सोने, चान्दी, तांबे में कुछ तेजी रहे।

[नोट-- 17 से 23 अक्तूबर तक यदि तेल, घी, गुड़, चीनी आदि में मन्दा बने तो स्टॉक करें, जल्दी लाभ मिलेगा। इस समय शेयर बाजारों में उछाला आ सकता है।]

24 अक्तूबर को सूर्य स्वाती नक्षत्र में आएगा। 15 दिन में रुई, सूत, सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल तेज रहें।

25 अक्तूबर को बुध चित्रा नक्षत्र में आएगा। इस समय रुई, चान्दी, सोना, कपास, तिलहन, पाट, बारदाना, हल्दी आदि के बाजारों एवं दालों में अच्छी तेजी आ सकती है।

[24/25 अक्तूबर से 27 अक्तूबर तक वायदा-हाजर एवं शेयर बाजार तेज रहें।]

28 अक्तूबर को बुध पूर्व में अस्त होगा एवं इसी दिन मंगल उ.फा. नक्षत्र में आएगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर कुछ तेज रहेंगे, लेकिन अनाज, घी में मन्दी बने। रुई में पहले तेजी, बीच में मन्दी, अन्त में फिर तेजी आए। सोने में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

29 अक्तूबर को बुध-तुला में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। जब बुध सूर्य के साथ मेल करता है तो बुध क्रूर हो जाता है। इसमें तेजी या मन्दा करने की ताकत बढ़ जाती है। अतः अगर बाजार पहले तेज हों तो यह बुध बाजारों में तेजी को बढ़ावा देगा, यदि पहले बाजार मन्दे हैं, तो मन्दी करेगा। अतः व्यापारी सोच–समझकर काम करें। इस समय हानि/लाभ दोनों सम्भव हैं। हमारे विचार से गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम तेज रहें। चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दा बन सकता है, फिर भी बाजार का रुख देखकर काम करें।

30 अक्तूबर को उ.फा. में शुक्र एवं 31 अक्तूबर को शनि अनुराधा नक्षत्र के तीसरे चरण में आएगा। कालीमिर्च, जीरा, लौंग, केसर, चन्दन, कपूर, गेहूं आदि अनाज, दालवाना, खाद्य तेल, बिनौला, रुई एवं सभी तिलहन तेजी की तरफ बढ़ सकते हैं।

नवम्बर (सन् 2015 ई.)

1 नवम्बर को बाजार उत्तम–मध्यम रूप से तेज खुलेंगे। 2 नवम्बर को बुध स्वाती नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र एवं एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। यद्यपि स्वाती नक्षत्र का बुध बाजारों में मन्दी का संकेत देता है, फिर भी यहां मौजूदा ग्रहचाल के मुताबिक तिलहन, दालवाना एवं खाद्य तेलों में तेजी मालूम देती है। लेकिन रुई के बाजार कुछ मन्दे रहसकते हैं। व्यापारी बाजार का रुख देखकर काम करें।

3 नवम्बर को मंगल एवम् शुक्र कन्या राशि में आकर राहु के साथ एकराशि एवं एक ही नक्षत्र उ.फा. में मेल करेंगे– यह योग अच्छी तेजी का संकेत देता है। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। गेहूं, चना, तिलहन, दालें, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, खाद्य तेल, सोना, ऊनी/सूती वस्त्र, लालरंग की सभी चीजें, हाजर एवं वायदा बाजार तेज रहेंगे। इस समय शेयर मार्कीट भी तेजी में रहे। इस समय चावलों में विशेष तेजी का झटका आ सकता है। यह तेजी स्थिर नहीं, तुरन्त लाभ लें–

"कन्याराशिं गते भौमे चन्दनं पट्टवस्त्रकम्।
आरक्त–सर्व–द्रव्याणि महर्घाणि भवन्ति हि।।"

"कन्या–राशि गते शुक्रे सर्वं सस्यं विनश्यति।
तत्र धान्य–महर्घत्वं शालिश्चैव विशेषतः।।"

5 नवम्बर को गुरु पू.फा. के चतुर्थ चरण में आएगा। इससमय अचानक गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं आदि अनाज मन्दे हो सकते हैं; रुई में घटाबढी के बाद मन्दी बने।

6 नवम्बर को विशाखा नक्षत्र का सूर्य 14 दिन में गेहूं, जौ, चावल, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम में तेजी करे। अलसी एवम् चान्दी में घटाबढ़ी होकर तेजी रहे।

10 नवम्बर को बुध के विशाखा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ नक्षत्रसम्बन्ध बना लेने पर मन्दे की जगह तेजी ही रहे– ऐसा हमारा विचार है। फिर भी रुई के व्यापारी सावधान रहें, क्योंकि रुई में इन दिनों झटके के साथ मन्दी भी बन सकती है।

[3 से 10 नवम्बर तक वायदा, हाजर एवं शेयर बाजारों में सामान्यतः तेजी रहे।]

12 नवम्बर को शुक्र हस्त नक्षत्र में आएगा। इस समय शुक्र, मंगल एवं राहु कन्या राशि में ही हैं। रुई, चान्दी, चावल एवं अनाजों का भाव यदि मन्दा हो तो स्टॉक करने से आगे लाभ रहेगा। सोना, चान्दी तेज रहें। गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी चले। ध्यान दें– हस्त नक्षत्र का शुक्र बाजारों में मन्दा करता है। लेकिन ग्रहचाल तेजी का इशारा करती है– सावधान रहें। क्योंकि 19 नवंबर तक मंगल एवं राहु– दोनों कन्याराशि एवं उ.फा. नक्षत्र में हैं। यह योग धान आदि की फसल को खराब करता है, कहीं अकाल की स्थिति भी बनती है–

" राहुरंगारकश्चैक–राशि– ऋक्षगतौ यदा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते।।"

शनि 13 नवम्बर को अस्त होकर 17 दिसम्बर को उदित होगा। अस्त-समय में शनि रुई, सोने में मन्दा करे एवं अनाजों में तेजी करे। घी, तेल के भाव ऊपर–नीचे रहें।

13 नवम्बर को चन्द्रदर्शन भी बाजारों में मन्दे का संकेत देता है। सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, खाण्ड, ऊनी वस्त्र व ऊन में मन्दी रहे। सोने–चान्दी में घटाबढ़ी के बाद कुछ तेजी बने।

16 नवम्बर को सूर्य एवं 17 नवम्बर को बुध– ये दोनों वृश्चिक राशि में आकर अस्त शनि के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाते हैं। अब ध्यान दें– सूर्य, बुध अकेले–अकेले स्वतन्त्ररूप से बाजारों में मन्दी करते हैं। अब ये दोनों इकट्ठे होकर शनि के साथ आ गए हैं, अतः हमें तो तेजीकारक ही मालूम देते हैं। इस समय बाजारों के रुख को जांचकर काम करें। हमारे विचार से रुई, तांबा

सोना, चान्दी, ऊनी वस्त्र, घी, तेल, सरसों में तेजी ही रहेगी। अफीम, दालें, बाजरा, ज्वार आदि में विशेष तेजी न रहे।

19 नवम्बर को बुध और 20 नवम्बर को सूर्य भी अनुराधा में आकर शनि के साथ एकनक्षत्रसम्बन्ध बनाएंगे। जौ, चना, चावल आदि अनाज, दालें, घी, गुड़, खाण्ड, अलसी, मिर्च तेज हों; सूत, सण, रुई, सोने और चान्दी में मन्दा आकर कुछ तेजी बने।

[5 से 13 नवम्बर तक वायदा बाजार एवं 16 से 19 नवम्बर तक शेयर बाजारों में तेजी से लाभ मिलेगा।]

24 नवम्बर को चित्रा नक्षत्र में शुक्र आएगा एवं 27 नवम्बर को बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आएगा। सोना, चान्दी, घी, गुड़, चावल सामान्यतः ठीक–ठीक रहेंगे।

27 नवम्बर को बुध ज्येष्ठा में एवं उ.फा. 2 में राहु और पू. भा. 4 में केतु दाखिल होगा। वायदा व्यापारी इसदिन तेजी से लाभ ले सकेंगे। रुई में 25/30 टका की तेजी का झटका आएगा। लोहा, चान्दी, तांबा, सीसा, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, खाद्य तेल, चावल, गेहूं आदि अनाज, अलसी,तिल, तेल, सरसों, मूंग, उड़द तेज रहें। तेजी ठीक आते ही लाभ ले लें, क्योंकि आगे **अचानक मन्दा बन सकता है।**

28 नवम्बर को उ.फा. नक्षत्र का गुरु गुड़, खाण्ड, सोना आदि धातुओं व अनाजों में मन्दे का झटका दे सकता है। रुई में तेजी या मन्दी किंवा मन्दी के बाद तेजी बने। इस समय चान्दी एवं मोती में विशेष मन्दा बनेगा।

29 नवम्बर को अनुराधा के चतुर्थ चरण में शनि के आने पर लौंग, कालीमिर्च, जीरा, धनिया, केसर, चन्दन, कपूर, बिनौला एवं कपारा तेज रहें।

30 नवम्बर को शुक्र तुला राशि में दाखिल होगा। रुई, चान्दी, अफीम में पहले तेजी, पीछे मन्दी; सोने–चान्दी में घटाबढ़ी एवम् गुड़, खाण्ड में तेजी रहे।

दिसम्बर (सन् 2015 ई.)

दिसम्बर के प्रारम्भ में ही 2 दिसम्बर को प्लूटो पू.षा. के तृतीय चरण में आकर बृहस्पति एवं मंगल की दृष्टि में आ जाता है। कहीं खड़ी फसलों को हानि पहुंच सकती है। 3 दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आता है एवं शनि के **साथ ही है। शनि–सूर्य शत्रु ग्रह हैं।** अतः सोना, चान्दी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। रुई में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी हो।

5 दिसम्बर को स्वाती नक्षत्र का शुक्र गुड़, खाण्ड में तेजी एवं अनाजों में मन्दी का रुख बना सकता है।

6 दिसम्बर को बुध मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में प्रवेश करेगा। गुरु एवं मंगल की बुध पर विशेष दृष्टि भी है। अतः अनाज, सोना, चान्दी, रुई, कपास, वस्त्र, सूत में मन्दे की चाल बनेगी।

नोटः– मार्गशीर्ष दशमी की (5/6 दिसम्बर, शनि एवं रविवार को) वृद्धि होने पर तिलहन एवं तेलों का स्टॉक करने से आगे लाभ मिलता है– ऐसा हमारा अनुभव है। इसवर्ष यह योग है कि– यदि इस समय बाजार मन्दे हों, तो तेल,तिलहन का स्टॉक करें, जल्दी ही अच्छा लाभ मिलेगा।

12 दिसम्बर को बुध का उदय पश्चिम में होगा। सूर्य, बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि है। अतः शेयर बाजारों में मन्दा बनेगा। 12 दिसंबर को ही चित्रा नक्षत्र का मंगल गेहूं, चावल, चना, सोना, चान्दी, तांबा एवं पीतल में तेजी करे–सावधानी से काम करें।

इसी दिन (12 दिसंबर को ही) रुई, सूत, वस्त्र, चान्दी, सोना आदि में अच्छी तेजी बनेगी, क्योंकि शनिवार को मूल नक्षत्र में चन्द्रदर्शन होगा। अनाज, गुड़, खाण्ड भी तेज रहें।

16 दिसम्बर को बुध पू.षा. नक्षत्र, सूर्य मूल-धनु एवं शुक्र विशाखा नक्षत्र में आकर सभी अनाजों, दालों, रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी, अलसी, बिनौला, तिल, तेल में तेजी–मन्दी के झटके बनाए। क्योंकि सूर्य बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि है; अतः इस समय विशेष तेजी नहीं, मन्दी प्रधान रहेगी।

17 दिसम्बर को वृश्चिक राशि का शनि उदित होगा। यहां बाजारों के रुख को देखें, फिर काम करें। इस समय 8 दिन में रुई, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, सोयाबीन, तारामीरा, सूरजमुखी आदि तिलहनों में जोरदार मन्दी या तेजी का उछाला आएगा। बाजार के रुख को देखकर व्यापार बढ़ाएं। इस समय हमारा विचार तिलहन में मन्दे का है। यदि मन्दा हो तो माल पकड़ें।

[नोट– 4 से 17 दिसम्बर तक तेल, तिलहन में मन्दे का ही वातावरण रहेगा। वायदा व्यापारी मन्दे से लाभ ले सकते हैं एवं हाजर के व्यापारी स्टॉक से आगे लाभ ले सकते हैं। शेयर बाजार तेज रहें।]

ध्यान दें – 17 दिसम्बर को शनि के उदय होने पर लोहा, जस्ता, सीसा, सज्जी, काले पदार्थ, लहसुन, लकड़ी, चावल, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज रहेंगे।

23 दिसम्बर को मंगल तुला राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा।रुई, कपास, सूत, सण, पाट, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चावल तथा माष, मोठ, उड़द, मूंग आदि अनाज तेज होंगे–

"महीसुते तुलां याते सर्वधान्य–महर्घता।
माषा मुद्गास्तथा सूत्रं कार्पासादि विशेषतः।।"

25 दिसम्बर को शुक्र वृश्चिक में दाखिल होगा। शनि,शुक्र दोनों खलग्रहों का एकराशि में होना महत्त्वपूर्ण है। रुई, शेयर बाजार, चान्दी, अफीम में पहले मन्दी होकर तेजी हो। लेकिन गुड़, खाण्ड, चीनी, घी, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाज एवम् अलसी तेज हों–

"वृश्चिके तु गते शुक्रे सर्वधान्यमहर्घता।"

26 दिसम्बर को बुध मकर राशि में प्रविष्ट होगा एवं शनि–मंगल की विशेष दृष्टि इस पर पड़ेगी। परिणामस्वरूप, रुंई, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन, घी एवं सभी प्रकार के अनाज व दालवाना तेज होंगे।

[23 से 26 दिसम्बर तक अनाज, दालवाना, घी, तिलहन के व्यापारी तेजी से लाभ लेंगे। वायदा एवं शेयर बाजारों में भी भारी तेजी से लाभ रहे।]

28 दिसम्बर को शुक्र अनुराधा एवं शनि ज्येष्ठा नक्षत्र में दाखिल होगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर, नमक, घी, तेल में मन्दे का रुख रहे। चावल, अनाज एवं चान्दी में कुछ तेजी रहे। पैट्रोल, डीज़ल, मोम आदि में भारी तेजी बनेगी।

29 दिसम्बर को धनु राशिस्थ सूर्य पू.षा. नक्षत्र में आता है एवं बृहस्पति की दृष्टि में भी है। 31 दिसम्बर तक तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सण, चान्दी में सामान्यतः तेजी–मन्दी के बाद तेजी ही संभव है– सावधानी से काम करें।

जनवरी (सन् 2016 ई.)

इंग्लिश नववर्ष की बधाई हो। अब तेजी–मन्दी का विवरण इस प्रकार जानें। मासारम्भ में सभी बाजार ऊपर –नीचे चलेंगे।

4 जनवरी को स्वाती नक्षत्र का मंगल रुई, ऊनी वस्त्र, गेहूं, तिल, तेल में तेजी करे। चान्दी में घटाबढ़ी एवं सोने में कुछ मन्दी रहे।

5 जनवरी को मकर राशि में बुध वक्री होगा। बुध पर शनि–मंगल की दृष्टि भी है। नोट करें:– यहां व्यापारी बाजारों में मन्दी की उम्मीद में होंगे। क्योंकि वक्री बुध बाजारों में मन्दी करता है, लेकिन हमें यहां तेजी मालूम देती है। अतः घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, खाद्य तेल, तिलहन में अच्छी तेजी बनेगी। हां! गेहूं, जौ, चना एवं दालवाना में भी सामान्यतः तेजी ही रहेगी।

8 जनवरी को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर शनि के साथ एकनक्षत्र एवं एकराशिसम्बन्ध बना रहा है। यह भी सभी अनाजों, दालों, सोने, चान्दी, चावल, तेल, तिलहन एवं हींग में भारी मन्दी के बाद तेजी करेगा।

8 जनवरी को ही बुध पश्चिम में अस्त होगा। रुई में 15/20 टका की शीघ्र ही मन्दी आएगी। चान्दी तेज रहे। इस समय शेयर बाजार, पाट, हैसियन भी मन्दे रहेंगे;– सावधानी से काम करें।

8 जनवरी को ही सिंहस्थ गुरु भी वक्री हो रहा है। इस समय बुध अस्त एवं वक्री है। हमारा अनुरोध है कि– 7 से 9 जनवरी तक व्यापारी बहुत सावधानी से काम करें, बाजार के रुख को देखकर ही व्यापार बढ़ावें, वरना हानि में रहेंगे। हमारे विचार से इन दिनों गुरु पर शनि की दृष्टि होने से बाजार अनुमान के विपरीत चल सकता है। गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाज, अलसी व घी में मन्दी आकर शीघ्र ही तेजी बनेगी। सोना, चान्दी, तांबा आदि धातु एवम् ऊनी वस्त्र तेज रहेंगे। 9 जनवरी को शनैश्चरी अमावस भी तेजी का ही संकेत देती है–

"अमावस्या सहस्यास्य शनि–सूर्यारवासरे।
यदि स्याद् भयामादेश्यं तदा सस्य–महर्घता।।"

नोट करें– 8 जनवरी को गुरु वक्री होकर संवत् के अन्त तक वक्री ही चलेगा। इस अवधि में बाजारों में जोरदार तेजी–मन्दी के उछाले आएंगे। समझ से काम लें।

11 जनवरी को सूर्य उ.षा. में आएगा एवं इसी दिन सोमवारी चन्द्रदर्शन होने से मूंग, उड़द, चना, चावल, गेहूं, रुई सूत, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, पिप्पलामूल, चमड़ा, तेल, घी, सरसों, मूंज, पट्टसूत्र तेज हों।

14 जनवरी को बुध वक्री होकर धनु में आकर शुक्र के साथ मेल

व चान्दी में मन्दी बनने का योग है। लेकिन 14 जनवरी को ही सूर्य मकर राशि में आकर शनि–मंगल की दृष्टि में आ जाता है, अतः हमें 14/15 जनवरी को घी, तेल, अलसी, सोया, सूरजमुखी, सरसों, बिनौला, खाद्य तेल, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अच्छी तेजी का झटका आता मालूम देता है। तुरन्त लाभ लें। गेहूं आदि अनाज व बारदाना में मन्दे की ओर रुख रह सकता है।

16 जनवरी को वक्री बुध पू.षा. में दाखिल होगा। अनाज मन्दे रहें; सोने–चान्दी में खासी मन्दी रहे। बिनौला तेज रहे।

18 जनवरी को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर इस समय गुरु की विशेष दृष्टि भी है–गहूं, जौ, चना आदि अनाज, सोना, चान्दी, तांबा आदि धातु एवं शेयर बाजार तेज रहेंगे। रुई सूत, कपास में पहले मन्दी होकर पीछे तेजी हो।

21 जनवरी को बुध का उदय पूर्व में होगा। रुई में मन्दी के बाद झटके की तेजी आए। 40 दिन में अनाज, घी, तेल, तिलहन, तिल, लालमिर्च, पाट, हैसियन आदि में तेजी आएगी।

24 जनवरी को श्रवण नक्षत्र में सूर्य के आने पर सभी बाजार तेज होंगे। गेहूं, जौ, चना, चावल, रुई, सूत, सण, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग, जीरा, कालीमिर्च, चायपत्ती, घी, दालवाना सब तेज हों।

16 से 24 जनवरी तक शेयर बाजार भी तेज रहेंगे।

25 जनवरी को बुध के मार्गी होने पर बाजार का रुख बदलेगा। वायदा व्यापारी सावधान रहें। रुई एवं चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज कुछ तेज रहें। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीजें मन्दी रहें। सावधानी से काम करें।

29 जनवरी को वायदा, हाजर एवं शेयर बाजारों के व्यापारी सावधान रहें। क्योंकि इन एक–दो दिनों में बाजारों में भारी उठापटक हो सकती है।

29 जनवरी को राहु उ.फा. नक्षत्र–1 एवं सिंह राशि में प्रविष्ट होगा, केतु पू.भा.–3 एवं कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। इसी दिन शुक्र पू.षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय सिंहस्थ राहु का गुरु के साथ मेल होगा एवं राहु–गुरु पर शनि की विशेष दृष्टि भी होगी। अतः गेहूं, चना, बाजरा, ज्वार, चावल आदि सभी अनाज एवं करयाणे की वस्तुएं तेज हों। अदरक, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, जीरा आदि मसाले आगे 2/3 मास में जोरदार तेजी की तरफ बढ़ेंगे–

" सिंहराशिं गतो राहुः शृंगवेर–कटुत्रयम्।
मासत्रिके व्यतीते तु लाभश्चैव चतुर्गुणः।।"

तथा च– " धान्यं महर्घं दुर्भिक्षं च कुर्यात् केतुर्महाभयम्।।"

एक मतानुसार इस समय मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों एवं क्षारद्रव्य नमक आदि मन्दे हों; लेकिन हमें बाजार तेज ही मालूम देते हैं– समझ से काम करें।

30 जनवरी को मंगल विशाखा एवं 31 जनवरी को शनि ज्येष्ठा के दूसरे चरण में आता है। रुई, कपास, ऊनी एवं सूती वस्त्र, गेहूं, दालवाना आदि अनाज एवम् सोना, चान्दी, तांबा में तेजी बनेगी– ऐसा विचार है।

फरवरी (सन् 2016 ई.)

फरवरी के प्रारम्भ में 4 फरवरी तक बाजारों में उठापटक चलेगी।

5 फरवरी को बुध उ.षा. नक्षत्र में आएगा। इस समय बुध–शुक्र पर गुरु की दृष्टि है, अतः मन्दी का काम करें। चना, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, गेहूं एवं अन्य दालों में मन्दा बनेगा। लेकिन जल्दी ही बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

6 फरवरी (शनिवार) को मकरस्थ सूर्य के धनिष्ठा नक्षत्र में आने पर 7 फरवरी के लगभग सोना, चान्दी, मोती, मणि आदि जवाहरात, मूंग, मसूर आदि दालवाना, चना, गेहूं आदि अनाज, अलसी एवं रुई में तेजी बनेगी।

8 फरवरी को बुध मकर राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। 8 फरवरी को सोमवती अमावस भी है। सूर्य–बुध पर इस समय शनि–मंगल की दृष्टि भी है। अतः सभी प्रकार के अनाज, दालें, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन एवं खाद्य तेलों में तेजी से अच्छा लाभ मिल सकता है।

9 फरवरी को गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, अलसी, एरण्ड में मन्दी आए। सभी अनाज तेज रहें; रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। वायदा बाजार तेज रहें।

12 फरवरी को शुक्र मकर राशि में आकर सूर्य–बुध के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य, बुध, शुक्र शनि–मंगल की दृष्टि में हैं। अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, चीनी, दालवाना, तेल, तिलहन, खाद्य तेल, राई, अलसी, एरण्ड, पाट एवं गेहूं आदि अनाज तेज होंगे। रुई, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे।

13 फरवरी को सूर्य कुम्भ राशि में आकर राहु एवं गुरु के साथ समसप्तकयोग बनाता है। इस समय अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, चीनी एवं गेहूं, चना आदि सभी अनाज तेज रहें। गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी सम्भव है।

[नोट–6 से 13 फरवरी तक तेल, तिलहन, दालवाना एवं शेयर बाजारों में तेजी रहेगी।]

17 फरवरी को बुध श्रवण नक्षत्र में एवम् वक्री गुरु पू. फा. के चतुर्थ चरण में आएगा। गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, गेहूं आदि अनाजों में उठापटक रहे एवं रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा में आ जाता है। सोना, चान्दी, सूत, सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूं एवं गुड़ के भाव तेज रहें।

20 फरवरी को शुक्र श्रवण नक्षत्र में आएगा एवं 20 फरवरी को ही मंगल वृश्चिक राशि में आकर शनि के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। यहां मौसम एवं सरकार की नीति को ध्यान में रखकर काम करें। रुई, सोना, चान्दी, तांबा, लोहा आदि धातुओं में अच्छी तेजी बनेगी। गुड़, शक्कर, चीनी, घी, तेल, तिलहन, खाद्य तेल, दालवाना, चना आदि के भाव भी तेज रहेंगे।

26 फरवरी को बुध धनिष्ठा में एवं 28 फरवरी को मंगल अनुराधा में आकर रुई, कपास, गेहूं, गुड़, लालमिर्च एवं सोने में तेजी बनाए, रुई में घटाबढ़ी चले।

फरवरी में कुछ विशेष तारीखें–

फरवरी 9, 12, 13, 14, 19, 20 से संवत् के अन्त तक शनि–मंगल का एकसाथ चलना एवं गुरु–राहु का एकराशि में वक्रत्व प्राकृतिक प्रकोप किंवा सीमाप्रान्तों पर अशान्ति आदि से विश्व के कुछ देशों एवं देशविशेष में कुछ अघटित घटनाचक्र चलाएगा, जिससे व्यापार क्षेत्र प्रभावित होगा और महंगाई बढ़ेगी– सावधान रहें।

मार्च (सन् 2016 ई.)

1 मार्च को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य–केतु के साथ मेल करेगा। इन पर वक्र गुरु एवं राहु की दृष्टि भी है। अलसी, रुई में मन्दी बने। चान्दी में मन्दी होकर बाद में कुछ तेजी हो। घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड में सामान्यतः तेजी रहे।

2 मार्च को शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र में आएगा; इस पर शनि की दृष्टि भी है। चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, सोना, चान्दी, रुई, कपास में तेजी रहे। शनि की मकर राशि में स्थित शुक्र पर दृष्टि होने से बाजार तेज ही रहेंगे।

4 मार्च को पू.भा. नक्षत्र का सूर्य भी तेजीकारक ही है। क्योंकि सूर्य, बुध, केतु– ये कुम्भ राशि में गुरु–राहु के साथ समसप्तकयोग बना रहे हैं। 14 दिन में रेशम, सोना, चान्दी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पिप्पलामूल एवं रुई में तेजी का ही रुख रहेगा।

5 मार्च को बुध शतभिषा नक्षत्र में आकर सोने, चान्दी में मन्दी एवं अनाजों में कुछ तेजी करे।

7 मार्च को शुक्र कुम्भ राशि में आकर सूर्य, बुध, केतु के साथ मेल करेगा तथा मंगल–राहु–गुरु की इन पर दृष्टि भी रहेगी। इस समय बाजारों में जोरदार मन्दी या तेजी बनेगी– सावधानी से काम करें।

नोट– यद्यपि कुम्भ राशि का शुक्र बाजारों में मन्दी करता है, फिर भी सूर्य–बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध होने से यहां हमें तेजी ही मालूम देती है–

" एकराशौ गता ह्येते सौम्य–शुक्र–दिनाधिपाः।
सर्वधान्य–महर्घत्वं मेघाः स्वल्प–जलप्रदाः।।"

अतः रुई, चान्दी, गुड़, खाण्ड, जौ, चना, गेहूं, ज्वार, बाजरा, घी, चीनी, चावल में मन्दी की उम्मीद होने पर भी तेजी ही रहेगी– ऐसा हमारा विचार है। फिर भी बाजार का रुख देखकर काम करें।

[नोट– 1 से 7 मार्च तक वायदा एवं हाजर तथा शेयर बाजारों में तेजी से लाभ मिलेगा।]

8 मार्च को बुध पूर्व में अस्त होकर बाजारों में उठापटक करेगा। अनाज, घी एवम् खाद्य तेल मन्दे होंगे। इस समय सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। रुई में पहले तेजी, बीच में मन्दी एवं अन्त में फिर तेजी– इस प्रकार घटाबढ़ी चलेगी।

9 मार्च को खण्डग्रास सूर्यग्रहण के समय सूर्य पर गुरु–राहु एवं मंगल की दृष्टि है। सूर्य के साथ शुक्र–केतु एवं बुध होने से बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी रहेगी– समझ से काम लें।

पर वक्र गुरु एवं राहु की दृष्टि भी है। अलसी, रुई में मन्दी बने। चान्दी में मन्दी होकर बाद में कुछ तेजी हो। घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड में सामान्यतः तेजी रहे।

की दृष्टि है। सूर्य के साथ शुक्र–केतु एवं बुध होने से बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी रहेगी– समझ से काम लें।

10 मार्च को वीरवारी चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत, सूती/रेशमी वस्त्र, तेल, सरसों, घी तेज हों। सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड मन्दे रहें।

12 मार्च को शुक्र शतभिषा में आएगा। गेहूं, गुड़, चावल, घी, सरसों, रुई, चान्दी में तेजी रहेगी। 9 से 13 मार्च तक प्राकृतिक प्रकोप से कहीं हानि भी सम्भव है।

13 मार्च को बुध पू.भा. में आएगा। इस समय सोना, चान्दी, तांबा, लोहा तथा अनाजों में मन्दी और रुई में घटाबढ़ी रहेगी।

[8 से 13 मार्च तक शेयर एवं प्रत्येक वायदा बाजारों में जोरदार उठापटक रहेगी। बाजार एकतरफा नहीं चलेंगे।]

14 मार्च को अकेला सूर्य मीन राशि में आएगा। तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़,शक्कर, रुई एवं सोना तेज रहेंगे। प्रत्येक जाति के अनाजों में पहले कुछ तेजी आकर जल्दी ही बाजार मन्दे की ओर बढेंगे। चान्दी में 1/2 टका की मन्दी बन सकती है।

15 मार्च को वक्री गुरु पू.फा. के तीसरे चरण में प्रवेश करेगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा गेहूं आदि अनाज मन्दे होंगे। रुई में घटाबढ़ी से मन्दी बनेगी।

[14 से 16 मार्च तक अनाज, तेल, गुड़, खाण्ड, घी, दालवाना एवं शेयर बाजार मन्दे रहें।]

17 मार्च को सूर्य उ.भा. में आएगा। 15 दिन में चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं एवं तेल अस्थाई रूप से तेज होंगे।

18 मार्च को बुध भी मीन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। अतः बुध इस समय जोरदार तेजी–मन्दी का झटका देगा। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं सोना–चान्दी में घटाबढ़ी के बाद पहले तेजी बाद में उतनी ही मन्दी आ सकती है। लेकिन हमारे विचारानुसार सम्भव है कि– तेजी ही रहे, मन्दी न आए। अतः बाजार का रुख देखकर व्यापार बढ़ावें, क्योंकि बुध–सूर्य का मेल तेजीकारक ही अनुभव किया गया है।

20 मार्च को उ.भा. नक्षत्र में बुध एवं 23 मार्च को पू.भा. नक्षत्र में शुक्र के आने पर चान्दी में घटाबढ़ी, रुई, गुड़ ,खाण्ड, चावल एवम् गेहूं आदि अनाजों में बाजार स्थिर, मन्दे किंवा अनिश्चित रहें।

25 मार्च को शनि वक्री होगा। वृश्चिक राशि में शनि मंगल के साथ है। अतः सिक्का, कली, लोहा, गेहूं, पीपल, ज्वार, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, सीमेण्ट, लौंग, जीरा आदि मसाले एवं एरण्ड में घटाबढ़ी के साथ तेजी बनेगी।

27 मार्च को रेवती नक्षत्र में बुध एवं 31 मार्च को रेवती नक्षत्र में ही सूर्य के आने पर केसर, मजीठ, कुसुम्भ, लालचन्दन, गेरु, लालमिर्च एवं लाल चीजें तेज हों। गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी, अलसी, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, लाख, सज्जी, रुई, गेहूं, जौ, चना, चावल एवम् चान्दी में मन्दी आकर तेजी बने।

31 मार्च को शुक्र मीन राशि में आकर सूर्य–बुध के साथ मेल करेगा। यहां सूर्य–बुध क्रूर हैं, अतः शुक्र के क्रूरग्रहयोग से चान्दी में अच्छी तेजी बने। चावल, दालवाना आदि अनाज, सरसों, तेल, तिलहन, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड एवम् घी में मन्दे की जगह तेजी बनेगी।

[नोट– 31 मार्च को बुध–सूर्य–शुक्र एकराशि में होने से उल्लिखित चीजों में हमें तेजी ही मालूम देती है।]

ध्यान रहे– मीन राशि में अकेला शुक्र प्रायः मन्दा करता है, फिर भी ध्यान से काम करें।

अप्रैल (सन् 2016 ई.)

1 अप्रैल को राहु पू.फा.–4 एवम् केतु पू.भा.–2 में आता है। अनाज, अलसी, सरसों आदि तिलहन, खाद्य तेल, मूंग, उडद में तेजी बनेगी।

2 अप्रैल को बुध अश्विनी–मेष में आकर गुरु–राहु की दृष्टि में आ जाता है। मूंगा, मोती आदि जवाहरात, सोना, चान्दी आदि धातु, गेहूं, चना, जौ आदि अनाज, तिल, तेल,सरसों, रुई, कपास, घी, गुड़ एवं खाण्ड में मन्दे का वातावरण रहे।

3 अप्रैल को शुक्र उ.भा. में आएगा एवम् 5 अप्रैल को बुध पश्चिम में उदित होगा। चावल, मोती, चान्दी, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि सफेद वस्तुएं एवं शेयर बाजार मन्दे रहेंगे।

व्यापारियों के लिए विशेष– अगला पृष्ठ देखें।

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक)

जप एव यन्त्र–मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन सक्रान्तिया के पुण्यकाल तथा सूर्य–चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य–चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थो में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' मे कहा है कि–क्रांतिसाम्य के काल मे विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है– *"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान–जप–होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।"* यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रो की साधना मे विशेष रुचि रखने वाले पाठको के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2015 ई. से 7 अपैल, सन् 2016 ई तक की सायन सक्रान्तियो के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारम और समाप्तिकाल (भा.स्टैं टा) दे रहे हैं। इन कालों मे यत्र–तत्रों के निर्माण एवम् मत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि–साधना के लिए साधकों को उपयोग मे लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य–चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि–साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी–कभी ही आते है।

सावधान–यंत्र-मंत्र-तत्रो के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनारथा होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति–पुण्यकाल

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2015 ई.					
20 जन.	08	48	20 जन.	21	36
18 फर.	22	56	19 फर.	11	44
20 मार्च	21	51	21 मार्च	10	39
20 अप्रै.	08	48	20 अप्रै.	21	36
21 मई	07	51	21 मई	20	39
21 जून	15	44	22 जून	04	32
23 जुला.	02	37	23 जुला.	15	25
23 अग.	09	43	23 अग.	22	31
23 सितं.	07	27	23 सितं.	20	15
23 अक्तू.	16	53	24 अक्तू.	05	41
22 नवं.	14	31	23 नवं.	03	19
22 दिसं.	03	54	22 दिसं.	16	42
सन् 2016 ई.					
20 जन.	14	33	21 जन.	03	21
19 फर.	04	40	19 फर.	17	28
20 मार्च	03	36	20 मार्च	16	24

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यंत्र–मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2015 ई.					
29 जन.	16	29	30 जन.	12	39
11 फर.	17	31	12 फर.	02	31
23 फर.	04	04	23 फर.	10	18
08 मार्च	06	29	08 मार्च	13	01
20 मार्च	07	51	20 मार्च	12	45
01 अप्रै.	21	42	02 अप्रै.	03	57
14 अप्रै.	16	01	14 अप्रै.	21	49
26 अप्रै.	09	19	26 अप्रै.	17	47
08 मई	23	00	09 मई	13	08
08 अग.	09	29	08 अग.	20	19
21 अग.	10	53	21 अग.	18	41
02 सितं.	06	46	02 सितं.	11	17
15 सितं.	01	48	15 सितं.	07	59
27 सितं.	14	02	27 सितं.	18	53
22 अक्तू.	17	54	23 अक्तू.	00	16
03 नवं.	01	35	03 नवं.	11	02
सन् 2016 ई.					
03 फर.	6	33	03 फर.	19	20
14 फर.	20	05	15 फर.	03	13
27 फर.	13	57	27 फर.	20	42
10 मार्च	21	20	11 मार्च	02	17
23 मार्च	04	54	23 मार्च	11	10
05 अप्रै.	04	49	05 अप्रै.	10	04

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य–चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किए जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल महापातगणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

वारुणी पर्व

(सन् 2015 ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
18 मार्च	17	38	18 मार्च	सूर्यास्त	
(सन् 2016 ई.)					
05 अप्रै.	सूर्योदय		05 अप्रै.	10	34

महोदय योग

(सन् 2016 ई.)

प्रारम्भ			समाप्त		
08 फर.	सूर्योदय		08 फर.	14	22

ध्यान रहे– मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। उच्चारणादि की अशुद्धि साधक के लिए सुफलप्रद कदापि नहीं होती। इस बारे शास्त्रवचन इस प्रकार है–

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।"

सूर्य–चन्द्रग्रहण

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र–मन्त्र– तन्त्र–साधना के लिए सूर्य एवम् चन्द्र ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। एतदर्थ पृष्ठ......... 20 .... देखिए।

यन्त्र–मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभ मुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन–संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़–निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे–** दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा 'यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों के लिए साधनाकाल' की उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र–तन्त्रों को सिद्ध करके इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र–मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,–**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल–प्रछन्न शक्ति होती है–

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जो कि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं– **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः–** मन्त्र का पुरुश्चरण गुरु की देखरेख में गुप्तरूप से करें। प्रकट होने पर पुरुश्चरण अर्थहीन हो जाता है– **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

(1) सम्मोहन–मन्त्र

मन्त्र– "ॐ नमो भगवति चामुण्डे महाहृदयकम्पिनि स्वाहा।"

विधि– इस उल्लिखित मन्त्र को दीपावली की रात में 10 हजार बार जाप करके सिद्ध करलें। दीपावली या मन्त्रसाधना के लिए उपयुक्त समय में मन्त्र को सिद्ध करने के बाद मंगलवार या शनिवार को पान के बीड़े पर 21 बार पढ़कर यदि शत्रुता कर रहे व्यक्ति को खिलादें, तो वह शत्रुता छोड़कर मित्र बन जाता है।

(2) धन–धान्यसमृद्धि के लिए महालक्ष्मी मन्त्र प्रयोग

मन्त्र– ॐ कमलदल–निवासिनि सदा सुहासिनि मा चंचले **स्थिरा भव स्थिरा भव, ह्रीं क्लीम् श्रीम् ॐ नमःकामाक्षायै, ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं फट् स्वाहा।"**

विधि– शनिवार को आधी रात में उल्लिखित मन्त्र का 1008 बार जाप करें। 22 दिन उक्त विधि करने पर सिद्ध होगा। 23वें दिन इस मन्त्र से 2008 बार आहुतियां देकर हवन करें तो यह मन्त्र चामत्कारिक रूप से सद्यः फल देने वाला होगा– ऐसा अनुभव है।

तदुपरान्त हमेशा प्रातः पढ़ें, 22 बार पढ़कर काम करें एवं रात्रि में 22 बार पढ़कर सो जाएं। घर में आश्चर्यजनक रूप से धन–धान्य–समृद्धि होगी। भण्डारे एवं खजाने परिपूर्ण रहेंगे।

नोट– इस प्रयोग को गुप्त रखें, बतलाकर किंवा टोक लगने से सिद्धि प्राप्त नहीं होगी।

(3) मनोरथसिद्धि के लिए अचूक मन्त्र

मन्त्र–"ॐ हर त्रिपुर, हर भवानि, बाला–राजा–प्रजा–मोहिनि, सर्वशत्रु–विध्वंसिनि, मम चिन्तितं फलं देहि–देहि स्वाहा।"

स्थिरा भव स्थिरा भव, ह्रीं क्लीम् श्रीम् ॐ नमःकामाक्षायै, ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं फट् स्वाहा।"

मन्त्र–"ॐ हर त्रिपुर, हर भवानि, बाला–राजा–प्रजा–

विधि–शुक्लपक्ष की द्वितीया से पूर्णिमा तक इस मन्त्र का 21000 बार जाप किसी भी समय कुशा या कम्बल के आसन पर बैठकर करें। तत्पश्चात् इस मन्त्र का जाप प्रतिदिन 108 बार प्रातः/सायं करें। **मनोरथसिद्धि** अवश्य होगी। **नौकरी के इच्छुक को नौकरी, मुकद्दमें में विजय, परीक्षा में सफलता** आदि के लिए यह मन्त्र अनुभूत है।

यजमान अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए इस मन्त्र का अनुष्ठान अपने पण्डित जी से भी करा सकते हैं।

(4) पुत्रप्राप्ति व गर्भरक्षा हेतु साबर मन्त्रप्रयोग

मन्त्र– "ॐ नमो कामरूप–कामाख्या देवी, जल बांधूं, जलबाई बांधूं, बांधी देत जल के तीर। पांचों दूत कलूआ बांधूं, बांधूं हनुमत–बीर। सहदेवी अनुज्ञा औं अर्जुन का बाण, रावण रण को थाम ले, नहीं तो हनुमन्त की आन। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

विधि– सन्तान के इच्छुक स्त्री–पुरुष कुंवारी(जिसे ऋतुधर्म शुरु न हुआ हो, ऐसी) कन्या के हाथ से काते गए सूत की तारें स्त्री के सिर से पैर तक सात बार (Seven Times) नाप कर तारों को इकट्ठा करके (लम्बाई में जोड़कर) सवा किलो आटे का मीठा रोट बनाकर हनुमान् जी की प्रतिमा के सामने रखकर पुत्र–प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें एवं धागों को 21 बार उल्लिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। धागों को अभिमन्त्रित करके उन धागों को सामूहिक रूप से 21 गांठें लगा दें एवं तरागड़ी की तरह स्त्री की कमर में बांध दें। रोट का भोग लगाकर सभी को बांट कर खाएं। स्त्री शीघ्र ही गर्भ धारण करेगी– यह अनुभूत है।

नोट– यही प्रयोग गिरते हुए गर्भ की रक्षा हेतु भी रामबाण का काम करता है। यन्त्र–मन्त्र एवं तन्त्र बड़ा विलक्षण है, अनुंभव करें।

(5) नेत्रज्योतिवर्धक मन्त्र

मन्त्र– "ॐ आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे मम। व्योमे च सूर्य दृशे।"

विधि– प्रातः सूर्योदय के समय इस मन्त्र का जाप करके सामने रखे जल से अर्घ्य देकर कुछ जल से आंखें खोल कर छींटे मारें, नेत्रज्योति बढ़ेगी।

(6) भूत–भविष्यत्–वर्तमान घटनाओं की जानकारी हेतु बटवृक्ष–यक्षिणी की सिद्धि

बटवृक्ष यक्षिणीसाधना हेतु साधक को स्नानादि करके बटवृक्ष के नीचे कम्बलासन पर बैठ कर निम्नांकित मन्त्र का सवा लाख जाप करना चाहिए। मन्त्रजाप अकीक (हकीक) के मणकों से निर्मित माला से करें।

ध्यान रहे– यह सिद्धिकार्य सद्गुरु के मार्गदर्शन में ही करें, अन्यथा हानि भी संभव है। सिद्धि होने पर त्रिकाल का ज्ञान स्वतः होने लगता है।

मन्त्र–"ॐ एह्येहि यक्षि यक्षि महायक्षि बटवृक्षनिवासिनि। शीघ्रं मे सर्वं सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

(7) कनकधारा स्तोत्र

इस स्तोत्र का नियमित पाठ करने से घर में अतुल धन–धान्यसमृद्धि होती है एवं सभी संकटों का निराकरण प्रत्यक्ष जल्दी ही हो जाता है। स्तोत्र बहुत ही भावपूर्ण एवं श्रद्धा से प्रातः–सायं लक्ष्मी माता का ध्यान करके पढ़ें। ऋणमुक्ति के लिए इसे ब्रह्मास्त्र समझें।

उल्लेख मिलता है कि– इस स्तोत्र के पाठ (अनुष्ठान) से आचार्य श्रीशंकर जी ने स्वर्णवर्षा कराई थी।

स्तोत्र निम्नांकित है–

अंगं हरेः पुलक–भूषणमाश्रयन्ती भृंगांगनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अंगीकृताखिल–विभूतिरपांग–लीला मांगल्यदास्तु मम मंगलदेवतायाः।।१।।

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपा–प्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागर–सम्भवायाः।।२।।

विश्वामरेन्द्र-पदविभ्रम-दान-दक्षमानन्द-हेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धमिन्दीवरोदर-सहोदरमिन्दिरायाः।।३।।

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्द-कन्दमनिमेषमनंग-तन्त्रम्।
आकेकरस्थित-कनीनिक-पक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजंग-शयांगनायाः।।४।।

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।।५।।

कालाम्बुदालि-ललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तड़िदंगनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीय-मूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गव-नन्दनायाः।।६।।

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्मांगल्य-भाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्द्धं मन्दालसं च मकरालय-कन्यकायाः।।७।।

दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बु-धारामस्मिन्नकिंचन-विहंगशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्म-घर्ममपनीय चिराय दूरं नारायण-प्रणयिनी-नयनाम्बुवाहः।।८।।

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र-दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर-विष्टरायाः।।९।।

गीर्देवतेति गरुड़ध्वज-सुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखर-वल्लभेति।
सृष्टि-स्थिति-प्रलय-केलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैक-गुरोस्तरुण्यै।।१०।।

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्म-फलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र-निकेतनायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै ।।११।।

नमोऽस्तु नालीक-निभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृत-सोदरायै नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै ।।१२।।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि साम्राज्य-दान-विभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये।।१३।।

यत्कटाक्ष-समुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
संतनोति वचनांग-मानसैस्त्वां मुरारि-हृदयेश्वरीं भजे।।१४।।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवल-तमांशुक-गन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।१५।।

दिग्घस्तिभिः कनक-कुम्भ-मुखावसृष्टस्वर्वाहिनी-विमलचारु-जलप्लुतांगीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-लोकाधिनाथ-गृहिणीममृताब्धि-पुत्रीम्।।१६।।

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरंगितैरपांगैः।
अवलोकय मामकिंचनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः।।१७।।

(8) रोगशान्त्यर्थ मन्त्र

ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जिसने जीवन में किसी न किसी रोग का सामना न किया हो। अनेकविध रोगों से मुक्ति पाने के लिए अनुभूत मन्त्र हम यहां जनता के कल्याणार्थ दे रहे हैं, (मन्त्रों को व्याकरण-दृष्ट्या शुद्ध करने का प्रयास न करें)–

" ॐ नमः परमात्मने परब्रह्म मम शरीरं पाहि पाहि कुरु कुरु स्वाहा।"

इस मन्त्र को 108 बार गंगाजल पर पढ़ें और रोगी व्यक्ति को पिला दें, शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ के लक्षण दिखाई देंगे। यह प्रयोग प्रतिदिन 41 दिन तक करें। रोग की विषमता को दृष्टि में रखते हुए, प्रयोग को अधिक दिन, मास तक कर सकते हैं।

(9) दृष्टिदोष (नज़र) दूर करने के लिए मन्त्र

कुछ बच्चे अकारण रोते रहते हैं,रात्रि में भी सोते नहीं, जबकि वैद्य उन्हें ठीक बताता है। ऐसे लक्षण दृष्टिदोष-युक्त बालक के हैं। ऐसी स्थिति में बालक को सामने बिठाकर मोर पंख से झाड़ा दें एवं निम्नांकित मन्त्र को उच्चारण करते रहें–

" ॐ अंजनिगर्भ-संभूतं कुमारं ब्रह्मचारिणम्।
दृष्टिदोष-विनाशाय हनुमन्तं स्मराम्यहम्।।"

नोट– इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि में, होली, मंगलवार की रात्रि में या ग्रहण के समय 1008 बार जप करके सिद्ध कर लेना आवश्यक है।

(10) किसी व्यक्ति से अमीप्सित कार्य कराने के लिए तन्त्र

कुंकुम, चन्दन, गोरोचन को गंगाजल एवं गाय के दूध में पीस कर अपने मस्तक पर तिलक करने से राजा को भी अपने अनुकूल किया जा सकता है–

" कुंकुमं चन्दनं चैव रोचनं शशिमिश्रितम्।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम्।।"

ध्यान दें, कि– उपर्युक्त प्रयोग करने के साथ निम्नलिखित मन्त्र का जाप अवश्य करें–

"ॐ ह्रीं सः 'अमुकं' मे वशमानय स्वाहा।"

यहां 'अमुक' के स्थान पर व्यक्ति विशेष का नाम लेना चाहिए। उल्लिखित गोरोचनादि का तिलक, जिस व्यक्ति से काम लेना है, उस व्यक्ति के सामने जाते समय ही लगावें।

(11) औषधियों (जड़ी–बूटियों) से ग्रहों के नेष्टफल की शान्ति करें

यदि सूर्य नेष्ट फलप्रद हो तो बिल वृक्ष की जड़ लाल धागे में इतवार को धारण करें। चन्द्रमा खराब हो तो खिरनी की जड़ श्वेतवर्ण के धागे में सोमवार को, मंगल कष्टप्रद हो तो अनन्तमूल की जड़ रक्तवर्ण के धागे में मंगलवार को धारण करें। बुधजन्य कष्ट हो तो बुधवार को बिधारा की जड़ को हरे धागे में, गुरुजन्य कष्ट हो तो हल्दी या केले की जड़ को गुरुवार के दिन धारण करें। यदि शुक्र–ग्रहजन्य पीड़ा हो तो सर्पगन्धा किंवा सरपोंखा की जड़ शुक्रवार को सफेद धागे में बांधकर धारण करें। शनि ग्रहजन्य पीड़ा हो तो बिच्छू बूटी की जड़ काले धागे में बांधकर या लोहे के तावीज़ में मढ़ाकर, शनिवार को दाईं भुजा या गले में धारण करें। राहुजन्य कष्ट होतो सफेद चन्दन नीले धागे में बुधवार सायंकाल को धारण करें। केतु ग्रह से अशान्ति हो तो असगन्ध की जड़ हल्के नीले धागे में बांधकर बुधवार या वीरवार के दिन धारण करें।

इस प्रकार प्रकृति में उपलब्ध इन ग्रहों का उल्लिखित बूटियों से सम्बन्ध होने से इनको धारण करना सुनिश्चित रूप से ग्रह विशेष के नेष्ट फल को शान्त करता है।

(12) चोरभय दूर हो

नीचे लिखे मन्त्र को रात्रि में तीन बार पढ़कर सो जाने पर भी चोर से हानि नहीं होती:–

मन्त्र :–" तिस्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती। तासां स्मरणमात्रेण चौरो गच्छति निष्फलः। कफल्लकः कफल्लकः कफल्लकः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वराय नमः।"

जिस घर में रात को इस मन्त्र का पाठ होता है, उस घर में यदि चोर आ भी जाए तो चोर को निष्फल ही जाना पड़ता है।

नोट– पण्डित लोग अपने यजमान के लिए गुग्गुल–लौंग एवं लोबान को मिलाकर बनाई गई धूप को उल्लिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके चोरादि से रक्षार्थ दे सकते हैं।

(13) सुरकात्यायनी मन्त्र–प्रयोग

मन्त्र :– " ॐ भ्रूं हुं फट् "– इस चार अक्षरों के मन्त्र में अवन्ध्य प्रभाव निहित है।

विधानम्– " शून्यं देवालयं गत्वा अष्टसहस्रं जपेत्। तदा स्वयमेव सुरकात्यायनी महाट्टहासं कृत्याष्टशत–परिवारेण नियतमागच्छति। आगतायै चन्दनोदकेन अर्घो देयः। तुष्टा भवति रस–रसायनं प्रयच्छति। भविष्यकथने सामर्थ्यं ददाति।"

–(मन्त्रमहार्णव)

अर्थात्– उपेक्षित शून्य मन्दिर में बैठकर आठ हजार मन्त्र जाप करे। सुरकात्यायनी, सपरिवार अट्टहासपूर्वक सामने आएगी; सुरकात्यायनी भगवती के आने पर जल में चन्दन मिलाकर अर्घ दें। इस प्रकार माता अनेकविध भोज्य पदार्थ देती है और भविष्यकथन में सामर्थ्य प्रदान करती है।

(14) अचानक आया संकट तुरन्त दूर हो

आजकल विश्व में अशान्त वातावरण से आत्मरक्षा के लिए किंवा समयानुसार सर्वविध संकटों से मुक्ति पाने के लिए आप आगे लिखे गए

मन्त्र का जाप करें–

मन्त्र –" ऊँ ह्रीं सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय – भूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ह्रीं ऊँ।।"

ऐसी स्थिति में जबकि घर का कोई सदस्य भारी संकट में हो, राजभय किंवा आतंक का साया सिर पर हो तो अपने विश्वस्त विद्वान् पण्डित से उक्त जाप कराएं अथवा स्वयं जाप करें। समय कम होने की अवस्था में उल्लिखित मन्त्र का यथाशक्ति जाप करें एवं एक पान पर शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 1 इलायची, गुग्गुल की आहुति दें, मन्त्रजाप करते रहें; तुरन्त आपत्ति का निराकरण होगा।

(15) पशुओं में रोगशान्ति के लिए मन्त्र

गांव में पशुओं की बीमारी से मुक्ति के लिए गुरुपुष्य, रविपुष्य, हस्तार्क या किसी उत्तम समय में मिट्टी के कोरे कसोरे (परई) के भीतर इसमन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर, धूप देकर डाल दें। मन्त्र से युक्त हांडी या कसोरे को भी धूप देकर, लालकपड़े से पशुशाला में लटका दें, बीमारी नहीं रहेगी।

मन्त्र– " अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः।
बीमत्सुः विजयी पार्थः सव्यसाची धनञ्जयः।।
कपिध्वजो गुड़ाकेशो गांडिवी कृष्णसारथिः।
एतान्यर्जुन-नामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्।
निश्चितं पशु–रोगादेर्नाशः शीघ्रं प्रजायते ।। "

(16) वशीकरण के लिए शाबरमन्त्र

यहमन्त्र चमत्कारी है, परन्तु पति अपनी पत्नी के लिए एवं पत्नी अपने पति के लिए प्रयोग में लावें। अनुचित कार्यार्थ परस्त्री–पुरुष के वशीकरण के लिए इस मन्त्र का प्रयोग व्यक्ति के लिए (कर्त्ता के लिए) स्वयं हानिकारक रहेगा–यह ध्यान रहे।

मन्त्र – "ऊँ मोहिनी माता भूत पिता भूतसिर बेताल उड़ ऐ काली नागिन.......... को लग जाये। ऐसी जाके लगे कि........को लग जाए हमारी मुहब्बत की आग, न खड़े सुख, न लेटे सुख, न सोते सुख। सिन्दूर चढ़ाऊं मंगलवार, कभी न छोड़े हमारा ख्याल, जब तक न देखे हमारा मुख, काया तड़प तड़प मर जाय, चलो मन्त्र फुरो वाचा दिखाओ रे शब्द अपने गुरु के इलम का तमाशा।।"

इसमन्त्र में......इस प्रकार बिन्दुओं से युक्त खाली छोड़े स्थानों पर, उस स्त्री या पुरुष के नाम का उच्चारण करें, जिसे वश में करना चाहते हैं।

विधि :– शुक्लपक्ष की अष्टमी से पूर्णमाशी तक एकान्त–शान्त कमरे में रात को दस बजे के बाद ऊनी आसन पर बैठकर, जल का पात्र अपने पास रखें, धूप–दीप जलाकर उल्लिखित मन्त्र का जाप प्रारम्भ करें। अपनी प्रेमिका, पत्नी या प्रिय (जिसे अनुकूल बनाना हो) का चित्र सामने रख लें। दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ प्रतिदिन दो घण्टे मन्त्रजाप करें। नौ दिन में ही अभीष्ट कार्यसिद्धि होगी।

(17) गाय/भैंस दूध दे – साबरी मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्र को ग्रहण या दीपावली की रात्रि में सिद्ध कर लेने पर प्रयोग में लाएं। इसमन्त्र को राख पर पढ़कर, पशु के स्तन एवं मस्तक पर लगा दें या दूब (घास)पर पढ़कर, बिगड़े हुए पशु को खिला दें, तो निश्चय ही पशु ठीक ढंग से दूध देने लगता है।

साबरी मन्त्र – "सुआ झार कज्जल भार, तेल कड़ाही दूधा धार, सावा भार विश उतर गंगा–यमुना चले नीर, बालक छोड़े मातु शरीर, जो अटके तो गौरां पार्वती का अंचला फटे, दोहाय ईश्वर महादेव गौरां पार्वती नैना योगिनी, कामरुप कामाक्षा के दोहाय।"

(18) वंश–परम्परागत गरीबी दूर करने का अनुभूत मन्त्र

मन्त्र –"ऊँ क्लीं नन्दादि गोकुलत्राता दाता दारिद्र्यभञ्जनः।
सर्वमंगलदाता च सर्वकाम–प्रदायकः। श्रीकृष्णाय नमः।।"

विधि – इसमन्त्र को शुभमुहूर्त्त में प्रारम्भ करें। प्रतिदिन नियमपूर्वक 5 माला श्रद्धा से भगवान् श्रीकृष्ण का ध्यान करके, जप करता रहे। शीघ्र ही गरीबी दूर होकर ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है,– अनुभूत है।

(19) ऋणमुक्ति के लिए–'ऋग्वेदोक्त मन्त्रप्रयोग'

आर्थिक–संकट–ग्रस्त व्यक्ति के मित्र–बन्धु भी साथ छोड़ देते हैं। ऐसी स्थिति में सच्चे हृदय से भगवान् विष्णु की प्रतिमा या चित्र के सामने श्रद्धापूर्वक निम्नांकित ऋग्वेदीय–मन्त्र का सात बार जाप करें। इसमन्त्र को सफेद कागज पर लालरंग की स्याही या लालचन्दन से लिखकर, अपने गल्ले में फूल बिछाकर रखें। यदि किसी के पास आर्थिक लाभ की आशा लेकर जा रहे हो, तो इसमन्त्र को 21 बार पढ़कर, कागज पर लिखकर ताबीज में मढ़ा लें, आर्थिक कामनाएं सिद्ध होने लगेंगी। अपनी आस्था व श्रद्धा को दृढ़ रखें।

मन्त्र – " ॐ भूरिदा भूरि देहिनो, मादभ्रं भूर्यामर। भूरिचेदिन्द्र दित्ससि। ॐ भूरि दाह्यसि श्रुतः पुरुजा शूरवृत्रहन्। आ नो भजस्व राधसि।। "

(20) तेजी–मन्दी जानने के लिए 'ज्ञान चेतक' मन्त्रप्रयोग

जिन–जिन वस्तुओं की तेजी–मन्दी जाननी हो, उन–उन वस्तुओं को बराबर मात्रा में तोलकर, अलग–अलग कपड़ों में रखकर, निम्नांकित मन्त्र से अभिमन्त्रित करते हुए, गांठ बांध दें। प्रातः उठकर तोले, जो घटे तो वह वस्तु मंहगी होगी तथा जो बढ़े तो वह मन्दी रहेगी।

मन्त्र – "ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं लक्ष्म्यै नमः।"

(21) स्वप्न में सट्टा, लाटरी, तेज़ी–मन्दी जानने के लिए मन्त्र

मन्त्र – "ॐ हिलि हिलि शूलपाणये नमः।"

विधि – इसमन्त्र का पुरश्चरण ज्येष्ठ (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करना चाहिए। स्नान करके कम्बल के आसन पर बैठकर, सातदिन तक रात्रि में नियमित रूप से शिवजी को स्नान कराएं। फिर गाढ़े दही में कालेतिल, चावल मिलाकर पेड़ा बनाकर, शिवपिण्डी पर रख दें। तत्पश्चात् धूप–दीप–नैवेद्य एवं पुष्पों से शिवपूजन करके, आरती करने के बाद उपरोक्त मन्त्र का निष्ठापूर्वक जाप करें। इक्कीस मालाजाप प्रतिदिन बिना नागा करें, जप से पूर्व **"अभीष्टकार्य की सिद्धि के लिए मन्त्रजाप कर रहा हूँ"** – यह संकल्प अवश्य करें। मन्त्रजाप के बाद चुपचाप शयन करें, इच्छितकार्य का उत्तर स्वप्न में सही–सही मिलेगा,–यह मन्त्र विशिष्टव्यक्ति के द्वारा अनुभूत है।

(22) सर्वकार्यसिद्धि हेतु पंचदशी यन्त्र

इस यन्त्र को दीपावली, शिवरात्रि या शुभ मुहूर्त्त में भोजपत्र पर लिखें एवं शुद्ध चान्दी की डिब्बी या पूजास्थल में रखें। धनधान्य, समृद्धि एवं राजकार्य (मुकद्दमा आदि) में विजयार्थ शुद्ध अवस्था में अपने साथ लेकर जाएं वरना प्रतिदिन पूजास्थल पर धूप–दीप कर देना चाहिए।

पंचदशी यन्त्र		
८	१	६
३	५	७
४	९	२
सर्वकार्यसिद्धि हेतु		

(23) नवग्रह पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए यन्त्र

यदि कोई व्यक्ति किसी भी ग्रहविशेष के नेष्ट प्रभाव से पीड़ित है तो उस व्यक्ति को सामने दिए गए यन्त्र को कस्तूरी, गोरोचन या लाल चन्दन से लिखकर विधिवत् पूजन करके चान्दी आदि धातु के तावीज़ में मढ़ा कर गंगाजल या दूध से धोकर गले में या दाईं भुजा में धारण करे।

यन्त्र		
8	1	6
3	5 ह्रीं रवये	7
4	9	2

मानसिक शान्ति मिले, जीवन में समस्याएं दूर हों। यन्त्र मध्य में **'ह्रींरवये'** भी अवश्य लिखना होगा। यह चमत्कारी यन्त्र है।

नोट– इस यन्त्र को ग्रहणादि शुभ वेला में लिखना प्रारम्भ

करें। कम से कम 28 दिन तक इस यन्त्र को अष्टगन्ध से लिखकर विधिवत् पूजन करके ही प्रयोग में लाएं। यह यन्त्र अनुभूत है।

(24) चलते काम में रुकावट दूर करने के लिए बीसा यन्त्र

जेठे रविवार को या गुरुवार पुष्य नक्षत्र या रविवार पुष्य नक्षत्र वाले दिन कमलासन पर बैठकर दुर्गामाता का ध्यान करके धूप–दीप जलाकर इस यन्त्र को लिखें। लिखने के लिए केसर या लाल चन्दन, अनार की कलम प्रयोग में लाएं। बाद में यन्त्र का विधिवत् पूजन करें, तब प्रयोग में लाएं।

यन्त्र		
8	2	10
9	7	4
3	11	6

इस यन्त्र को धारण करने से कार्यों में सफलता, एवं प्रभावक्षेत्र बढ़ता है। यह यन्त्र बहुत चमत्कारी है, इसका पूर्ण प्रभाव इसे दीपावली की रात्रि में या ग्रहण के समय सिद्ध करके ही देख सकेंगे।

(25) ज्वरनाशक यन्त्र

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिखकर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधें तो वारी का बुखार दूर हो। पहले यन्त्र सिद्ध कर लेवें, फिर लिखकर देना शुरु करें।

यन्त्र			
प	व	क	0
3	49	8	33
35	87	5	39
51	7	3	25

(26) पुत्रदाता यन्त्र

इस यन्त्र को शुभदिन शुभ मुहूर्त में गोरोचन, कपूर, केसर एवं कस्तूरी से अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखें। यन्त्र की विधिवत् पूजा किंवा प्राणप्रतिष्ठा करके निःसन्तान स्त्री एवं पुरुष के गले, कमर या बाईं भुजा में बांधने से सद्यः सन्तान का सुख होता है।

हुं		स्वाहा
	ॐ ह्रीं ॐ	
वषट्		फट्

(27) सिद्ध आकर्षण विधान

कोई स्त्री, पुरुष या बालक घर से रूठकर चला गया हो, या विदेश गया हुआ व्यक्ति वापिस घर आने का विचार न रखता हो तो निम्नांकित विधान उसे घर बुलाने में अमोघ सिद्ध होता है।

कुम्हार के घर स्वयं जाकर एक नया पक्काघड़ा (जो कहीं से फुटा या रिसता न हो) एवं एक कसोरा ले आइए।

ध्यान रहे – इनमें कहीं भी काला दाग न हो। घड़े के ऊपर और कसोरे के बीच निम्नांकित नवार्ण मन्त्र का यन्त्र केसर से लिखें, साथ ही एक नवार्ण मन्त्र–यन्त्र केसर की मसी (स्याही) से भोजपत्र पर लिखकर, उसी घड़े में डाल दीजिए और तांबे के चार पैसे भी उसी में डाल दें। पैसे ज्यादा–कम न हों। यदि पैसे न मिलें तो तांबे के चार गोल पत्र डालें। कसोरे से ढककर घड़े को बाईं तरफ को सात बार घुमाते हुए, **"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"** इसमन्त्र को पढ़ते जाएं। घड़े को मन्त्रोच्चारण पूर्वक सात बार बाईं ओर घुमाकर एकान्त में रख दीजिए । ऐसा सात दिन करें। अर्थात् उसी घड़े के साथ यह प्रयोग सात दिन करें । सात दिन के अन्दर ही व्यक्ति चल पड़ेगा या किसी माध्यम से अपना पता देगा ।

घड़े के अन्दर एवं भोजपत्र पर लिखा जाने वाला यन्त्र यह है ,–

यन्त्र		
ऐं	ह्रीं	क्लीं
डा	मुं	चा
यै	वि	च्चे

नोट :– यह आकर्षण विधान करने से पहिले नवार्णमन्त्र का नियमपूर्वक सवालक्ष जाप करें एवं उल्लिखित–यन्त्र को दीपावली की रात में लिखकर, सिद्ध कर लेना चाहिए।

प्रसूति–लग्न विचार

मेष–जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष– माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका–स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन– माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क–माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामाग मे लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२– इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह– माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८– इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या–माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका–स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५– ये वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला– माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक–माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु–माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७– इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर– माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७– इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ–माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर–शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोतर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका–गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन– माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका–स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह–शान्ति–हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। **स्मरण रहे**–अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें – वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान– (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध–शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो– इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान– प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय–तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम–षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम–नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा— लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।। केन्द्र (१। ४। ७। १०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्— चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०— तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित—शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नादीपवर्तिज्ञानम्— जन्मलग्न के कम अंश हों तो बडी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः— यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोडें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोडें। लग्न—चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोडने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि— वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से वैधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या—शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०— मीन—मिथुन—सिंह—तुला—मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्— दोहा—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुह्रद् भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो— प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वमयाद् गर्भमेहि माचिर—माचिर स्वाहा।।"— इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। **स्मरण रहे कि**— पहले उपरोक्त मंत्र तथा **यन्त्र** ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो॰:— "धूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु—पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु—पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः— "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः— "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग— क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग— यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्क षट् मन्द बसे क्लिब भान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन में जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार–साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रैह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो०– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– झे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोडी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्मे तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि–यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्मे तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोड़कर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओ व पिता–पुत्र, माता या कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(1) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोडकर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो:	हस्ते	गुह्यो:	जंघा:	जान्वो:	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानि:	सासनाश:	ज्येष्ठनाश:	देवरनाश:

सुत: सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलज:। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादज:।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घडी, नन्दा तिथियो की शुरु की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए; तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वो:	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्यो:	जान्वो:	पादयो:
घटी	५	७	४०	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाश:	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जात:संहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशु:। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नै: शतौषधीमूलै: सप्तमृद्भि: प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रै: सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधै:। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभि:।।

अथाभुक्तमूलविचार:– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

...) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अंन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखमोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साधवी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्– अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्षै मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें या नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।।

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति–

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है।

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्पराग:	हीरा	नीलम:	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलट्ठी, लसूडे के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दर्शनं निवासस्य तत्ररात्रौ – "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।"– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नजरादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– "ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन। [illegible] ग्रहान् [illegible]।। ३।। बालग्रहानविशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। [illegible]।। ४।। – [illegible]

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानाद्राज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोशृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुञ्च रक्षा कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलवलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	गोशृंग, लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड़ के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उडदों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूड़े, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्‌भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूड़े 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन् हन् दुष्टानां ह्रां ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्त्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष............" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र–कष्टावली

रोग–नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोगदिन–संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	3		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो–अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्माययेति	सर्प को दूध–दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो–अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगप्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर–धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ–स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोघमेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोरराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी–पूओं की बलि छोड़ें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गऐ गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोडें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र–संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु– इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोडकर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर में गुरु–चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र–चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट– इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्–पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करे। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली मे रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम मे घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने

हुआ है, उसे चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करें। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंगविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति/मूत्राशय	लिंग/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोह	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोह	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुको को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्ध्यर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह ज़रूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार मे तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

घी, खाण्ड को यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं।

आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :–सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही मंगलव्रत के दिन अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; बुधव्रत के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा; गुरुव्रत के दिन भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; शुक्रव्रत के दिन इलायची, मजीठ तथा शनिव्रत के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिला, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओ से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :–........राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामात्रऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य– उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :–अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध-धूप– अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोघृत, सफेद चन्दन।

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो

राशि→	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
नक्षत्र→ चरण ↓	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
प्रथम चरण	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो
द्वितीय चरण	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या
तृतीय चरण	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी
चतुर्थ चरण	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू

राशि→	धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– **संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।**

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चादभवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। काममाक्चिन्तयेत् सर्व जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोडकर उसके चार भाग करे। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये धफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुसद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान मे प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पडते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने मे भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिको ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव मे चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

नक्षत्रचरण एवं नवांशराशि–बोधक सारणी

प्रियव्रत शर्मा

ग्रह या लग्न किस राशि, नक्षत्र एवं नक्षत्रचरण (नवांश) में विद्यमान है– यह इस सारणी से ग्रह एवं लग्न–राश्यादि द्वारा जाना जा सकता है। ध्यान रहे–यहां दिए गए राश्यादि वे हैं, जहां राशि एवं नक्षत्रचरण (नवांश) प्रारम्भ होता है। जैसे– स्पष्ट सूर्य 5 रा. 27 अं. 20 क. हो तो सारणी से ज्ञात हो जाता है कि– सूर्य कन्या राशि, चित्रा नक्षत्र–द्वितीय चरण तथा कन्या के नवांश में है। क्योंकि यहां सूर्य कन्या राशि के ही नवांश में है, अतः यह वर्गोत्तम नवांश में है। कोष्ठक में वर्गोतम नवांश के साथ स्टार (★) लगाया गया है। कन्या के नवांश का स्वामी बुध है– यह भी सारणी में निर्दिष्ट है।

इस सारणी की मदद से नवांशकुण्डली लगाना बहुत आसान है।

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
0 00 00	मेष अश्वि. 1	★मेष	मं.	3 00 00	कर्क पुन. 4	★कर्क	चं.	6 00 00	तुला चित्रा 3	★तुला	शु.	9 00 00	मकर उ. षा. 2	★मकर	श.
0 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	3 03 20	,, पुष्य 1	सिंह	सू.	6 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	9 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
0 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	3 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	6 06 40	,, स्वाती 1	धनु	गु.	9 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.
0 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	3 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.	6 10 00	,, ,, 2	मकर	श.	9 10 00	,, श्रव. 1	मेष	मं.
0 13 20	,, भर. 1	सिंह	सू.	3 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	6 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	9 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.
0 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	3 16 40	,, आश्ले. 1	धनु	गु.	6 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.	9 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
0 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	3 20 00	,, ,, 2	मकर	श.	6 20 00	,, विशा. 1	मेष	मं.	9 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.
0 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	3 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	6 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.	9 23 20	,, धनि. 1	सिंह	सू.
0 26 40	,, कृत्ति. 1	धनु	गु.	3 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.	6 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	9 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
1 00 00	वृष ,, 2	मकर	श.	4 00 00	सिंह मघा 1	मेष	मं.	7 00 00	वृश्चि. ,, 4	कर्क	चं.	10 00 00	कुम्भ ,, 3	तुला	शु.
1 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	4 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	7 03 20	,, अनु. 1	सिंह	सू.	10 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
1 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.	4 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	7 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	10 06 40	,, शत. 1	धनु	गु.
1 10 00	,, रोहि. 1	मेष	मं.	4 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	7 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.	10 10 00	,, ,, 2	मकर	श.
1 13 20	,, ,, 2	★वृष	शु.	4 13 20	,, पू.फा. 1	★सिंह	सू.	7 13 20	,, ,, 4	★वृश्चि.	मं.	10 13 20	,, ,, 3	★कुम्भ	श.
1 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	4 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	7 16 40	,, ज्येष्ठा 1	धनु	गु.	10 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.
1 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	4 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	7 20 00	,, ,, 2	मकर	श.	10 20 00	,, पू.भा. 1	मेष	मं.
1 23 20	,, मृग. 1	सिंह	सू.	4 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	7 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	10 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.
1 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	4 26 40	,, उ.फा. 1	धनु	गु.	7 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.	10 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
2 00 00	मिथुन ,, 3	तुला	शु.	5 00 00	कन्या ,, 2	मकर	श.	8 00 00	धनु मूल 1	मेष	मं.	11 00 00	मीन ,, 4	कर्क	चं.
2 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	5 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	8 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	11 03 20	,, उ.भा. 1	सिंह	सू.
2 06 40	,, आर्द्रा 1	धनु	गु.	5 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.	8 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	11 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
2 10 00	,, ,, 2	मकर	श.	5 10 00	,, हस्त 1	मेष	मं.	8 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	11 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.
2 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	5 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.	8 13 20	,, पू.षा. 1	सिंह	सू.	11 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
2 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.	5 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	8 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	11 16 40	,, रेव. 1	धनु	गु.
2 20 00	,, पुन. 1	मेष	मं.	5 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	8 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	11 20 00	,, ,, 2	मकर	श.
2 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.	5 23 20	,, चित्रा 1	सिंह	सू.	8 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	11 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
2 26 40	,, ,, 3	★मिथुन	बु.	5 26 40	,, ,, 2	★कन्या	बु.	8 26 40	,, उ.षा. 1	★धनु	गु.	11 26 40	,, ,, 4	★मीन	गु.

बारह राशियों का मासिक फलादेश एवं संक्रान्ति फलादेश (सम्वत् 2072 वि.)

वैशाख मास

मेषसंक्रान्ति (14 अप्रैल से 14 मई, सन् 2015 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्न में स्वराशिस्थ मंगल, सूर्य एवं बुध के साथ मेल कर रहा है। अफगानिस्तान, पाक एवं अरबराष्ट्रों में कहीं उग्रवाद से अशान्ति; अमेरिका, चीन एवं कुछ अन्य मुस्लिम राष्ट्रों में प्राकृतिक आपदा से भारी हानि के योग हैं। भारत की प्रभावराशि के अनुसार भारत में आश्चर्यजनक प्रगति के योग बनेंगे। मंगल एवं बुधादित्य योग के कारण घी, गुड़, तेल, तिलहन एवं सोना–चान्दी में भारी मन्दी या तेजी के झटके आएंगे।

वैशाखसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

2 शु.
12 के.
3
सू. 1 मं. बु.
11
4 गु.
10 चं.
5
7
9
रा. 6
8 श.

मेषसंक्रान्ति प्रवेशकाल =14 अप्रैल, 2015 ई.; 13 घं. 46 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल 7/22 बाद,

वैशाख मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– मंगल–सूर्य–बुध मेषस्थ होने से सेहत ठीक रहे। राजकीय कामों में परेशानी, शनि–शुक्र का समसप्तक मित्र–बन्धु से अनबन का कारण बने एवं आर्थिक संकट से परेशानी रहे। **अप्रैल** 17, 18, 25, 26, 27; **मई** 5, 6, 14 **अशुभ हैं।**

वृष– स्वराशिस्थ शुक्र पर शनि की दृष्टि है, जोकि स्वास्थ्य को खराब करेगी। बुधादित्ययोग आर्थिक स्थिति को ठीक रखेगा। व्यापार एवं कारोबार में नई योजनाओं से लाभ होगा। निजी लोगों से सुख एवम् अच्छे लोगों से मुलाकात होगी। विरोधीपक्ष कमज़ोर रहे। **अप्रैल 19, 20, 28, 29; मई 8, 9 अशुभ हैं।**

मिथुन– शरीरकष्ट, वायुविकार, आर्थिकक्षेत्र में प्रगति, निजी लोगों से अनबन, जमीन–जायदादसम्बन्धी विवाद, स्त्रीपक्ष से लाभ, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। **अप्रैल** 21, 22, 30; **मई** 1, 2, 10, 11 **अशुभ।**

कर्क– लग्नस्थ उच्च बृहस्पति नई–नई योजनाओं से लाभ देगा। घर में शुभकार्य हों। जमीन–जायदाद का लाभ। कारोबार में प्रगति हो। अच्छे लोगों से मेल हो। **अप्रैल** 15, 16, 23, 24 **मई** 3, 4, 12, 13 **अशुभ।**

सिंह– सेहत ठीक रहे। आर्थिक संकट से परेशानी बने। सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट। सूर्य–शनि का दान करें। कारोबार में प्रगति। **अप्रैल** 17, 18, 25, 26, 27; **मई** 5, 6, 14 **अशुभ।**

कन्या– शरीर में वायुविकार, क्रोध बढ़े। अचानक आर्थिक हानि से मन खिन्न रहे। निजीलोगों से अनबन, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार बने। **अप्रैल** 19, 20, 28, 29; **मई** 8, 9 **अशुभ हैं।**

तुला– रक्त–पित्त विकार से परेशानी। आर्थिक संकट; निजीलोगों से मदद। राजपक्ष से लाभ। **अप्रैल** 21, 22, 30; **मई** 1, 2, 10, 11 **अशुभ।**

वृश्चिक– रक्तपित्त विकार, शूगर या रक्तचाप से परेशानी, आर्थिक संकट रहे। जल व अग्नि से भय। **अप्रैल** 15, 16, 23, 24; **मई** 3, 4, 12, 13 **अशुभ।**

धनु– सेहत ठीक रहे। धनस्थान पर बृहस्पति की दृष्टि होने से उत्तम लाभ मिले। बन्धुकष्ट; विद्यार्थियों के लिए समय ठीक। कारोबार में रद्दोबदल हो। **अप्रैल** 17, 18, 25, 26, 27; **मई** 5, 6, 14 **अशुभ हैं।**

मकर– सेहत ठीक रहे। वृथाव्यय हो। निजीजन कष्ट। सट्टा व व्यापार में हानि। स्त्रीसुख, जमीन–जायदादसम्बन्धी लाभ रहे। कारोबार सम्भले। **अप्रैल** 19, 20, 28, 29; **मई** 8, 9 **अशुभ हैं।**

कुम्भ– आर्थिक संकट, मित्रबन्धु से लाभ। गुप्तशत्रु से भय; यात्रा में कष्ट। कारोबार कमजोर। कर्जे से परेशानी। **अप्रैल** 21, 22, 30; **मई** 1, 2, 10, 11 **अशुभ।**

10, 11 अशुभ।

मीन— सेहत गड़बड़ रहे। धनलाभ होकर विशेष खर्च हो। मित्र–बन्धु से मदद। गुप्त चिन्ता। मासान्त में लाभ की स्थिति बने। **अप्रैल** 15, 16, 23, 24; **मई** 3, 4, 12, 13 **अशुभ**।

ज्येष्ठ मास
वृषसंक्रान्ति (15 मई से 14 जून, सन् 2015 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति— सूर्य, बुध एवं मंगल लग्न में शनि से दृष्ट हैं। अतः देश के कुछ प्रान्तों में उग्रवादजन्य परेशानी रहे एवं कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा तथा सूखा आदि से परेशानी बने। भारत की प्रभावराशि मकर पर बृहस्पति की दृष्टि होने से नई–नई योजनाएं कार्यान्वित हों। पाकिस्तान एवं अरब राष्ट्रों में विस्फोट आदि से जन–धनहानि के योग भी बनते हैं। शनि–मंगल की स्थिति के अनुसार घी, कपास, चीनी, तेल–तिलहन में जोरदार तेजी से लाभ मिलेगा।

वृषसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 15 मई, 2015 ई.; 10 घं. 37 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल 17 घं. 1 मि. तक,

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष— शनि–मंगल की स्थिति सेहत के लिए ठीक नहीं। मानसिक परेशानी रहे। जमीन–जायदादसम्बन्धी विवाद बढ़ेंगे। राजपक्ष से हानिभय। **मई** 23, 24; **जून** 2, 3, 10, 11, 12 **अशुभ**।

वृष— बुध–मंगल की स्थिति शारीरिक स्वास्थ्य को खराब करे। स्थिर–सम्पदा सम्बन्धी विवाद बढ़ें। आर्थिक लाभ हो। गुप्त शत्रु से सावधान। मासान्त शुभ। **मई** 16, 17, 25, 26, 27; **जून** 4, 5, 13, 14 **अशुभ**।

मिथुन— सेहत ठीक। निजी लोगों से अनबन। बन्धुकष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता। कारोबार में रुकावट। **मई** 18, 19, 28, 29; **जून** 6, 7 **अशुभ**।

कर्क— सेहत ठीक रहे। कर्जा सिर चढ़े। निजी लोगों से अनबन। नई योजना से हानि। **मई** 21, 22, 30, 31; **जून** 1, 8, 9 **अशुभ**।

सिंह— आर्थिक संकट बने। रक्त–पित्तविकार। बन्धुकष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ। कारोबार में रद्दोबदल हो। **मई** 23, 24; **जून** 2, 3, 10, 11, 12 **अशुभ**।

कन्या— कर्जे से परेशानी। लड़ाई–झगड़े से बचें। राजपक्ष से भय। शत्रु प्रबल। किसी की मदद से कारोबार में अच्छा लाभ मिले। **मई** 16, 17, 25, 26, 27; **जून** 4, 5, 13, 14 **अशुभ**।

तुला— समय उलझनपूर्ण परिस्थिति बनाए। अपमानभय। स्त्रीपक्ष से चिन्ता। आय से व्यय अधिक। **मई** 18, 19, 28, 29; **जून** 6, 7 **अशुभ**।

वृश्चिक— कफ–वायुविकार से परेशानी। अर्थलाभ होकर हानिभय। वृथा विवाद से से दूर रहें। पार्टनरशिप में धोखा। भाई–बन्धु से सहायता मिले। कारोबार में रद्दोबदल। **मई** 21, 22, 30, 31; **जून** 1, 8, 9 **अशुभ**।

धनु— सेहत ठीक रहे। आर्थिक संकट बना रहे। निजी लोगों से सहयोग। सन्तानपक्ष से चिन्ता। स्त्रीपक्ष से लाभ हो। **मई** 23, 24; **जून** 2, 3, 10, 11, 12 **अशुभ**।

मकर— रक्त–पित्तविकार। जमीन–जायदादसम्बन्धी परेशानी। यात्रा सुखद रहे। कारोबार में रद्दोबदल करना पड़े। **मई** 16, 17, 25, 26, 27; **जून** 4, 5, 13, 14 **अशुभ**।

कुम्भ— उदर–विकार, बन्धुकष्ट। नई योजना व कारोबार से लाभ। सन्तापपक्ष से शुभ समाचार मिले। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। **मई** 18, 19, 28, 29; **जून** 6, 7 **अशुभ**।

मीन— रक्त–पित्तविकार। अच्छे लोगों से मेल–मुलाकात हो। वृथाव्यय से परेशानी। कारोबार ठीक। मासान्त में विशेष खर्च हो। **मई** 21, 22, 30, 31; **जून** 1, 8, 9 **अशुभ**।

आषाढ़ मास

मिथुनसंक्रान्ति (15 जून से 15 जुलाई, सन् 2015 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्न में मिथुनराशि का सूर्य एवं लग्नेश बुध द्वादशस्थ होकर मंगल और शनि के साथ समसप्तक योग बना रहा है। जोकि राजनैतिक दृष्टि से प्रगतिपद योजनाओं में बाधा उपस्थित करेगा। **पुनरपि–** भारत का शासनतन्त्र प्रगतिपद योजनाओं को कार्यान्वित करने में सफल होगा। ब्रिटेन, अमेरिका एवं कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में उग्रवादजन्य कष्टप्रद घटनाएं घटित हो सकती हैं। भारतवर्ष के उत्तरी एवं पश्चिमी भूमाग पर कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी सम्भव है। कुण्डली में मंगल–शनि और शुक्र की स्थिति दालवाना, अनाज, चीनी, तेल–तिलहन में तेज़ीकारक मालूम देती है।

आषाढ़संक्रान्ति–ग्रहस्थिति

गु. 4 शु.
चं.2मं.बु.
5
सू. 3
1
6 रा.
के. 12
7
9
11
8 श.
10

मिथुनसंक्रान्ति प्रवेशकाल =15 जून, 2015 ई., 17 घं. 11 मि. (I.S.T.)
मु. 45, पुण्यकाल 10 घं. 47 मि. बाद,

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सेहत ठीक रहे। आर्थिक लाभ हो। स्थिर सम्पतिसम्बन्धी विवाद उलझें। स्त्रीपक्ष से लाभ। कारोबार मेंरद्दोबदल। जून 19, 20, 29, 30; जुलाई 8, 9 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक रहे। धनलाभ होकर हाथ से निकले। निजीजनों से अनबन। सन्तानपक्ष से चिन्ता। कारोबार गड़बड़। **जून** 21, 22, 23; **जुलाई** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मिथुन– रक्त–पित्तविकार। आर्थिक संकट से परेशानी। बन्धुकष्ट, स्त्रीकष्ट। कारोबार ठीक। **जून** 16, 24, 25, 26; **जुलाई** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कर्क– उदरविकार, शत्रुप्रबल, बन्धुकष्ट, गुप्त चिन्ता। आय से व्यय अधिक। **जून** 17, 18, 27, 28; **जुलाई** 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।

सिंह– वायुरोग से परेशानी, कारोबार में तरक्की, मासान्त में आय से व्यय अधिक। **जून** 19, 20, 29, 30; **जुलाई** 8, 9 अशुभ।

कन्या– यात्रा में कष्ट, अग्नि व जल से भय। सन्तानपक्ष से चिन्ता। स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ। **जून** 21, 22, 23; **जुलाई** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक रहे। शत्रु कमज़ोर। कारोबार में रुकावट। सम्पदा–विवाद। शत्रु से सावधान। **जून** 16, 24, 25, 26; **जुलाई** 3, 4, 12, 13 **अशुभ।**

वृश्चिक– त्वचा रोग व पित्त–विकार। अचानक भारी खर्च आ पड़े। स्त्रीपक्ष शुभ। कारोबार में विशेष हानि व रद्दोबदल। **जून** 17, 18, 27, 28; **जुलाई** 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।

धनु– मन परेशान रहे। घरेलू झगड़े उजागर हों। अशुभ समाचार। कारोबार में रुकावट। मासान्त में वृथाव्यय हो। **जून** 19, 20, 29, 30; **जुलाई** 8, 9 अशुभ।

मकर– उदर विकार, निजीजनकष्ट, संतानपक्ष शुभ। गुप्त चिन्ता, आय से व्यय अधिक। जून 21, 22, 23; जुलाई 1, 2, 10, 11 अशुभ।

कुम्भ– शनि–मंगल का दृष्टिसम्बन्ध खराब है। सिर व नेत्रकष्ट। धनलाभ होकर हानिभय। अच्छे लोगों से मेल हो। यानदुर्घटना से सावधान। मासान्त में आय से व्यय अधिक। **जून** 16, 24, 25, 26; **जुलाई** 3, 4, 12, 13 **अशुभ।**

मीन– चोटभय, धनलाभ हो, बन्धुसुख, संततिकष्ट, शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, राजपक्ष से भय। **जून** 17, 18, 27, 28; **जुलाई** 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।

22. 23; जुलाई 1. 2. 10. 11 अशुभ।

स्त्रीपक्ष से चिन्ता, राजपक्ष से भय। जून 17, 18, 27, 28; जुलाई 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।

श्रावण मास

कर्कसंक्रान्ति (16 जुलाई से 16 अगस्त, सन् 2015 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नेश चन्द्र लग्न में सूर्य के साथ है। प्रधान शासकों का मनोबल प्रबल रहेगा। सूर्य धनेश होकर लग्नेश के साथ है एवं द्वितीयस्थान में गुरु–शुक्र एकत्र हैं। अतः देश में प्रगतिकारक योजनाएं कार्यान्वित्त होंगी। तृतीयस्थ राहु प्रधान नेता के मनोबल को उत्साहित करे। लेकिन शनि–मंगल का षडष्टक कहीं उग्रवाद से राजनैतिक विप्लव करे। सरसों, तेल, घी, चीनी, सोना, चान्दी के भावों में ज़ोरदार तेज़ी या मन्दी के रिएक्शन्ज़ आऐंगे।

कर्कसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 16 जुलाई, 2015 ई.; 28 घं. 02 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सूर्य–चन्द्र लग्न में मनोबल को प्रबल करेंगे। धनस्थान शुक्र–गुरु से युत होने से आर्थिक स्थिति अच्छी रहे। निजीजन से अनबन। सन्तान किंवा विद्या-पक्ष से चिन्ता। स्त्रीकष्ट, गुप्त शत्रु से सावधान। शनि–मंगल कष्टप्रद हैं। **जुलाई** 17, 18, 26, 27, 28; **अगस्त** 4, 5, 13, 14 **अशुभ।**

वृष– सेहत गड़बड़, आर्थिक कमज़ोरी परेशान करे। निजीजन को कष्ट। कारोबार कमज़ोर। स्त्रीपक्ष से अनबन रहे। **जुलाई** 19, 20, 29, 30; **अगस्त** 6, 7, 15, 16 **अशुभ।**

मिथुन– उदरविकार, सम्पत्तिविवाद, निजीलोगों से अनबन, मन अशान्त, कार्यान्तर से लाभ, मासान्त में मित्र–बन्धु से सहायता मिले। **जुलाई** 21, 22, 23, 31; **अगस्त** 1, 8, 9 **अशुभ।**

कर्क– सेहत ठीक, अचानक विशेष खर्च आ पड़े। शत्रु प्रबल हों, स्त्रीपक्ष से मदद, कारोबार में रद्दोबदल हो। **जुलाई** 24, 25; **अगस्त** 2, 3, 10, 11, 12 **अशुभ।**

सिंह– हालात अनुकूल रहें, क्रोध बढ़े, वृथाविवाद से दूर रहें। आय से व्यय अधिक हो, बन्धु एवं स्त्रीपक्ष से सुख मिले। सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। शनि–सूर्यदान से लाभ हो। **जुलाई** 17, 18, 26, 27, 28; **अगस्त** 4, 5, 13, 14 **अशुभ।**

कन्या– सेहत ठीक रहे। आर्थिक संकट से मन चिन्तित, स्त्रीपक्ष से अनबन, कारोबार से मासान्त में उत्तम लाभ मिले। **जुलाई** 19, 20, 29, 30; **अगस्त** 6, 7, 15, 16 **अशुभ।**

तुला– शूगर किंवा रक्त–पित्तविकार से परेशानी, वृथा व्यय हो। आर्थिक स्थिति सुधरेगी। बन्धुकष्ट, शत्रु कमजोर, राजपक्ष से लाभ, धर्म–कर्म में खर्च हो। **जुलाई** 21, 22, 23, 31; **अगस्त** 1, 8, 9 **अशुभ।**

वृश्चिक– सेहत गड़बड़, कर्जा बढ़े, बन्धु से मदद, सन्तान–विद्यापक्ष शुभ, स्त्रीसुख, शत्रु कमज़ोर, मासान्त में कारोबार गड़बड़ रहे। **जुलाई** 24, 25; **अगस्त** 2, 3, 10, 11, 12 **अशुभ।**

धनु– पेट में विकार रहे। वृथा व्यय हो। बन्धु से मनमुटाव, सन्तान–सुख, उलझे हुए मसले हल हों। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ। **जुलाई** 17, 18, 26, 27, 28; **अगस्त** 4, 5, 13, 14 **अशुभ।**

मकर– रक्त–पित्तविकार, आर्थिक लाभ हो, भ्रातृपक्ष से चिन्ता, सन्तति–सुख, शत्रु कमज़ोर, अशुभ समाचार, कारोबार ठीक रहे। **जुलाई** 19, 20, 29, 30; **अगस्त** 6, 7, 15, 16 **अशुभ।**

कुम्भ– सेहत ठीक, अर्थ लाभ होकर खर्च विशेष हो। निजीजन–सहयोग, अच्छे लोगों से मेल हो। नई योजना से हानिभय, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मासान्त में कार्यान्तर से लाभ हो। **जुलाई** 21, 22, 23, 31; **अगस्त** 1, 8, 9 **अशुभ।**

मीन– सेहत ठीक रहे, वृथा विवाद से दूर रहें। आर्थिक लाभ होकर खर्च विशेष हो। बन्धु–सुख, मित्रविशेष से अनबन, शत्रुपक्ष कमज़ोर रहे। कारोबार में लाभ हो। **जुलाई** 24, 25; **अगस्त** 2, 3, 10, 11, 12 **अशुभ।**

भाद्रपद मास

सिंहसंक्रान्ति (17 अगस्त से 16 सितंबर, सन् 2015 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति— लग्नस्थ ग्रहचतुष्टयी पर शनि की विशेष दृष्टि देश में कहीं रोग किंवा परेशानी पैदा करे। शनि–मंगल का षडष्टक मुस्लिम देशों में कहीं उग्रवादजन्य अशान्ति का कारण बनेगा। लग्न में बुध, गुरु, सूर्य, चन्द्र– देश के लिए नई प्रगतिपद योजनाओं में विशेष व्यय कराएंगे। पाक के लिए यह मास विशेष परेशानी वाला है। घी, चीनी, पैट्रोल, डीज़ल एवं खाद्य पदार्थ तेज़ रहें।

भाद्रपदसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

रा. 6
शु. 4 मं.
7
सू. 5 बु. गु. चं.
3
श. 8
2
9
11
1
10
के. 12

सिंहसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 17 अगस्त, 2015 ई.; 12 घं. 25 मि. (I.S.T.)
मु. 45, पुण्यकाल 6 घं. 01 मि. से 18 घं. 49 मि. तक,

भाद्रपद मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष— सेहत ठीक रहे, अर्थहानि से परेशानी, मित्र–बन्धुकष्ट, यात्रा में कष्ट, जायदादसम्बन्धी विवाद, संतति सुख, कारोबार ठीक, नेत्रकष्ट से सावधान। **अगस्त** 23, 24, 31; **सितंबर** 1, 9, 10 अशुभ।

वृष— उदरविकार, आय से व्यय अधिक, बन्धुकष्ट, नई योजनाओं से लाभ, अच्छे लोगों से मेल, मासान्त में मित्र या बन्धु से मदद, मासान्त में अपमानभय। **अगस्त** 25, 26; **सितंबर** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

मिथुन— रक्तचाप (Blood Pressure), वृथा विवाद से दूर रहें, कर्जा बढ़े, निजीजन–सहयोग मिले, स्थायी सम्पत्ति–विवाद, स्त्रीकष्ट, मासान्त में अशुभ समाचारमय। **अगस्त** 18, 19, 27, 28; **सितंबर** 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

कर्क— शरीर में रोगभय, रक्त में खराबी से परेशानी, आर्थिक स्थिति एवं कारोबार में सुधार हो, निजीजन–विरोध, गुप्त शत्रु से भय, आय से व्यय अधिक हो। **अगस्त** 20, 21, 22, 29, 30; **सितंबर** 7, 8, 16 अशुभ।

सिंह— सेहत ठीक रहे, धनलाभ होकर हाथ से निकले, बन्धु–सुख, मित्र से अनबन, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार गड़बड़, आय से व्यय अधिक हो। **अगस्त** 23, 24, 31; **सितंबर** 1, 9, 10 अशुभ।

कन्या— कुटुम्ब में कष्टभय, कारोबार ठीक, स्त्री व बन्धुकष्ट, सन्तति चिन्ता, अच्छे लोगों से मेल हो, पुराने मसले हल हों। **अगस्त** 25, 26; **सितंबर** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

तुला— यात्रा में धनहानिभय, निजीजनों से अनबन, गुप्त शत्रु से अपमानभय, कारोबार में रद्दोबदल हो। **अगस्त** 18, 19, 27, 28; **सितंबर** 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

वृश्चिक— कफ–वायुविकार, असफल योजना, शत्रुपक्ष कमज़ोर रहे, राहु–मंगल–शनि का दान करें। मासान्त में कारोबार में लाभ हो। **अगस्त** 20, 21, 22, 29, 30; **सितंबर** 7, 8, 16 अशुभ।

धनु— सेहत ठीक रहे, सम्पत्तिसम्बन्धी विवाद खड़े हों, सन्तति–सुख, विरोधी कमज़ोर रहें। मासान्त में कारोबार ठीक रहे। **अगस्त** 23, 24, 31; **सितंबर** 1, 9, 10 अशुभ।

मकर— रक्त–पित्तविकार, असफल योजना, बन्धुकष्ट, मित्र सहायक हों। आमदन से व्यय अधिक हो। **अगस्त** 25, 26; **सितंबर** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

कुम्भ— धनहानि भय, नेत्रकष्ट, भाई से सुख, सम्पत्ति–विवाद को शान्ति से हल करें। स्त्रीपक्ष से लाभ, व्यवसाय में रद्दोबदल हो। **अगस्त** 18, 19, 27, 28; **सितंबर** 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

मीन— शत्रुपक्ष कमज़ोर हो, धनलाभ होकर खर्च भी विशेष रहे। भाई–बन्धु से अनबन, नई योजना बने, स्त्रीपक्ष से लाभ हो। **अगस्त** 20, 21, 22, 29, 30; **सितंबर** 7, 8, 16 अशुभ।

आश्विन मास

कन्या–संक्रान्ति (17 सितम्बर से 16 अक्तूबर, सन् 2015 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– संक्रान्ति–कुण्डली में केन्द्र में *'बुधादित्य योग'* राहु के साथ बन रहा है। देश में नई जागृति हो एवं प्रगतिपद–योजनाओं को शासक सकारात्मक रूप देंगे। शनि–मंगल का दशम–चतुर्थसम्बन्ध कहीं सुनामी और कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि–कारक मालूम देता है। गुड़, घी, दालवाना एवं तेल में महंगाई हो। अरबराष्ट्र, पाक, अफगानिस्तान एवं अमेरिका आदि में कोई दुर्घटना हो।

कन्या–संक्रान्ति प्रवेशकाल =17 सितंबर, 2015 ई.; 12 घं. 19 मि. (I.S.T.) मु. 15, पुण्यकाल सारादिन,

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– उदरविकार, मन चिन्तित रहे। भ्रातृ–कष्ट, मित्रजन सहयोग मिले, सन्तति–सुख, स्त्रीपक्ष व गुप्त शत्रु से परेशानी, आय से व्यय अधिक हो। **सितंबर** 19, 20, 28, 29; **अक्तूबर** 6, 7, 8, 16 अशुभ।

वृष– मन चिन्तित रहे। बन्धु–सुख, सन्तानपक्ष से प्रसन्नता, विरोधी कमज़ोर, कारोबार ठीक रहे, आर्थिक संकट रहे। **सितंबर** 21, 22, 23, 30; **अक्तूबर** 1, 9, 10 अशुभ।

मिथुन– सेहत गड़बड़ रहे। अचानक धनप्राप्ति योग है। भाई–बन्धु से सुख मिले। स्त्रीकष्ट योग है। कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक। **सितंबर** 24, 25; **अक्तूबर** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

कर्क– कफ–पित्तविकार, मित्र–बन्धुकष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्री–सुख, धर्म–कर्म में मन लगे, अर्थहानि, कारोबार कुछ ठीक हो। **सितंबर** 18, 26, 27; **अक्तूबर** 4, 5, 14, 15 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक रहे, धनलाभ हो, निजीजनकष्ट, सन्तति व स्त्रीपक्ष से शुभ समाचार, कार्यान्तर से लाभ हो। **सितंबर** 19, 20, 28, 29; **अक्तूबर** 6, 7, 8, 16 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक रहे, क्रोध बढ़े, धनलाभ, घरेलू झंझट बढ़ें, निजीजन विरोध करें, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार गड़बड़ रहे। **सितंबर** 21, 22, 23, 30; **अक्तूबर** 1, 9, 10 अशुभ।

तुला– पेट में तकलीफ से परेशानी, आर्थिक चिन्ता रहे, निजीजनों से अनबन, पुत्र एवं स्त्रीपक्ष शुभ, अशुभ समाचारभय है। **सितंबर** 24, 25; **अक्तूबर** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

वृश्चिक– वायुरोग से कष्ट, धनलाभ, लेकिन व्यय अधिक हो, निजीजन–सहयोग मिले। स्त्रीकष्ट, सन्तति–सुख, राजपक्ष से भय रहे। **सितंबर** 18, 26, 27; **अक्तूबर** 4, 5, 14, 15 अशुभ।

धनु– रुधिरविकार, कारोबार में प्रगति हो, धनलाभ हो, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मित्र–बन्धुसुख, अच्छे लोगों से मेल हो। **सितंबर** 19, 20, 28, 29; **अक्तूबर** 6, 7, 8, 16 अशुभ।

मकर– सेहत ठीक रहे। निजीजन से सुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्री–सुख, यात्रा में हानिभय। **सितंबर** 21, 22, 23, 30; **अक्तूबर** 1, 9, 10 अशुभ।

कुम्भ– गुप्त चिन्ता, धनलाभ होकर हानिभय, बन्धुकष्ट, स्त्रीपक्ष से मदद, कारोबार में रद्दोबदल हो। **सितंबर** 24, 25; **अक्तूबर** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

मीन– वायुविकार, राजपक्ष से भय, धनलाभ होकर भी कर्ज़ा सिर चढ़े, भाई से मदद, मित्र–बन्धुकष्टयोग है। नई योजना से लाभ हो। **सितंबर** 18, 26, 27; **अक्तूबर** 4, 5, 14, 15 अशुभ।

कार्त्तिक मास

तुलासंक्रान्ति (17 अक्तूबर से 15 नवम्बर, सन् 2015 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नस्थ सूर्य पाक, अफग़ानिस्तान एवं अमेरिका, चीन आदि में प्राकृतिक प्रकोप से हानि करे। किसी देश–विशेष में प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो। द्वितीय स्थान में नीच चन्द्र का शनि के साथ मेल होने से कुछ देश आर्थिक संकट में घिरेंगे। शनि–मंगल का परस्पर दृष्टिसम्बन्ध प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए शुभ नहीं।

कार्त्तिकसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

- श. 8 चं.
- 6 बु. रा.
- 9
- सू. 7
- 5 शु. गु. मं.
- 10
- 4
- 11
- 1
- 3
- के. 12
- 2

गुड़, चीनी, दालवाना एवं अन्य अनाजों में वायदा व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

> तुला–संक्रान्ति प्रवेशकाल =17 अक्तूबर, 2015 ई.; 24 घं. 06 मि. (I.S.T.)
> मु. 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

कार्त्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– रक्त–पित्तविकार, अर्थहानि एवं कारोबार गिरावट की ओर रहे। चोटभय, शनि–मंगल–राहु का दान करें। बन्धु से मदद मिले। शत्रु बढ़ें, आय से व्यय अधिक। **अक्तूबर** 18, 25, 26; **नवम्बर** 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

वृष– वायुविकार, गुप्तचिन्ता, निजीजनों द्वारा सहयोग। सन्ततिसुख, राजपक्ष से भय, स्त्रीसुख, कारोबार में रुकावट आए। **अक्तूबर** 19, 20, 27, 28; **नवम्बर** 5, 6, 15 अशुभ।

मिथुन– सेहत ठीक रहे, धनलाभ, भ्रातृसुख, मित्र–बन्धुकष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ, शुभ कार्य में व्यय हो। मासान्त में विशेष खर्च। **अक्तूबर** 21, 22, 29, 30; **नवम्बर** 7, 8, 9 अशुभ।

कर्क– रक्त–पित्तविकार रहे। अर्थलाभ होकर विशेष खर्च हो। निजीजन को कष्ट हो। मित्र से सहयोग। सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष शुभ। कारोबार में रुकावट आए। **अक्तूबर** 23, 24, 31; **नवम्बर** 1,10, 11 अशुभ।

सिंह– क्रोध बढ़े, गुप्तचिन्ता से मन परेशान रहे। कर्जा सिर चढ़े। सन्तान–सुख। कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। **अक्तूबर** 18, 25, 26; **नवम्बर** 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

कन्या– Blood Pressure से परेशानी, उदरविकार, धनलाभ, सट्टे के व्यापार व शेयरों से भी लाभ हो, स्त्रीपक्ष से परेशानी, कारोबार ठीक रहे। **अक्तूबर** 19, 20, 27, 28; **नवम्बर** 5, 6, 15 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक रहे, आर्थिक संकट का सामना करना पड़े। मित्र–बन्धु से सहायता, शुभ कार्य हो। स्त्रीकष्ट, शत्रुप्रबल, कारोबार ठीक रहे। **अक्तूबर** 21, 22, 29, 30; **नवम्बर** 7, 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक– रक्त–पित्तविकार, प्रगति का अवसर मिलेगा, नई योजना से लाभ, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में लाभ, कर्जे से मुक्ति मिले। **अक्तूबर** 23, 24, 31; **नवम्बर** 1, 10, 11 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक रहे। अपनी भूल को सुधारें। राजपक्ष से भय, अपमानभय है। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। **अक्तूबर** 18, 25, 26; **नवम्बर** 2, 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

मकर– आर्थिक उलझनें बढ़ें, निजीलोगों से अनबन, यात्रा में कष्ट स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार में सुधार हो। अक्तूबर 19, 20, 27, 28; **नवम्बर** 5, 6, 15 अशुभ।

कुम्भ– रक्त में शूगर की मात्रा मिले, वृथा व्यय हो, घरेलू झंझट बढ़ें। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, शुभकार्य में मन लगे। **अक्तूबर** 21, 22, 29, 30; **नवम्बर** 7, 8, 9 अशुभ।

मीन– उदरविकार, अर्थहानि एवं कर्ज़ से परेशानी, ज़मीन–जायदादसम्बन्धी विवाद, मासान्त में अचानक लाभ की स्थिति बने। **अक्तूबर** 23, 24, 31; **नवम्बर** 1,10, 11 अशुभ।

मार्गशीर्ष मास

वृश्चिकसंक्रान्ति (16 नवम्बर, से 15 दिसम्बर, सन् 2015 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– वृश्चिक–राशिस्थ शनि–सूर्य राजनैतिक दृष्टि से वृश्चिक, मकर, वृष एवं सिंह राशि वाले शासकों एवं राजनीतिज्ञों के लिए कष्टमय परिस्थिति का संकेत देते हैं। सुरक्षा का विशेष प्रावधान रखना होगा। पाक–अफ़ग़ानिस्तान, अरबराष्ट्र एवं भारत के जम्मू–काश्मीर, छत्तीसगढ़ आदि में उग्रवादजन्य उपद्रवों से जनहानि के योग हैं। चना, तिल, तेल, मक्का, चावल एवं दालवाना के व्यापारी तेज़ी से लाभ में रहेंगे।

मार्गशीर्षसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

चं. 9
7 बु.
10
सू. 8 श.
6 रा. शु. मं.
11
5 गु.
के. 12
2
4
1
3

वृश्चिक–संक्रान्ति प्रवेशकाल =16 नवंबर, 2015 ई.; 24 घं. 03 मि. (I.S.T.) मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न के बाद,

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– वायुविकार, अर्थलाभ होकर भी खर्च अधिक हो, बन्धुसुख, सन्ततिकष्ट, कारोबार में प्रगति की योजना बने। **नवम्बर** 21, 22, 23, 30; **दिसम्बर** 1, 10, 11 **अशुभ।**

वृष– मन का उत्साह बना रहे, कारोबार में प्रगति, समस्याएं हल हों, शत्रुपक्ष कमज़ोर, धर्म–कर्म में मन लगे। **नवम्बर** 24, 25; **दिसम्बर** 2, 3, 4, 12, 13 **अशुभ।**

मिथुन– सेहत ठीक , मित्रबन्धुकष्ट, स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार में रद्दोबदल, मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। **नवम्बर** 17, 18, 26, 27; **दिसम्बर** 5, 6, 14, 15 **अशुभ।**

कर्क– रक्तविकार, वृथाव्यय हो, निजीजन–सहयोग, मित्रों से अनबन, स्त्रीपक्ष से सुख, कार्यान्तर से लाभ। नवंबर 19, 20, 28, 29; **दिसम्बर** 7, 8, 9 **अशुभ।**

सिंह– उदरविकार, आकस्मिक धनलाभ हो, मित्र–बन्धु से मदद, सन्तानपक्ष से सुख, स्त्री से अनबन, मासान्त में विशेष व्यय हो। **नवम्बर** 21, 22, 23, 30; **दिसम्बर** 1, 10, 11 **अशुभ।**

कन्या– वायुविकार, बन्धुसुख, अच्छे लोगों से मेल, नई योजना से लाभ, शत्रुपक्ष से चिन्ता, धर्म–कर्म में मन लगे। **नवम्बर** 24, 25; **दिसम्बर** 2, 3, 4, 12, 13 **अशुभ।**

तुला– रुधिरविकार, भ्रातृसुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार किंवा हिस्सेदारी में रद्दोबदल हो। **नवम्बर** 17, 18, 26, 27; **दिसम्बर** 5, 6, 14, 15 **अशुभ।**

वृश्चिक– सेहत ठीक रहे, धनलाभ हो। शत्रु कमज़ोर, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल हो। नवंबर 19, 20, 28, 29; **दिसम्बर** 7, 8, 9 **अशुभ।**

धनु– मन प्रसन्न रहे, धनलाभ हो, घरेलू झंझट बढ़ें, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार में बाधा से परेशानी रहे। **नवम्बर** 21, 22, 23, 30; **दिसम्बर** 1, 10, 11 **अशुभ।**

मकर– कफ–वायुविकार से परेशानी, आर्थिक संकट, बन्धुसुख, मित्रविशेष से अनबन, स्त्रीसुख, कार्यान्तर से लाभ हो। **नवम्बर** 24, 25; **दिसम्बर** 2, 3, 4, 12, 13 **अशुभ।**

कुम्भ– शारीरिक कष्ट, क्रोध बढ़ें, घरेलू क्लेश, अच्छे लोगों से मेल हो, सन्ततिसुख, शुभकार्य में व्यय हो। **नवम्बर** 17, 18, 26, 27; **दिसम्बर** 5, 6, 14, 15 **अशुभ।**

मीन– राजपक्ष से भय है। धनहानि एवं कर्ज़ा चढ़े, भाई–बन्धु से मदद मिले, सन्तानपक्ष किंवा नई योजना से लाभ हो। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। नवंबर 19, 20, 28, 29; **दिसम्बर** 7, 8, 9 **अशुभ।**

पौष मास

धनुसंक्रान्ति (16 दिसम्बर, 2015 से 13 जनवरी, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्न में बुधादित्य–योग पर बृहस्पति की दृष्टि शुभ है। राष्ट्र में नई–नई प्रगतिप्रद योजनएं बनें। धनस्थान पर द्वितीयेश शनि की दृष्टि के कारण औद्यौगिक क्षेत्र में प्रगति हो। कन्याराशि में राहु–मंगल की स्थिति पाकिस्तान एवं यावन देशों में आन्तरिक अशान्ति का संकेत देती है। व्यय–भावस्थ शनि एवं राहु, मंगल गुड़, घी, चना, चावल एवं खाद्य–पदार्थों में तेज़ी करें।

पौषसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

10
8 श.
11चं.
सू. 9 बु.
7 शु.
के. 12
रा. 6 मं.
1
3
गु. 5
2
4

धनु–संक्रान्ति प्रवेशकाल =16 दिसंबर, 2015 ई.; 14 घं. 42 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल 8 घं. 18 मि. बाद,

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– स्थानान्तर का विचार बने, राजपक्ष से भय, आर्थिक लाभ होने पर भी विशेष खर्च हो, गुप्त चिन्ता सताए, मित्र से मदद, कारोबार ठीक। **दिसम्बर** 19, 20, 27, 28, 29; **जनवरी (2016 ई.)** 6 ,7 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक रहे, अर्थलाभ हो, घरेलू झंझट, मित्र–बन्धुसुख, नई योजना से लाभ, कारोबार में रुकावट रहे। **दिसम्बर** 21, 22, 30, 31; **जनवरी (2016 ई.)** 8, 9, 10 अशुभ।

मिथुन– सेहत ठीक रहे, वृथा व्यय हो, भ्रातृसुख, सन्ततिसुख, विद्या में सफलता, पैर में चोटभय, अपमानभय है– सावधान रहें। **दिसम्बर** 23, 24; **जनवरी (2016 ई.)** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

कर्क– नेत्र व शिर–पीड़ा, मानसिक परेशानी रहे, मित्र से मदद, कारोबार में रद्दोबदल हो, मासान्त में धनहानि हो। **दिसम्बर** 17, 18, 25, 26; **जनवरी (2016 ई.)** 4, 5, 13 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक रहे, स्त्रीसुख, नई योजना व कारोबार में सफलता, शत्रु कमज़ोर, शुभकार्यों में मन लगे। **दिसम्बर** 19, 20, 27, 28, 29; **जनवरी (2016 ई.)** 6 ,7 अशुभ।

कन्या– रक्त–पित्तविकार, धनलाभ होकर विशेष खर्च हो, मित्र–बन्धु सुख, असफल योजना, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक चले। **दिसम्बर** 21, 22, 30, 31; **जनवरी (2016 ई.)** 8, 9, 10 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक, कर्ज़े से परेशानी रहे, बन्धु से सुख मिले, ज़मीन–जायदादसम्बन्धी उलझनें बढ़ें, कार्यान्तर से लाभ हो। **दिसम्बर** 23, 24; **जनवरी (2016 ई.)** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

वृश्चिक– कारोबार में उत्साहवर्धक प्रगति हो, धनलाभ एवं अच्छे लोगों से मेल हो, घरेलू–झंझट उलझें, स्त्री सुख रहे। **दिसम्बर** 17, 18, 25, 26; **जनवरी (2016 ई.)** 4, 5, 13 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक, राजपक्ष से परेशानी, वृथाव्यय, भाई से मदद, निजीजन से अनबन हो, कारोबार में प्रगतिपद योजना बने। **दिसम्बर** 19, 20, 27, 28, 29; **जनवरी (2016 ई.)** 6 ,7 अशुभ।

मकर– घरेलू झंझट–झगड़े रहें, सिर व नेत्रकष्ट, मित्र से सहायता मिले, विरोधीपक्ष कमज़ोर हो, कारोबार ठीक रहे। **दिसम्बर** 21, 22, 30, 31; **जनवरी (2016 ई.)** 8, 9, 10 अशुभ।

कुम्भ– सेहत ठीक रहे, गुप्त चिन्ता से परेशानी, आर्थिक संकट बढ़ें, मित्र–बन्धु से मदद मिले, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक रहे। **दिसम्बर** 23, 24; **जनवरी (2016 ई.)** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

मीन– शरीर में वायुरोग, धनलाभ होकर हानि हो, नई योजना से हानि, चोरी–ठगी का भय रहे, नए काम व कार्यान्तर से लाभ हो। **दिसम्बर** 17, 18, 25, 26; **जनवरी (2016 ई.)** 4, 5, 13 अशुभ।

28, जनवरी (2016 ई.) 4, 5, 13 अशुभ।

17, 18, 25, 26; जनवरी (2016 ई.) 4, 5, 13 अशुभ।

माघ मास

मकरसंक्रान्ति (14 जनवरी, से 12 फरवरी, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति— मकर–राशिस्थ सूर्य पर मंगल एवं शनि की विशेष दृष्टि है। यह ग्रहस्थिति भारत के विशिष्ट नेता के लिए कठिन है, सुरक्षा को सुव्यवस्थित करना होगा। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, चीन, अर्जेण्टाईना आदि में प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग हैं।

तेल, तिलहन, बाजरा, जौ एवं दालवाना की फसल खराब होने से तेज़ी बढ़े।

मकर–संक्रान्ति प्रवेशकाल =14 जनवरी, 2016 ई.; 25 घं. 26 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

माघ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष— कफ–वायुविकार, धनहानि के योग, नई योजना से लाभ, निजीजनकष्ट, आय से व्यय अधिक हो। जनवरी (2016 ई.) 15, 16, 24, 25; **फरवरी** 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।

वृष— वायुरोग, आर्थिक लाभ हो, लेकिन खर्च विशेष हो, निजीजन से मदद, सन्ततिसुख, कारोबार में रुकावट। जनवरी (2016 ई.) 17, 18, 26, 27; **फरवरी** 5, 6 अशुभ।

मिथुन— कफविकार, कारोबार में रद्दोबदल, आर्थिक लाभ हो, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, नीच व्यक्ति से सावधान रहें। **जनवरी** (2016 ई.) 19, 20, 28, 29, 30; **फरवरी** 7, 8 अशुभ।

कर्क— सेहत ठीक रहे, आर्थिक स्थिति में सुधार हो, निजीजन–सहयोग, नई योजना से लाभ, मास मध्य में क्रोध बढ़े। **जनवरी** (2016 ई.) 21, 22, 23, 31; **फरवरी** 1, 9, 10 अशुभ।

सिंह— सेहत ठीक, धनलाभ हो, अच्छे लोगों से मेल हो, सट्टे व शेयर बाज़ार में हानि, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक रहे। जनवरी (2016 ई.) 15, 16, 24, 25; **फरवरी** 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।

कन्या— कफ–वायुविकार, अर्थहानि हो, निजीजन–सहयोग, घरेलू झंझट, गुप्त शत्रु से सावधान, स्त्री पक्ष से लाभ मिले। **जनवरी** (2016 ई.) 17, 18, 26, 27; **फरवरी** 5, 6 अशुभ।

तुला— रक्त–पित्तविकार, धनलाभ हो, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मित्र–बन्धु से अनबन, मासान्त ठीक रहे। **जनवरी** (2016 ई.) 19, 20, 28, 29, 30; **फरवरी** 7, 8 अशुभ।

वृश्चिक— वायुरोग से परेशानी, वृथाव्यय हो, बन्धु से मदद मिले, राजपक्ष से लाभ हो, कारोबार ठीक रहे। **जनवरी** (2016 ई.) 21, 22, 23, 31; **फरवरी** 1, 9, 10 अशुभ।

धनु— उदर विकार रहे। धनहानि के योग, भाई–बन्धु का सुख मिले, विद्याक्षेत्र में परेशानी, स्त्रीसुख, कारोबार में प्रगति हो। जनवरी (2016 ई.) 15, 16, 24, 25; **फरवरी** 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।

मकर— रक्तचाप से सावधान, आर्थिक लाभ, भाई–बन्धु से सुख, सन्ततिसुख, शत्रु बढ़ें, धर्म–कर्म में मन लगे। **जनवरी** (2016 ई.) 17, 18, 26, 27; **फरवरी** 5, 6 अशुभ।

कुम्भ— विरोधी ग्रुप कमज़ोर, राजपक्ष में जीत, खर्च विशेष हो, घरेलू झंझट बढ़ें, निजीजन से अनबन, स्त्रीपक्ष से लाभ। **जनवरी** (2016 ई.) 19, 20, 28, 29, 30; **फरवरी** 7, 8 अशुभ।

मीन— सेहत ठीक, वृथाव्यय, भ्रातृ–बन्धु से सहयोग, सन्ततिकष्ट, स्त्रीसुख, धर्म–कर्म में मन लगे, मासान्त में विशेष खर्च हो। **जनवरी** (2016 ई.) 21, 22, 23, 31; **फरवरी** 1, 9, 10 अशुभ।

फाल्गुन मास

कुम्भसंक्रान्ति (13 फरवरी से 13 मार्च, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नस्थ सूर्य–केतु पर गुरु की दृष्टि है। विश्व के प्रमुख देशों में सुरक्षा–शान्ति एवं उग्रवाद को दबाने के लिए नए कार्यक्रम बनेंगे। चन्द्र पर गुरु–मंगल की दृष्टि भी देश में सुरक्षा–व्यवस्था को मज़बूत करेगी। कुछ मुस्लिम–राष्ट्रों की आन्तरिक स्थिति बिगड़ेगी, यहां राष्ट्रनायक एवं सेना में विरोध रहे। अनाज, दालवाना एवं तेल–तिलहन में कुछ मन्दे का रुख रहे।

कुम्भसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 13 फरवरी, 2016 ई.; 14 घं. 25 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल 8 घं. 01 मि. बाद

फाल्गुन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सूर्य सेहत एवं मनःस्थिति को खराब करे। आर्थिक लाभ होकर हाथ से निकले। भाई व मित्र से मदद मिले। स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़ रहे। **फरवरी** 20, 21; **मार्च** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक, धनलाभ हो, निजीजनकष्ट, शत्रुप्रबल, मासान्त में लाभ की स्थिति बने। **फरवरी** 13, 14, 22, 23, 24; **मार्च** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

मिथुन– गुप्त–शत्रु से सावधान, धनलाभ, अच्छे व्यक्ति से मिलन हो, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में लाभ। **फरवरी** 15, 16, 17, 25, 26; **मार्च** 5, 6, 7 अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक, आर्थिक लाभ हो, निजीजन–सहयोग, शत्रु हतोत्साह हो, कारोबार में रुकावट, कुछ लोग परेशान करें। **फरवरी** 18, 19, 27, 28, 29; **मार्च** 8, 9 अशुभ।

सिंह– वायुरोग, धनलाभ होकर हानि हो, कर्ज़े से बचें। वृथा– विवाद से दूर रहें, राजभय, मासान्त शुभ रहे। **फरवरी** 20, 21; **मार्च** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

कन्या– मन शान्त रहे, लेकिन आर्थिक संकट का सामना करना पड़े। सन्तान व मित्र को कष्ट रहे। कारोबार ठीक चले। **फरवरी** 13, 14, 22, 23, 24; **मार्च** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

तुला– वायुविकार, आर्थिक लाभ होकर विशेष खर्च हो। कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ हो। बन्धुकष्ट का योग है। **फरवरी** 15, 16, 17, 25, 26; **मार्च** 5, 6, 7 अशुभ।

वृश्चिक– उलझी समस्या हल हो, क्रोध को शान्त रखें, घरेलू झंझटों से दूर रहें। शत्रु प्रबल, कारोबार पूर्ववत्। **फरवरी** 18, 19, 27, 28, 29; **मार्च** 8, 9 अशुभ।

धनु– क्रोध बढ़े, आर्थिक तंगी रहे, बन्धुसुख रहे, नई योजना से लाभ रहे। शुभकार्य में व्यय करना पड़े। **फरवरी** 20, 21; **मार्च** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मकर– शनि–मंगलवार को चोट से बचें। मित्र–बन्धुसुख, धर्म–कर्म में मन लगे। कारोबार में प्रगतिप्रद योजना बने। **फरवरी** 13, 14, 22, 23, 24; **मार्च** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कुम्भ– मानसिक एवं आर्थिक स्थिति ठीक रहे। अच्छे लोगों से मेल हो। सन्ततिसुख, शुभकार्य में खर्च हो। **फरवरी** 15, 16, 17, 25, 26; **मार्च** 5, 6, 7 अशुभ।

मीन– मन ठीक रहे। आर्थिक लाभ होकर विशेष खर्च हो। भाई–बन्धु का सौहार्द रहे। स्त्रीसुख, कारोबार ठीक रहे। **फरवरी** 18, 19, 27, 28, 29; **मार्च** 8, 9 अशुभ।

चैत्र मास

मीनसंक्रान्ति (14 मार्च से 12 अप्रैल, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति— मीन–संक्रान्तिकालीन कुण्डली में शनि–मंगल का एकराशिसम्बन्ध कुछ राष्ट्रों में भारी संकट पैदा करे। किसी विशिष्टव्यक्ति को भारी संकट व पदरिक्तता का भय है। कहीं यानदुर्घटना से हानि हो। मुस्लिम राष्ट्र में विशेष कठिन स्थिति का सामना करना पड़े।

चना, दालवाना, गेहूं, गुड़ तेज़ किंवा अन्य जन–जीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई रहे।

मीनसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 14 मार्च, 2016 ई.; 11 घं. 17 मि. (I.S.T.) मु. 45, पुण्यकाल 17 घं. 41 मि. तक,

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष— वायु–कफविकार से परेशानी हो। लड़ाई–झगड़े से दूर रहें। चोरी–ठगी से सावधान रहें। शनि–मंगल का दान करें। कारोबार ठीक–ठीक रहे। **मार्च** 18, 19, 20, 28 29, 30; **अप्रैल**, 6, 7 अशुभ।

वृष— त्वचारोग से कष्ट रहे। धनलाभ हो। घरेलू झंझट बढ़ें। सन्तति–सुख, गुप्त शत्रु से सावधान रहें। स्त्रीकष्ट, वाहन से दुर्घटनाभय है। **मार्च** 21, 22, 31; **अप्रैल** 1 अशुभ।

मिथुन— सेहत ठीक रहे, लेकिन गुप्तशत्रु से सावधान। वृथाविवाद से दूर रहें। स्त्रीपख से चिन्ता किंवा अपमानभय है। कारोबार में रद्दोबदल हो। **मार्च** 15, 23, 24, 25; **अप्रैल** 2, 3 अशुभ।

कर्क— वायुरोग से कष्ट। कार्यान्तर व व्यवसाय से लाभ। मित्र–बन्धु से लाभ रहे। विरोधीपक्ष प्रबल। कारोबार ठीक रहे। **मार्च** 16, 17, 26, 27; **अप्रैल** 4, 5, अशुभ।

सिंह— सेहत ठीक रहे, आर्थिक लाभ हो, सन्ततिकष्ट, कारोबार ठीक, अच्छे लोगों से मेल हो। **मार्च** 18, 19, 20, 28 29, 30; **अप्रैल**, 6, 7 अशुभ।

कन्या— उदरविकार, बन्धुसुख, निजीजनों से सम्पत्तिविवाद रहे। स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में सुधार हो। **मार्च** 21, 22, 31; **अप्रैल** 1 अशुभ।

तुला— वायुरोग, वृथा व्यय हो। चोरी एवं धोखे से सावधान रहें। निजीजन–कष्ट, स्त्री से अनवन व गुप्त चिन्ता। **मार्च** 15, 23, 24, 25; **अप्रैल** 2, 3 अशुभ।

वृश्चिक— कर्ज़े से परेशानी, नेत्रकष्ट, यात्रा में हानि, सन्ततिसुख, कारोबार ठीक रहे। **मार्च** 16, 17, 26, 27; **अप्रैल** 4, 5, अशुभ।

धनु— क्रोध बढ़े, राजपक्ष से भय, आय से व्यय अधिक, कारोबार में रद्दोबदल हो, घरेलू झंझट बढ़ें; **मार्च** 18, 19, 20, 28 29, 30; **अप्रैल**, 6, 7 अशुभ।

मकर— सेहत ठीक रहे, धनलाभ होकर हानि हो, भाई–बन्धु से स्नेह रहे, कारोबार में वृद्धि के योग बनें। **मार्च** 21, 22, 31; **अप्रैल** 1 अशुभ।

कुम्भ— रक्त–पित्तविकार, कर्ज़ा सिर चढ़े, निजीजन से अनबन, स्त्रीपक्ष उत्साहवर्धक रहे। **मार्च** 15, 23, 24, 25; **अप्रैल** 2, 3 अशुभ।

मीन— वायु–पीड़ा, वृथा खर्च अधिक हो, मित्रकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार कमज़ोर एवं मासान्त में परेशानी रहे। **मार्च** 16, 17, 26, 27; **अप्रैल** 4, 5, अशुभ।

अथ वर्षराजादि-फलविचार (संवत् २०७२ वि.)

(सन् २०१५-१६ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९११६, सृष्टि संवत् १९५५८८५११६, श्रीविक्रम संवत् २०७२, शक संवत् १९३७, श्रीकृष्ण- जन्म संवत् ५२५१, कलि-संवत् ५११६, सप्तर्षि-संवत् ५०९१, श्रीजैन महावीर-निर्वाण-संवत् २५४०-४१, श्रीबुद्ध संवत् २६३८-३६, हिजरी सन् १४३६-३७, फसली सन् १४२२-२३, ईस्वी सन् २०१५-१६ ।

वर्षारम्भ में गुरुमान से शिव(रुद्र)विंशति का 'कीलक' नामक संवत्सर है । यह 'वराहमिहिर' द्वारा निर्दिष्ट 'नवम युग' किंवा शिव(रुद्र)विंशति का द्वितीय संवत्सर है । इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है-

" काले वर्षति पर्जन्यः राजादेश–प्रवर्तनम्।
कीलके प्रमितं रिष्टं दुर्भिक्षं मरु–भूमिषु।।"

अर्थात्– 'कीलक' संवत्सर में समयोचित वर्षा हो, देश में शासनतन्त्र द्वारा नए कानून लागू हों। शुभकार्य कम सम्पन्न हों एवं मरुप्रदेशों में (अनेकत्र) दुर्भिक्ष की स्थिति बने।

' भविष्यफल भास्कर ' में 'कीलक' संवत्सर का फल इस प्रकार लिखा है–

" कीलकाब्दे त्वीति–भीतिः प्रजाक्षोभ–नृपाहवौ।
तथापि वर्धते लोकः समधान्यार्घ–वृष्टिभिः।।"

अर्थात् – ' कीलक ' संवत्सर में टिड्डीदल आदि प्राकृतिक आपदा से हानि, प्रजा में क्षोभ एवं राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमत्य किंवा मुस्लिम राजशासित देशों में आन्तरिक कलह व विग्रह की स्थिति बने। लेकिन समयानुकूल वर्षा हो। धन–धान्यसमृद्धि रहे।

किञ्च– ' मेघ महोदय ' के अनुसार 'कीलक' संवत्सर का फल इस प्रकार है–

" कीलक–वत्सरे विष्णुः स्वामी, वर्षा मध्यमा, चैत्रे धान्यं महर्घम्, वैशाखे रोगः, मरुदेशे दुर्भिक्षम्, पश्चिमायां समर्घता, ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः, आषाढ़े–श्रावणे चाल्पमेघः, अन्नं महर्घम्, धान्ये द्विगुणो लाभः, भाद्रपदेऽष्टम्यां मेघः, आश्विने वर्षा, अन्नं महर्घम्, राजधानी नगरे उद्ध्वंसम्, न रोगबाहुल्यम्, गोधूमा महर्घाः, सर्वधान्यं समर्घम्, रसा समर्घाः, घृतं एकमणमितं प्रतिफदिया १८ नाणकैः, कार्तिकादिमासत्रये समर्घता, माघेऽन्नं महर्घम्, महती रोगपीड़ा, फाल्गुनमध्ये राजा–राज्यसुस्थः, प्रजासुखं अन्न–समता च।"

इस संवत् का राजा (ग्रहपरिषद के प्रधान) शनि; मन्त्री भौम; सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) गुरु; धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) बुध; मेघेश (मौसम, वर्षा–पानी के स्वामी) चन्द्र; रसेश (गुड़–खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) शनि; नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) गुरु; फलेश (फल–फूल आदि के स्वामी) चन्द्र; धनेश (धन–दौलत एवं खजाना के स्वामी) गुरु एवं दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) चन्द्र हैं।

संवत् २०७२ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इसप्रकार है –

(१) संवत्सर २०७२ वि. के राजा शनि का फल–

"दुर्भिक्षमरकं रोगान् करोति पवनं तथा।
शनैश्चराब्दे दोषाश्च विग्रहांश्चैव भूभुजाम्।।"

अर्थात्– संवत्सर का राजा शनि होने पर देश (विशेषतः यावन–बहुल प्रदेशों एवं राष्ट्रों) में आन्तरिक उपद्रव, युद्ध, दंगे एवम् मारकाट के लिए धरातल तैयार होता है। अनेक विरोधी देशों में परस्पर तनाव व टकराव की स्थिति बनती है। जनधनहानि किंवा दुर्भिक्ष की स्थिति भी संभव है। आंधी, वर्षा–तूफान आदि (प्राकृतिक आपदा) से अनेकत्र जनधनहानि के योग बनें। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। पेयजल–समस्याओं का सरकार को सामना करना पड़े। राजनैतिक मतभेद प्रबल रहें।

'वर्षप्रबोध' में शनि के संवत्सरेश होने का फल इस प्रकार लिखा है–

"शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं–
प्रभूत–रोगैः परिपीड्यते जनः।
युद्धं नृपाणां गद–तस्कराद्यै–
र्भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान्।।"

अर्थात्– वर्षा की कमी रहे। परिणामस्वरूप, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बने। नानाविध रोगों से जनजीवन परेशान रहे। शासकों में शक्तिपरीक्षण किंवा यावन–राष्ट्रों में राजयुद्ध की स्थिति बने। चोरी–डकैती आदि अनैतिक कार्य अधिक हों। कुछ भू–भाग दुर्भिक्षग्रस्त होने से किंवा अराजकता के कारण जनता क्षुब्ध किंवा क्षुधाग्रस्त होने से स्थानान्तरण करने को विवश हो।

(२) मन्त्री मंगल का फल–

" अवनिजे ननु मन्त्रिपदं गते
भवति दस्यु–गदादि–निपीड़नम्।
जनपदेषु क्वचित् सुखिनो जना
न बहु गोषु पयो द्विजकर्म च ।।"

अर्थात्– जब मंगल संवत्सर का मन्त्री होता है तो उसवर्ष चोर एवम् रोगादि से जनता कष्ट में रहे। कुछ भागों में जनता सुखी रहे। सामान्यतः वातावरण अशान्त रहे। दूध आदि रसपदार्थों की कमी एवम् द्विजवर्ग निजकर्म से विरत रहे।

(३) सस्येश गुरु का फल–

"भवति सस्यपतौ सुरवन्दिते सकल–सौख्य धनागमशालिता।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहूनि धनानि च।। "

अर्थात्– गुरु सस्येश हो तो जनता में सुखशान्ति एवं धन–धान्य–समृद्धि रहे। वर्षा यथासमय (उत्तम) हो, पैदावार श्रेष्ठ रहे। दूध, फल, गुड़, ईख.आदि से पर्याप्त रस–समृद्धि रहे। धनसमृद्धि से जन–जीवन आनन्दित रहे।

(४) धान्येश बुध का फल–

" बहु–सस्ययुता पृथ्वी रसानां च महर्घता।
नीतियुक्ताः सदा भूपाः बुधे धान्याधिपे सति।।"

अर्थात्– वर्षा पर्याप्त होने से धान्यादि की उपज बहुत हो। तथापि रस (गुड़, दूध आदि) पदार्थ सब महंगे रहें। शासक जनानुकूल नीतियों का निर्धारण करें। अन्य मतानुसार "सैन्धवे लाटदेशे च माधवोऽपं हि वर्षति", अतः कुछ भू–भाग अकालग्रस्त भी रहे।

(५) मेघेश चन्द्र का फल–

"शशिः तोयदपो यदि स्याद्वर्षे गोमहिष्यादिषु दुग्धरसं तदा।
फलवती धन–धान्यवती धरा विविध–भोगयुता ननु भामिनी।।"

अर्थात्– चन्द्र के मेघेश होने पर गौ–महिषी आदि पर्याप्त दुग्धयुक्त एवं रसादि भी पर्याप्त हों। पृथ्वी फल–फूल, धन–धान्य से समृद्ध रहे एवं स्त्रियों को नानाविध मान–सम्मान और ऐश्वर्य प्राप्त हो।

(६) रसेश शनि का फल–

" रविसुते रसपे रससंक्षयो
न जलदा गददाश्च पयोधराः।
अज–गजाश्व–खरादि–हतिर्भवे–
दपिधरा रसगर्भजला न हि।।"

अर्थात्– शनि रसेश हो तो भूगर्भगत जलस्तर नीचे जाए। परिणामस्वरूप बहुजल–पक्व धान्य एवं दूध कम, ईख (रस) आदि को क्षति पहुंचे। वर्षा भी अल्प हो। रोगों से जनता परेशान हो। घोड़े, हाथी, बकरी, गधा आदि चतुष्पदों की भी रोगादि से हानि हो।

(७) नीरसेश गुरु का फल–

" हरिद्रा पीतवस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा।। "

अर्थात्– हल्दी आदि, पीले रंग की वस्तुएं, मसाले आदि एवं सोना आदि पीले रंग की धातुएं, पीले रंग के वस्त्र आदि के व्यापार में तेजी से लाभ रहे।

नोट– यदि इसवर्ष गुरु के प्रभावक्षेत्र में सोना आदि धातु एवं हल्दी आदि मसालों में मन्दा रहे तो स्टॉक से आगे लाभ रहे। "प्रीतिरुत्तमा" से यही अर्थ जानें।

(८) फलेश चन्द्र का फल–

"यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता व्रतती–कुसुमैर्युताः।
द्विजमुखा वरभोग–समन्विता नृपतयो नयपालन–तत्पराः।।"

अर्थात्– फलेश चन्द्र होने से इसवर्ष वृक्ष–पेड़–पौधे किंवा लताएं फल–फूलों से लदे रहें। सवर्णों (द्विजों.) में सुख–समृद्धि किंवा आनन्दमय वातावरण रहे। शासकवर्ग नीति–निर्दिष्ट मार्ग से शासन करें।

(९) धनेश गुरु का फल-

" सुमनसां च गुरुर्द्रविणाधिपो वणिजवृत्तिपराः सुखभाजनाः।
सुफल–पुष्पयुता द्रुमराशयो विविध–द्रव्ययुता भुवि मानवाः।।"

अर्थात्– धनेश गुरु होने पर व्यापारियों के लिए शासन की नीति अनुकूल वातावरण बनाती है। वृक्ष किंवा पौधे फल–फूलों से समृद्ध रहें। जनता की जीवनशैली किंवा आर्थिकस्तर में प्रगति हो। व्यापारिक वर्ग भी प्रगतिपथ पर रहे – **" सम–सुखा क्रय–विक्रयजीविनः।"**

(१०) दुर्गेश चन्द्र का फल-

" अथ च दुर्गपतिर्मृगलांछनको नरवराः सुखिनः शुभ–शासनात्।
बहुधनैक्षुज–गोरस भोगिनो नृपतयो नरगीत–पराक्रमाः।। "

अर्थात्–चन्द्र के दुर्गेश होने से गण्यमान्य नागरिकों को सुशासन से मान–सम्मान प्राप्त हो। शासन एवं कानून–व्यवस्था अच्छी रहे। जनता की जीवनशैली (स्तर) अच्छी बने। ईख, गुड़, गोधन एवं दूध आदि की प्रचुरता रहे। जनता शासकों की प्रशासन–शैली की प्रशंसा करे।

नोट– यद्यपि संवत् के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र अनुभव किया गया है, किन्तु विशेषतः **राजा का फल** काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; **मन्त्री का फल** आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में; **सस्येश** का पौण्ड्र, विदर्भ में; **धान्येश** का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; **मेघेश** का मगध एवं बंगाल में; **रसेश** का कोंकण एवं गोवा में; **नीरसेश** का मालवा व बिहार में; **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में; **फलेश, दुर्गेश** एवं **राजा** का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा ७, धान्य १५, तृण ७, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा १५, तृषा ३, निद्रा ५, आलस्य ७, उद्यम १३, शांति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल ११, उत्साह ११, उग्रता १५, पाप १५, पुण्य ३, व्याधि १, व्याधिनाश १५, आचार १५, अनाचार ३, मृत्यु १७, जन्म ६ देशोपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चौर ९, चौरनाश १, अग्नि १५, अग्निशांति १, उद्‌भिज्ज ११, जरायुज ३, अण्डज ६, स्वेदज १५, टिड्डी १३, तोता ६, मूषक १८, सोना १७, तांबा १६, स्वचक्र ३, परचक्र ५, वृष्टि ७, वृष्टिनाश १५ एवं संवत्‌विश्वा १८ हैं।

चतुर्मेघविचार :– आवर्तकादि चतुर्मेघों में **'द्रोण '** नामक मेघ है।

फल :– "द्रोणो वर्षति सर्वदा "– द्रोण नामक मेघ होने से अनेक क्षेत्रों में वर्षा अधिक हो एवं कुछ क्षेत्र बाढ़ग्रस्त भी रहेंगे।

नवमेघविचार– इसवर्ष नवमेघों में **' वरुण '** नामक मेघ है।

फल :– **" वरुणस्त्वर्णवाकारम् "**– प्रमाणानुसार अनेकत्र प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़ आदि से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे– **"अर्णवेण सहितं महीफलम् वारुणे जलधरे भवेदलम्।"**

अनन्तादि अष्टनाग विचार– अनन्तादि अष्टनागों में इस वर्ष **'सुतक्षक'** नामक नाग है।

फल :– वर्षा मध्यम हो। राजाओं (राजनीतिज्ञों) में परस्पर विचार–वैमत्य रहे। यावनराष्ट्रों में कहीं सिविलवार किंवा आन्तरिक क्रान्ति व सत्ता सेना के हाथ में जाए।

सुबुध्नादि द्वादशनाग विचार– सुबुध्नादि **द्वादश नागों** में इसवर्ष **'कम्बल'** नामक नाग है।

फल :– "यदैव कम्बलाभिधो भुजंगमः प्रजायते।
तदास्ति मध्यमं जलं समस्त–धान्यमुत्तमम्।।"

अर्थात्– वर्षा मध्यम हो, लेकिन गेहूं, चना, जीरी आदि की फसल पर्याप्त हो।

आवह आदि सप्तवायु–विचार– इस वर्ष **'वायुसप्तक'** में **'अतिवह'** नामक वायु है।

फल– आंधी–तूफान से देश के दक्षिणी–पश्चिमी भू–भाग पर एवं विश्व के समुद्र–तटवर्त्ती देशों में समुद्री तूफान (सुनामी), भूचाल किंवा भारी बाढ–वर्षा से भयंकर जनधनहानि के योग इसवर्ष जनजीवन को अस्त–व्यस्त

करेंगे। कुछ प्रान्तों में अतिवह वायु बादल–वर्षा में बाधक रहे। शासन इस स्थिति को संभालने में असमर्थता अनुभव करेगा। भूमध्यगत वायुतरंगों से होने वाले इस प्राकृतिक प्रकोप का परिणाम अनेक देशों के लिए विध्वंसकारी रहेगा।

संवत् २०७२ वि. का वाहन– इसवर्ष का राजा 'शनि' होने से संवत् का वाहन " भैंसा " है। कुछ विद्वान् संवत् वाहन ' घोड़ा ' भी मानते हैं।

फल :– संवत्सर का वाहन ' भैंसा ' किंवा ' घोड़ा ' होने से शासकों में राजनैतिक मतभेद किंवा राजनैतिक हत्याकाण्ड हों। सत्तासंघर्ष हों। वर्षा के असामयिक होने किंवा न्यूनता से कुछ क्षेत्र अकालग्रस्त रहें। किञ्च– भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि एवं बाजारों में महंगाई का रुख रहे–

" राजानो विग्रह–ग्रस्ता वृष्टिनाशो महर्घता।
भूमिकम्पोऽतिकष्टं च हयारूढे तु वत्सरे।।"

संवत् २०७२ वि. के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ–(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) १२.२३ प्रतिशत है।

(२) तृणस्तम्भ–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ३०.२६ प्रतिशत है।

(३) वायुस्तम्भ–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) का अभाव है।

(४) अन्नस्तम्भ–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ३१.५८ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल–क्षेम–ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी–बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है। इन स्तम्भों को " **वर्ष के मर्मस्थान** " भी माना जाता है।

(१) जलस्तम्भ– इसवर्ष प्रतिपदा का कुल मान २० घं. २६ मि. एवं जलस्तम्भ १२.२३ प्रतिशत होने से यह स्तम्भ कमजोर है।

फल– महानगरों में पेयजल का संकट व अनेक क्षेत्र वर्षा की कमी के कारण अकालग्रस्त भी रह सकते हैं। परिणामस्वरूप जन–पशुधन के लिए खाद्यपदार्थों की कमी एवं महंगाई को लेकर शासनतन्त्र के विरुद्ध जनाक्रोश रहे। बहुजल–प्रधान चावलादि को हानि पहुंचे। भूजलस्तर नीचे जाएगा।

(२) तृणस्तम्भ– इसवर्ष वैशाख शुक्ल प्रतिपदा का कुल मान २१ घं. ५ मि. है एवं तृणस्तम्भ ३०.२६ प्रतिशत है।

फल– इसवर्ष तृणस्तम्भ भी कमजोर ही है। मॉनसून के दौरान कहीं बेहद वर्षा–बाढ़ से तृण (फसलों) को हानि पहुंचेगी अथवा कहीं सूखे से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। इसवर्ष मध्यभारत में बाढ़ किंवा सूखे का खतरा बढ़ेगा। ग्रहस्थिति के अनुसार मौसम–प्रणाली में उल्लेखनीय परिवर्तन आने से ' तृणस्तम्भ ' भारत के अनेक क्षेत्रों में चिन्तनीय स्थिति बना सकता है।

इस स्तम्भ के कमजोर होने से एवं जलस्तम्भ के नगण्य होने से इसवर्ष भारत सरकार को जनजीवन को सामान्य किंवा सुरक्षित रखने के लिए भारी प्रयास करने पड़ेंगे। क्योंकि प्रकृति की विरुद्धता भारी पड़ेगी।

(३) वायुस्तम्भ– इसवर्ष ज्येष्ठशुक्ल प्रतिपदा का कुल मान २२ घं. ०६ मि. है। ज्येष्ठशुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का अभाव है।

फल– वायुस्तम्भ का अभाव होने से स्थिति विषम रहे। दक्षिण– एशिया में हर साल गर्मी के मौसम में हवा के द्वारा संचालित मौसम–प्रणाली ही ८५ प्रतिशत वर्षा का कारण बनती है। अतः इसवर्ष वायुस्तम्भ भारत व तमाम दक्षिण–एशिया में प्राकृतिक प्रकोप एवं कहीं भयंकर बाढ़, कहीं सूखे का कारण बनेगा। कहीं सूखी वायु, समुद्री तूफान भारत किंवा विदेशों में भी जानलेवा सिद्ध होंगे। मानसून असामयिक किंवा उग्र परिणामों वाले होने से अनेकत्र जनजीवन एवं पशुधन को कष्ट भोगना होगा।

(४) अन्नस्तम्भ– इसवर्ष आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा का कुल मान २४ घं. ४६ मि. है एवं पुनर्वसु नक्षत्र इसदिन ३१.५८ प्रतिशत है।

फल– पूर्वलिखित तीन स्तम्भ कमजोर हैं एवं चतुर्थ (अन्न) स्तम्भ भी ३१.५८ प्रतिशत होने से सशक्त नहीं है। फलस्वरूप, घरेलू उत्पाद में कमी, खड़ी फसलों की हानि, खाद्यान्न महंगे होंगे। महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी।

इसवर्ष अनियमित मॉनसून एवं पर्याप्त वर्षा आदि के अभाव में कृषकवर्ग एवं जनता को सन्तुष्ट रखने के लिए शासन को बहुत–सी जनजीवनोपयोगी वस्तुओं का आयात करना होगा।

इसवर्ष के चारों स्तम्भ क्षीण होने से भारत की आर्थिक व्यवस्था एवं सामाजिक सुरक्षा का संरक्षण भारत के शासनतन्त्र को भारी पड़ेगा।

स्तम्भचतुष्टय के विचार से सं. २०७२ वि. में समुद्री तूफान, महानगरों में भूकम्प से भारी हानि होगी। भारत को विरोधी देश–विशेष से सरहदों पर शत्रुकृत् गतिविधियों से सावधान रहना नितान्त आवश्यक है।

आर्षमान–विचार (सं २०७२ वि. की रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) २३.४२ प्रतिशत है।

(२) द्वितीय आर्ष (गत संवत् २०७१ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) ४६.४६ प्रतिशत है।

(३) तृतीय आर्ष (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) का अभाव है।

(४) चतुर्थ आर्ष (कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) ६७.४३ प्रतिशत है।

नोट– उल्लिखित चारों आर्षमान इस संवत्सर में जनजीवन एवं देश की सुरक्षा, कानून–व्यवस्था, आर्थिक समृद्धि, सामाजिक शान्ति, सर्वविध समृद्धि किंवा नैतिक मूल्यों को सुनिश्चित करते हैं। ये भी संवत्सर के मर्मस्थल माने जाते हैं।

(१) प्रथम आर्ष– वैशाख शुक्ल तृतीया का कुल मान २२ घं. ०४ मि. एवं इसदिन रोहिणी नक्षत्र २३.४२ प्रतिशत है।

फल– प्रथम आर्ष २३.४२ प्रतिशत होने से देश के उत्तरी भूभाग एवं पश्चिमी भूभाग में (भारत की) सुरक्षा को कमजोर बना सकता है। कहीं सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेश की गतिविधि शान्ति को भंग कर सकती है। भारत के शासनतन्त्र को विशेष सावधान रहना होगा।

(२) द्वितीय आर्ष – गत संवत् २०७१ वि. में पौष अमा का कुल मान २१ घं. ५० मि. एवं इसदिन मूल नक्षत्र ४६.४६ प्रतिशत है।

फल–द्वितीय आर्ष लगभग ५० प्रतिशत होने से देशरक्षा के लिए समर्थ कहा जा सकता है। सीमाप्रान्तों पर भारत का प्रभावक्षेत्र बना रहेगा। नए कार्यक्रम एवं नई योजनाओं से लाभ होगा। देश को प्रगतिपथ पर अग्रेसर करने के लिए सरकार के प्रयास प्रशस्य होंगे।

(३) तृतीय आर्ष – इसवर्ष श्रावण–पूर्णिमा का कुल मान २० घं. २८ मि. है एवं इस दिन श्रवण नक्षत्र का अभाव है।

फल– तृतीय आर्ष का अभाव है। अतः संवत् २०७२ वि. में सैन्यशक्ति–संवर्धन के लिए नई योजनाएं कार्यान्वित करने के लिए आर्थिक संकट रहेंगे। भारत को सीमाओं पर बंगलादेश, नेपाल एवं विशेषतः पाकिस्तान और चीन की कुनीति से सावधान रहना आवश्यक है। काश्मीर, लाहौलस्पीति, तिब्बत, त्रिपुरा आदि में भी स्थिति चिन्तनीय रहे। भारत के महानगरों में [illegible]

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् २०७२ वि. के उत्तरार्ध में कहीं प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, समुद्री तूफान एवं विस्फोट आदि से भयंकर जनधनहानि के योग काश्मीर, बिहार, महाराष्ट्र, उड़ीसा एवं देश के महानगरों में दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

(४) चतुर्थ आर्ष– इसवर्ष कार्तिक पूर्णिमा का कुल मान २१ घं. ०५ मि. है एवं पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र ६७.४३ प्रतिशत है।

फल– चतुर्थ आर्ष ६७.४३ प्रतिशत होने से भारत के लिए समृद्धिप्रद एवं शासनतन्त्र की चेतना को जागृत करने वाला है। भारत की गरिमा एवं गणतन्त्र के (चतुर्थ आर्ष) सशक्त होने का संकेत देता है। नई योजनाएं, नए औद्योगिक क्षेत्र एवं शासकगण देश को नई उपलब्धियों से सुसज्जित करने के लिए सचेष्ट रहेंगे।

वर्ष के चार स्तम्भों एवं आर्षमान–विचार से यद्यपि देश की स्थिति तो भूतकालिक राजनैतिक कारणों से चिन्तनीय ही रहेगी। लेकिन नई शासनप्रणाली इसे सुधारने के लिए सशक्त सिद्ध होगी।

दोहा : "अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख–विनाशै।।"

रोहिणी का वास– इस संवत् में मेषसंक्रान्ति (मंगलवारी) धनिष्ठा नक्षत्र में लगी है, अतः रोहिणी का वास 'समुद्र' में है।

फल– रोहिणी का वास इसवर्ष 'समुद्र' में होने से अनेक क्षेत्रों में भयंकर बाढ़–वर्षा से हानि हो। बहुजलीय धान्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों–

" पयोनिधौ यदा वासो रोहिण्या जायते तदा।
अतीव वर्षणं भवेत् समस्तधान्य–वर्धनम्।।"

समय का वास– क्योंकि रोहिणी का वास समुद्र में है, अतः इसवर्ष संवत्सर का वास 'माली' के घर है।

फल– जनजीवनोपयोगी किंवा उपभोग्य वस्तुओं की सुलभता रहे।

शनि की दृष्टि– इसवर्ष (संवत् २०७२ वि.) के प्रारम्भ से संवत् के अन्त तक शनि वृश्चिक राशि में ही रहेगा। अतः संवत् २०७२ वि. में [illegible]

फल– संवत् २०७२ वि. में पश्चिमी प्रान्तों एवं पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर भूकम्प, समुद्री तूफान (सुनामी) एवं कहीं शासनतन्त्र के विरुद्ध सत्तापरिवर्तनार्थ आन्दोलन, ज्वालामुखी– विस्फोट, हवाई हादसे किंवा उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग नज़र आते हैं। भारत भी इस वर्ष शनि की दृष्टि से अप्रभावित नहीं रह सकेगा। सिंह, कुम्भ एवं तुला राशि के नेताओं के लिए यह वर्ष विशेष उलझनें लेकर उपस्थित हो रहा है। संवत् २०७२ वि. में २३ मार्च, २०१५ ई. से १५ जून तक तथा ३० जुलाई से १४ अगस्त, २०१५ ई. तक तथा २० फरवरी, २०१६ ई. से संवत् २०७२ वि. के अन्त तक का समय सिंह, वृश्चिक, तुला एवं कुम्भ राशि वाले राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है। सुरक्षा–व्यवस्था को सुदृढ़ रखना आवश्यक है, दुर्घटना संभव है। कहीं दुर्भिक्ष, कहीं बाढ़ से हानि व कहीं राजनैतिक उलटफेर (सत्तापरिवर्तन) भी हों–

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीडयेत्।
दुर्भिक्ष –देशभङ्गाद्यैर्विग्रहो राजविद्वरैः।।"

संवत् २०७२ वि. में विशेष अमायोगः–

(१) सोमवती अमावस्याएं तीन हैं–

(i) ज्येष्ठ कृष्णपक्ष (१८ मई, सन् २०१५ ई.)।
(ii) आश्विन कृष्णपक्ष (१२ अक्तू. सन् २०१५ ई.)।
(iii) माघ कृष्णपक्ष (८ फरवरी, सन् २०१६ ई.)।

(२) भौमवती अमावस्या केवल एक ही है।

(i) प्रथम आषाढ़ कृष्णपक्ष (१६ जून, सन् २०१५ ई.)।

(३) शनैश्चरी अमावस्या भी केवल एक ही है।

(i) वैशाख कृष्णपक्ष (१८ अप्रैल, सन् २०१५ ई.)।

नोट– इसवर्ष उल्लिखित सोमवती अमावस्याओं के दिन चावल आदि अन्न, घी, दूध का दान दक्षिणासहित करें। इस दिन गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान–दान का विशेष महत्त्व है।

मंगलवारी अमा को गुड़ गायों को खिलाएं एवं इस दिन लालवस्त्र, स्वर्णादि के दान का भी विशेष महत्त्व है।

शनैश्चरी अमा को तुलादान, तेलदान, काले तिल, काला कपड़ा एवं काली दाल दान करें।

ध्यान दें :– उल्लिखित अमावस्याओं में दान एवं तीर्थस्नान/पूजन आदि का विशेष महत्त्व है। साथ ही अधिकाधिक पंचांगो का योग्य ब्राह्मणों को तीर्थ पर या अन्यत्र भी दान करना पुण्यप्रद लिखा है।

अधिकमास आषाढ़ का फल– सं. २०७२ वि. में आषाढ़ अधिकमास है।

फल– आषाढ़ अधिक मास होने से कहीं रोगादि किंवा अन्य कारण विशेष से जनता परेशान रहे। कहीं खण्डवृष्टि से कृषक लोग असन्तुष्ट रहें ;–

" आषाढ़द्वये प्रजाखिन्ना खण्डवृष्टिस्तु कुत्रचित्।"

किञ्च– आषाढ़ अधिकमास होने से स्थानविशेष की प्रसिद्धि हो, सुभिक्ष बने, जनता में उत्साह रहे। लेकिन कहीं उत्पात से हानि भी हो–

" यशः कष्टं सुभिक्षं च द्विराषाढे महत्सुखम्।"

शरत्सस्य जातक

संवत् २०७२ वि. में ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी शुक्रवार तदनुसार १५ मई, सन् २०१५ ई. को रेवती नक्षत्र, प्रीति योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय १० घं. ३७ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर सूर्यदेव वृष राशि में प्रविष्ट होंगे। सूर्यसंक्रमण के समय कर्क लग्न होगा।

फल– शरत्सस्यजातक कुण्डली में सूर्य मंगल एवं बुध– युक्त हैं। सूर्य से सप्तम वृश्चिकस्थ शनि है। अतः शरत्सस्य गन्ना, मक्का, चावल, ज्वार, अरहर, मूंग, बाजरा, तिल एवं कपास की फसल औसत से कम प्राप्त होगी। अनेकत्र अवर्षणादि से पैदावार नष्ट हो जाती है–

"क्रूरान्तस्थः सूर्यो वृषस्थोऽपि नाशयति सस्यम्।
पापः सप्तमराशौ जातं जातं विनाशयति।।"

ग्रीष्मसस्य जातक (सं. २०७२ वि.)

सं. २०७२ वि. में कार्तिक–शुक्ल पंचमी .चन्द्रवार, तदनुसार १६/१७ नवम्बर, सन् २०१५ ई. को उ.षा. नक्षत्र, शूल योग एवं धनु : स्थ चन्द्र के समय २४ घं. ३ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सूर्यदेव सिंह लग्न के समय वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

ग्रीष्मसस्य जातककुण्डली
(१६/१७ नवं., सन् २०१५ ई., २४ घं. ३ मि. (I.S.T.))

६ रा.मं.शु. | ४ | बु. ७ | ५ गु. | ३ | सू. ८ श. | २ | ९ चं. | ११ | १ | १० | १२ के.

फल– ग्रीष्मसस्य (वृश्चिक–संक्रान्ति–कालीन)कुण्डली में सूर्य शनि के साथ होने एवं इनसे एकादशस्थ राहु, मंगल, शुक्र एवं तुलास्थ बुध होने से खड़ी फसलों को अनेकत्र अवर्षणादि से हानि होगी। सूर्य से दशम भाव में सिंहस्थ गुरु होने से गेहूं, जौ, चना, दालवाना, बाजरा, तिल एवं कपास आदि की उपज सामान्यतः उपलब्ध नहीं होगी। कई जगह बोई हुई फसल भी नष्ट होगी। सरकार जनजीवनोपयोगी वस्तुओं को उपलब्ध कराने में योगदान तो देगी। लेकिन महंगाई से जनता परेशान रहेगी।

सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश

संवत् २०७२ वि. में प्रथम (अधिक) आषाढ़ शुक्ल, षष्ठी (चन्द्रवार) तदनुसार २२ जून, सन् २०१५ ई. को पू.फा. नक्षत्र, सिद्धियोग एवं सिंहस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव १६ घं. ४५ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे–

सूर्य आर्द्राप्रवेश–कुण्डली
(२२ जून, सन् २०१५ ई., १६ घं. ४५ मि. (भा.स्टैं.टा.))

६ | ७ | १० | श. ८ | रा. ६ | ११ | ५ चं. | १२ के. | २ बु. | ४ शु.गु. | १ | सू.३ मं.

फल– सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में मध्याह्न के बाद ४ बजकर ४५ मि. पर प्रवेश करता है। इस दिन चन्द्रवार एवं पू.फा. नक्षत्र भी है, तिथिषष्ठी है –

> "षष्ठ्यामार्द्रा–प्रवेशश्चेज्जायते पद्मिनीपतेः।
> तर्हि द्रविणसम्पत्त्या नराणां प्रचुरं सुखम्।।"

अतः सूर्य का इस स्थिति में आर्द्राप्रवेश "समर्घत्वं सुवृष्टिकृत"– अनुसार वर्षा अच्छी एवं जनजीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता सहजसुलभ करे। लेकिन आर्द्राप्रवेश वृश्चिक राशि(सजल राशि) के लग्न में है। गुरु–शुक्र जलराशि में हैं, केन्द्र में बुध–चन्द्र हैं। यह ग्रहस्थिति अनेकत्र बाढ़–वर्षा से हानि करे। शनि–बुध का समसप्तक एव चन्द्र पर शनि की दृष्टि वर्षा के विपरीत कहीं सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि का संकेत भी देती है। समुद्रतटवर्ती देशीय प्रान्तों/देशों में भारी जनधनहानि का भय है। महाराष्ट्र, उड़ीसा, बंगाल एवं कुछ अन्य प्रान्तों में भी वर्षा व कहीं अवर्षण से भी दुर्भिक्ष की स्थिति बनने के योग हैं।

संवत् २०७२ वि. का शुभारम्भ

गतसंवत् २०७१ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, शुक्रवार, तदनुसार २० मार्च, सन् २०१५ ई. को १५ घं. ७ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर उ.भा. नक्षत्र, शुक्ल योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय नवसंवत् २०७२ वि. का शुभारम्भ कर्क लग्न में होगा।

शुभ संवत् २०७२ वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

५ | ३ | ६ रा. | ४ गु. | २ | ७ | १ शु. | ८ श. | १० | १२ सू.चं.मं.के. | ९ | ११ बु.

(२० मार्च, सन् २०१५ ई., १५ घं. ७ मि.)(I.S.T.)

फल– संवत् २०७२ वि. का शुभारम्भ कर्क लग्न में हो रहा है। ध्यान दें– इसवर्ष वर्षेश (जगत्) लग्न भी कर्क ही है। लग्नेश चन्द्र मंगल–सूर्य–केतु के साथ मीन राशि में लग्नस्थ उच्च गुरु की विशेष दृष्टि में हैं। शनि व पंचम भाव पर भी गुरु की विशेष दृष्टि है। ध्यान दें– भारत की प्रभावराशि मकर एवं मकर राशीश शनि पर भी गुरु की दृष्टि है। अतः यह विक्रमी संवत् विश्व के प्रतिष्ठित राष्ट्रों की गणना में उज्जवल भविष्य की तरफ अग्रेसर होगा–

> "यदा शुभग्रहैर्दृष्टं लग्नं स्यात्तु शुभावहम्।
> धन–धान्यादि सम्पूर्ण सर्वं वर्षं शुभवहम्।।"

सब कुछ ठीक होने पर भी उत्तरी एवं पश्चिमी प्रान्तों में उग्रवादजन्य दुर्घटनाओं से जनजीवन त्रस्त रहे। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति होगी।

अतः सूर्य की इस स्थिति में आर्द्राप्रवेश "समर्घत्व सुवृष्टिकृत"–

दुर्घटनाओं से जनजीवन त्रस्त रहे। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी।

इस संवत् का राजा शनि संवत्सरारम्भ-कुण्डली में मंगल (संवत्सर के मन्त्री) के क्षेत्र में होने से मुस्लिम राष्ट्रों के लिए अनेकत्र अशान्ति बनाएगा। कन्या नामराशि–देश (पाक आदि) में किसी प्रतिष्ठित शासक किंवा प्रभावी व्यक्ति को कठोर दण्ड एवं भयानक परिस्थिति का भी सामना करना पड़ेगा। अनेकत्र उपद्रव एवम् अराजकता दिखाई देगी।

वर्षेश(जगत्)लग्न–कुण्डली (सं. २०७२ वि.)

वर्तमान संवत् २०७२ वि. में वैशाखकृष्ण दशमी, मंगलवार, तदनुसार **१४ अप्रैल, सन् २०१५ ई. को १३ घं. ४६ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर धनिष्ठा नक्षत्र, शुभयोग, मकरस्थ चन्द्र एवं कर्क लग्न के समय सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।**

वर्षेश(जगत्)लग्नकुण्डली
(संवत् २०७२ वि.)
१४ अप्रैल, २०१५ ई.

५ | ३
६ रा. | ४ गु. | २ शु.
७ | सू. मं. १ बु.
८ श. | १० चं. | १२ के.
९ | ११

सूर्य मेष में १३ घं. ४६ मि. (I.S.T.)

फल–सं. २०७२ वि. की जगत् लग्नकुण्डली में मेषस्थ सूर्य–मंगल–बुध एक साथ हैं। लेकिन सप्तमभाव के स्वामी शनि की सप्तमभाव पर विशेष दृष्टि है, साथ ही लग्नस्थ गुरु का सप्तमस्थ चन्द्र के साथ पूर्ण समसप्तक है, जोकि मकरराशि–प्रधान भारत के लिए शुभफलप्रद है। वृषस्थ शुक्र का वृश्चिकस्थ शनि के साथ समसप्तक एवं कर्कलग्न में जगत्लग्न का प्रारम्भ होने से पूर्वी प्रान्तों एवं देशों में सुख–समृद्धि रहे। उत्तरी प्रान्तों में किंवा उत्तर की ओर से शत्रुदेशों से युद्ध की स्थिति बने–

"कर्के सुखं तु पूर्वस्यामुत्तरस्यां तु विग्रहः।
याच्चासनबलं यावद् दुर्भिक्षं पश्चिमे दिशि।।"

पुनरपि, लग्नेश चन्द्र की लग्न पर पूर्णदृष्टि है तथा लग्नस्थ उच्च गुरु मकर राशिस्थ चन्द्र को देख रहा है, अतः यह ग्रहस्थिति भारत को बहुत–सी बाधाओं को पार कराकर उन्नति की ओर ले जाएगी;–

"निजोच्चे निजवर्गे वा शुभः पापोऽपि वा भवेत्।
बलवान् दोषविच्छेत्ता हरिरेको यथा गजान्।।"

जगत् लग्नानुसार आषाढ़–भाद्रपद–फाल्गुन मास विशेष घटनापूर्ण रहेंगे।

अपने जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत्लग्न का फल इस प्रकार जानिए–

(१) प्रथम भाव से शरीरसुख, (२) धनागम, (३) कुटुम्बवृद्धि (पारिवारिक सुख), (४) मित्र व बन्धुसुख, (५) सन्ततिसुख, (६) शत्रु की पराजय, (७) स्त्रीसुख, (८) रोगभय, मृत्युभय, (९) धर्म–कर्म में प्रवृत्ति किंवा धनलाभ, (१०) धन व सम्मानप्राप्ति, (११) लाभ किंवा अन्य सुख–साधनप्राप्ति तथा (१२) बारहवें भाव से कष्ट व आर्थिक संकट का ज्ञान प्राप्त करें–

"जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः।
तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिं पुत्रे रिपौ शत्रु–पराजयःस्यात्।।
स्त्री–सौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे।
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यं पदाप्तिः।।
लाभे लाभः सुख–धनचयो दुःख–दारिद्र्यमन्त्ये।
पुंसोर्मेषे प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद् विलग्ने।।"

यदि " जगत्लग्न " अपने ' जन्मलग्न ' से ६, ८, या १२वें भावों में यत्किञ्चित् भी पापी ग्रह के प्रभाव में हो तो वह वर्ष कष्टप्रद किंवा अशुभ रहेगा– ऐसा जानें।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा।

इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए ।

गुर्रा–फल (सन् २०१५-१६ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा होता है, जो "गुर्रा" नाम से जाना जाता है।

सं. २०७१ वि. में कार्तिक शुक्ल तृतीया, इतवार तदनुसार २६ अक्तूबर सन् २०१४ ई. को यकम मुहर्रम वाले दिन मुस्लिम (हिजरी) सन् १४३६ का प्रारम्भ हुआ था।

क्योंकि, यकम मुहर्रम वाले दिन इतवार है। अतः हिजरी सन् १४३६ का बादशाह सूर्य है।

फल– वर्षा पर्याप्त हो, धान सस्ते हों। सरकार महंगाई पर कंट्रोल करे। जनता सुखी रहे। पशुधन सुरक्षित रहे। दूध–घी का लाभ सब को मिले। अनेकत्र वायुवेग से हानि भी संभव है। गेहूं, धान एवं तेल–तिलहन की फसल अच्छी हो। कहीं अग्निकाण्ड से हानि हो। कपास की उपज पर्याप्त हो। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में अशान्ति एवं कहीं हत्याकाण्ड व सत्तापरिवर्तन हो।

सं २०७२ वि. में आश्विन शुक्ल द्वितीया गुरुवार, तदनुसार १५ अक्तूबर, सन् २०१५ ई. को यकम मुहर्रम वाले दिन, मुस्लिम (हिजरी) सन् १४३७ प्रारम्भ होगा।

सं. २०७२ वि. में यकम मुहर्रम वाले दिन गुरुवार (वीरवार) होने से हिजरी सन् १४३७ का बादशाह गुरु होगा।

फल– वर्षा अच्छी हो, उपद्रव न हों, शासक एवं प्रजा सुखी रहे। परहित कार्य के लिए शासक ध्यान दें। पशु–पक्षी सब ठीक रहें। खेती एवं व्यापार ठीक रहें। स्त्री एवं बालरोग से जनता परेशान हो। अग्निकाण्ड से अनेकत्र हानि हो। सर्दी देर तक चले। कुछ भाग दुर्भिक्षग्रस्त रहें।

आय–व्यय–चक्र (विंशोत्तरी–मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

लाभ–व्यय देखने की रीति– अपनी राशि के लाभ–व्यय–अंको को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तियौ शुभम् ।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत् ।।"

विशेष– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दस दिन तक नीम के कोमल पत्ते, नीम की मंजरी या निमौली का चूर्ण, सैंधा नमक, इमली, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल– ये सब कूट–पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात पित्त [illegible]

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ'

(मालिक, कंवल फोटोस्टेट, चौक माता रानी, कुराली, PH. 0160-2641274)

श्री करतार सिंह जी ज्ञानी, सन् 1992 ई. से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं; जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक श्रीमार्त्तण्डपंचांग (हिन्दी) की ही संस्कार–समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अतः ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवम् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं। लेकिन अब **प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह** जी की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू–पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख–स्तम्भों से श्री मार्त्तण्डपंचांग की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आप को समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नए–नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली **'शिरोमणि तिथपत्रिका'** का श्रेय आपको ही है। इन उर्दू–पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्त्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जैसे–तैसे समय निकालकर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्डपंचांग की प्रूफरीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी है । आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशन–कार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली के प्रबन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प *चि. प्रेमचन्द्र शर्मा* सोलन (हि.प्र.) निवासी चि. *श्रीकृष्णशर्मा, शास्त्री,* M.A., वेदाचार्य, साहित्याचार्य, नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी *चि. सुरेशानन्द शर्मा* बी.ए., सुपुत्र श्री सुन्दरराम शर्मा भी 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' (हिन्दी) की पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बडी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इस वर्ष (2014 ई) से चि. रवि साधु सुपुत्र राणा रणजीत सिंह, वार्ड नं. 2, कुराली(पं.) ने भी इस कार्य में अपना सहयोग देना प्रारम्भ किया है। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे उत्साहपूर्ण सहयोग से काफी हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है।

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(२१ मार्च से ४ अप्रैल तक, सन् २०१५ ई.)

उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

२७ मार्च को बु. पूर्व में अस्त हो जाएगा । प्रातः श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा । सायं गु. पूर्व में और मं.शु. पश्चिमक्षितिज में होंगे । २२ मार्च को चं.मं.शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में एक साथ देखे जा सकते हैं । ४ अप्रै. को भारत में चन्द्रग्रहण दिखाई देगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. ज.उ.ल.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३०	१	१	श.	१२	३६	उ.भा.	६	२१	ब्र.	४६	१	ब.	१२	३६	८	२१	३०	२९	मीन			६	३०	१८	३०	११	५	५८	५२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, राहु हस्त २, केतु उ.भा. ४ में (A)
३०	६	२	र.	४	२८	रेव.	०	२	ऐं.	३७	०	कौ.	४	२८	९	२२	चै.१	ज.१	मेष	०	२	६	२८	१८	३१	११	६	५८	३०	पंचक समाप्त ०/०२, बुध पू.भा. में १/५०, श्रीमत्स्य (B)
अवम		३	र.	५७	२४	अश्वि.	५४	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
३०	११	४	चं.	५१	५१	भर.	५१	०	वै.	२९	५	व.	२४	३७	१०	२३	२	२	मेष			६	२७	१८	३१	११	७	५८	५	भ. २४/३७ से ५१/५१ तक, मंगल अश्वि. मेष में (C)
३०	१५	५	मं.	४८	३	कृत्ति.	४८	५७	वि.	२२	३१	ब.	१६	५७	११	२४	३	३	वृष	५	२२	६	२६	१८	३२	११	८	५७	३७	श्री(लक्ष्मी)पंचमी, नागपंचमी, हयव्रत, **कीलक संवत्सर**
३०	२०	६	बु.	४६	१०	रोहि.	४८	४८	प्री.	१७	२५	कौ.	१७	६	१२	२५	४	४	वृष			६	२५	१८	३३	११	९	५७	८	स्कन्दषष्ठी,
३०	२५	७	गु.	४६	१६	मृग.	५०	३६	आ.	१३	५४	ग.	१६	१३	१३	२६	५	५	मिथुन	१९	३०	६	२३	१८	३३	११	१०	५६	३६	भ. ४६/१६ बाद,
३०	२९	८	शु.	४८	१७	आर्द्रा	५४	१५	सौ.	११	५५	वि.	१७	१६	१४	२७	६	६	मिथुन			६	२२	१८	३४	११	११	५६	२	भ. १७/१६ तक, बुध पूर्व में अस्त ६ घं. २२ मि., बुध (D)
३०	३४	९	श.	५२	१	पुन.	५९	३०	शो.	११	२२	बा.	२०	९	१५	२८	७	७	कर्क	४३	५	६	२१	१८	३५	११	१२	५५	२६	श्रीरामनवमी (पुनर्वसुयोग), नवरात्र समाप्त, **चन्द्रग्रहण ४ अप्रैल**
३०	३९	१०	र.	५७	५	पुष्य	६०	०	अ.	१२	२	तै.	२४	३२	१६	२९	८	८	कर्क			६	२०	१८	३५	११	१३	५४	४७	बुध उ.भा. में ३८/०८, नवरात्रपारणा,
३०	४३	११	चं.	६०	०	पुष्य	६	४	सु.	१३	३८	व.	३०	७	१७	३०	९	९	कर्क			६	१९	१८	३६	११	१४	५४	६	भ. ३०/०७ बाद,
३०	४८	११	मं.	३	१०	आश्ले.	१३	२६	धृ.	१५	५२	वि.	३	१०	१८	३१	१०	१०	सिंह	१३	२६	६	१७	१८	३७	११	१५	५३	२३	भ. ३/१० तक, सूर्य रेव. में ४५/१५, कामदा एकादशी (E)
३०	५३	१२	बु.	९	४१	मघा	२१	१३	शू.	१८	२६	बा.	९	४१	१९	अ.१	११	११	सिंह			६	१६	१८	३७	११	१६	५२	३७	प्रदोषव्रत, अनङ्ग त्रयोदशी (देखें पृ. 13), अप्रैल प्रारम्भ,
३०	५७	१३	गु.	१६	१८	पू.फा.	२९	१	गं.	२१	२	तै.	१६	१८	२०	२	१२	१२	कन्या	४५	५६	६	१५	१८	३८	११	१७	५१	४९	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),
३१	२	१४	शु.	२२	३९	उ.फा.	३६	३१	वृ.	२३	२५	व.	२२	३९	२१	३	१३	१३	कन्या			६	१४	१८	३८	११	१८	५१	०	भ. २२/३९ से ५५/३३ तक, शुक्र कृत्ति. में ४४/१८, (F)
३१	६	१५	श.	२८	२७	हस्त	४३	२६	ध्रु.	२५	२३	ब.	२८	२७	२२	४	१४	१४	कन्या			६	१२	१८	३९	११	१९	५०	८	चन्द्रग्रहण(भारत में दृश्य) (देखें पृ. 20), चैत्री-पूर्णिमा, (G)

(A) १६/२७, चान्द्र संवत्सर २०७२ वि. प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल-श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, चन्द्रव्रत, निम्बपत्र-प्राशन, (B) जयन्ती, गौरी तृतीया(गणगौर), आन्दोलन तृतीया, शक चैत्र प्रारम्भ, जमद उस्सानी मु. प्रारम्भ, (C) ४०/५०, शुक्र भरणी में ३२/२०, (D) मीन में ४८/०२, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, (E) व्रत (स.), श्रीविष्णु-दमनोत्सव, दोलोत्सव,(F) ग्रहणवेध, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीशिव दमनोत्सव, (G) श्री हनुमान् जयन्ती (द.भा.), वैशाखस्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ मार्च,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	०	१०	३	०	७	५	११
११	८	२	२८	१८	१७	१०	१६	१६
५६	११	२६	३०	४६	२५	४३	२१	२१
३	१४	५४	११	२७	४८	४६	५६	५६
५६	७५३	४४	१०७	२	७१	१	३	३
२३	४	४०	२३	१६	३६	१७	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ३	आर्द्रा १	अश्वि. १	पू.भा. ३	आश्ले. १	भर. २	अनु. ३	हस्त २	उ.भा. ४

कुण्डली सूर्योदय (२७ मार्च)

मं.१ शु. | बु. ११ | २ | सु.१२ के. | १० | चं. ३ | ९ | ४ गु. | ६ रा. | ८ श. | ५ | ७

लोक भविष्यः- इस चान्द्रमास (चैत्र) में पांच शनिवार एवं पांच शुक्रवार होने पर दक्षिण-भारत में कहीं भूकम्प एवं कहीं अग्निकाण्ड से जनधनहानि हो । शनि-मंगल एवं राहु-मंगल का षडष्टक कहीं प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि का संकेत देता है । शनि वर्षेश एवं मंगल के मन्त्रिपद पर होने से यह वर्ष राजनैतिक दृष्टि से भी कहीं हत्याकाण्ड एवं कहीं अघटित घटनाओं वाला ही रहेगा ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- गुरु-शनि-राहु इस मास में वक्री हैं । पक्षारम्भ में रुई, सूत, सोना-चान्दी में अच्छी तेजी का उछाल आएगा । २३ से २७ मार्च तक अनाजों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड में घटाबढ़ी के बाद तेजी आए । २९ मार्च से २ अप्रैल तक रुई, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन, गेहूं, जौ, चना, चावल, घी एवं चान्दी तेज रहें । ३ अप्रैल से सभी बाजार मन्दे हो सकते हैं ।

आकाशलक्षण :- २२ से २४ एव २७, २९, ३०, ३१ मार्च तथा ३ अप्रैल के लगभग बंगलादेश, भूटान, सिक्किम, आसाम और हि. प्र. के कुछ भागों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि हो।

कुण्डली सूर्योदय (४ अप्रै.)

मं.१ शु. | ११ | बु. | २ | सु.१२ के. | १० | ३ | ९ | ४ गु. | चं. ६ रा. | ८ श. | ५ | ७

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ४ अप्रैल,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	०	११	३	०	७	५	११
१९	१४	८	१३	१८	२६	१०	१५	१५
५०	१८	२२	२६	३३	५६	३०	५६	५६
८	१३	५५	४७	१७	२४	५३	३०	३०
५९	७१९	४४	११८	०	७०	२	३	३
६	५४	१७	६	४८	५३	२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. १	हस्त २	अश्वि. ३	उ.भा. ४	आश्ले. १	कृत्ति. १	अनु. ३	हस्त २	उ.भा. ४

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, वैशाख कृष्ण पक्ष २																तारीखें				चन्द्रराशि – प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(५ से १८ अप्रैल तक, सन् २०१५ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र. चैत्र	अं. अप्रैल	श. चैत्र	मु. ज.उ.सा.				सूर्योदय		सूर्यास्त						बु. अस्त है। मं. भी १० अप्रै. को अदृश्य हो जाएगा। प्रातः श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं गु. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में और शु. पश्चिमक्षितिज में दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	११	१	र.	३३	२७	चित्रा	४९	३४	व्या.	२६	४६	बा.	०	५७		२३	५	१५	१५	तुला	१६	३९	६	११	१८	४०	११	२०	४९	१४	बुध रेव. में ३६/०२, ग्रहणवेध,
३१	१६	२	चं.	३७	३०	स्वाती	५४	४६	ह.	२७	२७	तै.	५	२८		२४	६	१६	१६	तुला			६	१०	१८	४०	११	२१	४८	१७	शुक्र वृष में ३३/५५, ग्रहणवेध,
३१	२०	३	मं.	४०	२८	विशा.	५८	५२	व.	२७	१९	व.	८	५९		२५	७	१७	१७	वृश्चिक	४२	५८	६	९	१८	४१	११	२२	४७	१९	भ. ८/५६ से ४०/२८ तक, ग्रहणवेध,
३१	२५	४	बु.	४२	१४	अनु.	६०	०	सि.	२६	१७	ब.	११	२१		२६	८	१८	१८	वृश्चिक			६	८	१८	४२	११	२३	४६	२०	गुरु मार्गी ४०/४५, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३१	२९	५	गु.	४२	४२	अनु.	१	४८	व्य.	२४	१६	कौ.	१२	२८		२७	९	१९	१९	वृश्चिक			६	६	१८	४२	११	२४	४५	१८	
३१	३४	६	शु.	४१	५०	ज्येष्ठा	३	२७	व.	२१	१३	ग.	१२	१६		२८	१०	२०	२०	धनु	३	२७	६	५	१८	४३	११	२५	४४	१४	भ. ४१/५० बाद, मंगल अस्त १८ घं. ४३ मि., मंगल (A)
३१	३८	७	श.	३९	३५	मूल	२	४९	प.	१७	५	वि.	१०	४२		२९	११	२१	२१	धनु			६	४	१८	४३	११	२६	४३	९	भ. १०/४२ तक,
३१	४३	८	र.	३५	५८	पू.षा.	२	४४	शि.	११	५२	बा.	७	४७		३०	१२	२२	२२	मकर	१७	१८	६	३	१८	४४	११	२७	४२	२	बुध अश्वि. मेष में ६/३१,
३१	४७	९	चं.	३१	५	उ.षा. श्रव.	० ५६	२४ ५१	सि. सा.	५ ५८	३५ १७	तै.	३	३१		३१	१३	२३	२३	मकर			६	२	१८	४५	११	२८	४०	५३	भ. ५८/०४ बाद,
३१	५२	१०	मं.	२५	४	धनि.	५२	१४	शु.	५०	१०	वि.	२५	४		वै.१	१४	२४	२४	कुम्भ	२४	४०	६	१	१८	४५	११	२९	३९	४३	भ. २५/०४ तक, पंचक प्रारम्भ २४/४०, सं. सूर्य (B)
३१	५६	११	बु.	१८	६	शत.	४६	४८	शु.	४१	२२	बा.	१८	६		२	१५	२५	२५	कुम्भ			६	०	१८	४६	०	०	३८	३१	शुक्र रोहि. में ६/५५, वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), (C)
३२	०	१२	गु.	१०	२५	पू.भा.	४०	५०	ब्र.	३२	५	तै.	१०	२५		३	१६	२६	२६	मीन	२७	२०	५	५८	१८	४७	०	१	३७	१७	वक्री शनि अनु. २ में १७/०२, प्रदोषव्रत,
३२	५	१३	शु.	२	१८	उ.भा.	३४	३८	ऐं.	२२	३५	व.	२	१८		४	१७	२७	२७	मीन			५	५७	१८	४७	०	२	३६	१	भ. २/१८ से २८/१३ तक, प्लूटो वक्री ८/३०,
अवम		१४	शु.	५४	९	००	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३२	९	३०	श.	४६	१६	रेव.	२८	३५	वै.	१३	८	च.	२०	१२		५	१८	२८	२८	मेष	२८	३५	५	५६	१८	४८	०	३	३४	४४	पंचक समाप्त २८/३५, बुध भर. में २८/५२, शनैश्चरी अमा,

(A) भर. में ४२/२२, (B) अश्विनी मेष में १६/२२, मु. ३०, पुण्यकाल ३/२२ बाद, वैशाखी (पं.), (C) श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १२ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	०	११	३	१	७	५	११
२७	२५	१४	२६	१८	६	१०	१५	१५
४२	४२	१५	४३	३२	२०	१२	३१	३१
२	५३	४८	२४	११	३६	१४	५	५
५८	८३२	४३	१२५	०	७०	२	३	३
५२	१३	५३	५४	४३	४	४३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१२ अप्रै.)

मं.१ | ११
बु. सू.१२ के.
शु. २ | १०
३ | ६ चं.
४ गु. | ६ रा. | ८ श.
५ | ७

लोक भविष्यः- इस पक्ष में सूर्य, बुध एवं मंगल का एकराशिस्थ होना एवं शनि-शुक्र का समसप्तक कुछ प्रान्तों में भीषण दुर्भिक्षकारक हो सकता है या कहीं अकालिक वर्षा से फसल नष्ट हो-" क्रूरैर्ग्रहैस्तु सौम्यानां यदि स्यात् समसप्तकम् । अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि ।।" मेष संक्रान्ति मंगलवारी, अमावस शनिवारी एवं प्रतिपदा रविवारी होने से भी राजनैनिक परिस्थिति कहीं अघटित घटनाओं को जन्म देगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः-पक्षारम्भ में केसर, मजीट, कुसुम्भ, लालचन्दन, लालमिर्च कुछ तेज रहें । ६ अप्रैल के लगभग रुई, कपास में मन्दी का झटका आए । सोना, चान्दी, तेल, तिलहन, अनाज मन्दे रहें । ८ से १० अप्रैल तक रुई, चावल, गेहूं, अलसी, सरसों, गुड़, सोना, चान्दी तेज रहें । १२/१३ अप्रैल को मोती, सोना, चान्दी, गेहूं, चना आदि अनाज, तेल, तिलहन में मन्दा आए । १४ अप्रैल को तेल, तिलहन, [illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१८ अप्रै.)

२ शु. | चं.१२ के.
बु. सू.१ मं.
३ | ११
४ गु. | १०
५ | ७ | ६
रा. ६ | ८ श.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	०	०	३	१	७	५	११
३	२२	१८	१२	१८	१३	६	१५	१५
३४	४०	३८	१८	३६	१६	५४	१२	१२
४४	७	२७	१४	१५	१८	४७	०	०
५८	८८६	४३	१२३	१	६६	३	३	३
४१	४८	३६	४०	४६	२२	१०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, वैशाख शुक्ल पक्ष ३															तारीखें				चन्द्रराशि – प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१६ अप्रैल से ४ मई तक, सन् २०१५ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						मं. अस्त है । २३ अप्रै. को बु. पश्चिम में उदित हो जाएगा । प्रातः श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा । सायं गु. खमध्यासन्न और शु. पश्चिमक्षितिज में होगा । २६ अप्रै. रात्रि में चं.गु. परस्पर काफी आसन्न देखें जा सकते हैं ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	१३	१	र.	३९	३	अश्वि.	२३	४	वि.	४	२	कि.	१२	३९	६	१९	२९	२९	मेष			५	५५	१८	४९	०	४	३३	२४	
									प्री.	५५	३२																			
३२	१८	२	चं.	३२	५१	भर.	१८	२८	आ.	४८	१	बा.	५	५७	७	२०	३०	३०	वृष	३२	२८	५	५४	१८	४९	०	५	३२	३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य सायन वृष में २३/१५, (A)
३२	२२	३	मं.	२८	१	कृत्ति.	१५	८	सौ.	४१	४१	तै.	०	२५	८	२१	वै.१	र.१	वृष			५	५३	१८	५०	०	६	३०	४०	भ. ५६/२६ बाद, अक्षय तृतीया, शक वैशाख प्रारम्भ, (B)
३२	२६	४	बु.	२४	५२	रोहि.	१३	२५	शो.	३६	४६	वि	२४	५२	९	२२	२	२	मिथुन	४३	१४	५	५२	१८	५०	०	७	२९	१४	भ. २४/५२ तक, अगस्त्य अस्त,
३२	३१	५	गु.	२३	३७	मृग.	१३	३३	अ.	३३	२४	वा.	२३	३७	१०	२३	३	३	मिथुन			५	५१	१८	५१	०	८	२७	४७	बुध पश्चिम में उदित १८ घं. ५१ मि., यूरेनस रेवती (C)
३२	३५	६	शु.	२४	२२	आर्द्रा	१५	३७	सु.	३१	३५	तै.	२४	२२	११	२४	४	४	मिथुन			५	५०	१८	५२	०	९	२६	१७	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,
३२	३९	७	श.	२७	२	पुन.	१९	३५	धृ.	३१	१६	व.	२७	२	१२	२५	५	५	कर्क	२	२३	५	४९	१८	५२	०	१०	२४	४५	भ. २७/०२ से ५६/१२ तक, बुध कृत्ति. में २०/२५,(D)
३२	४३	८	र.	३१	२३	पुष्य	२५	१२	शू.	३२	१४	व.	३१	२३	१३	२६	६	६	कर्क			५	४८	१८	५३	०	११	२३	११	शुक्र मृग. में ४२/४२,
३२	४७	९	चं.	३७	०	आश्ले.	३२	५	ग.	३४	९	वा.	४	१२	१४	२७	७	७	सिंह	३२	५	५	४७	१८	५४	०	१२	२१	३५	सूर्य भर. में ५६/२०, बुध वृष में १५/४५, श्रीजानकी(E)
३२	५१	१०	मं.	४३	२१	मघा	३९	४३	वृ.	३६	३९	तै.	१०	१०	१५	२८	८	८	सिंह			५	४६	१८	५४	०	१३	१९	५७	
३२	५५	११	बु.	४९	५२	पू.फा.	४७	३३	ध्रु.	३९	२०	व.	१६	३६	१६	२९	९	९	सिंह			५	४५	१८	५५	०	१४	१८	१७	भ. १६/३६ से ४६/५२ तक, मंगल कृत्ति. में ५/५५,(F)
३२	५९	१२	गु.	५६	२	उ.फा.	५५	३	व्या.	४१	४८	ब.	२२	५७	१७	३०	१०	१०	कन्या	४	३०	५	४४	१८	५६	०	१५	१६	३४	
३३	३	१३	शु.	६०	०	हस्त	६०	०	ह.	४३	४५	कौ.	२८	४३	१८	म.१	११	११	कन्या			५	४३	१८	५६	०	१६	१४	५०	प्रदोषव्रत, मई प्रारम्भ,
३३	७	१३	श.	१	२४	हस्त	१	४९	व.	४४	५५	तै.	१	२४	१९	२	१२	१२	तुला	३४	५१	५	४२	१८	५७	०	१७	१३	४	शुक्र मिथुन में ३७/०७, श्रीनृसिंह जयन्ती,
३३	११	१४	र.	५	४४	चित्रा	७	३५	सि.	४५	११	व.	५	४४	२०	३	१३	१३	तुला			५	४१	१८	५८	०	१८	११	१६	भ. ५/४४ से ३७/१६ तक, मंगल वृष में ४५/३०,(G)
३३	१५	१५	चं.	८	४८	स्वाती	१२	७	व्य.	४४	२८	ब.	८	४८	२१	४	१४	१४	वृश्चिक	५९	४२	५	४०	१८	५८	०	१९	९	२६	बुध रोहि. में १०/४१, श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाखी पूर्णिमा,(H)

(A) ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, श्रीपरशुराम जयन्ती, श्री शिवाजी जयन्ती, (B) रजब मु. प्रारम्भ, (C) ३ में २०/४०, श्रीशंकराचार्य जयन्ती, (D) श्रीगंगाजन्म, (E) जयन्ती (F) मोहिनी एकादशी व्रत (स.), (G) श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीकूर्म जयन्ती, ,(H) वैशाखस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	०	०	३	१	७	५	११
११	११	२४	२७	१८	२२	६	१४	१४
२३	२५	२५	४६	५८	३०	२७	४६	४६
१२	३३	५३	७	५३	३३	३३	३४	३४
५८	७२३	४३	१०३	३	६८	३	३	३
२४	२७	११	३१	१५	१६	४१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ४	पुष्य ३	भर. ४	कृत्ति. १	आश्ले. १	रोहि. ४	अनु. २	हस्त २	उ.भा. ४

कुण्डली सूर्योदय (२६ अप्रै.)

२ शु | १२ के. | बु. सू.१ मं. | ३ | ११ | चं. ४ गु. | १० | ५ | ७ | ९ | रा. ६ | ८ श.

लोकभविष्यः– इस चान्द्रमास में पांच रविवार एवं पांच चन्द्रवार हैं। पांच चंद्रवार प्रजा में धन-धान्यसमृद्धि एवं सुख-सम्पदा के सूचक हैं । लेकिन पांच रविवार किसी प्रान्त-विशेष में दुर्भिक्ष, कहीं यवनराष्ट्र में सत्ता- हस्तान्तरण, दुर्भिक्ष आदि से हानिकारक भी रहें;–

"यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पञ्च सन्ततम् ।
दुर्भिक्षं छत्रभंगःस्यात्तदा तत्र महद्भयम्।।"

पक्षान्त में शनि का मंगल-बुध के साथ समसप्तक मई के प्रथम सप्ताह में भूकम्प, तूफान आदि से हानिकारक भी है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः– पक्षारम्भ में चावल, रुई, सूत, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे । सरसों, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, चना में भी तेजी रहे । २१ अप्रैल को सोना, चान्दी के बाजारों में खरीददारी अधिक हो । २३ अप्रैल के लगभग बाज़ार कमजोर रहें । २५/२६ अप्रैल को बाजार ऊपर-नीचे रहें । २७ अप्रैल से १ मई तक तेल, तिलहन, रुई, सोना-चान्दी तेज रहें, लेकिन २ मई को तेल, तिलहन, ग्वार में झटके की मन्दी आ सकती है, आगे फिर तेजी बने ।

आकाशलक्षणः– अप्रैल २३ से २६ एवं मई २, ३, ४ को राजस्थान, आसाम, उड़ीसा, मुम्बई, उ.प्र. एवं हि.प्र. के कुछ भागों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (४ मई)

२ मं. बु. | १२ के. | शु. ३ | सू. १ | ११ | ४ गु. | १० | ५ | चं. ७ | ९ | रा. ६ | ८ श.

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ४ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	१	१	३	२	७	५	११
१६	१७	०	६	१९	१	८	१४	१४
६	२२	१०	४६	२६	३२	५६	२१	२१
२७	५८	१	५६	३७	११	३६	८	८
५८	७५५	४२	७०	४	६६	४	३	३
८	२०	४८	३८	३५	५६	५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. २	स्वा. ४	कृत्ति. २	कृत्ति. ४	आश्ले. १	मृग. ३	अनु. २	हस्त २	उ.भा. ४

श्री वि.सं. २०७२, शाक १६३७, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(५ से १८ मई तक, सन् २०१५ ई.)

उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

मं. अस्त है । प्रातः श. पश्चिम में होगा । सायं गु. याम्योत्तरवृत्त के पास और शु.बु. पश्चिमक्षितिज में होंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	तारीखें अं. मई	तारीखें श. वैशाख	तारीखें मु. रज्जब	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३३	१९	१	मं.	१०	३६	विशा.	१५	२६	व.	४२	४७	कौ.	१०	३६	२२	५	१५	१५	वृश्चिक			५	४०	१८	५९	०	२०	७	३५	
३३	२२	२	बु.	११	९	अनु.	१७	३३	प.	४०	१०	ग.	११	९	२३	६	१६	१६	वृश्चिक			५	३९	१९	०	०	२१	५	४१	भ. ४०/५१ बाद,
३३	२६	३	गु.	१०	३४	ज्येष्ठा	१८	३३	शि.	३६	४०	वि.	१०	३४	२४	७	१७	१७	धनु	१८	३३	५	३८	१९	०	०	२२	३	४७	भ. १०/३४ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३३	३०	४	शु.	८	५५	मूल	१८	३३	सि.	३२	२३	बा.	८	५५	२५	८	१८	१८	धनु			५	३७	१९	१	०	२३	१	५०	शुक्र आर्द्रा में ३७/००,
३३	३३	५	श.	६	२१	पू.षा.	१७	३७	सा.	२७	२३	तै.	६	२१	२६	९	१९	१९	मकर	३२	१५	५	३६	१९	२	०	२३	५९	५३	
३३	३७	६	र.	२	५२	उ.षा.	१५	५२	शु.	२१	४२	व.	२	५२	२७	१०	२०	२०	मकर			५	३६	१९	२	०	२४	५७	५३	भ. २/५२ से ३०/४५ तक, गुरु आश्ले. २ में ५/४०,
अवम		७	र.	५८	३९	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३३	४०	८	चं.	५३	४४	श्रव.	१३	२१	शु.	१५	२५	बा.	२६	११	२८	११	२१	२१	कुम्भ	४१	४५	५	३५	१९	३	०	२५	५५	५३	पंचक प्रारम्भ ४१/४६, सूर्य कृत्ति. में ४५/२७,
३३	४४	९	मं.	४८	११	धनि.	१०	१०	ब्र.	८	३५	तै.	२०	५७	२९	१२	२२	२२	कुम्भ			५	३४	१९	४	०	२६	५३	५१	
३३	४७	१०	बु.	४२	८	शत.	६	२३	ऐं. वै.	१ ५३	१४ ३१	व.	१५	१०	३०	१३	२३	२३	मीन	४८	१२	५	३३	१९	४	०	२७	५१	४८	भ. १५/१० से ४२/०८ तक,
३३	५०	११	गु.	३५	४२	पू.भा. उ.भा.	२ ५७	६ ३२	वि.	४५	३१	ब.	८	५५	३१	१४	२४	२४	मीन			५	३३	१९	५	०	२८	४९	४४	अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.),
३३	५४	१२	शु.	२९	४	रेव.	५२	५२	प्री.	३७	२४	कौ.	२	२३	ज्ये१	१५	२५	२५	मेष	५२	५२	५	३२	१९	६	०	२९	४७	३९	पंचक समाप्त ५२/५२, सं. सूर्य वृष में १२/४२, मु. (A)
३३	५७	१३	श.	२२	२९	अश्वि.	४८	२१	आ.	२९	२०	व.	२२	२९	२	१६	२६	२६	मेष			५	३२	१९	६	१	०	४५	३२	भ. २२/२६ से ४६/२० तक,
३४	०	१४	र.	१६	१२	भर.	४४	१८	सौ.	२१	३३	श.	१६	१२	३	१७	२७	२७	वृष	५८	२३	५	३१	१९	७	१	१	४३	२४	मंगल रोहि. में ५३/१३, वटसावित्री व्रत (अमापक्ष), (B)
३४	३	३०	चं.	१०	३१	कृत्ति.	४१	१	शो.	१४	१९	ना.	१०	३१	४	१८	२८	२८	वृष			५	३०	१९	८	१	२	४१	१४	सोमवती अमावस, भावुका अमावस,

(A) ३०, पुण्यकाल २८/४२ तक, प्रदोषव्रत, (B) (देखें पृ. 13),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ११ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	१	१	३	२	७	५	११
२५	२०	५	१६	२०	६	८	१३	१३
५५	१०	८	२३	४	१६	२७	५८	५८
५४	२०	३२	४६	५९	४८	१५	५३	५३
५७	८४२	४२	३७	५	६५	४	३	३
५८	२२	२८	३१	४०	३६	१६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (११ मई)

२ मं. बु.
१२ के.
शु. ३
सू. १
११
४ गु.
१० चं.
५
७
६
रा. ६
८ श.

लोकभविष्यः- ज्येष्ठ चान्द्रमास में पांच मंगलवार एवं शनि-मंगल का समसप्तकयोग सीमाप्रान्तों पर भारी अशान्ति का संकेत देता है । भारत को चीन-पाक एवं अन्य विरोधी देशों पर अपने सैन्यबल को सुसन्नद्ध रखना होगा;-

" यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः ।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।"

शुक्र-शनि का षडष्टकयोग किसी मुस्लिम राष्ट्र में प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त करे या अराजकता से हत्याकाण्ड का कारण बने । इस पक्ष में प्रतिपदा को मंगलवार होने से जनता में रोग से परेशानी हो-ऐसा प्रतीत होता है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ से ८ मई तक गेहूं आदि अनाजों में अचानक मन्दा बने। १० से १७ मई तक घी, रुई, सोना, चान्दी, अलसी, एरण्डी, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, गुड़, खाण्ड, बादाम, सुपारी, नारियल तेज रहें । १८ मई को बाजारों का रुख अचानक बदलेगा ।

आकाशलक्षणः- मई ८ एवं १० से १८ मई तक मुम्बई, आसाम, तिरुवनन्तपुरम्, उड़ीसा, बिहार एवं हि.प्र. में वर्षा के योग हैं । जम्मू-काश्मीर एवं उत्तरी भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो ।

कुण्डली सूर्योदय (१८ मई)

३ शु.
१
चं.
के.
गु. ४
सू. २ मं. बु.
१२
५
११
६ रा.
श. ८
१०
७
९

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	१	३	२	७	५	११
२	०	१०	१६	२०	१६	७	१३	१३
४१	२२	४	१	४७	५१	५६	३६	३६
१५	१६	४५	४६	४४	२४	३२	३८	३८
५७	८४१	४२	२	६	६४	४	३	३
४९	५६	८	४५	४०	१	२८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि.सं. २०७२, शाक १९३७, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(१६ मई से २ जून तक, सन् २०१५ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

मं. अस्त है । बु. भी २१ मई को पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा । प्रातः श. पश्चिमक्षितिज में होगा । सायं गु.शु. पश्चिमकपाल में दिखाई देंगे । २१ मई को सायं पश्चिम में चं.शु. एक-साथ देखे जा सकते हैं ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. वैशाख	मु. रजब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	६	१	मं.	५	४८	रोहि.	३८	५२	अ.	७	५२	ब.	५	४८	५	१९	२९	२९	वृष			५	३०	१९	८	१	३	३९	४	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध वक्री ४/३२,
३४	९	२	बु.	२	१९	मृग.	३८	९	सु. घृ.	२ ५८	२७ १८	कौ.	२	१९	६	२०	३०	शा.१	मिथुन	८	२०	५	२९	१९	९	१	४	३६	५१	शुक्र पुन. में ५७/३०, रम्भा तृतीया, शाबान मु. प्रारम्भ,
३४	१२	३	गु.	०	२६	आर्द्रा	३९	७	शू.	५५	३४	ग.	०	२६	७	२१	३१	२	मिथुन			५	२९	१९	९	१	५	३४	३७	भ. ३०/२२ बाद, बुध पश्चिम में अस्त १६घं. ०६मि.,(A)
३४	१५	४	शु.	०	१८	पुन.	४१	५४	गं.	५४	१८	वि.	०	१८	८	२२	ज्ये.१	३	कर्क	२६	३	५	२८	१९	१०	१	६	३२	२२	भ. ०/१८ तक, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ, बलिदान दिन श्रीगुरु (B)
३४	१७	५	श.	२	२	पुष्य	४६	२६	वृ.	५४	२५	बा.	२	२	९	२३	२	४	कर्क			५	२८	१९	११	१	७	३०	५	राहु हस्त १, केतु उ.भा. ३ में १३/५२, अरण्यषष्ठी (C)
३४	२०	६	र.	५	३२	आश्ले.	५२	३०	ध्रु.	५५	४४	तै.	५	३२	१०	२४	३	५	सिंह	५२	३०	५	२७	१९	११	१	८	२७	४७	विन्ध्यवासिनी पूजा,
३४	२३	७	चं.	१०	३१	मघा	५९	४०	व्या.	५७	५४	व.	१०	३१	११	२५	४	६	सिंह			५	२७	१९	१२	१	९	२५	२७	भ. १०/३१ से ४३/२६ तक, सूर्य रोहि. में ३६/०५,
३४	२५	८	मं.	१६	२९	पू.फा.	६०	०	ह.	६०	०	ब.	१६	२९	१२	२६	५	७	सिंह			५	२६	१९	१३	१	१०	२३	५	
३४	२८	९	बु.	२२	५१	पू.फा.	७	२४	ह.	०	३१	कौ.	२२	५१	१३	२७	६	८	कन्या	२४	२१	५	२६	१९	१३	१	११	२०	४२	
३४	३०	१०	गु.	२८	५८	उ.फा.	१५	१	व.	३	६	ग.	२८	५८	१४	२८	७	९	कन्या			५	२६	१९	१४	१	१२	१८	१८	श्रीगंगा दशहरा (हस्त नक्षत्र ११ घं. २६ मि. बाद),
३४	३२	११	शु.	३४	१५	हस्त	२१	५६	सि.	५	१४	व.	१	३६	१५	२९	८	१०	तुला	५४	५९	५	२५	१९	१४	१	१३	१५	५२	भ. १/३६ से ३४/५५ तक, निर्जला एकादशी व्रत (स.),
३४	३४	१२	श.	३८	१५	चित्रा	२७	४२	व्य.	६	३१	ब.	६	१५	१६	३०	९	११	तुला			५	२५	१९	१५	१	१४	१३	२५	शुक्र कर्क में ३८/४५,
३४	३६	१३	र.	४०	४४	स्वाती	३२	२	व.	६	४३	कौ.	९	२९	१७	३१	१०	१२	तुला			५	२५	१९	१५	१	१५	१०	५६	प्रदोषव्रत,
३४	३८	१४	चं.	४१	३८	विशा.	३४	४९	प.	५	४१	ग.	११	११	१८	जू.१	११	१३	वृश्चिक	१९	१६	५	२५	१९	१६	१	१६	८	२६	भ. ४१/३८ बाद, जून प्रारम्भ,
३४	४०	१५	मं.	४१	१	अनु.	३६	६	शि. सि.	३ ५९	२४ ५९	वि.	११	१९	१९	२	१२	१४	वृश्चिक			५	२४	१९	१६	१	१७	५	५६	भ. ११/१६ तक, शुक्र पुष्य में ५६/४०, श्रीसत्यनारायण(D)

(A) सूर्य सायन मिथुन में २१/५५, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.), (B) अर्जुनदेव जी, (C) (देखें पृ. 13), (D) व्रत, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१	१	३	२	७	५	११
१०	१३	१५	१७	२१	२५	७	१३	१३
२३	२५	४०	२२	४४	१६	२०	११	११
६	२४	२५	१४	५५	३	४५	१२	१२
५७	७०६	४१	२८	७	६१	४	३	३
३७	७	४५	२५	४४	४६	२८	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. १	पू.फा. १	रोहि. २	रोहि. ३	आश्ले. २	पुन. २	ज्ये. २	हस्त १	उ.भा. ३

कुण्डली सूर्योदय (२६ मई)

३ शु. | १ | बु. | के.
गु. ४ | सू. २ मं. | १२
चं. ५ | ११
६ रा. | श. ८ | १०
७ | ९

लोकभविष्य:- इस पक्ष में बुध वक्री होकर पश्चिम में अस्त हो रहा है । प्रतिपदा एवं पूर्णिमा दोनों मंगलवारी हैं, अतः कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु व दुर्भिक्षादि से प्रजा को कष्ट का संकेत मिलता है- "ज्येष्ठशुक्ल-प्रतिपदि स्याद्यदि भौमवासरः । छत्रभङ्गं प्रजापीडां दुर्भिक्षं च समादिशेत् ।।"

क्योंकि इस पक्ष (ज्ये. शु.) में तृतीया को आर्द्रा नक्षत्र भी है, अतः प्रान्तविशेष में अकालिक वर्षा से फसलों को हानि पहुंचे एवं दुर्भिक्ष की स्थिति बने । प्रतिपदा-पूर्णिमा को मंगलवार है एवं ३१ मई को शुक्र कर्कराशि में गुरु के साथ (एकराशि में) आ जाता है, अतः जून २०१५ के प्रथम सप्ताह तक समुद्री तूफान, भूकम्प आदि से हानिभय भी है ।

कुण्डली सूर्योदय (२ जून)

३ | १
शु. | बु. | के.
गु. ४ | सू. २ मं. | १२
५ | ११
६ रा. | श. ८ चं. | १०
७ | ९

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१	१	३	३	७	५	११
१७	८	२०	१३	२२	२	६	१२	१२
५	४६	३१	३७	४१	२१	४६	४८	४८
५६	३१	३६	१७	३४	१८	४७	५६	५६
५७	७६०	४१	३१	८	५६	४	३	३
२८	३८	२४	४६	३३	१७	२१	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ३	अनु. २	रोहि. ४	रोहि. २	आश्ले. २	पुन. ४	अनु. २	हस्त १	उ.भा. ३

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:-१६/२० मई को सोना-चान्दी में घटाबढ़ी, वायदा-व्यापारिक वस्तुओं में तेजी रहे। २१ से २५ मई तक रुई, सोना, चान्दी, पाट, हैसियन एवं शेयर मन्दे हों । ३० मई से पक्षान्त तक अलसी, एरण्ड, घी, तेल, खाण्ड, सूत, सण, रेशम तेज रहें । रुई में मन्दी का झटका आकर तेजी बने।

आकाशलक्षण:- मई १६ से २३, ३० एवं जून २ को महाराष्ट्र (मुम्बई), भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमाण्डु, जम्मू-काश्मीर, उ.प्र. एवं हि.प्र. में वायुवेग के साथ बादल-वर्षा के योग हैं । उ.भारत में आंधी, तूफान के साथ कहीं खण्डवृष्टि हो ।

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, प्र.आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(३ से १६ जून तक, सन् २०१५ ई.)

उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

मं. पूर्ववत् अस्त है । बु. ९ जून से प्रातः पूर्व में दृश्य हो जाएगा । सायं श. पूर्वकपाल में और गु.शु. पश्चिमकपाल में होंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. शाबान	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४२	१	बु.	३९	[illegible]	ज्येष्ठा	३६	३	सा.	५५	३३	बा.	१०	२	२०	३	१३	१५	धनु	३६	३	५	२४	१९	१७	१	१८	३	२४	
३४	४४	२	गु.	३६	०	मूल	३४	५४	शु.	५०	१७	तै.	६	३२	२१	४	१४	१६	धनु			५	२४	१९	१७	१	१९	०	५१	वक्री शनि अनु. १ में १५/३५,
३४	४६	३	शु.	३२	६	पू.षा.	३२	५५	शु.	४४	२२	व.	४	३	२२	५	१५	१७	मकर	४७	१८	५	२४	१९	१८	१	१९	५८	१७	भ. ४/०३ से ३२/०६ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	४७	४	श.	२७	३५	उ.षा.	३०	१९	ब्र.	२८	२	बा.	२७	२१	२३	६	१६	१८	मकर			५	२४	१९	१८	१	२०	५५	४२	मंगल मृग. में ४/४०, गुरु आश्ले. ३ में २४/०५,
३४	४९	५	र.	२२	४०	श्रव.	२७	१९	ऐं.	३१	२२	तै.	२२	४०	२४	७	१७	१९	कुम्भ	५५	४३	५	२३	१९	१९	१	२१	५३	७	पंचक प्रारम्भ ५५/४३,
३४	५०	६	चं.	१७	२९	धनि.	२४	५	वै.	२४	३१	व.	१७	२९	२५	८	१८	२०	कुम्भ			५	२३	१९	१९	१	२२	५०	३१	भ. १७/२६ से ४४/५० तक, सूर्य मृग. में ३१/०७,
३४	५१	७	मं.	१२	११	शत.	२०	४३	वि.	१७	३५	ब.	१२	११	२६	९	१९	२१	कुम्भ			५	२३	१९	२०	१	२३	४७	५४	बुध पूर्व में उदित ५ घं. २३ मि.,
३४	५२	८	बु.	६	४९	पू.भा.	१७	२०	प्री.	१०	३६	कौ.	६	४९	२७	१०	२०	२२	मीन	३	१०	५	२३	१९	२०	१	२४	४५	१७	
३४	५४	९	गु.	१	२९	उ.भा.	१३	५७	आ. सौ.	३ ५६	३७ ४३	ग.	१	२९	२८	११	२१	२३	मीन			५	२३	१९	२१	१	२५	४२	३९	भ. २८/५० से ५६/१२ तक, बुध मार्गी ५६/३७,
अवम		१०	गु	५६	१२	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
३४	५५	११	शु.	५१	६	रेव.	१०	४०	शो.	४९	५७	ब.	२३	३९	२९	१२	२२	२४	मेष	१०	४०	५	२३	१९	२१	१	२६	४०	१	पंचक समाप्त १०/४०, नेप्च्यून वक्री २३/१७, (A)
३४	५५	१२	श	४६	१६	अश्वि.	७	३५	अ.	४३	२४	कौ.	१८	४१	३०	१३	२३	२५	मेष			५	२३	१९	२१	१	२७	३७	२३	योगिनी एकादशी व्रत (वै.),
३४	५६	१३	र.	४१	५५	भर.	४	५०	सु.	३७	१४	ग.	१४	४	३१	१४	२४	२६	वृष	१९	१२	५	२३	१९	२२	१	२८	३४	४४	भ. ४१/५५ बाद, प्रदोषव्रत,
३४	५७	१४	चं.	३८	१४	कृत्ति.	२	३६	धृ.	३१	३७	वि.	१०	४	आ०१	१५	२५	२७	वृष			५	२३	१९	२२	१	२९	३२	४	भ. १०/०४ तक, सं. सूर्य मिथुन में २६/३०, मु.(B)
३४	५८	३०	मं.	३५	२९	रोहि.	१	९	शू.	२६	४३	च.	६	५२	२	१६	२६	२८	मिथुन	३०	४६	५	२३	१९	२२	२	०	२९	२४	भौमवती अमावस,

(A) योगिनी एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ. 13), (B) ४५, पुण्यकाल १३/३० बाद, मंगल मिथुन में ४६/२२,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १० जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१	१	३	३	७	५	११
२४	२६	२६	१०	२३	१०	६	१२	१२
४५	१८	१	३७	५३	३	१५	२३	२३
१८	५६	३६	३७	२	४७	४६	३०	३०
५७	८४७	४१	६	९	५५	४	३	३
२२	५३	४	१९	२४	४६	६	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१० जून)

३, १, शु., गु. ४, बु., सू. २ मं., के. १२, ५, ११ चं., ६ रा., श. ८, १०, ७, ९

लोकभविष्यः– वक्री शनि अनु. १ में आकर पश्चिमी प्रान्तों किंवा पश्चिमी देशों में अशान्ति, मुस्लिम राष्ट्रविशेष में अन्तर्कलह, युद्धमय वातावरण बनाए । सूर्य-मंगल का शनि के साथ षडष्टकयोग एवं भौमवती अमावस १५/१७ जून को कहीं वायुवेग के साथ प्राकृतिक उपद्रवों से हानि का कारण बनेंगे । पक्ष के पूर्वार्ध में बुध-शनि-राहु के वक्र होने से कहीं अग्निकाण्ड, कुछ प्रान्तों में सूखा रहने से दुर्भिक्ष की स्थिति बने, धनक्षय हो एवं प्रजा रोगादि से परेशान रहे;– " भौमे वक्रे त्वनावृष्टिर्बुधे वक्रे धनक्षयः ।
शनौ वक्रे प्रजापीड़ा राहुःस्यादग्निकारकः।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः– पक्षारम्भ में मिर्च, केसर, चन्दन, कपूर, चान्दी तेज रहे । ८ से १२ जून तक घी, गेहूं, जौ, चना, तिल, पाट, हैसियन, लालमिर्च एवं अन्य व्यापारिक वस्तुएं तेज रहें। १३ जून को रुई, चान्दी में घटाबढ़ी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन आदि मन्दे हों ।१५/१६ जून को सभी बाजारों में जोरदार तेजी बनेगी । आकाशलक्षणः– जून ४, ६, ८ एवं १३ से १५ जून तक उ.खण्ड, हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, उ.प्र., उड़ीसा, [illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१६ जून)

शु. ४ गु., बु.२ चं., ५, सू. ३ मं., १, ६ रा., के. १२, ७, ९, ११, श. ८, १०

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	२	१	३	३	७	५	११
०	२३	०	११	२४	१५	५	१२	१२
२६	८	७	६	५०	३०	५१	४	४
२४	१२	२५	४१	५६	२७	५०	२५	२५
५७	८०५	४०	२०	९	५२	३	३	३
२०	५५	४६	४३	५९	२८	५०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, प्र.(अधि.)आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

(१७ जून से २ जुलाई तक, सन् २०१५ ई.)

उत्तर–दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु।

मं. पूर्ववत् अस्त है । प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में होगा । सायं श. पूर्व कपाल में और गु.शु. पश्चिम-क्षितिजासन्न दिखाई देंगे । २ जुलाई को पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त के बाद जब चन्द्रोदय हो रहा होगा, पश्चिम में गु. शु. को परस्पर परमासन्न देखा जा सकेगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. शाबान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५८	१	बु.	३३	५५	मृग.	०	४३	गं.	२२	४४	किं.	४	४२	३	१७	२७	२९	मिथुन			५	२४	१९	२३	२	१	२६	४३	शुक्र आश्ले. में १६/५७, अधिक (मल) मास प्रारम्भ,
३४	५८	२	गु.	३३	४६	आर्द्रा	१	३३	वृ.	१९	५२	बा.	३	५०	४	१८	२८	३०	कर्क	४८	९	५	२४	१९	२३	२	२	२४	२	चन्द्रदर्शन, मु. ४५,
३४	५९	३	शु.	३५	१२	पुन.	३	५३	ध्रु.	१८	१४	तै.	४	२९	५	१९	२९	र.१	कर्क			५	२४	१९	२३	२	३	२१	२०	रमज़ान मु. प्रारम्भ,
३४	५९	४	श.	३८	१४	पुष्य	७	४६	व्या.	१७	५१	व.	६	४३	६	२०	३०	२	कर्क			५	२४	१९	२४	२	४	१८	३७	भ. ६/४३ से ३८/१४ तक,
३४	५९	५	र.	४२	४५	आश्ले.	१३	११	ह.	१८	४०	ब.	१०	२९	७	२१	३१	३	सिंह	१३	११	५	२४	१९	२४	२	५	१५	५४	सूर्य सायन कर्क में ४१/५०, दक्षिणायन एवं वर्षा ऋतु (A)
३४	५९	६	चं.	४८	२३	मघा	१९	५०	व.	२०	२८	कौ.	१५	३४	८	२२	आ.१	४	सिंह			५	२४	१९	२४	२	६	१३	१०	सूर्य आर्द्रा में २८/२२, शक आषाढ़ प्रारम्भ,
३४	५९	७	मं.	५४	३९	पू.फा.	२७	२०	सि.	२२	५६	ग.	२१	३१	९	२३	२	५	कन्या	४४	१८	५	२५	१९	२४	२	७	१०	२५	भ. ५४/३९ बाद,
३४	५९	८	बु.	६०	०	उ.फा.	३५	४	व्य.	२५	३६	वि.	२७	३२	१०	२४	३	६	कन्या			५	२५	१९	२४	२	८	७	४०	भ. २७/३२ तक,
३४	५८	८	गु.	०	२५	हस्त	४२	२४	व.	२८	२	ब.	०	२५	११	२५	४	७	कन्या			५	२५	१९	२५	२	९	४	५४	मंगल आर्द्रा में ३९/५५,
३४	५८	९	शु.	६	२४	चित्रा	४८	४१	प.	२९	४४	कौ.	६	२४	१२	२६	५	८	तुला	१५	४२	५	२६	१९	२५	२	१०	२	७	गुरु आश्ले. ४ में ३०/०५,
३४	५७	१०	श.	१०	४०	स्वाती	५३	२८	शि.	३०	२०	ग.	१०	४०	१३	२७	६	९	तुला			५	२६	१९	२५	२	१०	५९	२०	भ. ४१/५८ बाद,
३४	५७	११	र.	१३	१६	विशा.	५६	२९	सि.	२९	३४	वि.	१३	१६	१४	२८	७	१०	वृश्चिक	४०	५४	५	२६	१९	२५	२	११	५६	३२	भ. १३/१६ तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),
३४	५६	१२	चं.	१४	१	अनु.	५७	४०	सा.	२७	१९	बा.	१४	१	१५	२९	८	११	वृश्चिक			५	२६	१९	२५	२	१२	५३	४४	सोमप्रदोष व्रत,
३४	५५	१३	मं.	१२	५५	ज्येष्ठा	५७	८	शु.	२३	३८	तै.	१२	५५	१६	३०	९	१२	धनु	५७	८	५	२७	१९	२५	२	१३	५०	५६	बुध मृग. में ४२/२२,
३४	५४	१४	बु.	१०	७	मूल	५५	७	शु.	१८	३७	व.	१०	७	१७	जु.१	१०	१३	धनु			५	२७	१९	२५	२	१४	४८	७	भ. १०/०७ से ३८/०० तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (B)
३४	५३	१५	गु.	५	५४	पू.षा.	५९	५८	ब्र.	१२	२८	ब.	५	५४	१८	२	११	१४	धनु			५	२८	१९	२५	२	१५	४५	१८	

(A) प्रारम्भ, (B) जुलाई प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	२	१	३	३	७	५	११
९	१४	६	१६	२६	२२	५	११	११
४	५७	१३	५०	२३	५८	१९	३५	३५
५५	३७	१३	२६	५३	८	३०	४८	४८
५७	७१५	४०	५९	१०	४५	३	३	३
१३	४२	२६	५	४४	५५	१७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा १	हस्त २	मृग. ४	रोहि. ३	आश्ले. ३	आश्ले. २	अनु. १	हस्त १	उ.भा. ३

कुण्डली सूर्योदय (२५ जून)

शु. ४ गु.
बु.२
५
सू. ३ मं.
१
चं. ६ रा.
के. १२
७
९
११
श. ८
१०

लोकभविष्य :- इस पक्ष में सूर्य एवं मंगल- ये दोनों ग्रह आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करते हैं। अतः २२ जून से आगे उत्तरी भारत में वर्षा एवं मौसम अच्छा रहे। लेकिन शुक्र एवं गुरु के आश्लेषा नक्षत्र में आने से महाराष्ट्र, उड़ीसा एवं कुछ दक्षिण-पश्चिमी प्रान्तों में दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी । कहीं भयंकर बाढ़ एवं प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि भी संभव है;- "सार्पे न वर्षणं भवेत् ।"

किञ्च- "आदित्य-पुष्याश्लेषासु गुरु-योगे प्रासंगिनि । अनावृष्टि-भयं घोरं दुर्भिक्षं सर्वमण्डले ।।"

शनि-मंगल का षडष्टक एवं मंगल-राहु की दशम-चतुर्थस्थिति कहीं राजनैतिक संकट पैदा करे ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- लगभग १७ से २१ जून तक चावल, रुई, अरहर, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड में बाजार कुछ कमजोर रहें । २२ से २७ जून तक घी, तेल, रुई, सूत, कपास, तिलहन, चावल, चना, जौ में तेजी रहे। सोना, चान्दी में घटाबढ़ी रहे। ३० जून के लगभग गेहूं, तिल, उड़द, सरसों, रुई, चान्दी कमजोर रहें।

आकाशलक्षण:- जून १७, १८, २२ से २६, ३० एवं जुलाई के प्रारम्भ में पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., चण्डीगढ़, दिल्ली, उ.प्र., महाराष्ट्र एवं उड़ीसा में अनेकत्र वायुवेग के साथ अच्छी वर्षा के योग हैं । लेकिन कुछ प्रान्त सूखाग्रस्त भी रहें।

कुण्डली सूर्योदय(२ जुला.)

शु. ४ गु.
बु.२
५
सू. ३ मं.
१
६ रा.
के. १२
७
९ चं.
११
श. ८
१०

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	२	१	३	३	७	५	११
१५	१४	१०	२५	२७	२७	४	११	११
४५	२६	५५	५	४०	५६	५८	१३	१३
१९	३९	२३	१०	३४	५५	२	३२	३२
५७	८४५	४०	८५	११	३९	२	३	३
११	५३	६	४०	१४	२	४६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ३	पू.षा. १	आर्द्रा २	मृग. १	आश्ले. ४	आश्ले. ४	अनु. १	हस्त १	उ.भा. ३

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, द्वि.(अधि.)आषाढ़ कृष्ण पक्ष ८

(३ से १६ जुलाई तक, सन् २०१५ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

मं. अस्त ही है । बु. भी १३ जुला. को पूर्व में लुप्त हो जाएगा । सायं श. पूर्वकपाल में और गु.शु. पश्चिमक्षितिज के पास होंगे ।

दिनमान घ.	प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. (आषाढ़)	अं. (जुलाई)	श. (आषाढ़)	मु. (रमज़ान)	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५२	१	शु.	०	३	उ.षा.	४८	०	ऐ. वै.	५ ५७	२९ ५५	कौ.	०	३७	१९	३	१२	१५	मकर	६	१	५	२८	१९	२५	२	१६	४२	२९	
अवम		२	शु.	५४	३५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३४	५१	३	श.	४८	९	श्रव.	४३	३६	वि.	५०	२	व.	२१	२२	२०	४	१३	१६	मकर			५	२८	१९	२५	२	१७	३९	४०	भ. २१/२२ से ४८/०६ तक,
३४	५०	४	र.	४१	२६	धनि.	३९	४	प्री.	४२	४	ब.	१४	५२	२१	५	१४	१७	कुम्भ	११	१९	५	२९	१९	२५	२	१८	३६	५१	पंचक प्रारम्भ ११/१६, बुध मिथुन में १६/५०, शुक्र (A)
३४	४८	५	चं.	३५	१३	शत.	३४	४१	आ.	३४	१३	कौ.	८	२४	२२	६	१५	१८	कुम्भ			५	२९	१९	२५	२	१९	३४	२	सूर्य पुन. में २७/१७,
३४	४७	६	मं.	२९	९	पू.भा.	३०	३७	सौ.	२६	३९	ग.	२	१०	२३	७	१६	१९	मीन	१६	३५	५	३०	१९	२४	२	२०	३१	१३	भ. २६/०६ से ५६/२१ तक,
३४	४५	७	बु.	२३	३३	उ.भा.	२७	२	शो.	१९	२८	ब.	२३	३३	२४	८	१७	२०	मीन			५	३०	१९	२४	२	२१	२८	२५	
३४	४४	८	गु.	१८	३१	रेव.	२४	०	अ.	१२	४३	कौ.	१८	३१	२५	९	१८	२१	मेष	२४	०	५	३१	१९	२४	२	२२	२५	३७	पंचक समाप्त २४/००, बुध आर्द्रा में ११/४३,
३४	४२	९	शु.	१४	४	अश्वि.	२१	३४	सु.	६	२७	ग.	१४	४	२६	१०	१९	२२	मेष			५	३१	१९	२४	२	२३	२२	५०	भ. ४२/०६ बाद,
३४	४०	१०	श.	१०	१५	भर.	१९	४६	धृ. शू.	० ५५	४४ ३२	वि.	१०	१५	२७	११	२०	२३	वृष	३४	२५	५	३२	१९	२४	२	२४	२०	३	भ. १०/१५ तक,
३४	३८	११	र.	७	७	कृत्ति.	१८	३९	गं.	५०	५५	बा.	७	७	२८	१२	२१	२४	वृष			५	३२	१९	२३	२	२५	१७	१६	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),
३४	३६	१२	चं.	४	४५	रोहि.	१८	१८	वृ.	४६	५९	तै.	४	४५	२९	१३	२२	२५	मिथुन	४८	२७	५	३३	१९	२३	२	२६	१४	३०	बुध पूर्व में अस्त ५ घं. ३३ मि., वक्री प्लूटो पू.षा. २ (B)
३४	३४	१३	मं.	३	१४	मृग.	१८	५०	ध्रु.	४३	४९	व.	३	१४	३०	१४	२३	२६	मिथुन			५	३३	१९	२३	२	२७	११	४४	भ. ३/१४ से ३२/५८ तक, गुरु मघा १ सिंह में २/१२,
३४	३२	१४	बु.	२	४३	आर्द्रा	२०	२३	व्या.	४१	३१	श.	२	४३	३१	१५	२४	२७	मिथुन			५	३४	१९	२३	२	२८	८	५९	मंगल पुन. में ३८/२२,
३४	३०	३०	गु.	३	२०	पुन.	२३	५	ह.	४०	११	ना.	३	२०	श्रा.१	१६	२५	२८	कर्क	७	१७	५	३४	१९	२२	२	२९	६	१४	सं. सूर्य कर्क में ५६/१०, मु. ३०, पुण्यकाल अगले (C)

(A) मघा सिंह में १०/४७, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (B) में ५३/१५, सोमप्रदोष व्रत, (C) दिन मध्याह्न तक, बुध पुन. में ०/१३, अधिक (मल) मास समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	२	२	३	४	७	५	११
२२	२४	१५	६	२६	२	४	१०	१०
२५	२३	३५	१८	०	७	४०	५१	५१
३८	३५	३६	३६	३५	४१	१८	१७	१७
५७	८३७	३६	१०६	११	३०	२	३	३
१२	७	५४	२६	४०	७	१२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. १	रे. ३	आर्द्रा ३	मृग. ४	आश्ले. ४	मघा १	अनु. १	हस्त १	उ.भा. ३

कुण्डली सूर्योदय(६ जुला.)

४ गु. | २ | शु.५ | सू. ३ मं. बु. | १ | ६ रा. | के. १२ चं. | ७ | ९ | ११ | श. ८ | १०

लोकभविष्य:- इस मल मास में सूर्य कर्क राशि में मंगल, बुध के साथ मेल करेगा। गुरु एवं शुक्रमघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रविष्ट होंगे । यह ग्रहस्थिति कहीं भारी वर्षा से खड़ी फसलों को हानि का संकेत देती है। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनाए। महंगाई से जनता परेशान रहे ;-"दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेमादिकं च चतुष्पदः । धान्यानि महर्घाणि नाशं यान्ति च वारिदाः।।"

गुरु-शुक्र की सूर्यराशि में स्थिति एवं सूर्य की पक्षान्त में कर्कराशि-स्थिति कहीं बाढ़ व कहीं सूखाग्रस्त होने से कृषकों के लिए निराशाजनक रहे । बुध-सूर्य एवं मंगल का शनि के साथ षडष्टक कहीं यानदुर्घटना करे किंवा कहीं व्यक्तिविशेष का पद भी रिक्त करे ।

कुण्डली सूर्योदय (१६ जुला.)

४ | २ | गु. शु.५ | चं. सू. ३ मं. बु. | १ | ६ रा. | के. १२ | ७ | ९ | ११ | श. ८ | १०

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	२	२	४	४	७	५	११
२६	२८	२०	१६	०	५	४	१०	१०
६	२५	१४	५६	२३	५	२६	२६	२६
१४	३	११	११	३०	५२	४०	१	१
५७	७५६	३६	१२५	१२	१८	१	३	३
१६	५	३६	२१	३	४२	३५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. ३	पुन. ३	पुन. १	आर्द्रा ४	मघा १	मघा २	अनु. १	हस्त १	उ.भा. ३

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :-:- पक्षारम्भ में बाजारों में जोरदार उठापटक चलेगी । लेकिन सोना, चान्दी, तांबा, जौ, चना, चावल, गेहूं, मजीठ, लालमिर्च, घी, गुड़, शक्कर, कपूर, चीनी तेज रहें । रुई, सोना, चान्दी में मन्दी के बाद तेजी बने। १२ जुलाई को बाजार जोरदार ऊपर-नीचे रहें। १४ जुलाई को गुरु के सिंह राशि में आने पर भयंकर मन्दी के बाद अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा । १५/१६ जुलाई को तेल, तिलहन, सोना, चान्दी में जोरदार तेजी मिलेगी। अनाज मन्दे रहें ।

आकाशलक्षण:- जुलाई ५, ६, ७ एवं १२ से १६ जुलाई तक हि.प्र., पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, जम्मु-काश्मीर, उत्तरप्रदेश एवं भारत के [illegible]

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, द्वि.(शुद्ध)आषाढ़ शुक्ल पक्ष ६

(१७ से ३१ जुलाई तक, सन् २०१५ ई.)

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु ।

मं.बु. अदृश्य हैं । सायं श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में और गु.शु. पश्चिम-क्षितिजासन्न दिखाई देंगे । १८ जुला. को सूर्यास्त बाद सायं पश्चिम में चं.गु. परस्पर परमासन्न होंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. रमज़ान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	२७	१	शु.	५	१२	पुष्य	२७	३	व.	३९	५२	ब.	५	१२	२	१७	२६	२९	कर्क			५	३५	१९	२२	३	०	३	२९	चन्द्रदर्शन, मु. १५, श्रीजगदीश रथोत्सव (रथयात्रा) (पुरी) (A)
३४	२५	२	श.	८	२५	आश्ले.	३२	१९	सि.	४०	३५	कौ.	८	२५	३	१८	२७	शा. १	सिंह	३२	१९	५	३५	१९	२१	३	१	०	४५	शव्वाल मु. प्रारम्भ,
३४	२२	३	र.	१२	५५	मघा	३८	४४	व्य.	४२	१२	ग.	१२	५५	४	१९	२८	२	सिंह			५	३६	१९	२१	३	१	५८	१	भ. ४५/४१ बाद,
३४	२०	४	चं.	१८	२८	पू.फा.	४६	४	व.	४४	३२	वि.	१८	२८	५	२०	२९	३	सिंह			५	३७	१९	२१	३	२	५५	१७	भ. १८/२८ तक, सूर्य पुष्य में २५/३५, बुध कर्क (B)
३४	१७	५	मं.	२४	४३	उ.फा.	५३	५३	प.	४७	१६	बा.	२४	४३	६	२१	३०	४	कन्या	३	०	५	३७	१९	२०	३	३	५२	३४	कुमारषष्ठी (देखें पृ. 13),
३४	१४	६	बु.	३१	१०	हस्त	६०	०	शि.	४९	५८	तै.	३१	१०	७	२२	३१	५	कन्या			५	३८	१९	२०	३	४	४९	५१	बुध पुष्य में १७/१०,
३४	१२	७	गु.	३७	९	हस्त	१	३६	सि.	५२	११	ग.	४	९	८	२३	श्रा. १	६	तुला	३५	१५	५	३८	१९	१९	३	५	४७	८	भ. ३७/०६ बाद, सूर्य सायन सिंह में ३३/२७, (C)
३४	९	८	शु.	४२	५	चित्रा	८	३६	सा.	५३	३०	वि.	९	३७	९	२४	२	७	तुला			५	३९	१९	१८	३	६	४४	२५	भ ६/३७ तक,
३४	६	९	श.	४५	२६	स्वाती	१४	२०	शु.	५३	३२	बा.	१३	४५	१०	२५	३	८	तुला			५	४०	१९	१८	३	७	४१	४३	शुक्र वक्री २३/१८, राहु उ.फा. ४, केतु उ.भा. २ में (D)
३४	३	१०	र.	४६	५२	विशा.	१८	२१	शु.	५२	२	तै.	१६	९	११	२६	४	९	वृश्चिक	२	३३	५	४०	१९	१७	३	८	३९	१	यूरेनस वक्री २६/१६,
३४	०	११	चं.	४६	१४	अनु.	२०	२४	ब्र.	४८	५५	व.	१६	३३	१२	२७	५	१०	वृश्चिक			५	४१	१९	१७	३	९	३६	१९	भ. १६/३३ से ४६/१४ तक, देवशयनी एकादशी व्रत (E)
३३	५७	१२	मं.	४३	३६	ज्येष्ठा	२०	२६	ऐं.	४४	११	ब.	१४	५५	१३	२८	६	११	धनु	२०	२६	५	४१	१९	१६	३	१०	३३	३८	बुध आश्ले. में ३६/५२,
३३	५४	१३	बु.	३९	१०	मूल	१८	३४	वै.	३७	५९	कौ.	११	२३	१४	२९	७	१२	धनु			५	४२	१९	१५	३	११	३०	५८	प्रदोषव्रत,
३३	५०	१४	गु.	३३	११	पू.षा.	१५	७	वि.	३०	३४	ग.	६	१२	१५	३०	८	१३	मकर	२९	१	५	४३	१९	१५	३	१२	२८	१८	भ. ३३/१५ से ५६/४४ तक, मंगल कर्क में ५१/३०, (F)
३३	४७	१५	शु.	२६	१४	उ.षा.	१०	२५	प्री.	२२	१३	ब.	२६	१४	१६	३१	९	१४	मकर			५	४३	१९	१४	३	१३	२५	३९	गुरुपूर्णिमा (व्यास-पूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य (G)

(A) (७घं. ४०मि. से १६ घं. २४ मि. तक द्वितीया एवं पुष्य नक्षत्र योग), गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (B) में ४३/३२, (C) विवस्वत् सप्तमी, शक श्रावण प्रारम्भ, (D) ७/०८, गुप्त नवरात्र समाप्त, (E) (स.), श्रीविष्णु शयनोत्सव, (F) गुरु मघा २ में १७/२८, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, श्रीशिव शयनोत्सव, (G) व्रतनियमादि प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	२	३	४	४	७	५	११
६	४	२५	६	२	६	४	१०	१०
४४	५२	३०	५७	१	३६	१६	३	३
२६	६	२३	५२	१४	३७	३३	३५	३५
५७	७२६	३६	१२६	१२	२	०	३	३
१८	५२	२१	३४	२४	४	५१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२४ जुला.)

गु. ५ शु. | मं. ३ | रा. ६ | सू. ४ बु. | २ | ७ चं. | १ | श. ८ | १० | के. १२ | ९ | ११

लोकभविष्य:- प्रतिपदा-पूर्णिमा शुक्रवारी हैं । गुरु-शुक्र पर शनि की विशेष दृष्टि है । शनि-मंगल का षडष्टकयोग चल ही रहा है। अतः देश के कुछ प्रान्तों में उग्रवादजन्य भीषण आतंक से अशान्ति का वातावरण बनेगा । किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का भी योग बन रहा है। उ.फा. नक्षत्र का राहु छत्तीसगढ़, बिहार किंवा आसाम आदि में आन्तरिक अशान्ति का संकेत देता है। पक्षान्त में कर्क का मंगल, शनि के साथ नवम-पंचमसम्बन्ध बनाकर जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजीकारक रहेगा;-

"भूमिपुत्रो यदा कर्के सर्वधान्य-महर्घता ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई, सूत, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, हींग, हल्दी तेज रहें। २१/२२ जुलाई को बाजार मन्दे रहें । २४ से २८ जुलाई को बाजार तेज रहें । ३०/३१ जुलाई को गुड़, खाण्ड, सभी अनाज, रुई, तेल, तिलहन आदि में घटबढ़ी रहे । **आकाशलक्षण:-** जुलाई १८ एवं २० से ३१ जुलाई तक उ.भारत, राजस्थान, उड़ीसा, उत्तराखण्ड, आसाम, हि.प्र., उ.प्र. एवं केन्द्रशासित राज्यों में अच्छी वर्षा के योग हैं । कुछ प्रान्तों में बाढ़ से हानि के भी योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (३१ जुला.)

गु. ५ शु. | ३ | रा. ६ | मं. सू. ४ बु. | २ | ७ | १ | श. ८ | चं. १० | १२के. | ९ | ११

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३१ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	३	३	४	४	७	५	११
१३	७	०	२१	३	६	४	६	६
२५	२०	५	१६	२८	४	१२	४१	४१
३६	१६	११	४५	५०	३२	४०	१६	१६
५७	८७६	३६	११७	१२	१४	०	३	३
२२	२१	७	३७	३६	३३	१०	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, श्रावण कृष्ण पक्ष १० — (१ से १४ अगस्त तक, सन् २०१५ ई.)

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु ।

६ अग. को बुध पश्चिम में और १२ अग. को मं. पूर्व में उदित होगा । साथ ही ५ अग. को शु. एवं १२ अग. को गु. पश्चिम में अदृश्य हो जाएंगे । श. को सायं याम्योत्तरवृत्त के पास देखा जा सकता है ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. शव्वाल	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३३	४४	१	श.	१८	२९	श्रव. घनि.	४ ५८	५२ ५५	आ.	१३	१५	कौ.	१८	२९	१७	अ.१	१०	१५	कुम्भ	३१	५४	५	४४	१९	१३	३	१४	२३	०	पंचक प्रारम्भ ३१/५४, अशून्यशयन व्रत, अगस्त प्रारम्भ,
३३	४०	२	र.	१०	२६	शत.	५२	५५	सौ. शो.	४ ५४	० ४४	ग.	१०	२६	१८	२	११	१६	कुम्भ			५	४४	१९	१३	३	१५	२०	२२	भ. ३६/२६ बाद, शुक्र-वार्धक्य प्रारम्भ, १९घं. १०मि.(A)
३३	३७	३	च.	२	२७	पू.भा.	४७	१४	अ.	४५	४३	वि.	२	२७	१९	३	१२	१७	मीन	३३	३५	५	४५	१९	१२	३	१६	१७	४६	भ. २/२७ तक, सूर्य आश्ले. में २२/३७,(B)
अवम		४	च.	५४	४८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३३	३३	५	मं.	४७	४८	उ.भा.	४२	९	सु.	३७	१३	कौ.	२१	१८	२०	४	१३	१८	मीन			५	४६	१९	११	३	१७	१५	१०	मंगल पुष्य में ५८/३२, बुध मघा सिंह में ३१/१३,
३३	३०	६	बु.	४१	४०	रेव.	३७	५५	धृ.	२९	२४	ग.	१४	४४	२१	५	१४	१९	मेष	३७	५५	५	४६	१९	१०	३	१८	१२	३६	भ. ४१/४० बाद, पंचक समाप्त ३७/५५, शुक्र (C)
३३	२६	७	गु.	३६	३२	अश्वि.	३४	४२	शू.	२२	२३	वि.	९	६	२२	६	१५	२०	मेष			५	४७	१९	९	३	१९	१०	२	भ. ९/०६ तक, बुध पश्चिम में उदित १९ घं. ९ मि.,
३३	२२	८	शु.	३२	३०	भर.	३२	३३	ग.	१६	१५	बा.	४	३१	२३	७	१६	२१	वृष	४७	१२	५	४७	१९	८	३	२०	७	३०	
३३	१९	९	श.	२९	३८	कृत्ति.	३१	३३	वृ.	११	२	तै.	१	४	२४	८	१७	२२	वृष			५	४८	१९	८	३	२१	५	०	भ. ५८/४६ बाद,
३३	१५	१०	र.	२७	५४	रोहि.	३१	४२	ध्रु.	६	४६	वि.	२७	५४	२५	९	१८	२३	वृष			५	४९	१९	७	३	२२	२	३०	भ. २७/५४ तक, गुरु-वार्धक्य प्रारम्भ १९ घं. ४ मि.,
३३	११	११	चं.	२७	२०	मृग.	३२	५८	व्या.	३	२६	बा.	२७	२०	२६	१०	१९	२४	मिथुन	२	१२	५	४९	१९	६	३	२३	०	२	कामदा एकादशी व्रत (स.),
३३	७	१२	मं.	२७	५४	आर्द्रा	३५	२१	ह. व.	० ५९	५८ २४	तै.	२७	५४	२७	११	२०	२५	मिथुन			५	५०	१९	५	३	२३	५७	३६	भौमप्रदोष व्रत,
३३	४	१३	बु.	२९	३६	पुन.	३८	५०	सि.	५८	४३	व.	२९	३६	२८	१२	२१	२६	कर्क	२२	५२	५	५१	१९	४	३	२४	५५	१०	भ. २९/३६ बाद, गुरु अस्त १९ घं. ४ मि., मंगल (D)
३३	०	१४	गु.	३२	२४	पुष्य	४३	२४	व्य.	५८	५३	वि.	१	००	२९	१३	२२	२७	कर्क			५	५१	१९	३	३	२५	५२	४६	भ. १/०० तक, वक्री शुक्र आश्ले. कर्क में २८/५०,
३२	५६	३०	शु.	३६	१८	आश्ले.	४९	०	व.	५९	५१	च.	४	२१	३०	१४	२३	२८	सिंह	४९	०	५	५२	१९	२	३	२६	५०	२४	गुरु मघा ३ में ५३/३०, हरियाली अमावस,

शुक्र अस्त ५ अगस्त

गुरु अस्त १२ अगस्त

(A) शनि मार्गी १४/०७, (B) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (C) पश्चिम में अस्त १९ घं. १० मि., (D) उदित ५ घं. ५१ मि., बुध पू.फा. में ७/०२, श्रावण शिवरात्रि,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ७ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	३	४	४	४	७	५	११
२०	१९	४	४	४	३	४	९	९
७	१	३८	२९	५७	३५	१३	१९	१९
३१	५२	२५	५८	५७	३९	३०	४	४
५७ २९	८२२ ६	३८ ५५	१०६ ३१	१२ ५०	२९ २४	० ३१	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible] आश्ले.	[illegible] भ.	[illegible] पुष्य	[illegible] मघा	[illegible] मघा	[illegible] मघा	[illegible] वि.	[illegible] उ.फा.	[illegible] उ.भा.

कुण्डली सूर्योदय (७ अग.)

गु. ५ शु. बु. | ३ | रा. ६ | सू. ४ मं. | २ | ७ | १ चं. | श. ८ | १० | १२ के. | ९ | ११

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं। इस पक्ष की नवमी को भी शनिवार होने से कहीं सत्ता-हस्तान्तरण हो, प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो । यह फलादेश आश्विन तक प्रभावी रहे-" श्रावणे नवमीयुक्तः शनिः सन्तापकारकः ।
छत्रभंगं विजानीयादाश्विनान्ते न संशयः ॥"

२ अगस्त को शनि मार्गी हो रहा है । ५ अगस्त को शुक्रास्त होगा एवं १२ अगस्त को मंगल के उदित होने पर सिंह राशिस्थ गुरु भी अस्त हो रहा है । यह स्थिति कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि का संकेत देती है;- "सिंहे नृपादि-मरणं लोके धान्यादि-नाशः ।" इस चान्द्रमास में पांच शनिवार जनता में नानाविध रोगों से परेशानी पैदा करें । इस पक्ष में चतुर्थीतिथि का क्षय होने से कहीं भयंकर अराजकता से राष्ट्रविशेष में छत्रभंग(सत्तापरिवर्तन) का योग है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में (१ अगस्त के लगभग से) ३ अगस्त तक सोना, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, नील तेज हों । ४ अगस्त को बुध गुरु के साथ आकर गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी आदि में मन्दा करे । ६/७ अगस्त को सोने में झटके की तेजी बने । ७ से १४ अगस्त तक बाजारों में मन्दी के झटके आएंगे । **आकाश लक्षणः**- अगस्त १, २ तथा ४ से ८ एवं ११ से १४ तक भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं भारी वर्षा हो, कहीं बाढ़, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बनेगी । हि. प्र., जम्मू-कश्मीर, उ.प्र., उ.खण्ड, चण्डीगढ़, देहली आदि में भरपूर वर्षा होगी ।

कुण्डली सूर्योदय (१४ अग.)

गु. ५ बु. | ३ | चं. | रा. ६ | सू. ४ मं. शु. | २ | ७ | १ | श. ८ | १० | १२ के. | ९ | ११

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १४ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	४	४	३	७	५	११
२६	१९	९	१६	६	२९	४	८	८
५०	५२	१०	२२	२८	४१	१९	५६	५६
२४	४३	१४	५७	१४	२९	९	४९	४९
५७ ३९	७२६ १३	३८ ४२	९५ ४३	१२ ५९	३७ ०	१ ११	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, श्रावण शुक्ल पक्ष ११

(१५ से २६ अगस्त तक, सन् २०१५ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा–शरद् ऋतु ।

गु. अदृश्य रहेगा । शु. २० अग. से पूर्व में दृश्य हो जाएगा । प्रातः मं. पूर्वक्षितिज में होगा । सायं श. खमध्यासन्न और बु. पश्चिमक्षितिज में होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	श्रावण	अगस्त	श्रावण	शव्वाल		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	५२	१	श.	४१	१३	मघा	५५	३३	प.	६०	०	किं.	८	४५	३१	१५	२४	२९	सिंह			५	५२	१९	१	३	२७	४८	२	भारत स्वतन्त्रता दिवस,
३२	४८	२	र.	४६	५९	पू.फा.	६०	०	प.	१	३५	बा.	१४	६	३२	१६	२५	३०	सिंह			५	५३	१९	०	३	२८	४५	४२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
३२	४४	३	चं.	५३	२१	पू.फा.	२	५३	शि.	३	५४	तै.	२०	१०	भा.१	१७	२६	जि.१	कन्या	१९	४८	५	५४	१८	५९	३	२९	४३	२२	सं. सूर्य मघा सिंह में १६/१७, मु. ४५, पुण्यकाल (A)
३२	४०	४	मं.	५९	५७	उ.फा.	१०	४१	सि.	६	३५	व.	२६	३९	२	१८	२७	२	कन्या			५	५४	१८	५८	४	०	४१	४	भ. २६/३६ से ५६/५७ तक,
३२	३६	५	बु.	६०	०	हस्त	१८	३७	सा.	९	२३	ब.	३३	६	३	१९	२८	३	तुला	५२	३०	५	५५	१८	५७	४	१	३८	४७	नागपंचमी,
३२	३१	५	गु.	६	१६	चित्रा	२६	१०	शु.	११	५७	बा.	६	१६	४	२०	२९	४	तुला			५	५५	१८	५६	४	२	३६	३२	शुक्र पूर्व में उदित ५ घं. ५५ मि., बुध उ.फा. में (B)
३२	२७	६	शु.	११	५१	स्वाती	३२	५०	शु.	१३	५३	तै.	११	५१	५	२१	३०	५	तुला			५	५६	१८	५५	४	३	३४	१७	
३२	२३	७	श.	१६	८	विशा.	३८	६	ब्र.	१४	४९	व.	१६	८	६	२२	३१	६	वृश्चिक	२१	५७	५	५७	१८	५४	४	४	३२	४	भ. १६/०८ से ४७/२५ तक, गोस्वामी तुलसीदास (C)
३२	१९	८	र.	१८	४२	अनु.	४१	३५	ऐं.	१४	२६	ब.	१८	४२	७	२३	भा.१	७	वृश्चिक			५	५७	१८	५३	४	५	२९	५१	शुक्रबाल्य समाप्त ५ घं. ५५ मि. सूर्य सायन कन्या में (D)
३२	१५	९	चं.	१९	१७	ज्येष्ठा	४३	५	वै.	१२	३१	कौ.	१९	१७	८	२४	२	८	धनु	४३	५	५	५८	१८	५२	४	६	२७	४०	
३२	१०	१०	मं.	१७	४६	मूल	४२	३१	वि.	८	५५	ग.	१७	४६	९	२५	३	९	धनु			५	५८	१८	५०	४	७	२५	३०	भ. ४५/५६ बाद, मंगल आश्ले. में ३८/५२,
३२	६	११	बु.	१४	१३	पू.षा.	४०	०	प्री. आ.	३ ५६	४२ ५७	वि.	१४	१३	१०	२६	४	१०	मकर	५४	६	५	५९	१८	४९	४	८	२३	२१	भ. १४/१३ तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.)
३२	२	१२	गु.	८	५१	उ.षा.	३५	४९	सौ.	४८	५४	बा.	८	५१	११	२७	५	११	मकर			५	५९	१८	४८	४	९	२१	१४	प्रदोषव्रत,
३१	५७	१३	शु.	२	०	श्रव.	३०	१७	शो.	३९	४८	तै.	२	०	१२	२८	६	१२	कुम्भ	५७	८	६	०	१८	४७	४	१०	१९	८	भ. ५३/५८ बाद, पंचक प्रारम्भ ५७/०८, ऋक् उपाकर्म,
अवम		१४	शु.	५३	५८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३१	५३	१५	श.	४५	११	धनि.	२३	४८	अ.	२९	५८	वि.	१९	३५	१३	२९	७	१३	कुम्भ			६	१	१८	४६	४	११	१७	३	भ. १६/३५ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, शुक्ल-कृष्ण- (E)

शुक्र उदित-२० अगस्त

(A) ०/१७ से ३२/१७ तक, मधुस्रवा तृतीया (सन्धारा तीज), ज़िल्काद मु. प्रारम्भ, (B) ४४/२५, श्रीकल्कि जयन्ती, (C) जयन्ती, श्रीदूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 14), (D) २५/२५, शरद् ऋतु प्रारम्भ, बुध कन्या में ६/४२, श्रीदुर्गाष्टमी, शक भाद्रपद प्रारम्भ, (E) यजु-उपाकर्म, रक्षाबन्धन (राखी) (देखें पृ. 14), श्रीअमरनाथ यात्रा (काश्मीर), श्रावणी पूर्णिमा,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २३ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	३	४	४	३	७	५	११
५	७	१४	२६	८	२४	४	८	८
२६	३६	५७	४६	२५	१६	३३	२८	२८
५३	१७	३३	२१	२१	४७	१४	१२	१२
५७	७१२	३८	८१	१३	३०	२	३	३
४८	४६	२६	४५	३	५२	३	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२३ अग.)

रा. ६ | ४ मं. शु. | बु. | ७ | सू. ५ गु. | ३ | श. ८ चं. | २ | ९ | ११ | १ | १० | १२ के.

लोकभविष्य:- इस पक्ष में सिंहस्थ सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि है । नीचस्थ मंगल के साथ बैठे शुक्र का २० अगस्त को उदय हो रहा है । कहीं युद्ध किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग हैं–

"शुक्लपक्षे यदा शुक्रः समुदेत्यस्तमेति वा ।
राजपुत्र-सहस्राणां मही पिबति शोणितम् ।।" श्रावण शुक्ल पक्ष में चतुर्दशी-तिथिक्षय होने से भी कहीं सत्तापरिवर्तन किंवा प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से वातावरण अशान्त हो–" श्रावणे शुक्लपक्षे च क्षीणा काऽपि तिथिर्भवेत् । तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगस्तदा भवेत् ।।" कार्तिक (लगभग नवंबर, २०१५ ई.) तक समय नेष्टप्रद मालूम देता है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- १५ से १६ अगस्त तक गुड़, खाण्ड, सभी अनाज, सोना, चान्दी कुछ मन्दे रहें। २०/२१ अगस्त के लगभग रुई, चावल तेज रहें । २५ अग. के लगभग चान्दी, रुई में मन्दे का माहौल रहे । **आकाश लक्षण:**-१५, १६, २०, २२, २३ एवं २६, २७ अगस्त को शुक्र, मंगल एवं सूर्य-गुरु की स्थिति तथा शुक्रोदय से पंजाब, चण्डीगढ़, हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, दिल्ली, उ.प्र., महाराष्ट्र आदि में वायुवेग के साथ बादलचाल एवं वर्षा के योग है । बंगाल, उड़ीसा, बिहार आदि के कुछ क्षेत्र सूखाग्रस्त भी रह सकते हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (२६ अग.)

रा. ६ बु. | ४ मं. शु. | ७ | सू. ५ गु. | ३ | श. ८ | २ | ९ | चं. ११ | १ | १० | १२ के.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	३	५	४	३	७	५	११
११	०	१८	७	६	२१	४	८	८
१७	२३	४७	३३	४३	४२	४६	६	६
४	५४	४४	५५	४०	३५	५२	८	८
५७	६०२	३८	७१	१३	१८	२	३	३
५७	२३	१६	०	२	५०	३६	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२

(३० अगस्त से १३ सितम्बर तक, सन् २०१५ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

७ सितं. को गु. पूर्व में उदित होगा । प्रातः मं.शु. पूर्वक्षितिज से ऊपर दिखाई देंगे । सायं श. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम में और बु. पश्चिम क्षितिजासन्न दीखेगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. भाद्रपद	मु. ज़िल्काद	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३१	४९	१	र.	३६	४	शत.	१६	४९	सु.	१९	४६	बा.	१०	३८	१४	३०	८	१४	मीन	५६	२९	६	१	१८	४५	४	१२	१५	०	गुरु मघा ४ में १३/५२,
३१	४४	२	चं.	२७	०	पू.भा.	९	४४	धृ. शू.	९ ५९	३० ३१	तै.	१	३२	१५	३१	९	१५	मीन			६	२	१८	४३	४	१३	१२	५८	भ. ५२/४१ बाद, सूर्य पू.फा. में ५/५५, बुध हस्त में (A)
३१	४०	३	मं.	१८	२३	उ.भा. रेव.	२ ५६	५९ ५५	गं.	५०	५	वि.	१८	२३	१६	सि. १	१०	१६	मेष	५६	५५	६	२	१८	४२	४	१४	१०	५८	भ. १८/२३ तक, पंचक समाप्त ५६/५५, कज्जली (B)
३१	३६	४	बु.	१०	३५	अश्वि.	५१	५३	वृ.	४१	२७	बा.	१०	३५	१७	२	११	१७	मेष			६	३	१८	४१	४	१५	९	०	
३१	३१	५	गु.	३	५२	भर.	४८	९	धु.	३३	५१	तै.	३	५२	१८	३	१२	१८	मेष			६	३	१८	४०	४	१६	७	३	भ. ५८/३० बाद, अगस्त्य उदित,
अवम		६	गु.	५८	३०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
३१	२७	७	शु.	५४	३८	कृत्ति.	४५	५३	व्या.	२७	२६	वि.	२६	३४	१९	४	१३	१९	वृष	२	२६	६	४	१८	३९	४	१७	५	९	भ. २६/३४ तक,
३१	२२	८	श.	५२	२३	रोहि.	४५	१२	ह.	२२	१७	बा.	२३	३१	२०	५	१४	२०	वृष			६	५	१८	३७	४	१८	३	१७	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स.) (चन्द्रोदय देखें पृ.11),
३१	१८	९	र.	५१	४५	मृग.	४६	७	व.	१८	२६	तै.	२२	४	२१	६	१५	२१	मिथुन	१५	२७	६	५	१८	३६	४	१९	१	२६	शुक्र मार्गी १६/४५, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), श्रीगुग्गा नवमी,
३१	१३	१०	चं.	५२	४१	आर्द्रा	४८	३४	सि.	१५	५१	व.	२२	१३	२२	७	१६	२२	मिथुन			६	६	१८	३५	४	१९	५९	३८	भ. २२/१३ से ५२/४१ तक, गुरु उदित ६ घं. ६ मि.
३१	९	११	मं.	५५	३	पुन.	५२	२५	व्य.	१४	२७	ब.	२३	५२	२३	८	१७	२३	कर्क	३६	२०	६	६	१८	३४	४	२०	५७	५१	अजा एकादशी व्रत (स.),
३१	४	१२	बु.	५८	४१	पुष्य	५७	२९	व.	१४	७	कौ.	३१	४९	२४	९	१८	२४	कर्क			६	७	१८	३२	४	२१	५६	७	
३१	०	१३	गु.	६०	०	आश्ले.	६०	०	प.	१४	४३	ग.	३१	३	२५	१०	१९	२५	कर्क			६	७	१८	३१	४	२२	५४	२५	गुरुबाल्य समाप्त ६ घं. ६ मि.,(C)
३०	५५	१३	शु.	३	२३	आश्ले.	३	३४	शि.	१६	४	व.	३	२३	२६	११	२०	२६	सिंह	३	३४	६	८	१८	३०	४	२३	५२	४४	भ. ३/२३ से ३६/०६ तक,
३०	५०	१४	श.	८	५५	मघा	१०	२९	सि.	१८	२	श.	८	५५	२७	१२	२१	२७	सिंह			६	८	१८	२९	४	२४	५१	६	
३०	४६	३०	र.	१५	४	पू.फा.	१७	५८	सा.	२०	२६	ना.	१५	४	२८	१३	२२	२८	कन्या	३४	५६	६	९	१८	२७	४	२५	४९	२९	सूर्य उ.फा. में ५०/१५, कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी (D)

गुरु उदित
७ सितंबर

नासिक कुम्भपर्व की स्नानतिथियों के लिए देखें पृ.. 17..

(A) ४/१०, (B) तृतीया, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत, (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), बहुला चतुर्थी, सितम्बर प्रारम्भ, (C) प्रदोषव्रत, पर्युषणपर्व (जैन), (D) अमा, कुम्भ महापर्व (सिंहस्थपर्व) नासिक (महाराष्ट्र),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ५ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	३	५	४	३	७	५	११
१८	१२	२३	१५	११	२०	५	७	७
३	५३	१५	४	१४	२०	६	४६	४६
१८	१	४	४०	५३	५१	५१	५३	५३
५८	८०४	३८	५४	१३	२	३	३	३
६	८	५	२५	०	२	१२	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. २	रोहि. १	आश्ले. २	हस्त २	मघा ४	आश्ले. २	अनु. १	उ.फा. ४	उ.भा. २

कुण्डली सूर्योदय (५ सितं.)

रा. ६ बु. | ४ मं. शु.
७ | सू. ५ गु. | ३
श. ८ | २ चं.
९ | ११ | १
१० | १२ के.

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच रविवार हैं । अतः "पञ्चार्कवारे दुर्भिक्षम् "- अनुसार कहीं प्रान्तविशेष में महंगाई एवं कहीं दुर्भिक्ष से जनता परेशान रहे । मध्यप्रदेश के क्षेत्रविशेष में जनधनहानि से सरकार को विशेष सावधान रहना चाहिए । उग्रवादियों द्वारा कहीं वातावरण अशान्त होने का योग है । सिंहराशिस्थ गुरु का भाद्रपद में उदित होना वर्षा की कमी करे एवं कहीं जनता की मृत्यु पर जनजीवन त्रस्त हो ;-" सिंहे तु जनमृतिर्जल-वृष्टिरल्पा ।" ७ से १४ सितम्बर तक की ग्रहस्थिति सरकार एवं जनता-जनार्दन के लिए कष्टप्रद एवं उलझनपूर्ण रहेगी ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ३०/३१ अगस्त के लगभग सभी अनाज, सोना, चान्दी, जीरा, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, रुई, सूत तेज रहें । ५ से १३ सितंबर तक चावल, शक्कर, घी, सोना, चान्दी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल तेज रहें । **आकाशलक्षणः-** अगस्त ३०, ३१; सितंबर ५, ६, ८, ९ को नेपाल, दार्जीलिंग, विन्ध्यप्रदेश, उ.प्र. एवं उत्तराखण्ड के कुछ भागों में बादलचाल व खण्डवृष्टि हो । उ.भारत में शरद् ऋतु के आगमन का आभास हो ।

कुण्डली सूर्योदय (१३ सितं.)

रा. ६ बु. | ४ मं. शु.
चं.
७ | सू. ५ गु. | ३
श. ८ | २
९ | ११ | १
१० | १२ के.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	३	५	४	३	७	५	११
२५	२२	२८	२०	१२	२१	५	७	७
४६	४८	१६	४४	५८	८	३४	२१	२१
३०	१६	४	३७	३०	३२	४८	२७	२७
५८	७०८	३७	२४	१२	१५	३	३	३
२५	१६	५३	४	५३	३८	५२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. ४	पू.फा. ३	आश्ले. ४	हस्त ४	मघा ४	आश्ले. २	अनु. १	उ.फा. ४	उ.भा. २

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, भाद्रपद शुक्ल पक्ष १२ | तारीखें | चन्द्रराशि - | चण्डीगढ़ | स्पष्ट सूर्य | (१४ से २८ सितम्बर तक, सन् २०१५ ई.) 141

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३

(१४ से २८ सितम्बर तक, सन् २०१५ ई.) दक्षिणायन, उत्तर–दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

२४ सितं. को बु. पश्चिम में लुप्त हो जाएगा । प्रातः पूर्वक्षितिज में गु.मं.शु. उत्तरोत्तर ऊपर उठे दिखाई देंगे । सायं श. पश्चिमकपाल में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. सितंबर	श. भाद्रपद	मु. ज़िल्काद	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३०	४१	१	च.	२१	३६	उ.फा.	२५	४८	शु.	२३	५	ब.	२१	३६	२९	१४	२३	२९	कन्या			६	१०	१८	२६	४	२६	४७	५४	गुरु पू.फा. १ में ३८/३५, गुरु का सिंह राशि के (A)
३०	३७	२	मं.	२८	१३	हस्त	३३	४२	शु.	२५	४८	कौ.	२८	१३	३०	१५	२४	३०	कन्या			६	१०	१८	२५	४	२७	४६	२१	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मंगल मघा सिंह में ३८/१७, साम (B)
३०	३२	३	बु.	३४	३६	चित्रा	४१	१९	ब्र.	२८	२०	तै.	१	२४	३१	१६	२५	ज़ि.१	तुला	७	३३	६	११	१८	२४	४	२८	४४	५०	श्रीवराह जयन्ती, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, (C)
३०	२८	४	गु.	४०	२२	स्वाती	४८	२०	ऐं.	३०	२५	व.	७	२९	आ.१	१७	२६	२	तुला			६	११	१८	२२	४	२९	४३	२०	भ. ७/२६ से ४०/२२ तक, सं. सूर्य कन्या में १५/२०(D)
३०	२३	५	शु.	४५	१०	विशा.	५४	२२	वै.	३१	४९	ब.	१२	४६	२	१८	२७	३	वृश्चिक	३७	५९	६	१२	१८	२१	५	०	४१	५३	ऋषिपंचमी,
३०	१८	६	श.	४८	३७	अनु.	५९	३	वि.	३२	१५	कौ	१६	५३	३	१९	२८	४	वृश्चिक			६	१२	१८	२०	५	१	४०	२७	सूर्यषष्ठी व्रत,
३०	१४	७	र.	५०	२५	ज्येष्ठा	६०	०	प्री.	३१	२७	ग.	१९	३०	४	२०	२९	५	वृश्चिक			६	१३	१८	१८	५	२	३९	२	भ. ५०/२५ बाद, मुक्ताभरण सप्तमी व्रत (संतानसप्तमी व्रत),
३०	९	८	च.	५०	२३	ज्येष्ठा	२	७	आ.	२९	१६	वि.	२०	२४	५	२१	३०	६	धनु	२	७	६	१४	१८	१७	५	३	३७	४०	भ. २०/२४ तक, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ,
३०	४	९	मं.	४८	२४	मूल	३	१९	सौ.	२५	३४	बा.	१९	२४	६	२२	३१	७	धनु			६	१४	१८	१६	५	४	३६	१९	बाबा श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३०	०	१०	बु.	४४	३२	पू.षा.	२	४०	शो.	२०	१९	तै	१६	२८	७	२३	आ.१	८	मकर	१७	११	६	१५	१८	१५	५	५	३४	५९	सूर्य सायन तुला में १६/००, विषुवदिन, दक्षिणगोल प्रारम्भ,(E)
२९	५५	११	गु.	३८	५६	उ.षा. श्रव.	० ५५	९ ५८	अ.	१३	३७	व.	११	४४	८	२४	२	९	मकर			६	१५	१८	१३	५	६	३३	४२	भ. ११/४४ से ३८/५६ तक, बुध पश्चिम में अस्त (F)
२९	५१	१२	शु.	३१	५१	धनि.	५०	२४	सु. धृ.	५ ५६	३५ २९	ब.	५	२३	९	२५	३	१०	कुम्भ	२३	१८	६	१६	१८	१२	५	७	३२	२६	पंचक प्रा.२३/१८, प्लू.मार्गी १५/२२,प्रदोषव्रत,श्रीवामन द्वादशी,
२९	४६	१३	श.	२३	३६	शत.	४३	४७	शू.	४६	३१	तै.	२३	३६	१०	२६	४	११	कुम्भ			६	१६	१८	११	५	८	३१	११	राहु उ.फा. ३, केतु उ.भा. १ में ०/३२,
२९	४१	१४	र.	१४	२३	पू.भा.	३६	३१	ग.	३६	२	व.	१४	३३	११	२७	५	१२	मीन	२३	१९	६	१७	१८	१०	५	९	२९	५९	भ. १४/३३ से ३६/४६ तक, सूर्य हस्त में २८/३७, (G)
२९	३७	१५	चं.	५	६	उ.भा.	२९	२	वृ.	२५	२२	व.	५	६	१२	२८	६	१३	मीन			६	१८	१८	८	५	१०	२८	४९	प्रतिपदा का श्राद्ध, श्राद्ध (महालय) प्रारम्भ, चन्द्रग्रहण, (H)

(A) सिंहांशक में प्रवेश ३८/३५, (B) उपाकर्म, मेला बाबा गोसाईआंणा (कुराली)पं., (C) ज़िल्हिज मु. प्रारम्भ, (D) मु. १५, पुण्यकाल सारादिन, बुध वक्री ४३/४०, हरितालिका चतुर्थी, श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त २०घं. ४६मि.), संवत्सरी महापर्व (जैन), (E) शक आश्विन प्रारम्भ, (F) १८घं. १३मि. पद्मा एकादशी व्रत (स.), श्रवण द्वादशी, → श्री विष्णुशृंखल योग, (G) शनि अनु. २ में ४९/३७, श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध (देखें पृ. 14), श्री अनन्त चतुर्दशी, (H) देखें पृ. 20

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २१ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	७	४	५	४	३	७	५	११
३	२६	३	२१	१४	२४	६	६	६
३७	६	२१	१५	४०	४	७	५६	५६
४१	४८	२१	३१	४८	५०	५३	१	१
५८	७८१	३७	२५	१२	२६	४	३	३
३६	५२	३६	४०	४०	३६	२६	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ३	मूल ४	मघा २	हस्त ४	पू.फा. १	आश्ले. ३	अनु. १	उ.फा. ४	उ.भा. २

कुण्डली सूर्योदय (२१ सितं.)

७ | ५ मं. गु. | चं. ८ श. | सू. ६ बु. रा. | ४ शु. | ९ | ३ | १० | के. १२ | २ | ११ | १

लोकभविष्यः- इस पक्ष में मंगल की शनि पर एवं शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि है । अतः कहीं यानदुर्घटना, कहीं सीमाप्रान्तों पर सैन्यवृद्धि से अशान्ति किंवा किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो- " युद्धदी धनि-भाकेयी तथा दुर्भिक्षकारकी ।" महगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी । सूर्य-राहु-बुध का कन्याराशिस्थ होना एवं बुध-राहु का वक्रत्व राष्ट्र की किसी विशेष समस्या के समाधान का संकेत देते हैं। सिंहस्थ मंगल-गुरु एवं चन्द्रराशिस्थ शुक्र प्रजा में रोग एवं अग्निकाण्ड आदि से हानि व परेशानी करे ।

ग्रहचाल और बाजार का रुखः- पक्षारम्भ में १५ सितंबर के लगभग दालदाना, तेल, तिलहन एवं गेहूं आदि अनाज, सोना, चान्दी, तांबा, लोहा, गुड़, शक्कर, खाण्ड, अलसी, रुई एवं लालमिर्च में तेजी रहे । १६ सितंबर के लगभग बाजार जोरदार तेज या मन्दे हो सकते हैं- सावधानी से काम करें । हमारे विचार से घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में जोरदार तेजी एवं अनाजों में मन्दा बने । १७/१८ सितंबर को रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, में तेजी र. ।२४/२५ सितंबर के लगभग से पक्षान्त तक रुई में झटके की मन्दी आकर उतनी ही तेजी बनेगी । चान्दी, घी, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी तेज रहें । आकाशलक्षण :- सितंबर १५ से १८ एवं २४ से २७ के मध्य की ग्रहस्थिति-अनुसार भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में कहीं बादलधाल व खण्डवृष्टि हो । हि.प्र. एवं जम्मू-काश्मीर में कहीं हिमपात भी संभव है ।

कुण्डली सूर्योदय (२८ सितं.)

७ | ५ मं. गु. | ८ श. | सू. ६ बु. रा. | ४ शु. | ९ | ३ | १० | के. १२ चं. | २ | ११ | १

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २८ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	४	५	४	३	७	५	११
१०	८	७	१५	१६	२८	६	६	६
२८	४७	४४	५७	८	१	४०	३३	३३
५०	४१	२३	३	४१	३८	४१	४६	४६
५८	८१२	३७	६५	१२	३९	४	३	३
५१	४६	२८	४६	२५	२	५८	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त १	उ.भा. २	मघा ३	हस्त २	पू.फा. १	आश्ले. ४	अनु. २	उ.फा. ३	उ.भा. १

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	प्र. आश्विन	अं. सितंबर	श. आश्विन	मु. जिलहिज्ज	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	(२६ सितं. से १२ अक्तूबर तक, सन् २०१५ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु। ८ अक्तू. से बु. पूर्व में दृश्य हो जाएगा। प्रातः गु.मं.शु. पूर्वक्षितिज से ऊपर दिखाई देंगे। सायं श. पश्चिमकपाल में होगा।
अवम		१	चं.	५५	४२	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
२९	३२	२	मं.	४६	४१	रेव.	२१	४५	घु.	१४	५१	तै.	२१	१२	१३	२९	७	१४	मेष	२१	४५	६	१८	१८	७	५	११	२७	४०	पंचक समाप्त २१/४५, द्वितीया का श्राद्ध,
२९	२८	३	बु.	३८	३०	अश्वि.	१५	६	व्या. ह.	४ ५५	४८ ३४	व.	१२	३६	१४	३०	८	१५	मेष			६	१९	१८	६	५	१२	२६	३४	भ. १२/३६ से ३८/३० तक, गुरु पू.फा. २ में २६/४७,(A)
२९	२३	४	गु.	३१	३१	भर.	९	२९	व.	४७	२४	ब.	५	०	१५	अ.१	९	१६	वृष	२३	१७	६	१९	१८	५	५	१३	२५	२९	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (देखें पृ. 14), चतुर्थी का श्राद्ध, (B)
२९	१८	५	शु.	२६	४	कृत्ति.	५	१७	सि.	४०	३३	तै.	२६	४	१६	२	१०	१७	वृष			६	२०	१८	३	५	१४	२४	२७	पंचमी का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत, जन्म श्री महात्मा गांधी,
२९	१४	६	श.	२२	२५	रोहि.	२	४७	व्य.	३५	१०	व.	२२	२५	१७	३	११	१८	मिथुन	३२	१४	६	२१	१८	२	५	१५	२३	२८	भ. २२/२५ से ५१/३३ तक, वक्री बुध उ.फा. में (C)
२९	९	७	र.	२०	४२	मृग.	२	९	व.	३१	२२	ब.	२०	४२	१८	४	१२	१९	मिथुन			६	२१	१८	१	५	१६	२२	३०	सप्तमी का श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,
२९	४	८	चं.	२०	५८	आर्द्रा	३	२६	प.	२९	६	कौ.	२०	५८	१९	५	१३	२०	कर्क	५०	४०	६	२२	१८	०	५	१७	२१	३५	अष्टमी का श्राद्ध,
२९	०	९	मं.	२३	८	पुन.	६	३६	शि.	२८	१६	ग.	२३	८	२०	६	१४	२१	कर्क			६	२२	१७	५८	५	१८	२०	४२	भ. ५५/०२ बाद, मंगल पू.फा. में ५६/४०, नवमी का (D)
२८	५५	१०	बु.	२६	५६	पुष्य	११	२६	सि.	२८	४०	वि.	२६	५६	२१	७	१५	२२	कर्क			६	२३	१७	५७	५	१९	१९	५२	भ. २६/५६ तक, दशमी का श्राद्ध,
२८	५१	११	गु.	३२	३	आश्ले.	१७	३७	सा.	३०	४	बा.	३२	३	२२	८	१६	२३	सिंह	१७	३७	६	२४	१७	५६	५	२०	१९	३	बुध पूर्व में उदित ६घं. २४मि., इन्दिरा एकादशी व्रत (स.),(E)
२८	४६	१२	शु.	३८	६	मघा	२४	४५	शु.	३२	९	कौ.	५	४	२३	९	१७	२४	सिंह			६	२४	१७	५५	५	२१	१८	१७	बुध मार्गी ३५/१०, [illegible], संन्यासियों का श्राद्ध, (F)
२८	४२	१३	श.	४४	४०	पू.फा.	३२	२६	शु.	३४	३८	ग.	११	२३	२४	१०	१८	२५	कन्या	४९	२५	६	२५	१७	५४	५	२२	१७	३४	भ. ४४/४० बाद, शनिप्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध,
२८	३७	१४	र.	५१	२२	उ.फा.	४०	२०	ब्र.	३७	१६	वि.	१८	२	२५	११	१९	२६	कन्या			६	२६	१७	५२	५	२३	१६	५२	भ. १८/०२ तक, सूर्य चित्रा में ०/५०, वक्री नेप्च्यून (G)
२८	३२	३०	चं.	५७	५३	हस्त	४८	६	ऐं.	३९	४९	च.	२४	३८	२६	१२	२०	२७	कन्या			६	२६	१७	५६	५	२४	१६	१३	सोमवती अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, चतुर्दशी/अमावस एवं (H)

(A) गुरु का सिंहराशि के सिंहांशक से निर्गम २६/४७, शुक्र मघा सिंह में ५४/४७, तृतीया का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, (B) अक्तूबर प्रारम्भ, (C) २७/२७, षष्ठी का श्राद्ध, (D) श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, (E) एकादशी का श्राद्ध, (F) मघा श्राद्ध, (G) शत. २ में २३/००, शस्त्र-विषादि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (H) अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, फल्गु योग, मेला फल्गुतीर्थ (हरि.),

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५घं. ३०मि. (I.S.T.)
५ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	४	५	४	४	७	५	११
१७	१८	१२	८	१७	२	७	६	६
२१	४८	६	४०	३४	५८	१६	११	११
३६	४	१०	५५	३८	०	४६	३१	३१
५९	७६१	३७	४२	१२	४६	५	३	३
७	५८	१७	०	५	२२	२४	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (५ अक्तू.)

७
५ मं. गु. शु.
८ श.
सू. ६ बु. रा.
४
९
३ चं.
१०
के. १२
२
११
१

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार है। मंगल-शुक्र-गुरु इन तीनों पर शनि की विशेष दृष्टि भी है। कहीं प्राकृतिक प्रकोप (भूकम्प, समुद्री तूफान किंवा विस्फोट आदि) से हानि के समाचार मिलें। कहीं राजनैतिक अस्थिरता से अशान्ति हो। कहीं असामयिक वर्षा से फसलों को हानि पहुंचे। चोरी-ठगी एवं अनैतिक घटनाएं अधिक हों;- "सिंहेऽतिवृष्टिर्धान्यस्य विनाशः चौरजं भयम्।" मुस्लिम राष्ट्रविशेष में कहीं आन्तरिक अशान्ति एवं सेना से विप्लव की स्थिति बने।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- शुक्र-मंगल-गुरु सिंहस्थ होने से १ अक्तूबर के लगभग सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लालमिर्च, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं दालवाना तेज रहें। यह तेजी लगभग ७ अक्तूबर तक चलेगी। ८/९ अक्तूबर के लगभग बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है। रुई, चान्दी मन्दी; अनाज तेज एवं गुड़, तेल, तिलहन में मन्दी हो। १० अक्तूबर के लगभग फिर बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

आकाशलक्षणः- अक्तूबर १, २, ३ एवं ७ से १० अक्तूबर तक पश्चिमी भारत के कुछ भागों में कहीं बादलवाय एवं कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो। उत्तरी भारत में तापमान गिरेगा। हि.प्रदेश एवं जम्मू-कश्मीर में कहीं हिमपात भी हो।

कुण्डली सूर्योदय (१२ अक्तू.)

७
५ मं. गु. शु.
चं.
८ श.
सू. ६ बु. रा.
४
९
३
१०
के. १२
२
११
१

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५घं. ३०मि. (I.S.T.)
१२ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	४	५	४	४	७	५	११
२४	१३	१६	७	१८	८	७	५	५
१६	२४	२६	१६	५८	४०	५५	४६	४६
१४	२६	४२	१७	१०	२६	४८	१६	१६
५६	७०८	३७	२६	११	५२	५	३	३
२२	४१	६	४४	४२	२	४८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, आश्विन शुक्ल पक्ष १५ | तारीखें | चन्द्रराशि | चण्डीगढ़ | स्पष्ट सूर्य | (१३ से २७ अक्तूबर तक, सन् २०१५ ई.) 143

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, आश्विन शुक्ल पक्ष १५

(१३ से २७ अक्तूबर तक, सन् २०१५ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु।

प्रातः बु. पूर्व-क्षितिजासन्न तथा मं.गु.शु. उससे ऊपर उठे दिखाई देंगे । सायं श. पश्चिमक्षितिज में होगा । १९ अक्तू. को मं.गु. तथा २६ अक्तू. को गु.शु. परस्पर परमासन्न देखे जा सकते हैं ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र. आश्विन	अं. अक्तू.	श. आश्विन	मु. ज़िल्हिज्ज				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	२८	१	मं.	६०	०	चित्रा	५५	२७	वै.	४२	३	किं.	३०	५४	२७	१३	२१	२८	तुला	२१	५०	६	२७	१७	५०	५	२५	१५	३६	शारद नवरात्रारम्भ (देखें पृ. 14), महाराजा (A)
२८	२३	१	बु.	३	५५	स्वाती	६०	०	वि.	४३	५०	ब.	३	५५	२८	१४	२२	२९	तुला			६	२८	१७	४९	५	२६	१५	०	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
२८	१९	२	गु.	९	१८	स्वाती	२	१२	प्री.	४५	१	कौ.	९	१८	२९	१५	२३	मु. १	वृश्चिक	५१	४३	६	२८	१७	४८	५	२७	१४	२७	बुध हस्त में ४५/२२, मुहर्रम(हिजरी सन् १४३७) (B)
२८	१४	३	शु.	१३	४९	विशा.	८	५	आ.	४५	२७	ग.	१३	४९	३०	१६	२४	२	वृश्चिक			६	२९	१७	४७	५	२८	१३	५६	भ. ४५/३२ बाद,
२८	१०	४	श.	१७	१६	अनु.	१३	०	सौ.	४५	०	वि.	१७	१६	का.१	१७	२५	३	वृश्चिक			६	३०	१७	४६	५	२९	१३	२६	भ. १७/१६ तक, सं. सूर्य तुला में ४४/२५, मु.(C)
२८	५	५	र.	१९	२९	ज्येष्ठा	१६	४५	शो.	४३	३३	बा.	१९	२९	२	१८	२६	४	धनु	१६	४५	६	३०	१७	४४	६	०	१२	५९	सरस्वती आवाहन,
२८	१	६	चं.	२०	१९	मूल	१९	८	अ.	४०	५८	तै.	२०	१९	३	१९	२७	५	धनु			६	३१	१७	४३	६	१	१२	३३	सरस्वती पूजन,
२७	५६	७	मं.	१९	३८	पू.षा.	२०	४	सु.	३७	११	व.	१९	३८	४	२०	२८	६	मकर	३५	५	६	३२	१७	४२	६	२	१२	९	भ. १९/३८ से ४८/३१ तक, सरस्वती के लिए बलिदान,
२७	५२	८	बु.	१७	२३	उ.षा.	१९	२७	धृ.	३२	९	ब.	१७	२३	५	२१	२९	७	मकर			६	३२	१७	४१	६	३	११	४७	सरस्वती विसर्जन, महाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी, महानवमी (D)
२७	४८	९	गु.	१३	३३	श्रव.	१७	१८	शू.	२५	५२	कौ.	१३	३३	६	२२	३०	८	कुम्भ	४५	४०	६	३३	१७	४०	६	४	११	२६	पंचक प्रारम्भ ४५/४०, महानवमी(बलिदान के लिए),(E)
२७	४३	१०	शु.	८	१४	धनि.	१३	४०	ग.	१८	२४	ग.	८	१४	७	२३	का.१	९	कुम्भ			६	३४	१७	३९	६	५	११	७	भ.३४/५५ बाद, सूर्य सायन वृश्चिक में ४१/४७, (F)
२७	३९	११	श.	१	३७	शत.	८	४४	वृ.	९	५३	वि.	१	३७	८	२४	२	१०	मीन	४९	२१	६	३५	१७	३८	६	६	१०	५०	भ. १/३७ तक, सूर्य स्वाती में २६/३५, पापांकुशा (G)
अवम		१२	श.	५३	५३	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
२७	३५	१३	र.	५५	२२	पू.भा. उ.भा.	२ ५६	४६ ५	ध्रु. व्या.	० ५०	३२ ३२	कौ.	१९	३८	९	२५	३	११	मीन		–	६	३५	१७	३७	६	७	१०	३४	बुध चित्रा में ३४/१७, प्रदोषव्रत,
२७	३०	१४	चं.	३६	२५	रेव.	४९	१	ह.	४०	१३	ग.	१०	५३	१०	२६	४	१२	मेष	४९	१	६	३६	१७	३६	६	८	१०	२०	भ. ३६/२५ बाद, पंचक समाप्त ४६/०१, कोजागर(H)
२७	२६	१५	मं.	२७	२५	अश्वि.	४२	१	व.	२९	५२	वि.	१	५४	११	२७	५	१३	मेष			६	३७	१७	३५	६	९	१०	९	भ. १/५४ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत(देखें पृ. 15),(I)

(A) अग्रसेन जयन्ती, (B) मु. प्रारम्भ, (C) १५, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, गुरु पू.फा. ३ में १८/१५, शुक्र पू.फा. में ११/२५, उपाङ्गललिता व्रत (देखें पृ. 14), (D) (पूजा एवं उपवास के लिए), (E) नवरात्र समाप्त, विजयादशमी (दशहरा), आयुध-पूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (F) हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, पापांकुशा एकादशी व्रत (स्मा.), नवरात्रपारणा, शक कार्तिक प्रारम्भ, भरत मिलाप, (G) एकादशी व्रत (वै.), (H) व्रत, शरत्पूर्णिमा (देखें पृ.15), (I) श्रीवाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २१ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	४	५	४	४	७	५	११
३	५	२१	१६	२०	१६	८	५	५
११	०	५६	१६	४१	५१	४६	२०	२०
४७	२९	३५	२०	६	३८	५०	४०	४०
५९	८२१	३६	८६	११	५७	५	३	३
४०	३६	५०	३६	६	२८	१४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ३	उ.षा. ३	पू.फा. ३	हस्त २	पू.फा. ३	पू.फा. २	अनु. २	उ.फा. ३	उ.भा. १

कुण्डली सूर्योदय(२१ अक्तू.)

८ श. | रा.६ बु. | मं. ५ गु. शु. | ९ | सू. ७ | चं. १० | ४ | ११ | १ | ३ | के. १२ | २

लोकभविष्य:- इस पक्ष में मंगल-शुक्र एवं गुरु- ये तीनों ग्रह पू. फा. नक्षत्र एवं सिंहराशि में स्थित होकर शनि से दृष्ट हैं । आश्विन शुक्ल एकादशी को शनिवार भी होने से इस मास शत्रुकृत् गतिविधियों से चिन्ता एवं पश्चिमी-दक्षिणी प्रान्तों किंवा देशों में कहीं छत्रभंग (परिवर्तन) किंवा उपवाद-जन्य परेशानी बने;-"एकादश्यां शनौ तस्मिन् छत्रभंगोऽथवा भुवि । नगर-ग्रामभंगः स्यात् वैरि-चौराद्युपद्रवाः ।।" प्रतिपदा-पूर्णिमा मंगलवारी एवं तुलासंक्रान्ति शनिवारी होने से कहीं भयंकर अग्निकाण्ड आदि से जनधनहानि संभव है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- गुरु-मंगल एवं शुक्र- ये तीनों पू.फा. नक्षत्र में हैं । रुई, सोना, चान्दी एवं गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें । १७ अक्तूबर के लगभग गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा पहले तेज रहें, फिर मन्दी बने । २४ अक्तूबर के लगभग सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, रुई, हींग, गुग्गुल तेज रहें । तत्पश्चात् बाजार अस्थिर रहे ।

आकाशलक्षण:- अक्तूबर १५, १७, १८, २४ एवं २५ को हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र. के कुछ भागों में वायुवेग के साथ बौछारें पड़ेंगी। इस पक्ष में उ.पूर्वी लंका, गिरापृंगी आदि में अच्छी वर्षा हो । हि.प्र. के उन्नत शिखरों पर हिमपात के समाचार भी मिलें।

कुण्डली सूर्योदय (२७ अक्तू.)

८ श. | रा.६ बु. | मं. ५ गु. शु. | ९ | सू. ७ | १० | ४ | ११ | १ चं. | ३ | के. १२ | २

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २७ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	४	५	४	४	७	५	११
९	२	२५	२५	२१	२२	६	५	५
१०	४	४०	३३	४६	४३	२७	१	१
१०	१८	७	११	३२	४९	५२	३५	३५
५९	६०३	३६	६७	१०	६०	६	३	३
५०	५७	३९	३६	३७	२०	२९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. १	अश्वि. १	पू.फा. ४	चित्रा १	पू.फा. ३	पू.फा. ३	अनु. २	उ.फा. ३	उ.भा. १

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, कार्तिक कृष्ण पक्ष १६																तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(२८ अक्तूबर से ११ नवम्बर तक, सन् २०१५ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु । पक्षारम्भ में ही बु. पूर्व में अस्त हो जाएगा । प्रातः मं.शु. गु. पूर्व क्षितिज से ऊपर होंगे । सायं श. पश्चिम-क्षितिजासन्न होगा । ६-७ नवं के आस-पास प्रातःकाल मं.गु.शु. के नजदीक चं. भी दिखाई देगा ।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. कार्तिक	अं. अक्तू.	श. कार्तिक	मु. मुहर्रम				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	२२	१	बु.	१८	४८	भर.	३५	३०	सि.	१९	५२	कौ.	१८	४८	१२	२८	६	१४	वृष	४८	५९	६	३८	१७	३४	६	१०	९	५९	बुध पूर्व में अस्त ६ घं. ३८ मि., मंगल उ.फा. में (A)
२७	१८	२	गु.	१०	५९	कृत्ति.	२९	५५	व्य.	१०	३१	ग.	१०	५९	१३	२९	७	१५	वृष			६	३८	१७	३३	६	११	९	५१	भ. ३७/४२ बाद, बुध तुला में ४०/१२,
२७	१३	३	शु.	४	२३	रोहि.	२५	४३	व. प.	२ ५५	१० ८	वि.	४	२३	१४	३०	८	१६	मिथुन	५४	१५	६	३९	१७	३३	६	१२	९	४५	म. ४/२३ तक, शुक्र उ.फा. में ४६/४०, श्रीगणेश (B)
अवम		४	शु.	५९	२६	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
२७	९	५	श.	५६	२१	मृग.	२३	१३	शि.	४९	३५	कौ.	२७	५३	१५	३१	९	१७	मिथुन			६	४०	१७	३२	६	१३	९	४१	शनि अनु. ३ में ५१/३३,
२७	५	६	र.	५५	२४	आर्द्रा	२२	४२	सि.	४५	४१	ग.	२५	५२	१६	न. १	१०	१८	मिथुन			६	४१	१७	३१	६	१४	९	३९	भ. ५५/२४ बाद, नवम्बर प्रारम्भ,
२७	१	७	चं.	५६	३६	पुन.	२४	१७	सा.	४३	२८	वि.	२६	००	१७	२	११	१९	कर्क	८	४१	६	४२	१७	३०	६	१५	९	३९	भ. २६/०० तक, बुध स्वाती में ४१/४५,
२६	५७	८	मं.	५९	५०	पुष्य	२७	५४	शु.	४२	५१	बा.	२८	१३	१८	३	१२	२०	कर्क			६	४२	१७	२९	६	१६	९	४२	मंगल कन्या में ३/३२, शुक्र कन्या में २/००, (C)
२६	५३	९	बु.	६०	०	आश्ले.	३३	१९	शु.	४३	३४	तै.	३२	१६	१९	४	१३	२१	सिंह	३३	१९	६	४३	१७	२८	६	१७	९	४७	
२६	४९	९	गु.	४	४२	मघा	४०	७	ब्र.	४५	१८	ग.	४	४२	२०	५	१४	२२	सिंह			६	४४	१७	२८	६	१८	९	५३	भ. ३७/४५ बाद, गुरु पू.फा. ४ में ३/३७,
२६	४५	१०	शु.	१०	४९	पू.फा.	४७	४६	ऐं.	४७	४१	वि.	१०	४९	२१	६	१५	२३	सिंह			६	४५	१७	२७	६	१९	१०	२	भ. १०/४६ तक, सूर्य विशा. में ४६/४०,
२६	४१	११	श.	१७	३३	उ.फा.	५५	४३	वै.	५०	१७	बा.	१७	३३	२२	७	१६	२४	कन्या	४	४४	६	४६	१७	२६	६	२०	१०	१३	रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी,
२६	३७	१२	र.	२४	२२	हस्त	६०	०	वि.	५२	४५	तै.	२४	२२	२३	८	१७	२५	कन्या			६	४६	१७	२५	६	२१	१०	२६	
२६	३४	१३	चं.	३०	४७	हस्त	३	२५	प्री.	५४	४८	व.	३०	४७	२४	९	१८	२६	तुला	३७	७	६	४७	१७	२५	६	२२	१०	४१	भ. ३०/४७ बाद, वक्री यूरेनस रेव. २ में ३६/३२, (D)
२६	३०	१४	म.	३६	३७	चित्रा	१०	२४	आ.	५६	१३	वि.	३	३७	२५	१०	१९	२७	तुला			६	४८	१७	२४	६	२३	१०	५८	भ. ३/३७ तक, बुध विशा. में ४८/२७, नरक (E)
२६	२६	३०	बु.	४१	१०	स्वाती	[illegible]	५२	सौ.	५६	५२	च.	८	४८	२६	११	२०	२८	तुला			६	४९	१७	२३	६	[illegible]	[illegible]	१६	दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजा, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस(जैन),

(A) ३५/१५, (B) चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (C) अहोई अष्टमी (पंजाब-हरियाणा), (D) सोमप्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, यमप्रीत्यर्थ दीपदान (देखें पृ. 15). श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.), (E) चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ३ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	४	६	४	४	७	५	११
१६	१०	२६	७	२२	२६	१०	४	४
६	१४	५६	५	५६	५४	१३	३६	३६
४३	२६	१	१८	१	५५	५७	२०	२०
६०	७९५	३६	६६	६	६३	६	३	३
४	२४	२७	१६	५६	५	४३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (३ नवं.)

८ श. | रा. ६ | ६ | सू. ७ बु. | ५ गु. शु. | १० | ४ चं. | ११ | १ | ३ | के. १२ | २

लोकभविष्य:- मंगल-गुरु-राहु कन्या राशि में आकर महंगाई को बढ़ाता रहें, जनता में महंगाई से जनाक्रोश बढ़ेगा। तुला राशि के बुध-सूर्य कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति किंवा अपर्याप्त वर्षा से कृषक वर्ग को संकटग्रस्त करें -" कार्त्तिके प्रथमे पक्षे प्रथमा बुध-संयुता । जायते मध्यमा वृष्टिरनावृष्टिः क्वचिद् भवेत् ॥" इस चान्द्रमास में पांच बुधवार हैं, अतः सरकार की सहायता से जन-जीवनोपयोगी वस्तुएं सर्व-सुलभ होंगी । पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं अन्य मुस्लिम राष्ट्रों के शासक संकटापन्न स्थिति में रहें ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में गुड़, खाण्ड, शक्कर कुछ तेज रहें । लेकिन अनाज, घी, रुई, सोना, चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन में २८/२९ अक्तूबर को मन्दा बने । ३१ अक्तूबर के लगभग कपास, अनाज, मिर्च, केसर, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, घी, ऊनी-रेशमी वस्त्र तेज रहें । यह तेजी ३ नवं. तक जोर पकड़े । ४ नवं. से पक्षान्त तक चावल, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी में जोरदार तेजी और मन्दी के झटके आएंगे ।

आकाशलक्षण :- अक्तूबर २८ से ३१ तक एवं नवंबर २, ३, ४, ६ को कश्मीर, हि.प्र., उत्तर एवं दक्षिणी भारत में कहीं बादल-चाल एवं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि संभव है । हि.प्र., कश्मीर एवं उत्तराखण्ड के उच्च शिखरों पर कहीं हिमपात हो ।

कुण्डली सूर्योदय (११ नवं.)

८ श. | रा. ६ मं. शु. | ६ | सू. ७ बु. चं. | ५ गु. | १० | ४ | ११ | १ | ३ | के. १२ | २

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ११ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	५	६	४	५	७	५	११
२४	१५	४	२०	२४	८	११	४	४
११	५५	४६	१३	१६	२८	८	१३	१३
१७	४०	३४	२७	८	३४	२६	५४	५४
६०	७३०	३६	६७	६	६५	६	३	३
२०	३५	६	१३	१०	३४	५५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, कार्तिक शुक्ल पक्ष १७

(१२ से २५ नवम्बर तक, सन् २०१५ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

बु. अस्त है । श. भी १३ नवं. से अदृश्य हो जाएगा। प्रातः गु.मं.शु. पूर्वकपाल में होंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	तारीखें अं. नवम्बर	तारीखें श. कार्तिक	तारीखें मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२६	२३	१	गु.	४४	४८	विशा.	२२	११	शो.	५६	४३	किं.	१०	३३	२७	१२	२१	२९	वृश्चिक	५	५६	६	५०	१७	२३	६	२५	११	३७	शुक्र हस्त में २०/१५, अन्नकूट, गोवर्धनपूजा, गोक्रीड़ा (A)
२६	१९	२	शु.	४७	२२	अनु.	२६	२७	अ.	५५	४४	बा.	१६	५	२८	१३	२२	३०	वृश्चिक			६	५१	१७	२२	६	२६	११	५९	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शनि अस्त १७ घं. २२ मि., (B)
२६	१५	३	श.	४८	५२	ज्येष्ठा	२९	४२	सु.	५३	५६	तै.	१८	७	२९	१४	२३	स.१	धनु	२९	४२	६	५१	१७	२२	६	२७	१२	२२	सफर मु. प्रारम्भ,
२६	१२	४	र.	४९	१९	मूल	३१	५५	धृ.	५१	१९	व.	१९	५	३०	१५	२४	२	धनु			६	५२	१७	२१	६	२८	१२	४८	भ. १६/०५ से ४६/१६ तक,
२६	९	५	चं.	४८	४३	पू.षा.	३३	७	शू.	४७	५४	ब.	१९	०	मा.१	१६	२५	३	मकर	४८	१७	६	५३	१७	२१	६	२९	१३	१४	सं. सूर्य वृश्चिक में ४२/५५, मु. ४५, पुण्यकाल (C)
२६	५	६	मं.	४७	४	उ.षा.	३३	१८	गं.	४३	३९	कौ.	१७	५३	२	१७	२६	४	मकर			६	५४	१७	२०	७	०	१३	४२	बुध वृश्चिक में १/३०, सूर्यषष्ठी (विहार),
२६	२	७	बु.	४४	२०	श्रव.	३२	२७	वृ.	३८	३३	ग.	१५	४२	३	१८	२७	५	मकर			६	५५	१७	२०	७	१	१४	१२	भ. ४४/२० बाद, नेप्च्यून मार्गी ३७/५५,
२५	५९	८	गु.	४०	३२	धनि.	३०	३१	ध्रु.	३२	३६	वि.	१२	२६	४	१९	२८	६	कुम्भ	१	३६	६	५६	१७	१९	७	२	१४	४२	भ. १२/२६ तक, पंचक प्रारम्भ १/३६, मंगल हस्त(D)
२५	५५	९	शु.	३५	३९	शत.	२७	३३	व्या.	२५	४७	बा.	८	५	५	२०	२९	७	कुम्भ			६	५७	१७	१९	७	३	१५	१४	सूर्य अनु. में १/०५, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
२५	५२	१०	श.	२९	४८	पू.भा.	२३	३५	ह.	१८	१०	तै.	२	४३	६	२१	३०	८	मीन	९	३८	६	५७	१७	१८	७	४	१५	४७	भ. ५६/२६ बाद, भीष्म पंचक प्रारम्भ (देखें पृ. 15),
२५	४९	११	र.	२३	५	उ.भा.	१८	४५	व.	९	५०	वि.	२३	५	७	२२	मा.१	९	मीन			६	५८	१७	१८	७	५	१६	२२	भ. २३/०५ तक, सूर्य सायन धनु में ३४/५२, (E)
२५	४६	१२	चं.	१५	४५	रेव.	१३	१६	सि. व्य.	० ५९	५७ ४१	बा.	१५	४५	८	२३	२	१०	मेष	१३	१६	६	५९	१७	१८	७	६	१६	५७	पंचक समाप्त १३/१६, हरिप्रबोधोत्सव, तुलसी विवाह(F)
२५	४४	१३	मं.	८	३	अश्वि.	७	२५	व.	४२	१९	तै.	८	३	९	२४	३	११	मेष			७	०	१७	१७	७	७	१७	३४	शुक्र चित्रा में १४/०५, वैकुण्ठ चतुर्दशी, बलिदान दिन(G)
२५	४१	१४	बु.	०	२३	भर. कृत्ति.	१ ५६	३२ ५	प.	३३	८	व.	०	२३	१०	२५	४	१२	वृष	१५	६	७	१	१७	१७	७	८	१८	१२	भ. ०/२३ से २६/४३ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (H)
अवम		१५	बु.	५३	३	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पूर्णिमा तिथिक्षय,

(A) बलिपूजा, (B) यमद्वितीया, भाईदूज, विश्वकर्मा पूजा, (C) मध्याह्न बाद, ज्ञानपंचमी (जैन), (D) में ३८/५०, बुध अनु. में ७/२५, गोपाष्टमी, (E) देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ, (F) (देखें पृ. 16 सोमप्रदोष व्रत, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त, (G) श्रीगुरु तेगबहादुर जी, (H) भीष्म पंचक समाप्त, त्रिपुरोत्सव, कार्तिक पूर्णिमा, कार्तिकस्नान समाप्त, श्रीगुरुनानक जयन्ती, मेला पुष्करराज (राज.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १९ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	९	५	७	४	५	७	५	११
२	२८	९	३	२५	१७	१२	३	३
१४	४८	३४	२	२६	२०	४	४८	४८
४३	४५	४०	३८	१२	७	१८	२८	२८
६०	८३२	३५	९४	८	६७	७	३	३
३२	३३	५०	५४	१३	३०	३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१९ नवं.)

६ | ७
चं. | श. | शु.
१० | सू. ८ बु. | ६ मं. रा.
११ | ५ गु.
१२ के. | २ | ४
१ | ३

लोकभविष्यः- सूर्य, बुध, शनि- ये तीनों वृश्चिक राशि में आकर दक्षिण-पश्चिमी भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप एवं उग्रवादजन्य गतिविधियों से अशान्ति का कारण बनेंगे । अनुराधा एवं विशाखा नक्षत्र का बुध उत्तरी भारत में सुभिक्ष का सूचक है । साथ ही सोमवार की कार्तिक-शुक्ला पंचमी उ. भारत के लिए शुभ संकेत देती है ;-"कार्तिकस्य सिते पक्षे पंचम्यां सोमवासरः । नर-नारी-नृपाणां च सर्वत्र सुखदो भवेत् ।।" इस पक्ष में वृश्चिकस्थ शनि का अस्त होना किसी प्रान्तविशेष किंवा मुस्लिमराष्ट्र में राजनीतिज्ञों के लिए संकटापन्न स्थिति बनाएगा । राहु एवं मंगल के लगभग १९ नवंबर तक एक-राशि व एक नक्षत्र में रहने से प्रान्तविशेष में वर्षा न होने से सरकार को सूखाग्रस्त क्षेत्र घोषित करना पड़ेगा;-"राहुरंगारकश्चैकराशि- नक्षत्रगौ तथा ।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी एवं शेयर कुछ मन्दे रहें । १६ नवंबर को रुई, तांबा, चान्दी, सोना, ऊनी वस्त्र, घी, तेल, सरसों एवं अनाजों में मन्दे का रुख रहे । १९ नवंबर को दालें, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, जौ, चना आदि अनाज एवं धातुएं पक्षान्त तक तेज रहें । **आकाशलक्षणः**- नवंबर १२, १३, १४, १६, १९, २० एवं २४ को पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर में कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो । उत्तरी भारत में जोरदार शीतलहर चले । हिमाचल आदि में हिमपात से यातायात बाधित हो ।

कुण्डली सूर्योदय (२५ नवं.)

६ | ७
श. | शु.
१० | सू. ८ बु. | ६ मं. रा.
११ | ५ गु.
१२ के. | २ | ४
१ चं. | ३

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २५ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	५	७	४	५	७	५	११
८	२५	१३	१२	२६	२४	१२	३	३
१८	२१	८	२८	१३	८	४६	२९	२९
१२	२५	५९	५६	३५	९	४५	२३	२३
६०	८८०	३५	९३	७	६८	७	३	३
४०	२४	३४	४६	२७	४१	६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८

(२६ नवम्बर से ११ दिसम्बर तक, सन् २०१५ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु ।

बु.श. अस्त हैं । प्रातः शु. पूर्वक्षितिज पर, मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त की ओर बढ़ता दिखाई देगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. नवंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. सफर	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३८	१	गु.	४६	३०	रोहि.	५१	२४	शि.	२४	२८	बा.	१९	४६	११	२६	५	१३	वृष			७	२	१७	१७	७	९	१८	५१	
२५	३६	२	शु.	४१	९	मृग.	४७	५६	सि.	१६	३८	तै.	१३	४९	१२	२७	६	१४	मिथुन	१९	२७	७	३	१७	१७	७	१०	१९	३२	बुध ज्येष्ठा में ३७/००, राहु उ.फा. २, केतु पू.भा. (A)
२५	३३	३	श.	३७	२३	आर्द्रा	४६	५	सा.	९	५६	व.	९	१६	१३	२८	७	१५	मिथुन			७	३	१७	१७	७	११	२०	१४	म. ६/१६ से ३७/२३ तक, गुरु उ.फा. १ में ३४/२७,
२५	३१	४	र.	३५	३२	पुन.	४६	७	शु.	४	३८	ब.	६	२८	१४	२९	८	१६	कर्क	३०	५६	७	४	१७	१६	७	१२	२०	५७	शनि अनु. ४ में ३६/४३, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२५	२८	५	चं.	३५	४७	पुष्य	४८	१३	शु. / ब्र.	० / ५८	५७ / ५२	कौ.	५	४०	१५	३०	९	१७	कर्क			७	५	१७	१६	७	१३	२१	४२	शुक्र तुला में १/४५,
२५	२६	६	मं.	३८	८	आश्ले.	५२	१८	ऐं.	५८	२२	ग.	६	५८	१६	दि.१	१०	१८	सिंह	५२	१८	७	६	१७	१६	७	१४	२२	२८	म. ३८/०८ बाद, दिसंबर प्रारम्भ,
२५	२४	७	बु.	४२	२४	मघा	५८	९	वै.	५९	१२	वि.	१०	१६	१७	२	११	१९	सिंह			७	७	१७	१६	७	१५	२३	१६	भ. १०/१६ तक, प्लूटो पू.षा. ३ में १४/०५,
२५	२२	८	गु.	४८	९	पू.फा.	६०	०	वि.	६०	०	बा.	१५	१६	१८	३	१२	२०	सिंह			७	८	१७	१६	७	१६	२४	६	सूर्य ज्येष्ठा में ११/३५, श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी),
२५	२०	९	शु.	५४	४७	पू.फा.	५	१४	वि.	१	०	तै.	२१	२८	१९	४	१३	२१	कन्या	२२	११	७	८	१७	१६	७	१७	२४	५६	
२५	१८	१०	श.	६०	०	उ.फा.	१३	२	प्री.	३	२४	व.	२८	१२	२०	५	१४	२२	कन्या			७	९	१७	१६	७	१८	२५	४८	भ. २८/१२ बाद, शुक्र स्वाती में ४४/४०,
२५	१६	१०	र.	१	३६	हस्त	२०	५१	आ.	५	५३	वि.	१	३६	२१	६	१५	२३	तुला	५४	३६	७	१०	१७	१६	७	१९	२६	४२	भ. १/३६ तक, बुध मूल धनु में १२/०७,
२५	१४	११	चं.	८	०	चित्रा	२८	६	सौ.	८	०	बा.	८	०	२२	७	१६	२४	तुला			७	११	१७	१६	७	२०	२७	३७	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.) ,
२५	१३	१२	मं.	१३	२८	स्वाती	३४	२०	शो.	९	२५	तै.	१३	२८	२३	८	१७	२५	तुला			७	११	१७	१६	७	२१	२८	३३	भौमप्रदोष व्रत,
२५	११	१३	बु.	१७	४०	विशा.	३९	१९	अ.	९	५४	व.	१७	४०	२४	९	१८	२६	वृश्चिक	२३	११	७	१२	१७	१७	७	२२	२९	३०	भ. १७/४० से ४६/०४ तक,
२५	१०	१४	गु.	२०	२८	अनु.	४२	५७	सु.	९	२१	श.	२०	२८	२५	१०	१९	२७	वृश्चिक			७	१३	१७	१७	७	२३	३०	२८	
२५	९	३०	शु.	२१	५४	ज्येष्ठा	४५	१७	घृ.	७	४३	ना.	२१	५४	२६	११	२०	२८	धनु	४५	१७	७	१४	१७	१७	७	२४	३१	२७	

(A) ४ में ५३/१७,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
३ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	५	७	४	६	७	५	११
१६	१२	१७	२४	२७	३	१३	३	३
२४	५३	५२	५५	६	२२	४३	३	३
६	४८	१७	५८	११	३५	३८	५७	५७
६०	७१५	३५	६३	६	७०	७	३	३
५१	३८	१२	०	१८	२	७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (३ दिसं.)

६ | ७ शु. | श. सू. ८ बु. | १० | ६ मं.रा. | ११ | चं. ५ गु. | १२ के. | २ | ४ | १ | ३

लोकभविष्यः- शुक्र-गुरु दोनों उ.फा. नक्षत्र में हैं एवं शनि-सूर्य वृश्चिक राशि में तथा कन्या राशि के मंगल-राहु राष्ट्रनेतृत्व के लिए कठिन परिस्थितियां उपस्थित करेंगे । तुला राशि का शुक्र उलझी समस्याओं के समाधान के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा । इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार एवं पांच शुक्रवार हैं, अतः पश्चिमी देशों में युद्धाग्नि से वातावरण अशान्त रहे ;- "यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पते : । विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग-युद्धमयं क्वचित् ॥"

लेकिन पंच शुक्रवार भारत में प्रजा में सुख-शान्ति एवं समृद्धिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित करेंगे ;-" शुक्रस्य पंचवारा स्युर्यत्र मासे निरन्तरम् । प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रकर्ति ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- २७ नवंबर को रुई, सोना, चान्दी, घी, गुड़, खाण्ड, चावल, चना आदि एवं दालवाना तेज रहें । २९ नवं. को गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी आदि धातुओं व अनाजों में मन्दी रहे। कपास, रुई में जोरदार मन्दी या तेजी का झटका आए । मिर्च, केसर, चन्दन, कपूर में तेजी रहे । ३० नवं. से १० दिसं. तक सोना, चांदी, चावल, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड एवं रुई में तेजी रहे । **आकाशलक्षणः-** नवं. २७, २८, २९, ३० एवं दिसं. ३, ५, ६ और १० को उ. भा. शीतलहर की चपेट में रहेगा । [illegible] से कई जगह यातायात बाधित हो । पर्वतीय भूभाग हिमपात से कटा रहे । २९, ३० नवं. एवं १० दिसं. को उ.प्र., राज., म.प्र., हि.प्र., पंजाब, [illegible]

कुण्डली सूर्योदय (११ दिसं.)

६ बु. | ७ शु. | श. सू. ८ चं. | १० | ६ मं.रा. | ११ | ५ गु. | १२ के. | २ | ४ | १ | ३

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
११ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	५	८	४	६	७	५	११
२४	१९	२२	७	२७	१२	१४	२	२
३१	२२	३२	१७	५५	४६	४०	३८	३८
२८	२६	२६	४०	१५	४३	२०	३१	३१
६१	७७२	३४	६२	५	७३	७	३	३
०	२१	४६	७	२	४	२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(१२ से २५ दिसम्बर तक, सन् २०१५ ई.)
दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु ।

पक्षारम्भ में ही बु. पश्चिम में और १७ दिसं. को श. पूर्व में उदित हो जाएगा । प्रातः शु. पूर्वक्षितिज से ऊपर, मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न नजर आएगा ।

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. दिसंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. सफर	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	७	१	श.	२२	४	मूल	४६	२९	शू.	५	७	ब.	२२	४	२७	१२	२१	२९	धनु			७	१४	१७	१७	७	२५	३२	२७	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध पश्चिम में उदित १७घं. १७मि,(A)
२५	६	२	र.	२१	१०	पू.षा.	४६	४३	गं. वृ.	१ ५७	३८ २७	कौ.	२१	१०	२८	१३	२२	र.१	धनु			७	१५	१७	१८	७	२६	३३	२८	रवि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२५	५	३	चं.	१९	२३	उ.षा.	४६	९	ध्रु.	५२	३६	ग.	१९	२३	२९	१४	२३	२	मकर	१	३७	७	१६	१७	१८	७	२७	३४	३०	भ. ४८/०८ बाद, बुध पू.षा. में ५२/३७,
२५	५	४	मं.	१६	५२	श्रव.	४४	५५	व्या.	४७	१५	वि.	१६	५२	३०	१५	२४	३	मकर			७	१६	१७	१८	७	२८	३५	३२	भ. १६/५२ तक,
२५	४	५	बु.	१३	४३	धनि.	४३	८	ह.	४१	२७	बा.	१३	४३	पौ.१	१६	२५	४	कुम्भ	१४	५	७	१७	१७	१८	७	२९	३६	३५	पंचक प्रारम्भ १४/५, सं. सूर्य मूल धनु में १८/३२, (B)
२५	३	६	गु.	१०	२	शत.	४०	५०	व.	३५	१३	तै.	१०	२	२	१७	२६	५	कुम्भ			७	१८	१७	१९	८	०	३७	३९	शनि उदित ७ घं. १८ मि., चम्पाषष्ठी, मित्रसप्तमी (C)
२५	३	७	शु.	५	५१	पू.भा.	३८	२	सि.	२८	३५	व.	५	५१	३	१८	२७	६	मीन	२३	४६	७	१८	१७	१९	८	१	३८	४२	भ. ५/५१ से ३३/३० तक,
२५	२	८	श.	१	९	उ.भा.	३४	४६	व्य.	२१	३५	ब.	१	९	४	१९	२८	७	मीन			७	१९	१७	२०	८	२	३९	४६	
अवम		९	श.	५६	२	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय,
२५	२	१०	र.	५०	२९	रेव.	३१	४	व.	१४	१२	तै.	२३	१६	५	२०	२९	८	मेष	३१	४	७	१९	१७	२०	८	३	४०	५१	पंचक समाप्त ३१/०४,
२५	२	११	चं.	४४	३९	अश्वि.	२७	३	प. शि.	६ ५८	३३ ४३	व.	१७	३४	६	२१	३०	९	मेष			७	२०	१७	२१	८	४	४१	५५	भ. १७/३४ से ४४/३६ तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), (D)
२५	२	१२	मं.	३८	४५	भर.	२२	५३	सि.	५०	५२	ब.	११	४२	७	२२	पौ.१	१०	वृष	३६	५०	७	२०	१७	२१	८	५	४३	०	सूर्य सायन मकर में ७/२५, उत्तरायण एवं शिशिर (E)
२५	२	१३	बु.	३३	०	कृत्ति.	१८	४८	सा.	४३	११	कौ.	५	५२	८	२३	२	११	वृष			७	२१	१७	२२	८	६	४४	५	मंगल तुला में ५६/२७, प्रदोषव्रत,
२५	२	१४	गु.	२७	४५	रोहि.	१५	७	शु.	३५	५७	ग.	०	२२	९	२४	३	१२	मिथुन	४३	३१	७	२१	१७	२२	८	७	४५	११	भ. २७/४५ से ५५/३१ तक, बुध उ.षा. में ४/०७, (F)
२५	२	१५	शु.	२३	१९	मृग.	१२	१०	शु.	२९	२४	ब.	२३	१९	१०	२५	४	१३	मिथुन			७	२२	१७	२३	८	८	४६	१६	शुक्र वृश्चिक में १६/४३, नेप्च्यून शत. ३ में ५४/३०,

(A) मंगल चित्रा में १७/४७, (B) मु. ३०, पुण्यकाल २/३२ बाद, शुक्र विशा. में ५६/५७, स्कन्द (गुह) षष्ठी, (C) (देखें पृ. 15), (D) श्रीगीता जयन्ती, (E) ऋतु प्रारम्भ, शक पौष प्रारम्भ, (F) श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १९ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ २ ३६ ४७	११ ७ २५ २६	५ २७ ८ ४८	८ १६ २३ ५१	४ २८ ३० ५०	६ २२ १८ ११	७ १५ ३६ १३	५ २ १३ ४	११ २ १३ ४
६१ ४	८४८ १	३४ १५	८७ ४६	३ ४०	७१ ५२	६ ५४	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१९ दिसं.)

१० | ८ श.
११ | सू. ९ बु. | ७शु.
चं. १२ के. | ६ मं. रा.
१ | ३ | ५ गु.
२ | ४

लोकभविष्य:- इस पक्ष में मंगल-शुक्र दोनों तुला राशि में एकराशि संबन्ध बनाते हैं । पक्षान्त में शुक्र शनि के साथ वृश्चिक राशि में एकराशि-सम्बन्ध बना लेता है । अतः कुछ प्रान्तों में वर्षा का अवरोध रहेगा । कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति से जनजीवन परेशानी में आएगा । मार्गशीर्ष में धनुसंक्रान्ति भी दुर्भिक्ष का संकेत देती है ;- " मार्गशीर्षे धनुषि हि यदा याति प्रभाकरः । तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयं विपरीतात् सुखं भवेत् ॥" इस पक्ष में नवमी तिथि का क्षय कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु किंवा सत्ताहस्तान्तर एवं प्राकृतिक प्रकोप (अकाल) आदि की स्थिति बनाए -" मार्गशीर्षादि-मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः । छत्रभंगं प्रजा-पीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत् ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- १२ से १३ दिसंबर तक गेहूं, चावल, चना, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल तेज रहें । १४ से १६ दिसं. के मध्य तक सोना, चान्दी में जोरदार मन्दी का झटका आकर बाद में तेजी बने । रुई, कपास, सूत, अलसी में तेजी बने । १७ दिसं. को तेल-तिलहन मन्दे; गुड़, खाण्ड एवं चावल आदि अनाज तेज हों । २४/२५ दिसं. को रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, गेहूं एवं दालदाना में तेजी बने । **आकाशलक्षण:-** दिसं. १२, १४, १६, १७, १८, २४, २५ को उत्तरी भारत में भयंकर शीत एवं धुन्ध से हानि हो । १६, २४, २५ दिसं. को हि.प्र. में भारी हिमपात एवं अन्यत्र खण्डवृष्टि के योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (२५ दिसं.)

१० | ८ श.
११ | सू. ९ बु. | ७ मं. शु.
१२ के. | ६ रा.
१ | ३ चं. | ५ गु.
२ | ४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २५ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ ८ ४६ १७	२ २ ४५ ३६	६ ० ३३ १७	८ २७ ४७ ३६	४ २८ ५० ११	६ २६ ३० ३७	७ १६ १७ १४	५ १ ५३ ५६	११ १ ५३ ५६
६१ ६	८३० ६	३३ ५०	७६ २४	२ ३६	७२ २१	६ ४४	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, पौष कृष्ण पक्ष २०

(२६ दिसम्बर २०१५ से ९ जनवरी, सन् २०१६ ई. तक,)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

८ जन., २०१६ ई. को सायं पश्चिम में दिखाई दे रहा बु. लुप्त हो जाएगा। प्रातः श.शु. पूर्वक्षितिज में, मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. पौष	अं. दिसम्बर	श. पौष	मु. र.उ.ल.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. भा. स्टैं. टा. रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३	१	श.	२०	३	आर्द्रा	१०	१८	ब्र.	२३	५०	कौ.	२०	३	११	२६	५	१४	कर्क	५४	४९	७	२२	१७	२३	८	९	४७	२२	बुध मकर में ४१/१५, यूरेनस मार्गी ५/०५, (D)
२५	३	२	र.	१८	१९	पुन.	९	५१	ऐं.	१९	२७	ग.	१८	१९	१२	२७	६	१५	कर्क			७	२३	१७	२४	८	१०	४८	२९	भ. ४८/१६ बाद,
२५	४	३	चं.	१८	१९	पुष्य	११	५	वै.	१६	२६	वि.	१८	१९	१३	२८	७	१६	कर्क			७	२३	१७	२४	८	११	४९	३६	भ. १८/१६ तक, शुक्र अनु. में ५/१७, शनि ज्येष्ठा १(A)
२५	५	४	मं.	२०	१३	आश्ले.	१४	८	वि.	१४	५२	बा.	२०	१३	१४	२९	८	१७	सिंह	१४	८	७	२३	१७	२५	८	१२	५०	४३	सूर्य पू.षा. में २४/०२,
२५	६	५	बु.	२३	५७	मघा	१८	५६	प्री.	१४	४२	तै.	२३	५७	१५	३०	९	१८	सिंह			७	२४	१७	२६	८	१३	५१	५१	
२५	७	६	गु.	२९	१४	पू.फा.	२५	१५	आ.	१५	४४	व.	२९	१४	१६	३१	१०	१९	कन्या	४२	२	७	२४	१७	२६	८	१४	५२	५९	भ. २६/१४ बाद,
२५	८	७	शु.	३५	३६	उ.फा.	३२	३७	सौ.	१७	३९	वि.	२	२५	१७	ज.१	११	२०	कन्या			७	२४	१७	२७	८	१५	५४	७	भ. २/२५ तक, जनवरी(इंग्लिश नववर्ष सन् २०१६ ई.) (B)
२५	९	८	श.	४२	२४	हस्त	४०	२५	शो.	२०	२	बा.	९	०	१८	२	१२	२१	कन्या			७	२४	१७	२८	८	१६	५५	१६	
२५	१०	९	र.	४८	५५	चित्रा	४७	५९	अ.	२२	२२	तै.	१५	३९	१९	३	१३	२२	तुला	१४	१७	७	२५	१७	२९	८	१७	५६	२६	
२५	१२	१०	चं.	५४	३०	स्वाती	५४	४०	सु.	२४	१२	व.	२१	४२	२०	४	१४	२३	तुला			७	२५	१७	२९	८	१८	५७	३५	भ. २१/४२ से ५४/३० तक, मंगल स्वाती में ५२/४७,
२५	१३	११	मं.	५८	४२	विशा.	६०	०	धृ.	२५	८	ब.	२६	३६	२१	५	१५	२४	वृश्चिक	४३	५१	७	२५	१७	३०	८	१९	५८	४५	बुध वक्री २७/५२, सफला एकादशी व्रत (स्मा.),
२५	१५	१२	बु.	६०	०	विशा.	०	२	शू.	२४	५५	कौ.	२९	५७	२२	६	१६	२५	वृश्चिक			७	२५	१७	३१	८	२०	५९	५५	सफला एकादशी व्रत (वै.),
२५	१६	१२	गु.	१	१३	अनु.	३	४८	गं.	२३	२४	तै.	१	१३	२३	७	१७	२६	वृश्चिक			७	२५	१७	३२	८	२२	१	५	प्रदोषव्रत,
२५	१८	१३	शु.	२	१	ज्येष्ठा	५	५४	वृ.	२०	३४	व.	३	१	२४	८	१८	२७	धनु	५	५४	७	२५	१७	३२	८	२३	२	१५	भ. २/०१ से ३१/३५ तक, बुध पश्चिम में अस्त (C)
२५	२०	१४	श.	१	११	मूल	६	२८	ध्रु.	१६	३२	श.	१	११	२५	९	१९	२८	धनु			७	२५	१७	३३	८	२४	३	२६	शनैश्चरी अमावस,
अवम		३०	श.	५८	५७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस तिथिक्षय,

(A) में १९/०५, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (B) प्रारम्भ, (C) १७ घं. ३२ मि., गुरु वक्री ६/५२, शुक्र ज्येष्ठा में ३/३५, (D) जोड़मेला श्री फतहगढ़ साहिब, (प.) प्रा.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	६	६	४	७	७	५	११
१६	१४	५	५	२६	६	१७	१	१
५५	२७	१	५१	५	११	१०	२८	२८
१७	३	५५	५०	४४	२६	१५	३३	३३
६१	८०७	३३	३१	१	७२	६	३	३
६	४७	१३	८	६	५५	२६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा.	हस्त	चित्रा	उ.षा.	उ.फा.	[illegible]	[illegible]	उ.फा.	पू.भा.

कुण्डली सूर्योदय (२ जन.)

बु. १० | शु. ८ श. | ११ | सू. ९ | ७ मं. | १२ के. | ६ रा. चं. | १ | ३ | ५ गु. | २ | ४

लोकभविष्यः-पौष चान्द्रमास में पांच शनिवार है। शनि-शुक्र दोनों (मित्रग्रह) मंगल के क्षेत्र में है। शनि की दृष्टि पश्चिमी देशों पर है, अतः -" पश्चिमे दारुणो घोरः संहारस्तत्र जायते "- प्रमाणानुसार पश्चिमी प्रान्तों या देशों में अशान्ति किंवा कहीं देश-विशेष में युद्ध का सूत्रपात संभव है। सीमाप्रान्तों पर सावधान रहना आवश्यक है। ज्येष्ठा नक्षत्र का शुक्र एवं पांच शनिवार इस चान्द्रमास में २३ जनवरी, सन् २०१६ ई. तक किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होने की संभावना बनाते है। लगभग ८ से १०. जन. के मध्य भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी संभव है। सरकार को सावधान रहना होगा-" लोके भयं छत्रपतिभयं तत्र विनिर्दिशेत् ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- मकर राशिस्थ बुध पर शनि-मंगल की दृष्टि है। अतः पक्षारम्भ में रुई, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, हल्दी, ऊनी वस्त्र तेज रहें। ५ जनवरी सन् २०१६ ई. से ८/९ जनवरी तक सभी बाजार मन्दे हो सकते हैं- सावधान रहें। लगभग १० जनवरी को गेहूं, जौ, चना, चावल आदि धान्य, अलसी, घी, सोना, चान्दी में जोरदार मन्दी या तेजी के रिएक्शन्ज़ आएंगे, विचार से काम करें। हमारे विचार से सोना-चान्दी आदि धातु तेज रहें।

आकाशलक्षणः- दिसंबर २६, २८, २९, ३० एवं जनवरी (२०१६ ई.) ५, ६, ८, ९ के लगभग उत्तरी भारत, दिल्ली, उ.प्र., उ.खण्ड, राजस्थान एवं जम्मू-काश्मीर में शीतलहर चलेगी। हि.प्र. आदि में बर्फबारी से यातायात भी बाधित होगा।

कुण्डली सूर्योदय (६ जन.)

बु. १० | शु. ८ श. | ११ | सू. ९ चं. | ७ मं. | १२ के. | ६ रा. | १ | ३ | ५ गु. | २ | ४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ६ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	६	६	४	७	७	५	११
२४	१०	८	५	२६	१७	१७	१	१
३	४६	५२	४७	६	४३	५४	६	६
२७	४२	३६	५६	२२	१	४२	१७	१७
६१	८०७	३२	४६	०	७३	६	३	३
१०	३२	३४	०	१६	१६	११	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, पौष शुक्ल पक्ष २१															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१० से २३ जनवरी तक, सन् २०१६ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. पौष	अं. जनवरी	श. पौष	मु. रबि-उल.				सूर्योदय		सूर्यास्त						२१ जन. को बु. प्रातः पूर्व में दिखाई देना शुरु हो जाएगा, प्रातः शु. पूर्वक्षितिजासन्न और श. इससे ऊपर होगा । इसी समय मं. याम्योत्तरवृत्त के पास और गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न देखा जा सकेगा ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२२	१	र.	५५	३६	पू.षा.	५	४०	व्या.	११	२७	कि.	२७	१६	२६	१०	२०	२९	मकर	२०	१७	७	२५	१७	३४	८	२५	४	३६	
२५	२४	२	चं.	५१	२६	उ.षा.	३	४९	ह. व.	५ ५९	३२ ०	बा.	२३	३१	२७	११	२१	३०	मकर			७	२५	१७	३५	८	२६	५	४६	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य उ.षा. में २८/४७,
२५	२६	३	मं.	४६	४२	श्रव. धनि.	१ ५८	१२ ५	सि.	५२	४	तै.	१९	४	२८	१२	२२	र.१	कुम्भ	२९	४१	७	२५	१७	३६	८	२७	६	५५	पंचक प्रारम्भ २६/४१, रबि-उस्सानी मु. प्रारम्भ,
२५	२९	४	बु.	४१	४०	शत.	५४	४३	व्य.	४४	५४	व.	१४	११	२९	१३	२३	२	कुम्भ			७	२५	१७	३७	८	२८	८	४	भ. १४/११ से ४१/४० तक, लोहड़ी (A)
२५	३१	५	गु.	३६	३०	पू.भा.	५१	१५	व.	३७	३९	ब.	९	५	मा.१	१४	२४	३	मीन	३७	६	७	२५	१७	३७	८	२९	९	१३	सं. सूर्य मकर में ४५/०२, मु. ३०, पुण्यकाल अगले (B)
२५	३४	६	शु.	३१	२०	उ.भा.	४७	४९	प.	३०	२४	कौ.	३	५५	२	१५	२५	४	मीन			७	२५	१७	३८	९	०	१०	२१	
२५	३६	७	श.	२६	१७	रेव.	४४	३०	शि.	२३	१३	व.	२६	१७	३	१६	२६	५	मेष	४४	३०	७	२५	१७	३९	९	१	११	२८	भ. २६/१७ से ५३/५१ तक, पंचक समाप्त ४४/३०,(C)
२५	३९	८	र.	२१	२३	अश्वि.	४१	२१	सि.	१६	११	ब.	२१	२३	४	१७	२७	६	मेष			७	२५	१७	४०	९	२	१२	३५	
२५	४२	९	चं.	१६	४२	भर.	३८	२७	सा.	९	१८	कौ.	१६	४२	५	१८	२८	७	वृष	५२	४६	७	२४	१७	४१	९	३	१३	४१	शुक्र मूल धनु में ५७/२२,
२५	४४	१०	मं.	१२	१८	कृत्ति.	३५	५३	शु. शु.	२ ५६	३९ १८	ग.	१२	१८	६	१९	२९	८	वृष			७	२४	१७	४२	९	४	१४	४५	भ. ४०/१८ बाद,
२५	४७	११	बु.	८	१८	रोहि.	३३	४५	ब्र.	५०	२१	वि.	८	१८	७	२०	३०	९	वृष			७	२४	१७	४३	९	५	१५	५०	भ. ८/१८ तक, सूर्य सायन कुम्भ में ३३/५२, पुत्रदा (D)
२५	५०	१२	गु.	४	५१	मृग.	३२	१३	ऐं.	४४	५६	बा.	४	५१	८	२१	मा.१	१०	मिथुन	२	५४	७	२४	१७	४४	९	६	१६	५३	बुध पूर्व में उदित ७घं. २४मि., प्रदोषव्रत, शक माघ प्रा.,
२५	५३	१३	शु.	२	७	आर्द्रा	३१	३०	वै.	४०	१३	तै.	२	७	९	२२	२	११	मिथुन			७	२३	१७	४५	९	७	१७	५५	
२५	५६	१४	श.	०	२०	पुन.	३१	४९	वि.	३६	२०	व.	०	२०	१०	२३	३	१२	कर्क	१६	३८	७	२३	१७	४५	९	८	१८	५७	भ. ०/२० से २६/५७ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E)
अवम		१५	श.	५९	४१	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पूर्णिमा तिथिक्षय,

(A) (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-काश्मीर), (B) दिन मध्याह्न तक, वक्री बुध धनु में १६/००, मकर संक्रान्ति, (C) वक्री बुध पू.षा. में ५२/५८, अवतार दिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी, (D) एकादशी व्रत (स.), (E) पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १७ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २ १२ ३५	० २ ३१ २	६ १३ १० १५	८ २६ ३७ ६	४ २९ १ ५२	७ २७ ३० १५	७ १८ ४२ ४२	५ ० ४० ५१	११ ० ४० ५१
६१ ६	८४३ ३५	३१ ४३	७१ २६	१ ४८	७३ ३४	५ ४५	३ ११	३ ११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. २	कृत्ति. १	स्वा. २	पू.षा. ४	उ.फा. १	ज्ये. ४	ज्ये. १	उ.फा. २	पू.भा. ४

कुण्डली सूर्योदय (१७ जन.)

११ · ९ बु. · १२ के. · सू. १० · ८ शु. श. · चं. १ · मं. ७ · २ · ४ · ६ रा. · ३ · गु. ५

लोकभविष्य:- इस पक्ष में मकरस्थ सूर्य पर शनि-मंगल की विशेष दृष्टि है । जनता नानाविध रोगों से पीड़ित रहे । प्रजा शासनतन्त्र के विरुद्ध आवाज उठाए । मूल-धनुराशि का शुक्र एवं बुध "महर्घं च विजानीयात् सर्वं सस्यं विनश्यति "- प्रमाणानुसार महाराष्ट्र, उत्तराखण्ड, बिहार एवं छत्तीसगढ़ आदि में कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनाए । इस पक्ष में बुध का उदय भी कहीं समुद्री तूफान, अग्निकाण्ड से हानि किंवा कहीं सीमाप्रान्तों पर अशान्ति आदि का कारण बने ;-

"नोत्पात- परित्यक्तश्चन्द्रजो व्रजत्युदयम् ।
जल-दहन-पवन-भयकृत् धान्यार्घक्षय-विवृद्धयैव ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में ११ से १२ जन. तक मूंग, उड़द, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, सरसों आदि में तेजी बने । १३ जन. के लगभग बाजार का रुख अचानक बदल सकता है । रूई, कपास, सूत, चान्दी मन्दे हों । १४ जन. के लगभग घी, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रूई तेज रहें । अनाजों में मन्दे का रुख रहे । १५/१६ जन. को सोना-चान्दी में झटके की मन्दी हो। १८ से २४ जन. तक अनाज, सोना, चान्दी तेज रहें । लेकिन २० जनवरी को बाजार अनिश्चित रहें । **आकाशलक्षण:-** जनवरी ११, १३, १४, १५, १८, २० एवं २४ को भारत के अनेक प्रान्तों में विशेषतः उत्तरी भारत में शीत लहर जारी रहे । अनेकत्र खण्डवृष्टि एवं काश्मीर, हि.प्र. में भारी हिमपात हो ।

कुण्डली सूर्योदय (२३ जन.)

११ · शु. ९ बु. · १२ के. · सू. १० · ८ श. · १ · मं. ७ · २ · ४ · ६ रा. · ३ चं. · गु. ५

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २३ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ ८ १८ ५८	२ २५ १७ १०	६ १६ १८ ४७	८ २१ २५ ५५	४ २८ ४८ १४	८ ४ ५२ ४	७ १६ १६ २४	५ ० २१ ४७	११ ० २१ ४७
६१ १	७८६ ५६	३१ ०	२० ४५	२ ५५	७३ ४५	५ २४	३ ११	३ ११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ४	पुन. २	स्वा. ३	पू.षा. ३	उ.फा. १	मूल २	ज्ये. १	उ.फा. २	पू.भा. ४

श्री वि. सं. २०७२, शाक १६३७, माघ कृष्ण पक्ष २२

(२४ जनवरी से ८ फरवरी तक, सन् २०१६ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।

प्रातःकाल शु.-बु. पूर्वक्षितिज पर उदय होते दीखेंगे । इस समय श. पूर्वकपाल में, मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. माघ	अं. जनवरी	श. माघ	मु. र.उ.स्रा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२६	०	१	र.	६०	०	पुष्य	३३	२२	प्री.	३३	२८	बा.	३०	४	११	२४	४	१३	कर्क			७	२२	१७	४६	९	९	१९	५८	सूर्य श्रवण में ३४/४३,
२६	३	१	चं.	०	२७	आश्ले.	३६	१९	आ.	३१	४३	कौ.	०	२७	१२	२५	५	१४	सिंह	३६	१९	७	२२	१७	४७	९	१०	२०	५८	बुध मार्गी ४६/५२,
२६	६	२	मं.	२	४१	मघा	४०	४३	सौ.	३१	७	ग.	२	४१	१३	२६	६	१५	सिंह			७	२२	१७	४८	९	११	२१	५७	भ. ३४/३३ बाद, भारत गणतन्त्र दिवस,
२६	१०	३	बु.	६	२५	पू.फा.	४६	३०	शो.	३१	३७	वि.	६	२५	१४	२७	७	१६	सिंह			७	२१	१७	४९	९	१२	२२	५६	भ. ६/२५ तक, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (A)
२६	१३	४	गु.	११	३१	उ.फा.	५३	२५	अ.	३३	४	बा.	११	३१	१५	२८	८	१७	कन्या	३	९	७	२१	१७	५०	९	१३	२३	५४	
२६	१७	५	शु.	१७	४०	हस्त	६०	०	सु.	३५	११	तै.	१७	४०	१६	२९	९	१८	कन्या			७	२०	१७	५१	९	१४	२४	५१	शुक्र पू.षा. में ४८/१५, राहु उ.फा. १ सिंह, केतु (B)
२६	२०	६	श.	२४	२३	हस्त	१	३	धृ.	३७	३६	व.	२४	२३	१७	३०	१०	१९	तुला	३४	५९	७	२०	१७	५२	९	१५	२५	४८	भ. २४/२३ से ५७/५७ तक, मंगल विशा. में ६/१८,
२६	२४	७	र.	३१	१	चित्रा	८	५०	शू.	३९	५३	ब.	३१	१	१८	३१	११	२०	तुला			७	१९	१७	५३	९	१६	२६	४४	शनि ज्येष्ठा २ में २१/४३,
२६	२८	८	चं.	३६	५७	स्वाती	१६	८	गं.	४१	३५	बा.	३	५८	१९	फ. १	१२	२१	तुला			७	१८	१७	५४	९	१७	२७	३९	फरवरी प्रारम्भ,
२६	३१	९	मं.	४१	३६	विशा.	२२	२३	वृ.	४२	१८	तै.	९	१६	२०	२	१३	२२	वृश्चिक	५	५८	७	१८	१७	५४	९	१८	२८	३३	
२६	३५	१०	बु.	४४	३२	अनु.	२७	७	ध्रु.	४१	४४	व.	१३	४	२१	३	१४	२३	वृश्चिक			७	१७	१७	५५	९	१९	२९	२७	भ. १३/०४ से ४४/३२ तक,
२६	३९	११	गु.	४५	३४	ज्येष्ठा	३०	४	व्या.	३९	४२	ब.	१५	३	२२	४	१५	२४	धनु	३०	४	७	१७	१७	५६	९	२०	३०	२०	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
२६	४३	१२	शु.	४४	४०	मूल	३१	७	ह.	३६	११	कौ.	१५	७	२३	५	१६	२५	धनु			७	१६	१७	५७	९	२१	३१	१२	बुध उ.षा. में ३२/३५,
२६	४७	१३	श.	४१	५८	पू.षा.	३०	२३	व.	३१	१५	ग.	१३	१९	२४	६	१७	२६	मकर	४४	५६	७	१५	१७	५८	९	२२	३२	३	भ. ४१/५८ बाद,, सूर्य धनि. में ४२/५५, (C)
२६	५१	१४	र.	३७	४४	उ.षा.	२८	६	सि.	२५	३	वि.	९	५१	२५	७	१८	२७	मकर			७	१४	१७	५९	९	२३	३२	५३	भ. ६/५१ तक,
२६	५५	३०	चं.	३२	१७	श्रव.	२४	३३	व्य.	१७	५०	च.	५	१	२६	८	१९	२८	कुम्भ	५२	२४	७	१४	१८	०	९	२४	३३	४२	पंचक प्रारम्भ ५२/२४, बुध मकर में ४६/४०, (D)

(A) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (B) पू.भा. ३ कुम्भ में ४६/२०, (C) शनिप्रदोष व्रत, (D) सोमवती अमावस, मौनी अमावस, महोदय योग (सूर्योदय से १४ घं. २२ मि. तक),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	६	८	४	८	७	४	१०
१७	१५	२०	२२	२८	१५	२०	२६	२६
२७	५३	५३	५७	१५	५६	२	५३	५३
४०	१८	०	३३	३०	४१	४४	१०	१०
६०	७१६	२६	४०	४	७३	४	३	३
५४	५६	४५	५१	३०	५८	४६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१ फर.)

११ के. | शु. ९ बु. | १२ | सू. १० | ८ श. | १ | मं. ७ चं. | २ | ४ | ६ | ३ | गु. ५ रा.

लोकभविष्यः-इस पक्ष मे पांच रविवार एवं पांच चन्द्रवार होने से शासकों में परस्पर वैमत्य, कहीं सत्तापरिवर्तन, कुछ स्थानों पर दुर्भिक्ष की स्थिति भी बने । सूर्य-बुध पर शनि-मंगल की दृष्टि एवं सिंहराशि में राहु-गुरु का वक्रत्व जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं की कमी से परेशानी करे एवं कहीं युद्धमय स्थिति से व्यापारक्षेत्र प्रभावित हो । माघकृष्ण पंचमी, षष्टी एवं सप्तमी को क्रमशः शुक्र-शनि-रविवार होने से कहीं (विशेषतः सीमावर्ती देशों में) अशान्ति रहे ;-

"षष्ठी च पंचमी चैव कृष्णा माघस्य सप्तमी ।
शुक्रार्कि-रविसंयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः-२६ जनवरी को रुई, चान्दी में घटबढ़ी के बाद तेजी हो । गेहूं, चना, जौ आदि अनाज भी तेज हों । गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन २८ जन. तक मन्दे रहें । २९ जन. से करयाणा, काली मिर्च, दालचीनी, हल्दी, धनिया, रुई तेज हों ।३० जन. से पक्षान्त तक रुई, कपास, सूत, गेहूं, दालवाना आदि अनाज, सोना, चान्दी, अलसी तेज रहेंगे ।

आकाशलक्षण:- जनवरी २६, २७, २९, ३०, ३१ एवं फरवरी ५, ६, ८ को उ.भारत में शीत का प्रभाव रहे । कुछ प्रान्तों में कहीं बादलघाल व खण्डवृष्टि हो ।

कुण्डली सूर्योदय (८ फर.)

११ के. | शु. ९ बु. | १२ | सू. १० चं. | ८ श. | १ | मं. ७ | २ | ४ | ६ | ३ | गु.५ रा.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
८ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	६	८	४	८	७	४	१०
२४	१६	२४	२९	२७	२४	२०	२६	२६
३३	२८	१७	२	४०	३४	३४	३०	३०
४३	३८	५२	१२	३७	५०	५२	५४	५४
६०	८५८	२८	६४	५	७४	४	३	३
४८	३२	३५	१४	३६	५	१७	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, माघ शुक्ल पक्ष २३

(९ से २२ फरवरी तक, सन् २०१६ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर-वसन्त ऋतु ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				प्रातःकाल में बु.शु. पूर्व-क्षितिजासन्न, श. पूर्वकपाल में, मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न और गु. इससे पश्चिम की ओर दिखाई देगा ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	फरवरी	माघ	र.उ.मा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	५९	१	मं.	२५	५९	धनि.	२०	६	व.	९	५०	ब.	२५	५९	२७	९	२०	२९	कुम्भ			७	१३	१८	१	९	२५	३४	३०	चन्द्रदर्शन, मु. १५, शुक्र उ.षा. में ३७/०५, यूरेनस (A)
२७	३	२	बु.	१९	९	शत.	१५	७	प. शि.	१ ५२	२० ३५	कौ.	१९	९	२८	१०	२१	ज.१	मीन	५६	११	७	१२	१८	१	९	२६	३५	१६	जमद-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२७	७	३	गु.	१२	९	पू.भा.	९	५५	सि.	४३	५२	ग.	१२	९	२९	११	२२	२	मीन			७	११	१८	२	९	२७	३६	१	भ. ३८/४२ बाद, गौरी तृतीया (गोंतरी), वरद-तिल-(B)
२७	११	४	शु.	५	१६	उ.भा.	४	५०	सा.	३५	२३	वि.	५	१६	३०	१२	२३	३	मीन			७	१०	१८	३	९	२८	३६	४५	भ. ५/१६ तक, शुक्र मकर में १६/०७, श्री(लक्ष्मी)(C)
अवम		५	शु.	५८	४३	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
२७	१६	६	श.	५२	४७	रेव. अश्वि.	० ५५	५ ५७	शु.	२७	१८	कौ.	२५	४५	फा.१	१३	२४	४	मेष	०	५	७	१०	१८	४	९	२९	३७	२७	पंचक समाप्त ०/०५, सं. सूर्य कुम्भ में १८/०७, (D)
२७	२०	७	र.	४७	३६	भर.	५२	३३	शु.	१९	४६	ग.	२०	१२	२	१४	२५	५	मेष			७	९	१८	५	१०	०	३८	७	भ.४७/३६ बाद, रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), (E)
२७	२४	८	चं.	४३	१६	कृत्ति.	५०	१	ब्र.	१२	५३	वि.	१५	२६	३	१५	२६	६	वृष	६	५२	७	८	१८	६	१०	१	३८	४६	भ. १५/२६ तक, भीष्माष्टमी,
२७	२८	९	मं.	३९	५३	रोहि.	४८	२६	ऐं.	६	४४	बा.	११	३५	४	१६	२७	७	वृष			७	७	१८	६	१०	२	३९	२३	गुप्त नवरात्र समाप्त,
२७	३३	१०	बु.	३७	३०	मृग.	४७	५०	वै. वि.	१ ५६	२१ ४४	तै.	८	४२	५	१७	२८	८	मिथुन	१८	१	७	६	१८	७	१०	३	३९	५८	बुध श्रवण में २/३७, वक्री गुरु पू.फा. ४ में ४४/४७,
२७	३७	११	गु.	३६	१०	आर्द्रा	४८	१५	प्री.	५२	५९	व.	६	५०	६	१८	२९	९	मिथुन			७	५	१८	८	१०	४	४०	३१	भ. ६/५० से ३६/१० तक, जया एकादशी व्रत(स.),
२७	४२	१२	शु.	३५	५५	पुन.	४९	४५	आ.	५०	६	ब.	६	२	७	१९	३०	१०	कर्क	३४	१७	७	४	१८	९	१०	५	४१	३	सूर्य सायन मीन में १०/००, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (F)
२७	४६	१३	श.	३६	४८	पुष्य	५२	२०	सौ.	४८	५	कौ.	६	२१	८	२०	फा.१	११	कर्क			७	३	१८	१०	१०	६	४१	३३	मंगल वृश्चिक में २४/००, शुक्र श्रवण में २४/५७,(G)
२७	५०	१४	र.	३८	४९	आश्ले	५६	३	शो.	४६	५८	ग.	७	४८	९	२१	२	१२	सिंह	५६	३	७	२	१८	१०	१०	७	४२	१	भ. ३८/४६ बाद,
२७	५५	१५	चं.	४२	१	मघा	६०	०	अ.	४६	४४	वि.	१०	२४	१०	२२	३	१३	सिंह			७	१	१८	११	१०	८	४२	२७	भ. १०/२४ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीगुरु रविदास (H)

(A) रेव. ३ में १६/३५, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (B) कुन्द चतुर्थी, (C) पंचमी, वसन्त पंचमी, श्रीलक्ष्मी/सरस्वती पूजन, (D) मु. ३०, पुण्यकाल २/०७ बाद, (E) आरोग्य सप्तमी, (F) सूर्य शत. में ५४/३२, भीष्म द्वादशी, (G) शनिप्रदोष व्रत, शक फाल्गुन प्रारम्भ, (H) जयन्ती, माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १५ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	६	९	४	९	७	४	१०
१	२७	२७	७	२६	३	२१	२९	२९
३८	२६	३३	१४	५८	१३	३	८	८
४७	३९	५५	५६	३५	३५	६	३९	३९
६०	८३४	२७	७७	६	७४	३	३	३
३७	४२	१२	२४	३०	९	४३	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१५ फर.)

१२ | शु.१० बु. | चं.१ | सू. ११ के. | ९ | २ | श. ८ | ३ | गु. ५ रा. | मं.७ | ४ | ६

लोकभविष्य:- इस पक्ष में शुक्र मकर राशि में बुध के साथ मेल करेगा । इन पर मंगलयुत शनि की विशेष दृष्टि भी है । शनि-मंगल (शत्रुप्रवृत्ति-ग्रह) दोनों एकराशि में आकर स्थित हैं ;- अतः " युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ "- प्रमाणानुसार कहीं शासकीय उलझनें विकट रूप धारण करें । कहीं राजनैतिकसंकट से हानि व अशान्ति हो । कहीं दुर्भिक्ष व जनाक्रोश से हानि हो । महंगाई उत्तरोत्तर परेशानी का कारण बने। वृश्चिकस्थ शनि-मंगल अघटित घटनाओं को उपस्थित करेंगे -" शनैश्चर-धरापुत्रावेकस्थौ न शुभावहौ । महर्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत् ॥" कहीं युद्ध के समाचार अशान्ति का कारण बनें ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:-९ से ११ फरवरी तक चावल, चान्दी, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, घृत, वस्त्र, गुड़, शक्कर मन्दे रहें । १२/१३ फर. को शेयर, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि अनाज, नमक, सरसों, मूंगफली, राई तेज रहे । १४ से १८ फर. तक गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं अनाज मन्दे हों । १९ से २० फर. तक अनाज तेज, तिलहन, गुड़, सोना, चान्दी में तेजी रहे । आकाशलक्षण:- फरवरी १२, १३ एवं १७ से २१ तक लंका के पूर्वी छोर, शिलांग, आसाम व अन्य कुछ प्रान्तों में बादलधाल व बूंदाबांदी के योग हैं । उत्तरी भारत में हवा का जोर रहे एवं वसन्त ऋतु के आगमन से मौसम सुहावना रहे ।

कुण्डली सूर्योदय (२२ फर.)

१२ | शु.१० बु. | १ | सू. ११ के. | ९ | २ | श. ८ मं. | चं. | ३ | गु. ५ रा. | ७ | ४ | ६

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २२ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	७	९	४	९	७	४	१०
८	०	०	१६	२६	११	२१	२८	२८
४२	१	३९	४४	१०	५२	२७	४६	४६
२८	२३	५१	५६	५१	४१	२०	२४	२४
६०	७४१	२५	८६	७	७४	३	३	३
२५	२८	४०	२०	१२	११	६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४

(२३ फरवरी से ६ मार्च तक, सन् २०१६ ई.)

उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

पक्षान्त में बु. पूर्व में अस्त हो जाएगा । प्रातः शु. पूर्वक्षितिज पर, श. याम्योत्तरवृत्त में और मं. इससे पश्चिम की ओर होगा । इस समय गु. पश्चितक्षितिज में डूबने को होगा । ६ मार्च को भारत के अधिकतर भाग में खण्डग्रास सूर्यग्रहण दिखाई देगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अं. फरवरी	श. फाल्गुन	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२७	५९	१	मं.	४६	१९	मघा	०	५२	सु.	४७	२१	बा.	१४	९	११	२३	४	१४	सिंह			७	०	१८	१२	१०	९	४२	५२	
२८	४	२	बु.	५१	३९	पू.फा.	६	४६	धृ.	४८	४४	तै.	१८	५८	१२	२४	५	१५	कन्या	२३	२४	६	५९	१८	१३	१०	१०	४३	१५	
२८	८	३	गु.	५७	४७	उ.फा.	१३	३४	शू.	५०	४३	व.	२४	४३	१३	२५	६	१६	कन्या			६	५८	१८	१३	१०	११	४३	३७	भ. २४/४३ से ५७/४७ तक,
२८	१३	४	शु.	६०	०	हस्त	२१	१	गं.	५३	६	ब.	३१	७	१४	२६	७	१७	तुला	५४	५३	६	५७	१८	१४	१०	१२	४३	५७	बुध धनि. में २४/५२, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२८	१८	४	श.	४	२६	चित्रा	२८	४८	वृ.	५५	३४	बा.	४	२६	१५	२७	८	१८	तुला			६	५६	१८	१५	१०	१३	४४	१६	
२८	२२	५	र.	११	५	स्वाती	३६	२७	धु.	५७	४७	तै.	११	५	१६	२८	९	१९	तुला			६	५५	१८	१६	१०	१४	४४	३३	मंगल अनु. में २१/०२,
२८	२७	६	चं.	१७	१५	विशा.	४३	२८	व्या.	५९	२३	व.	१७	१५	१७	२९	१०	२०	वृश्चिक	२६	५०	६	५४	१८	१६	१०	१५	४४	४८	भ. १७/१५ से ४६/५१ तक,
२८	३१	७	मं.	२२	२७	अनु.	४९	२१	ह.	६०	०	ब.	२२	२७	१८	मा.१	११	२१	वृश्चिक			६	५३	१८	१७	१०	१६	४५	२	बुध कुम्भ में ४३/१२, मार्च प्रारम्भ,
२८	३६	८	बु.	२६	१०	ज्येष्ठा	५३	४२	ह. व.	० ५९	१ २२	कौ.	२६	१०	१९	२	१२	२२	धनु	५३	४२	६	५१	१८	१८	१०	१७	४५	१५	शुक्र धनि. में १२/२२,
२८	४१	९	गु.	२८	६	मूल	५६	१२	सि.	५७	१६	ग.	२८	६	२०	३	१३	२३	धनु			६	५०	१८	१९	१०	१८	४५	२६	भ. ५८/४ बाद,
२८	४५	१०	शु.	२८	२	पू.षा.	५६	४५	व्य.	५३	३५	वि.	२८	२	२१	४	१४	२४	धनु			६	४९	१८	१९	१०	१९	४५	३५	भ. २८/०२ तक, सूर्य पू.भा. में ११/०५,
२८	५०	११	श.	२५	५८	उ.षा.	५५	२४	व.	४८	२२	बा.	२५	५८	२२	५	१५	२५	मकर	११	३७	६	४८	१८	२०	१०	२०	४५	४३	बुध शत. में ४६/४७, विजया एकादशी व्रत (स.),
२८	५४	१२	र.	२२	२	श्रव.	५२	१९	प.	४१	४३	तै.	२२	२	२३	६	१६	२६	मकर			६	४७	१८	२१	१०	२१	४५	४९	प्रदोषव्रत,
२८	५९	१३	चं.	१६	२७	धनि.	४७	४६	शि.	३३	५०	व.	१६	२७	२४	७	१७	२७	कुम्भ	२०	१२	६	४६	१८	२१	१०	२२	४५	५४	भ. १६/२७ से ४३/०० तक, पंचक प्रारम्भ २०/१२,(A)
२९	४	१४	मं.	९	३३	शत.	४२	७	सि.	२४	५८	श.	९	३३	२५	८	१८	२८	कुम्भ			६	४५	१८	२२	१०	२३	४५	५७	ग्रहणवेध,
२९	८	३०	बु.	१	३९	पू.भा.	३५	४६	सा.	१५	२५	ना.	१	३९	२६	९	१९	२९	मीन	२२	२२	६	४३	१८	२३	१०	२४	४५	५८	बुध पूर्व में अस्त ६ घं. ४३ मि., खण्डग्रास सूर्यग्रहण (B)

सूर्यग्रहण-६ मार्च (देखें पृ. 20)

(A) शुक्र कुम्भ में ३५/५०, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, (B) (भारत के अधिकतर भाग में दृश्य) (देखें पृ. 20),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	७	१०	४	९	७	४	१०
१७	१८	४	०	२५	२३	२१	२८	२८
४५	८	२१	२१	३	०	५१	१७	१७
१६	३६	३६	५	३८	३२	५६	४७	४७
६०	७४८	२३	९६	७	७४	२	३	३
११	९	१६	०	४४	१४	१७	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ४	स्वा. १	अनु. १	धनि. ३	पू.फा. ४	श्रव. ४	ज्ये. २	उ.फा. १	पू.भा. ३

कुण्डली सूर्योदय (२ मार्च)

१२
शु. १०
१
सू. ११ के. बु.
९
२
श. ८ मं. चं.
३
गु. ५ रा.
७
४
६

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार हैं । अतः पश्चिमी प्रदेशों एवं जम्मू-काश्मीर आदि में कहीं उग्रवादजन्य कार्यों एवं सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेशकृत गतिविधि से शान्ति भंग होगी । कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष एवं कुछ में आकालिक वर्षा से हानि भी संभव है;-

> " यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः ।
> रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत् ।।"

इस पक्ष में अमावस के लगभग पंचग्रहीयोग बनता है, जो कहीं हत्याकाण्ड एवं प्राकृतिक उत्पात से हानि का संकेत देता है । अमावस को सूर्यग्रहण भी रोगभयकारक है । फाल्गुन में कहीं राष्ट्रनेता का निधन एवं सत्तापरिवर्तन होने का संकेत है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में चावल, स्वांक, रुई, कपास, लालमिर्च, लालचन्दन, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, तेज रहें । २८ फरवरी से ४ मार्च तक सोना, चान्दी एवं वायदा बाजार तेज रहेंगे। दालवाना, मोटे अनाज एवं कपास, ऊन तेज रहें । ५ मार्च से ७ मार्च तक रुई, चान्दी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा में मन्दे का झटका आए ।८ मार्च के लगभग सोना, रुई में जोरदार घटाबढ़ी रहे । अनाज, घी मन्दे; सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने । आकाशलक्षण :- फरवरी २६, २८ एवं मार्च १ से ८ तक पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल एवं बर्मा के कुछ भागों में बादलवाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं । उ.भारत में मौसम साफ रहे एवं तापमान बढ़ने लगेगा ।

कुण्डली सूर्योदय (६ मार्च)

१२
१०
चं. बु.
१
सू. ११ शु. के.
९
२
श. ८ मं.
३
गु. ५ रा.
७
४
६

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ६ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	७	१०	४	१०	७	४	१०
२४	२३	६	११	२४	१	२२	२७	२७
४५	३९	५७	५५	९	४०	५	५५	५५
५९	४२	५०	४१	२	१३	५२	३२	३२
६०	८९८	२०	१०३	७	७४	१	३	३
०	५	५९	३७	५०	१४	३५	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. २	पू.भा. २	अनु. २	शत. २	पू.फा. ४	धनि. ३	ज्ये. २	उ.फा. १	पू.भा. ३

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५																तारीखें				चन्द्रराशि – प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१० से २३ मार्च तक, सन् २०१६ ई.) उत्तरायण, दक्षिण–उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र. फाल्गुन	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. र.उ.ल.				सूर्योदय		सूर्यास्त						बु. अस्त है । प्रातः शु पूर्वक्षितिज में कुछ ही समय के लिए दिखाई देगा । मं. श. इस समय याम्योत्तरवृत्त में होंगे । गु. सायंकाल पूर्व में उदित होकर सारी रात दीखेगा ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	बु.	५३	१४	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
२९	१३	२	गु	४४	३९	उ.भा.	२९	६	शु शु	५ ५५	३० २७	बा.	१८	५६		२७	१०	२०	३०	मीन			६	४२	१८	२३	१०	२५	४५	५७	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, ग्रहणवेध, अवतार(A) [होलाष्टक १६ से २३ मार्च]
२९	१८	३	शु.	३६	१६	रेव.	२२	३२	ब्र.	४५	४२	तै.	१०	२७		२८	११	२१	ज.१	मेष	२२	३२	६	४१	१८	२४	१०	२६	४५	५५	पंचक समाप्त २२/३२, ग्रहणवेध, जमद-उस्सानी मु. (B)
२९	२३	४	श.	२८	२८	अश्वि.	१६	२६	ऐं.	३६	२९	व.	२	२२		२९	१२	२२	२	मेष			६	४०	१८	२५	१०	२७	४५	५०	भ. २/२२ से २८/२८ तक, शुक्र शत. में ५६/२३,(C)
२९	२७	५	र.	२१	३३	भर.	११	११	वै.	२८	२	बा.	२१	३३		३०	१३	२३	३	वृष	२५	१	६	३९	१८	२५	१०	२८	४५	४३	बुध पू.भा. में ३२/०२,
२९	३२	६	चं.	१५	४९	कृत्ति.	७	३	वि.	२०	३४	तै.	१५	४९		चै.१	१४	२४	४	वृष			६	३७	१८	२६	१०	२९	४५	३३	सं. सूर्य मीन में ११/४०, मु. ४५, पुण्यकाल (D)
२९	३७	७	मं.	११	२९	रोहि.	४	१६	प्री.	१४	१५	व.	११	२९		२	१५	२५	५	मिथुन	३३	२४	६	३६	१८	२७	११	०	४५	२२	भ. ११/२६ से ४०/०५ तक, वक्री गुरु पू.फा. ३ (E)
२९	४१	८	बु	८	४०	मृग.	२	५८	आ.	९	९	ब.	८	४०		३	१६	२६	६	मिथुन			६	३५	१८	२७	११	१	४५	८	होलाष्टक प्रारम्भ, [होलिकादहन विशेष लेख (देखें पृ.28.5)]
२९	४६	९	गु.	७	२५	आर्द्रा	३	१४	सौ.	५	१८	कौ.	७	२५		४	१७	२७	७	कर्क	४९	२४	६	३४	१८	२८	११	२	४४	५२	सूर्य उ.भा. में ३२/३७,
२९	५१	१०	शु	७	४४	पुन.	५	१	शो.	२	४१	ग.	७	४४		५	१८	२८	८	कर्क			६	३२	१८	२९	११	३	४४	३४	भ. ३८/३७ बाद, बुध मीन में ५५/१२,
२९	५५	११	श.	९	३१	पुष्य	८	१३	अ.	१	९	वि.	९	३१		६	१९	२९	९	कर्क			६	३१	१८	२९	११	४	४४	१३	भ. ६/३१ तक, आमला एकादशी व्रत (स.),
३०	०	१२	र.	१२	३५	आश्ले	१२	४१	सु	०	४२	बा.	१२	३५		७	२०	३०	१०	सिंह	१२	४१	६	३०	१८	३०	११	५	४३	५१	बुध उ.भा. में ३६/०, सूर्य सायन मेष में ८/४५ (F)
३०	५	१३	चं.	१६	४६	मघा	१८	१३	धृ.	१	७	तै.	१६	४६		८	२१	चै.१	११	सिंह			६	२९	१८	३१	११	६	४३	२६	शक चैत्र प्रारम्भ,
३०	९	१४	मं.	२१	५२	पू.फा.	२४	३७	शू.	२	१७	व.	२१	५२		९	२२	२	१२	कन्या	४१	२०	६	२८	१८	३१	११	७	४२	५९	भ. २१/५२ से ५४/४६ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
३०	१४	१५	बु.	२७	४०	उ.फा.	३१	४१	गं.	४	४	ब.	२७	४०		१०	२३	३	१३	कन्या			६	२६	१८	३२	११	८	४२	३०	शुक्र पू.भा. में ४६/५५, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, (G)

(A) श्रीरामकृष्ण परमहंस, (B) प्रारम्भ, (C) ग्रहणवेध, (D) २७/४० तक, (E) में १४/५७, (F) उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुवदिन, प्रदोषव्रत, गोविन्द द्वादशी, (G) होलिका दहन (देखें पृ.28.5), होलाष्टक समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १६ मार्च,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	७	१०	४	१०	७	४	१०
१	५	६	२४	२३	१०	२२	२७	२७
४५	२३	१६	२५	१४	१६	१४	३३	३३
६	२५	५८	१८	३५	४८	५४	१७	१७
५९	७९९	१८	१११	७	७४	०	३	३
४४	१२	२०	४७	३६	१२	५४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१६ मार्च)

१ — बु. ११ शु. के. — २ — सू. १२ — १० — चं. ३ — ९ — ४ — ६ — मं. श.८ — गु. ५ रा. — ७

लोकभविष्य:- इस पक्ष में बुध-सूर्य मीन राशि में है । गुरु-राहु का शुक्र-केतु के साथ समसप्तकयोग है । शनि-मंगल एकराशिस्थ है । कुछ प्रान्तों में समुद्री तूफान, भूकम्प किंवा अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप तथा यानदुर्घटना में जनधन हानि हो, विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु आदि घटना दुःखद रहे । गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार, छत्तीसगढ़ एवं जम्मू-काश्मीर में उग्रवादजन्य घटना भी अशान्ति का कारण बनेगी । पाकिस्तान, चीन की गतिविधि एवं सीमाप्रान्तों पर कुदृष्टि से सरकार को विशेषरूप से सतर्क रहना होगा ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई, सूत, ऊनी-रेशमी वस्त्र, तेल, सरसों, घी, चावल, गेहूं, गुड़, खाण्ड एवं सोना-चान्दी तेज रहें । १३ मार्च के लगभग सोना, चान्दी, तांबा मन्दे हों । १५ मार्च को बाजार का रुख बदलेगा । १७ से २० मार्च तक बाजारों में उठापटक के साथ तेजी प्रधान रहे ।

आकाशलक्षण:- मार्च १२ से २० तक उ.भारत में आसमान साफ रहे । हवा का जोर रहे । मौसम में कुछ गर्मी अनुभव होने लगे । म.प्र., बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलवाहा व बूंदाबांदी हो ।

कुण्डली सूर्योदय (२३ मार्च)

१ — ११ शु. के. — २ — सू. १२ बु. — १० — ३ — ९ — ४ — चं. ६ — मं. श.८ — गु. ५ रा. — ७

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २३ मार्च,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	७	११	४	१०	७	४	१०
८	३	११	७	२२	१८	२२	२७	२७
४२	१४	१६	५२	२२	५९	१६	११	११
३०	३३	२५	३	१२	७	२	२	२
५९	७२६	१५	११६	७	७४	०	३	३
२६	५०	१७	३३	१२	१०	१२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७२, शाक १९३७, चैत्र कृष्ण पक्ष २६

(२४ मार्च से ७ अप्रैल तक, सन् २०१६ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

५ अप्रै. को बु. पश्चिम में उदित होगा। प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में अत्यल्प समय के लिए दृश्य होगा। इस समय मं.श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होंगे। सायं गु. पूर्व में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. (चैत्र)	तारीखें अं. (मार्च)	तारीखें श. (चैत्र)	तारीखें मु. (ज.उ.आ.)	चन्द्रराशि—प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३०	१९	१	गु.	३३	५७	हस्त	३९	१२	वृ.	६	१४	बा.	०	४८	११	२४	४	१४	कन्या			६	२५	१८	३३	११	९	४१	५८	वसन्तोत्सव, होलामेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.),
३०	२४	२	शु.	४०	२८	चित्रा	४६	५५	धु.	८	३९	तै.	७	१२	१२	२५	५	१५	तुला	१३	५	६	२४	१८	३३	११	१०	४१	२५	शनि वक्री २२/२२,
३०	२८	३	श.	४६	५५	स्वाती	५४	३४	व्या.	११	९	व.	१३	४१	१३	२६	६	१६	तुला			६	२३	१८	३४	११	११	४०	५०	भ. १३/४१ से २६/५५ तक,
३०	३३	४	र.	५३	१	विशा.	६०	०	ह.	१३	३०	ब.	१९	५७	१४	२७	७	१७	वृश्चिक	४५	५	६	२१	१८	३४	११	१२	४०	१३	बुध रेवती में १६/५२, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३०	३८	५	चं.	५८	२२	विशा.	१	४९	व.	१५	२९	कौ.	२५	४१	१५	२८	८	१८	वृश्चिक			६	२०	१८	३५	११	१३	३९	३४	
३०	४२	६	मं.	६०	०	अनु.	८	२३	सि.	१६	५०	ग.	३०	३०	१६	२९	९	१९	वृश्चिक			६	१९	१८	३६	११	१४	३८	५३	
३०	४७	६	बु.	२	३८	ज्येष्ठा	१३	४९	व्य.	१७	१५	व.	२	३८	१७	३०	१०	२०	धनु	१३	४९	६	१८	१८	३६	११	१५	३८	१०	भ. २/३८ से ३४/०४ तक,
३०	५१	७	गु.	५	३०	मूल	१७	४७	व.	१६	३२	ब.	५	३०	१८	३१	११	२१	धनु			६	१६	१८	३७	११	१६	३७	२६	सूर्य रेव. में ०/४०, शुक्र मीन में ५२/५०, मेला (A)
३०	५६	८	शु.	६	३६	पू.षा.	२०	४	प.	१४	२८	कौ.	६	३६	१९	अ.१	१२	२२	मकर	३५	२०	६	१५	१८	३८	११	१७	३६	४०	राहु पू.फा. ४, केतु पू.भा. २ में ४४/०२, प्लूटो पू.षा. (B)
३१	१	९	श.	५	४९	उ.षा.	२०	२९	शि.	१०	५५	ग.	५	४९	२०	२	१३	२३	मकर			६	१४	१८	३८	११	१८	३५	५२	भ. ३४/२६ बाद, बुध अश्वि. मेष में ५३/४५,
३१	५	१०	र.	३	४	श्रव.	१९	२	सि. सा.	५ ५९	५१ १५	वि.	३	४	२१	३	१४	२४	कुम्भ	४७	३६	६	१३	१८	३९	११	१९	३५	२	भ. ३/०४ तक, पंचक प्रारम्भ ४७/३६, शुक्र उ.भा. (C)
अवम		११	र.	५८	३१	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
३१	१०	१२	चं.	५२	१९	घनि.	१५	४८	शु.	५१	२२	कौ.	२५	२४	२२	४	१५	२५	कुम्भ			६	१२	१८	३९	११	२०	३४	११	पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.),
३१	१४	१३	मं.	४४	४५	शत.	११	०	शु.	४२	२१	ग.	१८	३१	२३	५	१६	२६	मीन	५१	३०	६	१०	१८	४०	११	२१	३३	१७	भ. ४४/४५ बाद, बुध पश्चिम में उदित १८घं. ४०मि.,(D)
३१	१९	१४	बु.	३६	८	पू.भा. उ.भा.	४ ५७	५७ ५७	ब्र.	३२	२८	वि.	१०	२६	२४	६	१७	२७	मीन			६	९	१८	४१	११	२२	३२	२२	भ. १०/२६ तक, मेला पिहोवातीर्थ (हरि.),
३१	२४	३०	गु.	२६	५४	रेव.	५०	३३	ऐं.	२२	२	च.	१	३१	२५	७	१८	२८	मेष	५०	३३	६	८	१८	४१	११	२३	३१	२५	पंचक समाप्त ५०/३३, चान्द्र संवत्सर(२०७२ वि.) पूर्ण,

(A) श्री शीतला माता (कुराली) पं., (B) ४ में २७/०२, श्री शीतलाष्टमी, अप्रैल प्रारम्भ, (C) में ३४/४७, नेप्च्यून शत. ४ में २७/५८, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.), (D) भौमप्रदोष व्रत, वारुणी योग (१० घं. ३४ मि. तक),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	७	११	४	११	७	४	१०
१७	२१	१३	२६	२१	०	२२	२६	२६
३६	५५	१५	७	२०	६	१७	४२	४२
४१	१६	५४	२०	४१	३०	१०	२६	२६
५९	७८६	१०	१२१	६	७४	०	३	३
१२	४	३४	१७	१६	६	४२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. १	पू.षा. ३	अनु. ३	रेव. ३	पू.फा. ३	पू.भा. ४	ज्ये. २	उ.फा. १	पू.भा. ३

कुण्डली सूर्योदय (१ अप्रैल)

१ | ११ के. | शु. सू. १२ बु. | २ | १० | ३ | ९ चं. | मं. श.८ | ४ | ६ | गु. ५ रा. | ७

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार हैं। पक्षारम्भ में शनि ज्येष्ठा नक्षत्र में वक्री हुआ है। शनि-मंगल वृश्चिक राशि में हैं। बुध पश्चिम में उदित होगा। पश्चिमी देशों के लिए ग्रहस्थिति अनुकूल नहीं- "पश्चिमे दारुणो घोरः संहारस्तत्र जायते।" खाद्य वस्तुओं एवं स्वर्णादि धातुओं में तेजी रहे। शनि-मंगल का सम्बन्ध कहीं भयंकर युद्ध एवं कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा, यानदुर्घटना किंवा उग्रवादजन्य जघन्य प्रहार से जनधनहानि का संकेत देता है ;-"तुलावृश्चिक-चापेषु यदा वक्री भवेच्छनिः। त्रिभागशेषा पृथ्वी मांस-शोणित-कर्दमैः॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में सिक्का, लोहा आदि धातु, गेहूं, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, सीमेण्ट, मर्जाट, कुसुम्भ, लालमिर्च, गेरु आदि तेज हों। गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, तिलहन, मन्दे होकर ३०/३१ मार्च को जोरदार तेजी पकड़ें। तेल, तिलहन एवं दालवाना में तेजी २ अप्रैल तक चले। लेकिन सोना, चान्दी, रुई, कपास में मन्दे का रुख पक्षान्त तक रहे।

आकाशलक्षण :- मार्च २४, २५, २७, ३०, ३१ एवं अप्रैल १, २, ३, ५ को पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल एवं बर्मा के कुछ भागों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। उत्तरी भारत में गर्मी अनुभव होने लगे।

कुण्डली सूर्योदय (७ अप्रैल)

१ बु. | ११ के. | चं. | सू. १२ शु. | २ | १० | ३ | ९ | मं. श.८ | ४ | ६ | गु. ५ रा. | ७

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ७ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	७	०	४	११	७	४	१०
२३	१६	१४	७	२०	७	२२	२६	२६
३१	४६	१०	५१	४४	३१	११	२३	२३
२६	१६	२२	६	४५	१५	२६	२२	२२
५९	६१३	६	१०६	५	७४	१	३	३
१	३५	५३	६	३१	६	१७	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ३	रेव. १	अनु. ४	अश्वि. ३	पू.फा. ३	उ.भा. २	ज्ये. २	पू.फा. ४	पू.भा. २

"चन्द्रमौलि-शंकरचरण बार-बार सिरनाय। संवत् यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय॥"

श्री वि. सं. 2071 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जनवरी, सन् 2015 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष शु.	1	11	गु.	8	41	कृत्ति.	30	8	सा.	23	31	वृष	11	47	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	भ. 8/41 तक, बुध मकर में 11/45.बुध पश्चिम में (A)
	2	12	शु.	8	33	रोहि.	30	53	शु.	22	22	वृष			7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	प्रदोष व्रत.
	3	13	श.	8	46	मृग.	—	—	शु.	21	31	मिथुन	19	24	7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	
	4	14	र.	9	23	मृग.	8	1	ब्र.	20	57	मिथुन			7	25	17	30	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	भ. 9/23 से 21/53 तक, मंगल कुम्भ में 25/59, (B)
	5	15	चं.	10	23	आर्द्रा	9	31	ऐं.	20	43	कर्क	28	55	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	18	5	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण	6	1	मं.	11	49	पुन.	11	26	वै.	20	48	कर्क			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र श्रवण म 26/16.
	7	2	बु.	13	41	पुष्य	13	46	वि.	21	12	कर्क			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	भ. 26/49 बाद, बुध श्रवण में 23/22.
	8	3	गु.	15	57	आश्ले.	16	28	प्री.	21	53	सिंह	16	28	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	भ. 15/57 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत,
	9	4	शु.	18	31	मघा	19	28	आ.	22	46	सिंह			7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	
	10	5	श.	21	15	पू.फा.	22	36	सौ.	23	45	कन्या	29	23	7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	
	11	6	र.	23	55	उ.फा.	25	41	शो.	24	40	कन्या			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	48	6	49	17	22	11	भ. 23/55 बाद, सूर्य उ.षा. में 12/56.
	12	7	चं.	26	17	हस्त	28	26	अ.	25	21	कन्या			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	भ. 13/06 तक, वक्री गुरु आश्ले. 3 में 17/55,
	13	8	मं.	28	6	चित्रा	30	39	सु.	25	38	तुला	17	38	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	13	मंगल शत. में 14/23, लोहड़ी (पं., हरि., ज.का.),
	14	9	बु.	29	9	स्वाती	—	—	धृ.	25	23	तुला			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 19/27, मु. 15, पुण्यकाल 13/03 (C)
	15	10	गु.	29	21	स्वाती	8	9	शू.	24	28	वृश्चिक	26	43	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	भ. 17/15 से 29/21 तक, पोंगल (द.भा.),
	16	11	शु.	28	40	विशा.	8	48	गं.	22	52	वृश्चिक			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	17	12	श.	27	7	अनु	8	36	वृ.	20	35	वृश्चिक			7	24	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	शुक्र शनि में 18/09, राहु हस्त 3, केतु रेवती 1 में 15/10,
	18	13	र.	24	51	ज्ये./	7	34	ध्रु.	17	41	धनु	7	34	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	भ. 24/51 बाद, प्रदोषव्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
						मूल	29	51																								
	19	14	चं.	21	59	पू.षा.	27	36	व्या.	14	16	धनु			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	भ. 11/25 तक,
	20	30	मं.	18	44	उ.षा.	24	59	ह./	10	29	मकर	8	58	7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	20	सूर्य सायन कुम्भ में 15/12, मौनी अमा, भौमवती अमा,
									व.	30	27																					
माघ शुक्ल	21	1	बु.	15	15	श्रव.	22	13	सि.	26	19	मकर			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	55	6	49	17	30	21	माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, बुध वक्री 21/23, चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	22	2	गु.	11	44	धनि.	19	26	व्य.	22	15	कुम्भ	8	50	7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	22	पंचक प्रारम्भ 8/50, शुक्र कुम्भ में 26/18, गौरी तृतीया (D)
	23	3/	शु.	8	21	शत.	16	55	व.	18	21	कुम्भ			7	23	17	46	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	भ. 18/49 से 29/16 तक, तिल-वरद-कुन्द चतुर्थी.
		4		29	16																											चतुर्थी तिथिक्षय,
	24	5	श.	26	36	पू.भा.	14	43	प.	14	45	मीन	9	14	7	22	17	47	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रवण में 15/10, बुध पश्चिम में अस्त 17/47. (E)
	25	6	र.	24	27	उ.भा.	12	59	शि.	11	31	मीन			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	
	26	7	चं.	22	52	रेव.	11	47	सि./	8	44	मेष	11	47	7	22	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	भ. 22/52 बाद, पंचक समाप्त 11/47, प्लूटो पू.षा. 3 (F)
									सा.	30	25																					
	27	8	मं.	21	53	अश्वि.	11	10	शु.	28	34	मेष			7	21	17	49	7	16	17	52	7	19	18	0	6	47	17	34	27	भ. 10/23 तक, भीष्माष्टमी.
	28	9	बु.	21	29	भर.	11	6	शु.	27	10	वृष	17	12	7	21	17	50	7	16	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	शुक्र शत. में 10/40.
	29	10	गु.	21	37	कृत्ति.	11	38	ब्र.	26	10	वृष			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	36	29	
	30	11	शु.	22	14	रोहि.	12	37	ऐं.	25	32	मिथुन	25	17	7	19	17	52	7	15	17	54	7	17	18	3	6	46	17	36	30	भ. 9/55 से 22/14 तक, मंगल पू.भा. में 16/00. (G)
	31	12	श.	23	17	मृग.	14	3	वै.	25	14	मिथुन			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	45	17	37	31	भीष्म द्वादशी.

(A) उदित 17/27, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.), इंग्लिश नववर्ष 2015 ई. प्रारम्भ, (B) श्रीसत्यनारायण व्रत, (C) बाद एवं अगले दिन 11/27 तक, मकर संक्रान्ति, (D) (गोंतरी), (E) श्री(लक्ष्मी)पंचमी, वसन्तपंचमी, लक्ष्मी एवं सरस्वती-पूजन, (F) में 17/53, रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, भारत गणतन्त्र दिवस, मर्यादा महोत्सव (जैन),(G) जया एकादशी व्रत (स.),

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ शु.	1	13	र.	24	44	आर्द्रा	15	52	वि.	25	13	मिथुन			7	18	17	54	7	14	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	प्रदोष व्रत,
	2	14	चं.	26	32	पुन.	18	2	प्री.	25	28	कर्क	11	28	7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	45	17	39	2	भ. 26/32 बाद,
	3	15	मं.	28	39	पुष्य	20	31	आ.	25	58	कर्क			7	17	17	55	7	12	17	57	7	15	18	6	6	44	17	39	3	भ. 15/36 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघी पूर्णिमा, (A)
फाल्गुन कृष्ण	4	1	बु.	31	2	आश्ले.	23	17	सौ.	26	40	सिंह	23	17	7	16	17	56	7	12	17	58	7	15	18	7	6	44	17	40	4	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	5	2	गु.	–	–	मघा	26	16	शो.	27	32	सिंह			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	वक्री बुध उ.षा. में 9/22,
	6	2	शु.	9	38	पू.फा.	29	22	अ.	28	30	सिंह			7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	भ. 22/59 बाद, सूर्य धनि. में 18/22, बुध पूर्व में उदित (B)
	7	3	श.	12	21	उ.फा.	–	–	सु.	29	29	कन्या	12	9	7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 12/21 तक, शुक्र पू.भा. में 28/12, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	8	4	र.	15	1	उ.फा.	8	29	धृ.	30	21	कन्या			7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	वक्री गुरु आश्ले. 2 में 17/25,
	9	5	चं.	17	28	हस्त	11	27	शू.	30	58	तुला	24	48	7	13	18	1	7	8	18	2	7	12	18	10	6	41	17	44	9	
	10	6	मं.	19	29	चित्रा	14	2	गं.	31	11	तुला			7	12	18	2	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	भ. 19/29 बाद, शनि अनु. 3 में 17/37,
	11	7	बु.	20	54	स्वाती	16	5	वृ.	30	54	तुला			7	11	18	2	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	भ. 8/12 तक, बुध मार्गी 20/26,
	12	8	गु.	21	33	विशा.	17	26	ध्रु.	29	59	वृश्चिक	11	10	7	10	18	3	7	6	18	5	7	10	18	12	6	39	17	46	12	मंगल मीन में 13/13,
	13	9	शु.	21	20	अनु.	17	57	व्या.	28	24	वृश्चिक			7	9	18	4	7	5	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	सं. सूर्य कुम्भ में 8/26, मु. 30, पुण्यकाल 14/50 तक,
	14	10	श.	20	16	ज्येष्ठा	17	38	ह.	26	9	धनु	17	38	7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	भ. 8/48 से 20/16 तक,
	15	11	र.	18	22	मूल	16	30	व.	23	15	धनु			7	8	18	6	7	4	18	7	7	7	18	15	6	37	17	47	15	शुक्र मीन में 30/10, विजया एकादशी व्रत (स.),
	16	12	चं.	15	46	पू.षा.	14	40	सि.	19	49	मकर	20	6	7	7	18	7	7	3	18	8	7	7	18	15	6	36	17	48	16	मंगल उ.भा. में 20/47, सोमप्रदोष व्रत,
	17	13	मं.	12	36	उ.षा.	12	15	व्य.	15	57	मकर			7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	भ. 12/36 से 22/50 तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
	18	14/	बु.	9	3	श्रव./	9	27	व.	11	47	कुम्भ	19	58	7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	49	18	पंचक प्रारम्भ 19/58, बुध श्रवण में 28/32, शुक्र उ.भा.(C)
		30		29	17	धनि.	30	27																								अमावस तिथिक्षय,
फाल्गु. शुक्ल	19	1	गु.	25	30	शत.	27	25	प./	7	28	कुम्भ			7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, सूर्य शत. में 22/51,
									शि.	27	8																					
	20	2	शु.	21	51	पू.भा.	24	34	सि.	22	57	मीन	19	15	7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	चन्द्रदर्शन, मु. 30, यूरेनस रेवती 2 में 25/39, (D)
	21	3	श.	18	31	उ.भा.	22	2	सा.	19	1	मीन			7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	भ. 29/06 बाद,
	22	4	र.	15	40	रेव.	20	0	शु.	15	29	मेष	20	0	7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	31	17	52	22	भ. 15/40 तक, पंचक समाप्त 20/00,
	23	5	चं.	13	23	अश्वि.	18	34	शु.	12	26	मेष			7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	30	17	52	23	
	24	6	मं.	11	47	भर.	17	49	ब्र.	9	54	वृष	23	45	6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	
	25	7	बु.	10	54	कृत्ति.	17	47	ऐं./	7	57	वृष			6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	भ. 10/54 से 22/49 तक,
									वै.	30	35																					
	26	8	गु.	10	44	रोहि.	18	26	वि.	29	44	वृष			6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	होलाष्टक प्रारम्भ,
	27	9	शु.	11	16	मृग.	19	44	प्री.	29	23	मिथुन	7	0	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	
	28	10	श.	12	24	आर्द्रा	21	35	आ.	29	26	मिथुन			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 25/13 बाद,

होलाष्टक
26 फरवरी से 5 मार्च

(A) माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, (B) 7/15, (C) में 23/00, सूर्य सायन मीन में 29/20, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (D) अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस.

मास पक्ष	गते	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घ.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गुन शुक्ल	1	11	र.	14	2	पुन.	23	54	सौ.	29	50	कर्क	17	17	6	53	18	17	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	1	भ. 14/02 तक, शुक्र रेवती मे 19/27, नेप्च्यून शत. (A)
	2	12	चं.	16	5	पुष्य	26	33	शो.	30	28	कर्क			6	52	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	2	गोविन्द द्वादशी,
	3	13	मं.	18	26	आश्ले.	29	27	अ.	–	–	सिंह	29	27	6	51	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	बुध धनि. में 30/16, भौमप्रदोष व्रत
	4	14	बु.	20	58	मघा	–	–	अ.	7	17	सिंह			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	भ. 20/58 बाद, सूर्य पू.भा. मे 29/09.
	5	15	गु.	23	35	मघा	8	29	सु.	8	13	सिंह			6	49	18	19	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	भ 10/17 तक, मंगल रेवती मे 30/28 श्रीसत्यनारायण (B)
चैत्र कृष्ण	6	1	शु.	26	12	पू.फा.	11	34	धृ.	9	11	कन्या	18	20	6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	26	6	20	17	58	6	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होला मेला (C)
	7	2	श.	28	43	उ.फा.	14	36	शू.	10	8	कन्या			6	47	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	
	8	3	र.	–	–	हस्त	17	30	गं.	10	58	कन्या			6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	17	59	8	भ. 17/52 बाद, बुध कुम्भ में 30/30, वक्री गुरु आश्ले.(D)
	9	3	चं.	7	1	चित्रा	20	7	वृ.	11	37	तुला	6	51	6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	भ. 7/01 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत.
	10	4	मं.	8	57	स्वाती	22	21	ध्रु.	12	0	तुला			6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	29	6	16	18	0	10	
	11	5	बु.	10	25	विशा.	24	4	व्या.	12	1	वृश्चिक	17	41	6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	15	18	1	11	
	12	6	गु.	11	18	अनु.	25	9	ह.	11	34	वृश्चिक			6	41	18	24	6	39	18	24	6	44	18	30	6	14	18	1	12	भ. 11/18 से 23/24 तक, शुक्र अश्वि. मेष में 18/07, (E)
	13	7	शु.	11	29	ज्येष्ठा	25	33	व.	10	35	धनु	25	33	6	39	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	13	18	2	13	बुध शत. मे 21/11,
	14	8	श.	10	55	मूल	25	12	सि.	9	2	धनु			6	38	18	26	6	36	18	25	6	42	18	31	6	12	18	2	14	सं. सूर्य मीन में 29/18, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन (F)
	15	9	र.	9	36	पू.षा.	24	10	व्य./ व.	6 28	54 12	मकर	29	48	6	37	18	26	6	35	18	25	6	40	18	31	6	11	18	3	15	भ. 20/38 बाद.
	16	10/ 11	चं.	7 29	38 2	उ.षा.	22	29	प.	24	59	मकर			6	36	18	27	[illegible]	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	भ. 7/38 तक, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.), एकादशी तिथिक्षय,
	17	12	मं.	25	55	श्रव.	20	15	शि.	21	21	मकर			6	35	18	28	6	33	18	26	6	38	18	32	6	9	18	4	17	पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.),
	18	13	बु.	22	28	धनि.	17	38	सि.	17	23	कुम्भ	6	59	6	33	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	भ. 22/28 बाद, पचक प्रारम्भ 6/59, सूर्य उ.भा. में (G)
	19	14	गु.	18	48	शत.	14	47	सा.	13	14	कुम्भ			6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	भ. 8/38 तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
	20	30	शु.	15	6	पू.भा.	11	51	शु./ शु.	9 28	0 51	मीन	6	35	6	31	18	30	6	30	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	सूर्य सायन मेष में 28/15, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुव– (H)
चैत्र शुक्ल	21	1	श.	11	32	उ.भा.	9	2	ब्र.	24	54	मीन			6	30	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	चैत्र शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, राहु हस्त 2, (I)
	22	2/ 3	र.	8 29	16 26	रेव./ अश्वि.	6 28	29 23	ऐं.	21	17	मेष	6	29	6	28	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	22	पंचक समाप्त 6/29, बुध पू.भा. में 7/12, श्रीमत्स्यजयन्ती, (J) तृतीया तिथिक्षय,
	23	4	चं.	27	12	भर.	26	51	वै.	18	6	मेष			6	27	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	6	23	भ. 16/19 से 27/12 तक, मंगल अश्वि. मेष में 22/47, (K)
	24	5	मं.	25	39	कृत्ति.	26	1	वि.	15	26	वृष	8	35	6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	24	श्री (लक्ष्मी)पञ्चमी, नागपञ्चमी, हयव्रत,
	25	6	बु.	24	53	रोहि.	25	56	प्री.	13	23	वृष			6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	25	स्कन्दषष्ठी,
	26	7	गु.	24	54	मृग.	26	38	आ.	11	57	मिथुन	14	11	6	23	18	33	6	23	18	32	6	28	18	37	6	0	18	8	26	भ 24/54 बाद,
	27	8	शु.	25	41	आर्द्रा	28	4	सौ.	11	8	मिथुन			6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	8	27	भ. 13/18 तक, बुध पूर्व में अस्त 6/22, बुध मीन में (L)
	28	9	श.	27	9	पुन.	30	9	शो.	10	54	कर्क	23	35	6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	28	श्रीरामनवमी (पुनर्वसुयोग), नवरात्र समाप्त,
	29	10	र.	29	10	पुष्य	–	–	अ.	11	9	कर्क			6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	29	बुध उ.भा. में 21/35,नवरात्रपारणा,
	30	11	चं.	–	–	पुष्य	8	44	सु.	11	46	कर्क			6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	10	30	भ. 18/22 बाद,
	31	11	मं.	7	33	आश्ले.	11	40	धृ.	12	38	सिंह	11	40	6	17	18	37	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	31	भ. 7/33 तक, सूर्य रेव. में 24/23, श्रीविष्णुदमनोत्सव. (M)

(A) 3 मे 25/48, आमला एकादशी व्रत (स.), (B) व्रत, होलिकादहन (प्रदोष मे), जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु , होलाष्टक समाप्त, (C) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (D) 1 में 23/10, (E) मेला श्रीशीतला माता (कुराली) पं., (F) मध्याह्न तक, शनि वक्री 20/33, श्रीशीतलाष्टमी, (G) 13/36, प्रदोष व्रत, वारुणीपर्व (17/38 से सूर्यास्त तक), (H) दिन, चान्द्र संवत्सर 2071 वि. पूर्ण, (I) केतु उ.भा. 4 में 13/05, चान्द्र संवत्सर 2072 वि. प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र–प्राशन,चन्द्रव्रत, (J) गौरीतृतीया (गणगौर), आन्दोलनतृतीया, (K) शुक्र भर. में 19/23, (L) 25/35, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, (M) कामदा एकादशी व्रत (स) दोलोत्सव।

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

अप्रैल, सन् 2015 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र शुक्ल	1	12	बु.	10	9	मघा	14	45	शू.	13	39	सिंह			6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	1	प्रदोषव्रत, अनंग त्रयोदशी (देखें पृ. 13),
	2	13	गु.	12	46	पू.फा.	17	51	गं.	14	40	कन्या	24	37	6	15	18	38	6	14	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	2	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन),
	3	14	शु.	15	18	उ.फा.	20	50	वृ.	15	36	कन्या			6	14	18	38	6	13	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	3	भ. 15/18 से 28/27 तक, शुक्र कृत्तिका में 23/57, (A)
	4	15	श.	17	35	हस्त	23	35	ध्रु.	16	22	कन्या			6	12	18	39	6	12	18	37	6	19	18	41	5	51	18	12	4	चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 20), चैत्रीपूर्णिमा, (B)
वैशाख कृष्ण	5	1	र.	19	34	चित्रा	26	1	व्या.	16	54	तुला	12	51	6	11	18	40	6	11	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	5	वैशाख कृष्णपक्ष प्रारम्भ, बुध रेव. में 20/36, ग्रहणवेध,
	6	2	चं.	21	10	स्वाती	28	4	ह.	17	9	तुला			6	10	18	40	6	10	18	38	6	16	18	42	5	49	18	13	6	शुक्र वृष में 19/44, ग्रहणवेध,
	7	3	मं.	22	20	विशा.	29	42	व.	17	5	वृश्चिक	23	20	6	9	18	41	6	9	18	38	6	15	18	43	5	48	18	13	7	भ. 9/45 से 22/20 तक, ग्रहणवेध,
	8	4	बु.	23	1	अनु.	—	—	सि.	16	39	वृश्चिक			6	8	18	42	6	8	18	39	6	14	18	43	5	47	18	13	8	गुरु मार्गी 22/26, श्री गणेशचतुर्थी व्रत,
	9	5	गु.	23	11	अनु.	6	51	व्य.	15	49	वृश्चिक			6	6	18	42	6	7	18	39	6	13	18	44	5	46	18	14	9	
	10	6	शु.	22	49	ज्येष्ठा	7	29	व.	14	35	धनु	7	29	6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	44	5	45	18	14	10	भ. 22/49 बाद, मंगल अस्त 18/43, मंगल भर. में 23/02,
	11	7	श.	21	54	मूल	7	36	प.	12	54	धनु			6	4	18	43	6	4	18	40	6	11	18	45	5	44	18	15	11	भ. 10/22 तक,
	12	8	र.	20	26	पू.षा.	7	10	शि.	10	48	मकर	12	58	6	3	18	44	6	3	18	41	6	10	18	45	5	43	18	15	12	बुध अश्वि. मेष में 8/40,
	13	9	चं.	18	28	उ.षा./	6	13	सि./	8	16	मकर			6	2	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	42	18	16	13	भ. 29/15 बाद,
						श्रव.	28	46	सा.	29	21																					
	14	10	मं.	16	2	धनि.	26	54	शु.	26	5	कुम्भ	15	53	6	1	18	45	6	1	18	42	6	8	18	46	5	41	18	16	14	भ.16/02 तक, पंचक प्रारम्भ 15/53, सं. सूर्य अश्विनी (C)
	15	11	बु.	13	14	शत.	24	43	शु.	22	32	कुम्भ			6	0	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	40	18	17	15	शुक्र रोहि. में 8/46, वरुथिनी एकादशी व्रत (स.), (D)
	16	12	गु.	10	9	पू.भा.	22	18	ब्र.	18	49	मीन	16	55	5	58	18	47	5	59	18	43	6	6	18	47	5	39	18	17	16	वक्री शनि अनु. 2 में 12/47, प्रदोष व्रत,
	17	13/	शु.	6	54	उ.भा.	19	49	ऐं.	15	0	मीन			5	57	18	47	5	58	18	44	6	5	18	48	5	38	18	18	17	भ. 6/54 से 17/16 तक, प्लूटो वक्री 9/21,
		14		27	37																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	18	30	श.	24	27	रेव.	17	22	वै.	11	12	मेष	17	22	5	56	18	48	5	57	18	44	6	4	18	48	5	37	18	18	18	पचक समाप्त 17/22, बुध भरणी मे 17/29 शनैश्चरी अमा,
वैशाख शुक्ल	19	1	र.	21	32	अश्वि.	15	9	वि./	7	32	मेष			5	55	18	49	5	56	18	45	6	3	18	49	5	36	18	18	19	वैशाख शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
									प्री.	28	8																					
	20	2	चं.	19	2	भर.	13	17	आ.	25	6	वृष	18	54	5	54	18	49	5	55	18	46	6	2	18	49	5	35	18	19	20	चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य सायन वृष में 15/12, ग्रीष्म ऋतु (E)
	21	3	मं.	17	6	कृत्ति.	11	56	सौ.	22	34	वृष			5	53	18	50	5	54	18	46	6	1	18	50	5	34	18	19	21	भ. 28/27 बाद, अक्षय तृतीया,
	22	4	बु.	15	49	रोहि.	11	14	शो.	20	35	मिथुन	23	9	5	52	18	50	5	53	18	47	6	0	18	50	5	33	18	20	22	भ. 15/49 तक, अगस्त्य अस्त,
	23	5	गु.	15	18	मृग.	11	16	अ.	19	13	मिथुन			5	51	18	51	5	52	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	23	बुध पश्चिम में उदित 18/51, यूरेनस रेवती 3 में 14/07,(F)
	24	6	शु.	15	35	आर्द्रा	12	5	सु.	18	28	मिथुन			5	50	18	52	5	51	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	24	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,
	25	7	श.	16	38	पुन.	13	39	धृ.	18	19	कर्क	7	11	5	49	18	52	5	50	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	25	भ. 16/38 से 29/30 तक, बुध कृत्ति. में 13/59, (G)
	26	8	र.	18	21	पुष्य	15	53	शू.	18	41	कर्क			5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	53	5	30	18	22	26	शुक्र मृग. में 22/53,
	27	9	चं.	20	35	आश्ले.	18	37	गं.	19	27	सिंह	18	37	5	47	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	27	सूर्य भरणी में 29/31, बुध वृष में 12/05, श्रीजानकी जयन्ती,
	28	10	मं.	23	6	मघा	21	39	वृ.	20	26	सिंह			5	46	18	54	5	47	18	50	5	55	18	54	5	28	18	23	28	
	29	11	बु.	25	42	पू.फा.	24	46	ध्रु.	21	29	सिंह			5	45	18	55	5	46	18	51	5	54	18	54	5	28	18	23	29	भ. 12/24 से 25/42 तक, मंगल कृत्ति. में 8/07, (H)
	30	12	गु.	28	9	उ.फा.	27	45	व्या.	22	27	कन्या	7	32	5	44	18	56	5	46	18	51	5	54	18	55	5	27	18	24	30	

चन्द्रग्रहण 4 अप्रैल

(A) ग्रहणवेध, श्री सत्यनारायण व्रत, श्रीशिव दमनोत्सव, (B) श्रीहनुमान् जयन्ती (द भा), वैशाखस्नान प्रारम्भ, (C) मेष में 13/46, मु. 30, पुण्यकाल 7/22 बाद, वैशाखी (पं.), (D) श्री वल्लभाचार्य जयन्ती, (E) प्रारम्भ, श्रीपरशुराम जयन्ती, श्रीशिवाजी जयन्ती, (F) श्रीशंकराचार्य जयन्ती, (G) श्रीगंगा जन्म, (H) मोहिनी एकादशी व्रत (स.).

मास पक्ष	दि.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
वैशाख शु.	1	13	शु.	—	—	हस्त	—	—	ह.	23	13	कन्या			5	43	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	1	प्रदोषव्रत,
	2	13	श.	6	17	हस्त	6	27	व.	23	40	तुला	19	38	5	42	18	57	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	शुक्र मिथुन में 20/33, श्रीनृसिंह जयन्ती
	3	14	र.	7	59	चित्रा	8	43	सि.	23	46	तुला			5	41	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	25	18	25	3	भ. 7/59 से 20/36 तक, मंगल वृष में 23/53, (A)
	4	15	चं.	9	12	स्वाती	10	32	व्य.	23	28	वृश्चिक	29	33	5	40	18	58	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	बुध रोहि. में 9/56, श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाखी पूर्णिमा, (B)
ज्येष्ठ कृष्ण	5	1	मं.	9	54	विशा.	11	50	व.	22	46	वृश्चिक			5	40	18	59	5	41	18	54	5	50	18	57	5	23	18	26	5	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	6	2	बु.	10	6	अनु.	12	40	प.	21	43	वृश्चिक			5	39	19	0	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	27	6	भ. 21/59 बाद,
	7	3	गु.	9	52	ज्येष्ठा	13	3	शि.	20	18	धनु	13	3	5	38	19	0	5	40	18	56	5	48	18	58	5	22	18	27	7	भ. 9/52 तक, श्रीगणेश [illegible]
	8	4	शु	9	11	मूल	13	2	सि.	18	35	धनु			5	37	19	1	5	39	18	56	5	48	18	59	5	21	18	28	8	शुक्र आर्द्रा में 20/25
	9	5	श.	8	9	पू.षा.	12	39	सा.	16	34	मकर	18	30	5	36	19	2	5	39	18	57	5	47	19	0	5	21	18	28	9	
	10	6/	र.	6	45	उ.षा.	11	56	शु.	14	17	मकर			5	36	19	2	5	38	18	57	5	46	19	0	5	20	18	29	10	भ. 6/45 से 17/54 तक, गुरु आश्ले 2 में 7/52,
		7		29	3																											सप्तमी तिथिक्षय,
	11	8	चं.	27	4	श्रव.	10	55	शु.	11	45	कुम्भ	22	19	5	35	19	3	5	37	18	58	5	46	19	1	5	19	18	29	11	पचक प्रारम्भ 22/19, सूर्य कृत्ति. में [illegible]/46
	12	9	मं.	24	51	धनि.	9	38	ब्र.	9	0	कुम्भ			5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	1	5	19	18	30	12	
	13	10	बु.	22	25	शत.	8	7	ऐं./	6	4	मीन	24	50	5	33	19	4	5	36	18	59	5	44	19	2	5	18	18	30	13	भ. 11/38 से 22/25 तक
									वै.	26	58																					
	14	11	गु.	19	50	पू.भा./	6	24	वि.	23	45	मीन			5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	2	5	18	18	31	14	अपरा एकादशीव्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.),
						उ.भा.	28	34																								
	15	12	शु.	17	10	रेव.	26	41	प्री.	20	30	मेष	26	41	5	32	19	6	5	35	19	0	5	43	19	3	5	17	18	31	15	पंचक समाप्त 26/41, सं. सूर्य वृष में 10/37, मु. 30, (C)
	16	13	श.	14	31	अश्वि	24	52	आ.	17	16	मेष			5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	16	भ. 14/31 से 25/16 तक,
	17	14	र.	12	0	भर.	23	14	सौ.	14	8	वृष	28	52	5	31	19	7	5	34	19	2	5	42	19	4	5	16	18	32	17	मंगल रोहि. में 26/48, वटसावित्री व्रत (अमापक्ष) (D)
	18	30	चं	9	43	कृत्ति.	21	55	शो.	11	14	वृष			5	30	19	8	5	33	19	2	5	42	19	5	5	16	18	33	18	सोमवती अमा, भावुका अमा,
ज्येष्ठ शुक्ल	19	1	मं.	7	49	रोहि.	21	3	अ.	8	39	वृष			5	30	19	8	5	32	19	3	5	41	19	5	5	15	18	33	19	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, बुध वक्री 7/19,
	20	2	बु.	6	26	मृग.	20	46	सु./	6	29	मिथुन	8	49	5	29	19	9	5	32	19	3	5	41	19	6	5	15	18	34	20	शुक्र पुन. में 28/29, रम्भा तृतीया,
									धृ.	28	49																					
	21	3	गु.	5	40	आर्द्रा	21	8	शू.	27	42	मिथुन			5	29	19	9	5	32	19	4	5	40	19	6	5	15	18	34	21	भ. 17/38 बाद, बुध पश्चिम में अस्त 19/09, सूर्य (E)
	22	4	शु.	5	36	पुन	22	14	गं.	27	11	कर्क	15	53	5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	भ. 5/36 तक, बलिदानदिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी,
	23	5	श.	6	17	पुष्य	24	2	वृ.	27	14	कर्क			5	28	19	11	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	23	राहु हस्त 1, केतु उ.भा. 3 में 11/01, अरण्यषष्ठी (F)
	24	6	र.	7	40	आश्ले	26	27	ध्रु.	27	45	सिंह	26	27	5	27	19	11	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	विन्ध्यवासिनी- पूजा,
	25	7	चं.	9	39	मघा	29	19	व्या.	28	37	सिंह			5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	25	भ. 9/39 से 22/51 तक, सूर्य रोहि. में 19/53,
	26	8	मं.	12	2	पू.फा.	—	—	ह.	--	—	सिंह			5	26	19	13	5	29	19	7	5	39	19	9	5	13	18	37	26	
	27	9	बु.	14	35	पू.फा.	8	24	ह.	5	39	कन्या	15	10	5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	27	
	28	10	गु.	17	1	उ.फा.	11	26	व.	6	41	कन्या			5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	श्रीगंगादशहरा (हस्त नक्षत्र 11/26 बाद),
	29	11	शु.	19	7	हस्त	14	12	सि.	7	31	तुला	27	25	5	25	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	29	भ. 6/04 से 19/07 तक, निर्जलाएकादशी व्रत (स.),
	30	12	श.	20	43	चित्रा	16	30	व्य.	8	2	तुला			5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	शुक्र कर्क में 20/55,
	31	13	र.	21	43	स्वाती	18	14	व.	8	6	तुला			5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	31	प्रदोषव्रत,

(A) श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (B) वैशाखस्नान समाप्त, (C) पुण्यकाल 17/01 तक, प्रदोषव्रत, (D) (देखें पृ 13), (E) सायन मिथुन में 14/15, श्रीमहाराणाप्रताप जयन्ती, (F) (देखें पृ 13 (B)

आषाढ़ अधिक (मल मासदोष) 17 जून से 16 जुलाई तक

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि–प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
ज्ये. शु.	1	14	चं.	22	4	विशा.	19	20	प.	7	41	वृश्चिक	13	7	5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	1	भ. 22/04 बाद,
	2	15	मं.	21	49	अनु.	19	51	शि./	6	46	वृश्चिक			5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	2	भ. 9/57 तक, शुक्र पुष्य में 29/16,(A)
									सि.	29	24																					
प्र. आषाढ़ कृष्ण	3	1	बु.	21	2	ज्येष्ठा	19	49	सा.	27	37	धनु	19	49	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	प्र. आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	4	2	गु.	19	48	मूल	19	22	शु.	25	31	धनु			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	4	वक्री शनि अनु. 1 में 11/38,
	5	3	शु.	18	14	पू.षा.	18	34	शु.	23	9	मकर	24	19	5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	भ. 7/01 से 18/14 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	6	4	श.	16	26	उ.षा.	17	31	ब्र.	20	37	मकर			5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	6	मंगल मृग में 7/16, गुरु आश्लो. 3 में 15/2,
	7	5	र.	14	27	श्रव.	16	19	ऐं.	17	57	कुम्भ	27	41	5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	42	7	पंचक प्रारम्भ 27/41,
	8	6	चं.	12	23	धनि.	15	1	वै.	15	12	कुम्भ			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	भ. 12/23 से 23/20 तक, सूर्य मृग. में 17/50,
	9	7	मं.	10	16	शत.	13	41	वि.	12	25	कुम्भ			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	15	5	11	18	43	9	बुध पूर्व में उदित 5/23,
	10	8	बु.	8	7	पू.भा.	12	19	प्री.	9	38	मीन	6	40	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	
	11	9/	गु.	5	59	उ.भा.	10	58	आ./	6	50	मीन			5	23	19	21	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	11	भ. 16/55 से 27/52 तक, बुध मार्गी 28/02,
		10		27	52				सौ.	28	5																					दशमी तिथिक्षय,
	12	11	शु.	25	50	रेव.	9	39	शो.	25	22	मेष	9	39	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	पंचक समाप्त 9/39, नेप्च्यून वक्री 14/42, योगिनी (B)
	13	12	श.	23	54	अश्वि.	8	25	अ.	22	45	मेष			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	योगिनी एकादशी व्रत (वै.),
	14	13	र.	22	9	भर.	7	19	सु.	20	17	वृष	13	4	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	भ. 22/09 बाद, प्रदोषव्रत,
	15	14	चं.	20	41	कृत्ति.	6	26	धृ.	18	2	वृष			5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	18	5	11	18	45	15	भ. 9/25 तक, सं. सूर्य मिथुन में 17/11, मु 45, (C)
	16	30	मं.	19	35	रोहि.	5	51	शू.	16	5	मिथुन	17	42	5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	भौमवती अमा,
प्र. (अधिक) आषाढ़ शुक्ल	17	1	बु.	18	58	मृग.	5	41	गं.	14	29	मिथुन			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	11	18	46	17	प्र.(अधिक)आषाढ़ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, शुक्र आश्ले. में 13/23, (D)
	18	2	गु.	18	54	आर्द्रा	6	1	वृ.	13	21	कर्क	24	39	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	12	18	46	18	चन्द्रदर्शन, मु. 45,
	19	3	शु.	19	29	पुन.	6	57	ध्रु.	12	42	कर्क			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	19	
	20	4	श.	20	42	पुष्य	8	31	व्या.	12	33	कर्क			5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	भ. 8/05 से 20/42 तक,
	21	5	र.	22	30	आश्ले.	10	40	ह.	12	52	सिंह	10	40	5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	21	सूर्य सायन कर्क में 22/08, दक्षिण अयन एवम् वर्षा (E)
	22	6	चं.	24	46	मघा	13	21	व.	13	36	सिंह			5	24	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	12	18	47	22	सूर्य आर्द्रा में 16/45,
	23	7	मं.	27	16	पू.फा.	16	21	सि.	14	35	कन्या	23	7	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	भ. 27/16 बाद,
	24	8	बु.	—	—	उ.फा.	19	27	व्य.	15	40	कन्या			5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	24	भ. 16/31 तक,
	25	8	गु.	5	46	हस्त	22	23	व.	16	38	कन्या			5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	मंगल आर्द्रा में 21/23,
	26	9	शु.	7	59	चित्रा	24	54	प.	17	19	तुला	11	42	5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	26	गुरु आश्ले. 4 में 17/28,
	27	10	श.	9	42	स्वाती	26	49	शि.	17	34	तुला			5	26	19	25	5	29	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	भ. 22/13 बाद,
	28	11	र.	10	45	विशा.	28	2	सि.	17	16	वृश्चिक	21	48	5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	भ. 10/45 तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),
	29	12	चं.	11	3	अनु.	28	31	सा.	16	22	वृश्चिक			5	26	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	सोमप्रदोष व्रत,
	30	13	मं.	10	37	ज्येष्ठा	28	18	शु.	14	54	धनु	28	18	5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	बुध मृग में 22/24,

(A) श्रीसत्यनारायण व्रत, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष), (B) एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ 13), (C) पुण्यकाल 10/47 बाद, मंगल मिथुन में 26/08, (D) मलमास प्रारम्भ, (E) ऋतु प्रारम्भ,

श्री वि. सं. 2072 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जुलाई, सन् 2015 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
प्र (अ.)	1	14	बु.	9 30	मूल	27 30	शु.	12 54	धनु	—	5 27	19 25	5 31	19 19	5 40	19 20	5 15	18 48	1	भ. 9/30 से 20/40 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
आ शु	2	15	गु.	7 49	पू.षा.	26 15	ब्र.	10 27	धनु	—	5 28	19 25	5 31	19 19	5 41	19 20	5 15	18 48	2	
द्वि.(अधिक) आषाढ़ कृष्ण	3	1/	शु.	5 43	उ.षा.	24 40	ऐं./	7 40	मकर	7 52	5 28	19 25	5 31	19 19	5 41	19 20	5 16	18 48	3	द्वि.(अधिक)आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
		2		27 18			वै.	28 38												द्वितीया तिथिक्षय,
	4	3	श.	24 44	श्रव.	22 55	वि.	25 29	मकर	—	5 28	19 25	5 32	19 19	5 41	19 20	5 16	18 48	4	भ. 14/00 से 24/44 तक,
	5	4	र.	22 7	धनि.	21 7	प्री.	22 18	कुम्भ	10 1	5 29	19 25	5 32	19 19	5 42	19 20	5 16	18 48	5	पंचक प्रारम्भ 10/01, बुध मिथुन में 12/13, शुक्र (A)
	6	5	चं.	19 34	शत.	19 22	आ.	19 11	कुम्भ	—	5 29	19 25	5 33	19 19	5 42	19 20	5 17	18 48	6	सूर्य पुन. में 16/24,
	7	6	मं.	17 9	पू.भा.	17 45	सौ.	16 9	मीन	12 8	5 30	19 24	5 33	19 18	5 43	19 20	5 17	18 48	7	भ. 17/09 से 28/03 तक,
	8	7	बु.	14 56	उ.भा.	16 19	शो.	13 17	मीन	—	5 30	19 24	5 34	19 18	5 43	19 20	5 18	18 48	8	
	9	8	गु.	12 55	रेव.	15 7	अ.	10 36	मेष	15 7	5 31	19 24	5 34	19 18	5 43	19 20	5 18	18 48	9	पंचक समाप्त 15/07, बुध आर्द्रा में 10/12,
	10	9	शु.	11 9	अश्वि.	14 9	सु.	8 6	मेष	—	5 31	19 24	5 35	19 18	5 44	19 20	5 18	18 48	10	भ. 22/23 बाद,
	11	10	श.	9 38	भर.	13 26	धृ./	5 49	वृष	19 18	5 32	19 24	5 35	19 18	5 44	19 20	5 19	18 48	11	भ 9/38 तक,
							शू.	27 44												
	12	11	र.	8 23	कृत्ति.	13 0	गं.	25 54	वृष	—	5 32	19 23	5 35	19 18	5 45	19 19	5 19	18 47	12	पुरुषोत्तमा एकादशीव्रत (स.),
	13	12	चं.	7 26	रोहि.	12 52	वृ.	24 20	मिथुन	24 56	5 33	19 23	5 36	19 17	5 45	19 19	5 20	18 47	13	बुध पूर्व में अस्त 5/33, वक्री प्लूटो पू.षा. 2 में 26/51, (B)
	14	13	मं.	6 50	मृग.	13 5	ध्रु.	23 5	मिथुन	—	5 33	19 23	5 36	19 17	5 46	19 19	5 20	18 47	14	भ 6/50 से 18/45 तक, गुरु मघा 1 सिंह में 6/26,
	15	14	बु.	6 39	आर्द्रा	13 43	व्या.	22 10	मिथुन	—	5 34	19 23	5 37	19 17	5 46	19 19	5 21	18 47	15	मंगल पुन. में 20/55,
	16	30	गु.	6 54	पुन.	14 49	ह.	21 39	कर्क	8 29	5 34	19 22	5 37	19 16	5 47	19 18	5 21	18 47	16	सं. सूर्य कर्क में 28/02, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन (C)
द्वि. (शुद्ध) आषाढ़ शुक्ल	17	1	शु.	7 40	पुष्य	16 24	व.	21 32	कर्क		5 35	19 22	5 38	19 16	5 47	19 18	5 21	18 46	17	द्वि.(शुद्ध)आषाढ़ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, (D)
	18	2	श.	8 58	आश्ले.	18 31	सि.	21 49	सिंह	18 31	5 35	19 21	5 39	19 16	5 48	19 18	5 22	18 46	18	
	19	3	र.	10 46	मघा	21 6	व्य.	22 29	सिंह		5 36	19 21	5 39	19 15	5 48	19 17	5 22	18 46	19	भ. 23/53 बाद,
	20	4	चं.	13 0	पू.फा.	24 2	व.	23 26	सिंह		5 37	19 21	5 40	19 15	5 49	19 17	5 23	18 45	20	भ. 13/00 तक, सूर्य पुष्य में 15/51, बुध कर्क में (E)
	21	5	मं.	16 31	उ.फा.	27 10	प.	24 32	कन्या	6 49	5 37	19 20	5 40	19 14	5 49	19 17	5 23	18 45	21	कुमारषष्ठी (देखें पृ. **13**),
	22	6	बु.	18 6	हस्त	— —	शि.	25 37	कन्या		5 38	19 20	5 41	19 14	5 50	19 16	5 24	18 45	22	बुध पुष्य में 12/30,
	23	7	गु.	20 30	हस्त	6 16	सि.	28 31	तुला	19 44	5 38	19 19	5 41	19 14	5 50	19 16	5 24	18 44	23	भ. 20/30 बाद, सूर्य सायन सिंह में 9/01, विवस्वत् (F)
	24	8	शु.	22 29	चित्रा	9 6	सा.	27 3	तुला		5 39	19 18	5 42	19 13	5 51	19 15	5 25	18 44	24	भ. 9/30 तक,
	25	9	श.	23 50	स्वाती	11 24	शु.	27 4	तुला		5 40	19 18	5 42	19 13	5 51	19 15	5 25	18 43	25	शुक्र वक्री 14/59, राहु उ.फा. 4, केतु उ.भा. 2 में (G)
	26	10	र.	24 25	विशा.	13 1	शु.	26 29	वृश्चिक	6 41	5 40	19 17	5 43	19 12	5 52	19 14	5 26	18 43	26	यूरेनस वक्री 16/10,
	27	11	चं.	24 10	अनु.	13 50	ब्र.	25 15	वृश्चिक		5 41	19 17	5 43	19 11	5 52	19 14	5 26	18 42	27	भ. 12/17 से 24/10 तक, देवशयनी एकादशीव्रत (H)
	28	12	मं.	23 8	ज्येष्ठा	13 51	ऐं.	23 22	धनु	13 51	5 41	19 16	5 44	19 11	5 53	19 13	5 27	18 42	28	बुध आश्ले. में 21/38,
	29	13	बु.	21 22	मूल	13 8	वै.	20 54	धनु		5 42	19 15	5 44	19 10	5 53	19 13	5 27	18 41	29	प्रदोषव्रत,
	30	14	गु.	19 1	पू.षा.	11 45	वि.	17 56	मकर	17 20	5 43	19 15	5 45	19 10	5 54	19 12	5 28	18 41	30	भ. 19/01 से 29/37 तक, मंगल कर्क में 26/19, (I)
	31	15	शु.	16 13	उ.षा.	9 53	प्री.	14 37	मकर		5 43	19 14	5 46	19 9	5 54	19 12	5 28	18 40	31	गुरुपूर्णिमा(व्यासपूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य (J)

(A) मघा सिंह में 9/48, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (B) सोमप्रदोष व्रत, (C) मध्याह्न तक, बुध पुन. में 5/39, मलमास समाप्त, (D) रथयात्रा (श्रीजगदीश रथोत्सव)पुरी (7/40 से 16/24 तक, द्वितीया एवम् पुष्यनक्षत्र योग), गुप्तनवरात्र प्रारम्भ, (E) 23/02, (F) सप्तमी, (G) 8/31, गुप्तनवरात्र समाप्त, (H) (स.), श्रीविष्णुशयनोत्सव, (I) गुरु मघा 2 में 12/42, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिलाव्रत, श्रीशिवशयनोत्सव, (J) व्रतनियमादि प्रारम्भ.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि	चन्द्रराशि -	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्रावण कृष्ण	1	1	श.	13 8	श्रव./ धनि.	7 41 29 18	आ.	11 2	कुम्भ	18 30	5 44	19 13	5 46	19 8	5 55	19 11	5 29	18 40	1	श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 18/30, अशून्यशयन व्रत,
	2	2	र.	9 55	शत.	26 55	सौ./ शो.	7 20 27 38	कुम्भ		5 44	19 13	5 47	19 8	5 55	19 10	5 29	18 39	2	भ. 20/19 बाद, शनि मार्गी 11/23, शुक्र-वार्धक्य प्रारम्भ (A)
	3	3/ 4	चं.	6 43 27 40	पू.भा.	24 39	अ.	24 2	मीन	19 12	5 45	19 12	5 47	19 7	5 56	19 10	5 29	18 38	3	भ 6/43 तक, सूर्य आश्ले. में 14/48, (B) चतुर्थी तिथिक्षय,
	4	5	मं.	24 53	उ.भा.	22 38	सु.	20 39	मीन		5 46	19 11	5 48	19 6	5 56	19 9	5 30	18 38	4	मंगल पुष्य में 29/11, बुध मघा सिंह में 18/15,
	5	6	बु.	22 26	रेव.	20 57	धृ.	17 32	मेष	20 57	5 46	19 10	5 48	19 5	5 57	19 8	5 30	18 37	5	भ. 22/26 बाद, पंचक समाप्त 20/57, शुक्र पश्चिम में (C)
	6	7	गु.	20 24	अश्वि.	19 40	शू.	14 44	मेष		5 47	19 9	5 49	19 5	5 57	19 8	5 31	18 36	6	भ. 9/25 तक, बुध पश्चिम में उदित 19/09,
	7	8	शु.	18 48	भर.	18 49	ग.	12 18	वृष	24 40	5 47	19 8	5 49	19 4	5 58	19 7	5 31	18 36	7	
	8	9	श.	17 39	कृत्ति.	18 25	वृ.	10 13	वृष		5 48	19 8	5 50	19 3	5 58	19 6	5 32	18 35	8	भ. 29/18 बाद.
	9	10	र.	16 59	रोहि.	18 30	ध्रु.	8 31	वृष		5 49	19 7	5 51	19 2	5 59	19 5	5 32	18 34	9	भ. 16/59 तक, गुरु-वार्धक्य प्रारम्भ 19/04,
	10	11	चं.	16 45	मृग.	19 1	व्या.	7 11	मिथुन	6 42	5 49	19 6	5 51	19 1	5 59	19 5	5 33	18 33	10	कामदा एकादशी व्रत (स.),
	11	12	मं.	17 0	आर्द्रा	19 59	ह./ व.	6 13 29 36	मिथुन		5 50	19 5	5 52	19 1	6 0	19 4	5 33	18 33	11	भौमप्रदोष व्रत,
	12	13	बु.	17 41	पुन.	21 23	सि.	29 20	कर्क	14 59	5 51	19 4	5 52	19 0	6 0	19 3	5 34	18 32	12	भ. 17/41 बाद, गुरु अस्त 19/04, मंगल उदित 5/51, (D)
	13	14	गु.	18 49	पुष्य	23 13	व्य.	29 24	कर्क		5 51	19 3	5 53	18 59	6 1	19 2	5 34	18 31	13	भ. 6/15 तक, वक्री शुक्र आश्ले. कर्क में 17/23,
	14	30	शु.	20 23	आश्ले.	25 28	व.	29 48	सिंह	25 28	5 52	19 2	5 53	18 58	6 1	19 1	5 34	18 30	14	गुरु मघा 3 में 27/16, हरियाली अमा.
श्रावण शुक्ल	15	1	श.	22 22	मघा	28 6	प.	– –	सिंह		5 52	19 1	5 54	18 57	6 2	19 0	5 35	18 30	15	श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ, भारत स्वतन्त्रता दिवस,
	16	2	र.	24 41	पू.फा.	– –	प.	6 30	सिंह		5 53	19 0	5 54	18 56	6 2	18 59	5 35	18 29	16	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	17	3	चं.	27 14	पू.फा.	7 2	शि.	7 27	कन्या	13 49	5 54	18 59	5 55	18 55	6 3	18 59	5 36	18 28	17	सं. सूर्य मघा सिंह में 12/25, मु. 45, (E)
	18	4	मं.	29 53	उ.फा.	10 11	सि.	8 32	कन्या		5 54	18 58	5 55	18 54	6 3	18 58	5 36	18 27	18	भ. 16/33 से 29/53 तक.
	19	5	बु.	– –	हस्त	13 22	सा.	9 40	तुला	26 54	5 55	18 57	5 56	18 53	6 4	18 57	5 37	18 26	19	नागपंचमी,
	20	5	गु.	8 26	चित्रा	16 24	शु.	10 42	तुला		5 55	18 56	5 57	18 52	6 4	18 56	5 37	18 25	20	शुक्र पूर्व में उदित 5/55, बुध उ.फा. में 23/41, (F)
	21	6	शु.	10 40	स्वाती	19 4	शु.	11 29	तुला		5 56	18 55	5 57	18 51	6 5	18 55	5 38	18 24	21	
	22	7	श.	12 24	विशा.	21 11	ब्र.	11 52	वृश्चिक	14 43	5 57	18 54	5 58	18 50	6 5	18 54	5 38	18 23	22	भ 12/24 से 24/55 तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, (G)
	23	8	र.	13 26	अनु.	22 35	ऐं.	11 44	वृश्चिक		5 57	18 53	5 58	18 49	6 6	18 53	5 38	18 23	23	शुक्रबाल्य समाप्त 5/55, सूर्य सायन कन्या में 16/07, (H)
	24	9	चं.	13 41	ज्येष्ठा	23 11	वै.	10 58	धनु	23 11	5 58	18 52	5 59	18 48	6 6	18 52	5 39	18 22	24	
	25	10	मं.	13 5	मूल	22 59	वि.	9 33	धनु		5 58	18 50	5 59	18 47	6 6	18 51	5 39	18 21	25	भ. 24/22 बाद, मंगल आश्ले. में 21/31,
	26	11	बु.	11 40	पू.षा.	21 59	प्री./ आ.	7 27 28 46	मकर	27 38	5 59	18 49	6 0	18 46	6 7	18 50	5 40	18 20	26	भ.11/40 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
	27	12	गु.	9 32	उ.षा.	20 19	सौ.	25 33	मकर		5 59	18 48	6 0	18 45	6 7	18 49	5 40	18 19	27	प्रदोषव्रत,
	28	13/ 14	शु.	6 47 27 35	श्रव.	18 7	शो.	21 55	कुम्भ	28 52	6 0	18 47	6 1	18 44	6 8	18 48	5 40	18 18	28	भ. 27/35 बाद, पंचक प्रारम्भ 28/52, ऋक् उपाकर्म, चतुर्दशी तिथिक्षय,
	29	15	श.	24 5	धनि.	15 32	अ.	18 0	कुम्भ		6 1	18 46	6 1	18 43	6 8	18 47	5 41	18 17	29	भ. 13/50 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, शुक्ल–कृष्ण–यजु– (I)
भाद्रपद कृष्ण	30	1	र.	20 27	शत.	12 45	सु.	13 56	मीन	28 37	6 1	18 45	6 2	18 42	6 9	18 46	5 41	18 16	30	भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गुरु मघा 4 में 11/34,
	31	2	चं.	16 50	पू.भा.	9 55	धृ./ शू.	9 50 29 50	मीन		6 2	18 43	6 2	18 40	6 9	18 45	5 42	18 15	31	भ. 27/06 बाद, सूर्य पू.फा. में 8/24, बुध हस्त में 7/42.

शुक्र अस्त 5 अगस्त,

गुरु अस्त 12 अगस्त,

शुक्र उदित 20 अगस्त,

(A) 19/10. (B) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (C) अस्त 19/10. (D) बुध पू.फा. में 6/40, श्रावण-शिवरात्रि, (E) पुण्यकाल 6/01 से 18/49 तक, मधुश्रवा तृतीया [illegible], (F) श्रीकल्कि जयन्ती [illegible] व्रत (देखें पृ. 14). (H) शरद् ऋतु प्रारम्भ, बुध कन्या में 8/38, [illegible], (I) [illegible] (देखें पृ. 14), [illegible] पूर्णिमा

मास पक्ष		तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
भाद्रपद कृष्ण	1	3	मं.	13 24	उ.भा./	7 13	गं.	26 4	मेष	28 49	6 2	18 42	6 3	18 39	6 10	18 44	5 42	18 14	1	भ. 13/24 तक, पचक समाप्त 28/49, कज्जली तृतीया, (A)
					रेव.	28 49														
	2	4	बु.	10 17	अश्वि.	26 48	वृ.	22 38	मेष		6 3	18 41	6 3	18 38	6 10	18 43	5 42	18 13	2	
	3	5/	गु.	7 36	भर.	25 19	धु.	19 36	मेष		6 3	18 40	6 4	18 37	6 10	18 41	5 43	18 12	3	भ 29/28 बाद, अगस्त्य उदित,
		6		29 28																षष्ठी तिथिक्षय,
	4	7	शु.	27 55	कृत्ति.	24 25	व्या.	17 3	वृष	7 2	6 4	18 39	6 4	18 36	6 11	18 40	5 43	18 11	4	भ. 16/42 तक,
	5	8	श.	27 2	रोहि.	24 9	ह.	15 0	वृष		6 5	18 37	6 5	18 35	6 11	18 39	5 43	18 10	5	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स.) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11),
	6	9	र.	26 47	मृग.	24 32	व.	13 28	मिथुन	12 16	6 5	18 36	6 5	18 34	6 12	18 38	5 44	18 9	6	शुक्र मार्गी 13/59, श्रीगुग्गानवमी, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव),
	7	10	चं.	27 10	आर्द्रा	25 31	सि.	12 26	मिथुन		6 6	18 35	6 6	18 32	6 12	18 37	5 44	18 7	7	भ. 14/58 से 27/10 तक, गुरु उदित 6/06,
	8	11	मं.	28 8	पुन.	27 4	व्य.	11 53	कर्क	20 38	6 6	18 34	6 6	18 31	6 13	18 36	5 45	18 6	8	अजा एकादशी व्रत (स.),
	9	12	बु.	29 35	पुष्य	29 7	व.	11 46	कर्क		6 7	18 32	6 7	18 30	6 13	18 35	5 45	18 5	9	
	10	13	गु.	— —	आश्ले.	— —	प.	12 1	कर्क		6 7	18 31	6 7	18 29	6 13	18 34	5 45	18 4	10	गुरुबाल्य समाप्त 6/07, (B)
	11	13	शु.	7 29	आश्ले.	7 34	शि.	12 34	सिंह	7 34	6 8	18 30	6 8	18 28	6 14	18 33	5 46	18 3	11	भ. 7/29 से 20/36 तक,
	12	14	श.	9 42	मघा	10 20	सि.	13 21	सिंह		6 8	18 29	6 8	18 27	6 14	18 31	5 46	18 2	12	
	13	30	र.	12 11	पू.फा.	13 21	सा.	14 20	कन्या	20 7	6 9	18 27	6 8	18 25	6 15	18 30	5 46	18 1	13	सूर्य उ.फा. में 26/15, कुशोत्पाटिनी अमा, पिठौरी अमा, (C)
भाद्रपद शुक्ल	14	1	चं.	14 48	उ.फा.	16 29	शु.	15 24	कन्या		6 10	18 26	6 9	18 24	6 15	18 29	5 47	18 0	14	भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रारम्भ, गुरु पू.फा. 1 में 21/36, गुरु (D)
	15	2	मं.	17 28	हस्त	19 39	शु.	16 29	कन्या		6 10	18 25	6 9	18 23	6 16	18 28	5 47	17 59	15	चन्द्रदर्शन, मु 30, मंगल मघा सिंह में 21/29, साम– (E)
	16	3	बु.	20 1	चित्रा	22 43	ब्र.	17 31	तुला	9 12	6 11	18 24	6 10	18 22	6 16	18 27	5 48	17 58	16	श्रीवराह जयन्ती, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया,
	17	4	गु.	22 20	स्वाती	25 31	ऐं.	18 22	तुला		6 11	18 22	6 10	18 21	6 16	18 26	5 48	17 57	17	भ 9/10 से 22/20 तक, सं. सूर्य कन्या में 12/19, (F)
	18	5	शु.	24 16	विशा.	27 57	वै.	18 56	वृश्चिक	21 23	6 12	18 21	6 11	18 19	6 17	18 25	5 48	17 56	18	ऋषिपंचमी,
	19	6	श.	25 39	अनु.	29 50	वि.	19 6	वृश्चिक		6 12	18 20	6 11	18 18	6 17	18 24	5 49	17 55	19	सूर्यषष्ठी व्रत,
	20	7	र.	26 23	ज्येष्ठा	— —	प्री.	18 48	वृश्चिक		6 13	18 18	6 12	18 17	6 18	18 22	5 49	17 53	20	भ 26/23 बाद, मुक्ताभरण (G)
	21	8	चं.	26 23	ज्येष्ठा	7 4	आ.	17 56	धनु	7 4	6 14	18 17	6 12	18 16	6 18	18 21	5 49	17 52	21	भ. 14/23 तक, राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ,
	22	9	मं.	25 36	मूल	7 34	सौ.	16 28	धनु		6 14	18 16	6 13	18 15	6 19	18 20	5 50	17 51	22	बाबा श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
	23	10	बु.	24 4	पू.षा.	7 18	शो.	14 22	मकर	13 7	6 15	18 15	6 13	18 13	6 19	18 19	5 50	17 50	23	सूर्य सायन तुला में 13/51, विषुवदिन, दक्षिणगोल प्रारम्भ,
	24	11	गु.	21 50	उ.षा./	6 18	अ.	11 42	मकर		6 15	18 13	6 14	18 12	6 19	18 18	5 51	17 49	24	भ. 10/57 से 21/50 तक, बुध पश्चिम में अस्त 18/13, (H)
					श्रव.	28 39														
	25	12	शु.	19 0	धनि.	26 25	सु./	8 30	कुम्भ	15 35	6 16	18 12	6 14	18 11	6 20	18 17	5 51	17 48	25	पंचक प्रारम्भ 15/35,प्लू.मार्गी 12/25, प्रदोषव्रत श्रीवामन द्वादशी,
							धृ.	28 51												
	26	13	श.	16 43	शत.	23 47	शू.	24 53	कुम्भ		6 16	18 11	6 15	18 10	6 20	18 16	5 51	17 47	26	राहु उ.फा. 3, केतु उ.भा. 1 में 6/29,
	27	14	र.	12 6	पू.भा.	20 54	गं.	20 42	मीन	15 38	6 17	18 10	6 15	18 9	6 21	18 14	5 52	17 46	27	भ. 12/06 से 22/13 तक, सूर्य हस्त में17/44, शनि (I)
	28	15/	चं.	8 20	उ.भा.	17 54	वृ.	16 27	मीन		6 18	18 8	6 16	18 7	6 21	18 13	5 52	17 45	28	प्रतिपदा का श्राद्ध, श्राद्ध(महालय)प्रारम्भ, चन्द्रग्रहण(देखें पृ. 20)
आश्वि. कृष्ण		1		28 34																आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	29	2	मं.	24 59	रेव.	15 0	धु.	12 16	मेष	16 0	6 18	18 7	6 16	18 6	6 22	18 12	5 53	17 44	29	पंचक समाप्त 15/00, द्वितीया का श्राद्ध,
	30	3	बु.	21 43	अश्वि.	12 21	व्या./	8 14	मेष		6 19	18 6	6 17	18 5	6 22	18 11	5 53	17 43	30	भ. 11/21 से 21/43 तक, गुरु पू.फा. 2 में 18/14, गुरु(J)
							ह.	28 33												

गुरु उदित–7सितंबर

सिंहनवांश मे सिंहस्थ गुरुदोष 14 से 30 सितंबर तक

नासिक कुम्भपर्व की स्नान–तिथियां देखें पृ. 17

आश्विन कृष्ण (श्राद्ध)पक्ष--दोष 28 सितंबर से 12 अक्तूबर

(A) श्रीगणेश(संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ 11), बहुला चतुर्थी (B) प्रदोषव्रत, पर्युषण पर्व (जैन). (C) कुम्भमहापर्व (सिंहस्थपर्व) नासिक (महा.), (D) का सिंहराशि के सिंहांशक में प्रवेश 21/36, (E) उपाकर्म, मेला बाबा गोसाईं आणा (कुराली) पं. (F) मु 15, पुण्यकाल सारादिन, बुध वक्री 23/30, हरितालिका चतुर्थी, सिद्धिविनायक व्रत, कलंक चतुर्थी, (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 20/49). संवत्सरी महापर्व (जैन), (G) सप्तमी व्रत (सातानसप्तमी व्रत). (H) पद्मा एकादशी व्रत (स). श्रवणद्वादशी, विष्णु – शृंखलयोग, (I) अनु 2 में 26/08, श्रीसत्यनारायण व्रत, प्राष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध (देखें पृ 14) श्रीअनन्त चतुर्दशी व्रत (J) का सिंह राशि के सिंहांशक से निर्गम 18/14, शुक्र मघा सिंह में 28/14, तृतीया का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध.

मास पक्ष	अंग्रेज़ी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आश्विन कृष्ण	1	4	गु.	18	56	भर.	10	7	व.	25	17	वृष	15	39	6	19	18	5	6	17	18	4	6	23	18	10	5	53	17	42	1	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (देखें पृ 14), चतुर्थी का श्राद्ध,
	2	5	शु.	16	46	कृत्ति.	8	27	सि.	22	33	वृष			6	20	18	3	6	18	18	3	6	23	18	9	5	54	17	41	2	पंचमी का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत, जन्म श्रीमहात्मा गांधी,
	3	6	श.	15	19	रोहि.	7	27	व्य.	20	25	मिथुन	19	14	6	21	18	2	6	19	18	1	6	24	18	8	5	54	17	39	3	भ. 15/19 से 26/59 तक, वक्री बुध उ.फा. में 17/20, (A)
	4	7	र.	14	38	मृग.	7	12	व.	18	54	मिथुन			6	21	18	1	6	19	18	0	6	24	18	7	5	55	17	38	4	सप्तमी का श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,
	5	8	चं.	14	45	आर्द्रा	7	44	प.	18	0	कर्क	26	38	6	22	18	0	6	20	17	59	6	25	18	5	5	55	17	37	5	अष्टमी का श्राद्ध,
	6	9	मं.	15	38	पुन.	9	1	शि.	17	41	कर्क			6	22	17	58	6	20	17	58	6	25	18	4	5	55	17	36	6	भ. 28/24 बाद, मंगल पू.फा. में 29/02, नवमी का श्राद्ध,(B)
	7	10	बु.	17	10	पुष्य	10	58	सि.	17	51	कर्क			6	23	17	57	6	21	17	57	6	25	18	3	5	56	17	35	7	भ. 17/10 तक, दशमी का श्राद्ध,
	8	11	गु.	19	13	आश्ले.	13	26	सा.	18	25	सिंह	13	26	6	24	17	56	6	21	17	56	6	26	18	2	5	56	17	34	8	बुध पूर्व में उदित 6/24, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), (C)
	9	12	शु.	21	39	मघा	16	18	शु.	19	16	सिंह			6	24	17	55	6	22	17	55	6	26	18	1	5	57	17	33	9	बुध मार्गी 20/28, द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध,(D)
	10	13	श.	24	17	पू.फा.	19	24	शु.	20	16	कन्या	26	11	6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	0	5	57	17	32	10	भ. 24/17 बाद, शनिप्रदोषव्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध,
	11	14	र.	26	58	उ.फा.	22	34	ब्र.	21	20	कन्या			6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	59	5	58	17	31	11	भ. 13/38 तक, सूर्य चित्रा में 6/46, वक्री नेप्च्यून शत (E)
	12	30	चं.	29	35	हस्त	25	41	ऐं.	22	22	कन्या			6	26	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	12	सोमवती अमा, सर्वपितृ श्राद्ध,चर्तुदशी/अमा एवं अज्ञात (F)
आश्विन शुक्ल	13	1	मं.	—	—	चित्रा	28	38	वै.	23	16	तुला	15	11	6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	57	5	59	17	29	13	आश्विन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, शारद नवरात्रारम्भ (देखें पृ. 14), (G)
	14	1	बु.	8	2	स्वाती	—	—	वि.	24	0	तुला			6	28	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	28	14	चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	15	2	गु.	10	12	स्वाती	7	20	प्री.	24	29	वृश्चिक	27	9	6	28	17	48	6	25	17	48	6	30	17	55	6	0	17	27	15	बुध हस्त में 24/37,
	16	3	शु.	12	1	विशा.	9	43	आ.	24	40	वृश्चिक			6	29	17	47	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	27	16	भ. 24/42 बाद,
	17	4	श.	13	24	अनु.	11	42	सौ.	24	30	वृश्चिक			6	30	17	46	6	27	17	46	6	31	17	53	6	1	17	26	17	भ. 13/24 तक, स. सूर्य तुला में 24/16, मु. 15, पुण्य– (H)
	18	5	र.	14	18	ज्येष्ठा	13	12	शो.	23	55	धनु	13	12	6	30	17	44	6	27	17	45	6	31	17	52	6	1	17	25	18	सरस्वती आवाहन,
	19	6	चं.	14	39	मूल	14	10	अ.	22	54	धनु			6	31	17	43	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	24	19	सरस्वती पूजन,
	20	7	मं.	14	23	पू.षा.	14	33	सु.	21	24	मकर	20	33	6	32	17	42	6	28	17	43	6	32	17	50	6	2	17	23	20	भ. 14/23 से 25/57 तक, सरस्वती के लिए बलिदान,
	21	8	बु.	13	30	उ.षा.	14	19	धृ.	19	24	मकर			6	32	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	3	17	22	21	सरस्वती विसर्जन, महाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी, महानवमी (I)
	22	9	गु.	11	58	श्रव.	13	28	शू.	16	54	कुम्भ	24	49	6	33	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	3	17	21	22	पंचक प्रारम्भ 24/49, महानवमी (बलिदान के लिए), (J)
	23	10	शु.	9	51	धनि.	12	2	गं.	13	55	कुम्भ			6	34	17	39	6	30	17	40	6	34	17	48	6	4	17	20	23	भ. 20/32 बाद, सूर्य सायन वृश्चिक मे 23/17, हेमन्त (K)
	24	11/ 12	श.	7 28	13 8	शत.	10	5	वृ.	10	32	मीन	26	19	6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	47	6	4	17	20	24	भ. 7/13 तक, सूर्य स्वाती में 17/13, पापांकुशा (L) द्वादशी तिथिक्षय,
	25	13	र.	24	44	पू.भा./ उ.भा.	7 29	42 1	ध्रु./ व्या.	6 26	47 48	मीन			6	35	17	37	6	32	17	38	6	35	17	46	6	5	17	19	25	बुध चित्रा में 20/18, प्रदोषव्रत,
	26	14	चं.	21	10	रेव.	26	13	ह.	22	41	मेष	26	13	6	36	17	36	6	32	17	37	6	36	17	45	6	5	17	18	26	भ. 21/10 बाद, पंचक समाप्त 26/13, कोजागर व्रत, (M)
	27	15	मं.	17	35	अश्वि.	23	25	व.	18	34	मेष			6	37	17	35	6	33	17	36	6	37	17	44	6	6	17	17	27	भ. 7/23 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 15), (N)
कार्तिक कृष्ण	28	1	बु.	14	9	भर.	20	50	सि.	14	34	वृष	26	14	6	38	17	34	6	34	17	36	6	37	17	43	6	7	17	16	28	कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ, बुध पूर्व में अस्त 6/38, मंगल (O)
	29	2	गु.	11	2	कृत्ति.	18	37	व्य.	10	51	वृष			6	38	17	33	6	34	17	35	6	38	17	43	6	7	17	16	29	भ. 21/43 बाद, बुध तुला में 22/43,
	30	3/ 4	शु.	8 30	25 26	रोहि.	16	56	व./ प.	7 28	31 42	मिथुन	28	21	6	39	17	33	6	35	17	34	6	39	17	42	6	8	17	15	30	भ. 8/25 तक, शुक्र उ.फा. में 26/31, श्रीगणेशचतुर्थी (P) चतुर्थी तिथिक्षय,
	31	5	श.	29	13	मृग.	15	57	शि.	26	30	मिथुन			6	40	17	32	6	36	17	33	6	39	17	41	6	8	17	14	31	शनि अनु. 3 में 27/17,

फल्गु योग–12 अक्तू.

(A) षष्ठी का श्राद्ध, (B) सौभाग्यवती श्राद्ध, (C) एकादशी का श्राद्ध, (D) मघा श्राद्ध, (E) 2 में 15/38, शस्त्र-विषादि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (F) मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, फल्गुयोग, मेला फल्गु तीर्थ (हरि), (G) महाराजा अग्रसेन जयन्ती, नाना/नानी का श्राद्ध, (H) काल अगले दिन मध्याह्न तक, गुरु पू.फा. 3 में 13/48, शुक्र पू.फा. में 11/04, उपांगललिता व्रत (देखें पृ 14). (I) (पूजा एवम् उपवास के लिए). (J) नवरात्र समाप्त, विजयादशमी (दशहरा), आयुधपूजा, अपराजितापूजा, सीमोल्लंघन, (K) ऋतु प्रारम्भ, पापांकुशा एकादशी व्रत (स्मा). [illegible]
(L) एकादशी व्रत (वै).(M) शरत्पूर्णिमा (देखें पृ 15). (N) [illegible]

मास पक्ष	गतांक	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
कार्तिक कृष्ण	1	6	र.	28	50	आर्द्रा	15	45	सि.	24	57	मिथुन			6	41	17	31	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	13	1	भ. 28/50 बाद,
	2	7	चं.	29	20	पुन.	16	24	सा.	24	5	कर्क	10	10	6	42	17	30	6	37	17	32	6	41	17	40	6	10	17	13	2	भ. 17/05 तक, बुध स्वाती में 23/24,
	3	8	मं.	30	38	पुष्य	17	52	शु.	23	51	कर्क			6	42	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	3	मंगल कन्या में 8/07, शुक्र कन्या में 7/30, अहोई (A)
	4	9	बु.	—	—	आश्ले.	20	3	शु.	24	9	सिंह	20	3	6	43	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	4	
	5	9	गु.	8	37	मघा	22	47	ब्र.	24	51	सिंह			6	44	17	28	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	भ. 21/50 बाद, गुरु पू.फा. 4 में 8/11,
	6	10	शु.	11	4	पू.फा.	25	51	ऐं.	25	49	सिंह			6	45	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	10	6	भ. 11/04 तक, सूर्य विशा. मे 25/25,
	7	11	श.	13	47	उ.फा.	29	3	वै.	26	53	कन्या	8	39	6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी,
	8	12	र.	16	31	हस्त	—	—	वि.	27	53	कन्या			6	46	17	25	6	42	17	27	6	45	17	36	6	14	17	9	8	
	9	13	चं.	19	6	हस्त	8	9	प्री.	28	43	तुला	21	38	6	47	17	25	6	43	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	9	भ. 19/06 बाद, वक्री यूरेनस रेव. 2 में 22/36, सोम-(B)
	10	14	मं.	21	23	चित्रा	11	2	आ.	29	17	तुला			6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	8	10	भ. 8/15 तक, बुध विशा. में 26/11, नरक चर्तुदशी (C)
	11	30	बु.	23	17	स्वाती	13	34	सौ.	29	34	तुला			6	49	17	23	6	44	17	26	6	47	17	34	6	16	17	8	11	दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजा, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन),
कार्तिक शुक्ल	12	1	गु.	24	45	विशा.	15	42	शो.	29	31	वृश्चिक	9	12	6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	33	6	16	17	7	12	कार्तिक शुक्लपक्ष प्रारम्भ, शुक्र हस्त में 14/56, अन्नकूट, (D)
	13	2	शु.	25	48	अनु.	17	26	अ.	29	8	वृश्चिक			6	51	17	22	6	46	17	25	6	48	17	33	6	17	17	7	13	चन्द्रदर्शन, मु. 30, शनि अस्त 17/22, यमद्वितीया, (E)
	14	3	श.	26	24	ज्येष्ठा	18	44	सु.	28	26	धनु	18	44	6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	18	17	6	14	
	15	4	र.	26	36	मूल	19	38	धृ.	27	24	धनु			6	52	17	21	6	47	17	24	6	50	17	32	6	18	17	6	15	भ. 14/30 से 26/36 तक,
	16	5	चं.	26	22	पू.षा.	20	8	शू.	26	3	मकर	26	12	6	53	17	21	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	6	16	सं. सूर्य वृश्चिक में 24/03, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न (F)
	17	6	मं.	25	44	उ.षा.	20	14	गं.	24	22	मकर			6	54	17	20	6	49	17	23	6	51	17	31	6	20	17	5	17	बुध वृश्चिक में 7/30, सूर्यषष्ठी (बिहार),
	18	7	बु.	24	39	श्रव.	19	54	वृ.	22	20	मकर			6	55	17	20	6	50	17	22	6	52	17	31	6	21	17	5	18	भ. 24/39 बाद, नेप्च्यून मार्गी 22/05,
	19	8	गु.	23	9	धनि.	19	8	ध्रु.	19	58	कुम्भ	7	34	6	56	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	19	भ. 11/54 तक, पंचक प्रारम्भ 7/34, मंगल हस्त में (G)
	20	9	शु.	21	12	शत.	17	58	व्या.	17	16	कुम्भ			6	57	17	19	6	51	17	22	6	54	17	30	6	22	17	4	20	सूर्य अनु. में 7/23, अक्षयनवमी, कूष्माण्ड नवमी,
	21	10	श.	18	53	पू.भा.	16	23	ह.	14	14	मीन	10	49	6	57	17	18	6	52	17	21	6	54	17	30	6	23	17	4	21	भ. 29/33 बाद, भीष्मपंचक प्रारम्भ (देखें पृ. 15),
	22	11	र.	16	13	उ.भा.	14	28	व.	10	54	मीन			6	58	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	22	भ. 16/13 तक, सूर्य सायन धनु में 20/56, देवप्रबोधिनी (H)
	23	12	चं.	13	17	रेव.	12	17	सि./	7	21	मेष	12	17	6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	23	पंचक समाप्त 12/17, हरिप्रबोधोत्सव, तुलसीविवाह (I)
									व्य.	27	40																					
	24	13	मं.	10	13	अश्वि.	9	58	व.	23	56	मेष			7	0	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	शुक्र चित्रा में 12/38, बलि. दिन गुरु तेग़बहादुर जी, (J)
	25	14/	बु.	7	9	भर./	7	38	प.	20	16	वृष	13	4	7	1	17	17	6	55	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	भ. 7/09 से 17/42 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, भीष्मपंचक (K)
		15		28	14	कृत्ति.	29	27																								पूर्णिमा तिथिक्षय,
मार्गशीर्ष कृष्ण	26	1	गु.	25	38	रोहि.	27	35	शि.	16	49	वृष			7	2	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	26	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	27	2	शु.	23	30	मृग.	26	13	सि.	13	42	मिथुन	14	50	7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	27	बुध ज्येष्ठा में 21/51, राहु उ.फा. 2, केतु पू.भा. 4 में (L)
	28	3	श.	22	1	आर्द्रा	26	29	सा.	11	2	मिथुन			7	3	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	भ. 10/45 से 22/01 तक, गुरु उ.फा. 1 में 20/50,
	29	4	र.	21	17	पुन.	25	31	शु.	8	56	कर्क	19	26	7	4	17	16	6	58	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	शनि अनु. 4 में 21/45, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	30	5	चं.	21	24	पुष्य	26	22	शु./	7	27	कर्क			7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	30	शुक्र तुला में 7/47,
									ब्र.	30	38																					

(A) अष्टमी (पंजाब–हरि), (B) प्रदोष व्रत, धनत्रयोदशी, यम–प्रीत्यर्थ दीपदान (देखे पृ 15), श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.), (C) (पूर्वारुणोदय वाली), (D) गोवर्धन पूजा, गोक्रीडा, बलिपूजा, (E) भाईदूज, विश्वकर्मा-पूजा, (F) बाद, ज्ञानपंचमी (जैन), (G) 22/28, बुध अनु. मे 9/54, गोपाष्टमी, (H) एकादशी व्रत (स.), (I) (देखें पृ. 15), सोमप्रदोषव्रत, चातुर्मास्य–व्रतनियमादि समाप्त, (J) (ना. शा.), वैकुण्ठ चतुर्दशी, (K) समाप्त, त्रिपुरोत्सव, कार्तिकपूर्णिमा, श्रीगुरुनानक जयन्ती, कार्तिकस्नान समाप्त, मेला पुष्करराज (राज), (L) 28/22,

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्तिकाल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घं. मि.	योग	समाप्तिकाल घं. मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्गशीर्ष कृष्ण	1	6	मं.	22 21	आश्ले.	28 1	ऐं.	30 27	सिंह 28 1	7 6	17 16	7 0	17 19	7 2	17 29	6 30	17 3	1	भ. 22/21 बाद,
	2	7	बु.	24 4	मघा	30 22	वै.	30 48	सिंह	7 7	17 16	7 1	17 19	7 3	17 29	6 31	17 3	2	भ. 11/13 तक, प्लूटो पूषा. 3 में 12/45,
	3	8	गु.	26 23	पू.फा.	— —	वि.	— —	सिंह	7 8	17 16	7 2	17 19	7 4	17 29	6 31	17 3	3	सूर्य ज्येष्ठा में 11/46, श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी),
	4	9	शु.	29 3	पू.फा.	9 14	वि.	7 32	कन्या 16 0	7 8	17 16	7 2	17 19	7 4	17 29	6 32	17 3	4	
	5	10	श.	— —	उ.फा.	12 22	प्री.	8 31	कन्या	7 9	17 16	7 3	17 20	7 5	17 29	6 33	17 3	5	भ. 18/25 बाद, शुक्र स्वाती में 25/01,
	6	10	र.	7 48	हस्त	15 30	आ.	9 31	तुला 29 0	7 10	17 16	7 4	17 20	7 6	17 29	6 34	17 4	6	भ. 7/48 तक, बुध मूल धनु में 12/01,
	7	11	चं.	10 23	चित्रा	18 25	सौ.	10 23	तुला	7 11	17 16	7 5	17 20	7 6	17 29	6 34	17 4	7	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
	8	12	मं.	12 35	स्वाती	20 56	शो.	10 58	तुला	7 11	17 16	7 5	17 20	7 7	17 29	6 35	17 4	8	भौमप्रदोष व्रत,
	9	13	बु.	14 16	विशा.	22 56	अ.	11 10	वृश्चिक 16 29	7 12	17 17	7 6	17 20	7 8	17 30	6 36	17 4	9	भ. 14/16 से 26/50 तक,
	10	14	गु.	15 24	अनु.	24 24	सु.	10 57	वृश्चिक	7 13	17 17	7 7	17 20	7 9	17 30	6 36	17 4	10	
	11	30	शु.	15 59	ज्येष्ठा	25 20	धृ.	10 19	धनु 25 20	7 14	17 17	7 7	17 21	7 9	17 30	6 37	17 5	11	
मार्गशीर्ष शुक्ल	12	1	श.	16 4	मूल	25 50	शू.	9 17	धनु	7 14	17 17	7 8	17 21	7 10	17 30	6 38	17 5	12	मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, बुध पश्चिम (A)
	13	2	र.	15 43	पू.षा.	25 56	गं./	7 54	धनु	7 15	17 18	7 9	17 21	7 11	17 31	6 38	17 5	13	
							वृ.	30 14											
	14	3	चं.	15 1	उ.षा.	25 43	ध्रु.	28 18	मकर 7 54	7 16	17 18	7 9	17 21	7 11	17 31	6 39	17 6	14	भ. 26/31 बाद, बुध पूषा. में 28/19,
	15	4	मं.	14 1	श्रव.	25 15	व्या.	26 10	मकर	7 16	17 18	7 10	17 22	7 12	17 31	6 39	17 6	15	भ. 14/01 तक,
	16	5	बु.	12 46	धनि.	24 32	ह.	23 52	कुम्भ 12 55	7 17	17 18	7 11	17 22	7 12	17 32	6 40	17 6	16	पंचक प्रारम्भ 12/55, सं. सूर्य मूल धनु में 14/42, मु. 30,(B)
	17	6	गु.	11 19	शत.	23 38	व.	21 23	कुम्भ	7 18	17 19	7 11	17 22	7 13	17 32	6 41	17 7	17	शनि उदित 7/18, चम्पाषष्ठी, मित्रसप्तमी (देखें पृ. 15),
	18	7	शु.	9 39	पू.भा.	22 31	सि.	18 44	मीन 16 49	7 18	17 19	7 12	17 23	7 14	17 32	6 41	17 7	18	भ. 9/39 से 20/43 तक,
	19	8/	श.	7 47	उ.भा.	21 13	व्य.	15 57	मीन	7 19	17 20	7 12	17 23	7 14	17 33	6 42	17 7	19	
		9		29 43															नवमी तिथिक्षय,
	20	10	र.	27 31	रेव.	19 45	व.	13 0	मेष 19 45	7 19	17 20	7 13	17 24	7 15	17 33	6 42	17 8	20	पचक समाप्त 19/45.
	21	11	चं.	25 12	अश्वि.	18 9	प./	9 57	मेष	7 20	17 21	7 14	17 24	7 15	17 34	6 43	17 8	21	भ 14/21 से 25/12 तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), (C)
							शि.	30 49											
	22	12	मं.	22 50	भर.	16 30	सि.	27 41	वृष 22 5	7 20	17 21	7 14	17 25	7 16	17 34	6 43	17 9	22	सूर्य सायन मकर में 10/18, उत्तर अयन एवम् शिशिर (D)
	23	13	बु.	20 33	कृत्ति.	14 52	सा.	24 37	वृष	7 21	17 22	7 15	17 25	7 16	17 35	6 44	17 9	23	मंगल तुला में 29/56, प्रदोषव्रत,
	24	14	गु.	18 27	रोहि.	13 24	शु.	21 44	मिथुन 24 46	7 21	17 22	7 15	17 26	7 17	17 35	6 44	17 10	24	भ. 18/27 से 29/34 तक, बुध उ.षा. में 9/00, (E)
	25	15	शु.	16 41	मृग.	12 14	शु.	19 7	मिथुन	7 22	17 23	7 15	17 26	7 17	17 36	6 45	17 10	25	शुक्र वृश्चिक में 15/15, नेप्च्यून शत. 3 में 29/10.
पौष कृष्ण	26	1	श.	15 24	आर्द्रा	11 29	ब्र.	16 54	कर्क 29 18	7 22	17 23	7 16	17 27	7 18	17 36	6 45	17 11	26	पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, बुध मकर में 23/52, यूरेनस मार्गी (F)
	27	2	र.	14 42	पुन.	11 19	ऐं.	15 9	कर्क	7 23	17 24	7 16	17 27	7 18	17 37	6 46	17 12	27	भ. 26/43 बाद,
	28	3	चं.	14 43	पुष्य	11 49	वै.	13 57	कर्क	7 23	17 24	7 17	17 28	7 18	17 38	6 46	17 12	28	भ. 14/43 तक, शुक्र अनु. में 9/30, शनि ज्येष्ठा 1 में (G)
	29	4	मं.	15 28	आश्ले.	13 2	वि.	13 20	सिंह 13 2	7 23	17 25	7 17	17 29	7 19	17 38	6 46	17 13	29	सूर्य पू.षा. में 17/00.
	30	5	बु.	16 58	मघा	14 58	प्री.	13 16	सिंह	7 24	17 26	7 17	17 29	7 19	17 39	6 47	17 13	30	
	31	6	गु.	19 6	पू.फा.	17 30	आ.	13 41	कन्या 24 12	7 24	17 26	7 18	17 30	7 19	17 39	6 47	17 14	31	भ 19/06 बाद

(A) में उदित 17/17, मंगल चित्रा में 14/21, (B) पुण्यकाल 8/18 बाद, शुक्र विशा. में 31/16, स्कन्द(गुह)षष्ठी, (C) श्रीगीता जयन्ती, (D) ऋतु प्रारम्भ, (E) श्रीसत्यनारायण व्रत, ... जयन्ती, (F) 9/24 [illegible]

[illegible]

श्री वि. सं 2072	तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)	जनवरी, सन् 2016 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
पौष कृष्ण	1	7	शु.	21 39	उ.फा.	20 27	सौ	14 28	कन्या		7 24	17 27	7 18	17 31	7 20	17 40	6 47	17 15	1	भ. 8/23 तक, इंग्लिश नववर्ष (2016 ई.) प्रारम्भ,
	2	8	श.	24 22	हस्त	23 35	शो.	15 25	कन्या		7 24	17 28	7 18	17 31	7 20	17 41	6 48	17 15	2	
	3	9	र.	26 59	चित्रा	26 36	अ.	16 21	तुला	13 7	7 25	17 29	7 18	17 32	7 20	17 41	6 48	17 16	3	
	4	10	चं.	29 13	स्वाती	29 17	सु.	17 6	तुला		7 25	17 29	7 19	17 33	7 20	17 42	6 48	17 17	4	भ. 16/06 से 29/13 तक, मंगल स्वाती में 28/32
	5	11	मं.	30 54	विशा.	— —	धृ.	17 28	वृश्चिक	24 57	7 25	17 30	7 19	17 34	7 21	17 43	6 48	17 17	5	बुध वक्री 18/34, सफला एकादशी व्रत (स्मा.),
	6	12	बु.	— —	विशा.	7 26	शू.	17 23	वृश्चिक		7 25	17 31	7 19	17 34	7 21	17 44	6 49	17 18	6	सफला एकादशी व्रत (वै),
	7	12	गु.	7 54	अनु.	8 56	गं.	16 47	वृश्चिक		7 25	17 32	7 19	17 35	7 21	17 44	6 49	17 19	7	प्रदोषव्रत,
	8	13	शु.	8 14	ज्येष्ठा	9 47	वृ.	15 39	धनु	9 47	7 25	17 32	7 19	17 36	7 21	17 45	6 49	17 20	8	भ. 8/14 से 20/04 तक, बुध पश्चिम में अस्त 17/32,(A)
	9	14/ 30	श.	7 54 / 31 0	मूल	10 0	ध्रु.	14 2	धनु		7 25	17 33	7 19	17 37	7 21	17 46	6 49	17 20	9	शनैश्चरी अमा, अमावस तिथिक्षय,
पौष शुक्ल	10	1	र.	29 40	पू.षा.	9 42	व्या.	12 0	मकर	15 32	7 25	17 34	7 19	17 37	7 21	17 47	6 49	17 21	10	पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
	11	2	चं.	28 0	उ.षा.	8 57	ह./ व.	9 38 / 31 1	मकर		7 25	17 35	7 19	17 38	7 21	17 47	6 49	17 22	11	चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य उ.षा. में 18/56,
	12	3	मं.	26 6	श्रव./ धनि.	7 54 / 30 39	सि.	28 15	कुम्भ	19 18	7 25	17 36	7 19	17 39	7 21	17 48	6 49	17 23	12	पंचक प्रारम्भ 19/18,
	13	4	बु.	24 5	शत.	29 18	व्य.	25 23	कुम्भ		7 25	17 37	7 19	17 40	7 21	17 49	6 49	17 23	13	भ. 13/06 से 24/05 तक, लोहड़ी (पंजाब, हरि., ज. का.),
	14	5	गु.	22 1	पू.भा.	27 55	व.	22 29	मीन	22 16	7 25	17 37	7 19	17 41	7 21	17 50	6 49	17 24	14	सं. सूर्य मकर में 25/26, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन (B)
	15	6	शु.	19 57	उ.भा.	26 32	प.	19 34	मीन		7 25	17 38	7 19	17 41	7 21	17 51	6 49	17 25	15	
	16	7	श.	17 56	रेव.	25 13	शि.	16 42	मेष	25 13	7 25	17 39	7 19	17 42	7 21	17 51	6 49	17 26	16	भ. 17/56 से 28/57 तक, पंचक समाप्त 25/13, (C)
	17	8	र.	15 56	अश्वि.	23 57	सि.	13 53	मेष		7 25	17 40	7 19	17 43	7 21	17 52	6 49	17 26	17	
	18	9	चं.	14 5	भर.	22 47	सा.	11 8	वृष	28 31	7 24	17 41	7 19	17 44	7 21	17 53	6 49	17 27	18	शुक्र मूल धनु में 30/21,
	19	10	मं.	12 19	कृत्ति.	21 45	शु./ शु.	8 28 / 29 55	वृष		7 24	17 42	7 19	17 45	7 21	17 54	6 49	17 28	19	भ 23/31 बाद,
	20	11	बु.	10 43	रोहि.	20 54	ब्र.	27 32	वृष		7 24	17 43	7 18	17 46	7 21	17 55	6 49	17 29	20	भ. 10/43 तक, सूर्य सायन कुम्भ में 20/57, पुत्रदा (D)
	21	12	गु.	9 20	मृग.	20 17	ऐं.	25 22	मिथुन	8 33	7 24	17 44	7 18	17 46	7 20	17 55	6 49	17 29	21	बुध पूर्व में उदित 7/24, प्रदोषव्रत,
	22	13	शु.	8 14	आर्द्रा	19 59	वै.	23 28	मिथुन		7 23	17 45	7 18	17 47	7 20	17 56	6 48	17 30	22	
	23	14/ 15	श.	7 31 / 31 16	पुन.	20 7	वि.	21 55	कर्क	14 2	7 23	17 45	7 18	17 48	7 20	17 57	6 48	17 31	23	भ. 7/31 से 19/24 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, पौषीपूर्णिमा (E) पूर्णिमा तिथिक्षय,
माघ कृष्ण	24	1	र.	— —	पुष्य	20 44	प्री.	20 46	कर्क		7 22	17 46	7 17	17 49	7 20	17 58	6 48	17 32	24	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, सूर्य श्रव. में 21/15,
	25	1	चं.	7 33	आश्ले.	21 54	आ.	20 3	सिंह	21 54	7 22	17 47	7 17	17 50	7 19	17 59	6 48	17 32	25	बुध मार्गी 27/19,
	26	2	मं.	8 26	मघा	23 39	सौ.	19 46	सिंह		7 22	17 48	7 16	17 51	7 19	17 59	6 47	17 33	26	भ 21/10 बाद, भारत गणतन्त्र दिवस,
	27	3	बु.	9 55	पू.फा.	25 57	शो.	20 0	सिंह		7 21	17 49	7 16	17 51	7 19	18 0	6 47	17 34	27	भ. 9/55 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (F)
	28	4	गु.	11 57	उ.फा.	28 43	अ.	20 34	कन्या	8 36	7 21	17 50	7 16	17 52	7 18	18 1	6 47	17 35	28	
	29	5	शु.	14 24	हस्त	— —	सु.	21 25	कन्या		7 20	17 51	7 15	17 53	7 18	18 2	6 46	17 35	29	शुक्र पू. षा. में 26/38, राहु उ.फा. 1 सिंह, केतु पू.भा. 3 (G)
	30	6	श.	17 5	हस्त	7 45	धृ.	22 22	तुला	21 18	7 20	17 52	7 15	17 54	7 17	18 2	6 46	17 36	30	भ. 17/05 से 30/24 तक, मंगल विशा. में 11/03,
	31	7	र.	19 44	चित्रा	10 51	शू.	23 16	तुला		7 19	17 53	7 14	17 55	7 17	18 3	6 46	17 37	31	शनि ज्येष्ठा 2 में 16/00,

(A) गुरु वक्री10/10, शुक्र ज्येष्ठा मे 8/51.(B) मध्याह्न तक, मकर संक्रांति, वक्री बुध धनु में 16/01, (C) वक्री बुध पू.षा में 28/36, अवतारदिन गुरु गोबिन्द सिंह जी, (D) एकादशी व्रत (स.), (E)माघस्नान प्रारम्भ, (F) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (G) कुम्भ में 26/52,

श्री वि. सं 2072 | **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** | फरवरी, सन् 2016 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ कृष्ण	1	8	च	[illegible]	5	स्वाती	13	46	गं.	23	57	तुला			7	18	17	54	7	14	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	
	2	9	म.	23	56	विशा.	16	15	वृ.	24	13	वृश्चिक	9	41	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	2	
	3	10	बु.	25	6	अनु.	18	8	ध्रु.	23	59	वृश्चिक			7	17	17	55	7	13	17	57	7	15	18	6	6	44	17	39	3	भ. 12/31 से 25/06 तक,
	4	11	गु.	25	30	ज्येष्ठा	19	18	व्या.	23	10	धनु	19	18	7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	4	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	5	12	शु.	25	8	मूल	19	43	ह.	21	45	धनु			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	बुध उ.षा. में 20/18.
	6	13	श.	24	3	पू.षा.	19	25	व.	19	45	मकर	25	14	7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	भ. 24/03 बाद, सूर्य धनिष्ठा में 24/25, शनिप्रदोष व्रत,
	7	14	र.	22	20	उ.षा.	18	29	सि.	17	16	मकर			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 11/10 तक,
	8	30	चं.	20	9	श्रव.	17	3	व्य.	14	22	कुम्भ	28	11	7	14	18	0	7	9	18	1	7	12	18	9	6	42	17	43	8	पंचक प्रारम्भ 28/11, बुध मकर में 27/06, सोमवती (A)
माघ शुक्ल	9	1	मं	17	36	धनि.	15	16	व.	11	9	कुम्भ			7	13	18	1	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	9	माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, शुक्र उ.षा. में (B)
	10	2	बु.	14	52	शत.	13	15	प./	7	44	मीन	29	41	7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	
									शि.	28	14																					
	11	3	गु.	12	3	पू.भा.	11	9	सि.	24	44	मीन			7	11	18	2	7	7	18	4	7	10	18	12	6	40	17	45	11	भ. 22/40 बाद, गौरीतृतीया(गौंतरी), वरद–तिल–कुन्दचतुर्थी,
	12	4/	शु.	9	17	उ.भा.	9	7	सा.	21	20	मीन			7	10	18	3	7	6	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	12	भ. 9/17 तक, शुक्र मकर में 14/49, श्री(लक्ष्मी)पंचमी, (C)
		5		30	40																											पंचमी तिथिक्षय,
	13	6	श.	28	17	रेव./	7	12	शु.	18	5	मेष	7	12	7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	पंचक समाप्त 7/12, सं. सूर्य कुम्भ में 14/25, मु. 30, (D)
						अश्वि.	29	32																								
	14	7	र.	26	11	भर.	28	10	शु.	15	3	मेष			7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	38	17	47	14	भ. 26/11 बाद, रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य– (E)
	15	8	चं.	24	27	कृत्ति.	27	9	ब्र.	12	17	वृष	9	53	7	8	18	6	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	15	भ. 13/19 तक, भीष्माष्टमी,
	16	9	मं.	23	4	रोहि.	26	29	ऐं.	9	48	वृष			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	16	गुप्त नवरात्र समाप्त
	17	10	बु.	22	6	मृग.	26	14	वै./	7	38	मिथुन	14	19	7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	बुध श्रवण में 8/09, वक्री गुरु पू.फा. 4 में 25/01,
									वि.	29	48																					
	18	11	गु.	21	33	आर्द्रा	26	23	प्री.	28	17	मिथुन			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	18	भ. 9/49 से 21/33 तक, जया एकादशी व्रत, (स.),
	19	12	शु.	21	26	पुन.	26	58	आ.	27	7	कर्क	20	47	7	4	18	9	7	1	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	सूर्य सायन मीन में 11/04, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, सूर्य शत. (F)
	20	13	श.	21	46	पुष्य	27	59	सौ.	26	17	कर्क			7	3	18	10	7	0	18	10	7	3	18	18	6	33	17	50	20	मंगल वृश्चिक में 16/39, शुक्र श्रवण में 17/02, (G)
	21	14	र.	22	34	आश्ले.	29	27	शो.	25	49	सिंह	29	27	7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	32	17	51	21	भ. 22/34 बाद,
	22	15	चं.	23	50	मघा	—	—	अ.	25	43	सिंह			7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	31	17	52	22	भ. 11/12 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीगुरुरविदास (H)
फाल्गुन कृष्ण	23	1	मं.	25	32	मघा	7	22	सु.	25	57	सिंह			7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	31	17	52	23	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	24	2	बु.	27	39	पू.फा.	9	42	धृ.	26	29	कन्या	16	20	6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	
	25	3	गु.	30	5	उ.फा.	12	24	शू.	27	15	कन्या			6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	25	भ. 16/52 से 30/05 तक,
	26	4	शु.	—	—	हस्त	15	21	गं.	28	11	तुला	28	54	6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	बुध धनि. में 16/54, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	27	4	श.	8	42	चित्रा	18	27	वृ	29	10	तुला			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	
	28	5	र.	11	21	स्वाती	21	30	ध्रु.	30	2	तुला			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	मंगल अनु. में 15/20,
	29	6	चं.	13	48	विशा.	24	17	व्या.	30	39	वृश्चिक	17	37	6	54	18	16	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	29	भ. 13/48 से 26/50 तक,

(A) अमावस, मौनी अमावस, महोदययोग (सूर्योदय से 14 घ. 22 मि तक). (B) 22/03, यूरेनस रेवती 3 में 15/03, गुप्तनवरात्र प्रारम्भ, (C) वसन्त पंचमी, श्रीलक्ष्मी–सरस्वतीपूजन, (D) पुण्यकाल 8/01 बाद, (E) सप्तमी, (F) में 28/53, भीष्म द्वादशी, (G) शनिप्रदोष व्रत, (H) जयन्ती, माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त,

श्री वि. सं 2072 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — मार्च, सन् 2016 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं	मि.		घ.	मि		घं.	मि	घं.	मि	घं	मि	घ.	मि.	घ.	मि	घ.	मि	घ.	मि	घं.	मि.	घं.	मि		
फाल्गुन कृष्ण	1	7	मं.	15	51	अनु.	26	37	ह	--	-	वृश्चिक			6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	1	बुध कुम्भ में 24/10.
	2	8	बु.	17	20	ज्येष्ठा	28	20	ह./	6	53	धनु	28	20	6	51	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	2	शुक्र धनि में 11/48.
									व.	30	37																					
	3	9	गु.	18	5	मूल	29	19	सि.	29	45	धनु			6	50	18	19	6	48	18	18	6	52	18	25	6	23	17	57	3	भ 30/03 बाद.
	4	10	शु.	18	2	पू.षा.	29	31	व्य.	28	15	धनु			6	49	18	19	6	47	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	4	भ 18/02 तक, सूर्य पूभा में 11/1!
	5	11	श.	17	11	उ.षा.	28	58	व.	26	9	मकर	11	27	6	48	18	20	6	46	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	5	बुध शत में 26/43, विजया एकादशी व्रत (स.).
	6	12	र.	15	36	श्रव.	27	42	प.	23	28	मकर			6	47	18	21	6	44	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	प्रदोषव्रत.
	7	13	चं.	13	21	धनि.	25	52	शि.	20	18	कुम्भ	14	51	6	46	18	21	6	43	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	भ 13/21 से 23/58 तक, पंचक प्रारम्भ 14/51, (A)
	8	14	मं.	10	34	शत.	23	36	सि.	16	44	कुम्भ			6	45	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	18	18	0	8	ग्रहणवेध.
	9	30/	बु.	7	24	पू.भा.	21	2	सा	12	54	मीन	15	41	6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	बुध पूर्व में अस्त 6/43, खण्डग्रास सूर्यग्रहण (B)
फाल्गुन शुक्ल	10	1 / 2	गु.	28 / 24	1 / 34	उ.भा.	18	21	शु./	8	54	मीन			6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय, चन्द्रदर्शन, मु 30, ग्रहणवेध, अवतारदिन श्री रामकृष्ण परमहंस.
									शु.	28	53																					
	11	3	शु.	21	12	रेव.	15	42	ब्र.	24	58	मेष	15	42	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	30	6	15	18	1	11	पंचक समाप्त 15/42, ग्रहणवेध, .
	12	4	श	18	3	अश्वि.	13	14	ऐं.	21	15	मेष			6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	भ 7/37 से 18/03 तक, शुक्र शत. में 30/25, ग्रहणवेध.
	13	5	र.	15	16	भर.	11	7	वै.	17	51	वृष	16	39	6	39	18	25	6	37	18	25	6	42	18	31	6	13	18	2	13	बुध पूभा में 19/28.
	14	6	चं	12	57	कृत्ति.	9	27	वि.	14	51	वृष			6	37	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	सं. सूर्य मीन में 11/17, मु. 45, पुण्यकाल 17/41 तक,
	15	7	मं.	11	12	रोहि.	8	19	प्री	12	18	मिथुन	19	58	6	36	18	27	6	34	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	भ 11/12 से 22/38 तक, वक्री गुरु पू.फा. 3 में 12/35,
	16	8	बु.	10	3	मृग.	7	46	आ.	10	15	मिथुन			6	35	18	27	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	4	16	होलाष्टक प्रारम्भ,
	17	9	गु.	9	32	आर्द्रा	7	51	सौ.	8	41	कर्क	26	19	6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	9	18	4	17	सूर्य उ.भा. में 19/37.
	18	10	शु	9	38	पुन	8	33	शो.	7	37	कर्क			6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	8	18	5	18	भ 21/59 बाद बुध मीन में 28/37.
	19	11	श	10	20	पुष्य	9	49	अ.	7	0	कर्क			6	31	18	29	6	30	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	19	भ 10/20 तक, आमला एकादशी व्रत (स.).
	20	12	र	11	32	आश्ले.	11	34	सु	6	48	सिंह	11	34	6	30	18	30	6	29	18	29	6	34	18	34	6	5	18	5	20	सूर्य सायन मेष में 10/00, उत्तरगोल प्रारम्भ, (C)
	21	13	च.	13	11	मघा	13	46	धृ.	6	57	सिंह			6	29	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	21	
	22	14	मं.	15	13	पू.फा	16	18	शू.	7	24	कन्या	22	59	6	28	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	6	22	भ. 15/13 से 28/22 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	23	15	बु.	17	30	उ.फा.	19	7	ग	8	4	कन्या			6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	23	शुक्र पूभा में 25/12, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, (D)
चैत्र कृष्ण	24	1	गु.	20	0	हस्त	22	6	वृ	8	55	कन्या			6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	24	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होलामेला (E)
	25	2	शु.	22	35	चित्रा	25	10	ध्रु	9	52	तुला	11	38	6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	0	18	8	25	शनि वक्री 15/21
	26	3	श.	25	9	स्वाती	28	12	व्या	10	50	तुला			6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	भ. 11/52 से 25/09 तक,
	27	4	र	27	34	विशा.	--	--	ह.	11	46	वृश्चिक	24	23	6	21	18	34	6	21	18	33	6	27	18	38	5	58	18	9	27	बुध रेव. में 14/18, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत.
	28	5	च	29	41	विशा.	7	5	व	12	32	वृश्चिक			6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	28	
	29	6	मं.	--	--	अनु.	9	40	सि	13	3	वृश्चिक			6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	9	29	
	30	6	बु.	7	22	ज्येष्ठा	11	49	व्य.	13	12	धनु	11	49	6	18	18	36	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	30	भ 7/22 से 19/55 तक,
	31	7	गु	8	28	मूल	13	23	व	12	53	धनु			6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	31	सूर्य रेव में 6/32, शुक्र मीन में 27/24, मेला (F)

सूर्यग्रहण -9 मार्च देखें पृ 20

होलाष्टक 16 से 23 मार्च

होलिकादहन विशेष लेख देखें पृष्ट 285..

(A) शुक्र कुम्भ में 21/06, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, (B) (भारत के अधिकतर भाग में दृश्य) (देखें पृ 20), (C) महाविषुवदिन, बुध उ.भा. में 22/06, गोविन्द द्वादशी, प्रदोषव्रत, (D) होलिकादहन (देखें पृ285), होलाष्टक समाप्त, (E) श्री आनन्दपुर साहिब(पं), (F) श्रीशीतलामाता (कुराली) पंजाब.

श्री वि. सं 2072 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) अप्रैल, सन् 2016 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.		
चैत्र कृष्ण	1	8	शु.	8	54	पू.षा.	14	17	प.	12	3	मकर	20	23	6	15	18	38	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	राहु पू.फा. 4, केतु पू.भा. 2 में 23/52, प्लूटो पू.षा. 4 (A)
	2	9	श.	8	34	उ.षा.	14	26	शि.	10	36	मकर			6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	2	भ. 20/01 बाद, बुध अश्विनी मेष में 27/44,
	3	10/	र.	7	28	श्रव.	13	50	सि./	8	33	कुम्भ	25	15	6	13	18	39	6	12	18	36	6	19	18	41	5	51	18	12	3	भ. 7/28तक, पंचक प्रारम्भ 25/15, शुक्र उ.भा. में (B)
		11		29	37				सा.	29	55																					एकादशी तिथिक्षय,
	4	12	चं.	27	7	धनि.	12	31	शु.	26	44	कुम्भ			6	12	18	39	6	11	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	4	पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.),
	5	13	मं.	24	4	शत.	10	34	शु.	23	7	मीन	26	47	6	10	18	40	6	10	18	38	6	17	18	42	5	49	18	12	5	भ. 24/04 बाद, बुध पश्चिम में उदित 18/40, (C)
	6	14	बु.	20	37	पू.भा./	8	8	ब्र.	19	8	मीन			6	9	18	41	6	9	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	6	भ. 10/21 तक, मेला पिहोवातीर्थ (हरि.),
						उ.भा.	29	20																								
	7	30	गु.	16	54	रेव.	26	21	ऐं.	14	57	मेष	26	21	6	8	18	41	6	8	18	39	6	15	18	43	5	47	18	13	7	पंचक समाप्त 26/21, चान्द्र संवत्सर 2072 वि. पूर्ण,

(A) में 17/04, श्रीशीतलाष्टमी, (B) 20/08, नेप्च्यून शत. 4 में 17/24, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.), (C) भौमप्रदोषव्रत, वारुणीयोग (10घं. 34मि. तक),

पता– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil, अभिजित् प्रकाशन, कोठी न 59, सेक्टर 6, P. O. पचकूला 134 109, (हरियाणा) Phone :- 0172- 256 5303

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2015 ई.

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2015 ई.

जनवरी 2015 ई.	चन्द्र नक्षत्रचरण / नक्षत्र	1 घं.	1 मि.	2 घं.	2 मि.	3 घं.	3 मि.	4 घं.	4 मि.
1	कृत्ति.	5	43	11	47	17	52	23	59
2/ 3	रोहि.	6	8	12	17	18	28	0	40
3/ 4	मृग.	6	53	13	8	19	24	1	42
4/ 5	आर्द्रा	8	1	14	21	20	43	3	6
5/ 6	पुन.	9	31	15	58	22	26	4	55
6/ 7	पुष्य	11	26	17	59	0	33	7	9
7/ 8	आश्ले.	13	46	20	25	3	5	9	46
8/ 9	मघा	16	28	23	12	5	57	12	42
9/10	पू.फा.	19	28	2	15	9	2	15	49
10/11	उ.फा.	22	36	5	23	12	10	18	56
12	हस्त	1	40	8	24	15	7	21	47
13/14	चित्रा	4	26	11	3	17	38	0	10
14/15	स्वाती	6	39	13	6	19	30	1	51
15/16	विशा.	8	9	14	24	20	35	2	43
16/17	अनु.	8	48	14	50	20	48	2	44
17/18	ज्येष्ठा	8	36	14	25	20	11	1	54
18/19	मूल	7	34	13	12	18	47	0	20
19	पू.षा.	5	51	11	20	16	47	22	12
20	उ.षा.	3	36	8	58	14	19	19	40
21	श्रव.	0	59	6	18	11	36	16	55
21/22	धनि.	22	13	3	31	8	50	14	9
22/23	शत.	19	28	0	48	6	9	11	32
23/24	पू.भा.	16	55	22	20	3	46	9	14
24/25	उ.भा.	14	43	20	14	1	47	7	22
25/26	रेव.	12	59	18	38	0	19	6	2
26/27	अश्वि.	11	47	17	35	23	24	5	16
27/28	भर.	11	10	17	6	23	5	5	5
28/29	कृत्ति.	11	8	17	12	23	19	6	27
29/30	रोहि.	11	38	17	50	0	4	6	20
30/31	मृग.	12	37	18	56	1	17	7	39

फरवरी 2015 ई.	चन्द्र नक्षत्रचरण / नक्षत्र	1 घं.	1 मि.	2 घं.	2 मि.	3 घं.	3 मि.	4 घं.	4 मि.
31/ 1	आर्द्रा	14	3	20	28	2	55	9	23
1/ 2	पुन.	15	52	22	23	4	55	11	28
2/ 3	पुष्य	18	2	0	38	7	15	13	52
3/ 4	आश्ले.	20	31	3	11	9	52	16	34
4/ 5	मघा	23	17	6	0	12	45	19	30
6	पू.फा.	2	15	9	2	15	48	22	35
7/ 8	उ.फा.	5	22	12	9	18	56	1	43
8/ 9	हस्त	8	29	15	15	22	0	4	44
9/10	चित्रा	11	27	18	8	0	48	7	26
10/11	स्वाती	14	2	20	37	3	9	9	38
11/12	विशा.	16	5	22	30	4	51	11	10
12/13	अनु.	17	26	23	38	5	48	11	54
13/14	ज्येष्ठा	17	57	23	57	5	54	11	47
14/15	मूल	17	38	23	25	5	10	10	51
15/16	पू.षा.	16	30	22	6	3	40	9	11
16/17	उ.षा.	14	40	20	6	1	31	6	54
17/18	श्रव.	12	15	17	35	22	53	4	11
18/19	धनि.	9	27	14	43	19	58	1	12
19	शत.	6	27	11	41	16	55	22	10
20	पू.भा.	3	25	8	41	13	57	19	15
21	उ.भा.	0	34	5	53	11	15	16	38
21/22	रेव.	22	3	3	29	8	57	14	28
22/23	अश्वि.	20	0	1	35	7	13	12	52
23/24	भर.	18	35	0	19	6	7	11	57
24/25	कृत्ति.	17	49	23	45	5	43	11	43
25/26	रोहि.	17	47	23	53	6	1	12	12
26/27	मृग.	18	26	0	42	7	0	13	21
27/28	आर्द्रा	19	44	2	9	8	36	15	5

मार्च 2015 ई.	चन्द्र नक्षत्रचरण / नक्षत्र	1 घं.	1 मि.	2 घं.	2 मि.	3 घं.	3 मि.	4 घं.	4 मि.
28/ 1	पुन.	21	35	4	8	10	42	17	17
1/ 2	पुष्य	23	54	6	32	13	11	19	51
3	आश्ले.	2	33	9	15	15	58	22	42
4/ 5	मघा	5	26	12	11	18	57	1	42
5/ 6	पू.फा.	8	29	15	15	22	1	4	47
6/ 7	उ.फा.	11	34	18	20	1	6	7	51
7/ 8	हस्त	14	36	21	21	4	4	10	48
8/ 9	चित्रा	17	30	0	11	6	51	13	30
9/10	स्वाती	20	7	2	43	9	18	15	50
10/11	विशा.	22	21	4	50	11	17	17	41
12	अनु.	0	4	6	24	12	42	18	57
13	ज्येष्ठा	1	9	7	19	13	26	19	31
14	मूल	1	33	7	32	13	28	19	21
15	पू.षा.	1	12	7	1	12	46	18	29
16	उ.षा.	0	10	5	48	11	23	16	57
16/17	श्रव.	22	28	3	58	9	25	14	51
17/18	धनि.	20	15	1	38	6	59	12	19
18/19	शत.	17	38	22	56	4	13	9	30
19/20	पू.भा.	14	46	20	3	1	19	6	35
20/21	उ.भा.	11	51	17	8	22	25	3	43
21/22	रेव.	9	2	14	22	19	43	1	6
22	अश्वि.	6	29	11	55	17	22	22	52
23	भर.	4	23	9	57	15	32	21	11
24	कृत्ति.	2	51	8	35	14	21	20	10
25	रोहि.	2	1	7	55	13	53	19	53
26	मृग.	1	56	8	2	14	11	20	23
27	आर्द्रा	2	38	8	56	15	16	21	39
28	पुन.	4	4	10	32	17	2	23	35
29/30	पुष्य	6	9	12	45	19	23	2	3
30/31	आश्ले.	8	44	15	26	22	10	4	54

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2015 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	मघा	11	40	18	25	1	12	7	58
1/ 2	पू.फा.	14	45	21	32	4	19	11	5
2/ 3	उ.फा.	17	51	0	37	7	22	14	6
3/ 4	हस्त	20	50	3	33	10	15	16	55
4/ 5	चित्रा	23	35	6	13	12	51	19	26
6	स्वाती	2	1	8	34	15	6	21	36
7	विशा.	4	4	10	31	16	56	23	20
8/ 9	अनु.	5	42	12	2	18	20	0	36
9/10	ज्येष्ठा	6	51	13	3	19	14	1	22
10/11	मूल	7	29	13	34	19	36	1	37
11/12	पू.षा.	7	36	13	32	19	27	1	19
12/13	उ.षा.	7	10	12	58	18	45	0	30
13	श्रव.	6	12	11	53	17	33	23	10
14	धनि.	4	46	10	20	15	53	21	24
15	शत.	2	54	8	23	13	51	19	17
16	पू.भा.	0	43	6	8	11	32	16	55
16/17	उ.भा.	22	18	3	41	9	3	14	26
17/18	रेव.	19	48	1	11	6	34	11	58
18/19	अश्वि.	17	22	22	47	4	13	9	40
19/20	भर.	15	9	20	38	2	10	7	42
20/21	कृत्ति.	13	17	18	54	0	32	6	13
21/22	रोहि.	11	56	17	42	23	30	5	21
22/23	मृग.	11	14	17	10	23	9	5	11
23/24	आर्द्रा	11	16	17	24	23	35	5	48
24/25	पुन.	12	5	18	24	0	46	7	11
25/26	पुष्य	13	39	20	9	2	41	9	16
26/27	आश्ले.	15	53	22	31	5	12	11	54
27/28	मघा	18	37	1	21	8	7	14	53
28/29	पू.फा.	21	39	4	26	11	13	18	0
30	उ.फा.	0	46	7	32	14	17	21	2

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	हस्त	3	45	10	28	17	9	23	48
2/ 3	चित्रा	6	27	13	3	19	38	2	12
3/ 4	स्वाती	8	43	15	13	21	41	4	7
4/ 5	विशा.	10	31	16	54	23	14	5	33
5/ 6	अनु.	11	50	18	5	0	18	6	30
6/ 7	ज्येष्ठा	12	40	18	48	0	55	7	0
7/ 8	मूल	13	3	19	5	1	6	7	5
8/ 9	पू.षा.	13	2	18	58	0	53	6	47
9/10	उ.षा.	12	39	18	30	0	20	6	9
10/11	श्रव.	11	56	17	43	23	28	5	12
11/12	धनि.	10	55	16	37	22	19	3	59
12/13	शत.	9	38	15	16	20	54	2	31
13/14	पू.भा.	8	7	13	42	19	16	0	50
14	उ.भा.	6	24	11	57	17	29	23	2
15	रेव.	4	34	10	5	15	37	21	9
16	अश्वि.	2	41	8	13	13	46	19	19
17	भर.	0	52	6	26	12	1	17	37
17/18	कृत्ति.	23	14	4	52	10	31	16	12
18/19	रोहि.	21	55	3	39	9	25	15	13
19/20	मृग.	21	3	2	55	8	49	14	46
20/21	आर्द्रा	20	45	2	47	8	51	14	58
21/22	पुन.	21	8	3	20	9	35	15	53
22/23	पुष्य	22	14	4	37	11	3	17	31
24	आश्ले.	0	2	6	35	13	11	19	48
25	मघा	2	27	9	8	15	51	22	34
26/27	पू.फा.	5	19	12	5	18	51	1	37
27/28	उ.फा.	8	24	15	10	21	56	4	41
28/29	हस्त	11	26	18	9	0	52	7	33
29/30	चित्रा	14	12	20	49	3	25	9	58
30/31	स्वाती	16	30	22	59	5	26	11	51

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	विशा.	18	13	0	34	6	51	13	7
1/ 2	अनु.	19	20	1	31	7	40	13	46
2/ 3	ज्येष्ठा	19	51	1	53	7	54	13	52
3/ 4	मूल	19	49	1	45	7	38	13	31
4/ 5	पू.षा.	19	22	1	11	7	0	12	47
5/ 6	उ.षा.	18	34	0	19	6	4	11	48
6/ 7	श्रव.	17	31	23	14	4	56	10	38
7/ 8	धनि.	16	19	22	0	3	41	9	21
8/ 9	शत.	15	1	20	41	2	21	8	1
9/10	पू.भा.	13	41	19	20	1	0	6	40
10/11	उ.भा.	12	19	17	59	23	38	5	18
11/12	रेव.	10	58	16	38	22	18	3	59
12/13	अश्वि.	9	39	15	20	21	1	2	43
13/14	भर.	8	25	14	8	19	51	1	35
14/15	कृत्ति.	7	19	13	4	18	50	0	38
15	रोहि.	6	26	12	15	18	6	23	58
16	मृग.	5	51	11	46	17	42	23	41
17	आर्द्रा	5	41	11	43	17	47	23	53
18/19	पुन.	6	1	12	12	18	24	0	39
19/20	पुष्य	6	57	13	17	19	39	2	4
20/21	आश्ले.	8	30	15	0	21	31	4	5
21/22	मघा	10	40	17	18	23	57	6	38
22/23	पू.फा.	13	21	20	4	2	49	9	35
23/24	उ.फा.	16	21	23	7	5	54	12	41
24/25	हस्त	19	27	2	12	8	57	15	40
25/26	चित्रा	22	23	5	3	11	42	18	19
27	स्वाती	0	54	7	26	13	56	20	24
28	विशा.	2	49	9	11	15	31	21	48
29	अनु.	4	2	10	13	16	21	22	27
30	ज्येष्ठा	4	31	10	31	16	29	22	25

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	मूल	4	18	10	9	15	58	21	45
2	पू.षा.	3	30	9	13	14	55	20	36
3	उ.षा.	2	15	7	52	13	29	19	5
4	श्रव.	0	40	6	14	11	48	17	22
4/ 5	घनि	22	55	4	28	10	1	15	34
5/ 6	शत.	21	7	2	40	8	13	13	47
6/ 7	पू.भा.	19	22	0	57	6	32	12	8
7/ 8	उ.भा.	17	45	23	22	5	0	10	39
8/ 9	रेव.	16	19	22	0	3	41	9	23
9/10	अश्वि.	15	7	20	51	2	36	8	22
10/11	भर.	14	9	19	57	1	45	7	35
11/12	कृत्ति.	13	26	19	18	1	11	7	5
12/13	रोहि.	13	0	18	56	0	53	6	52
13/14	मृग.	12	52	18	53	0	56	7	0
14/15	आर्द्रा	13	5	19	12	1	21	7	31
15/16	पुन.	13	43	19	57	2	12	8	29
16/17	पुष्य	14	48	21	10	3	32	9	57
17/18	आश्ले.	16	24	22	53	5	24	11	56
18/19	मघा	18	31	1	7	7	45	14	25
19/20	पू.फा.	21	6	3	48	10	32	17	17
21	उ.फा	0	2	6	49	13	36	20	23
22	हस्त	3	10	9	56	16	45	23	31
23/24	चित्रा	6	16	13	1	19	44	2	25
24/25	स्वाती	9	5	15	43	22	19	4	53
25/26	विशा.	11	24	17	52	0	18	6	41
26/27	अनु.	13	1	19	18	1	32	7	42
27/28	ज्येष्ठा	13	50	19	55	1	57	7	56
28/29	मूल	13	51	19	45	1	35	7	23
29/30	पू.षा.	13	8	18	50	0	31	6	9
30/31	उ.षा.	11	45	17	20	22	52	4	23

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	श्रव.	9	53	15	21	20	49	2	15
1	धनि.	7	41	13	6	18	30	23	54
2	शत.	5	18	10	42	16	6	21	30
3	पू.भा.	2	55	8	20	13	45	19	12
4	उ.भा.	0	39	6	7	11	36	17	6
4/ 5	रेव.	22	38	4	10	9	44	15	20
5/ 6	अश्वि.	20	57	2	35	8	15	13	56
6/ 7	भर.	19	40	1	24	7	11	12	59
7/ 8	कृत्ति.	18	49	0	40	6	34	12	29
8/ 9	रोहि.	18	25	0	24	6	24	12	26
9/10	मृग.	18	29	0	35	6	42	12	50
10/11	आर्द्रा	19	1	1	13	7	26	13	41
11/12	पुन.	19	58	2	17	8	37	14	59
12/13	पुष्य	21	23	3	48	10	14	16	43
13/14	आश्ले.	23	13	5	44	12	17	18	52
15	मघा	1	28	[illegible]	5	14	44	21	24
16/17	पू.फा.	4	6	10	48	17	32	0	17
17/18	उ.फा.	7	2	13	49	20	35	3	23
18/19	हस्त	10	11	16	59	23	46	6	34
19/20	चित्रा	13	22	20	8	2	54	9	40
20/21	स्वाती	16	24	23	6	5	47	12	27
21/22	विशा.	19	4	1	39	8	12	14	43
22/23	अनु.	21	11	3	36	9	59	16	18
23/24	ज्येष्ठा	22	35	4	49	11	0	17	7
24/25	मूल	23	11	5	13	11	11	17	6
25/26	पू.षा.	22	58	4	48	10	34	16	18
26/27	उ.षा.	21	59	3	38	9	14	14	47
27/28	श्रव.	20	19	1	49	7	16	12	42
28/29	धनि.	18	7	23	30	4	52	10	12
29/30	शत.	16	32	20	51	2	9	7	27
30/31	पू.भा.	12	45	18	2	23	20	4	37

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितंबर 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	उ.भा.	9	55	15	14	20	33	1	53
1	रेव.	7	13	12	35	17	58	23	23
2	अश्वि.	4	49	10	16	15	45	21	16
3	भर.	2	48	8	23	13	59	19	38
4	कृत्ति.	1	19	7	2	12	47	18	35
5	रोहि.	0	25	6	18	12	12	18	10
6	मृग.	0	9	6	11	12	16	18	23
7	आर्द्रा	0	32	6	43	12	57	19	13
8	पुन.	1	31	7	51	14	14	20	38
9	पुष्य	3	4	9	32	16	2	22	33
10/11	आश्ले.	5	7	11	41	18	17	0	55
11/12	मघा	7	34	14	14	20	55	3	37
12/13	पू.फा.	10	20	17	4	23	49	6	34
13/14	उ.फा.	13	20	20	7	2	54	9	41
14/15	हस्त	16	29	23	17	6	4	12	52
15/16	चित्रा	19	39	2	26	9	12	15	58
16/17	स्वाती	22	42	5	26	12	9	18	51
18	विशा.	1	31	8	10	14	47	21	23
19	अनु.	3	57	10	28	16	58	23	25
20/21	ज्येष्ठा	5	50	12	12	18	32	0	49
21/22	मूल	7	4	13	15	19	24	1	30
22/23	पू.षा.	7	34	13	34	19	32	1	26
23/24	उ.षा.	7	18	13	7	18	53	0	37
24	श्रव.	6	18	11	57	17	33	23	7
25	धनि.	4	39	10	8	15	35	21	1
26	शत.	2	25	7	48	13	9	18	28
26/27	पू.भा.	23	47	5	5	10	21	15	38
27/28	उ.भा.	20	53	2	9	7	24	12	39
28/29	रेव.	17	54	23	10	4	26	9	42
29/30	अश्वि.	15	0	20	19	1	38	6	59

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	भर.	12	21	17	45	23	11	4	38
1/2	कृत्ति.	10	7	15	39	21	12	2	48
2/3	रोहि.	8	27	14	8	19	52	1	38
3/4	मृग.	7	27	13	19	19	14	1	12
4/5	आर्द्रा	7	12	13	16	19	22	1	32
5/6	पुन.	7	44	13	59	20	17	2	38
6/7	पुष्य	9	1	15	27	21	55	4	25
7/8	आश्ले.	10	57	17	32	0	8	6	47
8/9	मघा	13	26	20	7	2	50	9	34
9/10	पू.फा.	16	18	23	4	5	50	12	36
10/11	उ.फा.	19	24	2	11	8	59	15	46
11/12	हस्त	22	34	5	21	12	8	18	54
13	चित्रा	1	40	8	26	15	11	21	55
14/15	स्वाती	4	38	11	20	18	1	0	41
15/16	विशा.	7	20	13	58	20	34	3	9
16/17	अनु.	9	43	16	15	22	46	5	14
17/18	ज्येष्ठा	11	42	18	7	0	31	6	52
18/19	मूल	13	12	19	30	1	45	7	59
19/20	पू.षा.	14	10	20	19	2	26	8	31
20/21	उ.षा.	14	33	20	33	2	31	8	26
21/22	श्रव.	14	19	20	10	1	58	7	44
22/23	धनि.	13	28	19	10	0	49	6	27
23/24	शत.	12	2	17	35	23	7	4	36
24/25	पू.भा.	10	4	15	31	20	56	2	19
25	उ.भा.	7	42	13	3	18	23	23	43
26	रेव.	5	1	10	19	15	37	20	55
27	अश्वि.	2	13	7	30	12	48	18	6
27/28	भर.	23	25	4	45	10	5	15	27
28/29	कृत्ति.	20	50	2	14	7	40	13	7
29/30	रोहि.	18	37	0	8	5	42	11	18
30/31	मृग.	16	56	22	37	4	21	10	8

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवंबर 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	आर्द्रा	15	57	21	50	3	45	9	44
1/2	पुन.	15	46	21	50	3	59	10	10
2/3	पुष्य	16	24	22	42	5	2	11	26
3/4	आश्ले.	17	52	0	21	6	53	13	27
4/5	मघा	20	3	2	41	9	22	16	3
5/6	पू.फा.	22	47	5	32	12	17	19	4
7	उ.फा.	1	51	8	39	15	27	22	15
8/9	हस्त	5	3	11	50	18	37	1	24
9/10	चित्रा	8	9	14	54	21	38	4	20
10/11	स्वाती	11	2	17	42	0	20	6	58
11/12	विशा.	13	34	20	8	2	41	9	12
12/13	अनु.	15	42	22	10	4	37	11	2
13/14	ज्येष्ठा	17	25	23	47	6	8	12	27
14/15	मूल	18	44	1	0	7	14	13	27
15/16	पू.षा.	19	38	1	48	7	56	14	3
16/17	उ.षा.	20	8	2	12	8	14	14	14
17/18	श्रव.	20	13	2	11	8	7	14	1
18/19	धनि.	19	54	1	45	7	34	13	22
19/20	शत.	19	8	0	53	6	36	12	18
20/21	पू.भा.	17	58	23	36	5	13	10	49
21/22	उ.भा.	16	23	21	56	3	28	8	59
22/23	रेव.	14	28	19	57	1	24	6	51
23/24	अश्वि.	12	17	17	43	23	8	4	33
24/25	भर.	9	58	15	22	20	47	2	12
25	कृत्ति.	7	38	13	4	18	31	23	58
26	रोहि.	5	27	10	57	16	28	22	1
27	मृग.	3	35	9	12	14	50	20	31
28	आर्द्रा	2	13	7	58	13	46	19	36
29	पुन.	1	30	7	25	13	24	19	26
30	पुष्य	1	31	7	39	13	51	20	5

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसंबर 2015 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	आश्ले.	2	22	8	43	15	6	21	32
2	मघा	4	1	10	33	17	7	23	44
3/4	पू.फा.	6	22	13	3	19	45	2	29
4/5	उ.फा.	9	14	16	0	22	47	5	34
5/6	हस्त	12	22	19	9	1	57	8	44
6/7	चित्रा	15	30	22	16	5	0	11	43
7/8	स्वाती	18	25	1	5	7	44	14	20
8/9	विशा.	20	55	3	28	10	0	16	29
9/10	अनु.	22	56	5	21	11	44	18	5
11	ज्येष्ठा	0	24	6	41	12	56	19	9
12	मूल	1	20	7	30	13	38	19	45
13	पू.षा.	1	50	7	53	13	56	19	57
14	उ.षा.	1	56	7	54	13	52	19	48
15	श्रव.	1	43	7	37	13	31	19	23
16	धनि.	1	14	7	5	12	55	18	44
17	शत.	0	32	6	20	12	6	17	52
17/18	पू.भा.	23	37	5	22	11	6	16	49
18/19	उ.भा.	22	31	4	12	9	53	15	33
19/20	रेव.	21	13	2	52	8	30	14	8
20/21	अश्वि.	19	45	1	21	6	58	12	33
21/22	भर.	18	9	23	44	5	19	10	54
22/23	कृत्ति.	16	29	22	5	3	40	9	16
23/24	रोहि.	14	52	20	29	2	6	7	45
24/25	मृग.	13	24	19	4	0	46	6	29
25/26	आर्द्रा	12	13	18	0	23	48	5	37
26/27	पुन.	11	29	17	23	23	19	5	18
27/28	पुष्य	11	19	17	22	23	29	5	37
28/29	आश्ले.	11	49	18	3	0	20	6	40
29/30	मघा	13	2	19	27	1	55	8	25
30/31	पू.फा.	14	58	21	33	4	10	10	49

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	उ.फा.	17	30	0	12	6	56	13	41
1/ 2	हस्त	20	27	3	13	10	0	16	47
2/ 3	चित्रा	23	34	6	21	13	7	19	52
4	स्वाती	2	36	9	19	16	0	22	39
5/ 6	विशा.	5	17	11	52	18	26	0	57
6/ 7	अनु.	7	26	13	52	20	16	2	37
7/ 8	ज्येष्ठा	8	56	15	12	21	26	3	38
8/ 9	मूल	9	47	15	54	21	58	4	0
9/10	पू.षा.	10	0	15	58	21	54	3	49
10/11	उ.षा.	9	41	15	32	21	22	3	10
11/12	श्रव.	8	57	14	43	20	28	2	11
12/13	धनि.	7	54	13	36	19	18	0	59
13	शत.	6	39	12	19	17	59	23	39
14	पू.भा.	5	18	10	57	16	37	22	16
15	उ.भा.	3	55	9	34	15	13	20	53
16	रेव.	2	32	8	12	13	52	19	32
17	अश्वि.	1	13	6	53	12	34	18	16
17/18	भर.	23	57	5	39	11	21	17	4
18/19	कृत्ति.	22	47	4	31	10	15	16	0
19/20	रोहि.	21	45	3	31	9	18	15	5
20/21	मृग.	20	54	2	43	8	33	14	24
21/22	आर्द्रा	20	17	2	10	8	5	14	2
22/23	पुन.	19	59	1	59	8	0	14	2
23/24	पुष्य	20	7	2	13	8	21	14	31
24/25	आश्ले.	20	44	2	58	9	14	15	33
25/26	मघा	21	54	4	17	10	42	17	9
26/27	पू.फा.	23	39	5	11	12	44	19	20
28	उ.फा.	1	57	8	36	15	17	21	59
29/30	हस्त	4	43	11	27	18	12	0	58
30/31	चित्रा	7	45	14	32	21	18	4	5

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	स्वाती	10	51	17	36	0	21	7	4
1/ 2	विशा.	13	46	20	26	3	4	9	41
2/ 3	अनु.	16	15	22	47	5	17	11	44
3/ 4	ज्येष्ठा	18	8	0	30	6	49	13	5
4/ 5	मूल	19	18	1	28	7	36	13	41
5/ 6	पू.षा.	19	43	1	42	7	39	13	33
6/ 7	उ.षा.	19	24	1	14	7	1	12	46
7/ 8	श्रव.	18	29	0	10	5	49	11	27
8/ 9	धनि.	17	3	22	38	4	11	9	44
9/10	शत.	15	15	20	46	2	16	7	46
10/11	पू.भा.	13	15	18	44	0	12	5	41
11/12	उ.भा.	11	9	16	38	22	7	3	37
12/13	रेव.	9	6	14	37	20	8	1	40
13	अश्वि.	7	12	12	46	18	20	23	56
14	भर.	5	32	11	10	16	49	22	29
15	कृत्ति.	4	10	9	53	15	37	21	22
16	रोहि.	3	8	8	57	14	46	20	37
17	मृग.	2	29	8	23	14	19	20	16
18	आर्द्रा	2	14	8	14	14	15	20	19
19	पुन.	2	23	8	30	14	37	20	47
20	पुष्य	2	58	9	11	15	26	21	41
21	आश्ले.	3	59	10	19	16	40	23	3
22/23	मघा	5	27	11	53	18	21	0	51
23/24	पू.फा.	7	22	13	55	20	29	3	4
24/25	उ.फा.	9	42	16	20	23	0	5	41
25/26	हस्त	12	24	19	7	1	51	8	36
26/27	चित्रा	15	21	22	7	4	54	11	41
27/28	स्वाती	18	27	1	13	7	59	14	45
28/29	विशा.	21	29	4	13	10	56	17	37

(अप्रैल 2016 ई. के लिए देखें पृ. 199 पर भौगादि के साथ)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	अनु.	0	17	6	55	13	31	20	5
2	ज्येष्ठा	2	37	9	7	15	34	21	58
3	मूल	4	20	10	39	16	55	23	9
4	पू.षा.	5	19	11	27	17	31	23	33
5	उ.षा.	5	31	11	27	17	20	23	10
6	श्रव.	4	58	10	42	16	25	22	5
7	धनि.	3	42	9	18	14	51	20	22
8	शत.	1	52	7	20	12	46	18	11
8/ 9	पू.भा.	23	35	4	58	10	20	15	41
9/10	उ.भा.	21	2	2	22	7	41	13	1
10/11	रेव.	18	20	23	40	5	0	10	20
11/12	अश्वि.	15	42	21	3	2	26	7	50
12/13	भर.	13	14	18	40	0	8	5	36
13/14	कृत्ति.	11	7	16	39	22	13	3	49
14/15	रोहि.	9	26	15	6	20	48	2	32
15/16	मृग.	8	18	14	7	19	58	1	51
16/17	आर्द्रा	7	46	13	44	19	44	1	47
17/18	पुन.	7	51	13	58	20	8	2	19
18/19	पुष्य	8	33	14	49	21	7	3	27
19/20	आश्ले.	9	48	16	12	22	38	5	5
20/21	मघा	11	34	18	5	0	37	7	11
21/22	पू.फा.	13	46	20	22	3	0	9	39
22/23	उ.फा.	16	18	22	59	5	41	12	23
23/24	हस्त	19	7	1	51	8	35	15	20
24/25	चित्रा	22	6	4	52	11	38	18	24
26	स्वाती	1	10	7	56	14	42	21	27
27/28	विशा.	4	12	10	56	17	40	0	23
28/29	अनु.	7	5	13	46	20	25	3	3
29/30	ज्येष्ठा	9	40	16	15	22	48	5	20
30/31	मूल	11	49	18	16	0	41	7	3

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 5"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h-GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	41	19	8	16	9	46	0	26	33	3	9	26	58	59	8	29	35	14	3	27	41	26	9	2	39	17	7	6	47	54	5	20	52	10	5	21	22	13	-23	2	15	6	-2	54
2	6	45	16	8	17	10	54	1	9	39	32	9	27	45	57	9	1	10	16	3	27	36	57	9	3	54	27	7	6	53	56	5	20	48	59	5	21	15	34	-22	58	17	12	-3	45
3	6	49	12	8	18	12	2	1	22	35	19	9	28	32	55	9	2	44	47	3	27	32	17	9	5	9	36	7	6	59	55	5	20	45	48	5	21	5	43	-22	52	18	23	-4	24
4	6	53	9	8	19	13	10	2	5	20	25	9	29	19	54	9	4	18	37	3	27	27	27	9	6	24	45	7	7	5	50	5	20	42	37	5	20	53	11	-22	46	18	37	-4	49
5	6	57	6	8	20	14	18	2	17	54	38	10	0	6	52	9	5	51	34	3	27	22	28	9	7	39	53	7	7	11	43	5	20	39	26	5	20	38	55	-22	40	17	56	-4	59
6	7	1	2	8	21	15	26	3	0	17	45	10	0	53	51	9	7	23	25	3	27	17	18	9	8	55	0	7	7	17	32	5	20	36	16	5	20	24	11	-22	33	16	24	-4	55
7	7	4	59	8	22	16	34	3	12	30	3	10	1	40	49	9	8	53	54	3	27	12	0	9	10	10	6	7	7	23	17	5	20	33	5	5	20	10	16	-22	26	14	9	-4	38
8	7	8	55	8	23	17	41	3	24	32	27	10	2	27	47	9	10	22	43	3	27	6	32	9	11	25	12	7	7	29	0	5	20	29	54	5	19	58	17	-22	18	11	19	-4	8
9	7	12	52	8	24	18	49	4	6	26	47	10	3	14	46	9	11	49	29	3	27	0	55	9	12	40	17	7	7	34	39	5	20	26	43	5	19	49	1	-22	10	8	3	-3	27
10	7	16	48	8	25	19	57	4	18	15	48	10	4	1	44	9	13	13	48	3	26	55	9	9	13	55	21	7	7	40	14	5	20	23	32	5	19	42	44	-22	2	4	30	-2	38
11	7	20	45	8	26	21	4	5	0	3	12	10	4	48	42	9	14	35	11	3	26	49	14	9	15	10	24	7	7	45	46	5	20	20	22	5	19	39	18	-21	53	0	47	-1	42
12	7	24	41	8	27	22	12	5	11	53	34	10	5	35	40	9	15	53	6	3	26	43	11	9	16	25	27	7	7	51	14	5	20	17	11	5	19	38	2	-21	44	-3	0	-0	41
13	7	28	38	8	28	23	20	5	23	52	4	10	6	22	37	9	17	6	57	3	26	37	0	9	17	40	29	7	7	56	38	5	20	14	0	5	19	37	57	-21	34	-6	41	0	23
14	7	32	35	8	29	24	27	6	6	4	14	10	7	9	35	9	18	16	2	3	26	30	41	9	18	55	30	7	8	1	59	5	20	10	49	5	19	37	53	-21	24	-10	10	1	26
15	7	36	31	9	0	25	35	6	18	35	35	10	7	56	32	9	19	19	38	3	26	24	14	9	20	10	30	7	8	7	15	5	20	7	38	5	19	36	38	-21	13	-13	18	2	27
16	7	40	28	9	1	26	42	7	1	31	1	10	8	43	29	9	20	16	55	3	26	17	39	9	21	25	30	7	8	12	28	5	20	4	28	5	19	33	17	-21	2	-15	52	3	23
17	7	44	24	9	2	27	49	7	14	54	11	10	9	30	25	9	21	7	3	3	26	10	57	9	22	40	29	7	8	17	37	5	20	1	17	5	19	27	17	-20	51	-17	41	4	9
18	7	48	21	9	3	28	56	7	28	46	39	10	10	17	21	9	21	49	9	3	26	4	9	9	23	55	26	7	8	22	42	5	19	58	6	5	19	18	41	-20	39	-18	32	4	43
19	7	52	17	9	4	30	3	8	13	7	2	10	11	4	17	9	22	22	20	3	25	57	13	9	25	10	23	7	8	27	42	5	19	54	55	5	19	8	6	-20	27	-18	15	5	0
20	7	56	14	9	5	31	9	8	27	50	39	10	11	51	11	9	22	45	46	3	25	50	11	9	26	25	18	7	8	32	39	5	19	51	45	5	18	56	33	-20	14	-16	45	4	58
21	8	0	10	9	6	32	14	9	12	49	44	10	12	38	6	9	22	58	41	3	25	43	4	9	27	40	13	7	8	37	31	5	19	48	34	5	18	45	21	-20	1	-14	6	4	36
22	8	4	7	9	7	33	19	9	27	54	37	10	13	24	59	9	23	0	30	3	25	35	50	9	28	55	6	7	8	42	18	5	19	45	23	5	18	35	43	-19	48	-10	29	3	54
23	8	8	4	9	8	34	23	10	12	55	22	10	14	11	52	9	22	50	50	3	25	28	32	10	0	9	58	7	8	47	1	5	19	42	12	5	18	28	34	-19	34	-6	12	2	57
24	8	12	0	9	9	35	26	10	27	43	31	10	14	58	44	9	22	29	34	3	25	21	8	10	1	24	49	7	8	51	40	5	19	39	1	5	18	24	15	-19	20	-1	36	1	48
25	8	15	57	9	10	36	28	11	12	13	11	10	15	45	35	9	21	56	55	3	25	13	39	10	2	39	38	7	8	56	14	5	19	35	51	5	18	22	31	-19	5	3	0	0	33
26	8	19	53	9	11	37	29	11	26	21	24	10	16	32	25	9	21	13	32	3	25	6	6	10	3	54	26	7	9	0	44	5	19	32	40	5	18	22	30	-18	51	7	19	-0	42
27	8	23	50	9	12	38	29	0	10	7	48	10	17	19	14	9	20	20	25	3	24	58	29	10	5	9	12	7	9	5	9	5	19	29	29	5	18	23	2	-18	36	11	8	-1	53
28	8	27	46	9	13	39	28	0	23	33	44	10	18	6	1	9	19	19	2	3	24	50	49	10	6	23	56	7	9	9	29	5	19	26	18	5	18	22	47	-18	20	14	16	-2	56
29	8	31	43	9	14	40	26	1	6	41	28	10	18	52	48	9	18	11	9	3	24	43	5	10	7	38	39	7	9	13	45	5	19	23	8	5	18	20	40	-18	4	16	35	-3	48
30	8	35	39	9	15	41	22	1	19	33	33	10	19	39	33	9	16	58	48	3	24	35	18	10	8	53	20	7	9	17	56	5	19	19	57	5	18	15	58	-17	48	18	1	-4	27
31	8	39	36	9	16	42	17	2	2	12	22	10	20	26	17	9	15	44	11	3	24	27	28	10	10	7	59	7	9	22	2	5	19	16	46	5	18	8	33	-17	32	18	31	-4	52

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 9''

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि	रा.	अं.	क.	वि	रा.	अं.	क.	वि	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	8	43	33	9	17	43	11	2	14	39	57	10	21	12	59	9	14	29	30	3	24	19	37	10	11	22	36	7	9	26	3	5	19	13	35	5	17	58	45	-17	15	18	6	-5	3
2	8	47	29	9	18	44	4	2	26	57	51	10	21	59	40	9	13	16	50	3	24	11	43	10	12	37	11	7	9	29	59	5	19	10	25	5	17	47	23	-16	58	16	51	-5	0
3	8	51	26	9	19	44	56	3	9	7	16	10	22	46	19	9	12	8	2	3	24	3	47	10	13	51	45	7	9	33	50	5	19	7	14	5	17	35	29	-16	41	14	51	-4	43
4	8	55	22	9	20	45	47	3	21	9	15	10	23	32	57	9	11	4	39	3	23	55	51	10	15	6	16	7	9	37	36	5	19	4	3	5	17	24	9	-16	23	12	13	-4	14
5	8	59	19	9	21	46	36	4	3	4	55	10	24	19	34	9	10	7	55	3	23	47	53	10	16	20	46	7	9	41	17	5	19	0	52	5	17	14	23	-16	5	9	7	-3	33
6	9	3	15	9	22	47	24	4	14	55	45	10	25	6	9	9	9	18	41	3	23	39	55	10	17	35	13	7	9	44	53	5	18	57	42	5	17	6	51	-15	47	5	40	-2	43
7	9	7	12	9	23	48	12	4	26	43	46	10	25	52	42	9	8	37	30	3	23	31	56	10	18	49	39	7	9	48	23	5	18	54	31	5	17	1	55	-15	28	2	0	-1	47
8	9	11	8	9	24	48	58	5	8	31	39	10	26	39	14	9	8	4	38	3	23	23	57	10	20	4	2	7	9	51	49	5	18	51	20	5	16	59	29	-15	10	-1	44	-0	46
9	9	15	5	9	25	49	43	5	20	22	52	10	27	25	44	9	7	40	5	3	23	15	59	10	21	18	24	7	9	55	9	5	18	48	9	5	16	59	8	-14	51	-5	25	0	18
10	9	19	2	9	26	50	27	6	2	21	33	10	28	12	13	9	7	23	45	3	23	8	2	10	22	32	43	7	9	58	24	5	18	44	59	5	17	0	6	-14	31	-8	55	1	22
11	9	22	58	9	27	51	11	6	14	32	23	10	28	58	40	9	7	15	18	3	23	0	6	10	23	47	0	7	10	1	33	5	18	41	48	5	17	1	28	-14	12	-12	6	2	23
12	9	26	55	9	28	51	53	6	27	0	20	10	29	45	6	9	7	14	23	3	22	52	11	10	25	1	16	7	10	4	37	5	18	38	37	5	17	2	15	-13	52	-14	49	3	19
13	9	30	51	9	29	52	34	7	9	50	18	11	0	31	29	9	7	20	35	3	22	44	18	10	26	15	29	7	10	7	36	5	18	35	26	5	17	1	42	-13	32	-16	53	4	7
14	9	34	48	10	0	53	14	7	23	6	29	11	1	17	52	9	7	33	26	3	22	36	27	10	27	29	40	7	10	10	29	5	18	32	16	5	16	59	18	-13	12	-18	7	4	43
15	9	38	44	10	1	53	53	8	6	51	41	11	2	4	12	9	7	52	27	3	22	28	39	10	28	43	49	7	10	13	16	5	18	29	5	5	16	54	59	-12	52	-18	21	5	5
16	9	42	41	10	2	54	33	8	21	6	21	11	2	50	31	9	8	17	12	3	22	20	53	10	29	57	56	7	10	15	58	5	18	25	54	5	16	49	8	-12	31	-17	28	5	8
17	9	46	37	10	3	55	7	9	5	47	48	11	3	36	48	9	8	47	15	3	22	13	11	11	1	12	0	7	10	18	34	5	18	22	43	5	16	42	26	-12	10	-15	24	4	52
18	9	50	34	10	4	55	42	9	20	49	58	11	4	23	3	9	9	22	10	3	22	5	32	11	2	26	2	7	10	21	4	5	18	19	33	5	16	35	48	-11	49	-12	16	4	16
19	9	54	31	10	5	56	15	10	6	3	55	11	5	9	16	9	10	1	34	3	21	57	58	11	3	40	1	7	10	23	29	5	18	16	22	5	16	30	6	-11	28	-8	17	3	21
20	9	58	27	10	6	56	47	10	21	19	7	11	5	55	27	9	10	45	7	3	21	50	27	11	4	53	58	7	10	25	47	5	18	13	11	5	16	26	3	-11	7	-3	44	2	12
21	10	2	24	10	7	57	17	11	6	25	15	11	6	41	37	9	11	32	27	3	21	43	1	11	6	7	52	7	10	28	0	5	18	10	0	5	16	23	55	-10	45	1	1	0	54
22	10	6	20	10	8	57	46	11	21	13	51	11	7	27	44	9	12	23	19	3	21	35	40	11	7	21	43	7	10	30	8	5	18	6	50	5	16	23	35	-10	23	5	37	-0	26
23	10	10	17	10	9	58	13	0	5	39	16	11	8	13	49	9	13	17	24	3	21	28	25	11	8	35	32	7	10	32	9	5	18	3	39	5	16	24	34	-10	2	9	46	-1	43
24	10	14	13	10	10	58	38	0	19	38	57	11	8	59	52	9	14	14	30	3	21	21	15	11	9	49	17	7	10	34	4	5	18	0	28	5	16	26	6	-9	40	13	13	-2	52
25	10	18	10	10	11	59	1	1	3	12	54	11	9	45	52	9	15	14	22	3	21	14	10	11	11	3	0	7	10	35	53	5	17	57	17	5	16	27	22	-9	17	15	51	-3	48
26	10	22	6	10	12	59	22	1	16	23	1	11	10	31	51	9	16	16	51	3	21	7	12	11	12	16	39	7	10	37	37	5	17	54	7	5	16	27	40	-8	55	17	33	-4	31
27	10	26	3	10	13	59	41	1	29	12	15	11	11	17	47	9	17	21	44	3	21	0	21	11	13	30	15	7	10	39	14	5	17	50	56	5	16	26	33	-8	33	18	17	-4	59
28	10	30	0	10	14	59	58	2	11	44	2	11	12	3	40	9	18	28	52	3	20	53	36	11	14	43	48	7	10	40	46	5	17	47	45	5	16	23	52	-8	10	18	7	-5	12

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 12"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 33 56	10 16 0 13	2 24 1 50	11 12 49 31	9 19 38 9	3 20 46 58	11 15 57 17	7 10 42 11	5 17 44 35	5 16 19 49	- 7 47	17 5	- 5 10
2	10 37 53	10 17 0 26	3 6 8 54	11 13 35 20	9 20 49 25	3 20 40 27	11 17 10 43	7 10 43 31	5 17 41 24	5 16 14 49	- 7 25	15 18	- 4 54
3	10 41 49	10 18 0 37	3 18 8 2	11 14 21 6	9 22 2 35	3 20 34 4	11 18 24 5	7 10 44 45	5 17 38 13	5 16 9 29	- 7 2	12 53	- 4 26
4	10 45 46	10 19 0 46	4 0 1 42	11 15 6 50	9 23 17 32	3 20 27 48	11 19 37 24	7 10 45 52	5 17 35 2	5 16 4 23	- 6 39	9 56	- 3 46
5	10 49 42	10 20 0 54	4 11 52 0	11 15 52 31	9 24 34 11	3 20 21 40	11 20 50 39	7 10 46 53	5 17 31 52	5 16 0 3	- 6 16	6 36	- 2 57
6	10 53 39	10 21 0 59	4 23 40 53	11 16 38 9	9 25 52 29	3 20 15 41	11 22 3 51	7 10 47 49	5 17 28 41	5 15 56 54	- 5 52	3 0	- 2 0
7	10 57 35	10 22 1 3	5 5 30 18	11 17 23 46	9 27 12 19	3 20 9 50	11 23 16 59	7 10 48 38	5 17 25 30	5 15 55 6	- 5 29	- 0 42	- 0 57
8	11 1 32	10 23 1 4	5 17 22 21	11 18 9 19	9 28 33 40	3 20 4 7	11 24 30 3	7 10 49 22	5 17 22 20	5 15 54 38	- 5 6	- 4 24	0 8
9	11 5 29	10 24 1 4	5 29 19 27	11 18 54 50	9 29 56 29	3 19 58 33	11 25 43 4	7 10 49 59	5 17 19 9	5 15 55 17	- 4 43	- 7 57	1 13
10	11 9 25	10 25 1 3	6 11 24 28	11 19 40 19	10 1 20 41	3 19 53 8	11 26 56 1	7 10 50 30	5 17 15 58	5 15 56 41	- 4 19	-11 12	2 16
11	11 13 22	10 26 0 59	6 23 40 37	11 20 25 45	10 2 46 16	3 19 47 52	11 28 8 54	7 10 50 55	5 17 12 47	5 15 58 22	- 3 56	-14 1	3 14
12	11 17 18	10 27 0 54	7 6 11 30	11 21 11 9	10 4 13 12	3 19 42 45	11 29 21 43	7 10 51 14	5 17 9 37	5 15 59 53	- 3 32	-16 14	4 3
13	11 21 15	10 28 0 48	7 19 0 49	11 21 56 30	10 5 41 27	3 19 37 48	0 0 34 29	7 10 51 27	5 17 6 26	5 16 0 52	- 3 8	-17 42	4 42
14	11 25 11	10 29 0 40	8 2 11 59	11 22 41 49	10 7 11 0	3 19 33 0	0 1 47 10	7 10 51 33	5 17 3 15	5 16 1 4	- 2 45	-18 16	5 8
15	11 29 8	11 0 0 30	8 15 47 45	11 23 27 5	10 8 41 50	3 19 28 22	0 2 59 48	7 10 51 34	5 17 0 5	5 16 0 28	- 2 21	-17 48	5 17
16	11 33 4	11 1 0 18	8 29 49 23	11 24 12 19	10 10 13 56	3 19 23 55	0 4 12 22	7 10 51 28	5 16 56 54	5 15 59 13	- 1 57	-16 16	5 8
17	11 37 1	11 2 0 5	9 14 16 7	11 24 57 30	10 11 47 17	3 19 19 37	0 5 24 52	7 10 51 17	5 16 53 43	5 15 57 35	- 1 34	-13 41	4 39
18	11 40 58	11 2 59 50	9 29 4 28	11 25 42 39	10 13 21 54	3 19 15 30	0 6 37 17	7 10 50 59	5 16 50 32	5 15 55 55	- 1 10	-10 9	3 52
19	11 44 54	11 3 59 33	10 14 8 14	11 26 27 45	10 14 57 45	3 19 11 33	0 7 49 39	7 10 50 35	5 16 47 22	5 15 54 34	- 0 46	- 5 54	2 47
20	11 48 51	11 4 59 14	10 29 18 57	11 27 12 48	10 16 34 52	3 19 7 47	0 9 1 56	7 10 50 5	5 16 44 11	5 15 53 44	- 0 22	- 1 14	1 31
21	11 52 47	11 5 58 53	11 14 27 3	11 27 57 49	10 18 13 14	3 19 4 11	0 10 14 9	7 10 49 30	5 16 41 0	5 15 53 29	0 1	3 30	0 8
22	11 56 44	11 6 58 30	11 29 23 19	11 28 42 47	10 19 52 52	3 19 0 46	0 11 26 18	7 10 48 48	5 16 37 50	5 15 53 46	0 25	7 57	- 1 14
23	12 0 40	11 7 58 5	0 14 0 10	11 29 27 42	10 21 33 45	3 18 57 32	0 12 38 22	7 10 48 0	5 16 34 39	5 15 54 22	0 49	11 50	- 2 30
24	12 4 37	11 8 57 38	0 28 12 31	0 0 12 34	10 23 15 56	3 18 54 29	0 13 50 21	7 10 47 6	5 16 31 28	5 15 55 6	1 12	14 53	- 3 34
25	12 8 33	11 9 57 8	1 11 58 3	0 0 57 23	10 24 59 23	3 18 51 37	0 15 2 15	7 10 46 6	5 16 28 17	5 15 55 44	1 36	16 59	- 4 24
26	12 12 30	11 10 56 37	1 25 16 56	0 1 42 10	10 26 44 8	3 18 48 56	0 16 14 4	7 10 45 0	5 16 25 7	5 15 56 9	2 0	18 4	- 4 58
27	12 16 27	11 11 56 3	2 8 11 14	0 2 26 54	10 28 30 11	3 18 46 27	0 17 25 48	7 10 43 49	5 16 21 56	5 15 56 18	2 23	18 10	- 5 15
28	12 20 23	11 12 55 26	2 20 44 18	0 3 11 34	11 0 17 34	3 18 44 8	0 18 37 27	7 10 42 32	5 16 18 45	5 15 56 14	2 47	17 22	- 5 17
29	12 24 20	11 13 54 48	3 3 0 13	0 3 56 12	11 2 6 16	3 18 42 1	0 19 49 1	7 10 41 9	5 16 15 35	5 15 56 3	3 10	15 46	- 5 4
30	12 28 16	11 14 54 7	3 15 3 15	0 4 40 47	11 3 56 18	3 18 40 6	0 21 0 29	7 10 39 40	5 16 12 24	5 15 55 51	3 33	13 30	- 4 38
31	12 32 13	11 15 53 23	3 26 57 34	0 5 25 18	11 5 47 42	3 18 38 21	0 22 11 51	7 10 38 6	5 16 9 13	5 15 55 45	3 57	10 41	- 4 0

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 15"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	12	36	9	11	16	52	38	4	8	47	1	0	6	9	47	11	7	40	27	3	18	36	48	0	23	23	8	7	10	36	26	5	16	6	2	5	15	55	47	4	20	7	28	-3	12
2	12	40	6	11	17	51	50	4	20	35	1	0	6	54	13	11	9	34	33	3	18	35	26	0	24	34	19	7	10	34	40	5	16	2	52	5	15	55	56	4	43	3	57	-2	16
3	12	44	2	11	18	51	0	5	2	24	34	0	7	38	36	11	11	30	0	3	18	34	16	0	25	45	25	7	10	32	50	5	15	59	41	5	15	56	8	5	6	0	16	-1	15
4	12	47	59	11	19	50	8	5	14	18	13	0	8	22	55	11	13	26	47	3	18	33	17	0	26	56	24	7	10	30	53	5	15	56	30	5	15	56	17	5	29	-3	28	-0	9
5	12	51	56	11	20	49	14	5	26	18	7	0	9	7	12	11	15	24	53	3	18	32	29	0	28	7	17	7	10	28	51	5	15	53	20	5	15	56	14	5	52	-7	4	0	57
6	12	55	52	11	21	48	18	6	8	26	11	0	9	51	26	11	17	24	16	3	18	31	53	0	29	18	5	7	10	26	44	5	15	50	9	5	15	55	55	6	15	-10	26	2	2
7	12	59	49	11	22	47	20	6	20	44	10	0	10	35	37	11	19	24	52	3	18	31	27	1	0	28	46	7	10	24	32	5	15	46	58	5	15	55	16	6	37	-13	23	3	2
8	13	3	45	11	23	46	20	7	3	13	46	0	11	19	45	11	21	26	39	3	18	31	14	1	1	39	21	7	10	22	15	5	15	43	47	5	15	54	20	7	0	-15	46	3	54
9	13	7	42	11	24	45	18	7	15	56	44	0	12	3	50	11	23	29	30	3	18	31	11	1	2	49	50	7	10	19	52	5	15	40	37	5	15	53	15	7	22	-17	25	4	35
10	13	11	38	11	25	44	15	7	28	54	49	0	12	47	52	11	25	33	20	3	18	31	20	1	4	0	13	7	10	17	24	5	15	37	26	5	15	52	12	7	45	-18	12	5	3
11	13	15	35	11	26	43	9	8	12	9	44	0	13	31	51	11	27	38	1	3	18	31	40	1	5	10	29	7	10	14	51	5	15	34	15	5	15	51	23	8	7	-18	1	5	16
12	13	19	31	11	27	42	2	8	25	42	53	0	14	15	48	11	29	43	24	3	18	32	11	1	6	20	39	7	10	12	14	5	15	31	5	5	15	51	0	8	29	-16	49	5	12
13	13	23	28	11	28	40	54	9	9	35	6	0	14	59	41	0	1	49	18	3	18	32	54	1	7	30	43	7	10	9	31	5	15	27	54	5	15	51	8	8	51	-14	37	4	50
14	13	27	25	11	29	39	43	9	23	46	11	0	15	43	32	0	3	55	30	3	18	33	48	1	8	40	40	7	10	6	43	5	15	24	43	5	15	51	46	9	13	-11	30	4	10
15	13	31	21	0	0	38	31	10	8	14	31	0	16	27	20	0	6	1	46	3	18	34	53	1	9	50	30	7	10	3	51	5	15	21	32	5	15	52	43	9	34	-7	38	3	14
16	13	35	18	0	1	37	17	10	22	56	43	0	17	11	5	0	8	7	51	3	18	36	9	1	11	0	13	7	10	0	55	5	15	18	22	5	15	53	40	9	56	-3	13	2	4
17	13	39	14	0	2	36	2	11	7	47	31	0	17	54	47	0	10	13	26	3	18	37	36	1	12	9	49	7	9	57	53	5	15	15	11	5	15	54	18	10	17	1	26	0	45
18	13	43	11	0	3	34	44	11	22	40	7	0	18	38	27	0	12	18	14	3	18	39	15	1	13	19	18	7	9	54	47	5	15	12	0	5	15	54	15	10	38	6	0	-0	37
19	13	47	7	0	4	33	25	0	7	26	55	0	19	22	3	0	14	21	54	3	18	41	4	1	14	28	40	7	9	51	37	5	15	8	50	5	15	53	20	10	59	10	11	-1	56
20	13	51	4	0	5	32	3	0	22	0	29	0	20	5	36	0	16	24	8	3	18	43	4	1	15	37	55	7	9	48	23	5	15	5	39	5	15	51	31	11	20	13	40	-3	7
21	13	55	0	0	6	30	40	1	6	14	38	0	20	49	7	0	18	24	34	3	18	45	16	1	16	47	2	7	9	45	4	5	15	2	28	5	15	48	59	11	40	16	15	-4	3
22	13	58	57	0	7	29	15	1	20	5	11	0	21	32	34	0	20	22	53	3	18	47	38	1	17	56	0	7	9	41	42	5	14	59	17	5	15	46	2	12	1	17	47	-4	44
23	14	2	54	0	8	27	47	2	3	30	15	0	22	15	58	0	22	18	48	3	18	50	10	1	19	4	51	7	9	38	15	5	14	56	7	5	15	43	8	12	21	18	17	-5	8
24	14	6	50	0	9	26	18	2	16	30	15	0	22	59	19	0	24	11	59	3	18	52	54	1	20	13	34	7	9	34	45	5	14	52	56	5	15	40	43	12	41	17	47	-5	15
25	14	10	47	0	10	24	46	2	29	7	28	0	23	42	38	0	26	2	10	3	18	55	48	1	21	22	7	7	9	31	10	5	14	49	45	5	15	39	9	13	1	16	24	-5	7
26	14	14	43	0	11	23	12	3	11	25	33	0	24	25	53	0	27	49	7	3	18	58	53	1	22	30	33	7	9	27	33	5	14	46	34	5	15	38	36	13	20	14	18	-4	44
27	14	18	40	0	12	21	36	3	23	29	0	0	25	9	4	0	29	32	38	3	19	2	8	1	23	38	49	7	9	23	52	5	14	43	24	5	15	39	5	13	40	11	37	-4	9
28	14	22	36	0	13	19	58	4	5	22	39	0	25	52	13	1	1	12	29	3	19	5	33	1	24	46	56	7	9	20	7	5	14	40	13	5	15	40	23	13	59	8	28	-3	24
29	14	26	33	0	14	18	17	4	17	11	21	0	26	35	19	1	2	48	31	3	19	9	9	1	25	54	53	7	9	16	19	5	14	37	2	5	15	42	6	14	18	5	1	-2	31
30	14	30	29	0	15	16	35	4	28	59	43	0	27	18	22	1	4	20	35	3	19	12	55	1	27	2	41	7	9	12	28	5	14	33	51	5	15	43	44	14	36	1	22	-1	31

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 मई 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 18"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्यक्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	14	34	26	0	16	14	51	5	10	51	54	0	28	1	21	1	5	48	34	3	19	16	50	1	28	10	19	7	9	8	34	5	14	30	41	5	15	44	45	14	55	-2	22	-0	27
2	14	38	23	0	17	13	5	5	22	51	24	0	28	44	18	1	7	12	21	3	19	20	56	1	29	17	47	7	9	4	38	5	14	27	30	5	15	44	41	15	13	-6	3	0	39
3	14	42	19	0	18	11	16	6	5	1	5	0	29	27	11	1	8	31	50	3	19	25	12	2	0	25	4	7	9	0	38	5	14	24	19	5	15	43	9	15	31	-9	32	1	44
4	14	46	16	0	19	9	27	6	17	22	58	1	0	10	1	1	9	46	56	3	19	29	37	2	1	32	11	7	8	56	36	5	14	21	8	5	15	40	2	15	48	-12	39	2	44
5	14	50	12	0	20	7	35	6	29	58	18	1	0	52	49	1	10	57	34	3	19	34	12	2	2	39	7	7	8	52	31	5	14	17	58	5	15	35	28	16	6	-15	15	3	38
6	14	54	9	0	21	5	42	7	12	47	33	1	1	35	33	1	12	3	40	3	19	38	56	2	3	45	52	7	8	48	24	5	14	14	47	5	15	29	51	16	23	-17	9	4	22
7	14	58	5	0	22	3	47	7	25	50	40	1	2	18	15	1	13	5	9	3	19	43	50	2	4	52	27	7	8	44	14	5	14	11	36	5	15	23	48	16	40	-18	11	4	53
8	15	2	2	0	23	1	51	8	9	7	8	1	3	0	53	1	14	1	58	3	19	48	53	2	5	58	50	7	8	40	2	5	14	8	25	5	15	18	3	16	56	-18	15	5	9
9	15	5	58	0	23	59	53	8	22	36	21	1	3	43	29	1	14	54	3	3	19	54	6	2	7	5	1	7	8	35	48	5	14	5	15	5	15	13	18	17	13	-17	18	5	8
10	15	9	55	0	24	57	54	9	6	17	38	1	4	26	2	1	15	41	20	3	19	59	28	2	8	11	1	7	8	31	33	5	14	2	4	5	15	10	6	17	29	-15	21	4	50
11	15	13	52	0	25	55	54	9	20	10	20	1	5	8	32	1	16	23	46	3	20	4	59	2	9	16	48	7	8	27	15	5	13	58	53	5	15	8	36	17	44	-12	29	4	15
12	15	17	48	0	26	53	52	10	4	13	42	1	5	51	0	1	17	1	17	3	20	10	39	2	10	22	24	7	8	22	56	5	13	55	42	5	15	8	39	18	0	-8	52	3	24
13	15	21	45	0	27	51	49	10	18	26	40	1	6	33	24	1	17	33	51	3	20	16	28	2	11	27	47	7	8	18	35	5	13	52	32	5	15	9	38	18	15	-4	42	2	20
14	15	25	41	0	28	49	45	11	2	47	37	1	7	15	46	1	18	1	26	3	20	22	26	2	12	32	57	7	8	14	12	5	13	49	21	5	15	10	45	18	30	-0	13	1	7
15	15	29	38	0	29	47	39	11	17	13	53	1	7	58	5	1	18	24	1	3	20	28	32	2	13	37	54	7	8	9	49	5	13	46	10	5	15	11	4	18	44	4	18	-0	11
16	15	33	34	1	0	45	33	0	1	41	44	1	8	40	21	1	18	41	34	3	20	34	47	2	14	42	38	7	8	5	24	5	13	42	59	5	15	9	49	18	58	8	35	-1	28
17	15	37	31	1	1	43	25	0	16	6	21	1	9	22	34	1	18	54	9	3	20	41	11	2	15	47	8	7	8	0	58	5	13	39	49	5	15	6	32	19	12	12	21	-2	39
18	15	41	27	1	2	41	15	1	0	22	19	1	10	4	45	1	19	1	46	3	20	47	44	2	16	51	24	7	7	56	32	5	13	36	38	5	15	1	11	19	26	15	20	-3	39
19	15	45	24	1	3	39	4	1	14	24	15	1	10	46	53	1	19	4	31	3	20	54	24	2	17	55	25	7	7	52	4	5	13	33	27	5	14	54	7	19	39	17	21	-4	25
20	15	49	21	1	4	36	52	1	28	7	42	1	11	28	57	1	19	2	30	3	21	1	13	2	18	59	11	7	7	47	36	5	13	30	16	5	14	46	3	19	52	18	18	-4	55
21	15	53	17	1	5	34	38	2	11	29	44	1	12	10	59	1	18	55	53	3	21	8	11	2	20	2	41	7	7	43	8	5	13	27	5	5	14	37	54	20	4	18	13	-5	7
22	15	57	14	1	6	32	23	2	24	29	22	1	12	52	58	1	18	44	51	3	21	15	16	2	21	5	56	7	7	38	39	5	13	23	55	5	14	30	32	20	16	17	9	-5	3
23	16	1	10	1	7	30	6	3	7	7	33	1	13	34	54	1	18	29	38	3	21	22	29	2	22	8	54	7	7	34	11	5	13	20	44	5	14	24	40	20	28	15	16	-4	44
24	16	5	7	1	8	27	48	3	19	26	52	1	14	16	48	1	18	10	34	3	21	29	50	2	23	11	35	7	7	29	42	5	13	17	33	5	14	20	41	20	40	12	44	-4	12
25	16	9	3	1	9	25	28	4	1	31	15	1	14	58	38	1	17	47	57	3	21	37	19	2	24	13	58	7	7	25	13	5	13	14	22	5	14	18	39	20	51	9	42	-3	29
26	16	13	0	1	10	23	6	4	13	25	24	1	15	40	25	1	17	22	14	3	21	44	55	2	25	16	3	7	7	20	45	5	13	11	12	5	14	18	14	21	2	6	18	-2	38
27	16	16	56	1	11	20	43	4	25	14	31	1	16	22	10	1	16	53	49	3	21	52	39	2	26	17	49	7	7	16	17	5	13	8	1	5	14	18	49	21	12	2	41	-1	41
28	16	20	53	1	12	18	19	5	7	3	55	1	17	3	51	1	16	23	15	3	22	0	30	2	27	19	16	7	7	11	50	5	13	4	50	5	14	19	34	21	22	-1	3	-0	39
29	16	24	50	1	13	15	53	5	18	58	41	1	17	45	30	1	15	51	2	3	22	8	29	2	28	20	23	7	7	7	23	5	13	1	39	5	14	19	37	21	32	-4	46	0	25
30	16	28	46	1	14	13	25	6	1	3	24	1	18	27	5	1	15	17	44	3	22	16	35	2	29	21	9	7	7	2	58	5	12	58	28	5	14	18	7	21	41	-8	21	1	28
31	16	32	43	1	15	10	57	6	13	21	51	1	19	8	38	1	14	43	57	3	22	24	47	3	0	21	34	7	6	58	33	5	12	55	18	5	14	14	30	21	50	-11	39	2	29

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जून 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 22"

दि०	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्यक्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	16	36	39	1	16	8	27	6	25	56	44	1	19	50	8	1	14	10	16	3	22	33	7	3	1	21	37	7	6	54	9	5	12	52	7	5	14	8	29	21	59	-14	29	3	23
2	16	40	36	1	17	5	56	7	8	49	31	1	20	31	36	1	13	37	17	3	22	41	34	3	2	21	18	7	6	49	47	5	12	48	56	5	14	0	14	22	7	-16	40	4	9
3	16	44	32	1	18	3	24	7	22	0	9	1	21	13	0	1	13	5	31	3	22	50	7	3	3	20	35	7	6	45	26	5	12	45	45	5	13	50	20	22	15	-18	2	4	42
4	16	48	29	1	19	0	51	8	5	27	17	1	21	54	22	1	12	35	33	3	22	58	47	3	4	19	28	7	6	41	6	5	12	42	34	5	13	39	42	22	22	-18	26	5	0
5	16	52	25	1	19	58	17	8	19	8	24	1	22	35	41	1	12	7	52	3	23	7	33	3	5	17	57	7	6	36	48	5	12	39	24	5	13	29	27	22	29	-17	46	5	2
6	16	56	22	1	20	55	43	9	3	0	20	1	23	16	58	1	11	42	54	3	23	16	27	3	6	16	1	7	6	32	32	5	12	36	13	5	13	20	40	22	35	-16	4	4	46
7	17	0	19	1	21	53	7	9	16	59	52	1	[illegible]	58	12	1	11	21	4	3	23	25	26	3	7	13	38	7	6	28	17	5	12	33	2	5	13	14	8	22	42	-13	24	4	13
8	17	4	15	1	22	50	31	10	1	4	10	1	24	39	24	1	11	2	43	3	23	34	32	3	8	10	49	7	6	24	5	5	12	29	51	5	13	10	10	22	47	-9	56	3	24
9	17	8	12	1	23	47	55	10	15	11	3	1	25	20	33	1	10	48	9	3	23	43	44	3	9	7	32	7	6	19	54	5	12	26	40	5	13	8	31	22	53	-5	53	2	23
10	17	12	8	1	24	45	18	10	29	18	59	1	26	1	39	1	10	37	37	3	23	53	2	3	10	3	47	7	6	15	46	5	12	23	30	5	13	8	24	22	58	-1	31	1	13
11	17	16	5	1	25	42	40	11	13	26	52	1	26	42	43	1	10	31	18	3	24	2	26	3	10	59	33	7	6	11	40	5	12	20	19	5	13	8	41	23	2	2	58	-0	2
12	17	20	1	1	26	40	2	11	27	33	34	1	27	23	44	1	10	29	21	3	24	11	57	3	11	54	48	7	6	7	36	5	12	17	8	5	13	8	5	23	7	7	15	-1	16
13	17	23	58	1	27	37	23	0	11	37	33	1	28	4	43	1	10	31	52	3	24	21	33	3	12	49	33	7	6	3	36	5	12	13	57	5	13	5	30	23	10	11	8	-2	25
14	17	27	54	1	28	34	44	0	25	36	39	1	28	45	40	1	10	38	54	3	24	31	15	3	13	43	44	7	5	59	37	5	12	10	46	5	13	0	15	23	14	14	22	-3	25
15	17	31	51	1	29	32	5	1	9	27	58	1	29	26	34	1	10	50	31	3	24	41	3	3	14	37	23	7	5	55	42	5	12	7	36	5	12	52	14	23	17	16	44	-4	12
16	17	35	48	2	0	29	24	1	23	8	12	2	0	7	25	1	11	6	41	3	24	50	56	3	15	30	27	7	5	51	50	5	12	4	25	5	12	41	52	23	19	18	6	-4	44
17	17	39	44	2	1	26	44	2	6	34	7	2	0	48	14	1	11	27	24	3	25	0	55	3	16	22	55	7	5	48	0	5	12	1	14	5	12	30	3	23	22	18	26	-5	0
18	17	43	41	2	2	24	2	2	19	43	11	2	1	29	0	1	11	52	38	3	25	10	59	3	17	14	45	7	5	44	14	5	11	58	3	5	12	17	55	23	23	17	46	-4	59
19	17	47	37	2	3	21	20	3	2	34	3	2	2	9	44	1	12	22	19	3	25	21	9	3	18	5	57	7	5	40	31	5	11	54	52	5	12	6	39	23	25	16	12	-4	42
20	17	51	34	2	4	18	38	3	15	6	50	2	2	50	26	1	12	56	24	3	25	31	24	3	18	56	29	7	5	36	52	5	11	51	42	5	11	57	9	23	25	13	53	-4	13
21	17	55	30	2	5	15	55	3	27	23	10	2	3	31	4	1	13	34	49	3	25	41	44	3	19	46	19	7	5	33	16	5	11	48	31	5	11	50	2	23	26	11	0	-3	32
22	17	59	27	2	6	13	11	4	9	26	0	2	4	11	40	1	14	17	30	3	25	52	9	3	20	35	26	7	5	29	44	5	11	45	20	5	11	45	27	23	26	7	42	-2	42
23	18	3	23	2	7	10	26	4	21	19	23	2	4	52	14	1	15	4	23	3	26	2	39	3	21	23	47	7	5	26	15	5	11	42	9	5	11	43	4	23	26	4	8	-1	46
24	18	7	20	2	8	7	41	5	3	8	8	2	5	32	45	1	15	55	24	3	26	13	13	3	22	11	22	7	5	22	51	5	11	38	58	5	11	42	15	23	25	0	25	-0	45
25	18	11	17	2	9	4	55	5	14	57	37	2	6	13	13	1	16	50	29	3	26	23	53	3	22	58	8	7	5	19	30	5	11	35	48	5	11	42	2	23	24	-3	19	0	17
26	18	15	13	2	10	2	8	5	26	53	19	2	6	53	39	1	17	49	34	3	26	34	37	3	23	44	3	7	5	16	13	5	11	32	37	5	11	41	25	23	22	-6	57	1	20
27	18	19	10	2	10	59	21	6	9	0	32	2	7	34	3	1	18	52	36	3	26	45	26	3	24	29	6	7	5	13	1	5	11	29	26	5	11	39	24	23	20	-10	21	2	19
28	18	23	6	2	11	56	33	6	21	23	59	2	8	14	24	1	19	59	31	3	26	56	19	3	25	13	14	7	5	9	52	5	11	26	15	5	11	35	16	23	18	-13	23	3	14
29	18	27	3	2	12	53	45	7	4	7	20	2	8	54	42	1	21	10	17	3	27	7	16	3	25	56	25	7	5	6	48	5	11	23	4	5	11	28	36	23	15	-15	51	4	0
30	18	30	59	2	13	50	56	7	17	12	50	2	9	34	58	1	22	24	50	3	27	18	18	3	26	38	37	7	5	3	49	5	11	19	54	5	11	19	32	23	12	-17	35	4	35

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 27"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	18 34 56	2 14 48 8	8 0 40 50	2 10 15 12	1 23 43 8	3 27 29 24	3 27 19 48	7 5 0 53	5 11 16 43	5 11 8 38	23 8	-18 24	4 56
2	18 38 52	2 15 45 19	8 14 29 39	2 10 55 23	1 25 5 10	3 27 40 34	3 27 59 55	7 4 58 2	5 11 13 32	5 10 56 52	23 4	-18 10	5 0
3	18 42 49	2 16 42 30	8 28 35 32	2 11 35 32	1 26 30 50	3 27 51 48	3 28 38 57	7 4 55 16	5 11 10 21	5 10 45 25	23 0	-16 49	4 47
4	18 46 46	2 17 39 40	9 12 53 21	2 12 15 39	1 28 0 8	3 28 3 7	3 29 16 50	7 4 52 34	5 11 7 10	5 10 35 29	22 55	-14 25	4 15
5	18 50 42	2 18 36 51	9 27 17 19	2 12 55 43	1 29 33 0	3 28 14 29	3 29 53 33	7 4 49 57	5 11 4 0	5 10 27 56	22 50	-11 7	3 27
6	18 54 39	2 19 34 3	10 11 41 59	2 13 35 45	2 1 9 22	3 28 25 55	4 0 29 2	7 4 47 25	5 11 0 49	5 10 23 9	22 44	-7 8	2 26
7	18 58 35	2 20 31 14	10 26 3 1	2 14 15 45	2 2 49 9	3 28 37 24	4 1 3 14	7 4 44 58	5 10 57 38	5 10 20 56	22 38	-2 46	1 15
8	19 2 32	2 21 28 26	11 10 17 26	2 14 55 43	2 4 32 16	3 28 48 58	4 1 36 8	7 4 42 35	5 10 54 27	5 10 20 29	22 32	1 44	0 0
9	19 6 28	2 22 25 38	11 24 23 35	2 15 35 39	2 6 18 36	3 29 0 35	4 2 7 41	7 4 40 18	5 10 51 17	5 10 20 38	22 25	6 6	-1 14
10	19 10 25	2 23 22 50	0 8 20 42	2 16 15 33	2 8 8 2	3 29 12 15	4 2 37 48	7 4 38 6	5 10 48 6	5 10 20 6	22 18	10 5	-2 23
11	19 14 21	2 24 20 3	0 22 8 28	2 16 55 25	2 10 0 25	3 29 24 0	4 3 6 28	7 4 35 58	5 10 44 55	5 10 17 43	22 10	13 27	-3 22
12	19 18 18	2 25 17 17	1 5 46 33	2 17 35 14	2 11 55 33	3 29 35 47	4 3 33 36	7 4 33 56	5 10 41 44	5 10 12 48	22 2	16 3	-4 10
13	19 22 15	2 26 14 30	1 19 14 19	2 18 15 2	2 13 53 15	3 29 47 38	4 3 59 10	7 4 31 59	5 10 38 33	5 10 5 9	21 54	17 43	-4 43
14	19 26 11	2 27 11 45	2 2 30 47	2 18 54 47	2 15 53 15	3 29 59 32	4 4 23 7	7 4 30 7	5 10 35 23	5 9 55 10	21 45	18 24	-4 59
15	19 30 8	2 28 8 59	2 15 34 43	2 19 34 30	2 17 55 20	4 0 11 29	4 4 45 22	7 4 28 21	5 10 32 12	5 9 43 42	21 36	18 5	-5 0
16	19 34 4	2 29 6 14	2 28 25 3	2 20 14 11	2 19 59 11	4 0 23 30	4 5 5 52	7 4 26 40	5 10 29 1	5 9 31 52	21 27	16 51	-4 46
17	19 38 1	3 0 3 30	3 11 1 8	2 20 53 50	2 22 4 32	4 0 35 33	4 5 24 34	7 4 25 5	5 10 25 50	5 9 20 47	21 17	14 49	-4 18
18	19 41 57	3 1 0 46	3 23 23 7	2 21 33 27	2 24 11 3	4 0 47 39	4 5 41 23	7 4 23 35	5 10 22 39	5 9 11 24	21 7	12 8	-3 38
19	19 45 54	3 1 58 2	4 5 32 10	2 22 13 2	2 26 18 26	4 0 59 49	4 5 56 16	7 4 22 11	5 10 19 29	5 9 4 20	20 56	8 59	-2 48
20	19 49 50	3 2 55 18	4 17 30 29	2 22 52 34	2 28 26 21	4 1 12 1	4 6 9 10	7 4 20 52	5 10 16 18	5 8 59 47	20 45	5 30	-1 52
21	19 53 47	3 3 52 35	4 29 21 15	2 23 32 5	3 0 34 32	4 1 24 15	4 6 20 1	7 4 19 39	5 10 13 7	5 8 57 32	20 34	1 50	-0 51
22	19 57 44	3 4 49 51	5 11 8 32	2 24 11 33	3 2 42 41	4 1 36 32	4 6 28 44	7 4 18 31	5 10 9 56	5 8 57 1	20 22	-1 54	0 12
23	20 1 40	3 5 47 9	5 22 57 5	2 24 50 59	3 4 50 33	4 1 48 52	4 6 35 17	7 4 17 29	5 10 6 46	5 8 57 26	20 11	-5 33	1 14
24	20 5 37	3 6 44 26	6 4 52 6	2 25 30 23	3 6 57 52	4 2 1 14	4 6 39 37	7 4 16 33	5 10 3 35	5 8 57 50	19 58	-9 0	2 14
25	20 9 33	3 7 41 44	6 16 58 58	2 26 9 44	3 9 4 26	4 2 13 38	4 6 41 41	7 4 15 42	5 10 0 24	5 8 57 18	19 46	-12 9	3 9
26	20 13 30	3 8 39 2	6 29 22 52	2 26 49 4	3 11 10 5	4 2 26 5	4 6 41 26	7 4 14 58	5 9 57 13	5 8 55 9	19 33	-14 49	3 56
27	20 17 26	3 9 36 20	7 12 8 18	2 27 28 21	3 13 14 38	4 2 38 34	4 6 38 50	7 4 14 19	5 9 54 2	5 8 50 57	19 20	-16 51	4 34
28	20 21 23	3 10 33 39	7 25 18 32	2 28 7 37	3 15 17 59	4 2 51 5	4 6 33 51	7 4 13 45	5 9 50 52	5 8 44 43	19 6	-18 4	4 58
29	20 25 19	3 11 30 58	8 8 55 0	2 28 46 50	3 17 20 0	4 3 3 38	4 6 26 29	7 4 13 18	5 9 47 41	5 8 36 53	18 52	-18 18	5 6
30	20 29 16	3 12 28 18	8 22 56 46	2 29 26 1	3 19 20 36	4 3 16 13	4 6 16 42	7 4 12 56	5 9 44 30	5 8 28 13	18 38	-17 27	4 56
31	20 33 13	3 13 25 39	9 7 20 16	3 0 5 11	3 21 19 45	4 3 28 50	4 6 4 32	7 4 12 40	5 9 41 19	5 8 19 41	18 23	-15 29	4 28

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 31"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	20	37	9	3	14	23	1	9	21	59	37	3	0	44	18	3	23	17	22
2	20	41	6	3	15	20	23	10	6	47	20	3	1	23	24	3	25	13	26
3	20	45	2	3	16	17	46	10	21	35	39	3	2	2	28	3	27	7	56
4	20	48	59	3	17	15	11	11	6	17	35	3	2	41	30	3	29	0	50
5	20	52	55	3	18	12	36	11	20	47	50	3	3	20	30	4	0	52	8
6	20	56	52	3	19	10	3	0	5	3	5	3	3	59	29	4	2	41	51
7	21	0	48	3	20	7	31	0	19	1	52	3	4	38	25	4	4	29	58
8	21	4	45	3	21	5	0	1	2	43	58	3		17	20	4	6	16	29
9	21	8	42	3	22	2	31	1	16	10	1	3		56	14	4	8	1	26
10	21	12	38	3	23	0	3	1	29	20	58	3	6	35	5	4	9	44	50
11	21	16	35	3	23	57	36	2	12	17	51	3	7	13	55	4	11	26	40
12	21	20	31	3	24	55	11	2	25	1	34	3	7	52	43	4	13	6	57
13	21	24	28	3	25	52	47	3	7	32	55	3	8	31	29	4	14	45	43
14	21	28	24	3	26	50	24	3	19	52	43	3	9	10	14	4	16	22	57
15	21	32	21	3	27	48	3	4	2	1	56	3	9	48	56	4	17	58	40
16	21	36	17	3	28	45	42	4	14	1	55	3	10	27	37	4	19	32	52
17	21	40	14	3	29	43	23	4	25	54	32	3	11	6	16	4	21	5	33
18	21	44	11	4	0	41	6	5	7	42	19	3	11	44	54	4	22	36	43
19	21	48	7	4	1	38	49	5	19	28	26	3	12	23	29	4	24	6	21
20	21	52	4	4	2	36	33	6	1	16	40	3	13	2	3	4	25	34	27
21	21	56	0	4	3	34	18	6	13	11	23	3	13	40	35	4	27	1	0
22	21	59	57	4	4	32	5	6	25	17	17	3	14	19	4	4	28	25	58
23	22	3	53	4	5	29	53	7	7	39	17	3	14	57	33	4	29	49	21
24	22	7	50	4	6	27	41	7	20	22	3	3	15	35	59	5	1	11	6
25	22	11	46	4	7	25	31	8	3	29	29	3	16	14	23	5	2	31	11
26	22	15	43	4	8	23	22	8	17	4	12	3	16	52	46	5	3	49	33
27	22	19	40	4	9	21	15	9	1	6	43	3	17	31	7	5	5	6	10
28	22	23	36	4	10	19	9	9	15	34	55	3	18	9	26	5	6	20	59
29	22	27	33	4	11	17	4	10	0	23	54	3	18	47	44	5	7	33	55
30	22	31	29	4	12	15	1	10	15	26	17	3	19	26	0	5	8	44	55
31	22	35	26	4	13	12	59	11	0	33	11	3	20	4	15	5	9	53	53

तारीख	गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	4	3	41	29	4	5	49	59	7	4	12	30	5	9	38	9	5	8	12	16	18	9	-12	29	3	42
2	4	3	54	9	4	5	33	5	7	4	12	25	5	9	34	58	5	8	6	44	17	54	-8	40	2	40
3	4	4	6	52	4	5	13	53	7	4	12	27	5	9	31	47	5	8	3	25	17	38	-4	18	1	27
4	4	4	19	36	4	4	52	27	7	4	12	34	5	9	28	36	5	8	2	13	17	23	0	17	0	9
5	4	4	32	21	4	4	28	52	7	4	12	47	5	9	25	26	5	8	2	33	17	7	4	48	-1	8
6	4	4	45	9	4	4	3	14	7	4	13	6	5	9	22	15	5	8	3	31	16	50	8	58	-2	21
7	4	4	57	57	4	3	35	39	7	4	13	30	5	9	19	4	5	8	4	8	16	34	12	32	-3	23
8	4	5	10	47	4	3	6	15	7	4	14	1	5	9	15	53	5	8	3	31	16	17	15	21	-4	13
9	4	5	23	39	4	2	35	13	7	4	14	37	5	9	12	43	5	8	1	5	16	0	17	15	-4	47
10	4	5	36	32	4	2	2	41	7	4	15	19	5	9	9	32	5	7	56	42	15	43	18	11	-5	6
11	4	5	49	26	4	1	28	50	7	4	16	7	5	9	6	21	5	7	50	37	15	25	18	9	-5	8
12	4	6	2	21	4	0	53	53	7	4	17	1	5	9	3	10	5	7	43	26	15	8	17	12	-4	55
13	4	6	15	17	4	0	18	1	7	4	18	1	5	9	0	0	5	7	35	55	14	50	15	26	-4	28
14	4	6	28	14	3	29	41	29	7	4	19	6	5	8	56	49	5	7	28	54	14	31	12	59	-3	49
15	4	6	41	13	3	29	4	29	7	4	20	17	5	8	53	38	5	7	23	5	14	13	9	59	-3	0
16	4	6	54	12	3	28	27	15	7	4	21	35	5	8	50	27	5	7	18	53	13	54	6	37	-2	3
17	4	7	7	11	3	27	50	2	7	4	22	57	5	8	47	17	5	7	16	31	13	35	3	1	-1	2
18	4	7	20	12	3	27	13	4	7	4	24	26	5	8	44	6	5	7	15	51	13	16	-0	40	0	2
19	4	7	33	13	3	26	36	34	7	4	26	0	5	8	40	55	5	7	16	31	12	57	-4	20	1	6
20	4	7	46	14	3	26	0	47	7	4	27	40	5	8	37	44	5	7	18	0	12	37	-7	49	2	8
21	4	7	59	16	3	25	25	55	7	4	29	26	5	8	34	34	5	7	19	41	12	17	-11	2	3	4
22	4	8	12	19	3	24	52	11	7	4	31	17	5	8	31	23	5	7	20	55	11	57	-13	49	3	53
23	4	8	25	21	3	24	19	47	7	4	33	14	5	8	28	12	5	7	21	15	11	37	-16	3	4	33
24	4	8	38	24	3	23	48	55	7	4	35	17	5	8	25	1	5	7	20	22	11	17	-17	33	5	0
25	4	8	51	27	3	23	19	43	7	4	37	25	5	8	21	51	5	7	18	13	10	56	-18	12	5	13
26	4	9	4	30	3	22	52	22	7	4	39	39	5	8	18	40	5	7	15	3	10	36	-17	50	5	9
27	4	9	17	33	3	22	26	59	7	4	41	58	5	8	15	29	5	7	11	17	10	15	-16	23	4	47
28	4	9	30	37	3	22	3	42	7	4	44	22	5	8	12	18	5	7	7	30	9	54	-13	52	4	6
29	4	9	43	40	3	21	42	35	7	4	46	52	5	8	9	8	5	7	4	14	9	33	-10	24	3	8
30	4	9	56	42	3	21	23	45	7	4	49	28	5	8	5	57	5	7	1	55	9	11	-6	12	1	56
31	4	10	9	45	3	21	7	15	7	4	52	8	5	8	2	46	5	7	0	46	8	50	-1	35	0	36

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितंबर 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 35"

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	22	39	22	4	14	10	59	11	15	35	31	3	20	42	28
2	22	43	19	4	15	9	1	0	0	25	21	3	21	20	39
3	22	47	15	4	16	7	5	0	14	56	48	3	21	58	49
4	22	51	12	4	17	5	10	0	29	6	25	3	22	36	57
5	22	55	9	4	18	3	18	1	12	53	1	3	23	15	4
6	22	59	5	4	19	1	27	1	26	17	9	3	23	53	9
7	23	3	2	4	19	59	39	2	9	20	34	3	24	31	13
8	23	6	58	4	20	57	52	2	22	5	43	3	25	9	15
9	23	10	55	4	21	56	8	3	4	35	15	3	25	47	16
10	23	14	51	4	22	54	25	3	16	51	52	3	26	25	16
11	23	18	48	4	23	52	45	3	28	58	4	3	27	3	13
12	23	22	44	4	24	51	6	4	10	56	9	3	27	41	10
13	23	26	41	4	25	49	30	4	22	48	16	3	28	19	4
14	23	30	38	4	26	47	55	5	4	36	32	3	28	56	57
15	23	34	34	4	27	46	22	5	16	23	11	3	29	34	48
16	23	38	31	4	28	44	51	5	28	10	39	4	0	12	38
17	23	42	27	4	29	43	22	6	10	1	43	4	0	50	26
18	23	46	24	5	0	41	54	6	21	59	31	4	1	28	12
19	23	50	20	5	1	40	28	7	4	7	34	4	2	5	57
20	23	54	17	5	2	39	4	7	16	29	41	4	2	43	40
21	23	58	13	5	3	37	41	7	29	9	48	4	3	21	21
22	0	2	10	5	4	36	20	8	12	11	40	4	3	59	0
23	0	6	7	5	5	35	0	8	25	38	19	4	4	36	38
24	0	10	3	5	6	33	43	9	9	31	32	4	5	14	14
25	0	14	0	5	7	32	27	9	23	51	6	4	5	51	49
26	0	17	56	5	8	31	13	10	8	34	21	4	6	29	22
27	0	21	53	5	9	30	0	10	23	35	50	4	7	6	53
28	0	25	49	5	10	28	50	11	8	47	41	4	7	44	23
29	0	29	46	5	11	27	41	11	24	0	30	4	8	21	51
30	0	33	42	5	12	26	35	0	9	4	39	4	8	59	18

सितंबर	बुध				गुरु				शुक्र				शनि			
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	5	11	0	43	4	10	22	47	3	20	53	8	7	4	54	54
2	5	12	5	21	4	10	35	49	3	20	41	25	7	4	57	46
3	5	13	7	38	4	10	48	51	3	20	32	8	7	5	0	42
4	5	14	7	28	4	11	1	52	3	20	25	17	7	5	3	44
5	5	15	4	40	4	11	14	53	3	20	20	51	7	5	6	51
6	5	15	59	5	4	11	27	53	3	20	18	49	7	5	10	3
7	5	16	50	32	4	11	40	52	3	20	19	9	7	5	13	20
8	5	17	38	50	4	11	53	51	3	20	21	50	7	5	16	42
9	5	18	23	45	4	12	6	49	3	20	26	48	7	5	20	9
10	5	19	5	4	4	12	19	46	3	20	34	0	7	5	23	41
11	5	19	42	30	4	12	32	42	3	20	43	24	7	5	27	19
12	5	20	15	47	4	12	45	36	3	20	54	56	7	5	31	1
13	5	20	44	37	4	12	58	30	3	21	8	32	7	5	34	48
14	5	21	8	41	4	13	11	23	3	21	24	10	7	5	38	40
15	5	21	27	39	4	13	24	14	3	21	41	44	7	5	42	36
16	5	21	41	11	4	13	37	3	3	22	1	12	7	5	46	38
17	5	21	48	55	4	13	49	52	3	22	22	30	7	5	50	44
18	5	21	50	31	4	14	2	38	3	22	45	34	7	5	54	54
19	5	21	45	40	4	14	15	23	3	23	10	21	7	5	59	9
20	5	21	34	5	4	14	28	7	3	23	36	48	7	6	3	29
21	5	21	15	31	4	14	40	48	3	24	4	50	7	6	7	53
22	5	20	49	51	4	14	53	28	3	24	34	26	7	6	12	22
23	5	20	17	3	4	15	6	5	3	25	5	31	7	6	16	54
24	5	19	37	13	4	15	18	41	3	25	38	3	7	6	21	32
25	5	18	50	40	4	15	31	14	3	26	11	58	7	6	26	13
26	5	17	57	54	4	15	43	46	3	26	47	14	7	6	30	58
27	5	16	59	42	4	15	56	15	3	27	23	48	7	6	35	48
28	5	15	57	3	4	16	8	41	3	28	1	38	7	6	40	41
29	5	14	51	14	4	16	21	6	3	28	40	40	7	6	45	39
30	5	13	43	43	4	16	33	28	3	29	20	52	7	6	50	41

सितंबर	मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	5	7	59	36	5	7	0	44	8	28	3	6	-0	47
2	5	7	56	25	5	7	1	31	8	7	7	32	-2	6
3	5	7	53	14	5	7	2	42	7	45	11	26	-3	15
4	5	7	50	3	5	7	3	48	7	23	14	32	-4	10
5	5	7	46	53	5	7	4	24	7	1	16	43	-4	49
6	5	7	43	42	5	7	4	16	6	38	17	55	-5	11
7	5	7	40	31	5	7	3	19	6	16	18	7	-5	16
8	5	7	37	21	5	7	1	42	5	54	17	24	-5	6
9	5	7	34	10	5	6	59	39	5	31	15	51	-4	41
10	5	7	30	59	5	6	57	31	5	8	13	35	-4	3
11	5	7	27	48	5	6	55	34	4	46	10	45	-3	15
12	5	7	24	38	5	6	54	4	4	23	7	31	-2	19
13	5	7	21	27	5	6	53	8	4	0	3	59	-1	17
14	5	7	18	16	5	6	52	48	3	37	0	20	-0	13
15	5	7	15	6	5	6	52	59	3	14	-3	20	0	53
16	5	7	11	55	5	6	53	32	2	51	-6	52	1	56
17	5	7	8	44	5	6	54	16	2	28	-10	9	2	54
18	5	7	5	33	5	6	54	59	2	5	-13	2	3	46
19	5	7	2	23	5	6	55	32	1	41	-15	24	4	28
20	5	6	59	12	5	6	55	52	1	18	-17	6	4	58
21	5	6	56	1	5	6	55	57	0	55	-18	1	5	15
22	5	6	52	51	5	6	55	53	0	31	-18	1	5	17
23	5	6	49	40	5	6	55	45	0	8	-17	1	5	1
24	5	6	46	29	5	6	55	40	0	15	-15	0	4	28
25	5	6	43	18	5	6	55	42	0	39	-12	0	3	38
26	5	6	40	8	5	6	55	51	-1	2	-8	10	2	31
27	5	6	36	57	5	6	56	2	-1	25	-3	44	1	14
28	5	6	33	46	5	6	56	9	-1	49	0	59	-0	10
29	5	6	30	36	5	6	56	4	-2	12	5	39	-1	34
30	5	6	27	25	5	6	55	42	-2	35	9	54	-2	49

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 37"

अक्तूबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	0	37	39	5	13	25	31	0	23	51	46	4	9	36	43	5	12	36	11	4	16	45	47	4	0	2	12	7	6	55	46	5	6	24	14	5	6	55	5	-2	59	13	27	-3	53
2	0	41	36	5	14	24	29	1	8	15	42	4	10	14	7	5	11	30	23	4	16	58	4	4	0	44	37	7	7	0	55	5	6	21	4	5	6	54	17	-3	22	16	4	-4	39
3	0	45	32	5	15	23	29	1	22	13	8	4	10	51	29	5	10	28	7	4	17	10	18	4	1	28	4	7	7	6	8	5	6	17	53	5	6	53	29	-3	45	17	38	-5	7
4	0	49	29	5	16	22	31	2	5	43	25	4	11	28	50	5	9	31	6	4	17	22	29	4	2	12	33	7	7	11	25	5	6	14	42	5	6	52	55	-4	8	18	8	-5	18
5	0	53	25	5	17	21	36	2	18	48	4	4	12	6	10	5	8	40	55	4	17	34	38	4	2	58	0	7	7	16	46	5	6	11	31	5	6	52	44	-4	31	17	39	-5	11
6	0	57	22	5	18	20	43	3	1	30	2	4	12	43	27	5	7	58	55	4	17	46	43	4	3	44	22	7	7	22	10	5	6	8	21	5	6	53	4	-4	54	16	17	-4	49
7	1	1	18	5	19	19	52	3	13	53	10	4	13	20	44	5	7	26	12	4	17	58	46	4	4	31	39	7	7	27	38	5	6	5	10	5	6	53	54	-5	17	14	11	-4	14
8	1	5	15	5	20	19	4	3	26	1	35	4	13	57	59	5	7	3	32	4	18	10	45	4	5	19	48	7	7	33	9	5	6	1	59	5	6	55	7	-5	40	11	29	-3	28
9	1	9	11	5	21	18	18	4	7	59	21	4	14	35	12	5	6	51	27	4	18	22	41	4	6	8	47	7	7	38	44	5	5	58	49	5	6	56	29	-6	3	8	20	-2	34
10	1	13	8	5	22	17	34	4	19	50	15	4	15	12	23	5	6	50	7	4	18	34	34	4	6	58	34	7	7	44	22	5	5	55	38	5	6	57	42	-6	26	4	53	-1	34
11	1	17	5	5	23	16	53	5	1	37	38	4	15	49	33	5	6	59	30	4	18	46	24	4	7	49	8	7	7	50	3	5	5	52	27	5	6	58	26	-6	49	1	15	-0	30
12	1	21	1	5	24	16	14	5	13	24	26	4	16	26	42	5	7	19	17	4	18	58	10	4	8	40	26	7	7	55	48	5	5	49	16	5	6	58	26	-7	12	-2	25	0	36
13	1	24	58	5	25	15	36	5	25	13	7	4	17	3	48	5	7	49	1	4	19	9	52	4	9	32	28	7	8	1	36	5	5	46	6	5	6	57	28	-7	34	-6	1	1	39
14	1	28	54	5	26	15	1	6	7	5	52	4	17	40	53	5	8	28	5	4	19	21	31	4	10	25	11	7	8	7	28	5	5	42	55	5	6	55	31	-7	56	-9	24	2	39
15	1	32	51	5	27	14	28	6	19	4	38	4	18	17	56	5	9	15	46	4	19	33	6	4	11	18	34	7	8	13	22	5	5	39	44	5	6	52	40	-8	19	-12	25	3	32
16	1	36	47	5	28	13	57	7	1	11	19	4	18	54	57	5	10	11	19	4	19	44	36	4	12	12	35	7	8	19	19	5	5	36	33	5	6	49	11	-8	41	-14	56	4	16
17	1	40	44	5	29	13	27	7	13	27	57	4	19	31	56	5	11	13	54	4	.9	56	3	4	13	7	14	7	8	25	20	5	5	33	23	5	6	45	28	-9	3	-16	48	4	49
18	1	44	40	6	0	13	0	7	25	56	43	4	20	8	54	5	12	22	45	4	20	7	26	4	14	2	29	7	8	31	23	5	5	30	12	5	6	42	0	-9	25	-17	55	5	9
19	1	48	37	6	1	12	34	8	8	40	2	4	20	45	49	5	13	37	5	4	20	18	45	4	14	58	18	7	8	37	29	5	5	27	1	5	6	39	16	-9	47	-18	10	5	15
20	1	52	34	6	2	12	10	8	21	40	28	4	21	22	43	5	14	56	10	4	20	29	59	4	15	54	42	7	8	43	38	5	5	23	51	5	6	37	36	-10	9	-17	28	5	4
21	1	56	30	6	3	11	47	9	5	0	29	4	21	59	35	5	16	19	20	4	20	41	9	4	16	51	38	7	8	49	50	5	5	20	40	5	6	37	10	-10	30	-15	49	4	37
22	2	0	27	6	4	11	27	9	18	42	5	4	22	36	25	5	17	45	56	4	20	52	15	4	17	49	6	7	8	56	4	5	5	17	29	5	6	37	51	-10	51	-13	14	3	54
23	2	4	23	6	5	11	8	10	2	46	16	4	23	13	13	5	19	15	26	4	21	3	16	4	18	47	5	7	9	2	21	5	5	14	18	5	6	39	13	-11	13	-9	48	2	56
24	2	8	20	6	6	10	50	10	17	12	32	4	23	49	59	5	20	47	19	4	21	14	12	4	19	45	33	7	9	8	40	5	5	11	8	5	6	40	43	-11	34	-5	43	1	45
25	2	12	16	6	7	10	35	11	1	58	8	4	24	26	43	5	22	21	9	4	21	25	4	4	20	44	31	7	9	15	2	5	5	7	57	5	6	41	37	-11	54	-1	11	0	26
26	2	16	13	6	8	10	21	11	16	57	54	4	25	3	26	5	23	56	33	4	21	35	50	4	21	43	56	7	9	21	26	5	5	4	46	5	6	41	21	-12	15	3	31	-0	56
27	2	20	9	6	9	10	10	0	2	4	18	4	25	40	7	5	25	33	11	4	21	46	32	4	22	43	49	7	9	27	52	5	5	1	35	5	6	39	31	-12	36	8	0	-2	15
28	2	24	6	6	10	10	0	0	17	8	15	4	26	16	46	5	27	10	47	4	21	57	9	4	23	44	9	7	9	34	21	5	4	58	25	5	6	36	4	-12	56	11	58	-3	23
29	2	28	3	6	11	9	52	1	2	0	29	4	26	53	23	5	28	49	6	4	22	7	41	4	24	44	55	7	9	40	52	5	4	55	14	5	6	31	19	-13	16	15	6	-4	17
30	2	31	59	6	12	9	46	1	16	32	54	4	27	29	58	6	0	27	55	4	22	18	8	4	25	46	5	7	9	47	25	5	4	52	3	5	6	25	51	-13	36	17	12	-4	53
31	2	35	56	6	13	9	42	2	0	39	52	4	28	6	32	6	2	7	5	4	22	28	29	4	26	47	40	7	9	54	0	5	4	48	52	5	6	20	26	-13	56	18	10	-5	10

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 40"

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क
1	2 39 52	6 14 9 40	2 14 18 39	4 28 43 3	6 3 46 26	4 22 38 45	4 27 49 39	7 10 0 37	5 4 45 42	5 6 15 49	-14 15	18 2	-5 9
2	2 43 49	6 15 9 40	2 27 29 22	4 29 19 33	6 5 25 53	4 22 48 56	4 28 52 1	7 10 7 16	5 4 42 31	5 6 12 34	-14 34	16 55	-4 51
3	2 47 45	6 16 9 43	3 10 14 26	4 29 56 1	6 7 5 18	4 22 59 1	4 29 54 45	7 10 13 57	5 4 39 20	5 6 10 57	-14 53	14 59	-4 19
4	2 51 42	6 17 9 47	3 22 37 50	5 0 32 28	6 8 44 37	4 23 9 0	5 0 57 50	7 10 20 40	5 4 36 9	5 6 10 54	-15 12	12 24	-3 35
5	2 55 38	6 18 9 54	4 4 44 23	5 1 8 52	6 10 23 47	4 23 18 54	5 2 1 16	7 10 27 24	5 4 32 59	5 6 12 1	-15 30	9 20	-2 43
6	2 59 35	6 19 10 3	4 16 39 12	5 1 45 14	6 12 2 45	4 23 28 42	5 3 5 2	7 10 34 11	5 4 29 48	5 6 13 37	-15 49	5 56	-1 45
7	3 3 32	6 20 10 14	4 28 27 18	5 2 21 34	6 13 41 28	4 23 38 23	5 4 9 8	7 10 40 59	5 4 26 37	5 6 14 56	-16 7	2 19	-0 42
8	3 7 28	6 21 10 27	5 10 13 21	5 2 57 52	6 15 19 55	4 23 47 59	5 5 13 33	7 10 47 48	5 4 23 26	5 6 15 10	-16 24	-1 23	0 22
9	3 11 25	6 22 10 41	5 22 1 22	5 3 34 8	6 16 58 4	4 23 57 28	5 6 18 16	7 10 54 39	5 4 20 16	5 6 13 38	-16 42	-5 2	1 24
10	3 15 21	6 23 10 58	6 3 54 38	5 4 10 22	6 18 35 55	4 24 6 51	5 7 23 16	7 11 1 32	5 4 17 5	5 6 9 54	-16 59	-8 31	2 24
11	3 19 18	6 24 11 17	6 15 55 40	5 4 46 34	6 20 13 27	4 24 16 8	5 8 28 34	7 11 8 26	5 4 13 54	5 6 3 53	-17 16	-11 41	3 18
12	3 23 14	6 25 11 37	6 28 6 15	5 5 22 43	6 21 50 40	4 24 25 18	5 9 34 8	7 11 15 21	5 4 10 43	5 5 55 51	-17 32	-14 24	4 3
13	3 27 11	6 26 11 59	7 10 27 29	5 5 58 50	6 23 27 33	4 24 34 21	5 10 39 58	7 11 22 18	5 4 7 33	5 5 46 23	-17 49	-16 30	4 37
14	3 31 7	6 27 12 23	7 23 0 0	5 6 34 55	6 25 4 8	4 24 43 17	5 11 46 3	7 11 29 15	5 4 4 22	5 5 36 23	-18 5	-17 51	4 59
15	3 35 4	6 28 12 48	8 5 44 11	5 7 10 57	6 26 40 24	4 24 52 6	5 12 52 24	7 11 36 14	5 4 1 11	5 5 26 51	-18 20	-18 20	5 6
16	3 39 1	6 29 13 15	8 18 40 25	5 7 46 56	6 28 16 23	4 25 0 49	5 13 58 59	7 11 43 14	5 3 58 0	5 5 18 47	-18 36	-17 53	4 58
17	3 42 57	7 0 13 43	9 1 49 19	5 8 22 53	6 29 52 4	4 25 9 24	5 15 5 48	7 11 50 14	5 3 54 50	5 5 12 53	-18 51	-16 28	4 34
18	3 46 54	7 1 14 12	9 15 11 45	5 8 58 48	7 1 27 28	4 25 17 52	5 16 12 51	7 11 57 16	5 3 51 39	5 5 9 27	-19 5	-14 9	3 55
19	3 50 50	7 2 14 43	9 28 48 45	5 9 34 40	7 3 2 38	4 25 26 12	5 17 20 7	7 12 4 18	5 3 48 28	5 5 8 16	-19 20	-11 1	3 2
20	3 54 47	7 3 15 15	10 12 41 18	5 10 10 30	7 4 37 32	4 25 34 25	5 18 27 37	7 12 11 21	5 3 45 17	5 5 8 37	-19 34	-7 12	1 57
21	3 58 43	7 4 15 48	10 26 49 50	5 10 46 17	7 6 12 13	4 25 42 31	5 19 35 19	7 12 18 25	5 3 42 6	5 5 9 25	-19 47	-2 55	0 44
22	4 2 40	7 5 16 22	11 11 13 35	5 11 22 1	7 7 46 41	4 25 50 29	5 20 43 13	7 12 25 29	5 3 38 56	5 5 9 26	-20 0	1 37	-0 32
23	4 6 36	7 6 16 58	11 25 50 9	5 11 57 43	7 9 20 56	4 25 58 19	5 21 51 20	7 12 32 34	5 3 35 45	5 5 7 35	-20 13	6 7	-1 48
24	4 10 33	7 7 17 34	0 10 34 56	5 12 33 22	7 10 55 1	4 26 6 1	5 22 59 39	7 12 39 40	5 3 32 34	5 5 3 10	-20 26	10 17	-2 57
25	4 14 30	7 8 18 12	0 25 21 25	5 13 8 59	7 12 28 56	4 26 13 35	5 24 8 9	7 12 46 45	5 3 29 23	5 4 56 2	-20 38	13 49	-3 55
26	4 18 26	7 9 18 52	1 10 1 49	5 13 44 33	7 14 2 42	4 26 21 2	5 25 16 50	7 12 53 51	5 3 26 13	5 4 46 37	-20 50	16 27	-4 36
27	4 22 23	7 10 19 32	1 24 28 16	5 14 20 4	7 15 36 20	4 26 28 20	5 26 25 43	7 13 0 58	5 3 23 2	5 4 35 48	-21 1	17 59	-4 58
28	4 26 19	7 11 20 15	2 8 34 12	5 14 55 33	7 17 9 50	4 26 35 30	5 27 34 46	7 13 8 4	5 3 19 51	5 4 24 48	-21 12	18 22	-5 2
29	4 30 16	7 12 20 58	2 22 15 16	5 15 30 59	7 18 43 14	4 26 42 31	5 28 44 0	7 13 15 11	5 3 16 40	5 4 14 47	-21 23	17 40	-4 49
30	4 34 12	7 13 21 43	3 5 29 51	5 16 6 23	7 20 16 32	4 26 49 24	5 29 53 24	7 13 22 18	5 3 13 29	5 4 6 43	-21 33	16 0	-4 19

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2015 ई. को अयनांश 24° 4' 44"

दिसंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	4	38	9	7	14	22	29	3	18	18	53	5	16	41	44	7	21	49	45	4	26	56	9	6	1	2	58	7	13	29	25	5	3	10	19	5	4	1	8	-21	43	13	35	-3	38
2	4	42	5	7	15	23	17	4	0	45	23	5	17	17	2	7	23	22	54	4	27	2	45	6	2	12	42	7	13	36	31	5	3	7	8	5	3	58	1	-21	52	10	37	-2	47
3	4	46	2	7	16	24	6	4	12	53	48	5	17	52	17	7	24	55	58	4	27	9	11	6	3	22	35	7	13	43	38	5	3	3	57	5	3	56	55	-22	1	7	15	-1	50
4	4	49	59	7	17	24	57	4	24	49	26	5	18	27	29	7	26	28	58	4	27	15	29	6	4	32	37	7	13	50	45	5	3	0	46	5	3	56	59	-22	9	3	39	-0	48
5	4	53	55	7	18	25	49	5	6	37	51	5	19	2	38	7	28	1	54	4	27	21	38	6	5	42	48	7	13	57	51	5	2	57	35	5	3	57	6	-22	17	-0	4	0	14
6	4	57	52	7	19	26	42	5	18	24	36	5	19	37	44	7	29	34	46	4	27	27	38	6	6	53	8	7	14	4	57	5	2	54	25	5	3	56	10	-22	25	-3	46	1	16
7	5	1	48	7	20	27	37	6	0	14	46	5	20	12	47	8	1	7	34	4	27	33	29	6	8	3	36	7	14	12	3	5	2	51	14	5	3	53	13	-22	32	-7	20	2	15
8	5	5	45	7	21	28	33	6	12	12	45	5	20	47	47	8	2	40	16	4	27	39	10	6	9	14	11	7	14	19	8	5	2	48	3	5	3	47	36	-22	39	-10	39	3	8
9	5	9	41	7	22	29	30	6	24	21	59	5	21	22	44	8	4	12	52	4	27	44	41	6	10	24	54	7	14	26	12	5	2	44	52	5	3	39	3	-22	45	-13	34	3	54
10	5	13	38	7	23	30	29	7	6	44	50	5	21	57	37	8	5	45	20	4	27	50	3	6	11	35	45	7	14	33	16	5	2	41	41	5	3	27	52	-22	51	-15	56	4	29
11	5	17	34	7	24	31	28	7	19	22	26	5	22	32	26	8	7	17	40	4	27	55	15	6	12	46	43	7	14	40	20	5	2	38	31	5	3	14	45	-22	57	-17	35	4	52
12	5	21	31	7	25	32	28	8	2	14	47	5	23	7	12	8	8	49	47	4	28	0	17	6	13	57	47	7	14	47	22	5	2	35	20	5	3	0	49	-23	2	-18	23	5	0
13	5	25	28	7	26	33	29	8	15	20	55	5	23	41	54	8	10	21	41	4	28	5	10	6	15	8	58	7	14	54	24	5	2	32	9	5	2	47	21	-23	6	-18	13	4	53
14	5	29	24	7	27	34	31	8	28	39	14	5	24	16	33	8	11	53	17	4	28	9	52	6	16	20	16	7	15	1	25	5	2	28	58	5	2	35	37	-23	10	-17	4	4	30
15	5	33	21	7	28	35	33	9	12	7	59	5	24	51	8	8	13	24	31	4	28	14	24	6	17	31	39	7	15	8	25	5	2	25	47	5	2	26	34	-23	14	-14	58	3	52
16	5	37	17	7	29	36	36	9	25	45	41	5	25	25	39	8	14	55	18	4	28	18	46	6	18	43	9	7	15	15	24	5	2	22	37	5	2	20	40	-23	17	-12	1	3	0
17	5	41	14	8	0	37	39	10	9	31	23	5	26	0	6	8	16	25	32	4	28	22	58	6	19	54	44	7	15	22	21	5	2	19	26	5	2	17	43	-23	20	-8	22	1	57
18	5	45	10	8	1	38	43	10	23	24	40	5	26	34	29	8	17	55	5	4	28	26	59	6	21	6	25	7	15	29	18	5	2	16	15	5	2	16	53	-23	22	-4	13	0	47
19	5	49	7	8	2	39	47	11	7	25	26	5	27	8	48	8	19	23	51	4	28	30	50	6	22	18	11	7	15	36	13	5	2	13	4	5	2	16	57	-23	24	0	11	-0	27
20	5	53	3	8	3	40	51	11	21	33	27	5	27	43	3	8	20	51	37	4	28	34	30	6	23	30	3	7	15	43	7	5	2	9	53	5	2	16	25	-23	25	4	37	-1	40
21	5	57	0	8	4	41	56	0	5	47	47	5	28	17	14	8	22	18	14	4	28	38	0	6	24	42	0	7	15	49	59	5	2	6	43	5	2	14	0	-23	26	8	49	-2	47
22	6	0	57	8	5	43	1	0	20	6	18	5	28	51	21	8	23	43	25	4	28	41	19	6	25	54	2	7	15	56	50	5	2	3	32	5	2	8	49	-23	26	12	31	-3	44
23	6	4	53	8	6	44	6	1	4	25	27	5	29	25	24	8	25	6	57	4	28	44	27	6	27	6	9	7	16	3	40	5	2	0	21	5	2	0	34	-23	26	15	29	-4	27
24	6	8	50	8	7	45	11	1	18	40	23	5	29	59	23	8	26	28	29	4	28	47	24	6	28	18	20	7	16	10	27	5	1	57	10	5	1	49	41	-23	25	17	29	-4	53
25	6	12	46	8	8	46	17	2	2	45	36	6	0	33	17	8	27	47	39	4	28	50	11	6	29	30	37	7	16	17	14	5	1	53	59	5	1	37	6	-23	24	18	24	-5	0
26	6	16	43	8	9	47	23	2	16	35	45	6	1	7	7	8	29	4	3	4	28	52	47	7	0	42	58	7	16	23	58	5	1	50	49	5	1	24	5	-23	23	18	11	-4	50
27	6	20	39	8	10	48	30	3	0	6	42	6	1	40	53	9	0	17	10	4	28	55	11	7	1	55	24	7	16	30	41	5	1	47	38	5	1	12	0	-23	21	16	57	-4	24
28	6	24	36	8	11	49	37	3	13	16	0	6	2	14	35	9	1	26	30	4	28	57	25	7	3	7	55	7	16	37	21	5	1	44	27	5	1	1	55	-23	18	14	49	-3	44
29	6	28	32	8	12	50	44	3	26	3	20	6	2	48	12	9	2	31	23	4	28	59	27	7	4	20	29	7	16	44	0	5	1	41	16	5	0	54	32	-23	15	12	2	-2	53
30	6	32	29	8	13	51	51	4	8	30	20	6	3	21	45	9	3	31	9	4	29	1	19	7	5	33	8	7	16	50	37	5	1	38	5	5	0	49	58	-23	12	8	45	-1	55
31	6	36	26	8	14	53	0	4	20	40	11	6	3	55	13	9	4	25	3	4	29	2	59	7	6	45	51	7	16	57	12	5	1	34	55	5	0	47	53	-23	8	5	11	-0	54

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2016 ई. को अयनांश 24° 4' 49"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 40 22	8 15 54 8	5 2 37 22	6 4 28 36	9 5 12 14	4 29 4 27	7 7 58 39	7 17 3 45	5 1 31 44	5 0 47 28	-23 4	1 28	0 10
2	6 44 19	8 16 55 17	5 14 27 3	6 5 1 55	9 5 51 50	4 29 5 44	7 9 11 29	7 17 10 15	5 1 28 33	5 0 47 39	-22 59	-2 17	1 12
3	6 48 15	8 17 56 26	5 26 14 50	6 5 35 8	9 6 22 58	4 29 6 50	7 10 24 24	7 17 16 44	5 1 25 22	5 0 47 21	-22 53	-5 55	2 11
4	6 52 12	8 18 57 36	6 8 6 16	6 6 8 16	9 6 44 41	4 29 7 44	7 11 37 22	7 17 23 10	5 1 22 11	5 0 45 31	-22 48	-9 20	3 5
5	6 56 8	8 19 58 46	6 20 6 36	6 6 41 19	9 6 56 10	4 29 8 27	7 12 50 24	7 17 29 33	5 1 19 1	5 0 41 25	-22 42	-12 25	3 51
6	7 0 5	8 20 59 56	7 2 20 19	6 7 14 17	9 6 56 39	4 29 8 58	7 14 3 29	7 17 35 54	5 1 15 50	5 0 34 43	-22 35	-15 1	4 27
7	7 4 1	8 22 1 6	7 14 50 56	6 7 47 9	9 6 45 35	4 29 9 18	7 15 16 37	7 17 42 13	5 1 12 39	5 0 25 32	-22 28	-16 59	4 52
8	7 7 58	8 23 2 16	7 27 40 33	6 8 19 55	9 6 22 41	4 29 9 26	7 16 29 47	7 17 48 29	5 1 9 28	5 0 14 28	-22 20	-18 9	5 2
9	7 11 55	8 24 3 27	8 10 49 42	6 8 52 36	9 5 47 59	4 29 9 22	7 17 43 1	7 17 54 42	5 1 6 17	5 0 2 29	-22 12	-18 23	4 57
10	7 15 51	8 25 4 37	8 24 17 14	6 9 25 10	9 5 1 59	4 29 9 6	7 18 56 17	7 18 0 53	5 1 3 7	4 29 50 46	-22 4	-17 37	4 36
11	7 19 48	8 26 5 47	9 8 0 29	6 9 57 39	9 4 5 39	4 29 8 39	7 20 9 36	7 18 7 0	5 0 59 56	4 29 40 28	-21 55	-15 49	3 58
12	7 23 44	8 27 6 56	9 21 55 48	6 10 30 1	9 3 0 26	4 29 8 0	7 21 22 57	7 18 13 5	5 0 56 45	4 29 32 31	-21 46	-13 4	3 6
13	7 27 41	8 28 8 5	10 5 59 10	6 11 2 17	9 1 48 15	4 29 7 10	7 22 36 21	7 18 19 6	5 0 53 34	4 29 27 24	-21 36	-9 33	2 2
14	7 31 37	8 29 9 14	10 20 6 54	6 11 34 26	9 0 31 21	4 29 6 8	7 23 49 46	7 18 25 5	5 0 50 24	4 29 25 1	-21 26	-5 27	0 50
15	7 35 34	9 0 10 22	11 4 16 1	6 12 6 29	8 29 12 13	4 29 4 54	7 25 3 14	7 18 31 0	5 0 47 13	4 29 24 43	-21 16	-1 3	-0 26
16	7 39 30	9 1 11 29	11 18 24 30	6 12 38 26	8 27 53 21	4 29 3 29	7 26 16 44	7 18 36 53	5 0 44 2	4 29 25 28	-21 5	3 24	-1 40
17	7 43 27	9 2 12 35	0 2 31 2	6 13 10 15	8 26 37 9	4 29 1 52	7 27 30 15	7 18 42 42	5 0 40 51	4 29 26 1	-20 53	7 39	-2 48
18	7 47 24	9 3 13 41	0 16 34 37	6 13 41 58	8 25 25 43	4 29 0 4	7 28 43 49	7 18 48 27	5 0 37 40	4 29 25 13	-20 42	11 27	-3 45
19	7 51 20	9 4 14 46	1 0 34 16	6 14 13 34	8 24 20 46	4 28 58 4	7 29 57 25	7 18 54 10	5 0 34 30	4 29 22 17	-20 30	14 35	-4 29
20	7 55 17	9 5 15 50	1 14 28 32	6 14 45 3	8 23 23 38	4 28 55 54	8 1 11 2	7 18 59 48	5 0 31 19	4 29 16 54	-20 17	16 51	-4 56
21	7 59 13	9 6 16 54	1 28 15 25	6 15 16 25	8 22 35 11	4 28 53 32	8 2 24 41	7 19 5 24	5 0 28 8	4 29 9 20	-20 4	18 7	-5 6
22	8 3 10	9 7 17 56	2 11 52 30	6 15 47 40	8 21 55 53	4 28 50 58	8 3 38 22	7 19 10 56	5 0 24 57	4 29 0 19	-19 51	18 20	-4 59
23	8 7 6	9 8 18 58	2 25 17 10	6 16 18 47	8 21 25 55	4 28 48 14	8 4 52 4	7 19 16 24	5 0 21 47	4 28 50 51	-19 37	17 30	-4 35
24	8 11 3	9 9 19 59	3 8 27 9	6 16 49 47	8 21 5 10	4 28 45 19	8 6 5 49	7 19 21 48	5 0 18 36	4 28 41 59	-19 23	15 45	-3 56
25	8 14 59	9 10 20 59	3 21 20 55	6 17 20 39	8 20 53 20	4 28 42 12	8 7 19 34	7 19 27 9	5 0 15 25	4 28 34 38	-19 9	13 14	-3 7
26	8 18 56	9 11 21 58	4 3 58 1	6 17 51 24	8 20 49 58	4 28 38 55	8 8 33 22	7 19 32 26	5 0 12 14	4 28 29 23	-18 54	10 8	-2 8
27	8 22 53	9 12 22 57	4 16 19 15	6 18 22 1	8 20 54 35	4 28 35 28	8 9 47 11	7 19 37 39	5 0 9 3	4 28 26 25	-18 39	6 40	-1 5
28	8 26 49	9 13 23 55	4 28 26 41	6 18 52 29	8 21 6 36	4 28 31 49	8 11 1 2	7 19 42 48	5 0 5 53	4 28 25 32	-18 24	2 58	0 0
29	8 30 46	9 14 24 52	5 10 23 25	6 19 22 50	8 21 25 27	4 28 28 0	8 12 14 55	7 19 47 53	5 0 2 42	4 28 26 13	-18 8	-0 47	1 4
30	8 34 42	9 15 25 49	5 22 13 33	6 19 53 2	8 21 50 35	4 28 24 0	8 13 28 49	7 19 52 54	4 29 59 31	4 28 27 43	-17 52	-4 29	2 6
31	8 38 39	9 16 26 45	6 4 1 48	6 20 23 5	8 22 21 27	4 28 19 50	8 14 42 44	7 19 57 51	4 29 56 20	4 28 29 14	-17 36	-7 59	3 1

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2016 ई. को अयनांश 24° 4' 54"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.), 1 फरवरी 2016 ई. को अयनांश 24° 4' 54"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 42 35	9 17 27 40	6 15 53 18	6 20 53 0	8 22 57 33	4 28 15 30	8 15 56 41	7 20 2 44	4 29 53 10	4 28 30 0	-17 19	-11 10	3 49
2	8 46 32	9 18 28 34	6 27 53 17	6 21 22 45	8 23 38 24	4 28 11 0	8 17 10 39	7 20 7 33	4 29 49 59	4 28 29 28	-17 2	-13 56	4 28
3	8 50 28	9 19 29 28	7 10 6 48	6 21 52 21	8 24 23 36	4 28 6 20	8 18 24 38	7 20 12 17	4 29 46 48	4 28 27 16	-16 45	-16 8	4 56
4	8 54 25	9 20 30 21	7 22 38 19	6 22 21 48	8 25 12 45	4 28 1 30	8 19 38 39	7 20 16 57	4 29 43 37	4 28 23 26	-16 27	-17 38	5 10
5	8 58 22	9 21 31 13	8 5 31 17	6 22 51 4	8 26 5 29	4 27 56 31	8 20 52 40	7 20 21 32	4 29 40 27	4 28 18 16	-16 9	-18 17	5 9
6	9 2 18	9 22 32 4	8 18 47 38	6 23 20 11	8 27 1 29	4 27 51 22	8 22 6 42	7 20 26 3	4 29 37 16	4 28 12 21	-15 51	-17 58	4 52
7	9 6 15	9 23 32 54	9 2 27 26	6 23 49 7	8 28 0 28	4 27 46 4	8 23 20 46	7 20 30 30	4 29 34 5	4 28 6 24	-15 33	-16 38	4 18
8	9 10 11	9 24 33 43	9 16 28 38	6 24 17 52	8 29 2 12	4 27 40 37	8 24 34 50	7 20 34 52	4 29 30 54	4 28 1 10	-15 14	-14 16	3 27
9	9 14 8	9 25 34 31	10 0 47 10	6 24 46 27	9 0 6 26	4 27 35 1	8 25 48 55	7 20 39 9	4 29 27 44	4 27 57 16	-14 55	-10 59	2 23
10	9 18 4	9 26 35 17	10 15 17 30	6 25 14 51	9 1 12 59	4 27 29 17	8 27 3 0	7 20 43 21	4 29 24 33	4 27 55 2	-14 36	-7 0	1 9
11	9 22 1	9 27 36 2	10 29 53 23	6 25 43 3	9 2 21 40	4 27 23 24	8 28 17 6	7 20 47 28	4 29 21 22	4 27 54 27	-14 17	-2 34	-0 11
12	9 25 57	9 28 36 46	11 14 28 45	6 26 11 4	9 3 32 19	4 27 17 23	8 29 31 13	7 20 51 31	4 29 18 11	4 27 55 10	-13 57	2 1	-1 30
13	9 29 54	9 29 37 28	11 28 58 25	6 26 38 53	9 4 44 50	4 27 11 15	9 0 45 20	7 20 55 29	4 29 15 1	4 27 56 37	-13 37	6 27	-2 42
14	9 33 51	10 0 38 8	0 13 18 33	6 27 6 30	9 5 59 4	4 27 4 59	9 1 59 27	7 20 59 22	4 29 11 50	4 27 58 5	-13 17	10 26	-3 44
15	9 37 47	10 1 38 47	0 27 26 39	6 27 33 55	9 7 14 56	4 26 58 35	9 3 13 35	7 21 3 9	4 29 8 39	4 27 58 56	-12 56	13 46	-4 31
16	9 41 44	10 2 39 24	1 11 21 21	6 28 1 7	9 8 32 20	4 26 52 5	9 4 27 44	7 21 6 52	4 29 5 28	4 27 58 43	-12 36	16 15	-5 2
17	9 45 40	10 3 39 59	1 25 2 8	6 28 28 7	9 9 51 10	4 26 45 28	9 5 41 52	7 21 10 30	4 29 2 18	4 27 57 17	-12 15	17 46	-5 14
18	9 49 37	10 4 40 32	2 8 28 58	6 28 54 55	9 11 11 23	4 26 38 44	9 6 56 1	7 21 14 2	4 28 59 7	4 27 54 44	-11 54	18 15	-5 9
19	9 53 33	10 5 41 4	2 21 42 1	6 29 21 29	9 12 32 55	4 26 31 54	9 8 10 11	7 21 17 30	4 28 55 56	4 27 51 28	-11 33	17 44	-4 48
20	9 57 30	10 6 41 34	3 4 41 32	6 29 47 50	9 13 55 43	4 26 24 59	9 9 24 20	7 21 20 52	4 28 52 45	4 27 47 56	-11 12	16 17	-4 12
21	10 1 26	10 7 42 2	3 17 27 51	7 0 13 57	9 15 19 44	4 26 17 57	9 10 38 30	7 21 24 9	4 28 49 35	4 27 44 40	-10 50	14 3	-3 24
22	10 5 23	10 8 42 28	4 0 1 23	7 0 39 51	9 16 44 56	4 26 10 51	9 11 52 41	7 21 27 20	4 28 46 24	4 27 42 5	-10 29	11 10	-2 27
23	10 9 20	10 9 42 53	4 12 22 51	7 1 5 31	9 18 11 16	4 26 3 39	9 13 6 52	7 21 30 26	4 28 43 13	4 27 40 25	-10 7	7 51	-1 24
24	10 13 16	10 10 43 16	4 24 33 18	7 1 30 56	9 19 38 43	4 25 56 22	9 14 21 3	7 21 33 27	4 28 40 2	4 27 39 46	-9 45	4 14	-0 17
25	10 17 13	10 11 43 38	5 6 34 21	7 1 56 6	9 21 7 17	4 25 49 1	9 15 35 14	7 21 36 23	4 28 36 52	4 27 40 1	-9 23	0 29	0 49
26	10 21 9	10 12 43 58	5 18 28 12	7 2 21 1	9 22 36 55	4 25 41 36	9 16 49 26	7 21 39 13	4 28 33 41	4 27 40 57	-9 0	-3 14	1 53
27	10 25 6	10 13 44 17	6 0 17 42	7 2 45 41	9 24 7 38	4 25 34 7	9 18 3 39	7 21 41 57	4 28 30 30	4 27 42 16	-8 38	-6 48	2 51
28	10 29 2	10 14 44 34	6 12 6 19	7 3 10 5	9 25 39 25	4 25 26 34	9 19 17 52	7 21 44 36	4 28 27 20	4 27 43 39	-8 16	-10 5	3 42
29	10 32 59	10 15 44 49	6 23 58 1	7 3 34 12	9 27 12 15	4 25 18 58	9 20 32 5	7 21 47 9	4 28 24 9	4 27 44 50	-7 53	-12 58	4 24

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2016 ई. को अयनांश 24° 4' 57''

तारीख	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 36 55	10 16 45 3	7 5 57 14	7 3 58 3	9 28 46 8	4 25 11 19	9 21 46 18	7 21 49 37	4 28 20 58	4 27 45 36	-7 30	-15 21	4 55
2	10 40 52	10 17 45 16	7 18 8 36	7 4 21 36	10 0 21 5	4 25 3 38	9 23 0 32	7 21 51 59	4 28 17 47	4 27 45 52	-7 7	-17 5	5 13
3	10 44 49	10 18 45 27	8 0 36 45	7 4 44 52	10 1 57 5	4 24 55 54	9 24 14 46	7 21 54 16	4 28 14 37	4 27 45 40	-6 44	-18 3	5 17
4	10 48 45	10 19 45 36	8 13 25 50	7 5 7 50	10 3 34 8	4 24 48 8	9 25 29 0	7 21 56 26	4 28 11 26	4 27 45 5	-6 21	-18 8	5 6
5	10 52 42	10 20 45 44	8 26 39 10	7 5 30 29	10 5 12 16	4 24 40 21	9 26 43 15	7 21 58 31	4 28 8 15	4 27 44 19	-5 58	-17 15	4 38
6	10 56 38	10 21 45 51	9 10 18 37	7 5 52 49	10 6 51 29	4 24 32 32	9 27 57 29	7 22 0 30	4 28 5 5	4 27 43 33	-5 35	-15 22	3 54
7	11 0 35	10 22 45 55	9 24 23 59	7 6 14 49	10 8 31 47	4 24 24 43	9 29 11 44	7 22 2 23	4 28 1 54	4 27 42 58	-5 12	-12 31	2 55
8	11 4 31	10 23 45 58	10 8 52 43	7 6 36 30	10 10 13 10	4 24 16 53	10 0 25 58	7 22 4 10	4 27 58 43	4 27 42 37	-4 48	-8 49	1 43
9	11 8 28	10 24 45 59	10 23 39 42	7 6 57 50	10 11 55 41	4 24 9 2	10 1 40 13	7 22 5 52	4 27 55 32	4 27 42 31	-4 25	-4 30	0 22
10	11 12 24	10 25 45 59	11 8 37 47	7 7 18 49	10 13 39 18	4 24 1 12	10 2 54 27	7 22 7 27	4 27 52 22	4 27 42 35	-4 1	0 9	-1 0
11	11 16 21	10 26 45 56	11 23 38 36	7 7 39 26	10 15 24 4	4 23 53 23	10 4 8 41	7 22 8 56	4 27 49 11	4 27 42 44	-3 38	4 48	-2 19
12	11 20 18	10 27 45 51	0 8 33 45	7 7 59 42	10 17 9 59	4 23 45 34	10 5 22 55	7 22 10 20	4 27 46 0	4 27 42 49	-3 14	9 7	-3 28
13	11 24 14	10 28 45 44	0 23 16 0	7 8 19 36	10 18 57 3	4 23 37 47	10 6 37 9	7 22 11 37	4 27 42 50	4 27 42 48	-2 50	12 48	-4 22
14	11 28 11	10 29 45 35	1 7 40 2	7 8 39 7	10 20 45 17	4 23 30 1	10 7 51 22	7 22 12 49	4 27 39 39	4 27 42 40	-2 27	15 38	-4 59
15	11 32 7	11 0 45 23	1 21 42 48	7 8 58 14	10 22 34 42	4 23 22 17	10 9 5 35	7 22 13 54	4 27 36 28	4 27 42 30	-2 3	17 26	-5 16
16	11 36 4	11 1 45 9	2 5 23 25	7 9 16 58	10 24 25 18	4 23 14 35	10 10 19 48	7 22 14 54	4 27 33 17	4 27 42 26	-1 39	18 11	-5 15
17	11 40 0	11 2 44 53	2 18 42 37	7 9 35 18	10 26 17 5	4 23 6 56	10 11 34 0	7 22 15 48	4 27 30 7	4 27 42 33	-1 16	17 54	-4 57
18	11 43 57	11 3 44 35	3 1 42 14	7 9 53 14	10 28 10 3	4 22 59 20	10 12 48 12	7 22 16 35	4 27 26 56	4 27 42 55	0 52	16 40	-4 24
19	11 47 53	11 4 44 15	3 14 24 43	7 10 10 44	11 0 4 11	4 22 51 46	10 14 2 23	7 22 17 17	4 27 23 45	4 27 43 33	0 28	14 37	-3 38
20	11 51 50	11 5 43 52	3 26 52 42	7 10 27 49	11 1 59 30	4 22 44 17	10 15 16 35	7 22 17 52	4 27 20 35	4 27 44 18	0 4	11 56	-2 43
21	11 55 47	11 6 43 27	4 9 8 48	7 10 44 28	11 3 55 56	4 22 36 51	10 16 30 46	7 22 18 21	4 27 17 24	4 27 45 2	0 19	8 44	-1 42
22	11 59 43	11 7 43 0	4 21 15 21	7 11 0 40	11 5 53 29	4 22 29 30	10 17 44 56	7 22 18 45	4 27 14 13	4 27 45 30	0 43	5 13	-0 36
23	12 3 40	11 8 42 30	5 3 14 33	7 11 16 25	11 7 52 3	4 22 22 12	10 18 59 7	7 22 19 2	4 27 11 2	4 27 45 31	1 7	1 32	0 30
24	12 7 36	11 9 41 59	5 15 8 23	7 11 31 42	11 9 51 36	4 22 15 0	10 20 13 17	7 22 19 14	4 27 7 52	4 27 44 56	1 30	-2 12	1 35
25	12 11 33	11 10 41 26	5 26 58 53	7 11 46 31	11 11 52 3	4 22 7 52	10 21 27 27	7 22 19 19	4 27 4 41	4 27 43 41	1 54	-5 49	2 35
26	12 15 29	11 11 40 51	6 8 48 8	7 12 0 50	11 13 53 15	4 22 0 50	10 22 41 36	7 22 19 19	4 27 1 30	4 27 41 51	2 17	-9 12	3 28
27	12 19 26	11 12 40 13	6 20 38 30	7 12 14 40	11 15 55 6	4 21 53 53	10 23 55 46	7 22 19 12	4 26 58 20	4 27 39 35	2 41	-12 13	4 13
28	12 23 22	11 13 39 35	7 2 32 39	7 12 27 59	11 17 57 26	4 21 47 2	10 25 9 55	7 22 19 0	4 26 55 9	4 27 37 10	3 4	-14 45	4 46
29	12 27 19	11 14 38 54	7 14 33 45	7 12 40 46	11 20 0 4	4 21 40 17	10 26 24 4	7 22 18 42	4 26 51 58	4 27 34 54	3 28	-16 40	5 8
30	12 31 16	11 15 38 11	7 26 45 17	7 12 53 2	11 22 2 46	4 21 33 38	10 27 38 13	7 22 18 17	4 26 48 47	4 27 33 9	3 51	-17 52	5 16
31	12 35 12	11 16 37 27	8 9 11 9	7 13 4 45	11 24 5 17	4 21 27 6	10 28 52 22	7 22 17 47	4 26 45 37	4 27 32 8	4 14	-18 14	5 [illegible]

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2016 ई. को अयनांश 24° 4' 59''

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2016 ई. को अयनांश 24° 4' 59"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	12	39	9	11	17	36	41	8	21	55	16	7	13	15	54	11	26	7	20
2	12	43	5	11	18	35	53	9	5	1	20	7	13	26	28	11	28	8	37
3	12	47	2	11	19	35	3	9	18	32	23	7	13	36	28	0	0	8	48
4	12	50	58	11	20	34	12	10	2	30	6	7	13	45	52	0	2	7	31
5	12	54	55	11	21	33	19	10	16	54	9	7	13	54	39	0	4	4	24
6	12	58	51	11	22	32	23	11	1	41	31	7	14	2	49	0	5	59	4
7	13	2	48	11	23	31	26	11	16	46	16	7	14	10	22	0	7	51	9
8	13	6	45	11	24	30	27	0	1	59	51	7	14	17	15	0	9	40	15
9	13	10	41	11	25	29	26	0	17	12	14	7	14	23	30	0	11	26	3
10	13	14	38	11	26	28	22	1	2	13	28	7	14	29	5	0	13	8	11

तारीख	गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	4	21	20	41	11	0	6	30	7	22	17	10	4	26	42	26	4	27	31	59	4	37	-17	43	4	48
2	4	21	14	22	11	1	20	39	7	22	16	28	4	26	39	15	4	27	32	39	5	1	-16	14	4	11
3	4	21	8	11	11	2	34	47	7	22	15	40	4	26	36	5	4	27	33	51	5	24	-13	50	3	19
4	4	21	2	8	11	3	48	54	7	22	14	46	4	26	32	54	4	27	35	13	5	46	-10	33	2	14
5	4	20	56	12	11	5	3	2	7	22	13	46	4	26	29	43	4	27	36	12	6	9	-6	32	0	59
6	4	20	50	25	11	6	17	8	7	22	12	40	4	26	26	32	4	27	36	21	6	32	-2	1	-0	23
7	4	20	44	45	11	7	31	15	7	22	11	29	4	26	23	22	4	27	35	20	6	55	2	42	-1	44
8	4	20	39	14	11	8	45	21	7	22	10	12	4	26	20	11	4	27	33	4	7	17	7	18	-2	58
9	4	20	33	52	11	9	59	26	7	22	8	49	4	26	17	0	4	27	29	45	7	39	11	25	-4	0
10	4	20	28	39	11	11	13	31	7	22	7	20	4	26	13	50	4	27	25	48	8	2	14	43	-4	44

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें (सं. 2072 वि.)

मास→ अक्षांश↓	चैत्र (2015 ई.)	वैशाख (2015 ई.)	ज्येष्ठ (2015 ई.)	प्र. आषाढ़ (2015 ई.)	द्वि. आषाढ़ (2015 ई.)	श्रावण (2015 ई.)	भाद्रपद (2015 ई.)	आश्विन (2015 ई.)	कार्त्तिक (2015 ई.)	मार्गशी. (2015 ई.)	पौष (2016 ई.)	माघ (2016 ई.)	फाल्गुन (2016 ई.)
+ 5°	21 मार्च	20 अप्रै.	19 मई	18 जून	17 जुलाई	16 अग.	15 सितं.	14 अक्तू.	13 नवं.	12 दिसं.	11 जन.	10 फर.	10 मार्च
+ 15°	21 मार्च	20 अप्रै.	19 मई	18 जून	17 जुलाई	16 अग.	15 सितं.	14 अक्तू.	13 नवं.	12 दिसं.	11 जन.	09 फर.	10 मार्च
+ 25°	21 मार्च	20 अप्रै.	19 मई	18 जून	18 जुलाई	16 अग.	15 सितं.	14 अक्तू.	13 नवं.	12 दिसं.	11 जन.	09 फर.	10 मार्च
+ 35°	21 मार्च	20 अप्रै.	19 मई	18 जून	18 जुलाई	16 अग.	15 सितं.	15 अक्तू.	13 नवं.	12 दिसं	11 जन.	09 फर.	10 मार्च

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

तारीख	जनवरी 2015				फरवरी 2015				मार्च 2015				अप्रैल 2015			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	14	37	3	29	15	53	4	59	14	42	3	42	16	6	4	17
2	15	24	4	27	16	46	5	44	15	34	4	25	16	57	4	50
3	16	14	5	22	17	39	6	26	16	27	5	4	17	49	5	23
4	17	6	6	14	18	31	7	4	17	19	5	41	18	42	5	57
5	17	59	7	2	19	24	7	40	18	11	6	16	19	35	6	31
6	18	52	7	46	20	15	8	14	19	2	6	49	20	29	7	7
7	19	45	8	27	21	7	8	47	19	54	7	22	21	24	7	46
8	20	38	9	5	21	59	9	20	20	47	7	55	22	19	8	29
9	21	30	9	40	22	51	9	54	21	40	8	30	23	14	9	15
10	22	22	10	13	23	45	10	29	22	34	9	7	–	–	10	5
11	23	13	10	46	–	–	11	7	23	28	9	46	0	7	11	0
12	–	–	11	19	0	40	11	48	–	–	10	30	0	59	11	59
13	0	6	11	53	1	36	12	34	0	24	11	18	1	48	13	1
14	1	0	12	30	2	33	13	25	1	19	12	10	2	34	14	5
15	1	55	13	10	3	29	14	22	2	12	13	8	3	19	15	10
16	2	52	13	55	4	25	15	25	3	5	14	10	4	2	16	17
17	3	50	14	45	5	18	16	31	3	54	15	15	4	45	17	23
18	4	49	15	41	6	8	17	39	4	42	16	23	5	15	18	30
19	5	47	16	43	6	55	18	48	5	14	17	31	6	13	19	37
20	6	42	17	48	7	40	19	57	6	12	18	39	7	0	20	41
21	7	34	18	56	8	24	21	4	6	56	19	47	7	49	21	42
22	8	22	20	4	9	7	22	9	7	40	20	54	8	40	22	39
23	9	7	21	11	9	50	23	13	8	25	21	58	9	34	23	32
24	9	49	22	17	10	35	--	–	9	13	23	0	10	27	--	--
25	10	31	23	21	11	21	0	14	10	2	23	57	11	21	0	19
26	11	12	–	–	12	9	1	12	10	52	–	–	12	15	1	1
27	11	54	0	23	12	59	2	6	11	44	0	50	13	7	1	40
28	12	37	1	23	13	50	2	56	12	37	1	39	13	59	2	17
29	13	23	2	22					13	30	2	23	14	51	2	51
30	14	11	3	17					14	22	3	4	15	43	3	24
31	15	1	4	10					15	14	3	41				

तारीख	मई 2015				जून 2015				जुलाई 2015				अगस्त 2015			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	16	35	3	57	18	4	4	22	18	41	4	37	19	53	6	27
2	17	28	4	31	19	1	5	6	19	36	5	34	20	38	7	33
3	18	23	5	7	19	57	5	55	20	27	6	35	21	21	8	40
4	19	18	5	45	20	52	6	49	21	15	7	38	22	3	9	46
5	20	14	6	26	21	43	7	46	21	59	8	43	22	45	10	51
6	21	9	7	12	22	32	8	47	22	42	9	48	23	28	11	54
7	22	4	8	2	23	17	9	49	23	22	10	52	--	--	12	57
8	22	56	8	56	24	0	10	52	--	--	11	56	0	13	13	57
9	23	46	9	53	--	--	11	56	0	3	12	59	1	1	14	54
10	–	–	10	53	0	41	12	59	0	45	14	1	1	50	15	49
11	0	32	11	56	1	21	14	2	1	28	15	2	2	43	16	39
12	1	16	12	59	2	2	15	5	2	14	16	2	3	36	17	25
13	1	59	14	3	2	44	16	8	3	2	17	0	4	30	18	8
14	2	40	15	7	3	29	17	11	3	54	17	53	5	24	18	47
15	3	22	16	12	4	17	18	11	4	47	18	43	6	18	19	23
16	4	4	17	17	5	8	19	8	5	42	19	28	7	10	19	57
17	4	49	18	22	6	2	20	1	6	37	20	10	8	3	20	31
18	5	36	19	25	6	57	20	49	7	31	20	48	8	54	21	4
19	6	27	20	24	7	52	21	33	8	25	21	23	9	46	21	37
20	7	20	21	20	8	47	22	13	9	17	21	57	10	38	22	12
21	8	14	22	11	9	41	22	49	10	9	22	30	11	30	22	50
22	9	9	22	56	10	34	23	24	11	1	23	3	12	24	23	30
23	10	4	23	37	11	26	23	57	11	53	23	37	13	18	--	--
24	10	58	--	--	12	17	--	–	12	45	--	--	14	13	0	16
25	11	51	0	15	13	9	0	30	13	39	0	13	15	7	1	5
26	12	43	0	50	14	2	1	3	14	34	0	53	16	1	2	1
27	13	35	1	24	14	56	1	39	15	30	1	36	16	52	3	1
28	14	27	1	57	15	52	2	17	16	27	2	25	17	41	4	5
29	15	19	2	30	16	48	2	59	17	22	3	19	18	28	5	11
30	16	13	3	5	17	45	3	46	18	15	4	18	19	13	6	19
31	17	8	3	42					19	6	5	21	19	56	7	27

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015–16 ई.

तारीख	सितंबर 2015				अक्तूबर 2015				नवंबर 2015				दिसंबर 2015				जनवरी 2016				फरवरी 2016				मार्च 2016				अप्रैल 2016				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	20	40	8	35	20	50	9	34	22	11	11	14	22	46	11	22	--	--	11	42	0	32	11	57	0	8	11	13	1	27	12	21	1
2	21	24	9	41	21	40	10	37	23	7	12	2	23	39	12	0	0	6	12	14	1	25	12	36	1	1	11	57	2	15	13	19	2
3	22	10	10	46	22	33	11	37	--	--	12	45	--	--	12	35	0	58	12	48	2	18	13	18	1	53	12	45	3	2	14	19	3
4	22	58	11	49	23	27	12	31	0	2	13	25	0	32	13	9	1	50	13	23	3	12	14	5	2	45	13	37	3	47	15	23	4
5	23	48	12	49	--	--	13	21	0	55	14	1	1	24	13	42	2	43	14	1	4	6	14	57	3	36	14	35	4	31	16	29	5
6	--	--	13	45	0	21	14	6	1	48	14	35	2	16	14	15	3	37	14	42	4	58	15	53	4	25	15	36	5	14	17	36	6
7	0	39	14	36	1	15	14	47	2	40	15	8	3	7	14	49	4	31	15	27	5	49	16	54	5	12	16	40	5	57	18	44	7
8	1	32	15	24	2	9	15	25	3	31	15	41	4	0	15	26	5	26	16	17	6	38	17	57	5	58	17	46	6	42	19	53	8
9	2	26	16	7	3	1	16	0	4	23	16	15	4	54	16	5	6	19	17	11	7	24	19	2	6	42	18	53	7	29	21	1	9
10	3	20	16	47	3	53	16	34	5	15	16	50	5	48	16	48	7	11	18	10	8	8	20	7	7	25	20	0	8	19	22	7	10
11	4	13	17	24	4	45	17	7	6	8	17	28	6	42	17	35	8	1	19	11	8	51	21	13	8	9	21	8	9	11	23	10	11
12	5	6	17	59	5	37	17	40	7	2	18	8	7	36	18	27	8	47	20	14	9	33	22	18	8	54	22	14	10	6	--	--	12
13	5	58	18	32	6	28	18	14	7	56	18	52	8	29	19	22	9	31	21	17	10	15	23	23	9	40	23	19	11	2	0	7	13
14	6	49	19	5	7	21	18	50	8	49	19	40	9	18	20	20	10	13	22	20	10	59	--	--	10	29	--	--	11	59	0	59	14
15	7	41	19	39	8	13	19	28	9	41	20	33	10	5	21	21	10	54	23	24	11	45	0	26	11	21	0	21	12	55	1	46	15
16	8	33	20	13	9	6	20	10	10	32	21	28	10	49	22	22	11	34	--	--	12	33	1	28	12	15	1	19	13	51	2	28	16
17	9	25	20	49	10	0	20	55	11	20	22	26	11	31	23	24	12	16	0	27	13	25	2	28	13	10	2	13	14	45	3	6	17
18	10	17	21	28	10	52	21	44	12	5	23	27	12	12	--	--	12	59	1	30	14	18	3	24	14	5	3	2	15	38	3	42	18
19	11	11	22	11	11	44	22	37	12	48	--	--	12	52	0	27	13	46	2	33	15	14	4	16	15	0	3	47	16	30	4	16	19
20	12	4	22	58	12	34	23	34	13	30	0	28	13	33	1	30	14	36	3	34	16	10	5	4	15	55	4	27	17	22	4	49	20
21	12	57	23	49	13	21	--	--	14	11	1	32	14	16	2	34	15	29	4	33	17	6	5	47	16	49	5	5	18	14	5	22	21
22	13	49	--	--	14	7	0	34	14	53	2	36	15	1	3	38	16	24	5	23	18	1	6	27	17	42	5	40	19	6	5	56	22
23	14	40	0	45	14	51	1	36	15	36	3	42	15	50	4	42	17	21	6	21	18	55	7	4	18	34	6	14	19	58	6	32	23
24	15	28	1	45	15	34	2	41	16	22	4	48	16	43	5	45	18	18	7	8	19	48	7	39	19	26	6	47	20	50	7	10	24
25	16	15	2	49	16	17	3	47	17	11	5	54	17	39	6	44	19	15	7	51	20	40	8	13	20	18	7	21	21	42	7	50	25
26	17	0	3	55	17	1	4	55	18	3	7	0	18	37	7	40	20	10	8	30	21	32	8	47	21	10	7	55	22	33	8	35	26
27	17	45	5	3	17	47	6	3	18	59	8	2	19	35	8	30	21	4	9	6	22	24	9	20	22	2	8	32	23	23	9	23	27
28	18	29	6	11	18	35	7	11	19	56	9	0	20	32	9	15	21	57	9	40	23	16	9	55	22	54	9	10	--	--	10	14	28
29	19	14	7	20	19	26	8	17	20	53	9	52	21	27	9	56	22	49	10	14	--	--	10	33	23	46	9	52	0	11	11	9	29
30	20	1	8	28	20	20	9	21	21	50	10	39	22	22	10	33	23	40	10	47					--	--	10	38	0	57	12	7	30
31					21	15	10	20					23	14	11	8	--	--	11	21					0	37	11	27					31

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2015 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2015 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 18 33	10 11 19	8 19 6	-15 33	-1 8	-23 28	-2 8	15 4	0 51	-22 8	-1 21	-18 26	1 56	4 22	-0 40	-10 13	-0 44	-20 38	2 10
4	11 18 35	10 11 24	8 19 12	-14 46	-1 6	-22 26	-2 0	15 9	0 52	-21 26	-1 25	-18 30	1 56	4 23	-0 40	-10 11	-0 44	-20 37	2 10
7	11 18 37	10 11 28	8 19 19	-13 57	-1 5	-21 13	-1 46	15 14	0 53	-20 37	-1 28	-18 33	1 56	4 24	-0 39	-10 10	-0 44	-20 37	2 9
10	11 18 39	10 11 33	8 19 25	-13 7	-1 3	-19 49	-1 25	15 20	0 53	-19 44	-1 31	-18 36	1 57	4 25	-0 39	-10 8	-0 44	-20 37	2 9
13	11 18 43	10 11 39	8 19 31	-12 16	-1 1	-18 18	-0 56	15 27	0 54	-18 45	-1 33	-18 39	1 57	4 27	-0 39	-10 6	-0 44	-20 36	2 9
16	11 18 46	10 11 44	8 19 37	-11 24	-0 59	-16 48	-0 18	15 33	0 54	-17 41	-1 34	-18 42	1 57	4 28	-0 39	-10 4	-0 44	-20 36	2 9
19	11 18 50	10 11 50	8 19 43	-10 31	-0 57	-15 27	0 29	15 40	0 55	-16 33	-1 35	-18 45	1 58	4 30	-0 39	-10 2	-0 44	-20 36	2 8
22	11 18 55	10 11 55	8 19 49	-9 37	-0 55	-14 25	1 22	15 48	0 56	-15 21	-1 35	-18 47	1 58	4 32	-0 39	-10 0	-0 44	-20 35	2 8
25	11 18 60	10 12 1	8 19 55	-8 42	-0 53	-13 52	2 16	15 55	0 56	-14 5	-1 35	-18 49	1 58	4 34	-0 39	-9 57	-0 44	-20 35	2 8
28	11 19 5	10 12 7	8 20 1	-7 47	-0 51	-13 54	3 2	16 3	0 56	-12 46	-1 33	-18 51	1 59	4 36	-0 39	-9 55	-0 44	-20 34	2 8
31	11 19 11	10 12 14	8 20 7	-6 52	-0 49	-14 24	3 31	16 10	0 57	-11 23	-1 32	-18 53	1 59	4 38	-0 39	-9 53	-0 44	-20 34	2 7
फर. 1	11 19 13	10 12 16	8 20 9	-6 33	-0 49	-14 39	3 35	16 13	0 57	-10 55	-1 31	-18 54	1 59	4 39	-0 39	-9 52	-0 44	-20 34	2 7
4	11 19 19	10 12 22	8 20 15	-5 37	-0 47	-15 30	3 35	16 21	0 57	-9 30	-1 28	-18 56	2 0	4 41	-0 38	-9 50	-0 44	-20 33	2 7
7	11 19 25	10 12 29	8 20 20	-4 40	-0 45	-16 21	3 17	16 28	0 58	-8 1	-1 25	-18 57	2 0	4 44	-0 38	-9 47	-0 44	-20 33	2 7
10	11 19 32	10 12 35	8 20 26	-3 43	-0 43	-17 6	2 48	16 36	0 58	-6 32	-1 21	-18 59	2 0	4 47	-0 38	-9 45	-0 44	-20 33	2 7
13	11 19 40	10 12 42	8 20 31	-2 46	-0 41	-17 41	2 13	16 43	0 58	-5 0	-1 16	-19 0	2 1	4 50	-0 38	-9 42	-0 44	-20 32	2 7
16	11 19 47	10 12 49	8 20 36	-1 49	-0 38	-18 4	1 36	16 51	0 59	-3 28	-1 11	-19 1	2 1	4 53	-0 38	-9 40	-0 44	-20 32	2 6
19	11 19 55	10 12 55	8 20 41	-0 52	-0 36	-18 15	1 0	16 58	0 59	-1 54	-1 6	-19 2	2 2	4 56	-0 38	-9 37	-0 44	-20 32	2 6
22	11 20 3	10 13 2	8 20 45	0 5	-0 34	-18 14	0 26	17 4	0 59	-0 20	-0 59	-19 3	2 2	4 59	-0 38	-9 35	-0 44	-20 31	2 6
25	11 20 12	10 13 9	8 20 50	1 2	-0 32	-18 0	-0 5	17 11	0 59	1 14	-0 52	-19 3	2 3	5 3	-0 38	-9 32	-0 44	-20 31	2 6
28	11 20 20	10 13 16	8 20 54	1 59	-0 30	-17 34	-0 33	17 17	0 59	2 48	-0 45	-19 4	2 3	5 6	-0 38	-9 30	-0 44	-20 31	2 6
मार्च 1	11 20 23	10 13 18	8 20 55	2 17	-0 29	-17 23	-0 42	17 19	0 59	3 19	-0 42	-19 4	2 3	5 7	-0 38	-9 29	-0 44	-20 30	2 6
4	11 20 32	10 13 25	8 20 59	3 13	-0 27	-16 41	-1 6	17 25	0 59	4 52	-0 35	-19 4	2 4	5 11	-0 38	-9 26	-0 44	-20 30	2 6
7	11 20 41	10 13 32	8 21 3	4 9	-0 25	-15 47	-1 27	17 30	0 59	6 25	-0 26	-19 4	2 4	5 14	-0 38	-9 24	-0 44	-20 30	2 6
10	11 20 51	10 13 38	8 21 7	5 4	-0 23	-14 41	-1 44	17 35	0 59	7 56	-0 17	-19 4	2 5	5 18	-0 38	-9 21	-0 44	-20 30	2 6
13	11 21 0	10 13 45	8 21 10	5 59	-0 21	-13 24	-1 58	17 39	0 59	9 25	-0 8	-19 3	2 5	5 22	-0 38	-9 19	-0 44	-20 29	2 5
16	11 21 10	10 13 52	8 21 13	6 53	-0 19	-11 55	-2 8	17 43	0 59	10 53	0 1	-19 3	2 6	5 25	-0 37	-9 17	-0 44	-20 29	2 5
19	11 21 20	10 13 58	8 21 16	7 46	-0 17	-10 16	-2 15	17 46	0 59	12 18	0 11	-19 2	2 6	5 29	-0 37	-9 14	-0 44	-20 29	2 5
22	11 21 30	10 14 5	8 21 18	8 38	-0 14	-8 25	-2 17	17 49	0 59	13 41	0 21	-19 2	2 7	5 33	-0 37	-9 12	-0 44	-20 29	2 5
25	11 21 40	10 14 11	8 21 20	9 30	-0 12	-6 24	-2 16	17 52	0 58	15 1	0 31	-19 1	2 7	5 37	-0 37	-9 9	-0 44	-20 29	2 5
28	11 21 50	10 14 17	8 21 22	10 20	-0 10	-4 13	-2 10	17 54	0 58	16 17	0 41	-19 0	2 8	5 41	-0 37	-9 7	-0 44	-20 28	2 5
31	11 22 0	10 14 23	8 21 24	11 10	-0 8	-1 53	-1 59	17 55	0 58	17 31	0 51	-18 58	2 8	5 45	-0 37	-9 5	-0 44	-20 28	2 5

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2015 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2015 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	11 22 4	10 14 25	8 21 25	11 26	-0 8	-1 4	-1 55	17 55	0 58	17 54	0 54	-18 58	2 8	5 46	-0 37	-9 4	-0 44	-20 28	2 5
4	11 22 14	10 14 31	8 21 26	12 14	-0 6	1 29	-1 38	17 56	0 58	19 2	1 4	-18 57	2 9	5 50	-0 37	-9 2	-0 45	-20 28	2 5
7	11 22 24	10 14 37	8 21 27	13 1	-0 4	4 8	-1 17	17 57	0 57	20 6	1 14	-18 55	2 9	5 54	-0 37	-9 0	-0 45	-20 28	2 5
10	11 22 35	10 14 43	8 21 28	13 47	-0 2	6 53	-0 52	17 56	0 57	21 5	1 24	-18 53	2 9	5 58	-0 37	-8 58	-0 45	-20 28	2 4
13	11 22 45	10 14 48	8 21 28	14 31	0 0	9 39	-0 23	17 56	0 57	22 0	1 33	-18 52	2 10	6 2	-0 37	-8 56	-0 45	-20 28	2 4
16	11 22 55	10 14 53	8 21 28	15 15	0 2	12 23	0 9	17 55	0 57	22 49	1 42	-18 50	2 10	6 6	-0 37	-8 54	-0 45	-20 28	2 4
19	11 23 5	10 14 58	8 21 28	15 56	0 4	14 59	0 42	17 53	0 56	23 33	1 51	-18 48	2 10	6 10	-0 37	-8 52	-0 45	-20 28	2 4
22	11 23 15	10 15 3	8 21 28	16 37	0 6	17 21	1 14	17 51	0 56	24 12	2 0	-18 46	2 11	6 14	-0 37	-8 51	-0 45	-20 29	2 4
25	11 23 25	10 15 8	8 21 27	17 16	0 8	19 25	1 43	17 48	0 56	24 45	2 8	-18 44	2 11	6 18	-0 37	-8 49	-0 45	-20 29	2 4
28	11 23 35	10 15 12	8 21 27	17 53	0 10	21 8	2 7	17 45	0 56	25 12	2 15	-18 41	2 11	6 21	-0 37	-8 47	-0 45	-20 29	2 4
मई 1	11 23 45	10 15 16	8 21 25	18 29	0 12	22 29	2 25	17 42	0 55	25 34	2 22	-18 39	2 11	6 25	-0 37	-8 46	-0 45	-20 29	2 4
4	11 23 55	10 15 20	8 21 24	19 3	0 14	23 27	2 34	17 38	0 55	25 49	2 28	-18 37	2 11	6 29	-0 37	-8 45	-0 45	-20 29	2 4
7	11 24 4	10 15 23	8 21 23	19 36	0 16	24 4	2 36	17 33	0 55	25 59	2 33	-18 34	2 11	6 32	-0 37	-8 43	-0 46	-20 30	2 3
10	11 24 13	10 15 27	8 21 21	20 7	0 18	24 21	2 28	17 29	0 55	26 2	2 37	-18 32	2 11	6 36	-0 37	-8 42	-0 46	-20 30	2 3
13	11 24 22	10 15 30	8 21 19	20 36	0 19	24 20	2 11	17 23	0 54	26 0	2 41	-18 29	2 11	6 39	-0 37	-8 41	-0 46	-20 31	2 3
16	11 24 31	10 15 33	8 21 16	21 3	0 21	24 2	1 44	17 18	0 54	25 52	2 44	-18 27	2 11	6 43	-0 37	-8 40	-0 46	-20 31	2 3
19	11 24 40	10 15 35	8 21 14	21 28	0 23	23 30	1 8	17 12	0 54	25 38	2 45	-18 24	2 11	6 46	-0 37	-8 39	-0 46	-20 31	2 3
22	11 24 48	10 15 37	8 21 11	21 52	0 25	22 43	0 24	17 6	0 54	25 19	2 46	-18 22	2 11	6 49	-0 38	-8 39	-0 46	-20 32	2 3
25	11 24 56	10 15 39	8 21 8	22 14	0 26	21 46	-0 26	16 59	0 53	24 54	2 45	-18 19	2 11	6 52	-0 38	-8 38	-0 46	-20 32	2 3
28	11 25 4	10 15 41	8 21 5	22 34	0 28	20 43	-1 19	16 52	0 53	24 25	2 43	-18 17	2 11	6 55	-0 38	-8 37	-0 46	-20 33	2 2
31	11 25 12	10 15 42	8 21 1	22 52	0 30	19 38	-2 10	16 44	0 53	23 51	2 40	-18 14	2 11	6 58	-0 38	-8 37	-0 46	-20 33	2 2
जून 1	11 25 14	10 15 43	8 21 0	22 58	0 30	19 17	-2 26	16 42	0 53	23 39	2 39	-18 13	2 10	6 59	-0 38	-8 37	-0 46	-20 34	2 2
4	11 25 21	10 15 44	8 20 57	23 13	0 32	18 19	-3 8	16 34	0 53	22 59	2 34	-18 11	2 10	7 1	-0 38	-8 37	-0 46	-20 34	2 2
7	11 25 28	10 15 44	8 20 53	23 27	0 33	17 34	-3 41	16 25	0 53	22 15	2 27	-18 9	2 10	7 4	-0 38	-8 37	-0 47	-20 35	2 2
10	11 25 35	10 15 45	8 20 49	23 39	0 35	17 6	-4 3	16 17	0 52	21 28	2 19	-18 6	2 9	7 6	-0 38	-8 36	-0 47	-20 35	2 2
13	11 25 41	10 15 45	8 20 45	23 48	0 36	16 55	-4 13	16 8	0 52	20 38	2 10	-18 4	2 9	7 8	-0 38	-8 37	-0 47	-20 36	2 1
16	11 25 47	10 15 44	8 20 41	23 56	0 38	17 1	-4 12	15 59	0 52	19 45	1 58	-18 2	2 9	7 11	-0 38	-8 37	-0 47	-20 37	2 1
19	11 25 52	10 15 44	8 20 37	24 2	0 39	17 24	-4 2	15 49	0 52	18 49	1 45	-18 0	2 8	7 13	-0 38	-8 37	-0 47	-20 37	2 1
22	11 25 57	10 15 43	8 20 33	24 6	0 41	18 0	-3 44	15 39	0 52	17 52	1 30	-17 59	2 8	7 14	-0 38	-8 37	-0 47	-20 38	2 1
25	11 26 2	10 15 42	8 20 28	24 8	0 42	18 46	-3 20	15 29	0 52	16 53	1 13	-17 57	2 7	7 16	-0 38	-8 38	-0 47	-20 39	2 0
28	11 26 6	10 15 41	8 20 24	24 8	0 44	19 40	-2 51	15 18	0 52	15 54	0 54	-17 55	2 7	7 18	-0 38	-8 39	-0 47	-20 40	2 0

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2015 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2015 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	11 26 10	10 15 39	8 20 19	24 7	0 45	20 36	-2 17	15 8	0 52	14 53	0 33	-17 54	2 6	7 19	-0 38	-8 39	-0 47	-20 40	2 0
4	11 26 13	10 15 37	8 20 15	24 3	0 46	21 31	-1 41	14 57	0 52	13 53	0 10	-17 53	2 5	7 20	-0 38	-8 40	-0 48	-20 41	1 59
7	11 26 16	10 15 35	8 20 10	23 58	0 48	22 21	-1 3	14 45	0 51	12 54	-0 16	-17 52	2 5	7 21	-0 39	-8 41	-0 48	-20 42	1 59
10	11 26 19	10 15 33	8 20 6	23 51	0 49	22 59	-0 26	14 34	0 51	11 56	-0 44	-17 51	2 4	7 22	-0 39	-8 42	-0 48	-20 43	1 59
13	11 26 21	10 15 30	8 20 1	23 42	0 50	23 22	0 10	14 22	0 51	10 59	-1 14	-17 50	2 3	7 23	-0 39	-8 43	-0 48	-20 43	1 59
16	11 26 23	10 15 27	8 19 57	23 31	0 51	23 23	0 42	14 10	0 51	10 5	-1 47	-17 50	2 3	7 23	-0 39	-8 44	-0 48	-20 44	1 58
19	11 26 24	10 15 24	8 19 52	23 19	0 53	23 0	1 8	13 58	0 51	9 15	-2 22	-17 49	2 2	7 24	-0 39	-8 45	-0 48	-20 45	1 58
22	11 26 25	10 15 21	8 19 48	23 5	0 54	22 14	1 28	13 46	0 51	8 29	-2 59	-17 49	2 1	7 24	-0 39	-8 47	-0 48	-20 46	1 58
25	11 26 26	10 15 17	8 19 44	22 49	0 55	21 5	1 41	13 33	0 51	7 47	-3 38	-17 49	2 1	7 24	-0 39	-8 48	-0 48	-20 47	1 57
28	11 26 26	10 15 13	8 19 40	22 32	0 56	19 37	1 46	13 20	0 51	7 12	-4 19	-17 50	2 0	7 24	-0 39	-8 50	-0 48	-20 47	1 57
31	11 26 25	10 15 9	8 19 36	22 13	0 57	17 54	1 46	13 7	0 51	6 44	-4 59	-17 50	1 59	7 24	-0 39	-8 51	-0 48	-20 48	1 56
अगस्त 1	11 26 25	10 15 8	8 19 34	22 7	0 58	17 17	1 45	13 3	0 51	6 37	-5 13	-17 50	1 59	7 24	-0 39	-8 52	-0 48	-20 48	1 56
4	11 26 24	10 15 4	8 19 30	21 46	0 59	15 21	1 37	12 50	0 52	6 19	-5 52	-17 51	1 58	7 23	-0 39	-8 53	-0 48	-20 49	1 56
7	11 26 22	10 15 00	8 19 27	21 24	1 0	13 17	1 25	12 37	0 52	6 10	-6 30	-17 52	1 57	7 23	-0 39	-8 55	-0 49	-20 50	1 56
10	11 26 21	10 14 55	8 19 23	21 0	1 1	11 10	1 9	12 23	0 52	6 10	-7 3	-17 53	1 57	7 22	-0 39	-8 57	-0 49	-20 51	1 55
13	11 26 18	10 14 51	8 19 20	20 35	1 2	9 1	0 49	12 10	0 52	6 18	-7 31	-17 55	1 56	7 21	-0 40	-8 59	-0 49	-20 51	1 55
16	11 26 15	10 14 46	8 19 16	20 9	1 3	6 52	0 27	11 56	0 52	6 33	-7 52	-17 56	1 55	7 20	-0 40	-9 0	-0 49	-20 52	1 54
19	11 26 12	10 14 41	8 19 13	19 41	1 4	4 44	0 4	11 42	0 52	6 55	-8 5	-17 58	1 55	7 19	-0 40	-9 2	-0 49	-20 53	1 54
22	11 26 9	10 14 36	8 19 10	19 13	1 5	2 38	-0 22	11 28	0 52	7 21	-8 11	-18 0	1 54	7 17	-0 40	-9 4	-0 49	-20 54	1 54
25	11 26 5	10 14 32	8 19 8	18 43	1 6	0 36	-0 49	11 14	0 52	7 51	-8 9	-18 2	1 53	7 16	-0 40	-9 6	-0 49	-20 54	1 53
28	11 26 1	10 14 27	8 19 5	18 12	1 7	-1 20	-1 16	11 0	0 52	8 21	-8 0	-18 4	1 52	7 14	-0 40	-9 8	-0 49	-20 55	1 53
31	11 25 56	10 14 22	8 19 3	17 40	1 8	-3 11	-1 44	10 46	0 53	8 52	-7 45	-18 6	1 52	7 12	-0 40	-9 10	-0 49	-20 56	1 52
सितं 1	11 25 55	10 14 20	8 19 2	17 29	1 8	-3 46	-1 54	10 42	0 53	9 1	-7 39	-18 7	1 51	7 12	-0 40	-9 10	-0 49	-20 56	1 52
4	11 25 49	10 14 15	8 19 0	16 56	1 9	-5 25	-2 21	10 27	0 53	9 29	-7 18	-18 10	1 51	7 10	-0 40	-9 12	-0 49	-20 56	1 52
7	11 25 44	10 14 10	8 18 58	16 22	1 10	-6 53	-2 48	10 13	0 53	9 54	-6 54	-18 12	1 50	7 8	-0 40	-9 14	-0 49	-20 57	1 51
10	11 25 39	10 14 5	8 18 57	15 46	1 11	-8 8	-3 12	9 59	0 53	10 15	-6 28	-18 15	1 49	7 6	-0 40	-9 16	-0 49	-20 58	1 51
13	11 25 33	10 14 0	8 18 56	15 11	1 12	-9 7	-3 33	9 45	0 54	10 32	-6 0	-18 18	1 49	7 3	-0 40	-9 18	-0 49	-20 58	1 50
16	11 25 26	10 13 56	8 18 55	14 34	1 13	-9 44	-3 49	9 31	0 54	10 44	-5 31	-18 21	1 48	7 1	-0 40	-9 19	-0 49	-20 59	1 50
19	11 25 20	10 13 51	8 18 54	13 56	1 13	-9 54	-3 58	9 17	0 54	10 51	-5 3	-18 24	1 48	6 58	-0 40	-9 21	-0 49	-20 59	1 49
22	11 25 13	10 13 46	8 18 54	13 18	1 14	-9 31	-3 57	9 3	0 54	10 53	-4 34	-18 28	1 47	6 56	-0 40	-9 23	-0 49	-21 0	1 49
25	11 25 7	10 13 42	8 18 54	12 40	1 15	-8 30	-3 41	8 49	0 55	10 60	-4 5	-18 31	1 46	6 53	-0 40	-9 25	-0 49	-21 0	1 48
28	11 25 00	10 13 37	8 18 54	12 0	1 16	-6 52	-3 9	8 35	0 55	10 42	-3 38	-18 35	1 46	6 51	-0 40	-9 26	-0 49	-21 1	1 48

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2015 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2015 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तू. 1	11 24 53	10 13 33	8 18 54	11 20	1 16	-4 48	-2 20	8 21	0 55	10 29	-3 10	-18 38	1 45	6 48	-0 40	-9 28	-0 49	-21 1	1 47
4	11 24 45	10 13 29	8 18 55	10 40	1 17	-2 40	-1 21	8 8	0 56	10 11	-2 44	-18 42	1 45	6 45	-0 40	-9 29	-0 49	-21 2	1 47
7	11 24 38	10 13 25	8 18 56	9 59	1 18	-0 55	-0 21	7 54	0 56	9 47	-2 19	-18 46	1 44	6 43	-0 40	-9 31	-0 49	-21 2	1 47
10	11 24 31	10 13 22	8 18 57	9 18	1 19	0 8	0 33	7 41	0 57	9 19	-1 54	-18 50	1 44	6 40	-0 40	-9 32	-0 49	-21 2	1 46
13	11 24 24	10 13 18	8 18 58	8 36	1 19	0 23	1 14	7 28	0 57	8 46	-1 31	-18 54	1 43	6 37	-0 40	-9 33	-0 49	-21 3	1 46
16	11 24 16	10 13 15	8 19 0	7 55	1 20	-0 8	1 42	7 15	0 57	8 9	-1 8	-18 58	1 43	6 34	-0 40	-9 34	-0 49	-21 3	1 45
19	11 24 9	10 13 12	8 19 2	7 12	1 20	-1 15	1 58	7 2	0 58	7 27	-0 47	-19 1	1 42	6 32	-0 40	-9 36	-0 49	-21 3	1 45
22	11 24 2	10 13 9	8 19 5	6 30	1 21	-2 48	2 3	6 49	0 58	6 41	-0 27	-19 5	1 42	6 29	-0 40	-9 37	-0 49	-21 3	1 44
25	11 23 55	10 13 7	8 19 7	5 48	1 22	-4 37	2 0	6 37	0 59	5 51	-0 8	-19 9	1 41	6 26	-0 40	-9 37	-0 49	-21 3	1 44
28	11 23 48	10 13 4	8 19 10	5 5	1 22	-6 35	1 51	6 25	0 59	4 58	0 10	-19 13	1 41	6 24	-0 40	-9 38	-0 49	-21 4	1 43
31	11 23 41	10 13 2	8 19 13	4 22	1 23	-8 36	1 37	6 13	1 0	4 1	0 26	-19 17	1 41	6 21	-0 40	-9 39	-0 49	-21 4	1 43
नवं. 1	11 23 39	10 13 2	8 19 14	4 8	1 23	-9 16	1 32	6 10	1 0	3 42	0 32	-19 19	1 41	6 20	-0 40	-9 39	-0 49	-21 4	1 43
4	11 23 32	10 13 0	8 19 17	3 25	1 24	-11 16	1 15	5 58	1 0	2 41	0 47	-19 23	1 40	6 18	-0 40	-9 40	-0 49	-21 4	1 42
7	11 23 26	10 12 59	8 19 21	2 42	1 24	-13 13	0 56	5 47	1 1	1 38	1 1	-19 27	1 40	6 15	-0 40	-9 40	-0 49	-21 4	1 42
10	11 23 19	10 12 58	8 19 25	1 59	1 25	-15 4	0 36	5 37	1 2	0 32	1 13	-19 31	1 40	6 13	-0 40	-9 41	-0 49	-21 4	1 42
13	11 23 14	10 12 57	8 19 29	1 17	1 25	-16 48	0 16	5 27	1 2	-0 35	1 25	-19 35	1 39	6 11	-0 40	-9 41	-0 49	-21 4	1 41
16	11 23 8	10 12 57	8 19 33	0 34	1 26	-18 25	-0 4	5 17	1 3	-1 44	1 35	-19 39	1 39	6 9	-0 40	-9 41	-0 48	-21 4	1 41
19	11 23 3	10 12 56	8 19 38	-0 8	1 26	-19 54	-0 24	5 7	1 3	-2 55	1 44	-19 42	1 39	6 7	-0 40	-9 41	-0 48	-21 4	1 40
22	11 22 58	10 12 57	8 19 43	-0 50	1 26	-21 14	-0 43	4 58	1 4	-4 6	1 52	-19 46	1 39	6 5	-0 39	-9 41	-0 48	-21 4	1 40
25	11 22 53	10 12 57	8 19 47	-1 32	1 27	-22 25	-1 2	4 50	1 5	-5 18	1 59	-19 50	1 38	6 3	-0 39	-9 41	-0 48	-21 4	1 40
28	11 22 49	10 12 58	8 19 52	-2 14	1 27	-23 25	-1 19	4 42	1 6	-6 31	2 5	-19 54	1 38	6 2	-0 39	-9 40	-0 48	-21 4	1 39
दिसं. 1	11 22 45	10 12 59	8 19 58	-2 55	1 28	-24 15	-1 34	4 35	1 6	-7 43	2 9	-19 57	1 38	6 0	-0 39	-9 40	-0 48	-21 3	1 39
4	11 22 41	10 13 0	8 20 3	-3 36	1 28	-24 54	-1 48	4 28	1 7	-8 55	2 13	-20 1	1 38	5 59	-0 39	-9 39	-0 48	-21 3	1 38
7	11 22 38	10 13 2	8 20 9	-4 17	1 28	-25 20	-2 0	4 21	1 8	-10 6	2 15	-20 4	1 38	5 58	-0 39	-9 38	-0 48	-21 3	1 38
10	11 22 35	10 13 4	8 20 14	-4 57	1 29	-25 36	-2 9	4 15	1 8	-11 16	2 17	-20 8	1 38	5 57	-0 39	-9 38	-0 48	-21 3	1 38
13	11 22 33	10 13 7	8 20 20	-5 36	1 29	-25 36	-2 14	4 10	1 9	-12 24	2 17	-20 11	1 38	5 56	-0 39	-9 37	-0 48	-21 2	1 37
16	11 22 31	10 13 9	8 20 26	-6 15	1 29	-26 24	-2 17	4 5	1 10	-13 30	2 17	-20 14	1 38	5 56	-0 39	-9 36	-0 48	-21 2	1 37
19	11 22 30	10 13 12	8 20 32	-6 54	1 28	-24 59	-2 14	4 1	1 11	-14 34	2 15	-20 17	1 38	5 55	-0 39	-9 35	-0 48	-21 2	1 37
22	11 22 29	10 13 15	8 20 38	-7 32	1 29	-24 20	-2 6	3 58	1 12	-15 36	2 13	-20 20	1 38	5 55	-0 38	-9 33	-0 48	-21 2	1 36
25	11 22 29	10 13 19	8 20 44	-8 9	1 30	-23 30	-1 52	3 55	1 12	-16 34	2 10	-20 23	1 38	5 55	-0 38	-9 32	-0 48	-21 1	1 36
28	11 22 29	10 13 23	8 20 50	-8 46	1 30	-22 30	-1 30	3 53	1 13	-17 29	2 6	-20 26	1 38	5 55	-0 38	-9 31	-0 48	-21 1	1 36
31	11 22 29	10 13 27	8 20 56	-9 22	1 30	-21 25	-0 59	3 52	1 14	-18 21	2 1	-20 29	1 38	5 56	-0 38	-9 29	-0 48	-21 0	1 36

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2016 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2016 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 22 30	10 13 28	8 20 58	-9 34	1 30	-21 3	-0 46	3 51	1 14	-18 37	2 0	-20 30	1 38	5 56	-0 38	-9 28	-0 48	-21 0	1 35
4	11 22 31	10 13 32	8 21 5	-10 9	1 30	-19 59	-0 1	3 51	1 15	-19 23	1 54	-20 32	1 38	5 56	-0 38	-9 27	-0 48	-21 0	1 35
7	11 22 32	10 13 37	8 21 11	-10 43	1 30	-19 7	0 52	3 51	1 16	-20 4	1 48	-20 35	1 38	5 57	-0 38	-9 25	-0 48	-21 0	1 35
10	11 22 34	10 13 42	8 21 17	-11 16	1 30	-18 33	1 49	3 52	1 17	-20 41	1 41	-20 37	1 38	5 58	-0 38	-9 23	-0 48	-20 59	1 35
13	11 22 37	10 13 47	8 21 23	-11 49	1 30	-18 20	2 41	3 53	1 18	-21 12	1 34	-20 39	1 38	5 59	-0 38	-9 21	-0 48	-20 59	1 34
16	11 22 40	10 13 52	8 21 29	-12 21	1 30	-18 26	3 15	3 56	1 19	-21 39	1 27	-20 41	1 38	6 0	-0 38	-9 19	-0 47	-20 58	1 34
19	11 22 43	10 13 57	8 21 36	-12 52	1 29	-18 44	3 27	3 58	1 19	-22 0	1 19	-20 43	1 39	6 2	-0 37	-9 17	-0 47	-20 58	1 34
22	11 22 47	10 14 3	8 21 42	-13 22	1 29	-19 10	3 20	4 2	1 20	-22 15	1 10	-20 45	1 39	6 3	-0 37	-9 15	-0 47	-20 57	1 33
25	11 22 51	10 14 9	8 21 48	-13 51	1 29	-19 38	2 58	4 6	1 21	-22 24	1 2	-20 47	1 39	6 5	-0 37	-9 13	-0 47	-20 57	1 33
28	11 22 56	10 14 15	8 21 54	-14 19	1 29	-20 6	2 29	4 11	1 22	-22 27	0 53	-20 49	1 39	6 7	-0 37	-9 11	-0 47	-20 56	1 33
31	11 23 1	10 14 21	8 21 59	-14 46	1 28	-20 29	1 57	4 16	1 23	-22 25	0 44	-20 50	1 39	6 9	-0 37	-9 8	-0 47	-20 56	1 33
फर. 1	11 23 3	10 14 23	8 22 1	-14 55	1 28	-20 35	1 46	4 18	1 23	-22 22	0 41	-20 51	1 39	6 10	-0 37	-9 8	-0 47	-20 56	1 33
4	11 23 9	10 14 29	8 22 7	-15 21	1 28	-20 50	1 14	4 25	1 23	-22 12	0 32	-20 52	1 40	6 12	-0 37	-9 5	-0 47	-20 55	1 32
7	11 23 15	10 14 36	8 22 13	-15 46	1 27	-20 56	0 42	4 31	1 24	-21 55	0 23	-20 53	1 40	6 14	-0 37	-9 3	-0 47	-20 55	1 32
10	11 23 21	10 14 42	8 22 18	-16 10	1 26	-20 52	0 13	4 38	1 25	-21 32	0 14	-20 55	1 40	6 17	-0 37	-9 0	-0 47	-20 54	1 32
13	11 23 28	10 14 49	8 22 23	-16 33	1 25	-20 38	-0 15	4 46	1 25	-21 4	0 6	-20 56	1 41	6 19	-0 37	-8 58	-0 47	-20 54	1 32
16	11 23 35	10 14 56	8 22 28	-16 56	1 25	-20 13	-0 40	4 54	1 26	-20 30	-0 3	-20 57	1 41	6 22	-0 36	-8 55	-0 47	-20 54	1 32
19	11 23 43	10 15 2	8 22 33	-17 17	1 24	-19 37	-1 2	5 3	1 26	-19 51	-0 12	-20 57	1 41	6 25	-0 36	-8 53	-0 47	-20 53	1 31
22	11 23 50	10 15 9	8 22 38	-17 37	1 23	-18 49	-1 21	5 11	1 27	-19 6	-0 20	-20 58	1 41	6 28	-0 36	-8 50	-0 47	-20 53	1 31
25	11 23 59	10 15 16	8 22 43	-17 56	1 21	-17 50	-1 38	5 20	1 27	-18 16	-0 28	-20 59	1 42	6 31	-.0 36	-8 48	-0 47	-20 52	1 31
28	11 24 7	10 15 23	8 22 47	-18 15	1 20	-16 39	-1 51	5 29	1 28	-17 22	-0 35	-20 59	1 42	6 35	-0 36	-8 45	-0 47	-20 52	1 31
मार्च 1	11 24 13	10 15 27	8 22 50	-18 26	1 19	-15 46	-1 59	5 36	1 28	-16 43	-0 40	-21 0	1 42	6 37	-0 36	-8 44	-0 48	-20 52	1 31
4	11 24 21	10 15 34	8 22 54	-18 43	1 17	-14 16	-2 6	5 45	1 28	-15 42	-0 47	-21 0	1 43	6 40	-0 36	-8 41	-0 48	-20 51	1 31
7	11 24 30	10 15 41	8 22 58	-18 59	1 16	-12 34	-2 11	5 54	1 28	-14 36	-0 54	-21 0	1 43	6 44	-0 36	-8 38	-0 48	-20 51	1 30
10	11 24 39	10 15 48	8 23 1	-19 14	1 14	-10 42	-2 11	6 4	1 29	-13 27	-1 0	-21 0	1 43	6 47	-0 36	-8 36	-0 48	-20 51	1 30
13	11 24 49	10 15 54	8 23 5	-19 28	1 12	-8 38	-2 8	6 13	1 29	-12 14	-1 5	-21 0	1 44	6 51	-0 36	-8 33	-0 48	-20 51	1 30
16	11 24 58	10 16 1	8 23 8	-19 41	1 9	-6 23	-2 0	6 22	1 29	-10 59	-1 10	-21 0	1 44	6 55	-0 36	-8 31	-0 48	-20 50	1 30
19	11 25 8	10 16 8	8 23 10	-19 54	1 7	-3 58	-1 47	6 31	1 29	-9 41	-1 15	-21 0	1 44	6 58	-0 36	-8 29	-0 48	-20 50	1 30
22	11 25 18	10 16 14	8 23 13	-20 6	1 4	-1 24	-1 30	6 40	1 29	-8 20	-1 19	-21 0	1 45	7 2	-0 36	-8 26	-0 48	-20 50	1 30
25	11 25 28	10 16 21	8 23 15	-20 17	1 1	1 19	-1 8	6 48	1 29	-6 58	-1 22	-21 0	1 45	7 6	-0 36	-8 24	-0 48	-20 50	1 29
28	11 25 38	10 16 27	8 23 17	-20 27	0 58	4 7	-0 42	6 56	1 28	-5 33	-1 25	-20 59	1 45	7 10	-0 36	-8 21	-0 48	-20 50	1 29
31	11 25 48	10 16 33	8 23 19	-20 37	0 54	6 57	-0 11	7 3	1 28	-4 8	-1 27	-20 59	1 46	7 14	-0 36	-8 19	-0 48	-20 50	1 29

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2016 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	11 25 52	10 16 35	8 23 20	-20 40	0 53	7 53	-0 0	7 6	1 28	-3 39	-1 28	-20 59	1 46	7 15	-0 36	-8 18	-0 48	-20 50	1 29
4	11 26 2	10 16 41	8 23 21	-20 49	0 49	10 38	0 34	7 13	1 28	-2 12	-1 29	-20 58	1 46	7 19	-0 36	-8 16	-0 48	-20 50	1 29
7	11 26 12	10 16 47	8 23 22	-20 57	0 44	13 13	1 8	7 19	1 27	-0 44	-1 30	-20 58	1 47	7 23	-0 36	-8 14	-0 48	-20 50	1 29
10	11 26 22	10 16 52	8 23 23	-21 5	0 39	15 30	1 41	7 25	1 27	0 44	-1 30	-20 57	1 47	7 26	-0 36	-8 12	-0 48	-20 50	1 29
13	11 26 33	10 16 58	8 23 24	-21 12	0 34	17 28	2 10	7 30	1 27	2 12	-1 30	-20 56	1 47	7 30	-0 35	-8 10	-0 48	-20 50	1 29
16	11 26 43	10 17 3	8 23 24	-21 18	0 29	19 1	2 32	7 35	1 26	3 40	-1 28	-20 55	1 47	7 34	-0 35	-8 8	-0 48	-20 50	1 28
19	11 26 53	10 17 8	8 23 24	-21 24	0 23	20 10	2 47	7 39	1 26	5 7	-1 27	-20 54	1 48	7 38	-0 35	-8 6	-0 48	-20 50	1 28
22	11 27 3	10 17 13	8 23 24	-21 30	0 16	20 54	2 53	7 43	1 25	6 33	-1 25	-20 53	1 48	7 42	-0 35	-8 4	-0 49	-20 50	1 28
25	11 27 14	10 17 18	8 23 23	-21 34	0 9	21 13	2 48	7 46	1 25	7 58	-1 22	-20 52	1 48	7 46	-0 35	-8 3	-0 49	-20 50	1 28
28	11 27 24	10 17 22	8 23 23	-21 38	0 2	21 7	2 32	7 48	1 24	9 22	-1 19	-20 51	1 48	7 49	-0 35	-8 1	-0 49	-20 51	1 28

(पृष्ठ 175 का शेष)

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2016 ई.

चन्द्र–नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	पू.षा.	13	23	19	40	1	55	8	7
1/ 2	उ.षा	14	16	20	23	2	27	8	28
2/ 3	श्रव.	14	26	20	21	2	13	8	3
3/ 4	धनि.	13	49	19	34	1	15	6	54
4/ 5	शत.	12	31	18	5	23	37	5	7
5/ 6	पू.भा.	10	34	16	0	21	24	2	47
6/ 7	उ.भा.	8	8	13	27	18	46	0	3
7	रेव.	5	20	10	36	15	51	21	6
8	अश्वि.	2	21	7	36	12	51	18	6
8/ 9	भर.	23	22	4	39	9	56	15	15
9/10	कृत्ति	20	34	1	55	7	17	12	41

चन्द्र–नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
10/11	रोहि.	18	7	23	35	5	5	10	37
11/12	मृग.	16	11	21	48	3	27	9	9
12/13	आर्द्रा	14	54	20	42	2	32	8	25
13/14	पुन.	14	21	20	20	2	22	8	28
14/15	पुष्य	14	35	20	46	3	0	9	16
15/16	आश्ले.	15	35	21	57	4	21	10	48
16/17	मघा	17	17	23	48	6	21	12	56
17/18	पू.फा.	19	32	2	10	8	50	15	31
18/19	उ.फा.	22	13	4	56	11	40	18	25
20	हस्त	1	10	7	55	14	41	21	28

चन्द्र–नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
21/22	चित्रा	4	14	11	0	17	46	0	33
22/23	स्वाती	7	18	14	4	20	49	3	33
23/24	विशा.	10	17	17	1	23	43	6	25
24/25	अनु.	13	6	19	46	2	25	9	3
25/26	ज्येष्ठा	15	39	22	15	4	49	11	22
26/27	मूल	17	53	0	23	6	51	13	18
27/28	पू.षा.	19	43	2	5	8	26	14	45
28/29	उ.षा.	21	2	3	17	9	29	15	39
29/30	श्रव.	21	47	3	53	9	56	15	56

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2015 से 7 अप्रैल, 2016 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2015–2016 ई.)

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		पू.षा.	2	17 22
4		पू.षा.	3	23 53
8		पू.षा.	4	6 24
11		उ.षा.	1	12 56
14	मकर	उ.षा.	2	19 27
18		उ.षा.	3	1 59
21		उ.षा.	4	8 33
24		श्रव.	1	15 10
27		श्रव.	2	21 50
31		श्रव.	3	4 36
फरवरी 3		श्रव.	4	11 27
6		धनि.	1	18 22
10		धनि.	2	1 22
13	कुम्भ	धनि.	3	8 26
16		धनि.	4	15 36
19		शत.	1	22 51
23		शत.	2	6 13
26		शत.	3	13 43
मार्च 1		शत.	4	21 21
5		पू.भा.	1	5 09
8		पू.भा.	2	13 04
11		पू.भा.	3	21 07
15	मीन	पू.भा.	4	5 18
18		उ.भा.	1	13 36
21		उ.भा.	2	22 03
25		उ.भा.	3	6 39
28		उ.भा.	4	15 26
अप्रैल 1		रेव.	1	0 23
4		रेव.	2	9 30
7		रेव.	3	18 47
11		रेव.	4	4 13

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 14	मेष	अश्वि.	1	13 46
17		अश्वि.	2	23 28
21		अश्वि.	3	9 19
24		अश्वि.	4	19 20
28		भर.	1	5 31
मई 1		भर.	2	15 52
5		भर.	3	2 22
8		भर.	4	13 00
11		कृत्ति.	1	23 46
15	वृष	कृत्ति.	2	10 37
18		कृत्ति.	3	21 35
22		कृत्ति.	4	8 40
25		रोहि.	1	19 53
29		रोहि.	2	7 13
जून 1		रोहि.	3	18 40
5		रोहि.	4	6 13
8		मृग.	1	17 50
12		मृग.	2	5 29
15	मिथुन	मृग.	3	17 11
19		मृग.	4	4 56
22		आर्द्रा	1	16 45
26		आर्द्रा	2	4 36
29		आर्द्रा	3	16 31
जुलाई 3		आर्द्रा	4	4 27
6		पुन.	1	16 24
10		पुन.	2	4 19
13		पुन.	3	16 11
17	कर्क	पुन.	4	4 02
20		पुष्य	1	15 51
24		पुष्य	2	3 39
27		पुष्य	3	15 25

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 31		पुष्य	4	3 08
अगस्त 3		आश्ले.	1	14 48
7		आश्ले.	2	2 22
10		आश्ले.	3	13 49
14		आश्ले.	4	1 10
17	सिंह	मघा	1	12 25
20		मघा	2	23 33
24		मघा	3	10 37
27		मघा	4	21 34
31		पू.फा.	1	8 24
सितंबर 3		पू.फा.	2	19 06
7		पू.फा.	3	5 39
10		पू.फा.	4	16 02
14		उ.फा.	1	2 15
17	कन्या	उ.फा.	2	12 19
20		उ.फा.	3	22 16
24		उ.फा.	4	8 04
27		हस्त	1	17 44
अक्तूबर 1		हस्त	2	3 15
4		हस्त	3	12 36
7		हस्त	4	21 46
11		चित्रा	1	6 46
14		चित्रा	2	15 35
18	तुला	चित्रा	3	0 16
21		चित्रा	4	8 48
24		स्वाती	1	17 13
28		स्वाती	2	1 30
31		स्वाती	3	9 37
नवंबर 3		स्वाती	4	17 36
7		विशा.	1	1 25
10		विशा.	2	9 06

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवंबर 13		विशा.	3	16 38
17	वृश्चिक	विशा.	4	0 03
20		अनु.	1	7 23
23		अनु.	2	14 37
26		अनु.	3	21 46
30		अनु.	4	4 49
दिसंबर 3		ज्येष्ठा	1	11 46
6		ज्येष्ठा	2	18 37
10		ज्येष्ठा	3	1 23
13		ज्येष्ठा	4	8 04
16	धनु	मूल	1	14 42
19		मूल	2	21 18
23		मूल	3	3 53
26		मूल	4	10 27
29		पू.षा.	1	17 00
सन् 2016 ई.				
जनवरी 1		पू.षा.	2	23 30
5		पू.षा.	3	5 59
8		पू.षा.	4	12 27
11		उ.षा.	1	18 56
15	मकर	उ.षा.	2	1 26
18		उ.षा.	3	7 59
21		उ.षा.	4	14 35
24		श्रव.	1	21 15
28		श्रव.	2	3 58
31		श्रव.	3	10 43
फरवरी 3		श्रव.	4	17 32
7		धनि.	1	0 25
10		धनि.	2	7 22
13	कुम्भ	धनि.	3	14 25
16		धनि.	4	21 36

सूर्य–चार (सन् 2016 ई.)

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 20		शत.	1	4 53
23		शत.	2	12 18
26		शत.	3	19 50
मार्च 1		शत.	4	3 29
4		पू.भा.	1	11 15
7		पू.भा.	2	19 07
11		पू.भा.	3	3 08
14	मीन	पू.भा.	4	11 17
17		उ.भा.	1	19 37
21		उ.भा.	2	4 07
24		उ.भा.	3	12 46
27		उ.भा.	4	21 35
31		रेव.	1	6 32
अप्रैल 3		रेव.	2	15 37
7		रेव.	3	0 51

मंगल–चार (सन् 2015 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 6	कुम्भ	धनि.	3	1 59
9		धनि.	4	8 11
13		शत.	1	14 23
17		शत.	2	20 38
22		शत.	3	2 57
26		शत.	4	9 23
30		पू.भा.	1	16 00
फरवरी 3		पू.भा.	2	22 50
8		पू.भा.	3	5 54
12	मीन	पू.भा.	4	13 13
16		उ.भा.	1	20 47
21		उ.भा.	2	4 40
25		उ.भा.	3	12 52
मार्च 1		उ.भा.	4	21 28
6		रेव.	1	6 28

मंगल–चार (सन् 2015–16 ई.)

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 10		रेव.	2	15 54
15		रेव.	3	1 44
19		रेव.	4	12 02
23	मेष	अश्वि.	1	22 47
28		अश्वि.	2	10 02
अप्रैल 1		अश्वि.	3	21 49
6		अश्वि.	4	10 09
10		भर.	1	23 02
15		भर.	2	12 27
20		भर.	3	2 25
24		भर.	4	16 57
29		कृत्ति.	1	8 07
मई 3	वृष	कृत्ति.	2	23 53
8		कृत्ति.	3	16 16
13		कृत्ति.	4	9 14
18		रोहि.	1	2 48
22		रोहि.	2	20 58
27		रोहि.	3	15 46
जून 1		रोहि.	4	11 12
6		मृग.	1	7 16
11		मृग.	2	3 55
16	मिथुन	मृग.	3	1 08
20		मृग.	4	22 58
25		आर्द्रा	1	21 23
30		आर्द्रा	2	20 26
जुलाई 5		आर्द्रा	3	20 03
10		आर्द्रा	4	20 13
15		पुन.	1	20 55
20		पुन.	2	22 10
25		पुन.	3	23 58
31	कर्क	पुन.	4	2 19
अगस्त 5		पुष्य	1	5 11

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 10		पुष्य	2	8 32
15		पुष्य	3	12 22
20		पुष्य	4	16 41
25		आश्ले.	1	21 31
31		आश्ले.	2	2 50
सितंबर 5		आश्ले.	3	8 37
10		आश्ले.	4	14 49
15	सिंह	मघा	1	21 29
21		मघा	2	4 38
26		मघा	3	12 18
अक्तूबर 1		मघा	4	20 26
7		पू.फा.	1	5 02
12		पू.फा.	2	14 08
17		पू.फा.	3	23 43
23		पू.फा.	4	9 56
28		उ.फा.	1	20 44
नवंबर 3	कन्या	उ.फा.	2	8 07
8		उ.फा.	3	20 08
14		उ.फा.	4	8 53
19		हस्त	1	22 28
25		हस्त	2	12 56
दिसंबर 1		हस्त	3	4 20
6		हस्त	4	20 44
12		चित्रा	1	14 21
18		चित्रा	2	9 22
24	तुला	चित्रा	3	5 56
30		चित्रा	4	4 15
सन् 2016 ई.				
जनवरी 5		स्वाती	1	4 32
11		स्वाती	2	7 15
17		स्वाती	3	12 52
23		स्वाती	4	21 55

मंगल–चार (सन् 2016 ई.)

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 30		विशा.	1	11 03
फरवरी 6		विशा.	2	5 21
13		विशा.	3	6 28
20	वृश्चिक	विशा	4	16 39
28		अनु.	1	15 20
मार्च 8		अनु.	2	9 25
18		अनु.	3	14 43
अप्रैल 1		अनु.	4	14 40

बुध–चार (सन् 2015 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 1	मकर	उ.षा.	2	11 45
3		उ.षा.	3	14 31
5		उ.षा.	4	18 09
7		श्रव.	1	23 22
10		श्रव.	2	7 20
12		श्रव.	3	20 44
15		श्रव.	4	22 25
21	वक्री			21 23
27		श्रव.	3	13 29
30		श्रव.	2	11 33
फरवरी 2		श्रव.	1	4 27
6		उ.षा.	4	9 22
11	मार्गी			20 26
19		श्रव.	1	4 32
23		श्रव.	2	6 35
26		श्रव.	3	14 04
मार्च 1		श्रव.	4	12 52
4		धनि.	1	6 16
6		धनि.	2	19 47
9	कुम्भ	धनि.	3	6 30
11		धनि.	4	14 49
13		शत.	1	21 11

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2015 से 7 अप्रैल, 2016 ई. तक)

बुध–चार (सन् 2015 ई.)

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 16		शत.	2	1 52
18		शत.	3	5 01
20		शत.	4	6 45
22		पू.भा.	1	7 12
24		पू.भा.	2	6 27
26		पू.भा.	3	4 33
28	मीन	पू.भा.	4	1 35
29		उ.भा.	1	21 35
31		उ.भा.	2	16 38
अप्रैल 2		उ.भा.	3	10 47
4		उ.भा.	4	4 06
5		रेव.	1	20 36
7		रेव.	2	12 25
9		रेव.	3	3 39
10		रेव.	4	18 20
12	मेष	अश्वि.	1	8 40
13		अश्वि.	2	22 45
15		अश्वि.	3	12 47
17		अश्वि.	4	2 56
18		भर.	1	17 29
20		भर.	2	8 40
22		भर.	3	0 51
23		भर.	4	18 29
25		कृत्ति.	1	13 59
27	वृष	कृत्ति.	2	12 05
29		कृत्ति.	3	13 42
मई 1		कृत्ति.	4	20 14
4		रोहि.	1	9 56
7		रोहि.	2	11 46
11		रोहि.	3	15 53
19	वक्री			7 19
27		रोहि.	2	16 21

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जून 2		रोहि.	1	18 33
12	मार्गी			4 02
20		रोहि.	2	20 15
25		रोहि.	3	0 56
28		रोहि.	4	5 40
30		मृग.	1	22 24
जुलाई 3		मृग.	2	7 58
5	मिथुन	मृग.	3	12 13
7		मृग.	4	12 41
9		आर्द्रा	1	10 12
11		आर्द्रा	2	5 25
12		आर्द्रा	3	22 43
14		आर्द्रा	4	14 41
16		पुन.	1	5 39
17		पुन.	2	19 49
19		पुन.	3	9 33
20	कर्क	पुन.	4	23 02
22		पुष्य	1	12 30
24		पुष्य	2	2 08
25		पुष्य	3	16 07
27		पुष्य	4	6 33
28		आश्ले.	1	21 38
30		आश्ले.	2	13 26
अगस्त 1		आश्ले.	3	6 03
2		आश्ले.	4	23 39
4	सिंह	मघा	1	18 15
6		मघा	2	13 58
8		मघा	3	10 53
10		मघा	4	9 05
12		पू.फा.	1	8 40
14		पू.फा.	2	9 47
16		पू.फा.	3	12 32

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 18		पू.फा.	4	17 05
20		उ.फा.	1	23 41
23	कन्या	उ.फा.	2	8 38
25		उ.फा.	3	20 27
28		उ.फा.	4	11 46
31		हस्त	1	7 42
सितंबर 3		हस्त	2	10 28
7		हस्त	3	0 35
11		हस्त	4	18 07
17	वक्री			23 39
23		हस्त	3	15 46
27		हस्त	2	13 03
30		हस्त	1	13 56
अक्तूबर 3		उ.फा.	4	17 20
9	मार्गी			20 28
16		हस्त	1	0 37
18		हस्त	2	23 59
21		हस्त	3	11 14
23		हस्त	4	17 09
25		चित्रा	1	20 18
27		चित्रा	2	21 56
29	तुला	चित्रा	3	22 43
31		चित्रा	4	23 07
नवंबर 2		स्वाती	1	23 24
4		स्वाती	2	23 45
7		स्वाती	3	0 17
9		स्वाती	4	1 05
11		विशा.	1	2 11
13		विशा.	2	3 38
15		विशा.	3	5 24
17	वृश्चिक	विशा.	4	7 30
19		अनु.	1	9 54

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवंबर 21		अनु.	2	12 34
23		अनु.	3	15 28
25		अनु.	4	18 34
27		ज्येष्ठा	1	21 51
30		ज्येष्ठा	2	1 15
दिसंबर 2		ज्येष्ठा	3	4 45
4		ज्येष्ठा	4	8 21
6	धनु	मूल	1	12 01
8		मूल	2	15 48
10		मूल	3	19 43
12		मूल	4	23 50
15		पू.षा.	1	4 19
17		पू.षा.	2	9 23
19		पू.षा.	3	15 23
21		पू.षा.	4	22 54
24		उ.षा.	1	9 00
26	मकर	उ.षा.	2	23 52
30		उ.षा.	3	1 01
(सन् 2016 ई.)				
जनवरी 4		उ.षा.	4	0 19
5	वक्री			18 34
7		उ.षा.	3	11 21
11		उ.षा.	2	22 18
14	धनु	उ.षा.	1	15 01
17		पू.षा.	4	4 36
20		पू.षा.	3	7 18
26	मार्गी			3 19
फरवरी 1		पू.षा.	4	18 41
5		उ.षा.	1	20 18
9	मकर	उ.षा.	2	3 06
12		उ.षा.	3	1 19
14		उ.षा.	4	18 27

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2015 से 7 अप्रैल, 2016 ई. तक)

बुध–चार (सन् 2016 ई.)

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 17		श्रव.	1	8 09
19		श्रव.	2	19 09
22		श्रव.	3	4 07
24		श्रव.	4	11 16
26		धनि.	1	16 54
28		धनि.	2	21 10
मार्च 2	कुम्भ	धनि.	3	0 10
4		धनि.	4	2 00
6		शत.	1	2 43
8		शत.	2	2 23
10		शत.	3	1 02
11		शत.	4	22 42
13		पू.भा.	1	19 28
15		पू.भा.	2	15 20
17		पू.भा.	3	10 22
19	मीन	पू.भा.	4	4 37
20		उ.भा.	1	22 06
22		उ.भा.	2	14 55
24		उ.भा.	3	7 10
25		उ.भा.	4	22 56
27		रेव.	1	14 18
29		रेव.	2	5 29
30		रेव.	3	20 38
अप्रैल 1		रेव.	4	11 58
3	मेष	अश्वि.	1	3 44
4		अश्वि.	2	20 23
6		अश्वि.	3	14 16

गुरु–चार (सन् 2015 ई.)

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 12		आश्ले.	3	17 56
फरवरी 8		आश्ले.	2	17 25
मार्च 6		आश्ले.	1	23 10

गुरु–चार (सन् 2015 ई.)

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 8	मार्गी			22 26
मई 10		आश्ले.	2	7 52
जून 6		आश्ले.	3	15 02
26		आश्ले.	4	17 28
जुलाई 14	सिंह	मघा	1	6 26
30		मघा	2	12 42
अगस्त 15		मघा	3	3 16
30		मघा	4	11 34
सितंबर 14		पू.फा.	1	21 36
30		पू.फा.	2	18 14
अक्तूबर 17		पू.फा.	3	13 48
नवंबर 5		पू.फा.	4	8 11
28		उ.फा.	1	20 50

(सन् 2016 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 8	वक्री			10 10
फरवरी 18		पू.फा.	4	1 01
मार्च 15		पू.फा.	3	12 35

शुक्र–चार (सन् 2015 ई.)

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		उ.षा.	3	18 30
4		उ.षा.	4	10 22
7		श्रव.	1	2 16
9		श्रव.	2	18 12
12		श्रव.	3	10 09
15		श्रव.	4	2 08
17		धनि.	1	18 09
20		धनि.	2	10 12
23	कुम्भ	धनि.	3	2 18
25		धनि.	4	18 27
28		शत.	1	10 40
31		शत.	2	2 56

शुक्र–चार (सन् 2015 ई.)

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 2		शत.	3	19 17
5		शत.	4	11 42
8		पू.भा.	1	4 12
10		पू.भा.	2	20 46
13		पू.भा.	3	13 26
16	मीन	पू.भा.	4	6 10
18		उ.भा.	1	23 00
21		उ.भा.	2	15 56
24		उ.भा.	3	8 59
27		उ.भा.	4	2 09
मार्च 1		रेव.	1	19 27
4		रेव.	2	12 54
7		रेव.	3	6 29
10		रेव.	4	0 14
12	मेष	अश्वि.	1	18 07
15		अश्वि.	2	12 11
18		अश्वि.	3	6 24
21		अश्वि.	4	0 48
23		भर.	1	19 23
26		भर.	2	14 10
29		भर.	3	9 11
अप्रैल 1		भर.	4	4 27
3		कृत्ति.	1	23 57
6	वृष	कृत्ति.	2	19 44
9		कृत्ति.	3	15 47
12		कृत्ति.	4	12 07
15		रोहि.	1	8 46
18		रोहि.	2	5 44
21		रोहि.	3	3 03
24		रोहि.	4	0 46
26		मृग.	1	22 53
अप्रैल 29		मृग.	2	21 28
मई 2	मिथुन	मृग.	3	20 33
5		मृग.	4	20 11
8		आर्द्रा	1	20 25
11		आर्द्रा	2	21 18
14		आर्द्रा	3	22 53
18		आर्द्रा	4	1 14
21		पुन.	1	4 29
24		पुन.	2	8 44
27		पुन.	3	14 09
30	कर्क	पुन.	4	20 55
जून 3		पुष्य	1	5 16
6		पुष्य	2	15 28
10		पुष्य	3	3 53
13		पुष्य	4	18 57
17		आश्ले.	1	13 23
21		आश्ले.	2	12 09
25		आश्ले.	3	16 52
30		आश्ले.	4	6 18
जुलाई 5	सिंह	मघा	1	9 48
11		मघा	2	17 18
24		मघा	3	8 26
25	वक्री			14 59
26		मघा	2	21 12
अगस्त 7		मघा	1	18 27
13	कर्क	आश्ले.	4	17 23
19		आश्ले.	3	3 14
25		आश्ले.	2	5 16
सितंबर 6	मार्गी			13 59
19		आश्ले.	3	14 26
26		आश्ले.	4	0 39

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2015 से 7 अप्रैल, 2016 ई. तक)

शुक्र–चार (सन् 2015–16 ई.)

तारीख 2015 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अक्तूबर 1	सिंह	मघा	1	4 14
5		मघा	2	16 57
9		मघा	3	20 35
13		मघा	4	18 05
17		पू.फा.	1	11 04
21		पू.फा.	2	0 37
24		पू.फा.	3	11 24
27		पू.फा.	4	19 55
31		उ.फा.	1	2 31
नवंबर 3	कन्या	उ.फा.	2	7 30
6		उ.फा.	3	11 07
9		उ.फा.	4	13 32
12		हस्त	1	14 56
15		हस्त	2	15 28
18		हस्त	3	15 12
21		हस्त	4	14 14
24		चित्रा	1	12 38
27		चित्रा	2	10 28
30	तुला	चित्रा	3	7 47
दिसंबर 3		चित्रा	4	4 37
6		स्वाती	1	1 01
8		स्वाती	2	21 03
11		स्वाती	3	16 45
14		स्वाती	4	12 08
17		विशा.	1	7 16
20		विशा.	2	2 09
22		विशा.	3	20 48
25	वृश्चि.	विशा.	4	15 15
28		अनु.	1	9 30
31		अनु.	2	3 34

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 2		अनु.	3	21 28
5		अनु.	4	15 13
8		ज्येष्ठा	1	8 51
11		ज्येष्ठा	2	2 21
13		ज्येष्ठा	3	19 46
16		ज्येष्ठा	4	13 06
19	धनु	मूल	1	6 21
21		मूल	2	23 31
24		मूल	3	16 38
27		मूल	4	9 40
30		पू.षा.	1	2 38
फरवरी 1		पू.षा.	2	19 33
4		पू.षा.	3	12 26
7		पू.षा.	4	5 15
9		उ.षा.	1	22 03
12	मकर	उ.षा.	2	14 49
15		उ.षा.	3	7 35
18		उ.षा.	4	0 19
20		श्रव.	1	17 02
23		श्रव.	2	9 45
26		श्रव.	3	2 27
28		श्रव.	4	19 08
मार्च 2		धनि.	1	11 48
5		धनि.	2	4 27
7	कुम्भ	धनि.	3	21 06
10		धनि.	4	13 46
13		शत.	1	6 25
15		शत.	2	23 06
18		शत.	3	15 47
21		शत.	4	8 29

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 24		पू.भा.	1	1 12
26		पू.भा.	2	17 56
29		पू.भा.	3	10 39
अप्रैल 1	मीन	पू.भा.	4	3 24
3		उ.भा.	1	20 08
6		उ.भा.	2	12 54

शनि–चार (सन् 2015 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
फरवरी 10		अनु.	3	17 37
मार्च 14	वक्री			20 33
अप्रैल 16		अनु.	2	12 47
जून 4		अनु.	1	11 38
अगस्त 2	मार्गी			11 23
सितंबर 28		अनु.	2	2 08
नवंबर 1		अनु.	3	3 17
नवंबर 29		अनु.	4	21 45
दिसंबर 28		ज्येष्ठा	1	15 01

(सन् 2016 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 31		ज्येष्ठा	2	16 00
मार्च 25	वक्री			15 21

राहु-चार (सन् 2015-16 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 17		हस्त	3	15 10
मार्च 21		हस्त	2	13 05
मई 23		हस्त	1	11 01
जुलाई 25		उ.फा.	4	8 31
सितंबर 26		उ.फा.	3	6 29
नवंबर 28		उ.फा.	2	4 22
जनवरी 30	सिंह	उ.फा.	1	1 52
अप्रैल 1		पू.फा.	4	23 52

केतु–चार (सन् 2015–16 ई.)

तारीख 2015–16 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 17		रेव.	1	15 10
मार्च 21		उ.भा.	4	13 05
मई 23		उ.भा.	3	11 01
जुलाई 25		उ.भा.	2	8 31
सितंबर 26		उ.भा.	1	6 29
नवंबर 28		पू.भा.	4	4 22
जनवरी 30	कुम्भ	पू.भा.	3	1 52
अप्रैल 1		पू.भा.	2	23 52

यूरेनस–चार (सन् 2015–16 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
फरवरी 21		रेव.	2	1 39
अप्रैल 23		रेव.	3	14 07
जुलाई 26	वक्री			16 10
नवंबर 9		रेव.	2	22 36
दिसंबर 26	मार्गी			9 24
फरवरी 9		रेव.	3	15 03

नेप्च्यून–चार (सन् 2015–16 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
मार्च 2		शत.	3	1 48
जून 12	वक्री			14 42
अक्तूबर 11		शत.	2	15 38
नवंबर 18	मार्गी			22 05
दिसंबर 26		शत.	3	5 10
अप्रैल 3		शत.	4	17 24

प्लूटो–चार (सन् 2015–16 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 27		पू.षा.	3	12 48
अप्रैल 17	वक्री			9 21
जुलाई 14		पू.षा.	2	2 51
सितंबर 25	मार्गी			12 25
दिसंबर 2		पू.षा.	3	12 45
अप्रैल 1		पू.षा.	4	17 04

ग्रहों के वक्र–मार्ग/उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, सन् 2015 से 7 अप्रैल, 2016 ई. तक)

ग्रह	वक्र/ मार्ग	तारीख	ग्रह	उदय/ अस्त	तारीख
मंगल पूरा वर्ष मार्गी रहेगा।			मंगल	अस्त	10 अप्रैल, 2015 ई.
बुध	वक्री	21 जनवरी, 2015 ई.	मंगल	उदित	12 अगस्त, 2015 ई.
बुध	मार्गी	11 फरवरी, 2015 ई.	बुध	प. में उदित	1 जनवरी, 2015 ई.
बुध	वक्री	19 मई, 2015 ई.	बुध	प. में अस्त	24 जनवरी, 2015 ई.
बुध	मार्गी	12 जून, 2015 ई.	बुध	पूर्व में उदित	6 फरवरी, 2015 ई.
बुध	वक्री	17 सितंबर, 2015 ई.	बुध	पूर्व में अस्त	27 मार्च, 2015 ई.
बुध	मार्गी	9 अक्तूबर, 2015 ई.	बुध	प. में उदित	23 अप्रैल, 2015 ई.
बुध	वक्री	5 जनवरी, 2016 ई.	बुध	प. में अस्त	21 मई, 2015 ई.
बुध	मार्गी	26 जनवरी, 2016 ई.	बुध	पूर्व में उदित	9 जून, 2015 ई.
			बुध	पूर्व में अस्त	13 जुलाई, 2015 ई.
गुरु	मार्गी	8 अप्रैल, 2015 ई.	बुध	प. में उदित	6 अगस्त, 2015 ई.
गुरु	वक्री	8 जनवरी, 2016 ई.	बुध	प. में अस्त	24 सितंबर, 2015 ई.
			बुध	पूर्व में उदित	8 अक्तूबर, 2015 ई.
शुक्र	वक्री	25 जुलाई, 2015 ई.	बुध	पूर्व में अस्त	28 अक्तूबर, 2015 ई.
शुक्र	मार्गी	6 सितंबर , 2015 ई.	बुध	प. में उदित	12 दिसंबर, 2015 ई.
			बुध	प. में अस्त	8 जनवरी, 2016 ई.
शनि	वक्री	14 मार्च, 2015 ई.	बुध	पूर्व में उदित	21 जनवरी, 2016 ई.
शनि	मार्गी	2 अगस्त, 2015 ई.	बुध	पूर्व में अस्त	9 मार्च, 2016 ई.
शनि	वक्री	25 मार्च, 2016 ई.	बुध	प. में उदित	5 अप्रैल, 2016 ई.
यूरेनस	वक्री	26 जुलाई, 2015 ई.	गुरु	अस्त	12 अगस्त, 2015 ई.
यूरेनस	मार्गी	26 दिसंबर, 2015 ई.	गुरु	उदित	7 सितंबर, 2015 ई.
नेप्च्यून	वक्री	12 जून, 2015 ई.	शुक्र	पश्चिम में अस्त	5 अगस्त, 2015 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	18 नवंबर, 2015 ई.	शुक्र	पूर्व में उदित	20 अगस्त, 2015 ई.
			शनि	अस्त	13 नवंबर, 2015 ई.
प्लूटो	वक्री	17 अप्रैल, 2015 ई.	शनि	उदित	17 दिसंबर, 2015 ई.
प्लूटो	मार्गी	25 सितंबर, 2015 ई.	—	—	— —
—	—	— —			

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः– अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12	अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00	आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52	अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20	आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40	अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40	आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00	अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32	आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00	अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32	आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28	अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00	आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16	अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48	आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04	अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12	आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48	अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40	आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48	अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20	आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12	अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08	इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40	अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48	इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04	अरारिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36	इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20	अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20	इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36	अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28	इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	−22 40	अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16	इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36	अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40	इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	–
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56	अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20	ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16	अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56	ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00	अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20	उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52	अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04	उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00	अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08	उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40	अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04	उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48	अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20	उडुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04	अहवा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16	उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48	आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56	उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04	आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44	उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20
एरोड	(ता.)	11 20	77 48	−18 56
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
ओरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28
करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00
कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52
करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52
करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08
कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12
करूर	(ता.)	10 58	78 03	−i7 48
कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08
काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00
करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00
करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36
करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56
कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40
कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16
कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28
कवार्घा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00
कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00
कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12
काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08
कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52
कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48
कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04
काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52
काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00
कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28
कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36
कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56
कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04
कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08
कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24
कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40
कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16
कालाहस्ती	(आं.)	13 46	79 42	−11 12

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	− −
कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
कुडुप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कोट्टागुडम्	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्मालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गौंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	–	जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44	टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48	जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56	टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36	जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28	टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00	जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36	टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28	ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08	ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00	जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44	ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08	ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04	डगशाई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56	जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14	डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56	जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44	डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44	जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12	डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04	जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28	डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48	जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24	डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16	जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56	डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
जण्ड्याला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48	जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44	डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32	जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48	डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20	जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44	डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04	ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32	डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40	ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44	डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40	झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24	डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08	झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28	डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
जमुई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52	झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36	डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24	झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40	ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36	झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20	बुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32	झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24	तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24	झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20	तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56	टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28	तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20	टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44	तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48	टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52	तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48	टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00	ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12	टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28	तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
जाखल	(ह.)	29 46	75 50	−26 40	टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52	ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36	टुंकुरे	(क.)	13 21	77 05	−21 40	तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08	टूटीकोरिन	(ता.)	8 48	78 11	−17 16	तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें —	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
धांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04
परभानी	(म.)	19 16	76 51	−22 36
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52
पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24
पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00
पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16
पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04
पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48
पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40
पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40
पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56
पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32
पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20
पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08
पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28
पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32
पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48
पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36
पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00
पुदुकोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44
पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04
पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28
पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48
पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28
पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36
पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00
पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52
प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04
प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52
प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24
प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40
फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
फर्रूखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
बंबई	(म.)	देखें —	मुम्बई	
बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
बरौनी	(बि.)	25 30	85 58	+13 52
बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04
बांसवाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52
बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52
बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16
बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08
बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40
बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00
बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56
बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40
बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56
बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44
बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28
बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52
बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52
बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04
बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36
बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16
बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20
बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04
बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32
बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12
बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36
बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28
बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56
बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24
बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12
बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32
बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36
बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40
बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04
बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52
बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00
बौद्धा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28
ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
मंगालादै	(आसा.)	26 29	92 02	+38 08
मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	30 12

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20
मन्दसोर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20
महबूबनगर	(आ.)	16 44	77 59	−18 04
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52
मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24
मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12
मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20
मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36
मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56
मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32
मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28
मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00
मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16
मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48
मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00
मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40
मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48
मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24
मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32
मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52
मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16
मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48
मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04
मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36
मेढक	(आं.)	18 03	78 15	−17 00
मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12
मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12
मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56
मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32
मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00
मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08
मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20
मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48
मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40
मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04
मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44
रुडकी	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20
रान्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52
रोहडू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−15 20
लातूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28
लिम्बडी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40
लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32
लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00
लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40
लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16
लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44
वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20
वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08
वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08
वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20
वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40
वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28
वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00
विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00
विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40
विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24
विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40
विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44
विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08
विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04
विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12
विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36
वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20
वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08
वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24
वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12
व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08
शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32
शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48
शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48
शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44
शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44
शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
शैलभ्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	26 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकरी	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग़	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्द्वानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

वैशाख

अंग्रेज़ी तारीख		वैशाख तिथि	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	[illegible]	५ ३४											

ज्येष्ठ

अंग्रेज़ी तारीख		ज्येष्ठ तिथि	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आ.१	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा.१	५ ३५											

श्रावण

मास	अंग्रेज़ी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा.१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

मास	अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टै.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		कार्तिक प्रविष्टे	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

अंग्रेज़ी तारीख		मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११ ०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ. १	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

माह	अंग्रेज़ी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	मा.१	७ २८											

माह	अंग्रेज़ी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

फाल्गुन

मास	अंग्रेज़ी तारीख	तिथि	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०४
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०२	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

चैत्र

मास	अंग्रेज़ी तारीख	तिथि	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३४	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४२	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३४	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। **जैसे**-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+९	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+२	+३	+२	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३०	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	[illegible]	+३	+३

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	[illegible]	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	[illegible]
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१३	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-६	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश–रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किञ्च भिन्न–भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की ज़रुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई **"अक्षांशादि सारणी"** से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:–

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को **"सहायक सारणी"** (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हो, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड़ दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी–पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी–पल" यदि 60 घड़ी से अधिक हों तो उनमें से 60 घड़ी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी– पलों" के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें **"सारणीस्थ घड़ी–पल"** कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी–पलो" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम मे लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशो को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी–पलो" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घडी–पलो का "सारणीस्थ घड़ी–पलो" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी–पलो" और "अभीष्ट घडी–पलों "का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के विल्कुल ऊपर वाली लाईन मे जहां लिखे है, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशो में जोड दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोडने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण– मान लीजिए– वि. स 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमे जोड़े तो 61 घ 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घडी–पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घडी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घडी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम मे 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोड़ने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नही होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३१
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१३	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	३३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	२५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरणः— वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→ ↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	− ७	२०४७	− १३	२०५५	− २०	२०६३	−२६	२०७१	−३३
२०२४	+ ६	२०३२	− १	२०४०	− ८	२०४८	− १४	२०५६	− २१	२०६४	−२७	२०७२	−३४
२०२५	+ ५	२०३३	− २	२०४१	− ९	२०४९	− १५	२०५७	− २२	२०६५	−२८	२०७३	−३५
२०२६	+ ४	२०३४	− ३	२०४२	− ९	२०५०	− १६	२०५८	−२२	२०६६	−२९	२०७४	−३६
२०२७	+ ३	२०३५	− ४	२०४३	−१०	२०५१	− १७	२०५९	−२३	२०६७	−३०	२०७५	−३६
२०२८	+ २	२०३६	− ४	२०४४	−११	२०५२	− १८	२०६०	−२४	२०६८	−३१	२०७६	−३७
२०२९	+ १	२०३७	− ५	२०४५	−१२	२०५३	− १८	२०६१	−२५	२०६९	−३१	२०७७	−३८
२०३०	+ १	२०३८	− ६	२०४६	− १३	२०५४	− १९	२०६२	−२६	२०७०	−३२	२०७८	−३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है ,-तैयार करें

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये।

विशेष- यदि ''अक्षांशादि सारणी ''में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का ''स्थानीयमध्यमकाल'' बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं: ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सित.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अत: इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को कोई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखा अंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २९ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद-के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रात: १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अत: इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)से लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोड़ा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योंकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अत:२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकत्ता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकत्ता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टै अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अत: इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ केआगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त -८ से. चिह्न के अनुसार घटाए , तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं. . २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अत: उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है , अत: स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं . अं. से कम था अत:-यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए , १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है , इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि:-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अत: अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखी लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण:-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रात: १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न'है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घ. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

सम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए दशम		अक्षांश ८°(उ.) लग्न		अक्षांश ११°(उ.) लग्न		अक्षांश १४°(उ.) लग्न		अक्षांश १७°(उ.) लग्न		अक्षांश २०°(उ.) लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६,	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

सम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए दशम		अक्षांश ८°(उ.) लग्न		अक्षांश ११°(उ.) लग्न		अक्षांश १४°(उ.) लग्न		अक्षांश १७°(उ.) लग्न		अक्षांश २०°(उ.) लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमश: १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अत: यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अत: इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६कं. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९९९ ई. को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालमें में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमश: ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें-यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुत: अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहीं पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अंक्षाश २३° (उ.)		अंक्षाश २६° (उ.)		अंक्षाश २९° (उ.)		अंक्षाश ३२° (उ.)		अंक्षाश ३५° (उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	कं.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४
०	३०	८	१०	१०६	१४	१०७	३४	१०८	५७	११०	२४	१११	५३
१	०	१६	१७	११२	४९	११४	४	११५	२२	११६	४३	११८	७
१	३०	२४	१८	११९	२२	१२०	३३	१२१	४५	१२३	०	१२४	१७
२	०	३२	११	१२५	५६	१२७	०	१२८	७	१२९	१७	१३०	२५
२	३०	३९	५५	१३२	३१	१३३	२९	१३४	२९	१३५	३०	१३६	३२
३	०	४७	२८	१३९	३	१४०	००	१४०	५२	१४१	४५	१४२	४०
३	३०	५४	५१	१४५	५०	१४६	३४	१४७	१८	१४८	४	१४८	५०
४	०	६२	५	१५२	३४	१५३	१०	१५३	४७	१५४	२४	१५५	१
४	३०	६९	१२	१५९	२२	१५९	५०	१६०	१७	१६०	४६	१६१	१४
५	०	७६	११	१६६	१३	१६६	३२	१६६	५०	१६७	९	१६७	२८
५	३०	८३	७	१७३	६	१७३	१५	१७३	२५	१७३	३४	१७३	४४
६	०	९०	०	१८०	००	१८०	००	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८६	४७	१८६	४५	१८६	३५	१८६	२६	१८६	१६
७	०	१०३	४९	१९३	४७	१९३	२८	१९३	१०	१९२	५१	१९२	३२
७	३०	११०	४८	२००	३८	२००	१०	१९९	४३	१९९	१४	१९८	४६
८	०	११७	५५	२०७	२६	२०६	५०	२०६	१३	२०५	३६	२०४	५९
८	३०	१२५	४९	२१४	१०	२१३	२६	२१२	४२	२११	५६	२११	१०
९	०	१३२	३२	२२०	५१	२२०	००	२१९	८	२१८	१५	२१७	२०
९	३०	१४०	५	२२७	२९	२२६	३१	२२५	३१	२२४	३०	२२३	२८
१०	००	१४७	४९	२३४	४	२३३	०	२३१	५३	२३०	४५	२२९	३५
१०	३०	१५५	४२	२४०	३८	२३९	२७	२३८	१५	२३७	०	२३५	४३
११	०	१६३	४३	२४७	११	२४५	५६	२४४	३८	२४३	१७	२४१	५३
११	३०	१७१	५०	२५३	४६	२५२	२६	२५१	३	२४९	३६	२४८	७
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	३	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६

साम्पातिक काल		सभीस्थलों के लिए		अंक्षाश २३° (उ.)		अंक्षाश २६° (उ.)		अंक्षाश २९° (उ.)		अंक्षाश ३२° (उ.)		अंक्षाश ३५° (उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	कं.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	१	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६
१२	३०	१८८	१०	२६७	१०	२६५	४३	२६४	१२	२६२	३६	२६०	५४
१३	०	१९६	१७	२७४	३	२७२	३४	२७१	०	२६९	२१	२६७	३३
१३	३०	२०४	१८	२८१	९	२७९	३९	२७८	२	२७६	१९	२७४	२९
१४	०	२१२	११	२८८	३०	२८६	५९	२८५	२२	२८३	३६	२८१	४५
१४	३०	२१९	५५	२९६	९	२९४	४०	२९३	४	२९१	२०	२८९	२६
१५	००	२२७	२८	३०४	१०	३०२	४४	३०१	१२	२९९	२८	२९७	३८
१५	३०	२३४	५१	३१२	३३	३११	१५	३०९	४८	३०८	१३	३०६	२५
१६	०	२४२	५	३२१	२२	३२०	१३	३१८	५६	३१७	३०	३१५	५४
१६	३०	२४९	१२	३३०	३५	३२९	३९	३२८	३६	३२७	२५	३२६	४
१७	०	२५६	११	३४०	९	३३९	३०	३३८	४५	३३७	५४	३३६	५५
१७	३०	२६३	७	३५०	००	३४९	४०	३४९	१६	३४८	४९	३४८	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	१०	०	१४	२०	१०	४४	११	११	११	४१
१९	०	२८३	४९	१९	५१	२०	३०	२१	१५	२२	६	२३	४
१९	३०	२९०	४८	२९	२५	३०	२१	३१	२४	३२	३५	३३	५६
२०	०	२९७	५५	३८	३८	३९	४७	४१	४	४२	३०	४४	६
२०	३०	३०५	९	४७	२७	४८	४५	५०	१२	५१	४७	५३	३५
२१	०	३१२	३२	५५	५०	५७	१६	५८	४८	६०	३२	६२	२२
२१	३०	३२०	५	६३	५१	६५	२०	६६	५६	६८	४०	७०	३४
२२	०	३२७	४९	७१	३०	७३	१	७४	३८	७६	२४	७८	१५
२२	३०	३३५	४२	७८	५१	८०	२१	८१	५८	८३	४१	८५	३१
२३	०	३४३	४३	८५	५६	८७	२६	८९	०	९०	३९	९२	२६
२३	३०	३५१	५०	९२	४०	९४	१७	९५	४८	९७	२४	९९	६
२४	०	०००	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.
१९७१	६	३९	०७	१९७८	६	४०	१९	१९८५	६	४१	३२	१९९२	६	३८	४७	१९९९	६	३९	५९	२००६	६	४१	११	२०१३	६	४२	२३	२०२०	६	३९	३९
१९७२	६	३८	१०	१९७९	६	३९	२२	१९८६	६	४०	३५	१९९३	६	४१	४६	२०००	६	३९	०२	२००७	६	४०	१४	२०१४	६	४१	२६	२०२१	६	४२	३८
१९७३	६	४१	१०	१९८०	६	३८	२४	१९८७	६	३९	३८	१९९४	६	४०	४९	२००१	६	४२	०१	२००८	६	३९	१७	२०१५	६	४०	२९	२०२२	६	४१	४०
१९७४	६	४०	१२	१९८१	६	४१	२३	१९८८	६	३८	४०	१९९५	६	३९	५२	२००२	६	४१	०४	२००९	६	४२	१६	२०१६	६	३९	३१	२०२३	६	४०	४३
१९७५	६	३९	१५	१९८२	६	४०	२६	१९८९	६	४१	३९	१९९६	६	३८	५४	२००३	६	४०	०७	२०१०	६	४१	१९	२०१७	६	४२	३१	२०२४	६	३९	४६
१९७६	६	३८	१७	१९८३	६	३९	२९	१९९०	६	४०	४१	१९९७	६	४१	५३	२००४	६	३९	०९	२०११	६	४०	२१	२०१८	६	४१	३३	२०२५	६	४२	४५
१९७७	६	४१	१६	१९८४	६	३८	३२	१९९१	६	३९	४४	१९९८	६	४०	५६	२००५	६	४२	०९	२०१२	६	३९	२४	२०१९	६	४०	३६	२०२६	६	४१	४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	ता.
↓	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	↓
१	० ० ०	२ २ १३	३ ५२ ३७	५ ५४ ५१	७ ५३ ७	९ ५५ २१	११ ५३ ३८	१३ ५५ ५०	१५ [illegible] ४	१७ ५६ २१	१९ ५८ ३४	२१ ५६ ५०	१
२	० ३ ५७	२ ६ ९	३ ५६ ३३	५ ५८ ४७	७ ५७ ४	९ ५९ १७	११ ५७ ३४	१३ ५९ ४७	१६ २ ०	१८ ० १७	२० २ ३१	२२ ० ४७	२
३	० ७ ५३	२ १० ६	४ ० ३०	६ २ ४३	८ १ ०	१० ३ १४	१२ १ ३१	१४ ३ ४४	१६ ५ ५७	१८ ४ १४	२० ६ २७	२२ ४ ४३	३
४	० ११ ५०	२ १४ २	४ ४ २६	६ ६ ४०	८ ४ ५७	१० ७ १०	१२ ५ २७	१४ ७ ४०	१६ ९ ५३	१८ ८ १	२० १० २४	२२ ८ ४०	४
५	० १५ ४६	२ १७ ५९	४ ८ २३	६ १० ३६	८ ८ ५३	१० ११ ७	१२ ९ २४	१४ ११ ३६	१६ १३ ५०	१८ १२ ७	२० १४ २०	२२ १२ ३६	५
६	० १९ ४३	२ २१ ५५	४ १२ १९	६ १४ ३३	८ १२ ५०	१० १५ ३	१२ १३ २१	१४ १५ ३३	१६ १७ ४६	१८ १६ ३	२० १८ १७	२२ १६ ३३	६
७	० २३ ३९	२ २५ ५२	४ १६ १६	६ १८ २९	८ १६ ४६	१० १९ ०	१२ १७ १७	१४ १९ २९	१६ २१ ४३	१८ २० ०	२० २२ १३	२२ २० ३०	७
८	० २७ ३६	२ २९ ४८	४ २० १२	६ २२ २६	८ २० ४३	१० २२ ५६	१२ २१ १४	१४ २३ २६	१६ २५ ४०	१८ २३ ५७	२० २६ १०	२२ २४ २७	८
९	० ३१ ३२	२ ३३ ४५	४ २४ ९	६ २६ २२	८ २४ ३९	१० २६ ५३	१२ २५ १०	१४ २७ २३	१६ २९ ३७	१८ २७ ५४	२० ३० ६	२२ २८ २३	९
१०	० ३५ २९	२ ३७ ४२	४ २८ ५	६ ३० १९	८ २८ ३६	१० ३० ४९	१२ [illegible] ६	१४ ३१ २०	१६ ३३ ३३	१८ ३१ ५०	२० ३४ ३	२२ ३२ २०	१०
११	० ३९ २५	२ ४१ ३९	४ ३२ २	६ ३४ १६	८ ३२ ३२	१० ३४ ४६	१२ ३३ ३	१४ ३५ १६	१६ ३७ ३०	१८ ३५ ४७	२० ३८ ०	२२ ३६ १६	११
१२	० ४३ २२	२ ४५ ३५	४ ३५ ५९	६ ३८ १३	८ ३६ २९	१० ३८ ४२	[illegible] ३६ ५९	१४ ३९ १३	१६ ४१ २६	१८ ३९ ४३	२० ४१ ५६	२२ ४० १३	१२
१३	० ४७ १८	२ ४९ ३२	४ ३९ ५६	६ ४२ ९	८ ४० २५	१० ४२ ३९	१२ ४० ५६	१४ ४३ ९	१६ ४५ २३	१८ ४३ ४०	२० ४५ ५२	२२ ४४ ९	१३
१४	० ५१ १५	२ ५३ २८	४ ४३ ५२	६ ४६ ६	८ ४४ ४२	१० ४६ ३५	१२ ४४ ५२	१४ ४७ ६	१६ ४९ १९	१८ ४७ ३७	२० ४९ ४९	२२ ४८ ६	१४
१५	० ५५ १२	२ ५७ २५	४ ४७ ४९	६ ५० २	८ ४८ १८	१० ५० ३२	१२ ४८ ४९	१४ ५१ २	१६ ५३ १६	१८ ५१ ३३	२० ५३ ४५	२२ ५२ २	१५
१६	० ५९ ८	३ १ २१	४ ५१ ४५	६ ५३ ५९	८ ५२ १५	१० ५४ २८	१२ ५२ ४५	१४ ५४ ५९	१६ ५७ १२	१८ ५५ ३०	२० ५७ ४२	२२ ५५ ५९	१६
१७	१ ३ ४	३ ५ १८	४ ५५ ४२	६ ५७ ५५	८ ५६ ११	१० ५८ २५	१२ ५६ ४२	१४ ५८ ५५	१७ १ ९	१८ ५९ २६	२१ १ ३९	२२ ५९ ५६	१७
१८	१ ७ १	३ ९ १४	४ ५९ ३८	७ १ ५२	९ ० ८	११ २ २१	१३ ० ३८	१५ २ ५२	१७ ५ ५	१९ ३ २२	२१ ५ ३६	२३ ३ ५३	१८
१९	१ १० ५७	३ १३ ११	५ ३ ३५	७ ५ ४८	९ ४ ४	११ ६ १८	१३ ४ ३५	१५ ६ ४८	१७ ९ २	१९ ७ १९	२१ ९ ३२	२३ ७ ४९	१९
२०	१ १४ ५४	३ १७ ८	५ ७ ३१	७ ९ ४५	९ ८ १	११ १० १५	१३ ८ ३२	१५ १० ४५	१७ १२ ५८	१९ ११ १५	२१ १३ २९	२३ ११ ४६	२०
२१	१ १८ ५१	३ २१ ५	५ ११ २८	७ १३ ४१	९ ११ ५८	११ १४ १२	१३ १२ २९	१५ १४ ४१	१७ १६ ५५	१९ १५ १२	२१ १७ २५	२३ १५ ४२	२१
२२	१ २२ ४८	३ २५ १	५ १५ २५	७ १७ ३८	९ १५ ५५	११ १८ ८	१३ १६ २५	१५ १८ ३८	१७ २० ५१	१९ १९ ८	२१ २१ २२	२३ १९ ३९	२२
२३	१ २६ ४४	३ २८ ५८	५ १९ २२	७ २१ ३४	९ १९ ५१	११ २२ ५	१३ २० २२	१५ २२ ३४	१७ २४ ४८	१९ २३ ५	२१ २५ १८	२३ २३ ३५	२३
२४	१ ३० ४१	३ ३२ ५४	५ २३ १८	७ २५ ३१	९ २३ ४८	११ २६ १	१३ २४ १८	१५ २६ ३१	१७ २८ ४४	१९ २७ १	२१ २९ १५	२३ २७ ३२	२४
२५	१ ३४ [illegible]	३ ३६ ५१	५ २७ १५	७ २९ २८	९ २७ ४४	११ २९ ५८	१३ २८ १५	१५ ३० २७	१७ ३२ ४१	१९ ३० ५८	२१ ३३ ११	२३ ३१ २८	२५
२६	१ ३८ ३४	३ ४० ४७	५ ३१ ११	७ ३३ २४	९ ३१ ४१	११ ३३ ५४	१३ ३२ ११	१५ ३४ २४	१७ ३६ ३७	१९ ३४ ५४	२१ ३७ ८	२३ ३५ २५	२६
२७	१ ४२ ३०	३ ४४ ४४	५ ३५ ८	७ ३७ २०	९ ३५ ३७	११ ३७ ५१	१३ ३६ ८	१५ ३८ २०	१७ ४० ३४	१९ ३८ ५१	२१ ४१ ४	२३ ३९ २१	२७
२८	१ ४६ २७	३ ४८ ४०	५ ३९ ५	७ ४१ १७	९ ३९ ३४	११ ४१ ४७	१३ ४० ४	१५ ४२ १७	१७ ४४ ३१	१९ ४२ ४८	२१ ४५ १	२३ ४३ १८	२८
२९	१ ५० २३	३ ५२ ३७	५ ४३ १	७ ४५ १३	९ ४३ ३०	११ ४५ ४४	१३ ४४ १	१५ ४६ १४	१७ ४८ २८	१९ ४६ ४५	२१ ४८ ५७	२३ ४७ १४	२९
३०	१ ५४ २०		५ ४६ ५८	७ ४९ १०	९ ४७ २७	११ ४९ ४१	१३ ४८ ५७	१५ ५० ११	१७ ५२ २४	१९ ५० ४१	२१ ५२ ५४	२३ ५१ ११	३०
३१	१ ५८ १६		५ ५० ५४		९ ५१ २४		१३ ५२ ५४	१५ ५४ ७		१९ ५४ ३८		२३ ५५ ७	३१
												२३ ५९ ३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६३	+१५५	+१४३	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २·	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५६	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४६	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३६	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २६	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्टूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पूषा भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूषा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	अन्तर्दशा के मास, दिन
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं. ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	[illegible]	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	[illegible]	धनलाभ	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	[illegible]	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	[illegible]	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मनःप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	कटुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	[illegible]	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	वृद्धि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	क्लेश	पीड़ा	[illegible]	धनलाभ	लाभ	शोक
मन्था	सुख	धन, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	[illegible]	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास, फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा. चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि– मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घडी, पल जोडने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी–कमी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जानें। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोडकर उसमे १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोडकर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं.,बु.,शु.,श) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., मं., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल**–दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु..	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं	सू.	शु	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

⁂ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पडा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ⁂ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।⁂ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगडना आदि फल होते हैं।⁂ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बडी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन मे वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है; यदि पाचो मे से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहो का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६। ८। १२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से १/२ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र—ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद्	बहुपद्	चतुष्पद्	द्विपद्	द्विपद्	द्विपद्	भुजंगपद्	अपद्	अपद्	पाद्
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानग्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, ३ और जोड़ें, ८ से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्ददादशा (मास—दिन)

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	२०	२०

गर्भयोग—

वर्ष—कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवे पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १ २ ३ ५ ७ १० ११ १२ १३। **शुभ नक्षत्र**–तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों;३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन, पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घडी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५, १, १४ तिथियां के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घडी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू भुर्वः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८ ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरोग्य	मरण	कृषता	व्याधि	सौख्य

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में. रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

भूम्युपवेशन–मुहूर्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौग के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छांडकर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोडकर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रो में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो "**यथा कुलधर्म वः**"– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को,. क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगो और भद्रा को छोडकर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियो में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९,, १४ तिथि हों, ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. पा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १; २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (**गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः**) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वे स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्त्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र मे उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाईं ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ½ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों को एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न -भिन्न हों या भकूट दोष न हो तो गण दोष दूर हो जाता है ।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्' -वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्' (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। ध्यान रहे, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाड़ी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है। कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध [illegible] किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा है,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर कन्या के नाम के आदिम वर्णों से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर अवर्ग क आदि पांच वर्ण 'कवर्ग च' आदि पांच वर्ण चवर्ग ट आदि पाँच वर्ण टवर्ग त आदि पांच वर्ण तवर्ग प आदि पांच वर्ण 'पवर्ग य आदि पांच वर्ण यवर्ग तथा श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों के स्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प, फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तो नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ ½ ,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, मित्रनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही [illegible] है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	ब.	बु.	बु.	च.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग 1)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 व भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ब ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 व व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग [illegible] भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब य त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व व रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ य ब त	26½ य ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 य ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	26 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पू.षा. 1,2,3,4	उ.षा. 1	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ ब य त ग	26½ ब य त	22½ त ब य ग	18½ ग भ त य	25½ भ त	14 भ न ग	13½ भ न ग	25 भ	23½ भ त	25 ब त र	26 ब त र	20 ब त यरग	20 ब त यरग	15 ब न तरग	16 ब न तयर	14½ न भ त य	24½ भ त	26 भ
	भर. 1,2,3,4	13½ बगन तय	29½ ब त	21½ ग ब त य	17½ ग भ त य	17½ न भ त	19½ ग भ त	20 ग भ	18 न भ	26 भ	27½ ब र	26 ब त र	10 ब य गनतर	10 ब य गनतर	20 ग ब त र	24 ब य त र	22½ त भ य	17½ न भ त	26½ भ त
	कृत्ति. 1	27½ ब त य	15½ ब ग न त	19½ ब न त य	15½ भ न त य	19½ ग भ त	25½ भ त	24½ भ त	18 ग भ य	12 ग भ न	13½ ब ग न र	11½ ब य रगन	25 ब त य र	25 ब त य र	27 ब त र	19 ब ग तयर	17½ ग भ त य	19½ ग भ त	11½ ग भ त न
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ ब भ त य	10½ ग ब भनत	14½ ब भ तनय	20½ न त य	24½ ग त	30½ त	20 भ तर	13½ य ग भ र	7½ ग भ न र	12 ग भ न	10 य ग भ न	23½ भ त य	29½ ब त य	31½ ब त	23½ ग ब त य	20 ग त य र	22 ग त र	14 ग न त र
	रोहि. 1,2,3,4	19 ग ब भ	15½ ब भ न त	9½ तबग न भ	15½ ग न त	29½ त	23½ ग त	14 ग भ त र	19 र भ त य	11½ य भ न र	16 भ य न	17 न भ य	20 ग भ	26½ ग ब	24½ ग ब त	30½ ब त	27 त र	27 त र	19 र न त
	मृग. 1,2	12 ब भ न ग	25 ब भ	18½ ब भ त ग	24½ त ग	21½ न त	24½ त ग	15 भ त र ग	10 न भ तयर	17 य भ तर	21½ भ य त	25 भ य	13 न भ ग	19 ब ग न	27 ब ग	29½ ब त	26 त र	18 न त र	27 त र
मिथुन	मृग. 3,4	14 न भ ग	27 भ	20½ भ त ग	14 भ व तरग	11 भवन त र	14 भ व तरग	23 त र ग	18 न त य र	25 य त र	20 भ य व त	23½ भ व य	11½ न भ व ग	13 न भ ग	21 भ ग	23½ भ त	25½ त व र	17½ न व त र	26½ व त र
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 ग भ य	27 भ	20 ग भ य	13½ रगव भ य	17 त भ वयर	3 यतगव भनर	16 ग न त र	28 त र	28 त र	23 भ व त	23 भ व त	17½ ग भ व य	19 ग भ य	12 ग भ न	17 न भ य	19 न र व व	26½ व त र	26½ व त र
	पुन. 1,2,3	20½ भ त ग	28 भ	22 भ ग	15½ व भ र ग	21½ व भ र	7 रगव भनत	14 यरत न ग	27 त र	27 त र	22 व त भ	23 व त भ	17 वतभ य ग	18½ भ ग त य	14 न भ ग	16 न भ य	18 र न य व	28 र व	27½ व त र
कर्क	पुन. 4	20½ ब त र ग	28 व र ब	22 व र ब ग	20 ग भ	26 भ	11½ त ग भ न	8 वतब भगनय	21 ब भ व त	21 ब भ व त	26 ब त र	27 ब त र	21 बगत य र	12½ बभव तयगर	8 बभव नगर	10 बभर नवय	16 न भ य	26 भ	25½ भ त
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबव तयर	26½ ब व त र	21 रबग व य	19 भ य ग	18 भ न	21 भ ग	17 गबभ व त	11 यबभ तनव	21 ब भ व त	26 ब त र	25 ब य त र	13 गबन तयर	4½ भबगय वनतर	14½ बवत रगभ	18 बभव य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ ब व त र	12½ गबव तरन	17½ नबव त र	15½ न भ त	20 ग भ	26 भ	22½ ब भ व य	16 गबव भ त	8 गबव भनत	13 गबर न त	13 बगत न र	26 ब त य र	17½ बभव तरय	19½ बभव त र	11½ गबभ यतयर	17½ ग भ त य	21 ग भ	13 ग भ न
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ ब व त र	11½ बवत रगन	16½ बवत र न	22½ न व त	25½ ग व त	33 व	25 भ व	19 ग व भ	8½ वगभ नतय	3½ बरतय गभन	4½ बरत गभन	18½ ब र त भ	24½ ब व त र	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	18½ ग भ त	19½ ग भ त	13 ग भ न
	पूफा. 1,2,3,4	10½ बवत रगन	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	24½ ग व त	23½ न व त	25½ ग व त	19 ग व भ	17 भ व न	24 भ व न	17 ब र भ य	18½ ब त भ त	4½ बरत गभन	10½ बवत रगन	19½ बवर ग त	24½ ब व र त	24½ भ त	17½ न भ त	25½ भ त
	उ.फा. 1	16½ बवत यगर	25½ ब व त र	16½ बवय गतर	22½ य व ग त	31½ व त	17½ ग व त न	9½ ग व नभत	25 भ व	25 भ व	20 ब र भ	20 ब र भ	11½ बरत गभय	17½ बवत गरय	11½ बवत गनर	15½ बवत नरय	15½ न भ त य	26½ भ त	25½ भ त
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबय भ त	25½ ब भ त	16½ गबय भ त	18 यवत ग र	27 व त र	13 गवत न र	14 ग न त र	29½ र	29½ र	24½ भ व	24½ भ व	16 ग भ वतय	16½ गबभ त य	10½ गबन भ त	14½ बभन तय	17½ तनव य र	28½ व त र	27½ व त र
	हस्त 1,2,3,4	20 ब भ य ग	26½ ब भ त	18½ ब भ तयग	20 व ग तयर	26 व त र	13 न व तरग	15 न त र ग	27 त र	28½ र	23½ भ व	24½ भ व	18½ भ ग व य	19 ब भ य ग	8½ बयभ नतग	13½ ब भ नतय	16½ वनत य र	26½ व त र	27½ व त र
	चित्रा 1,2	20 ब भ न	19 ग ब भ य	26½ ब भ त	28 व त र	11 गवन तयर	25 व त य र	27 त य र	14 ग न त र	22 ग त र	17 ग भ त	18½ ग भ व	15½ भ व न य	16 ब य भ न	24 ब भ य	16½ गबत भ य	19½ गवत य र	10½ गयव नतर	19½ वगत य र

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

कन्या \ वर		मेष: अश्वि. 1,2,3,4	मेष: भर. 1,2,3,4	मेष: कृत्ति. 1	वृष: कृत्ति. 2,3,4	वृष: रोहि. 1,2,3,4	वृष: मृग. 1,2	मिथुन: मृग. 3,4	मिथुन: आर्द्रा 1,2,3,4	मिथुन: पुन. 1,2,3	कर्क: पुन. 4	कर्क: पुष्य 1,2,3,4	कर्क: आश्ले. 1,2,3,4	सिंह: मघा 1,2,3,4	सिंह: पू.फा. 1,2,3,4	सिंह: उ.फा. 1	कन्या: उ.फा. 2,3,4	कन्या: हस्त 1,2,3,4	कन्या: चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य	21 भ न
	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त	21 भ य ग
	विशा. 1, 2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	15½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ वयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य	27½ भ त
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न य त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 ब व त र
	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ ब भ न त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त	11 बरव नतय
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 बवत य र
धनु	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न	26 र ब त य
	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग भ य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र	13 तबग न र
	उ.षा 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र	21 ग ब त र
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ	17 ग भ व त
	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व	19½ भ व
	धनि. 1,2	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व	15½ भ न व य
कुम्भ	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य	17 य भ न
	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ	25 भ य
	पू.भा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य	17½ ग भ त य
मीन	पू.भा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र	9½ बतर वयगन
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगब भ न	14 गबन त र	17 व न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र ब व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र व त	26½ ब र व त	19½ बयर वतग

(ब =वर्ण दोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पू.षा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न म य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग मनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ दवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग य
	पू.षा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पू.भा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पू.भा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत दनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(व =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घडी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बडी लडकी (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः–** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाडकर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोडकर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १½ मास, कुल वालों के मरण से २२½ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– **"झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥** अत्यावश्यकता में **"द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"**

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्

पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/७/९/१०/११/१२

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त मे लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों मे जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	←लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	←दिशा
धननाश	भयम्	मृत्यु	भयम्	बन्धुनाश	कार्यहानि	कुलक्षय	मरणम्	←फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
आर्द्रा	मृ.	अ.	कृ.	म.	कृ.	अ.	रो.	म.	म.	अ.	सूर्य नक्षत्र
पुन.	आ.	मृ.	आ.	मृ.	श्र.	आ	ज्ये.	पुन.	श.	ज्ये.	
श.	ज्ये	ज्ये.	वि.	श.	ध.	उ.षा	ध.	श.	वि	ध.	
पू.फा.	ध.	पुष्य	पू.फा.	पू.भा.	पुष्य	पू.भा.	आश्ले.	वि.	उ.फा.	म.	
चि.	म.	ह.	उ.भा	स्वा.	ह.	पू.षा.	मू.	अनु.	पू.फा	पू.फा.	
मू.	ह.	रे.	पू.भा	म	रे.	पू.फा.	उ.भा.	उ.षा.	मू.	स्वा.	

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गण्ड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों मे विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहा उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्रय, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृ.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायाम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र					
मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र						
९	२	४	६	५	१०	← सूर्य राशयः
१२	११	१	३	८	७	
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। –*कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाहलिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः–"पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।" –(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– **भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥**

अस्यापवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ – (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा।।

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्												
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविर्ग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंगवन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याहवयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः— *लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारी न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या।* **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** *—पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेदः भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥*

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे— दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्याः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्— उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्त्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष–ततत्रयम्। धूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि— पूवोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद–स्थानानि										
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त्त गणपती
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद
६	३	६	२	२	२	६	६	६		दशविंशोपकाधिकंम्।
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः— लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः— कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारवेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि गुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्								
नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च— सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिदभेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि–मासवेध भृगु–गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधु प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में, एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना— **व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति–तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥** रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधु प्रवेश शुभ है।

वधु–प्रवेश–समय

वधुप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। वेवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधुद्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतदभिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. ३, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र								
नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त

अ., मृ., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्य—भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश—योनि—मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हरतनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त

पुष्य, पूभा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में. बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने—बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्राममात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भुमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्त्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्		
सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः— पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्:— 'संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में बड़ेदिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च**— सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य., स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्
चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।		

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५ अशुभ	८ शुभ	८ अशुभ	६ शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल

सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः—मध्य—पूर्व—आग्नेय—दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्— अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः— पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्		
ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, .पू.षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ—भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्ब—लास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता—विशेषेण लग्नम्:— सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोडकर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०—शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ वचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र ज़रूर देखिए।

विशेषः— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे—हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र—मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।। (अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भागं देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनमं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या फल	६ उत्तमपाक शुभ	२ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ क्वाथकर्म नेष्ट	४ सुख शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त–विचारः

हस्त, मृग., श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि				
दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्							
सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्								
दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ९	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।

चन्द्रवासचक्रम्				एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्									घट्यात्मक चन्द्रवास
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे										जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।
मेष	वृष	मिथुन	कर्क										
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	
धनु	मकर	कुम्भ	मीन	घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	

चन्द्रफलम्ः– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—*भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं कुतिथिकुलिकदोष यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोष राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥*

सर्वाङ्कसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वाकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएँ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु–घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु:— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचना:— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी–पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— **मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥** विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत–स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्															
पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्य	दारिद्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया–त्रयोदशी, चतुर्थी–चतुर्दशी, पञ्चमी–पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा–मुहूर्त:

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः— **प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।**

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यो में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३— इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.— इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.— ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं— अतोऽन्यदभेषु निन्द्याः।

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य— पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करे। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा—तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है— "मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक वि॰ रो भाई ॥३॥

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः— आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है— **एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं—विधिश्च							
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकीर्ति	मृतिः	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

तदत्राह—
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।

विशेष— यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग—स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री—पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व—वृद्धि		

इन्हीं अगों मे तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति—पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवे। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया—पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :— शिरसि—मृत्यु वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्त्ति। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीड़ा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे—भरे या फूले—फले पीपल, बड आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

....

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०७२ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

—: समयशुद्धि :—

शुक्र-अस्त :- शुक्र इस वर्ष श्राव.कृ. ६, बुधवार (५ अग., २०१५ ई.) को पश्चिम में अस्त होकर श्राव.शु. ५, गुरुवार (२० अग., २०१५ ई.) को पूर्व में उदित होगा।

गुरु-अस्त :- गुरु श्राव.कृ. १३, बुधवार (१२ अग., २०१५ ई.) को अस्त होकर भाद्र.कृ. १०, चन्द्रवार (७ सितं., २०१५ ई.) को उदित होगा।

सिंहनवांश में सिंहस्थ गुरुदोष- १४ से ३० सितंबर, २०१५ ई. तक।

आषाढ़ अधिकमासदोष- १७ जून से १६ जुलाई, २०१५ ई. तक आषाढ़ अधिकमास का दोष रहेगा।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है। क्योंकि, अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिए गए कोष्ठक से जानकर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु–शुक्र का उदय–अस्त 'सं. २०७२ वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
शुक्र पश्चिम में अस्त	९ अग., '१५ ई.	८ अग., '१५ ई.	६ अग., '१५ ई.	३ अग., '१५ ई.
शुक्र पूर्व में उदित	१८ अग.,'१५ ई.	१८ अग.,'१५ ई.	१६ अग.,'१५ ई.	२० अग.,'१५ ई.
गुरु अस्त	१६ अग.,'१५ ई.	१५ अग.,'१५ ई.	१३ अग.,'१५ ई.	११ अग.,'१५ ई.
गुरु उदित	८ सितं.,'१५ ई.	७ सितं.,'१५ ई.	७ सितं.,'१५ ई.	७ सितं.,'१५ ई.

ध्यान रहे :- गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले वार्धक्यदोष और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते। **ध्यान दें** - मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि- इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें। **जो लग्न निर्बल है, उसके साथ स्टॉर (★)अंकित किया गया है।**

दैवज्ञ ध्यान दें-

इन आगे दिए जा रहे शुद्ध विवाहमुहूर्त्त देखने से आपको ज्ञात होगा कि- गत कुछ वर्षों से शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या अब हमारे पंचांग में पहले की अपेक्षा अधिक हो गई है। दैवज्ञों के लिए इस अधिक संख्या का कारण यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

भारत के अधिकतर पंचांगों में लग्नस्थ चन्द्र-पापग्रह, षष्ठस्थ चन्द्र-शुक्र-लग्नेश, सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु तथा अष्टमस्थ चन्द्र-मंगल-लग्नेश या शुभग्रह होने पर परम्परया लग्नभंग माना जा रहा है। ऐसी स्थिति में उस लग्न को पंचांगकार तभी विवाहयोग्य मानते हैं, जबकि वहां लग्नभंग का परिहार हो। इस परम्परा में लग्नस्थ चन्द्र और पापीग्रह तथा षष्ठस्थ लग्नेश और सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु- केतु एवम् अष्टमस्थ लग्नेश का परिहार बिल्कुल नहीं माना जाता और इन स्थितियों में उस लग्न को विवाह में सर्वथा अयोग्य दैवज्ञ लोग मानते चले आ रहे हैं। लेकिन संहिताओं में अनेक ऐसे विशेष स्पष्टवाक्य हमें मिलते हैं, जो सप्तमहीन केन्द्र-त्रिकोणस्थ बुध-शुक्र-गुरु, एकादशस्थ सूर्य-चन्द्र, सप्तमहीन केन्द्रस्थ या एकादशस्थ लग्नेश आदि दस ग्रहादि-स्थितियों को सभी प्रकार के लग्नभंगों का परिहारक घोषित करते हैं। लग्नभंग के इन संहितोक्त विशेष परिहारों में से यदि केवल एक भी परिहार लग्नकुण्डली में प्राप्त हो जाए तब संहिताकारों का कहना है कि- उस एकमात्र परिहार से ही वहां लग्नभंगकारक सभी दोष पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। ये परिहार दशमस्थ मंगल, चतुर्थस्थ राहु, तृतीयस्थ शुक्र, सप्तमस्थ गुरु-चन्द्र और द्वादशस्थ शनि की पूजा वाले दोषों का भी पूरीतरह निवारण करते हैं; यह भी इन परिहार वाक्यों से सुस्पष्ट है। संहिताओं के इन्हीं प्रबल प्रमाणवाक्यों के आधार पर हमने लग्नभंगकारक दोषों के इन संहितोक्त विशेष परिहारों को भी दृष्टि में रखते हुए विवाहार्थ शुद्ध लग्नों का यहां निर्णय किया है, जिससे शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या में यह वृद्धि हुई है। अधिक स्पष्टता के लिए मेरी पुस्तक "मुहूर्त्त गजानन" में दिया **"लग्नभंग-परिहार (एक संशोधन)"** लेख अवश्य पढ़िए।

सिंहस्थ गुरु- सिंहस्थ गुरु का पूरा काल शुभकृत्यों में वर्जित माना गया है। लेकिन परम्परया इसकाल में से वही काल वर्जित किया जाता है, जिसमें गुरु सिंह के नवांश (पूर्वाफाल्गुनी के प्रथम चरण) में स्थित हो। इसीलिए *'सिंहे सिंहांशकः त्याज्यः'*-यह वाक्य दैवज्ञों में प्रचलित है। हमने भी यहां इसी परम्परा का अनुसरण किया है।

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७२ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१५ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है ।)
वैशा. शु. ३ मं.	वैशा. ८	अप्रै. २१	रोहि.	वृष	मेष	कर्क	ऽमं.। ऽशु । ऽश। ॥ ॥	दि.ल.४(११/५६ बाद), ५, ६, ८, ९, १०, ११, १२(२८/२७ तक),
वैशा. शु. ४ बु.	वैशा. ९	अप्रै. २२	मृग.	वृष/मिथुन	मेष	कर्क	॥ ॥ ।ऽरो. ऽऽ ॥	दि. ल. ६(१५/४९ बाद), ८(२०/३५ तक), ९(२२/५६ बाद), १०, ११, १२,
वैशा. शु. ५ गु.	वैशा. १०	अप्रै. २३	मृग.	मिथुन	मेष	कर्क	॥ ॥ ।ऽरो. ऽऽ ॥	दि.ल. २, ३, ४(११/१६),
वैशा. शु. ९ चं.	वैशा. १४	अप्रै. २७	मघा	सिंह	मेष	कर्क	।ऽ ॥ ।ऽनृ. ।ऽ ॥	ल. ८, ९, १०, ११, १२,
वैशा. शु. १० मं.	वैशा. १५	अप्रै. २८	मघा	सिंह	मेष	कर्क	॥ ॥ ।ऽनृ. ॥ ॥	दि.ल. २, ३, ४, ५, ६, गोधू., ८(२१/३६ तक),
वैशा. शु. ११ बु.	वैशा. १६	अप्रै. २९	उ.फा.	सिंह	मेष	कर्क	॥ ॥ ।ऽचौ. ऽ। ॥	ल. १०(२५/४२ बाद), ११, १२,
वैशा. शु. १२ गु.	वैशा. १७	अप्रै. ३०	उ.फा.	सिंह/कन्या	मेष	कर्क	॥ ॥ ।ऽचौ. ऽ। ॥	दि.ल. २, ३, ४, ५, ६, गोधू., ८, ९, १०, ११, १२(२७/४५ तक),
वैशा. शु. १३ श.	वैशा. १९	मई २	चित्रा	कन्या/तुला	मेष	कर्क	ऽगु.। ॥ ।ऽरो. ॥ ॥	दि.ल. २(६/२७ बाद), ३, ४, ५, ६, रा.ल. ८, ९, १०, ११, १२,
वैशा. शु. १४ र.	वैशा. २०	मई ३	चित्रा	तुला	मेष	कर्क	ऽगु.। ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. २*(७/५९ तक),
वैशा. शु. १४ र.	वैशा. २०	मई ३	स्वा.	तुला	मेष	कर्क	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	ल. ८ (२०/३७ बाद), ९(२३/४६ तक),
ज्ये. कृ. ३ गु.	वैशा. २४	मई ७	मूल	धनु	मेष	कर्क	॥ ॥ ऽशु. ऽनृ. ॥ ॥	दि.ल. ५(१३/५१ बाद), ६, गोधू., ८, ९, १०, ११, १२,
ज्ये. कृ. ४ शु.	वैशा. २५	मई ८	मूल	धनु	मेष	कर्क	॥ ॥ ऽशु. । ॥ ॥	दि.ल. ३, ४, ५(१३/०२ तक) ,
ज्ये. कृ. ५ श.	वैशा. २६	मई ९	उ.षा.	धनु/मकर	मेष	कर्क	ऽपं.रा.ऽ ॥ ।ऽचौ. ॥ ॥	दि.ल. ५(१३/०८ बाद), ६, गोधू., ८, ९, १०, ११, १२, (१३/०८ तक क्रा.सा.) ,
ज्ये. कृ. ६ र.	वैशा. २७	मई १०	उ.षा.	मकर	मेष	कर्क	ऽपं.रा.ऽ ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. २*(६/४५ तक),
ज्ये. कृ. ६ र.	वैशा. २७	मई १०	श्रव.	मकर	मेष	कर्क	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	ल. गोधू., ८, ९, १०, ११, १२,
ज्ये. कृ. ८ चं.	वैशा. २८	मई ११	श्रव.	मकर	मेष	कर्क	॥ ॥ ।ऽरो. ।ऽ ॥	दि.ल. २*, ३, ४(१०/५५ तक),
ज्ये. कृ. ८ चं.	वैशा. २८	मई ११	धनि.	मकर	मेष	कर्क	॥ ।ऽगु. ऽगु. ऽरो. ।ऽ ॥	दि.ल. ४(१०/५५ बाद), ५, ६, गोधू., ८, ९(२२/१७ तक), (२२/१७ से २७/५८ तक गुरुपादवेध),
ज्ये. कृ. ९ मं.	वैशा. २९	मई १२	धनि.	कुम्भ	मेष	कर्क	॥ ।ऽगु. ऽगु. ऽरो. ।ऽ ॥	दि.ल. २*, ३(९/३८ तक),
ज्ये. शु. १ मं.	ज्ये. ५	मई १९	रोहि.	वृष	वृष	कर्क	॥ ऽमं.बु.। ऽश.। ॥ ॥	दि.ल. ३ (७/४९ बाद), ४, ५, ६, ७,
ज्ये. शु. १ मं.	ज्ये. ५	मई १९	मृग.	वृष	वृष	कर्क	॥ ॥ ।ऽनृ. ॥ ॥	ल. ९ (२१/०३ बाद), १०, ११, १२, १,
ज्ये. शु. २ बु.	ज्ये. ६	मई २०	मृग.	वृष/मिथुन	वृष	कर्क	॥ ॥ ।ऽनृ. ॥ ॥	दि.ल. ३, ४, ५, ६, ७,
ज्ये. शु. ७ चं.	ज्ये. ११	मई २५	मघा	सिंह	वृष	कर्क	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ३(७/२१ बाद), ४(९/३९ तक), (१९/५० बाद मृत्युबाण),

*निर्बल लग्न ।

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७२ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१५ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है ।)
ज्ये. शु. ६ बु.	ज्ये. १३	मई २७	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृष	कर्क	॥ ॥ ।ऽअ. ऽ। ॥	दि.ल. ३ (८/२४ बाद), ४, ५, ६, ७, गोधू., ६, १०, ११, १२, १,
ज्ये. शु. १० गु.	ज्ये. १४	मई २८	उ.फा.	कन्या	वृष	कर्क	॥ ॥ ॥ ऽ। ॥	दि.ल. ३, ४, ५ (११/२६ तक),
ज्ये. शु. १२ श.	ज्ये. १६	मई ३०	चित्रा	तुला	वृष	कर्क	ऽगु. ऽ ॥ ॥ ऽ। ॥	दि.ल. ३(८/०२ तक),
ज्ये. शु. १२ श.	ज्ये. १६	मई ३०	स्वा.	तुला	वृष	कर्क	ऽसू. । ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. ७ (१६/३० बाद), गोधू., ६, १०, ११, १२, १,
प्र.आषा.कृ. १ बु.	ज्ये. २०	जून ३	मूल	धनु	वृष	कर्क	।ऽ ॥ ॥ ॥ ॥	ल. ६ (२०/३७ बाद), १०, ११, १२, १,
प्र.आषा.कृ. ३ शु.	ज्ये. २२	जून ५	उ.षा.	धनु/मकर	वृष	कर्क	ऽरा.। ॥ । ऽअ. ॥ ॥	ल. गोधू.,६, १०, ११, १२, १,
प्र.आषा.कृ. ४ श.	ज्ये. २३	जून ६	श्रव.	मकर	वृष	कर्क	॥ ॥ ऽशु. ॥ ऽ ॥	ल. गोधू.,६, १०, ११, १२, १,
प्र.आषा.कृ. ५ र.	ज्ये. २४	जून ७	श्रव.	मकर	वृष	कर्क	॥ ॥ ऽशु ऽनृ. ।ऽ ॥	दि.ल. ४, ५, ६*, ७ (१६/१६ तक),
प्र.आषा.कृ. ६ गु.	ज्ये. २८	जून ११	रेव.	मीन	वृष	कर्क	॥ ॥ ऽरा.। ।ऽ ॥	दि.ल. ५, ६*, ७,
प्र.आषा.कृ. ११ शु.	ज्ये. २६	जून १२	रेव.	मीन	वृष	कर्क	॥ ॥ ऽरा. ऽरो. ।ऽ ॥	दि.ल. ४ (८/५१ तक),
प्र.आषा.कृ. ११ शु.	ज्ये. २६	जून १२	अश्वि.	मेष	वृष	कर्क	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	दि.ल. ५ (१०/२७ बाद), ६*, ७, रा.ल. ६, १०, ११, १२ (२५/२२ तक),
प्र.आषा.कृ. १२ श.	ज्ये. ३०	जून १३	अश्वि.	मेष	वृष	कर्क	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	दि.ल. ४ (८/२५ तक),
द्वि.आषा.शु. ५ मं.	श्राव. ६	जुला. २१	उ.फा.	कन्या	कर्क	सिंह	॥ ॥ ।ऽनृ. ऽऽ ॥	दि.ल. ६ (११/५६ बाद), ७, ८, ६, गोधू.,११, १२*, १ ,२,
द्वि.आषा.शु. ७ गु.	श्राव. ८	जुला. २३	चित्रा	कन्या	कर्क	सिंह	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ५, ६, ७, ८, ६, गोधू.,
द्वि.आषा.शु. ८ शु.	श्राव. ६	जुला. २४	स्वा.	तुला	कर्क	सिंह	ऽगु. ऽ ॥ ।ऽचौ. ।ऽ ॥	दि.ल. ५ (६/३० बाद), ६, ७, ८, ६, गोधू.,११, १२*, १ ,२,
द्वि.आषा.शु. ६ श.	श्राव. १०	जुला. २५	स्वा.	तुला	कर्क	सिंह	ऽगु. ऽ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ५, ६ (११/२४ तक),
द्वि.आषा.शु. १४ गु.	श्राव. १५	जुला. ३०	उ.षा.	धनु/मकर	कर्क	सिंह	॥ ॥ ऽमं. ऽनृ. ।ऽ ॥	दि.ल. ७ (११/४५ बाद), ८, ६,
द्वि.आषा.शु. १५ शु.	श्राव. १६	जुला. ३१	उ.षा.	मकर	कर्क	सिंह	॥ ॥ ऽमं. ऽनृ. ।ऽ ॥	दि.ल. ५, ६ (६/५३ तक),
द्वि.आषा.शु. १५ शु.	श्राव. १६	जुला. ३१	श्रव.	मकर	कर्क	सिंह	॥ ।ऽगु.शु.ऽसू.ऽनृ. ।ऽ ॥	दि.ल. ६ (६/५३ बाद), ७, ८, ६, (२०/४७ से २६/१४ तक शुक्र एवं गुरुपादवेध)
श्राव. कृ. १ श.	श्राव. १७	अग. १	श्रव.	मकर	कर्क	सिंह	॥ । ऽगु.शु. ऽसू. । ।ऽ ॥	दि.ल. ५ (७/४१ तक),
श्राव. कृ. १ श.	श्राव. १७	अग. १	धनि.	मकर/कुम्भ	कर्क	सिंह	॥ ।ऽबु. ।ऽचौ. ॥ ॥	दि.ल. ५ (७/४१ बाद), ६, ७ (१३/०५ तक), गोधू., ११, १२*, १, २, (१३/०५ से १८/२६ तक बुध पादवेध),

*निर्बल लग्न ।

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७२ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१५ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है ।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
भाद्र. शु. १ चं.	भाद्र. २६	सितं. १४	उ.फा.	कन्या	सिंह	सिंह	।ऽ ऽरा.। ।। ।। ।।	ल. ६ (१४/४८ बाद), १० (१६/२६ तक),
आश्वि. शु. १ बु.	आश्वि.२८	अक्तू.१४	स्वा.	तुला	कन्या	सिंह	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. ७, ८, ९, १०, ११, रा.ल. १, २, ३*, ५,
आश्वि. शु. २ गु.	आश्वि.२९	अक्तू.१५	स्वा.	तुला	कन्या	सिंह	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ७ (७/२० तक),
आश्वि. शु. ५ र.	कार्त्ति. २	अक्तू.१८	मूल	धनु	तुला	सिंह	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. १० (१३/१२ बाद), ११, गोधू., २, ३*, ५, ६* (२८/५४ तक),
आश्वि. शु. ७ मं.	कार्त्ति. ४	अक्तू.२०	उ.षा.	मकर	तुला	सिंह	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	ल. ५, ६*,
आश्वि. शु. ८ बु.	कार्त्ति. ५	अक्तू.२१	उ.षा.	मकर	तुला	सिंह	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ८, ९, १० (१४/१६ तक),
आश्वि. शु. ८ बु.	कार्त्ति. ५	अक्तू.२१	श्रव.	मकर	तुला	सिंह	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. १० (१४/१६ बाद), ११, गोधू., २ (१६/२४ तक), ३*, ५, ६*,
आश्वि. शु. ९ गु.	कार्त्ति. ६	अक्तू.२२	श्रव.	मकर	तुला	सिंह	।। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ८, ९, १० (१३/२८ तक),
कार्त्ति. कृ. २ गु.	कार्त्ति. १३	अक्तू.२९	रोहि.	वृष	तुला	सिंह	।। ।। ऽश.ऽअ. ।। ।।	ल. २ (१८/३७ बाद), ३* (२१/४३ तक),
कार्त्ति. कृ. ३ शु.	कार्त्ति. १४	अक्तू.३०	मृग.	वृष	तुला	सिंह	।। ।। ।। ऽऽ ।।	ल. २, ४, ५,
कार्त्ति. कृ. ५ श.	कार्त्ति. १५	अक्तू.३१	मृग.	मिथुन	तुला	सिंह	।। ।। ।ऽनृ. ऽऽ ।।	दि.ल. ८, ९, १०, ११,
कार्त्ति. कृ. ९ बु.	कार्त्ति. १९	नवं. ४	मघा	सिंह	तुला	सिंह	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	ल. ३ (२०/५१ बाद), ५, ६,
कार्त्ति. कृ. ९ गु.	कार्त्ति. २०	नवं. ५	मघा	सिंह	तुला	सिंह	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ८, ९, १०, ११, गोधू., २, ३ (२१/५० तक),
कार्त्ति. कृ. ११ श.	कार्त्ति. २२	नवं. ७	उ.फा.	कन्या	तुला	सिंह	।ऽ ऽशु.रा.। ।ऽअ. ऽऽ ।।	ल. ६ (२८/०५ से २९/०३ तक),
कार्त्ति. शु. ३ श.	कार्त्ति. २९	नवं. १४	मूल	धनु	तुला	सिंह	।। ।। ।। ।। ।।	ल. ३(१६/३२ बाद), ५ (२४/२४ तक), (२४/२४ बाद मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु. ६ मं.	मार्ग. २	नवं. १७	श्रव.	मकर	वृश्चिक	सिंह	।ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	ल. ३ (२०/१४ बाद), (२३/५१ बाद मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु. ७ बु.	मार्ग. ३	नवं. १८	धनि.	मकर	वृश्चिक	सिंह	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	ल. ५ (२३/५१ से २४/३९ तक), (२३/५१ तक मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु. ८ गु.	मार्ग. ४	नवं. १९	धनि.	कुम्भ	वृश्चिक	सिंह	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. १० (११/५४ बाद), ११, १, गोधू.,
कार्त्ति. शु. १३ मं.	मार्ग. ९	नवं. २४	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	सिंह	ऽसू.ऽ ।ऽगु. ।। ऽ। ।।	दि.ल. ९ (९/५८ तक), (गुरुपादवेधाभाव),
मार्ग. कृ. १ गु.	मार्ग. ११	नवं. २६	रोहि.	वृष	वृश्चिक	सिंह	।। ।। ऽश.। ।ऽ ।।	दि.ल. ९, १०, ११, १, रा.ल. ३, ४ (२१/४६ तक), (२१/४६ बाद मृत्युबाण),
मार्ग. कृ. २ शु.	मार्ग. १२	नवं. २७	मृग.	मिथुन	वृश्चिक	सिंह	।। ।। ऽसु.ऽअ. ।। ।।	ल. ४* (२१/३० बाद), ५, ६ (२६/१३ तक), (२१/३० तक मृत्युबाण),

*निर्बल लग्न ।

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७२ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१५-१६ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है ।)
मार्ग. कृ. ९ शु.	मार्ग. १९	दिसं. ४	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृश्चिक	सिंह	ऽबु.। ऽगु.रा। ऽकेऽरो.।ऽ।।	दि.ल. ९ (९/१४ बाद), १०, ११, १, गोधू., ३, ४, ५, ७,
मार्ग. कृ. १० श.	मार्ग. २०	दिसं. ५	उ.फा.	कन्या	वृश्चिक	सिंह	ऽबु.। ऽगु.रा.। ऽके.। ।ऽ।।	दि.ल. ९ , १०, ११ (१२/२२ तक),
मार्ग. कृ. १० श.	मार्ग. २०	दिसं. ५	हस्त	कन्या	वृश्चिक	सिंह	।। ऽमं.। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ११ (१२/२२ बाद), १, गोधू., ३ (१८/२५ तक),
मार्ग. कृ. ११ चं.	मार्ग. २२	दिसं. ७	स्वा.	तुला	वृश्चिक	सिंह	ऽमं.। ऽशु.। ।। ।ऽ ।।	ल. ३(१८/२५ बाद), ४, ५, ६, ७,
मार्ग. कृ. १२ मं.	मार्ग. २३	दिसं. ८	स्वा.	तुला	वृश्चिक	सिंह	ऽमं.। ऽशु.। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ९ , १० (१०/५८ तक),
मार्ग. शु. २ र.	मार्ग. २८	दिसं. १३	उ.षा.	धनु	वृश्चिक	सिंह	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. ७,
मार्ग. शु. ३ चं.	मार्ग. २९	दिसं. १४	उ.षा.	धनु/मकर	वृश्चिक	सिंह	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ९ , १०, ११, १ (१५/३१ तक), (१५/३१ बाद मृत्युबाण),
पौष शु. ६ शु.	माघ २	जन. १५	उ.भा.	मीन	मकर	सिंह	।। ।। ऽगु.रा.। ऽ। ।।	दि.ल. ११ (९/०१ बाद), १२, १, २, गोधू., ५, ६, (२५/०० बाद मृत्युबाण),
पौष शु. ७ श.	माघ ३	जन. १६	अश्वि.	मेष	मकर	सिंह	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. ८ (२८/५७ बाद), ९,
पौष शु. ८ र.	माघ ४	जन. १७	अश्वि.	मेष	मकर	सिंह	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ११, १२, १, २, गोधू., ५, ६ (२३/५७ तक),
पौष शु. १० मं.	माघ ६	जन. १९	रोहि.	वृष	मकर	सिंह	।। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	ल. ५ (२१/४५ बाद), ६ (२३/३१ तक),
पौष शु. ११ बु.	माघ ७	जन. २०	रोहि.	वृष	मकर	सिंह	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. १२, १, २, गोधू., ५ (२०/५४ तक),
माघ कृ. ३ बु.	माघ १४	जन. २७	उ.फा.	सिंह	मकर	सिंह	।। ऽगु.रा.। ऽके.ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. ८, ९,
माघ कृ. ४ गु.	माघ १५	जन. २८	उ.फा.	सिंह/कन्या	मकर	सिंह	।। ऽगु.रा.। ऽके.ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ११, १२, १, २, गोधू., ५, ६, ८, ९ (२८/४३ तक),
माघ कृ. ४ गु.	माघ १५	जन. २८	हस्त	कन्या	मकर	सिंह	।। ।। ।। ऽ। ।।	ल. ९ (२८/४३ बाद),
माघ कृ. ५ शु.	माघ १६	जन. २९	हस्त	कन्या	मकर	सिंह	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ११, १२, १, २, गोधू., ५, ६, ८, ९,
माघ कृ. ९ मं.	माघ २०	फर. २	अनु.	वृश्चिक	मकर	सिंह	ऽगु. । ।। ।। ।ऽ ।।	ल. गोधू., (१७/५२ बाद मृत्युबाण),
माघ कृ. ११ गु.	माघ २२	फर. ४	मूल	धनु	मकर	सिंह	।। ।। ।। ऽऽ ।।	ल. ५ (२०/०९ बाद), ६, ९,
माघ कृ. १२ शु.	माघ २३	फर. ५	मूल	धनु	मकर	सिंह	।। ।। ।। ऽऽ ।।	दि.ल. ११, १२, १, २, गोधू., ५ (१९/४३ तक),
माघ शु. ३ गु.	माघ २९	फर. ११	उ.भा.	मीन	मकर	सिंह	।। ।। ऽगु.रा. । ।। ।।	दि.ल. १ (११/०९ बाद), २, (१५/०० बाद मृत्युबाण),
माघ शु. ८ चं.	फाल्गु. ३	फर. १५	रोहि.	वृष	कुम्भ	सिंह	।। ।ऽबु. ।ऽअ. ।। ।।	ल. ९ (२७/०९ बाद), १०, (बुध पादवेध विचार्य),
माघ शु. ९ मं.	फाल्गु. ४	फर. १६	रोहि.	वृष	कुम्भ	सिंह	।। ।ऽबु. ।ऽअ. ।। ।।	दि.ल. १ (९/४८ तक), (बुध पादवेध विचार्य),
माघ शु. १० बु.	फाल्गु. ५	फर. १७	मृग.	वृष/मिथुन	कुम्भ	सिंह	।। ।ऽशु. ऽश. ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. गोधू., ६, ७, ८ (२६/१४ तक), (८/२५ से १४/२१ तक शुक्रपादवेध),

*निर्बल लग्न ।

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७२ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१६ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न (सर्वत्र मा. स्टैं. टा. दिया गया है ।)
माघ शु. १५ चं.	फाल्गु.१०	फर. २२	मघा	सिंह	कुम्भ	सिंह	॥ ।ऽबु.शु. ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. २ (११/१२ से ११/५६ तक), रा.ल. ६, ७, ८ (२४/५३ तक), (२४/५३ बाद शुक्रपादवेध), (११/५६ से १८/२५ तक बुधपादवेध),
फाल्गु. कृ. २ बु.	फाल्गु.१२	फर. २४	उ.फा.	सिंह/कन्या	कुम्भ	सिंह	॥ ऽरा.। ऽके.ऽअ. ॥ ॥	दि.ल. २(१२/०७ बाद), गोधू., ६, ७, ८ (२६/२९ तक), ९ (२८/२९ बाद), १०, (१२/०७ तक मृत्युबाण),
फाल्गु. कृ. ३ गु.	फाल्गु.१३	फर. २५	उ.फा.	कन्या	कुम्भ	सिंह	॥ ऽरा.। ऽके.ऽअ. ॥ ॥	दि.ल. १, २ (१२/२४ तक),
फाल्गु. कृ. ८ बु.	फाल्गु.१९	मार्च २	मूल	धनु	कुम्भ	सिंह	ऽमं.शु. । ॥ ॥ ऽऽ ॥	ल. १० (२९/०८ बाद),
फाल्गु. कृ. ९ गु.	फाल्गु.२०	मार्च ३	मूल	धनु	कुम्भ	सिंह	ऽमं.शु. । ॥ ॥ ऽऽ ॥	दि.ल. १, २ (११/१९ तक), (११/१९ बाद मृत्युबाण),
फाल्गु. कृ. १० शु.	फाल्गु.२१	मार्च ४	उ.षा.	धनु	कुम्भ	सिंह	॥ ॥ ।ऽअ. ।ऽ ॥	ल.१० (२९/३१ बाद),
फाल्गु. कृ. ११ श.	फाल्गु.२२	मार्च ५	उ.षा.	धनु/मकर	कुम्भ	सिंह	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. १, २, रा.ल. ६, ७, ८, ९ (२६/०९ तक),

नोट- आगामी सं. २०७३ वि. में गुरु-शुक्रास्त आदि एवम् सम्भावित विवाहमुहूर्त्तों की तारीखों के लिए अगला पृष्ठ देखें ।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में वेध–युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिए जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गए हैं:- ***वेध परिहार-*** सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेधपद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहां शेष तीनों चरण वेधदोष से मुक्त रहते हैं। पादवेधपद्धति में वेधक सौम्यग्रह नक्षत्र के पहिले चरण में हो तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य नक्षत्र के पहिले चरण को; द्वितीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। ***युतिदोष का परिहार-*** नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। ***कर्त्तरीदोष का परिहार-*** मुहूर्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों, तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र-कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। ***दग्धातिथि का परिहार-*** मुहूर्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो, तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। ***षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार-*** नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। ***अष्टमस्थ मंगल का परिहार-*** मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो, तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो, तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। ***षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार-*** शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो, तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तो उसका भी कोई परिहार नहीं है।

ध्यान रहे- ये लग्नभंग के सामान्य (अपूर्ण) परिहार हैं, जिन्हें पंचांगकार परम्परया प्रयोग में ला रहे हैं। लेकिन इनसे अतिरिक्त अन्य लग्नभंग के विशेष परिहार भी हैं, जिनका हमने गत वर्ष (सं. २०७० वि.) से लग्नशोधन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया है। अधिक स्पष्टता के लिए मेरी पुस्तक " मुहूर्त गजानन " में दिया "लग्नभंग-परिहार (एक संशोधन)" लेख पढ़िए।

वि. सं. 2073 में (8 अप्रैल, 2016 ई. से 28 मार्च, 2017 ई. तक)सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त

प्रतिवर्ष हमें ऐसे दैवज्ञों एवं अन्य अनेक लोगों के **Phone Calls**/पत्र आते हैं, जो यह जानना चाहते हैं कि– आगामी वर्ष में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* किन–किन दिनों में संभावित हैं। उनकी इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए यह स्तम्भ प्रारम्भ किया गया है। इससे यह पर्याप्त स्पष्टता से ज्ञात हो जाता है कि– आगामी वर्ष के किन–किन दिनों में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* संभावित हैं और किन–किन दिनों में नहीं। यहां जिन तारीखों के आगे गुणनचिह्न (×) दिया गया है, उन दिनों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त बिल्कुल नहीं बनते। इनके अतिरिक्त जहां गुणनचिह्न नहीं दिया है, उन दिनों में शुद्ध मुहूर्त्त बनने की पर्याप्त संभावना है। — प्रियव्रत शर्मा

तारीख	अप्रै. '16	मई '16	जून '16	जुला'16	अग.'16	सितं.'16	अक्तू.'16	नवं.'16	दिसं.'16	जन.'17	फर.'17	मार्च '17	तारीख
1	–	×	×	×	×	×	×			×			1
2	–	×	×	×	×		×			×			2
3	–	×	×	×			×			×			3
4	–	×	×	×			×			×			4
5	–	×	×	×			×			×		×	5
6	–	×	×	×			×			×		×	6
7	–	×	×	×		×	×			×	×	×	7
8	×	×	×	×		×	×			×	×	×	8
9	×	×	×	×		×	×			×	×	×	9
10	×	×	×	×		×	×			×	×	×	10
11	×	×	×	×		×				×	×	×	11
12	×	×	×			×				×	×	×	12
13	×	×	×			×				×		×	13
14	×	×	×			×		×	×	×		×	14
15	×	×	×	×	×	×	×	×	×			×	15
16		×	×	×	×	×	×	×	×			×	16
17		×	×			×		×	×			×	17
18		×	×			×		×	×			×	18
19		×	×			×		×	×			×	19
20		×	×			×			×			×	20
21		×	×			×	×		×			×	21
22		×	×			×	×		×			×	22
23		×	×			×	×		×			×	23
24		×	×			×			×		×	×	24
25		×	×			×			×	×	×	×	25
26	×	×	×			×			×	×	×	×	26
27	×	×	×			×		×	×	×	×	×	27
28	×	×	×		×	×	×	×	×			×	28
29	×	×	×		×	×	×	×	×		–	–	29
30	×	×	×		×	×	×		×		–	–	30
31	–	×	–	×	×	–	×	–	×		–	–	31

इस वर्ष (सं. 2073) में इन निम्नांकित दोषों के कारण ये निम्नांकित तारीखें विवाहादि सभी मंगल–कृत्यों में निषिद्ध हैं–

मीनस्थ सूर्यदोष
(8 से 13 अप्रैल, 2016 ई.)

शुक्रवार्धक्य–अस्त–बाल्यदोष
(26 अप्रैल से 12 जुलाई, 2016 ई.)
(18 से 28 मार्च, 2017 ई.)

गुरुवार्धक्य–अस्त–बाल्यदोष
(7 सितंबर से 10 अक्तूबर, 2016 ई.)

आश्विन कृष्ण(श्राद्ध)पक्ष–दोष
(16 से 30 सितंबर, 2016 ई.)

धनुःस्थ सूर्यदोष
(15 दिसं., 2016 ई. से 14 जन., 2017 ई.)

होलाष्टक–दोष
(5 से 12 मार्च, 2017 ई.)

मीनस्थ सूर्यदोष
(14 मार्च, 2017 ई. से वर्षान्त तक)

ध्यान दें– सभी मंगलकृत्यों में निषिद्ध इन उपरोक्त तारीखों तथा अन्य तारीखों को भी जो विवाहकृत्य में वर्जित हैं, इस कोष्ठक में गुणनचिह्न से अंकित किया गया है।

सं. २०७२ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०७२ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०७२ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ. 262.. पर दिए गए हैं । किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है । अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है ।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे- मेषराशि वाले लड़के और सिंहराशि वाली लड़की का विवाह सं. २०७२ वि. में नवम्बर (२०१५ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है ?- यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,-लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि मेष के आगे नवम्बर, २०१५ ई. की ४, ५, ७, १४ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि सिंह के आगे नवम्बर की ४, ५, ७, १४, १७, १८, १९, २४, २६, २७ तारीखें हैं । इसलिए यह समझना चाहिए कि नवम्बर, २०१५ ई. में मेष राशि वाले लड़के और सिंह राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नवम्बर की केवल ४, ५, ७, १४ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि नवम्बर की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-सिंह) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं । इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए । क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है ।

ध्यान दें- लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हों तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है । इस वर्ष कर्क एवम् सिंह राशिस्थ गुरु क्रमशः उच्चस्थ एवम् मित्रक्षेत्री होने से किसी के लिए पूज्य नहीं है।

नाम/जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७२ वि.) (२१ मार्च, सन् २०१५ ई. से ७ अप्रैल, सन् २०१६ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है ।	लड़की	
मेष	अप्रैल २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०; मई २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २५, २७, २८, ३०; जून ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३; सितं. १४; अक्तू.१४, १५, १८, २०, २१, २२, २६, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ७, १४; जन. १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९; फर. ४, ५, ११, १५, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च २, ३, ४, ५;	ज्येष्ठ , कार्तिक ,	अप्रैल २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०; मई २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २५, २७, २८, ३०; जून ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३; जुला. २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. १; सितं. १४; अक्तू. १४, १५, १८, २०, २१, २२, २६, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ७, १४, १७, १८, १९, २४, २६, २७; दिसं. ४, ५, ७, ८, १३, १४; जन. १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९; फर. ४, ५, ११, १५, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च २, ३, ४, ५;	- - -
वृष	मई १९, २०, २७(१५/१० बाद), २८, ३०; जून ५(२४/१९ बाद), ६, ७, ११, १२, १३; जुला. २१, २३, २४, २५, ३०(१७/२० बाद), ३१; अग. १; अक्तू. १४, १५, २०, २१, २२, २६, ३०, ३१; नवं. ७, १७, १८, १९, २४, २६, २७; दिसं. ४(१६/०० बाद), ५, ७, ८, १४(७/५४ बाद); जन. १५, १६, १७, १९, २०, २८(८/३६ बाद), २९; फर. २, ११, १५, १६, १७, २४(१६/२० बाद), २५; मार्च ५(११/२७ बाद);	ज्येष्ठ , आषाढ़ , आश्विन , माघ ,	अप्रैल २१, २२, २३, ३०(७/३२ बाद); मई २, ३, ९(१८/३० बाद), १०, ११, १२, १९, २०, २७(१५/१० बाद), २८, ३०; जून ५(२४/१९ बाद), ६, ७, ११, १२, १३; जुला. २१, २३, २४, २५, ३०(१७/२० बाद), ३१; अग. १; सितं. १४; अक्तू. १४, १५, २०, २१, २२, २६, ३०, ३१; नवं. ७, १७, १८, १९, २४, २६, २७; दिसं. ४(१६/०० बाद), ५, ७, ८, १४(७/५४ बाद); जन. १५, १६, १७, १९, २०, २८(८/३६ बाद), २९; फर. २, ११, १५, १६, १७, २४(१६/२० बाद), २५; मार्च ५(११/२७ बाद);	- - -

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७२ वि.) (२१ मार्च, सन् २०१५ ई. से ७ अप्रैल, सन् २०१६ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल मा. स्टैं. टा. है।)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मिथुन	अप्रैल २१, २२, २३, २७, २८, २६, ३०(७/३२ तक); मई २(१६/३८ बाद), ३, ७, ८, ६(१८/३० तक), १२; जुला. २४, २५, ३०(१७/२० तक); अग. १(१८/३० बाद); अक्तू. १८, २६, ३०, ३१; नवं. ४ ५, १४, १६, २४, २६, २७; दिसं. ४(१६/०० तक), ७, ८, १३, १४(७/५४ तक); फर. १५, १६, १७, २२, २४(१६/२० तक); मार्च २, ३, ४, ५(११/२७ तक);	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल २१, २२, २३, २७, २८, २६, ३०(७/३२ तक); मई २(१६/३८ बाद), ३, ७, ८, ६(१८/३० तक), १२, १६, २०, २५, २७(१५/१० तक), ३०; जून ३, ५(२४/१६ तक), ११, १२, १३; जुला. २४, २५, ३०(१७/२० तक); अग. १(१८/३० बाद); अक्तू. १४, १५, १८, २६, ३०, ३१; नवं.४,५, १४, १६, २४, २६, २७; दिसं. ४(१६/०० तक), ७, ८, १३, १४(७/५४ तक); जन. १५, १६, १७, १६, २०, २७, २८(८/३६ तक); फर. २, ४, ५, ११, १५, १६, १७, २२, २४(१६/२० तक); मार्च २, ३, ४, ५(११/२७ तक);	---
कर्क	अप्रैल २१, २२, २३, २७, २८, २६, ३०; मई २(१६/३८ तक), ७, ८, ६, १०, ११, १६, २०, २५, २७, २८; जून ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३; जुला. २१, २३, ३०, ३१; अग. १(१८/३० तक) ; सितं. १४; नवं. १७, १८, २४, २६, २७; दिसं. ४, ५, १३, १४; जन. १५, १६, १७, १६, २०, २७, २८, २६; फर. २, ४, ५, ११;	माघ,	अप्रैल २१, २२, २३, २७, २८, २६, ३०; मई २(१६/३८ तक), ७, ८, ६, १०, ११, १६, २०, २५, २७, २८; जून ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३; जुला. २१, २३, ३०, ३१; अग. १(१८/३० तक); सितं. १४; अक्तू. १८, २०, २१, २२, २६, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ७, १४, १७, १८, २४, २६, २७; दिसं. ४, ५, १३, १४; जन. १५, १६, १७, १६, २०, २७, २८, २६; फर. २, ४, ५, ११, १५, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च २, ३, ४, ५ ;	- - -
सिंह	अप्रैल २१, २२, २३, २७, २८, २६, ३०; मई २, ३, ७, ८, ६, १०, ११, १२, १६, २०, २५, २७, २८, ३०; जून ३, ५, ६, ७, १२(६/३६ बाद), १३; सितं. १४; अक्तू. १४, १५, १८, २०, २१, २२, २६, ३०, ३१; नवं. ४ ५, ७, १४; जन. १६, १७, १६, २०, २७, २८, २६; फर. ४, ५, १५, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च २, ३, ४, ५;	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रैल २१, २२, २३, २७, २८, २६, ३०; मई २, ३, ७, ८, ६, १०, ११, १२, १६, २०, २५, २७, २८, ३०; जून ३, ५, ६, ७, १२(६/३६ बाद), १३; जुला. २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. १; सितं. १४; अक्तू. १४, १५, १८, २०, २१, २२, २६, ३०, ३१; नवं. ४,५, ७, १४, १७, १८, १६, २४, २६, २७; दिसं. ४, ५, ७, ८, १३, १४; जन. १६, १७, १६, २०, २७, २८, २६; फर. ४, ५, १५, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च २, ३, ४, ५;	---
कन्या	मई १६, २०, २५, २७, २८, ३०; जून ५(२४/१६ बाद), ६, ७, ११, १२(६/३६ तक); जुला. २१, २३, २४, २५, ३०(१७/२० बाद), ३१; अग. १; अक्तू. १४, १५, २०, २१, २२, २६, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ७, १७, १८, १६, २६, २७; दिसं. ४, ५, ७, ८, १४(७/५४ बाद); जन. १५, १६, २०, २७, २८, २६; फर. २, ११, १५, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च ५(११/२७ बाद);	ज्येष्ठ , आश्विन, कार्त्तिक, माघ ,	अप्रैल २१, २२, २३, २७, २८, २६, ३०; मई २, ३, ६(१८/३० बाद), १०, ११, १२, १६, २०, २५, २७, २८, ३०; जून ५(२४/१६ बाद), ६, ७, ११, १२(६/३६ तक); जुला. २१, २३, २४, २५, ३०(१७/२० बाद), ३१; अग. १; सितं. १४; अक्तू. १४, १५, २०, २१, २२, २६, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ७, १७, १८, १६, २६, २७; दिसं. ४, ५, ७, ८, १४(७/५४ बाद); जन. १५, १६, २०, २७, २८, २६; फर. २, ११, १५, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च ५(११/२७ बाद);	---
तुला	अप्रैल २२(२३/०६ बाद), २३, २७, २८, २६, ३०; मई २, ३, ७, ८, ६(१८/३० तक), १२ ;जुला. २१, २३, २४, २५, ३०(१७/२० तक); अग. १(१८/३० बाद); सितं. १४; अक्तू. १८, ३१; नवं. ४, ५, ७, १४, १६, २४, २७; दिसं. ४, ५, ७, ८, १३, १४(७/५४ तक; फर. १७(१४/१६ बाद), २२, २४, २५; मार्च २, ३, ४, ५(११/२७ तक);	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल २२(२३/०६ बाद), २३, २७, २८, २६, ३०; मई २, ३, ७, ८, ६(१८/३० तक), १२, २०(८/४६ बाद), २५, २७, २८, ३०; जून ३, ५(२४/१६ तक), ११, १२, १३; जुला. २१, २३, २४, २५, ३०(१७/२० तक); अग. १(१८/३० बाद); सितं. १४; अक्तू. १४, १५, १८, ३१; नवं. ४ ५, ७, १४, १६, २४, २७; दिसं. ४, ५, ७, ८, १३, १४(७/५४ तक); जन. १५, १६, १७, २७, २८, २६; फर. २, ४, [illegible], ११, १७(१४/१६ बाद), २२, २४, २५; मार्च २, ३, ४, ५(११/२७ तक);	---

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७२ वि.) (२१ मार्च, सन् २०१५ ई. से ७ अप्रैल, सन् २०१६ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टै. टा. है।)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
वृश्चिक	अप्रैल २१, २२(२३/०९ तक), २७, २८, २९, ३०; मई २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १९, २०(८/४९ तक), २५, २७, २८, ३०; जून ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३; जुला. २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. १(१८/३० तक); सितं. १४; अक्तू. १४, १५; नवं. १७, १८, २४, २६; दिसं. ४, ५, ७, ८, १३, १४; जन. १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९; फर. २, ४, ५, ११;	ज्येष्ठ,	अप्रैल २१, २२(२३/०९ तक), २७, २८, २९, ३०; मई २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १९, २०(८/४९ तक), २५, २७, २८, ३०; जून ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३; जुला. २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. १(१८/३० तक); सितं. १४; अक्तू. १४, १५, १८, २०, २१, २२, २९, ३०; नवं. ४,५, ७, १४, १७, १८, २४, २६; दिसं. ४, ५, ७, ८, १३, १४; जन. १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९; फर. २, ४, ५, ११, १५, १६, १७(१४/१९ तक), २२, २४, २५; मार्च २, ३, ४, ५;	- - -
धनु	अप्रैल २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०; मई २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २५, २७, २८, ३०; जून ३, ५, ६, ७, १२ (९/३९ बाद), १३; सितं. १४; अक्तू. १४, १५, १८, २०, २१, २२, २९, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ७, १४; जन. १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९; फर. २, ४, ५, १५, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च २, ३, ४, ५;	आषाढ़ , माघ,	अप्रैल २१, २२, २३, २७, २८, २९, ३०; मई २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २५, २७, २८, ३०; जून ३, ५, ६, ७, १२(९/३९ बाद), १३; जुला. २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. १; सितं. १४; अक्तू. १४, १५, १८, २०, २१, २२, २९, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ७, १४, १७, १८, १९, २४, २६, २७; दिसं. ४, ५, ७, ८, १३, १४ ; जन. १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९; फर. २, ४, ५, १५, १६, १७, २२, २४, २५; मार्च २, ३, ४, ५;	- - -
मकर	मई १९, २०, २७(१५/१० बाद), २८, ३०; जून ३, ५, ६, ७, ११, १२(९/३९ तक); जुला. २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. १; अक्तू. १४, १५, १८, २०, २१, २२, २९, ३०, ३१; नवं. ७, १४, १७, १८, १९, २६, २७; दिसं. ४(१६/०० बाद), ५, ७, ८, १३, १४; जन. १५, १९, २०, २८(८/३६ बाद), २९; फर. २, ४, ५, ११, १५, १६, १७, २४(१६/२० बाद), २५; मार्च २, ३, ४, ५;	ज्येष्ठ , आश्विन, माघ ,फाल्गुन,	अप्रैल २१, २२, २३, ३०(७/३२ बाद); मई २, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०, २७(१५/१० बाद), २८, ३०; जून ३, ५, ६, ७, ११, १२(९/३९ तक); जुला. २१, २३, २४, २५, ३०, ३१; अग. १; सितं. १४; अक्तू. १४, १५, १८, २०, २१, २२, २९, ३०, ३१; नवं. ७, १४, १७, १८, १९, २६, २७; दिसं. ४(१६/०० बाद), ५, ७, ८, १३, १४; जन. १५, १९, २०, २८(८/३६ बाद), २९; फर. २, ४, ५, ११, १५, १६, १७, २४(१६/२० बाद), २५; मार्च २, ३, ४, ५;	- - -
कुम्भ	अप्रैल २२(२३/०९ बाद), २३, २७, २८, २९, ३०(७/३२ तक); मई २(१९/३८ बाद), ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२; जुला. २४, २५, ३०, ३१; अग. १; अक्तू. १८, २०, २१, २२, ३१; नवं. ४, ५, १४, १७, १८, १९, २४, २७; दिसं. ४(१६/०० तक), ७, ८, १३, १४; फर. १७(१४/१९ बाद), २२, २४(१६/२० तक); मार्च २, ३, ४, ५;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल २२(२३/०९ बाद), २३, २७, २८, २९, ३०(७/३२ तक); मई २(१९/३८ बाद), ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, २०(८/४९ बाद), २५, २७(१५/१० तक), ३०; जून ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३; जुला. २४, २५, ३०, ३१; अग. १; अक्तू. १४, १५, १८, २०, २१, २२, ३१; नवं.४, ५, १४, १७, १८, १९, २४, २७; दिसं. ४(१६/०० तक), ७, ८, १३, १४; जन. १५, १६, १७, २७, २८(८/३६ तक); फर. २, ४, ५, ११, १७(१४/१९ बाद), २२, २४(१६/२० तक); मार्च २, ३, ४, ५;	- - -
मीन	अप्रैल २१, २२(२३/०९ तक), २७, २८, २९, ३०; मई २(१९/३८ तक), ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०(८/४९ तक), २५, २७, २८; जून ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३; जुला. २१, २३, ३०, ३१; अग. १; सितं. १४; नवं. १७, १८, १९, २४, २६; दिसं. ४, ५, १३, १४; जन. १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९; फर. २, ४, ५, ११ ;	आश्विन,	अप्रैल २१, २२(२३/०९ तक), २७, २८, २९, ३०; मई २(१९/३८ तक), ७, ८, ९, १०, ११, १२, १९, २०(८/४९ तक), २५, २७, २८; जून ३, ५, ६, ७, ११, १२, १३; जुला. २१, २३, ३०, ३१; अग. १; सितं. १४; अक्तू. १८, २०, २१, २२, २९, ३०; नवं. ४,५, ७, १४, १७, १८, १९, २४, २६; दिसं. ४, ५, १३, १४; जन. १५, १६, १७, १९, २०, २७, २८, २९; फर. २, ४, ५, ११, १५, १६, १७(१४/१९ तक), २२, २४, २५; मार्च २, ३, ४, ५;	- - -

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७२ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते है, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त–सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि– अमुक नक्षत्र, अमुक दिन, अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है ? यहां साथ–साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी लग्नभंग–परिहार नहीं हो सका, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे*– यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०७२ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। – प्रियव्रत शर्मा ।

तिथि-वार			तारीख २०१५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वर्षारम्भ (२१ मार्च, २०१५ ई.) से १४ अप्रैल, सन् २०१५ ई. तक मीनस्थ रवि।					
वैशा. कृ.	१२	गु.	अप्रैल १६	उ.भा.	क्षीणचन्द्र,
वैशा. शु.	४	बु.	अप्रैल २२	रोहि.	भद्रा,
वैशा. शु.	१२	गु.	अप्रैल ३०	हस्त	ग्रहणनक्षत्र, केतुवेध,
वैशा. शु.	१३	शु.	मई १	हस्त	ग्रहणनक्षत्र, केतुवेध,
वैशा. शु.	१५	चं.	मई ४	स्वा.	व्यतीपात,
ज्ये. कृ.	१	मं.	मई ५	अनु.	शनियुति अपरिहार्य, सूर्यवेध,
ज्ये. कृ.	२	बु.	मई ६	अनु.	शनियुति अपरिहार्य, सूर्यवेध,
ज्ये. कृ.	११	गु.	मई १४	उ.भा.	मासान्त,
ज्ये. कृ.	१२	शु.	मई १५	रेव.	संक्रान्ति,
ज्ये. शु.	६	र.	मई २४	मघा	व्याघात,
ज्ये. शु.	१०	गु.	मई २८	हस्त	ग्रहणनक्षत्र, केतुवेध,
ज्ये. शु.	११	शु.	मई २९	हस्त	ग्रहणनक्षत्र, केतुवेध,
ज्ये. शु.	११	शु.	मई २९	चित्रा	भद्रा, व्यतिपात,
ज्ये. शु.	१३	र.	मई ३१	स्वा.	लग्नाभाव,
ज्ये. शु.	१४	चं.	जून १	अनु.	शनियुति अपरिहार्य,
ज्ये. शु.	१५	मं.	जून २	अनु.	शनियुति अपरिहार्य,
प्र.आषा.कृ.	२	गु.	जून ४	मूल	मृत्युबाण,
प्र.आषा.कृ.	४	श.	जून ६	उ.षा.	७/१६ तक भौमवेध, लग्नाभाव,
प्र.आषा.कृ.	५	र.	जून ७	धनि.	वैधृति,
प्र.आषा.कृ.	६	चं.	जून ८	धनि.	वैधृति, भद्रा,
प्र.आषा.कृ.	८	बु.	जून १०	उ.भा.	केतुयुति अपरिहार्य, राहुवेध,
प्र.आषा.कृ.	९	गु.	जून ११	उ.भा.	केतुयुति अपरिहार्य, राहुवेध,
प्र.आषा.कृ.	१४	चं.	जून १५	रोहि.	क्षीणचन्द्र, संक्रान्ति,
आषाढ़ अधिकमास- १७ जून से १६ जुलाई, २०१५ ई. तक।					
द्वि.आषा.शु.	२	श.	जुला. १८	मघा	मृत्युबाण,
द्वि.आषा.शु.	३	र.	जुला. १९	मघा	व्यतीपात,
द्वि.आषा.शु.	४	चं.	जुला. २०	उ.फा.	परिघार्ध,
द्वि.आषा.शु.	५	मं.	जुला. २१	हस्त	केतुवेध,
द्वि.आषा.शु.	६	बु.	जुला. २२	हस्त	केतुवेध,
द्वि.आषा.शु.	८	शु.	जुला. २४	चित्रा	भद्रा,
द्वि.आषा.शु.	१०	र.	जुला. २६	अनु.	शनियुति अपरिहार्य,
द्वि.आषा.शु.	११	चं.	जुला. २७	अनु.	शनियुति अपरिहार्य,
द्वि.आषा.शु.	१२	मं.	जुला. २८	मूल	भौमवेध, मृत्युबाण,
द्वि.आषा.शु.	१३	बु.	जुला. २९	मूल	वैधृति, भौमवेध,
शुक्रास्तदोष- २ से २३ अगस्त (२०१५ ई.) तक।					
गुरु अस्तदोष- ८ अगस्त से १० सितम्बर (२०१५ ई.) तक।					
भाद्र. शु.	१	चं.	सितं. १४	हस्त	केतुवेध,
सिंहनवांश में सिंहस्थगुरुदोष- १५ से ३० सितं. (२०१५ ई.) तक।					
श्राद्धपक्ष- २८ सितम्बर से १२ अक्तूबर (२०१५ ई.) तक।					
आश्वि. शु.	१	मं.	अक्तू. १३	चित्रा	सूर्ययुति अपरिहार्य,
आश्वि. शु.	१	मं.	अक्तू. १३	स्वा.	लग्नाभाव,
आश्वि. शु.	३	शु.	अक्तू. १६	अनु.	मासान्त,
आश्वि. शु.	४	श.	अक्तू. १७	अनु.	संक्रान्ति,
आश्वि. शु.	६	चं.	अक्तू. १९	मूल	मृत्युबाण,
आश्वि. शु.	९	गु.	अक्तू. २२	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि. शु.	१०	शु.	अक्तू. २३	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि. शु.	१३	र.	अक्तू. २५	उ.भा.	केतुयुति अपरिहार्य,
आश्वि. शु.	१३	र.	अक्तू. २५	रेव.	राहुवेध,
आश्वि. शु.	१४	चं.	अक्तू. २६	रेव.	राहुवेध,
आश्वि. शु.	१४	चं.	अक्तू. २६	अश्वि.	भौमवेध,
आश्वि. शु.	१५	मं.	अक्तू. २७	अश्वि.	भौमवेध,
कार्ति. कृ.	३	शु.	अक्तू. ३०	रोहि.	भद्रा, परिघार्ध,
कार्ति. कृ.	१०	शु.	नवं. ६	उ.फा.	वैधृति,

अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७२ वि.)

तिथि-वार			तारीख २०१५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
कार्त्ति. कृ.	११	श.	नवं. ७	हस्त	केतुवेध,
कार्त्ति. कृ.	१२	र.	नवं. ८	हस्त	केतुवेध,
कार्त्ति. शु.	१	गु.	नवं. १२	अनु.	शनियुति अपरिहार्य,
कार्त्ति. शु.	२	शु.	नवं. १३	अनु.	शनियुति अपरिहार्य,
कार्त्ति. शु.	४	र.	नवं. १५	मूल-	मासान्त,
कार्त्ति. शु.	५	चं.	नवं. १६	उ.षा.	संक्रान्ति,
कार्त्ति. शु.	६	मं.	नवं. १७	उ.षा.	भुजंगपात,
कार्त्ति. शु.	७	बु.	नवं. १८	श्रव.	मृत्युबाण,
कार्त्ति. शु.	१०	श.	नवं. २१	उ.भा.	केतुयुति अपरिहार्य,
कार्त्ति. शु.	११	र.	नवं. २२	उ.भा.	केतुयुति अपरिहार्य,
कार्त्ति. शु.	११	र.	नवं. २२	रेव.	राहुवेध,
कार्त्ति. शु.	१२	चं.	नवं. २३	रेव.	राहुवेध,
कार्त्ति. शु.	१२	चं.	नवं. २३	अश्वि.	लग्नाभाव,
कार्त्ति. शु.	१५	बु.	नवं. २५	रोहि.	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ.	१	गु.	नवं. २६	मृग.	मृत्युबाण,
मार्ग. कृ.	६	मं.	दिसं. १	मघा	भद्रा, वैधृति,
मार्ग. कृ.	७	बु.	दिसं. २	मघा	वैधृति,
मार्ग. कृ.	१०	र.	दिसं. ६	हस्त	मृत्युबाण,
मार्ग. कृ.	१०	र.	दिसं. ६	चित्रा	केतुवेध,
मार्ग. कृ.	११	चं.	दिसं. ७	चित्रा	केतुवेध,

तिथि-वार			तारीख २०१५-१६ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
मार्ग. शु.	१	श.	दिसं. १२	मूल	भुजंगपात,
मार्ग. शु.	३	चं.	दिसं. १४	श्रव.	मृत्युबाण,
मार्ग. शु.	४	मं.	दिसं. १५	श्रव.	मासान्त,
मार्ग. शु.	४	मं.	दिसं. १५	धनि.	मासान्त,
धनुःस्थ रवि-१६ दिसंबर, २०१५ ई. से १३ जनवरी, २०१६ ई.तक।					
पौष शु.	५	गु.	जन. १४	उ.भा.	संक्रान्ति,
पौष शु.	६	शु.	जन.१५	रेव.	राहुवेध, मृत्युबाण,
पौष शु.	७	श.	जन. १६	रेव.	राहुवेध, मृत्युबाण,
पौष शु.	११	बु.	जन. २०	मृग.	सूर्यवेध,
पौष शु.	१२	गु.	जन. २१	मृग.	सूर्यवेध,
माघ कृ.	१	चं.	जन. २५	मघा	सूर्यवेध,
माघ कृ.	२	मं.	जन. २६	मघा	सूर्यवेध,
माघ कृ.	६	श.	जन. ३०	हस्त	लग्नाभाव,
माघ कृ.	६	श.	जन. ३०	चित्रा	केतुवेध,
माघ कृ.	७	र.	जन. ३१	चित्रा	केतुवेध,
माघ कृ.	७	र.	जन. ३१	स्वा.	भुजंगपात,
माघ कृ.	८	चं.	फर. १	स्वा.	भुजंगपात,
माघ कृ.	१०	बु.	फर. ३	अनु.	मृत्युबाण,
माघ शु.	१	मं.	फर. ६	धनि.	क्षीणचन्द्र,

तिथि-वार			तारीख २०१५-१६ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ शु.	४	शु.	फर. १२	उ.भा.	मासान्त,
माघ शु.	४	शु.	फर. १२	रेव.	मासान्त,
माघ शु.	६	श.	फर. १३	रेव.	संक्रान्ति,
माघ शु.	६	श.	फर. १३	अश्वि.	संक्रान्ति,
माघ शु.	९	मं.	फर. १६	मृग.	वैधृति,
माघ शु.	१४	र.	फर. २१	मघा	अतिगण्ड,
फाल्गु. कृ.	१	मं.	फर. २३	मघा	लग्नाभाव,
फाल्गु. कृ.	३	गु.	फर. २५	हस्त	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ.	४	शु.	फर. २६	हस्त	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ.	४	शु.	फर. २६	चित्रा	केतुवेध,
फाल्गु. कृ.	४	श.	फर. २७	चित्रा	केतुवेध,
फाल्गु. कृ.	४	श.	फर. २७	स्वा.	सूर्यवेध,
फाल्गु. कृ.	५	र.	फर. २८	स्वा.	सूर्यवेध,
फाल्गु. कृ.	६	चं.	फर. २९	अनु.	भौमयुति अपरिहार्य,
फाल्गु. कृ.	७	मं.	मार्च १	अनु.	भौमयुति अपरिहार्य,
फाल्गु. कृ.	११	श.	मार्च ५	श्रव.	परिघार्ध,
फाल्गु. कृ.	१२	र.	मार्च ६	श्रव.	चन्द्रपादवेध,

सूर्यग्रहणवेध- ८ से १२ मार्च, (२०१६ ई.) तक।
होलाष्टक- १६ से २३ मार्च, (२०१६ ई.) तक।
मीनस्थ रवि-१४ मार्च, (२०१६ ई.) से वर्षान्त तक।

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं.२०७२ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं ?)

मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्त्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्ध मुहूर्त्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक–एक या दो–दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्त्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्त्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिए हैं; काफी कम होती है। विश्वास रखिए, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं; उनकी मुहूर्त्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है।

मुण्डन–मुहूर्त्त (सन् २०१५–१६ ई.)

तिथि–वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ११ बु.	अप्रै. १५	शत.	१३/१४ तक,
वैशा. शु. ४ बु.	अप्रै. २२	मृग.	१५/४६ बाद,
वैशा. शु. ५ गु.	अप्रै. २३	मृग.	११/१६ तक,
वैशा. शु. ६ शु.	अप्रै. २४	पुन.	१५/३५ बाद,
ज्ये. कृ. २ बु.	मई ६	ज्ये.	१२/४० बाद,
ज्ये. कृ. १० बु.	मई १३	शत.	६/०४ तक,
प्र.आषा.कृ. ६ गु.	जून ११	रेव.	१०/५८ से १६/५५ तक,
प्र.आषा.कृ. ११ शु.	जून १२	रेव.	६/३६ तक,
प्र.आषा.कृ. ११ शु.	जून १२	अश्वि.	६/३६ बाद,
माघ कृ. ५ शु.	जन. २६	हस्त	१४/२४ तक,
माघ शु. २ बु.	फर. १०	शत.	१३/१५ तक,
माघ शु. १० बु.	फर. १७	मृग.	१४/२१ बाद,
फाल्गु. कृ. ३ गु.	फर. २५	हस्त	१२/२४ से १६/५२ तक,
फाल्गु. कृ. १३ चं.	मार्च ७	धनि.	१३/२१ तक,

मुण्डन में विशेषः– किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी–मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

अक्षरारम्भ–मुहूर्त्त (सन् २०१५–१६ ई.)

तिथि–वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ५ गु.	अप्रै. २३	आर्द्रा	११/१६ बाद,
वैशा. शु. ६ शु.	अप्रै. २४	आर्द्रा	१२/०५ तक,
वैशा. शु. ६ शु.	अप्रै. २४	पुन.	१२/०५ से १५/३५ तक,
ज्ये. शु. ३ गु.	मई २१	आर्द्रा	५/४० तक,
प्र.आषा.कृ. ६ गु.	जून ११	रेव.	१०/५८ से १६/५५ तक,
प्र.आषा.कृ. ११ शु.	जून १२	रेव.	६/३६ तक,
प्र.आषा.कृ. ११ शु.	जून १२	अश्वि.	६/३६ बाद,
माघ कृ. ५ शु.	जन. २६	हस्त	
माघ शु. ११ गु.	फर. १८	आर्द्रा	६/४६ तक,
माघ शु. १२ शु.	फर. १९	पुन.	
फाल्गु. कृ. ३ गु.	फर. २५	हस्त	१२/२४ से १६/५२ तक,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोगः– बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

विद्यारम्भ–मुहूर्त्त (सन् २०१५ ई.)

वैशा. कृ.	११	बु.	अप्रै. १५	शत.	
वैशा. शु.	५	गु.	अप्रै. २३	मृग.	११/१६ तक,
वैशा. शु.	६	शु.	अप्रै. २४	आर्द्रा	१२/०५ तक,

विद्यारम्भ–मुहूर्त्त (सन् २०१५–१६ ई.)

तिथि–वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ६ शु.	अप्रै. २४	पुन.	१२/०५ से १५/३५ तक,
वैशा. शु. ११ बु.	अप्रै. २९	पू.फा.	१२/२४ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	अप्रै. ३०	उ.फा.	
ज्ये. कृ. १० बु.	मई १३	शत.	६/०४ तक,
ज्ये. शु. २ बु.	मई २०	मृग.	
ज्ये. शु. ३ गु.	मई २१	आर्द्रा	५/४० तक,
ज्ये. शु. १० गु.	मई २८	उ.फा.	११/२६ तक,
प्र.आषा.कृ. २ गु.	जून ४	मूल	
प्र.आषा.कृ. ३ शु.	जून ५	पू.षा.	७/०१ तक,
प्र.आषा.कृ. ११ शु.	जून १२	रेव.	६/३६ तक,
प्र.आषा.कृ. ११ शु.	जून १२	अश्वि.	६/३६ बाद,
पौष शु. ६ शु.	जन. १५	उ.भा.	६/१० बाद,
माघ कृ. ४ गु.	जन. २८	उ.फा.	११/५७ बाद,
माघ कृ. ५ शु.	जन. २९	हस्त	
माघ कृ. १२ शु.	फर. ५	मूल	
माघ शु. २ बु.	फर. १०	शत.	१३/१५ तक,
माघ शु. ११ गु.	फर. १८	आर्द्रा	६/४६ तक,
माघ शु. १२ शु.	फर. १९	पुन.	
फाल्गु. कृ. २ बु.	फर. २४	पू.फा.	६/४२ तक,
फाल्गु. कृ. २ बु.	फर. २४	उ.फा.	६/४२ बाद,
फाल्गु. कृ. ३ गु.	फर. २५	उ.फा.	१२/२४ तक,

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
फाल्गु. कृ. ३ गु.	फर. २५	हस्त	१२/२४ से १६/५२ तक,
फाल्गु. कृ. ५ र.	फर. २८	स्वा.	
फाल्गु. कृ. १२ र.	मार्च ६	श्रव.	१२/४७ बाद,

उपनयन-मुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

वैशा. शु. ११ बु.	अप्रै. २६	पू.फा.	१२/२४ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	अप्रै. ३०	उ.फा.	
ज्ये. कृ. ४ शु.	मई ८	मूल	६/११ से १३/०२ तक,
ज्ये. शु. २ बु.	मई २०	मृग.	६/२६ बाद,
ज्ये. शु. १० गु.	मई २८	उ.फा.	११/२६ तक,
प्र.आषा. कृ. २ गु.	जून ४	मूल	
प्र.आषा. कृ. ३ शु.	जून ५	पू.षा.	७/०१ तक,
माघ कृ. ५ शु.	जन. २६	हस्त	
माघ शु. ११ गु.	फर. १८	आर्द्रा	६/४६ तक,
फाल्गु. कृ. २ बु.	फर. २४	पू.फा.	६/४२ तक,
फाल्गु. कृ. २ बु.	फर. २४	उ.फा.	६/४२ बाद,
फाल्गु. कृ. ३ गु.	फर. २५	उ.फा.	१२/२४ तक,
फाल्गु. कृ. ५ र.	फर. २८	स्वा.	११/२१ तक,

द्विरागमन-मुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

वैशा. शु. ५ गु.	अप्रै. २३	मृग.	११/१६ तक,
वैशा. शु. ६ शु.	अप्रै. २४	पुन.	१२/०५ बाद,
वैशा. शु. १२ गु.	अप्रै. ३०	उ.फा.	२७/४५ तक,
कार्त्ति. शु. ७ बु.	नवं. १८	श्रव.	१६/५४ तक,
कार्त्ति. शु. ८ गु.	नवं. १९	धनि.	११/५४ से १६/०८ तक,

द्विरागमन-मुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
मार्ग. शु. ३ चं.	दिसं. १४	उ.षा.	१५/०१ तक,
माघ शु. १० बु.	फर. १७	मृग.	१४/२१ बाद,
माघ शु. १२ शु.	फर. १९	पुन.	

द्विरागमन में विशेष– विवाह के दिन से 16 दिन के भीतर द्विरागमन के इन मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव–विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो, तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

*वैशा. कृ. ११ बु.	अप्रै. १५	शत.	
वैशा. शु. ७ श.	अप्रै. २५	पुष्य	१३/३६ से १६/३८ तक,
वैशा. शु. १२ गु.	अप्रै. ३०	उ.फा.	
*कार्त्ति. कृ. ५ श.	अक्तू. ३१	मृग.	१५/५७ तक,
*कार्त्ति. कृ. ७ चं.	नवं. २	पुष्य	१७/०५ बाद,
मार्ग. कृ. १ गु.	नवं. २६	रोहि.	
मार्ग. कृ. २ शु.	नवं. २७	मृग.	
*मार्ग. कृ. १० श.	दिसं. ५	उ.फा.	१२/२२ तक,
*मार्ग. शु. ३ चं.	दिसं. १४	उ.षा.	
पौष शु. ११ बु.	जन. २०	रोहि.	१०/४३ बाद,
*माघ शु. २ बु.	फर. १०	शत.	१३/१५ तक,
माघ शु. १० बु.	फर. १७	मृग.	१४/२१ बाद,
फाल्गु. कृ. २ बु.	फर. २४	उ.फा.	६/४२ से १२/०० तक,
फाल्गु. कृ. ३ गु.	फर. २५	हस्त	१२/२४ से १६/५२ तक,
*फाल्गु. कृ. ११ श.	मार्च ५	उ.षा.	१२/०० बाद,

* तारांकित मुहूर्त्त भी सभी मुहूर्त्तदोषों से मुक्त हैं। इनमें केवल वृष–वास्तुचक्रशुद्धि नहीं है।

नूतन गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टै.टा.)
*वैशा. शु. ४ बु.	अप्रै. २२	मृग.	१५/४६ से २०/३५ तक,
*वैशा. शु. ५ गु.	अप्रै. २३	मृग.	११/१६ तक,
वैशा. शु. ११ बु.	अप्रै. २९	उ.फा.	२५/४२ बाद,
वैशा. शु. १२ गु.	अप्रै. ३०	उ.फा.	
*ज्ये. कृ. ५ श.	मई ९	उ.षा.	१२/३६ बाद,
*ज्ये. शु. २ बु.	मई २०	मृग.	२०/४५ तक,
ज्ये. शु. ९ बु.	मई २७	उ.फा.	१४/३४ बाद,
ज्ये. शु. १० गु.	मई २८	उ.फा.	११/२६ तक,
ज्ये. शु. १२ श.	मई ३०	चित्रा	८/०२ से १६/३० तक,
*माघ कृ. ४ गु.	जन. २८	उ.फा.	११/५७ से २८/४३ तक,
माघ कृ. १३ श.	फर. ६	उ.षा.	१९/२५ से २४/०३ तक,
माघ शु. १० बु.	फर. १७	मृग.	१४/२१ बाद,
*फाल्गु. कृ. २ बु.	फर. २४	उ.फा.	६/४२ से २६/२६ तक,
*फाल्गु. कृ. ३ गु.	फर. २५	उ.फा.	१२/२४ तक,
फाल्गु. कृ. ११ श.	मार्च ५	उ.षा.	२६/०६ तक,

* तारांकित मुहूर्त्तों में केवल कलशचक्रशुद्धि नहीं है, अन्यथा ये निर्दोष हैं।

पुरातन गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०१५ ई.)

वैशा. कृ.	२	चं.	अप्रै. ६	स्वा.	१७/०६ तक,
वैशा. कृ.	११	बु.	अप्रै. १५	शत.	२४/४३ तक,
वैशा. कृ.	१२	गु.	अप्रै. १६	उ.भा.	२२/१८ बाद,
वैशा. कृ.	१३	शु.	अप्रै. १७	उ.भा.	६/५४ तक,
वैशा. शु.	५	गु.	अप्रै. २३	मृग.	११/१६ तक,
वैशा. शु.	७	श.	अप्रै. २५	पुष्य	१३/३६ से १६/३८ तक,
वैशा. शु.	१२	गु.	अप्रै. ३०	उ.फा.	२७/४५ तक,
ज्ये. कृ.	२	बु.	मई ६	अनु.	१०/१४ से १२/४० तक,

पुरातनगृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०१५ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. ५ श.	मई ९	उ.षा.	१२/३६ बाद,
ज्ये. कृ. ८ चं.	मई ११	धनि.	१०/५५ बाद,
ज्ये. कृ. १० बु.	मई १३	शत.	६/०४ तक,
ज्ये. शु. २ बु.	मई २०	मृग.	२०/४५ तक,
ज्ये. शु. ५ श.	मई २३	पुष्य	२४/०२ तक,
ज्ये. शु. ९ बु.	मई २७	उ.फा.	१४/३५ बाद,
ज्ये. शु. १० गु.	मई २८	उ.फा.	११/२६ तक,
ज्ये. शु. १२ श.	मई ३०	चित्रा	८/१२ से १६/३० तक,
ज्ये. शु. १२ श.	मई ३०	स्वा.	१६/३० बाद,
श्राव. कृ. १ श.	अग. १	धनि.	७/४१ बाद,
श्राव. कृ. ६ बु.	अग. ५	रेव.	२०/५७ तक,
श्राव. कृ. ९ श.	अग. ८	रोहि.	१८/२५ से २६/१८ तक,
श्राव. कृ. ११ चं.	अग. १०	मृग.	१६/०१ तक,
श्राव. शु. ५ बु.	अग. १९	चित्रा	१३/२२ बाद,
श्राव. शु. ५ गु.	अग. २०	चित्रा	१६/२४ तक,
श्राव. शु. ५ गु.	अग. २०	स्वा.	१६/२४ बाद,
श्राव. शु. ६ शु.	अग. २१	स्वा.	१६/०४ तक,
श्राव. शु. ११ बु.	अग. २६	उ.षा.	२१/५६ बाद,
श्राव. शु. १२ गु.	अग. २७	उ.षा.	२०/१६ तक,
श्राव. शु. १५ श.	अग. २९	धनि.	१३/५० से १५/३२ तक,
कार्ति. कृ. ५ श.	अक्तू. ३१	मृग.	१५/५७ तक,
कार्ति. कृ. ७ चं.	नवं. २	पुष्य	१७/०५ बाद,
कार्ति. कृ. १३ चं.	नवं. ९	चित्रा	८/०६ से १६/०६ तक,
कार्ति. शु. १ गु.	नवं. १२	अनु.	१५/४२ बाद,
कार्ति. शु. २ शु.	नवं. १३	अनु.	१७/२६ तक,
कार्ति. शु. ७ बु.	नवं. १८	धनि.	१६/५४ से २४/३६ तक,
कार्ति. शु. ८ गु.	नवं. १९	धनि.	११/५४ से १६/०८ तक,

पुरातन गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
कार्ति. शु. ९ गु.	नवं. १९	शत.	१६/०८ से २३/०६ तक,
कार्ति. शु. १० श.	नवं. २१	उ.भा.	१६/२३ बाद,
कार्ति. शु. १२ चं.	नवं. २३	रेव.	७/२१ तक,
कार्ति. शु. १४ बु.	नवं. २५	रोहि.	२६/२७ बाद,
मार्ग. कृ. १ गु.	नवं. २६	रोहि.	२७/३५ तक,
मार्ग. कृ. २ शु.	नवं. २७	मृग.	२६/१३ तक,
मार्ग. कृ. ५ चं.	नवं. ३०	पुष्य	२६/२२ तक,
मार्ग. कृ. १० श.	दिसं. ५	उ.फा.	१२/२२ तक,
मार्ग. कृ. ११ चं.	दिसं. ७	चित्रा	१८/२५ तक,
मार्ग. कृ. ११ चं.	दिसं. ७	स्वा.	१८/२५ बाद,
मार्ग. शु. ३ चं.	दिसं. १४	उ.षा.	१५/०१ तक,
मार्ग. शु. १३ बु.	दिसं. २३	रोहि.	१४/५२ से २०/३३ तक,
मार्ग. शु. १५ शु.	दिसं. २५	मृग.	१२/१४ तक,
माघ कृ. ४ गु.	जन. २८	उ.फा.	११/५७ बाद,
माघ कृ. ६ श.	जन. ३०	चित्रा	७/४५ से १७/०५ तक,
माघ कृ. ८ चं.	फर. १	स्वा.	१३/४६ तक,
माघ कृ. १० बु.	फर. ३	अनु.	१२/३१ तक,
माघ शु. २ बु.	फर. १०	शत.	१३/१५ तक,
माघ शु. १० बु.	फर. १७	मृग.	८/५० से २६/१४ तक,
माघ शु. १३ श.	फर. २०	पुष्य	२७/५६ तक,
फाल्गु. कृ. २ बु.	फर. २४	उ.फा.	६/४२ से २६/२६ तक,
फाल्गु. कृ. ३ गु.	फर. २५	उ.फा.	१२/२४ तक,
फाल्गु. कृ. ४ श.	फर. २६	चित्रा	८/४२ से १८/५७ तक,
फाल्गु. कृ. ११ श.	मार्च ५	उ.षा.	२६/०६ तक,
फाल्गु. कृ. १३ चं.	मार्च ७	धनि.	१३/२१ तक,
फाल्गु. शु. २ गु.	मार्च १०	उ.भा.	१८/२१ तक,
फाल्गु. शु. २ गु.	मार्च १०	रेव.	१८/२१ बाद,

पुरातन गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
फाल्गु. शु. ३ शु.	मार्च ११	रेव.	१५/४२ तक,
फाल्गु. शु. १० शु.	मार्च १८	पुष्य	८/३३ से २१/५६ तक,
फाल्गु. शु. १५ बु.	मार्च २३	उ.फा.	१६/०७ तक,

सर्वदेव-प्रतिष्ठामुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

तिथि		वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. कृ.	११	बु.	अप्रै. १५	शत.	
वैशा. शु.	५	गु.	अप्रै. २३	मृग.	११/१६ तक,
वैशा. शु.	७	श.	अप्रै. २५	पुन.	
वैशा. शु.	८	र.	अप्रै. २६	पुष्य	६/१६ तक,
वैशा. शु.	१२	गु.	अप्रै. ३०	उ.फा.	
ज्ये. कृ.	६	र.	मई १०	उ.षा.	६/४५ तक,
ज्ये. शु.	२	बु.	मई २०	मृग.	
ज्ये. शु.	४	शु.	मई २२	पुन.	५/३६ बाद,
ज्ये. शु.	५	श.	मई २३	पुष्य	
ज्ये. शु.	१०	गु.	मई २८	उ.फा.	११/२६ तक,
ज्ये. शु.	१२	श.	मई ३०	चित्रा	८/०२ बाद,
ज्ये. शु.	१३	र.	मई ३१	स्वा.	८/०६ तक,
प्र.आषा.कृ.	५	र.	जून ७	श्रव.	
प्र.आषा.कृ.	११	शु.	जून १२	रेव.	६/३६ तक,
प्र.आषा.कृ.	११	शु.	जून १२	अश्वि.	६/३६ बाद,
प्र.आषा.कृ.	१२	श.	जून १३	अश्वि.	८/२५ तक,
पौष शु.	६	शु.	जन. १५	उ.भा.	६/०१ बाद,
पौष शु.	८	र.	जन. १७	अश्वि.	
पौष शु.	११	बु.	जन. २०	रोहि.	१०/४३ बाद,
माघ कृ.	५	शु.	जन. २६	हस्त	
माघ कृ.	८	चं.	फर. १	स्वा.	
माघ शु.	२	बु.	फर. १०	शत.	

सर्वदेवप्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
माघ शु. १२ शु.	फर. १९	पुन.	
फाल्गु. कृ. २ बु.	फर. २४	उ.फा.	६/४२ बाद,
फाल्गु. कृ. ३ गु.	फर. २५	उ.फा.	१२/२४ तक,
फाल्गु. कृ. ११ श.	मार्च ५	उ.षा.	

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त " सात्त्विक देवप्रतिष्ठा " वाले मुहूर्त्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्त्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्तकाल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि– सात्त्विक देवप्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी–देवताओं के लिए समानरूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी– देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप से लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है। ध्यान दें– गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदनुसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्त्तों में केवल इन तिथियों का ही निर्देश किया गया है। शिवप्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अतः यहां आर्द्रा नक्षत्र में भी शिवप्रतिष्ठा–मुहूर्त्त लगाए गए हैं । इन मुहूर्त्तों में भी गुरु–शुक्रास्तकाल तथा सिंहांशकस्थ सिंहगत गुरु, भद्रा आदि को वर्जित किया जाता है ।

तामसदेव प्रतिष्ठामुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
द्वि.(शुद्ध)आषा. शु. १ शु.	जुला. १७	पुष्य	
द्वि.(शुद्ध)आषा. शु. ७ गु.	जुला. २३	चित्रा	६/१६ बाद,
द्वि.(शुद्ध)आषा. शु. ८ शु.	जुला. २४	स्वा.	६/३० बाद,
मार्ग. कृ. १ गु.	नवं. २६	रोहि.	
मार्ग. कृ. २ शु.	नवं. २७	मृग.	
मार्ग. कृ. ५ चं.	नवं. ३०	पुष्य	
मार्ग. कृ. १० श.	दिसं. ५	उ.फा.	१२/२२ तक,
मार्ग. कृ. १० र.	दिसं. ६	हस्त	७/४८ बाद,
मार्ग. शु. ३ चं.	दिसं. १४	उ.षा.	

श्रीगणेश-प्रतिष्ठामुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
ज्ये. कृ. ३ गु.	मई ७		६/५२ बाद,
प्र. आषा. कृ. ४ श.	जून ६		
मार्ग. कृ. ४ र.	नवं. २९		
माघ कृ. ३ बु.	जन. २७		६/५५ बाद,
फाल्गु. कृ. ४ शु.	फर. २६		

श्रीदुर्गा-प्रतिष्ठामुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ९ चं.	अप्रै. २७		
ज्ये. कृ. ४ शु.	मई ८	मूल	
ज्ये. शु. ९ बु.	मई २७		
प्र. आषा. कृ. २ गु.	जून ४	मूल	
द्वि.(शुद्ध)आषा. शु. ९ श.	जुला. २५		
मार्ग. शु. १ श.	दिसं. १२	मूल	
पौष. शु. ९ चं.	जन. १८		
माघ कृ. १२ शु.	फर. ५	मूल	
माघ शु. ९ मं.	फर. १६		६/४८ तक,
फाल्गु. कृ. ९ गु.	मार्च ३	मूल	

श्रीशिव-प्रतिष्ठामुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टै.टा.)
वैशा. शु. ६ शु.	अप्रै. २४	आर्द्रा	१२/०५ तक,
ज्ये. कृ. १४ र.	मई १७		१२/०० तक,
ज्ये. शु. ३ गु.	मई २१	आर्द्रा	
मार्ग. कृ. ३ श.	नवं. २८	आर्द्रा	१०/४५ तक,
मार्ग. कृ. १४ गु.	दिसं. १०		
माघ कृ. १४ र.	फर. ७		११/१० बाद,
माघ शु. ११ गु.	फर. १८	आर्द्रा	६/४६ तक,

श्रीगौरी-प्रतिष्ठामुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल
वैशा. शु. ३ मं.	अप्रै. २१		
ज्ये. शु. ३ गु.	मई २१		
द्वि.(शुद्ध)आषा.शु. २ श.	जुला. १८		८/५८ बाद,
मार्ग. शु. ३ चं.	दिसं. १४		
माघ शु. ३ गु.	फर. ११		१२/०३ तक,

दशावतार–प्रतिष्ठा

श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्ति–प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी–अपनी अवतारतिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्णकाल में बिना पंचांगशुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु–शुक्रास्तकाल में पड़े, तब तो उस दिन मूर्तिप्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०१५ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
वैशा. शु. ४ बु.	अप्रै. २२	मृग.	१५/४६ बाद,
वैशा. शु. ५ गु.	अप्रै. २३	मृग.	११/१६ तक,
वैशा. शु. ७ श.	अप्रै.२५	पुष्य	१३/३६ से १६/३८ तक,
वैशा. शु. ८ र.	अप्रै. २६	पुष्य	६/१६ तक,
वैशा. शु. १२ बु.	अप्रै. ३०	उ.फा.	
ज्ये. कृ. ५ श.	मई ९	उ.षा.	१२/३६ बाद,
ज्ये. कृ. ६ र.	मई १०	उ.षा.	६/४५ तक,
ज्ये. शु. २ बु.	मई २०	मृग.	२०/४५ तक,
ज्ये. शु. ५ श.	मई २३	पुष्य	
ज्ये. शु. ९ बु.	मई २७	उ.फा.	१४/३५ बाद,
ज्ये. शु. १० गु.	मई २८	उ.फा.	११/०२ तक,
ज्ये. शु. १२ श.	मई ३०	चित्रा	८/०२ से १६/३० तक,
प्र. आषा. कृ. ४ श.	जून ६	उ.षा.	१६/२६ से १७/३१ तक,
प्र. आषा. कृ. ११ शु.	जून १२	रेव.	६/३६ तक,
प्र. आषा. कृ. ११ शु.	जून १२	अश्वि.	६/३६ बाद,
प्र. आषा. कृ. १२ श.	जून १३	अश्वि.	८/२५ तक,
द्वि.(शुद्ध)आषा. शु. १ शु.	जुला. १७	पुष्य	७/४० से १६/२४ तक,
द्वि.(शुद्ध)आषा. शु. ७ गु.	जुला. २३	हस्त/चित्रा	२०/३० तक,

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०१५-१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
द्वि.(शुद्ध)आषा. शु. १५ शु.	जुला. ३१	उ.षा.	६/५३ तक,
आश्वि. शु. ८ बु.	अक्तू. २१	उ.षा.	१३/३० तक,
कार्त्ति. कृ. ५ श.	अक्तू. ३१	मृग.	१५/५७ तक,
मार्ग. कृ. १ गु.	नवं. २६	रोहि.	
मार्ग. कृ. २ शु.	नवं. २७	मृग.	
मार्ग. कृ. ५ चं.	नवं. ३०	पुष्य	१३/५७ तक, (१३/५७ बाद बुधपादवेध),
मार्ग. कृ. १० श.	दिसं. ५	उ.फा.	१२/२२ तक,
मार्ग. कृ. १० श.	दिसं. ५	हस्त	१२/२२ बाद,
मार्ग. कृ. १० र.	दिसं. ६	हस्त	७/४८ से १५/३० तक,
मार्ग. शु. ३ चं.	दिसं. १४	उ.षा.	१५/०१ तक,
पौष शु. ६ शु.	जन. १५	उ.भा.	६/०१ बाद,
पौष शु. ७ श.	जन. १६	रेव.	
पौष शु. ८ र.	जन. १७	अश्वि.	
पौष शु. ११ बु.	जन. २०	रोहि.	१०/४३ बाद,
माघ कृ. ४ गु.	जन. २८	उ.फा.	११/५७ बाद,
माघ कृ. ५ शु.	जन. २९	हस्त	
माघ शु. १० बु.	फर. १७	मृग.	१४/२१ बाद,

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०१६ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टै.टा.)
फाल्गु. कृ. २ बु.	फर. २४	उ.फा.	६/४२ बाद,
फाल्गु. कृ. ३ गु.	फर. २५	उ.फा.	१२/२४ तक,
फाल्गु. कृ. ३ गु.	फर. २५	हस्त	१२/२४ से १६/५२ तक,
फाल्गु. कृ. ११ श.	मार्च ५	उ.षा.	

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदयकाल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है, दिनमान का 30वां भाग मुहूर्त्तार्ध कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर 'अभिजित् मुहूर्त्त' का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गई है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्त्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

सर्वार्थसिद्धि आदि योग (सं. २०७२ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम पाठकों की सुविधार्थ सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, सिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर एवं रवि – इन तिथि–भ–वारज एवं सूर्य और चन्द्र के नक्षत्र–संयोगोत्पन्न सुयोगों के शास्त्रोक्त काल का सूक्ष्म निर्णय करते हैं।

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग– जैसा कि इनके नाम से ही स्पष्ट है, इन योगों के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा, गृहप्रवेश, नूतन कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश यदि व्यतीपात, वैधृति, गुरु–शुक्रास्त, अधिकमास एवं वेध आदि का विचार संभव न हो तो सर्वार्थसिद्धि योगों का आश्रय लेना चाहिए। यहां दिए अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं। ध्यान रहे– गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हें गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय नए घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें निःसंकोच प्रयोग में लाइए।

रवियोग– रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भान्ति ही सभी कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की अद्‌भुत शक्ति रखता है– " **कुयोगविध्वंस–कराः शुभेषु**"।

सिद्धियोग– सिद्धियोग भी **सर्वार्थसिद्धि** और **रवियोगों** की भान्ति ही प्रत्येक कार्य के लिए महत्त्वशाली माने गए हैं। सिद्धियोग में **यमघण्ट, विष** आदि कुयोगों का प्रभाव समाप्त हो जाता है– ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

त्रिपुष्करयोग– मुहूर्तविदों का कथन है कि–इस योग में सम्पन्न किया गया या घटित कोई शुभकार्य अथवा कोई शुभाशुभ घटना कालान्तर में त्रिगुणित हो जाती है। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं (आभूषण, भूमि आदि) का क्रय (खरीदना) त्रिगुणकारी माना जाता है। **द्विपुष्करयोग**–ये योग भी त्रिपुष्करयोगों की ही भान्ति शुभाशुभ सभी घटनाओं को द्विगुणित करते हैं। त्रिपुष्कर एवं द्विपुष्कर–इन सुयोगों का सत्यापक शास्त्रवचन इस तरह है– " त्रिपुष्करस्त्रिगुणदो द्विगुणो यमलांघ्रिभे।"

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१५ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२०१५ ई.	घं. मि.	२०१५ ई.	घं. मि.	२०१५ ई.	घं. मि.	२०१५ ई.	घं. मि.	२०१५ ई.	घं. मि.	२०१५ ई.	घं. मि.	२०१५ ई.	घं. मि.	२०१५ ई.	घं. मि.
मार्च २२	६ २९	मार्च २३	४ २३	(अप्रै. १७	१९ ४९	अप्रै. १८	सू.उ.)शु.	मई १८	२१ ५५	मई १९	सू. उ.	जून १८	६ ०१	जून १९	६ ५७
मार्च २४	सू. उ.	मार्च २५	२ ०१	अप्रै. १९	सू. उ.	अप्रै. १९	१५ ०९	मई २०	सू. उ.	मई २०	२० ४५	जून २४	१९ २७	जून २५	सू. उ.
मार्च २५	सू. उ.	मार्च २६	सू. उ.	अप्रै. २१	सू. उ.	अप्रै. २१	११ ५६	मई २१	२१ ०८	मई २२	२२ १४	जून २७	सू. उ.	जून २८	२ ४९
मार्च २८	४ ०४	मार्च २८	सू. उ.	अप्रै. २२	सू. उ.	अप्रै. २३	सू. उ.	मई ३०	१६ ३०	मई ३१	सू. उ.	जून २९	सू. उ.	जून ३०	४ ३१
मार्च २९	सू. उ.	मार्च ३०	८ ४४	अप्रै. २४	१२ ०५	अप्रै. २५	सू. उ.	जून १	१९ २०	जून २	सू. उ.	जुला. ४	० ४०	जुला. ४	२२ ५५
मार्च ३१	सू. उ.	मार्च ३१	११ ४०	अप्रै. २६	सू. उ.	अप्रै. २६	१५ ५३	जून ६	१७ ३१	जून ७	सू. उ.	जुला. ७	१७ ४५	जुला. ८	सू. उ.
(अप्रै. ८	सू. उ.	अप्रै. ९	सू. उ.)बु.	(मई ६	सू. उ.	मई ६	१२ ४०)बु.	जून ११	१० ५८	जून १२	सू. उ.	जुला. ९	सू. उ.	जुला. १०	१४ ०९
अप्रै. ९	सू. उ.	अप्रै. ९	६ ५१	मई १०	सू. उ.	मई १०	११ ५६	(जून १२	सू. उ.	जून १२	९ ३९)शु.	जुला. १३	सू. उ.	जुला. १३	१२ ५२
अप्रै. १२	७ १०	अप्रै. १३	सू. उ.	मई ११	सू. उ.	मई ११	१० ५५	जून १५	६ २६	जून १६	सू. उ.	(जुला. १३	१२ ५२	जुला. १४	सू. उ.)चं.
अप्रै. १३	६ १३	अप्रै. १४	४ ४६	(मई १५	सू. उ.	मई १६	२ ४१)शु.	जून १७	सू. उ.	जून १७	५ ४१	जुला. १६	सू. उ.	जुला. १६	१४ ४९

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१५-१६ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१५ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१५ ई.	घं. मि.
(जुला. १६	१४ ४६	जुला. १७	सू. उ.)गु.
जुला. २२	सू. उ.	जुला. २३	सू. उ.
जुला. २५	सू. उ.	जुला. २५	११ २४
जुला. २७	सू. उ.	जुला. २७	१३ ५०
जुला. ३१	६ ५३	अग. १	७ ४१
अग. ४	सू. उ.	अग. ४	२२ ३८
अग. ६	सू. उ.	अग. ६	१६ ४०
(अग. ८	१८ २५	अग. ६	सू. उ.)श.
(अग. १०	सू. उ.	अग. १०	१६ ०१)चं.
(अग. १३	सू. उ.	अग. १३	२३ १३)गु.
अग. १६	सू. उ.	अग. १६	१३ २२
अग. २८	सू. उ.	अग. २८	१८ ०७
सितं. १	सू. उ.	सितं. १	७ १३
(सितं. ५	सू. उ.	सितं. ६	० ०६)श.
सितं. १३	१३ २१	सितं. १४	सू. उ.
सितं. २७	२० ५४	सितं. २८	सू. उ.
(सितं. २६	१५ ००	सितं. ३०	सू. उ.)मं.
(अक्तू. ३	सू. उ.	अक्तू. ३	७ २७)श.
अक्तू. ६	१६ १८	अक्तू.१०	सू. उ.
अक्तू.११	सू. उ.	अक्तू.११	२२ ३४
(अक्तू.११	२२ ३४	अक्तू.१२	सू. उ.)र.
अक्तू.१८	१३ १२	अक्तू.१६	सू. उ.
अक्तू.२५	७ ४२	अक्तू.२६	५ ०१
(अक्तू.२७	सू. उ.	अक्तू.२७	२३ २५)मं.
अक्तू.२८	२० ५०	अक्तू.२६	सू. उ.
नवं. २	१६ २४	नवं. ३	सू. उ.
नवं. ३	१७ ५२	नवं. ४	सू. उ.
नवं. ६	सू. उ.	नवं. ७	१ ५१
(नवं. ८	सू. उ.	नवं. ६	सू. उ.)र.
नवं. १२	१५ ४२	नवं. १३	सू. उ.

प्रारम्भ २०१५ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१५ ई.	घं. मि.
नवं. १५	सू. उ.	नवं. १५	१६ ३८
नवं. २२	सू. उ.	नवं. २२	१४ २८
(नवं. २४	सू. उ.	नवं. २४	६ ५८)मं.
नवं. २५	७ ३८	नवं. २६	५ २७
नवं. ३०	१ ३१	दिसं. १	२ २२
दिसं. १	सू. उ.	दिसं. २	४ ०१
दिसं. ४	सू. उ.	दिसं. ४	६ १४
(दिसं. ६	सू. उ.	दिसं. ६	१५ ३०)र.
(दिसं. ६	२२ ५६	दिसं. १०	सू. उ.)बु.
दिसं. १०	सू. उ.	दिसं. ११	० २४
दिसं. १४	१ ५६	दिसं. १४	सू. उ.
दिसं. १५	१ ४३	दिसं. १५	सू. उ.
दिसं. २०	१६ ४५	दिसं. २१	सू. उ.
दिसं. २२	१६ ३०	दिसं. २४	सू. उ.
दिसं. २७	११ १६	दिसं. २८	११ ४६
दिसं. २६	सू. उ.	दिसं. २६	१३ ०२
(सन् २०१६ ई.)			
(जन. ६	७ २६	जन. ७	सू. उ.)बु.
जन. ७	सू. उ.	जन. ७	८ ५६
जन. १०	६ ४२	जन. ११	सू. उ.
जन. ११	८ ५७	जन. १२	सू. उ.
(जन. १६	२ ३२	जन. १६	सू. उ.)शु.
जन. १७	सू. उ.	जन. १७	२३ ५७
जन. १६	सू. उ.	जन. १६	२१ ४५
जन. २०	सू. उ.	जन. २१	सू. उ.
जन. २२	१६ ५६	जन. २३	सू. उ.
जन. २४	सू. उ.	जन. २४	२० ४४
(फर. ३	सू. उ.	फर. ३	१८ ०८)बु.
फर. ७	सू. उ.	फर. ७	१८ २६
फर. ८	सू. उ.	फर. ८	१७ ०३

प्रारम्भ २०१६ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१६ ई.	घं. मि.
(फर. १२	६ ०७	फर. १३	सू. उ.)शु.
फर. १६	३ ०६	फर. १६	सू. उ.
फर. १७	सू. उ.	फर. १८	२ १४
फर. १६	२ २३	फर. २०	२ ५८
फर. २७	१८ २७	फर. २८	सू. उ.
मार्च १	० १७	मार्च १	सू. उ.
मार्च ६	४ ५८	मार्च ६	सू. उ.
मार्च १०	१८ २१	मार्च ११	सू. उ.
(मार्च ११	सू. उ.	मार्च ११	१५ ४२)शु.
मार्च १४	६ २७	मार्च १५	सू. उ.
मार्च १६	सू. उ.	मार्च १६	७ ४६
मार्च १७	७ ५१	मार्च १८	८ ३३
मार्च २३	१६ ०७	मार्च २४	सू. उ.
मार्च २६	सू. उ.	मार्च २७	४ १२
मार्च २८	७ ०५	मार्च २६	सू. उ.
अप्रै. २	१४ २६	अप्रै. ३	सू. उ.
अप्रै. ७	सू. उ.	अप्रै. ८	२ २१

रवि योग (सन् २०१५ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
मार्च २३	४ २३	मार्च २४	२ ५१
मार्च २५	२ ०१	मार्च २६	१ ५६
मार्च २८	४ ०४	मार्च ३०	८ ४४
अप्रै. २	१७ ५१	अप्रै. ३	२० ५०
अप्रै. १०	७ २६	अप्रै. ११	७ ३६
अप्रै. २१	११ ५६	अप्रै. २२	११ १४
अप्रै. २३	११ १६	अप्रै. २४	१२ ०५
अप्रै. २६	१५ ५३	अप्रै. ३०	० ४६
मई २	६ २७	मई ३	८ ४३
मई ६	१२ ३६	मई १०	११ ५६
मई २०	२० ४५	मई २१	२१ ०८

रवि योग (सन् २०१५ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१५ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१५ ई.	घं. मि.
मई २२	२२ १४	मई २४	० ०२
मई २७	८ २४	मई २६	१४ १२
मई ३१	१८ १४	जून १	१६ २०
जून ८	१७ ५०	जून ६	१३ ४१
जून १६	६ ५७	जून २०	८ ३१
जून २१	१० ४०	जून २२	१३ २१
जून २२	१६ ४५	जून २३	१६ २१
जून २५	२२ २३	जून २८	२ ४६
जून ३०	४ ३१	जुला. १	४ १८
जुला. ७	१७ ४५	जुला. ८	१६ १६
जुला. १८	१८ ३१	जुला. १६	२१ ०६
जुला. २०	१५ ५१	जुला. २१	० ०२
जुला. २२	३ १०	जुला. २३	६ १६
जुला. २५	११ २४	जुला. २७	१३ ५०
जुला. २६	१३ ०८	जुला. ३०	११ ४५
अग. ५	२० ५७	अग. ६	१६ ४०
अग. १७	७ ०२	अग. १७	१२ २५
अग. १८	१० ११	अग. १६	१३ २२
अग. २०	१६ २४	अग. २१	१६ ०४
अग. २३	२२ ३५	अग. २५	२२ ५६
अग. २७	२० १६	अग. २८	१८ ०७
सितं. ४	१ १६	सितं. ५	० २५
सितं. १६	२२ ४३	सितं. १८	१ ३१
सितं. १६	३ ५७	सितं. २०	५ ५०
सितं. २२	७ ३४	सितं. २४	६ १८
सितं. २६	२ २५	सितं. २६	२३ ४७
सितं. २७	१७ ४४	सितं. २७	२० ५४
अक्तू. ३	७ २७	अक्तू. ४	७ १२
अक्तू. १६	६ ४३	अक्तू. १७	११ ४२
अक्तू. १८	१३ १२	अक्तू. १६	१४ १०
अक्तू. २१	१४ १६	अक्तू. २३	१२ ०२

रवि योग (सन् २०१५-१६ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१५-१६ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१५-१६ ई.	घं. मि.
अक्तू. २६	५ ०१	अक्तू. २७	२ १३
नवं. १	१५ ४५	नवं. २	१६ २४
नवं. १४	१८ ४४	नवं. १५	१६ ३८
नवं. १६	२० ०८	नवं. १७	२० १४
नवं. १९	१९ ०८	नवं. २०	७ २३
नवं. २०	१७ ५८	नवं. २२	१४ २८
नवं. २४	६ ५८	नवं. २५	७ ३८
दिसं. १	२ २२	दिसं. २	४ ०१
दिसं. १४	१ ५६	दिसं. १५	१ ४३
दिसं. १६	१ १५	दिसं. १६	१४ ४२
दिसं. १७	० ३२	दिसं. १७	२३ ३८
दिसं. १९	२१ १३	दिसं. २१	१८ ०९
दिसं. २३	१४ ५२	दिसं. २४	१३ २४
दिसं. ३१	१७ ३०	जन. १	२० २७
जन. १३	६ ३९	जन. १४	५ १८
जन. १५	३ ५५	जन. १६	२ ३२
जन. १७	२३ ५७	जन. १९	२१ ४५
जन. २१	२० १७	जन. २२	१९ ५९
जन. ३०	७ ४५	जन. ३१	१० ५१
फर. ११	११ ०९	फर. १२	९ ०७
फर. १३	७ १२	फर. १४	५ ३२
फर. १६	३ ०९	फर. १८	२ १४
फर. २०	२ ५८	फर. २०	४ ५३
फर. २१	३ ५९	फर. २२	५ २७
फर. २८	२१ ३०	मार्च १	० १७
मार्च ११	१५ ४२	मार्च १२	१३ १४
मार्च १३	११ ०७	मार्च १४	९ २७
मार्च १६	७ ४६	मार्च १९	९ ४९
मार्च २१	१३ ४६	मार्च २२	१६ १८
मार्च २९	९ ४०	मार्च ३०	११ ४९
मार्च ३१	६ २२	मार्च ३१	१२ २३

सिद्धि योग (सन् २०१५ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१५ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१५ ई.	घं. मि.
अप्रै. १३	६ १३	अप्रै. १४	४ ४६
मई ११	सू. उ.	मई ११	१० ५५
मई २१	२१ ०८	मई २२	सू. उ.
मई ३०	१६ ३०	मई ३१	सू. उ.
जून १८	६ ०१	जून १९	सू. उ.
जून २७	सू. उ.	जून २८	२ ४९
जुला. ७	१७ ४५	जुला. ८	सू. उ.
जुला. १६	सू. उ.	जुला. १६	१४ ४९
जुला. २५	सू. उ.	जुला. २५	११ २४
अग. ४	सू. उ.	अग. ४	२२ ३८
सितं. १	सू. उ.	सितं. १	७ १३
अक्तू. ९	१६ १८	अक्तू. १०	सू. उ.
अक्तू. १८	१३ १२	अक्तू. १९	सू. उ.
अक्तू. २८	२० ५०	अक्तू. २९	सू. उ.
नवं. ६	सू. उ.	नवं. ७	१ ५१
नवं. १५	सू. उ.	नवं. १५	१९ ३८
नवं. २५	७ ३८	नवं. २६	५ २७
दिसं. ४	सू. उ.	दिसं. ४	९ १४
दिसं. १५	१ ४३	दिसं. १५	सू. उ.
दिसं. २३	सू. उ.	दिसं. २३	१४ ५२

(सन् २०१६ ई.)

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
जन. ११	८ ५७	जन. १२	सू. उ.
फर. ८	सू. उ.	फर. ८	१७ ०३
फर. १९	२ २३	फर. १९	सू. उ.
फर. २७	१८ २७	फर. २८	सू. उ.
मार्च १७	७ ५१	मार्च १८	सू. उं.
मार्च २६	सू. उ.	मार्च २७	४ १२

द्विपुष्कर योग (२०१५-१६ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१५-१६ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१५-१६ ई.	घं. मि.
अप्रै. ५	१९ ३४	अप्रै. ६	२ ०१
मई १९	२१ ०३	मई २०	सू. उ.
मई ३०	सू. उ.	मई ३०	१६ ३०
अग. १	१३ ०८	अग. २	५ १८
अक्तू. ३	१५ १९	अक्तू. ४	७ १२
जन. ३०	१७ ०५	जन. ३१	१० ५१
मार्च १५	८ १९	मार्च १५	११ १२
अप्रै. ४	५ ३७	अप्रै. ४	सू. उ.

त्रिपुष्कर योग (२०१५-१६ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
अप्रै. २५	सू. उ.	अप्रै. २५	१३ ३९
मई ५	९ ५४	मई ५	११ ५०
मई १०	६ ४५	मई १०	११ ५६
जून २३	१६ २१	जून २४	३ १६
जून २८	१० ४५	जून २९	४ ०२
जुला. ०७	१७ ०९	जुला. ०७	१७ ४५
जुला. १२	८ २३	जुला. १२	१३ ००
अग. २२	सू. उ.	अग. २२	१२ २४
अग. ३०	२० २७	अग. ३१	सू. उ.
अक्तू. २४	१० ०५	अक्तू. २५	४ ०८
नवं. ०२	४ ५०	नवं. ०२	सू. उ.
नवं. ०७	१३ ४७	नवं. ८	५ ०३
दिसं. २२	१६ ३०	दिसं. २२	२२ ५०
दिसं. २६	१५ २४	दिसं. २७	११ १९
जन. ०६	६ ५४	जन. ०६	सू. उ.
जन. ११	५ ४०	जन. ११	सू. उ.
मार्च ०५	१७ ११	मार्च ०६	४ ५८

अमृतसिद्धि योग (सन् २०१५ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१५ ई.	घं. मि.	समाप्त २०१५ ई.	घं. मि.
(अप्रै. ८	सू. उ.	अप्रै. ९	सू. उ.)बु.
(अप्रै. १७	१९ ४९	अप्रै. १८	सू. उ.)शु.
(मई ६	सू. उ.	मई ६	१२ ४०)बु.
(मई १५	सू. उ.	मई १६	२ ४१)शु.
(जून १२	सू. उ.	जून १२	६ ३९)शु.
(जुला. १३	१२ ५२	जुला. १४	सू. उ.)चं.
(जुला. १६	१४ ४९	जुला. १७	सू. उ.)गु.
(अग. ८	१८ २५	अग. ९	सू. उ.)श.
(अग. १०	सू. उ.	अग. १०	१९ ०१)चं.
(अग. १३	सू. उ.	अग. १३	२३ १३)गु.
(सितं. ५	सू. उ.	सितं. ६	० ०९)श.
(सितं. २९	१५ ००	सितं. ३०	सू. उ.)मं.
(अक्तू. ३	सू. उ.	अक्तू. ३	७ २७)श.
(अक्तू. ११	२२ ३४	अक्तू. १२	सू. उ.)र.
(अक्तू. २७	सू. उ.	अक्तू. २७	२३ २५)मं.
(नवं. ८	सू. उ.	नवं. ९	सू. उ.)र.
(नवं. २४	सू. उ.	नवं. २४	९ ५८)मं.
(दिसं. ६	सू. उ.	दिसं. ६	१५ ३०)र.
(दिसं. ९	२२ ५६	दिसं. १०	सू. उ.)बु.

(सन् २०१६ ई.)

प्रारम्भ	घं. मि.	समाप्त	घं. मि.
(जन. ६	७ २६	जन. ७	सू. उ.)बु.
(जन. १६	२ ३२	जन. १६	सू. उ.)शु.
(फर. ३	सू. उ.	फर. ३	१८ ०८)बु.
(फर. १२	९ ०७	फर. १३	सू. उ.)शु.
(मार्च ११	सू. उ.	मार्च ११	१५ ४२)शु.
- - -	- - -	- - -	- - -

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2072 वि.) का 'गुरु–संवत्सर विशेषांक'

(लेखक एवम् सम्पादक – प्रियव्रत शर्मा)

इस विशेषांक के विषय :–

क्षमा चाहते हैं–

इस वर्ष 'राशिफल विशेषांक' अस्वास्थ्य आदि कई कारणों से नहीं दे पाए। आगामी किसी वर्ष इसे देने का हमारा पूर्ण प्रयास होगा।

– प्रियव्रत शर्मा

वि. संवत् 2072, शक संवत् 1937, ई. सन् 2016 में होलिकादहन–दिन–कालनिर्णय

प्रियव्रत शर्मा

'फाल्गुन–पूर्णिमा में प्रदोष के समय' होलिका–दहन का विधान है। भद्रा में होलिका–दहन निषिद्ध है। यदि पूर्णिमा दो दिन प्रदोष को व्याप्त कर रही हो तो दूसरे दिन ही प्रदोषकाल में होलिका–दाह किया जाता है, क्योंकि पहले दिन तो वहां प्रदोष भद्रा–दूषित रहता है। यदि केवल पहले ही दिन पूर्णिमा प्रदोष–व्यापिनी हो, दूसरे दिन वह प्रदोष से पूर्व ही समाप्त हो जाए, तब पहले ही दिन भद्रामुख को छोड़कर अथवा भद्रा के पुच्छ में; निशीथ से पूर्व ही भद्रा समाप्त हो जाए तो भद्रा की समाप्ति पर ....
...इत्यादि विभिन्न स्थितियों में **'विभिन्न होला–दहनकाल'** शास्त्रकारों ने निर्णीत किए हैं। यदि केवल पहले ही दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी हो और वह दूसरे दिन **'सार्ध–त्रियाम–व्यापिनी'** (साढ़े तीन प्रहर या इससे अधिक काल तक व्यापिनी) हो, किञ्च– परवर्ती प्रतिपदा वृद्धिगामिनी (फाल्गुन–पूर्णिमा के भोग से अधिक भोगवाली) हो, वहां **'भविष्योत्तर–पुराण'** का निर्णय है ;– " दूसरे दिन पूर्णिमा के उस अन्तिम भाग में, जहां वह सायाह्न (दिन के पञ्चम पंचमांश) को व्याप्त कर रही हो, होलिकादहन करना चाहिए।" **ध्यान रहे;–** इस प्रकार की स्थिति शताब्दी में मुश्किल से एकाधबार ही घटित होती है। यही स्थिति सं. 2072 वि., सन् 2016 ई. में बन रही है। इस स्थिति के विषय में **महर्षि वेदव्यास** का **'भविष्योत्तर–पुराण'** में यह वाक्य है;–

> "सार्धयाम–त्रयं वा स्यात् द्वितीये दिवसे यदा।
> प्रतिपद् वर्धमाना तु तदा सा होलिका स्मृता।।"

इसका अभिप्राय है;– यदि फाल्गुन पूर्णिमा साढ़े तीन याम या इससे अधिक काल को व्याप्त करे और तदुत्तरवर्ती प्रतिपदा वृद्धिगामिनी हो तो वहां होलिकादहन सायाह्न–व्यापिनी पूर्णिमा के काल में करना चाहिए।

महर्षि वेदव्यास के इस **भविष्योत्तरवाक्य** को निरपवाद रूप से **निर्णयसिन्धु, समयप्रकाश, तिथिनिर्णय, धर्मसिन्धु एवं पुरुषार्थचिन्तामणि** आदि सभी निबन्धग्रन्थों ने उद्धृत कर इसे प्रामाणिकता दी है।

यहां यह बात बतलाने योग्य है कि– **महर्षि वेदव्यास** के इस वाक्य का अभिप्राय **'निर्णयसिन्धुकार'** आदि कुछ निबन्धकारों ने यह माना है कि– **सार्धत्रियामा** या **सार्धत्रियामाधिका** पूर्णिमा होने पर परवर्ती वृद्धिगामिनी प्रदोषव्यापिनी प्रतिपदा में होलिकादहन करना चाहिए। लेकिन **'पुरुषार्थचिन्तामणि'** आदि निबन्धकारों ने इसे अमान्य बतलाया है, क्योंकि प्रतिपदा में **'होलिका–दाह'** को शास्त्रकारों ने एकस्वरेण कुफलकारक कहा है। अतः **'भविष्योत्तर पुराण'** के इस वाक्य का यथार्थ अभिप्राय यह माना गया है कि– सार्धत्रियामा पूर्णिमा से व्याप्त सायाह्नकाल में ही होलिकादाह होना चाहिए।

ध्यान रहे– कोई भी तिथि यदि **सार्धत्रियाम–व्यापिनी है**, तो वह अनिवार्यतः **'सायाह्नव्यापिनी'** अवश्य होती है। **'सायाह्न'** को **'गौण–प्रदोष'** माना गया है, **जिससे 'सार्धत्रियामा–पूर्णिमा सायाह्नव्यापिनी'** होने से **प्रदोषव्यापिनी ही मानी जाती है**। अतः वहां होलिकादाह शास्त्र–सम्मत है। यही बात **'पुरुषार्थचिन्तामणि'**कार ने इसप्रकार स्पष्ट लिखी है;–

" यदा तु द्वितीय–दिने सार्धयामत्रयं पूर्णिमा, प्रतिपदश्च वृद्धिः तदा पूर्णिमान्त्यभागे सायाह्नकाल एव दीपनीया होलिका।" ⊗

⊗ *यहां ध्यातव्य है कि–* ***वेदव्यास*** *ने यामत्रय–व्यापिनी पूर्णिमा को होलादाह के योग्य नहीं माना, क्योंकि यामत्रयव्यापिनी कोई भी तिथि सायाह्न (गौण–प्रदोष) का कदापि स्पर्श नहीं करती। सार्धत्रियामा तिथि तो सर्वदा सायाह्न–व्यापिनी होती ही है। इसीलिए उन्होंने होलिकादाह के लिए सार्धत्रियामा पूर्णिमा को ही ग्राह्य लिखा है।*

यहां कुछ प्रतिपक्षियों की यह आपत्ति है कि– 'सायाह्न में होलिकादाह नहीं होना चाहिए'। क्योंकि सायाह्न दिन का ही भाग है, दिन में होलिकादाह अशुभ माना गया है–

" प्रतिपद्–भूत–भद्रासु यार्चिता होलिका दिवा।
संवत्सरं च तद्राष्ट्रं पुरं दहति सा द्रुतम्।।"–(*नारदः*)

लेकिन ऐसी बात नहीं है, दिन में 'होलिकादाह–निषेधक' एवं सायाह्न में 'होलिकादाह–समर्थक' – दोनों प्रकार के वाक्य शास्त्रों में उपलब्ध हैं। इनमें विरोध की प्रतीतिमात्र है; वस्तुतः ये परस्पर विरुद्ध नहीं हैं। क्योंकि "........**यार्चिता होलिका दिवा**" में **'दिवा'** शब्द सायाह्न–वर्जित दिनभाग का वाचक है 卐

इसी प्रसंग में **'पुरुषार्थचिन्तामणि'** में भी यही लिखा है;– " **(अत्र) दिवा–शब्दस्य सायाह्न–भागातिरिक्त–दिवसकल्पनस्यावश्यकत्वेन तद्विरोधाभावात्।"**

यहां कुछ प्रतिपक्षी यह भी आपत्ति करते हैं कि– **भविष्योत्तरोक्त** " सार्धयामत्रयं **वा स्यात्**.........." स्थिति में भी भद्रामुख को छोड़कर पहले दिन ही प्रदोष में होलिकादहन करना चाहिए, क्योंकि होलिका–दहन के प्रधान कर्मकाल **'प्रदोष'** को छोड़कर **'गौणकर्मकाल सायाह्न'** में इसे करना अयुक्त है।

उनकी यह आपत्ति भी तर्कसंगत नहीं है– ऐसा करने से तो **महर्षि वेदव्यास** का " **सार्धयामत्रयं वा स्यात्**........" यह वाक्य सर्वथा अर्थहीन हो जाता है। अर्थात् प्रतिपक्षियों का उपरोक्त मत मानने पर यह पुराणवाक्य सर्वतोभावेन अप्रयोज्यता की स्थिति में आ जाता है। दूसरे शब्दों में तब इसका प्रयोग (Application) कहीं भी, किसी भी स्थिति में संभव नहीं रहता। प्रामाणिक निर्णायक वाक्यों में से किसी भी वाक्य की अप्रयोज्यता (प्रयोजनहीनता) की स्थिति को तर्कविदों ने उस वाक्य की **'निरवकाश–स्थिति'** माना है। मीमांसा–शास्त्री किसी भी निर्णायक वाक्य की ऐसी स्थिति को सर्वथा अस्वीकार करते हैं। प्रत्येक वाक्य का समन्वय होना मीमांसा का सिद्धान्त है।

इन प्रतिपक्षियों से हमारा यह प्रश्न है, वे उत्तर दें;–

महर्षि वेदव्यास के " **सार्धयामत्रयं वा स्यात्** ...." इस वाक्य का प्रयोग आप लोग इसवर्ष (सं. 2072 वि. में) नहीं करेंगे, तो इसका प्रयोग आप फिर कहां करेंगे ? **स्पष्ट है**– अपने मतानुसार तो इस वाक्य का प्रयोग आप कहीं भी नहीं कर पाएंगे। ऐसा वाक्य जो आपके मतानुसार अर्थहीन, निष्प्रयोजन एवं कहीं भी काम न आने वाला हो, उसके प्रणेता **महर्षि वेदव्यास** को क्या आप प्रतिपक्षी लोग स्पष्टतः मन्दात्–मन्दतर सिद्ध नहीं कर रहे हैं ?– " **प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते**" – यह आभाणक तो आपने सुना ही होगा।

उल्लिखित विस्तृत विवेचन का सारांश यह है कि– महर्षि वेदव्यास का यह वाक्य मीमांसा–शास्त्रीय तर्क–वितर्कों से पूर्णतः परिमार्जित है, इसे सभी विद्वान् धर्मशास्त्रियों ने पूर्ण मान्यता प्रदान की है। अतः इसवर्ष (सं. 2072 वि. में) इस वाक्यानुसार 'होलिका–दहन' फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा, बुधवार, तदनुसार 23 मार्च, सन् 2016 ई. में पूर्णिमा के अन्तिम लगभग 30 मिनटों में [17^h.–0^m. से 17^h.–30^m. (I.S.T.) तक के काल में] ही करना होगा, क्योंकि इस समय भारत में सर्वत्र सायाह्नकाल होगा।

卐 *इसप्रकार प्रतीयमान विरोध की व्यवस्था मीमांसा में देखिए;– "**मा हिंस्यात् सर्वभूतानि**"– यह वैदिक–वाक्य प्राणिमात्र को अवध्य बतलाता है। लेकिन "**अग्निषोमीयं पशुमालभेत**"– यह दूसरा वैदिक वाक्य यज्ञीय पशु को वध्य कह रहा है। इन दोनों वैदिक वाक्यों का परिहार मीमांसकों ने इस प्रकार किया है;– " **मा हिंस्यात्**......" में जो सभी प्राणियों की हिंसा का निषेध है, वहां '**प्राणी**' शब्द से " **यज्ञ में बलि–योग्य छागल**" आदि से अन्य प्राणियों का ही ग्रहण होता है।*

2072 तमे वैक्रमाब्दे, 1937 तमे शाकाब्दे, 2016 तमे ख्रीष्टाब्दे होलिकादाह–दिन–काल–निर्णयः

(2072 तमे वैक्रमाब्दे होलिकादाहस्य काले दिने च विप्रतिपन्नाः पंचांगकाराः, तेषां विप्रतिपत्ति–निवृत्तये अयमत्र मे प्रयासः–प्रियव्रत शर्मा)

अस्मिन् (2072 तमे वैक्रमाब्दे) वर्षे भा.स्टैं.टा. अनुसारेण फाल्गुन–शुक्ल–चतुर्दशी भौमवासरे 15घं. 13 मि. मिते, पूर्णिमा बुधे 17 घं. 30 मि. मिते, तत्परवर्तिनी चैत्रकृष्ण–प्रतिपच्च गुरौ 20 घं. 0 मि. मिते काले समाप्तिमेति। अत्र पूर्णिमा बुधे सार्धत्रियाम–व्यापिनी, तदुत्तरा च प्रतिपद्वृद्धिगामिनी वर्तते। अत्रैका विशिष्टा स्थितिरुत्पन्ना, या अतीव वैरल्येन घटते। शताब्द्यामियमेकवारं कदाचिदेव द्विवारं वा घटेत। अस्यां स्थितौ भविष्योत्तर–पुराणे महर्षि–वेदव्यासेन होलादाह–दिन–काल–व्यवस्था इत्थं निर्दिष्टा ;–

"सार्धयामत्रयं वा स्यात् द्वितीये दिवसे यदा।
प्रतिपद् वर्धमाना तु तदा सा होलिका स्मृता।।"

वाक्यमिदमित्थं अर्थाप्यते–

"यदि फाल्गुन–पूर्णिमा सार्धयामत्रय–व्यापिनी तथा तदुत्तरा प्रतिपच्च वृद्धिगामिनी (पूर्ववर्तिन्याः पूर्णिमायाः भोगकालात् अधिक–भोगकाला) तदा सा होलिका ज्ञेया।" – अयमस्य वाक्यस्य सामान्योऽर्थः।

वाक्येऽस्मिन् " सा होलिका स्मृता" अत्र " सा " इत्यनेन सर्वनाम्ना 'प्रतिपद्' तिथिर्ग्राह्या–इति केचित्, "सार्धत्रियाम–व्यापिनी पूर्णिमा"– इत्यन्ये।

ये 'प्रतिपदं' ग्राह्यां वदन्ति, ते परत्र प्रदोष–व्यापिन्यां प्रतिपदि ये च 'सार्ध–त्रियाम– व्यापिनीं पूर्णिमां ' ग्राह्यां वदन्ति, ते फाल्गुन–पूर्णिमायां सायाह्न–व्यापिन्यां बुधे होलिकादाहं व्यासानुमतमाहुः। वैमत्यस्यास्य 'तर्कानुप्राणित–शास्त्रीय–समाधानाय' इत्थमत्र विमृशामः–

प्रतिपदि होलिकादाहः शास्त्रकारैर्भृशं निन्दितः। यथा " वह्नौ (होलिकायां) वह्निं (प्रतिपदं) परित्यजेत्"।– (*भविष्यपुराणम्*)

तथैव 'ज्योतिर्निबन्धे' नारदः–

"प्रतिपद्–भूत–भद्रासु यार्चिता होलिका दिवा।
संवत्सरं च तद्राष्ट्रं पुरं दहति सा द्रुतम्।।"

सत्यमेतत्–होलिकादाह–कालः 'प्रदोषः'। परमस्य तिथिस्तु फाल्गुन–पूर्णिमैव। नेमां परिहाय होलिकादाहः कर्तुमिष्यते, – इति प्रतिपदि प्रदोषे होलिकादाह–तिथिं पूर्णिमामुपेक्ष्य होलिकादाह–कल्पना निर्णयसिन्धु–धर्मसिन्धु–तिथिनिर्णयादि– कर्तॄणां सुतरामशास्त्रीया, राष्ट्र– राष्ट्रियाणां महाऽनिष्ट–फलदा, इति सा दृढं निरासमर्हति।

भविष्यपुराणवाक्यस्यास्य द्वितीयं व्याख्यानम्– "सार्धत्रियामा–पूर्णिमा होलिका–दाहकालः"– इतीदमेव शास्त्र–विहितं निर्दुष्टमित्यत्र प्रदर्शयामः –

" सायाह्नं " (दिनस्य पंचमं पंचमांशम्)– गौणप्रदोष–कालत्वेन धर्मशास्त्रं स्वीकरोति,– इति नक्तव्रत–प्रदोषव्रतानां निर्णयप्रसंगे पश्यामः। यथा– 'वीरमित्रोदये समयप्रकाशे' नृसिंहचतुर्दशी–व्रतनिर्णये– " अत्र चतुर्दशी प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या........................ दिनद्वयेऽव्याप्तौ परा, परदिने गौणव्याप्तेः (सायाह्नव्याप्तेः) सत्त्वात्।"

तथा च– 'नक्तव्रत' निर्णये 'कालमाधवोऽपि सायाह्नं गौण–प्रदोषमाह। यथा –

" **अतथात्वे परत्र स्यादस्तादर्वाग्यतो हि सा।**" अतथात्वे (उभयत्र प्रदोष–व्याप्त्यभावे)ऽपि सा तिथिः परत्र ग्राह्या, यतः सा तत्र अस्तमयाद् अर्वाक् (पूर्वं सायाह्ने) विद्यते– इति।

किञ्च, साक्षात् सायाह्नेऽपि होलिकादाहं शास्त्रमाह –

यथा– " **सायाह्ने होलिकां कुर्यात् पूर्वाह्ने क्रीड़नं गवाम्।**"– (*निर्णयामृते*)

तथैव–

" **होलिका पौर्णमासी तु सायाह्न–व्यापिनी मता।**" –(*वैवर्तपुराणम्*)

अत्र केचनाक्षिपन्ति–

" **दिवा होलिका–पूजनमशुभ–फलम्।**"

यथा– " **प्रतिपद्–भूत–भद्रासु यार्चिता होलिका दिवा।**
संवत्सरं च तद्राष्ट्रं पुरं दहति सा द्रुतम्।।"– (*नारदः*)

" **सायाह्नश्च दिनभागः, अतः सायाह्ने होलिकापूजनं दोषायैव– इति।**"

नैतत्तथा, यतः दिने होलिका–पूजनं शास्त्रकारैर्निषिद्धम्,तैरेव सायाह्ने तत्पूजनमपि विहितम्,–इति नायं शास्त्रविरोधः। सुव्यक्तमेतत्– अत्र दिने होलिकापूजन–निषेधोक्तौ **'दिन'**–शब्देन सायाह्न–व्यतिरिक्त एव दिनभागो गृह्यते। यथाहि–" **मा हिंस्यात् सर्वाभूतानि**"–इति वैदिक–वाक्यं सर्वेषां प्राणिनां वधस्य निषेधकम्। अपरञ्च वैदिकमेव वाक्यम्– " **अग्निषोमीयं पशुमालभेत**"– इति यज्ञे पशोर्वधस्य विधायकम्। अत्र प्रतीयमानो विरोधस्तु मीमांसकैरित्थं परिहृतः – यस्मिन् वाक्ये प्राणिनां वधो निषिद्धः, तत्र **'प्राणि'** शब्देन यज्ञीयबलिभूत–छागलाद्यतिरक्ता एव प्राणिनः ग्राह्याः।

होलिकाया मुख्यो दाहकालः **'प्रदोषः'**–इति सत्यम्। परं विशिष्टायां स्थितौ **'गौण–प्रदोषकाल'– भूतस्य सायाह्नस्यापि–** अत्र प्रयोगः शास्त्रानुमतः – इति ऊर्ध्वोद्धृत–वाक्यैः स्फुटम्। उल्लिखितं 'भविष्य'–वाक्यं **"सार्ध–त्रियाम–व्यापिन्यां पूर्णिमायां सायाह्न–युतायां होलिकादाहःकार्यः"** – इति व्याराभिप्रायं सुव्यक्तं संकेतयते, –इति अधस्तात् प्रतिपादयामः–

त्रियामव्याप्ता काऽपि तिथिः सायाह्नं कदापि न स्पृशेत्, यतोऽन्तिमो (चतुर्थो)यामो दिनस्य चतुर्थो भागः, सायाह्नश्च ततो लघुतरः, दिवसस्य पंचमांशत्वात्। अत एव **महर्षि व्यासः 'भविष्योत्तर'** वाक्ये **"सार्धयामत्रयं वा स्याद"**– इत्यादौ "सार्ध–त्रियाम–व्याप्तायां फाल्गुन–पौर्णमास्यां सायाह्न–स्पर्शिन्यां होलिकादाहं संकेतयते।" यतः सर्वदा सर्वत्र सार्धयामत्रय–व्याप्ता तिथिः गौणप्रदोष–भूतस्य सायाह्नकालस्य पर्याप्तं भागं निरपवादरूपेण व्याप्नोत्येव इति।*

अत्र सार्धत्रियाम–व्यापिन्याः पूर्णिमायाः सायाह्न–संल्लग्ने काले होलिकादहनम् संपाद्यम् – इति महर्षेर्व्यासस्य स्पष्टः संकेतः।

एवं **"सार्धत्रियामा ...."** वाक्यस्यास्य अयं निर्गलितः सारांशः,– यदि फाल्गुन–पौर्णमासी सार्धत्रियामा, प्रतिपच्च वर्धमाना (पौर्णमास्याः भोगात् अधिकभोगा)* तदा तत्र पूर्णिमा–संपृक्ते सायाह्नकाले होलिका प्रज्वाल्या" –इति। एतदेव **पुरुषार्थचिन्तामणिकारः** प्रत्यपादयत् –

---

* *दिने 15 मुहूर्त्ताः। त्रियामा तिथिः 11.25 मुहूर्त्ततुल्यं दिनं व्याप्नोति।*
सायाह्नः दिनस्य 13, 14, 15 मुहूर्त्तानन्तिमान् व्याप्नोति।
येन स्पष्टः त्रियामायाः तिथेः सायाह्नेनाऽसम्पर्कः।
सार्धत्रियामा तिथिश्च 13.13 मुहूर्त्ततुल्यं दिनं व्याप्नोति। एवं
सार्धत्रियामायाः तिथेः सायाह्नेन सम्पर्कः अवश्यंभावी –इति स्फुटम्।

*– (**इयं ममैव उपज्ञा**– प्रियव्रत शर्मा)*

* *"**पूर्णिमा–परवर्तिनी प्रतिपद वर्धमाना स्यात्**" अयमत्र प्रतिबन्धः किम्मूलः ? –इति तु न जानीमः। आगमादेशादयं होलादाह–निर्णये अपरिहार्यत्वेन विचार्य एव।*

"यदा तु द्वितीये दिने सार्धयामत्रयं पूर्णिमा, प्रतिपदश्च वृद्धिस्तदा पूर्णिमान्त्य–भागे सायाह्नकाले एव दीपनीया होलिका।" – (*पुरुषार्थचिन्तामणिः*)

पुनरप्यत्र केचन प्रतिपक्षिणः विप्रतिपद्यन्ते–

भविष्योत्तरोक्तायां "**सार्धयामत्रयं वा स्यात्**........." स्थितावपि भद्रामुखं त्यक्त्वा पूर्वत्रैव प्रदोषे होलिकादहनं कुतो न क्रियेत, यतः 'प्रदोषः होलापूजायाः मुख्यः कर्मकालः', तस्मिन् सुलभे सायाह्ने गौणकर्मकाले अस्याः सम्पादनं कथं क्रियेत– इति। अतार्किकी एषा विप्रतिपत्तिः। तथाकृते तु **महर्षेर्वेदव्यासस्येदं** वाक्यं सर्वथा निरर्थकतामीयात्, नह्येतस्य वाक्यस्य कदापि क्वापि प्रयोज्यता–स्थितिरापद्येत, वाक्यमेतत् अत्यन्ततः प्रयोगस्थल–वञ्चितो जायेत। एतादृशीं प्रयोगानर्हता–स्थितिमापन्नं वाक्यं मीमांसकाः **'निरवकाशम्'** आहुः। कस्यापि वाक्यस्य निरवकाशता मीमांसायां नितरां निषिद्धा। निरवशेषस्य निर्णायक–वाक्य–कुलस्य समन्वयः सिद्धान्तोपलब्धये निर्भरमपेक्षितः–इति प्रतिपक्षिभिः कृतेयं विप्रतिपत्तिः (" **भद्रामुख–रहिते प्रदोषे पूर्वत्र एव होलिकादाहः कर्तव्यः इति** ")– भृशं तिरस्कारमर्हति।

किञ्च, सर्वेषां व्रतपर्वणां निर्णयः **'पुराणसंहिता'**–मूलः। **महर्षिर्वेदव्यासः** पुराण–प्रणेता, तस्य मतं पर्व–निर्णये तिरस्कर्तुम् एतत् एतेषां प्रतिपक्षिणां साहसं सत्यम्, महते अरुन्तुदाय खेदाय प्रेक्षावताम्।

अपि च–"सार्धयामत्रयं............." इयं होलिकादाह–प्रसंगे विशिष्टा स्थितिः। **"विशेष– शास्त्रेण सामान्यशास्त्रं बाध्यते"**– इति नियमः। एतेन् अस्मिन् भविष्योत्तर–प्रतिपादिते होलिकापर्व– निर्धारके विशिष्टे स्थले 'भद्रामुख–मुक्त–प्रदोषा'दयः एतत्–पर्वनिर्णायकाः सामान्याः नियमाः नैव प्रवर्तेरन्।

एवम् उल्लिखितया विस्तृत–मीमांसया निर्गलितोऽत्र एष परिणामः–

अस्मिन् 2072 तमे वैक्रमाब्दे– **"सार्धयामत्रयं वा स्यात् ...."** इति भविष्योत्तर–वाक्यमनुसरद्भिरस्माभिः फाल्गुन–पूर्णिमायां बुधवासरे 2016 खीष्टाब्दस्य 23 मार्च तारिकायां पूर्णिमा–व्याप्ते सायाह्नकाले होलिका दीपनीया। सायाह्नकालोऽत्र स्थानभेदेन विभिन्नेषु भारतीय स्थलेषु भिद्येत, येन तस्य पूर्णिमया सम्पर्कोऽपि तथैव। अतः सामान्य–जन–सौविध्याय अत्र सायाह्न–संपृक्त–पूर्णिमाकालः समस्ते भारते भा.स्टैं.टा. अनुसारेण 17 घं. 0 मिनटतः 17 घं. 30 मिनटं यावत् अस्माभिः परिगणितः। अस्मिन्नवधौ भारते सर्वत्र (अरुणाचल, नागालैण्ड, मणिपुर, मेघालय, आसाम–प्रदेशानां पूर्वभागान् विहाय) पूर्णिमा–सायाह्नयोः संगमः ध्रुवं स्थास्यति। अरुणाचलादीनां पूर्वभागेषु फाल्गुन–पूर्णिमा सूर्यास्तकालानन्तरं समाप्तिमेष्यति–इति तत्र होलादाहः 23 मार्च (2016 ई.) तारिकायां प्रदोष एव कर्तव्यः स्यात्।

"प्रियव्रत–कृतो होला–ज्वाल–कालविनिर्णयः।
मीमांसा–निकषोद्घृष्टः विदां शंका व्यपोहतु।।"

।। इति शम्।।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, शास्त्री, साहित्याचार्य,
सिद्धान्तज्यौतिषाचार्य,
वरिष्ठ संपादक– ' श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'
(भारत–शासन द्वारा प्रकाशित Indian Nautical Almanac
एवं 'राष्ट्रिय–पंचांग' की व्रतपर्व–निर्णायक समिति के सदस्य)

पत्रव्यवहार–संकेतः–
प्रो. प्रियव्रत शर्मा,
'अभिजित् प्रकाशन', कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा)– 134 109, Phone- 0172-2565 303, Mob. 090413 30161,

---

संवत् 2071 वि. में कन्यासंक्रान्ति 16 सितम्बर, 2014 ई. मंगलवार को थी या 17 सितंबर बुधवार को ?

–प्रियव्रत शर्मा

वि.सं. 2071 में कन्यासंक्रान्ति के वार के बारे मे जनसाधारण एवं ज्योतिषी लोग भी दुविधा में रहे। इस बारे हमें टैलीफोन कॉल्स की भारी भरमार सहन करनी पड़ी। इस विषय में साधारण जनता की दुविधा तो स्वभाविक थी ही, लेकिन ज्योतिष का व्यवसाय करने वाले दैवज्ञों में भी ऐसी दुविधा का होना आश्चर्यजनक ही नहीं, दुःख की बात भी है। उनकी इस प्रकार की दुविधा स्पष्ट करती है कि–उन्हें वारप्रवृत्ति के से सामान्य नियम का ज्ञान तक भी नहीं है। यह निम्नांकित विवरण उन्हें सावधानी से पढ़ लेना चाहिए, ताकि वे भविष्य में भारतीय पंचांगों में उपस्थित होने वाले एतत्सम्बन्धी मतभेदों से व्यर्थ में भ्रान्त न हों।

तिथि–नक्षत्र–योगों की प्रारम्भ/समाप्ति. ग्रहों का राशि, नक्षत्र, नक्षत्र–चरणों में प्रवेश तथा भद्रा एवं पंचक की प्रारम्भ/समाप्ति आदि सभी **भूकैन्द्रिक खगोलीय** घटनाएं भूगोल के सभी देशों, नगरों, ग्रामों, स्थलों पर एक ही समय घटित हुआ करती हैं। इसका अभिप्राय यह है कि–ये सभी खगोलीय घटनाएं जिस क्षण में घटित होती हैं, विश्व के भारत, इंगलैंड, पाक, अमेरिका आदि सभी देशों में वे उसी क्षण घटित हो रही होती हैं। **इसे हम उदाहरण द्वारा भी स्पष्ट कर देते हैं–**

देखिए–इस वर्ष संवत् 2072 वि. में चैत्र शुक्ल–प्रतिपदा भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम अनुसार 21 मार्च, 15 ई. को 11 घं. 32 मि. पर समाप्त हो रही है। यह तिथि इंगलैंड में भी 21 मार्च, 2015 ई. को ही इसी क्षण समाप्त होगी। हां, वहां इसका समाप्तिकाल इंगलैंड के स्टैं.टा. (G.MT.), जोकि भा.स्टैं.टा. से 5 घं. 30 मि. पीछे है, के अनुसार 6 घं. 02 मि. पर होगा। **इसी तरह देखिए–** 'सं. 2072 वि. में ही 7 मई '15 ई. को चन्द्रमा भा. स्टैं. टा. अनुसार 13 घं. 03 मि. पर धनुराशि में प्रवेश करेगा। टोकियो (जापान) में चन्द्रमा का धनुराशि में यह प्रवेश 7 मई '15 ई. को ही इस क्षण वहां के स्टैं. टा. अनुसार, जो भा.स्टैं.टा से 3 घं. 30 मि. आगे है, 16 घं. 33 मि. पर होगा। यहां यह ध्यान देने योग्य है कि–इन खगोलीय घटनाओं को वेधयन्त्र से भी हम विश्व के किसी भी स्थल से देखें, ये सर्वत्र (सभी देशों में) एक ही क्षण में घटित होती दिखाई देंगी। यहां केवल वार या तारीख का अन्तर हो सकता है, क्योंकि इन दोनों का सूर्य की भूभ्रमणजन्यस्थिति (उदय आदि) से सम्बन्ध है।

पाश्चात्त्य प्रणाली अनुसार वार (रविवार आदि) एवं तारीखें (जनवरी आदि की तारीखें) आधी रात (रात के 12 बजे) से प्रारम्भ होती (बदलती) है, लेकिन ध्यान रहे–भारतीय ज्योतिषानुसार वार की प्रारम्भ/समाप्ति स्थानीय सूर्योदय से ही मानी गई है। तदनुसार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय का काल भारतीय ज्योतिषानुसारी वार या दिन माना गया है और प्रत्येक खगोलीय घटना (तिथ्यादि की प्रारम्भ/समाप्ति एवं ग्रहराशि– नक्षत्रप्रवेश आदि) को उसी वार में (उसी वार वाले दिन) भारतीय पंचांगों में दर्शाया जाता है, जिस वार में यह घटित हो रही है, क्योंकि स्थानभेद से प्रत्येक स्थल का वार स्थानीय सूर्योदय से सम्बद्ध है। अतः इन विभिन्न खगोलीय घटनाओं, जिनमें सूर्यसंक्रान्ति भी आती है, को भारत के विभिन्न नगरों से प्रकाशित होने वाले पंचांगों के सम्पादक अपने–अपने पंचांगों में इन खगोलीय घटनाओं को अपने–अपने नगर के स्थानीय वार में ही प्रदर्शित करते हैं।

जैसे– इसी वर्ष (सं. 2072 वि. में) 22 मार्च, 2015 ई., रविवार को चन्द्र का मेषराशि में प्रवेश 6 घं. 29 मि. (भा.स्टैं.टा) पर **श्रीमार्त्तण्ड पंचांग** में लिखा है।

ध्यान दें– इस दिन चण्डीगढ (वह नगर, जिसके **"वार"** को हमने **श्रीमार्त्तण्ड पंचांग** में 'वार' माना है) में सूर्योदय 6 घं. 28 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर हुआ है। अतः यहां यह चन्द्रराशिप्रवेश 6 घं. 28 मि. पर प्रारम्भ होने वाले रविवार को प्रदर्शित किया गया है। लेकिन जयपुर, मुंबई आदि नगरों के पंचांगों में यह चन्द्रराशि-प्रवेश शनिवार (21 मार्च, '15 ई.) को लिखा गया है, क्योंकि वहां इस दिन सूर्योदय (अर्थात् रविवार का प्रारम्भ) 6 घं. 28 मि. के बाद हुआ है। जिससे वहां यह चन्द्रराशिप्रवेश रविवार में नहीं, शनिवार में हुआ है।

उपरोक्त विवेचन से आप समझ गए होंगे कि–सं. 2071 वि. में कन्यासंक्रान्ति जालन्धर के पंचांग में मंगलवार (16 सितंबर, '14 ई.) को एवं चण्डीगढ़ के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में बुधवार (17 सितंबर, 14 ई.) को (इस प्रकार से अलग–अलग वारों में) क्यों लिखी गई थी ?

देखिए– इस कन्यासंक्रान्ति का काल (भा. स्टैं. टा.) इस दिन 6 घं. 11 मि. से कुछ ही अधिक था और इस दिन चण्डीगढ़ में सूर्योदय ठीक 6 घं. 11 मि. पर हुआ। अतः स्पष्ट है–यह संक्रान्ति चण्डीगढ़ में इस दिन सूर्योदय के बाद (अर्थात् बुधवार की प्रवृत्ति के अनन्तर) हुई।
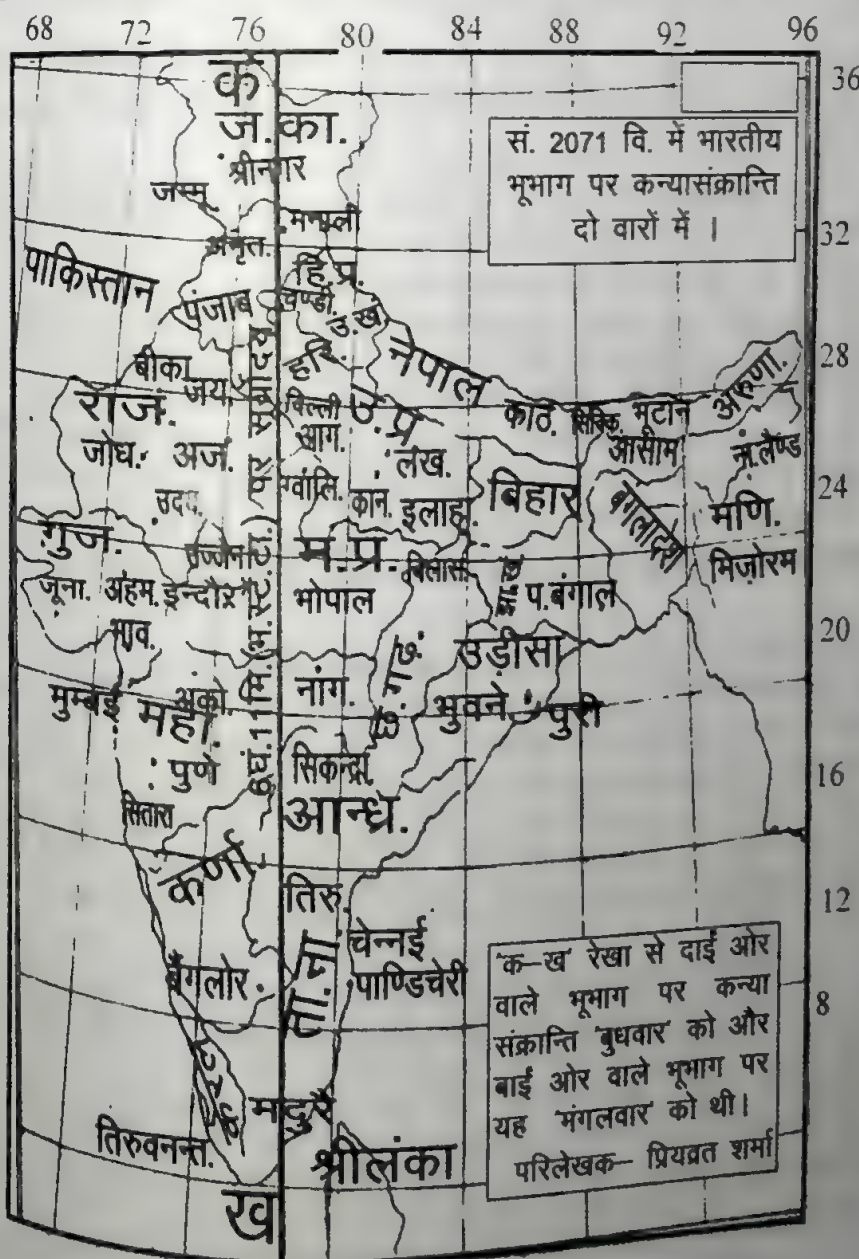
इसलिए **श्रीमार्त्तण्ड** पंचांग में यह संक्रान्ति बुधवार के दिन लिखी गई, लेकिन जालन्धर में इस दिन सूर्योदय 6 घं. 16 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर हुआ, जिससे यह संक्रान्ति वहां सूर्योदय से पहिले (बुधवार की प्रवृत्ति से पहिले) मंगलवार को ही लिखी गई। इस प्रकार जान लेना चाहिए, यह कन्यासंक्रान्ति इस वर्ष (सं. 2071 वि. में) भारत के उन स्थलों पर, जहां इस दिन सूर्योदय 6 घं. 11 मि. (भा.स्टैं.टा.) से पहिले हुआ, वहां (अर्थात् पंजाब के पूर्वीभाग, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखंड, उ.प्र., बिहार, बंगाल, झारखण्ड, मध्यप्रदेश आदि भारत

के अधिकतर प्रदेशो में) बुधवार को मानी गई है और जहां (पश्चिमी– पंजाब, राजस्थान, गुजरात आदि प्रदेशों में) सूर्योदय 6 घं. 11 मि. के बाद हुआ, वहां यह संक्रान्ति मंगलवार को मानी गई। यहां इसे स्पष्ट करने के लिए भारत का एक मानचित्र दिया गया है, इस मानचित्र में अंकित 'क-ख' रेखा से पूर्व में स्थित भारतीय भाग में यह कन्यासंक्रान्ति 17 सितं., '14 ई. को सूर्योदयानन्तर घटित हुई, जिससे इस भारतीय भाग के पंचांगों में यह बुधवार को और इस रेखा से पश्चिम में स्थित भाग मे यह इसी दिन (17 सितं., 2014 ई. को ही) सूर्योदय से पहिले घटित हुई, जिससे भारत के इस भाग से प्रकाशित होने वाले पंचांगों में यह मगलवार को दर्शाई गई थी। यह मानचित्र सं. 2071 वि. के **श्रीमार्त्तण्ड पंचांग** में भी पृ. 21 पर सविवरण दिया गया है, जिस ओर इन पाठकों ने ध्यान नहीं दिया।

ध्यान रहे – कन्यासंक्रान्ति के वार का स्वामी संवत्सर का धनेश माना जाता है, अतः संवत् 2071 वि. के कन्यासंक्रान्ति के वार के दो भिन्न–भिन्न स्वामियों के कारण भारत में इस 'क–ख' रेखा से इधर–उधर दो भिन्न–भिन्न धनेश थे।

ध्यान दें– क्योंकि हमारे व्रत–पर्व एवं मेदिनी ज्योतिष से सम्बद्ध **'वर्षराज'** आदि का निर्णय स्थानीय वार पर आधारित है, जिससे स्थानभेद के कारण वारभेद हो जाने से अनेकदा इनका निर्णय एक ही देश/प्रदेश में मतभेद का कारण बन जाता है।

ध्यान रहे– किसी न किसी सूर्यसंक्रान्ति में स्थानभेद से वारभेद दो–तीन वर्षो में एकाधवार भारत मे अवश्य आ पडता है। इसके कारण वर्ष के मन्त्री आदि दशाधिकारी, जो मेषादि संक्रान्तियों के वारेश से सम्बन्ध रखते हैं। ये दो–तीन वर्षो में भारत के विभिन्न भागों में मतभेद का कारण बन जाते हैं, जिसके कारण देश के विभिन्न भागों के लिए फल भी भिन्न–भिन्न, जो अनेकदा परस्पर विरोधी भी होता है, पंचांगों में पंचांगकारों को लिखना पडता है। इस प्रकार के वैमत्य का अपसार तो तभी संभव है, जबकि इस फलितनिर्णय का सम्बन्ध स्थानीय वारेश से विच्छिन्न कर दिया जाए, लेकिन संहिताएं इसके पक्ष में नहीं हैं। अतः हम पंचांगकार ऐसे मतभेद के कारणों को दूर करने में शास्त्रोल्लंघन भीतिवश असमर्थ हैं। हां, यदि सभी भारतीय पंचांगकार शास्त्रोल्लंघन–अपराध को उपेक्षित कर ऐकमत्येन ऐसे मतभेद–प्रवर्तक कारणों से बचने के लिए भारत के किसी एक केन्द्रस्थल के सूर्योदय को वारप्रवृत्ति के लिए प्रामाणिक मानने का साहस कर लें, तब इस प्रकार की वार–भेदजन्य जनसामान्य की काले–काले पैदा होने वाली भ्रान्तियों को कम से कम भारत में तो दूर किया जा सकता है।

पाठकों को अन्त में यह बतला देना आवश्यक समझता हूँ कि–मेषादि संक्रान्तियों से सम्बद्ध ये प्रविष्टे सामान्य जनव्यवहार के लिए देसी तारीखें मात्र हैं। इनका और कोई उपयोग नहीं है। ये स्थानीय/प्रान्तीय परम्परा पर आधारित हैं। उत्तर भारत में मेषसंक्रान्ति• से वैशाख प्रारम्भ होता है, जबकि दक्षिण भारत में चैत्र प्रारम्भ होता है। इसी प्रकार मास का प्रथम प्रविष्टा कब माना जाए, इस बारे में भी प्रदेशभेद से विभिन्न मत हैं। **जैसे**–संक्रान्ति यदि सूर्योदयानन्तर होती है तो पश्चिमोत्तर भारत में मास का पहला प्रविष्टा उसी वार को माना जाता है; जबकि पूर्वी भारत के कुछ प्रदेशों में नियम इससे भिन्न है। वहां संक्रान्ति यदि अर्धरात्रि से पूर्व होती है तो इस मास का पहिला प्रविष्टा पूर्ववर्ती वार को, यदि संक्रान्ति अर्धरात्रि के बाद हो तो परवर्ती वार को पहला प्रविष्टा स्वीकार करते हैं।

ध्यान दीजिए– आगामी इन तीन वर्षो में तुला, मिथुन और वृश्चिक संक्रान्तियां भारत में स्थानभेद से दो–भिन्न–भिन्न वारों में घटित होंगी। देखिए–

सन् 2016 ई. में तुलासंक्रान्ति ।
सन् 2017 ई. में मिथुनसंक्रान्ति ।
सन् 2020 ई. में वृश्चिक संक्रान्ति ।

समस्याएं और समाधान

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सेक्टर–6 (अभिजित्) , पंचकूला–134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

विशेष निर्देश– समस्या भेजने वाले को अपना पूरा साफ–साफ पता और फोन नं.–दोनों अनिवार्यतः भेजने होंगे। पता एवं फोन नं. के बिना प्राप्त समस्याओं के समाधान न तो पंचांग में प्रकाशित होंगे और न ही उनका उत्तर डाक से दिया जा सकेगा– यह ध्यान रखें। **चार से अधिक समस्याएं न भेजें।**

ध्यान दें– मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है।

–प्रियव्रत शर्मा

समस्या–कुछ दैवज्ञ बलवान् भौम को कुजदोष का वर्धक और कुछ नाशक मानते हैं । किसे ठीक माना जाए ?

चारुदत्त पाण्डेय,
इन्दौर (म.प्र.)

समाधान–'फलितसाहित्य' के परिशीलन से यह पता चलता है कि–बलवान् क्रूर ग्रह अशुभ फल की वृद्धि और शुभ फल का क्षय तथा निर्बल क्रूर ग्रह शुभ फल की वृद्धि और अशुभ फल का क्षय किया करते हैं– यह मत कुछ फलितशास्त्रियों को मान्य रहा है। इस मत का प्रतिपादन करने वाले वाक्य अब भी संहिता, जातक, मुहूर्त एवं ताजिक-ग्रन्थों में यत्र–तत्र उपलब्ध होते हैं । इसी मत के प्रभाव वाले कुछ वाक्यों में उच्चादिस्थ मंगल को मांगलिक दोष की वृद्धि और नीचादिस्थ मंगल को उसके क्षय का कारण लिखा मिलता है। लेकिन इस मत के विपरीत 'बली क्रूर ग्रह को अशुभ फल का नाशक तथ शुभ फल का वर्धक और निर्बल क्रूर ग्रह को अशुभ फल का वर्धक तथा शुभ फल का नाशक' बतलाने वाले वाक्यों की संहिता–जातकग्रन्थों में भरमार है, जिन्हें देखकर पता चलता है कि–बली क्रूर ग्रह को अशुभ और निर्बल क्रूर ग्रह को शुभ मानने वाले वाक्यों की संख्या बली और निर्बल क्रूर ग्रह को क्रमशः शुभ और अशुभ मानने वाले वाक्यों की संख्या की तुलना में एक प्रतिशत भी नहीं है। अतः स्पष्ट है कि–अनुभव के आधार पर इस मत को फलित-शास्त्रियों ने

प्रामाणिकता की कोटि में नहीं रखा। निर्बल और सबल क्रूर ग्रह को क्रमशः अशुभतम और शुभ मानने वाला सम्प्रदाय ही बहुमत में है। इस सम्प्रदाय के पक्षपाती साहित्य की तुलना में दूसरे सम्प्रदाय का पक्षपाती साहित्य नगण्य है।

अतः कुजदोष के बारे में यहीं चिन्तन युक्तियुक्त है कि–बलवान् भौम कुजदोष को न्यून या नष्ट और निर्बल भौम उसे पुष्ट करता है। इसके साक्षात् समर्थक प्रमाणवाक्यों की कमी नहीं है। (इस विषय पर सं. 2051 वि. के **मार्त्तण्ड पंचांग** के **पृष्ठ 58–59** पर दिया गया समाधान भी पढ़िए।)

समस्या–कुछ ज्योतिषी लोग भूकैन्द्रिक (geo-centric) ग्रहभोगांशों की जगह अब भूपृष्ठीय ग्रहभोगांशों के प्रयोग का समर्थन करने लगे हैं। इस विषय में आपकी क्या राय है?

श्री जगदीश प्रसाद संस्कृत्यायन,
8642–गली गोपाल वाली, गोशाला मार्ग–दिल्ली–6

समाधान–विश्व के सभी Ephemerides, पंचांगों में प्राचीनकाल से भूकैन्द्रिक ग्रहभोगांशों का ही प्रयोग निरपवाद रूप से होता चला आ रहा है। केवल ग्रहण, ग्रहयुति, ग्रहोदयास्त आदि में ही भूपृष्ठीय तत्त्वों का प्रयोग होता है। परम्परागत भूकैन्द्रिक ग्रहभोगांशों के स्थान पर भूपृष्ठीय भोगांशों का सिद्धांत अपनाने पर केवल चन्द्रभोगांशों में ही कुछ अन्तर पड़ता है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। शेष ग्रहों के भूकैन्द्रिक और भूपृष्ठीय भोगांशों में अन्तर लम्बन की नगण्यता के कारण इतना कम होता है, जिसे आसानी से उपेक्षित किया जा सकता है। चन्द्रमा के भूकैन्द्रिक और भूपृष्ठीय भोगांशों में 61′.5 तक का अन्तर घटित होता है, जिससे भूपृष्ठीय एवं भूकैन्द्रिक तिथि–नक्षत्रों के प्रारम्भ–समाप्तिकालों में 5 घटी (2 घण्टे) से भी अधिक तक का अन्तर आएगा। यह परम अन्तर प्रतिदिन (लगभग प्रत्येक तिथि एवं दैनिक नक्षत्र में) चन्द्र के परमलम्बन की स्थिति में (चन्द्र के उदय एवं अस्त के समय) दो बार घटित होगा। हमसे (भारत से) 180 अंश पूर्व और इतना ही पश्चिम में स्थित स्थलों के भूपृष्ठीय चन्द्रभोगांशों का हमारे (भारतीय) भूपृष्ठीय चन्द्रभोगांशों से प्रतिदिन दो बार 123′ (2 अं. 3 क.) का अन्तर घटित होगा। एतदनुसार तिथ्यादि कालों में भी 4 घंटे से भी अधिक अन्तर पाया जाएगा। इसके परिणामस्वरूप अमान्तकाल और सूर्य–संक्रान्तिकाल में 4 घंटे से कम अन्तर रहने की **स्थिति** में कई बार एक ही समय में हमारे चैत्रादि चान्द्रमास विभिन्न देशों में भिन्न–भिन्न होंगे। क्योंकि अमान्तकालिक सूर्यराशि से चान्द्रमासों की चैत्रादि संख्याएं निर्धारित होती हैं-**"मेषादिस्थे सवितरि यो यो मासः प्रपूर्यते चान्द्रः चैत्राद्यः स ज्ञेयः......"**। यह स्थिति अधिकमास वाले स्थल पर संभव है। यहीं नहीं भारत के भी विभिन्न दो भागों में भूपृष्ठीय चन्द्रभोगांशों के मान में अन्तर के कारण एक ही समय में दो भिन्न–भिन्न चान्द्रमास मानने की स्थिति उत्पन्न होगी। विभिन्न भारतीय स्थलों पर भूपृष्ठीय चन्द्रभोगांशों में यद्यपि बहुत कम अन्तर रहने से विभिन्न भारतीय स्थलों के भूपृष्ठीय अमान्तकालों में 20–21 मिनट से अधिक अन्तर संभव नहीं है, फिर भी कभी न कभी (भूपृष्ठीय अमान्तकाल और सूर्यसंक्रान्तिकाल में 20–21 मिनट से कम अन्तर प्राप्त होने की स्थिति में) भारत के एक भाग में एक चान्द्रमास और दूसरे भाग में दूसरा चान्द्रमास– इस प्रकार एक ही काल में दो चान्द्रमास मानने की समस्या उत्पन्न हो सकती है। भूकैन्द्रिक चन्द्रभोगांशों से ऐसी समस्या कभी उत्पन्न नहीं होती।

सुदीर्घ परम्पराप्राप्त भूकैन्द्रिक भोगांशों के स्थान पर भूपृष्ठीय भोगांशों का प्रतिष्ठापन करने के लिए प्रयत्नशील महानुभाव शायद यह समझते हैं कि--इससे फलादेश की असत्यता की मात्रा में कुछ कटौती होगी।

उनकी इस धारणा का कोई ठोस आधार नहीं है। अक्षम्यरूप से परस्पर अन्तरित **ब्रह्म, सूर्य** आदि सिद्धांत एवं वाक्यग्रन्थों पर आधारित ग्रहभोगांशों के अनुसार परम्परया शताब्दियों से फलित बतलाने वाले भारत के विभिन्न प्रान्तों में प्रतिष्ठित दैवज्ञों के अनेक वर्ग अपने–अपने भविष्यकथन की सत्यता के बारे में आज तक पर्याप्त संतोष प्रगट करते चले आ रहे हैं। परस्पर अनेक अंशों का अन्तर रखने वाले विभिन्न अयनांशों से सम्बद्ध विभिन्न निरयण भोगांश भी अनेक अलग–अलग दैवज्ञों की भविष्यवाणी का दृढ़ आधार बने हुए हैं। सायन भोगांशों पर आधारित अविकल भविष्यदृष्टि का भी असंख्य ज्योतिषी दावा करते हैं। पारस्परिक असामंजस्य के दृष्टांत दैवज्ञों के इन विविध वर्गो के प्रति श्रद्धालु ग्राहकसमुदाय भी, जो भविष्यकथन के आधारों की इस विविधता को नहीं जानते हैं, फलित के प्रति अपनी आस्था को अविच्छिन्न बनाए हुए हैं। ऐसी स्थिति को देखते हुए यह कल्पना करना कि-चन्द्र के भूकैन्द्रिक भोगांशों को भूपृष्ठीय भोगांशों में बदल देने पर फलितक्षेत्र में कोई क्रान्ति आ जाएगी– कोई तत्त्व नहीं रखता। ग्रहभोगांश भूकैन्द्रिक लिए जाएं या भूपृष्ठीय, सायन लिए जाए या निरयण, अयनांश चित्रापक्षीय हों या रैवतपक्षीय–प्रत्येक स्थिति में फलादेश की यथार्थता के व्यभिचार की प्रतिशतता यथावस्थित ही रहेगी–यह निश्चित है। भूकैन्द्रिकता ग्रहभोगांश जैसे खगोलीय तत्त्वों का एक ऐसा विशिष्ट गुण है, जो उन्हें सार्वदेशिक एकरूपता प्रदान करता है, गणना को लाघव देता है और इसके विपरीत भूपृष्ठीयता उन्हें एकदेशीय संकीर्ण बनाकर गणना–प्रक्रिया को उलझाती है। किसी उद्देश्य की पूर्ति भी यह नहीं करती। अतः स्पष्ट है, कोई भी खगोलशास्त्री खगोलीय तत्त्वों की इस वैज्ञानिक विशेषता को छिन्न-भिन्न करने के प्रयास का समर्थन नहीं करेगा।

समस्या (i)–लग्न और दशमभाव का कम से कम और अधिक से अधिक अन्तर कितना हो सकता है?

(ii)–प्रश्नकुण्डली में ग्रहदृष्टिविचार जातकोक्तपद्धति से किया जाए या ताज़िकोक्तपद्धति से ?

(iii)–पंचांग की दैनिक लग्नसारणी में दिए गए दो समनन्तरवर्ती लग्नों के समाप्तिकालों के मध्य किसी अभीष्ट काल में उन दोनों लग्नों के समाप्तिकालान्तर द्वारा त्रैराशिक से स्पष्ट किया गया लग्नभोगांश, क्या बात है– साम्पातिक काल द्वारा लग्नसारणी से स्पष्ट किए गए लग्नभोगांश से अक्सर अन्तरित रहता है?

(iv)–कई बार भाव स्पष्ट करने पर देखा गया है कि– किसी एक ही राशि में एक से अधिक भाव आ जाते हैं, जबकि कुछ राशियों को कोई भाव नहीं मिलता। इस स्थिति में जन्मांगचक्र (राश्यनुसारी जन्मकुण्डली) और भावचक्र में भारी असमानता होती है। क्या तब परम्परानुसार जन्मांगचक्र द्वारा किया जाने वाला फलादेश भावचक्र-फलादेश से सर्वथा भिन्न नहीं होगा?

श्री नरेन्द्रप्रताप सिंह गौर,
मोहनलाल गंज, लखनऊ–(उ.प्र.)।

समाधान–(i)– लग्न और दशम का परमाल्प एवं परमाधिक अन्तर अक्षांश–भेद से भिन्न–भिन्न होता है। इन दोनों के अन्तर की परमता और परमाल्पता $66^0–34'$ अक्षांशीयस्थलों पर ही उलपब्ध होती है। यहां ($66^0–34'$ अक्षांशीय स्थलों पर) इनका परमान्तर 6 राशितुल्य और परमाल्पान्तर शून्य है। जब इन स्थलों पर कदम्बबिन्दु (क्रान्तिवृत्त का पृष्ठीय केन्द्र) खमध्यस्थ होता है, तब यहां पूरा क्रान्तिवृत्त क्षितिजलग्न होने से लग्न और दशम का अन्तर समाप्त हो जाता है।

(ii)– प्रश्न-ज्योतिष के उद्गम एवं विकास का श्रेय यवनों को है। इस ज्योतिषप्रणाली में उन्होंने जो दृष्टिपद्धति दी है, उसे यावन-दृष्टिपद्धति (ताज़िक-दृष्टिपद्धति) कहा गया है। जातकपद्धति में प्रयुक्त दृष्टिपद्धति भारतीय कही गई है। यह आश्चर्य की बात है– हिन्दू ज्योतिषी प्रश्नज्योतिष में भी भारतीय दृष्टिपद्धति का ही प्रयोग करते हैं। हां–कुछेक दैवज्ञ प्रश्न ज्योतिष में यावनदृष्टि का प्रयोग अवश्य करते है; लेकिन इनकी संख्या नगण्य है। कालिदास ने यावन (ताजिकोक्त) दृष्टि को यावनदर्शन भान्ति सर्वत्र अग्राह्य लिखा है–

विलोकनं व्योमसदाम् ऋतं सदा वदन्त्यदो जातका शास्त्रभाषितम्।
दैवं हि सर्वत्र तु ताजिकोदितं यदासुरं तन्निज–दर्शन–प्रमम्।।-*(ज्योतिर्विदाभरण)*

(iii)– दो निकटवर्त्ती लग्नों का उदयकालान्तर आपके अभीष्ट लग्न का स्वोदयकाल है। इस स्वोदयकाल से त्रैराशिक द्वारा ज्ञात उसके भोगांश (राशि–अंशादि) स्थूल होंगे, क्योंकि राशियों के स्वोदयकाल ज्याप्रकृतिक हैं। जिस प्रकार 45 अंश की ज्या को तीन से भाग देकर 15 अंश की ज्या नहीं जानी जा सकती, उसी प्रकार राशिस्वोदयकाल को 3 से भाग देकर आप लग्नराशि के 10 अंशों का यथार्थ उदयकाल नहीं जान सकते, क्योंकि लग्न का एक अंश जितने समय में उदित होता है, उसके दुगुने, तिगुने आदि समय में उसके क्रमशः दो, तीन आदि अंश उदित नहीं होते। उसके लगभग प्रत्येक अंश के उदयकाल में थोड़ा–थोड़ा अन्तर रहता है।

आज से लगभग 50–60 वर्ष पहिले, जबकि साम्पातिक काल के 4–4 या 1–1 मिनटान्तर पर लग्न बतलाने वाली सारणियों का प्रयोग विरल था, तब अनेक दैवज्ञ लोग **"तत्काले सायनार्कस्य भुक्त–भोग्यांश संगुणात्......"** पद्धति से लग्नों के स्वोदयकालों द्वारा ही अनुपात से इष्टकालिक लग्न स्पष्ट किया करते थे। इस प्रकार किया गया स्पष्टलग्न भी स्थूल ही होता था।

स्पष्ट है, साम्पातिककाल–सारणी द्वारा इष्टकालिक साम्पातिक काल से साधित लग्नभोगांश ही सूक्ष्म है; क्योंकि ये सारणियां लग्न के प्रत्येक अंश या अंशभाग के वास्तविक (सूक्ष्म) उदयकाल के आधार पर मूल सूत्र से बनाई गई है।

(iv)– यह समस्या विषमविभागात्मक भावसाधन-पद्धति से उत्पन्न है। विषमविभागात्मक भाव भी यावन हैं। इसकी आचार्य कमलाकर ने भर्त्सनापूर्वक कड़ी निन्दा की है। इस पद्धति से तो अधिक अक्षांशीय स्थलों पर एक ही राशि में चार–चार भाव समाविष्ट हो जाते हैं, जिससे बेचारी दूसरी अनेक राशियों को कोई भी भाव नहीं मिल पाता। ऐसी स्थिति में अनेकदा कुछ ग्रहों को किसी भी भाव का आधिपत्य भी नहीं मिलता। **स्पष्ट है**–यह विषमविभागात्मक प्रणाली दोषपूर्ण है। समानविभागात्मक भाव (प्रत्येक भाव को 30 अंश का मानने वाली) प्रणाली में यह अराजकता कहीं भी पैदा नहीं होती। (विशेष स्पष्टीकरण के लिए मेरी पुस्तक *'विश्वलग्नसारणी'* में विषम विभागात्मक भाव–एक समीक्षा'– निबन्ध पढ़ें)।

समस्या–"सूर्योदयानन्तर त्रिमुहूर्त्ताधिकव्यापिनी श्रावणपूर्णिमा के दिन अपराह्ण या प्रदोष में रक्षाबन्धन करना चाहिए। यदि पूर्णिमा त्रिमुहूर्त से कम हो और पहिले दिन प्रदोषकाल भद्रारहित हो तो वहीं रक्षाबन्धन करना चाहिए"– ऐसा धर्मशास्त्र का निर्णय है। जबकि, मध्याह्न के बाद भद्रा, व्यतिपात आदि को शुभ माना

गया है;- (दिनार्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्'), तब रक्षाबन्धन के प्रसंग में अपराह्ण एवं प्रदोष के समय भद्रा को दोषकारक क्यों बताया है ?

श्री अम्बादत्त शर्मा, शास्त्री,
ग्राम पलाना, पो.ओ. ब्यार,
शिमला (हिमाचल प्रदेश)।

समाधान– "दिनार्धोत्तरं **विष्टिपूर्वं च शस्तम्**"– नियम के होते हुए भी "**भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा**"– यह वाक्य मीमांसा–नियमानुसार ("**व्यर्थं सत् किंचिज्ज्ञापयति**" के अनुसार) स्पष्ट करता है कि-" **दिनार्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्**" नियम (वाक्य) श्रावणी (रक्षाबन्धन) और फाल्गुनी (होलिकादहन) के लिए नहीं है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि– भद्रापरिहार वाले अन्य वाक्य भी श्रावणी–फाल्गुनी के लिए नहीं हैं। स्पष्ट है– श्रावणी–फाल्गुनी दोनों के लिए यथाशक्य सर्वथा भद्रारहित काल ही अभीष्ट है।

समस्या – **क्या कारण है, आप अपने पंचांग में गुरु–शुक्र तथा अन्य ग्रहों के लोप–दर्शन का यथार्थ काल न बतलाकर** विगत कुछ वर्षों से **केवल सूर्योदय–सूर्यास्तकाल ही बतलाने लगे हैं ?**

प्रो. अशोक शर्मा,
अशोक नगर (म.प्र.)

समाधान– ग्रहों के लोप–दर्शन का निर्णय इनके उन्नतांश के आधार पर किया जाता है। इनके लोप–दर्शन–कालिक उन्नतांश, जिनके आधार पर इनके लोप और दर्शन हमें दृष्टिगोचर होते है, इनका पूर्वी या पश्चिमी क्षितिज से सूर्योदय या सूर्यास्तकालीन दृग्वृत्तीय अन्तर है। स्पष्ट है– उन्नतांश की परिभाषानुसार इन ग्रहों का लोप या दर्शन इनकी प्रातः या सायं के समय (सूर्योदय या सूर्यास्तकाल में) पूर्वी या पश्चिमी क्षितिज से उन्नतांशतुल्य उन्नति पर निर्भर है। यदि इनकी यह उन्नति उस समय इनके अपने उन्नतांशों से कम होगी तब ये लुप्त (अदृश्य) होंगे, अन्यथा दृश्य। इससे स्पष्ट है कि–इनके लोप–दर्शन (अदृश्य एवं दृश्य होने) का निर्धारक समय प्रातः एवं सायंकाल ही है; अन्य काल नहीं।

अपि च– इन (गुरु–शुक्र) ग्रहों के लोप–दर्शन–काल की इस उन्नतांश–पद्धति के आविष्कारक, **श्री वेंकटेशकेतकर** ने भी अपनी पुस्तक **'ज्योतिर्गणित'** में इन ग्रहों के उन्नतांशों के निर्णयार्थ प्रयुक्त सूर्यग्रहयुति–काल, ग्रहमन्दफल, सन्ध्यारुणसंस्कार एवं दृक्कर्म आदि के कोष्ठकों में इन तिथ्यात्मक पदार्थों को अधिकतर एकदशमलवांक तक ही स्वीकार किया है। यहां द्वितीय दशमलवांक के त्याग के कारण इन कोष्ठकों से साधित उन्नतांशकाल में घण्टों का अन्तर आ जाना सर्वथा उपपत्तिसिद्ध है। किंच, कोष्ठकगत इन मन्दफलादि को इष्टकालिक बनाने के लिए अनुपात का प्रयोग भी अशुद्धि पैदा करता है, क्योंकि ये सभी फल ज्याप्रकृतिक हैं। इससे स्पष्ट है, **केतकर** ने भी इन ग्रहों के लोप–दर्शन के निर्णय में तिथि (तारीख) को ही ज्ञातव्य माना है, घण्टा–मिनटात्मककाल की उन्होंने उपेक्षा की है। उन्होंने ज्योतिर्गणित में दिए शुक्र–लोपदर्शन के कालसाधक उदाहरण में भी उसके लोपदर्शन की तिथिमात्र का ही साधन दिया है, वहां घटी–पलादि का निर्देश बिल्कुल नहीं है।

तथाच–चन्द्रदर्शन (अमा के अनन्तर प्रथम चन्द्रदर्शन) का परम्परागत एवं शास्त्रोक्त काल (सूर्यास्तसमय) भी उपरोक्त विवेचन की स्पष्ट पुष्टि करता है। चन्द्रदर्शन का सर्वसम्मत काल हमेशा

सूर्यास्तकाल ही माना गया, जब कि चन्द्र के 12 अंशात्मक उन्नतांश, जो चन्द्रदर्शन के निर्णायक माने गए हैं, दिन के किसी भी क्षण में घटित हो सकते हैं।

किंच–सभी सिद्धान्तज्ञ एवं करणग्रन्थकार यह मानते हैं कि–ग्रहों के लोप–दर्शन की गणितसिद्ध तिथि से भी ग्रह का वास्तव लोप–दर्शन एक–दो दिन व्यभिचरित हो सकता है। अतः उसके (ग्रह–लोप–दर्शन के) काल को यथार्थता से घण्टा–मिनटात्मक रूप में व्यक्त करने का आग्रह अतार्किक है।

यह भी जान लेना चाहिए–गुरु–शुक्र के अलावा शेष तीन ताराग्रहों (मंगल,बुध, शनि) के लोपदर्शन की तिथि के निर्णय में भी यही सिद्धान्त लागू होता है। ग्रह के उदयास्तकाल का सूर्य के उदायास्तकाल से अन्तर, जिस दिन गणितानुसार ग्रह के **कालांशमिनट तुल्य** सिद्ध हो, उसी दिन प्रातः या सायं उस ग्रह का (सूर्य के सापेक्ष उसकी पूर्वापर स्थिति अनुसार) लोप–दर्शन या दर्शन–लोप पंचांगकारों को पंचांग में लिखना चाहिए। यहीं युक्तियुक्त है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि– अधिकतर पंचांगों में दिया जाने वाला ग्रह–लोप–दर्शन का घटी–पलात्मक या घण्टा–मिनटात्मक काल भ्रामक है।

समस्या – आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्र बनने लगे हैं । कम्प्यूटरों द्वारा की जाने वाली भविष्यवाणियों की सत्यता के बारे में आपका क्या विचार है ?

श्री पी.सी असधीर,
3353/15–डी, चण्डीगढ़ (यू.टी.)

समाधान– कम्प्यूटरों द्वारा की जाने वाली भविष्यवाणियों में वे सभी दोष/न्यूनताएं होती हैं, जो किसी ज्योतिषी की भविष्यवाणियों में अक्सर पाई जाती है, क्योंकि किसी ज्योतिषी द्वारा निर्दिष्ट सिद्धांतों के आधार पर बने प्रोग्रामिंग के अनुसार ही तो कम्प्यूटर भविष्यफल प्रिण्ट करता है। अलग–अलग प्रोग्रामिंग वाले कम्प्यूटर्ज एक ही जातक के बारे में अलग–अलग भविष्यफल देते हैं, जिनमें कई बार तो कोई समानता ही नही होती। क्योंकि, फलादेश के विभिन्न सिद्धांतों में परस्पर काफी विरोध है, अतः उनके अनुसार तैयार किए गए अलग–अलग सॉफ्टवेयर्ज भी परस्पर विरोधी परिणाम देते हैं। फलादेश में इस हास्यापद विरोध से बचने के लिए ज्योतिषी लोग कम्प्यूटर का प्रयोग अब केवल जन्मपत्र की गणित के लिए करने लगे हैं, फलादेश के लिए उन्होंने इसकी सेवाएं उपलब्ध कराना छोड़ दिया है।

समस्या –"मार्त्तण्ड पंचांग में मातामह–मातामही का महालयश्राद्ध आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को पार्वण के रूप में अपराह्ण में दर्साया होता है, जबकि यह संगवव्यापिनी प्रतिपदा में होना चाहिए ?

आदित्य भट्ट,
होशंगाबाद (म.प्र.),

समाधान– निर्णयसिन्धुकार ने मातामह का महालयश्राद्ध पार्वण बतलाया है, लेकिन **'निर्णयदीप'** का वाक्य उद्धृत कर इसे संगव में करने के लिए भी कहा है। इस प्रकार दोनों मतों को उद्धृत कर उन्होंने यह लिखा है–**"अत्र समूलत्वं मृग्यम्"** अर्थात् इस द्वैमत्य का मूल ढूँढना चाहिए–

"आश्विनशुक्ल–प्रतिपदि दौहित्रस्य मातामहश्राद्धमुक्तम्......... इयं (प्रतिपद्) संगवव्यापिनी ग्राह्या" इति "निर्णयदीपे" उक्तम्। "प्रतिपद्याश्विने शुक्ले दौहित्रस्त्वेकपार्वणम्। श्राद्धं मातामहं कुर्यात् सपिता संगवे सदा।।

जातमात्रोऽपि दौहित्रो जीवत्यपि मातुले। प्रातःसंगवयोर्मध्ये याश्वयुक् प्रतिपद् भवेत्।।" इति। अत्र समूलत्वं मृग्यम्।"-(निर्णयसिन्धु)।

निर्णयसिन्धु के उपरोक्त उद्धरण में **"अत्र समूलत्वं मृग्यम्"** की व्याख्या में म.म. **नित्यानन्द पन्त** ने **"वर्षकृत्यप्रदीप"** में स्पष्ट किया है कि-**"निर्णयदीप"** के इस मत का कि-"मातामहश्राद्ध संगव में किया जाए" मूल अन्वेष्टव्य है. अतः मातामह का महालयश्राद्ध पार्वण (अपराह्णव्यापिनी प्रतिपदामें) करना चाहिए, यही निर्णयसिन्धुकार का अभिप्राय है–

"अत्र समूलत्वं विमृग्यम् इति सिन्धुः, पार्वणत्वादपराह्णव्यापिनी ग्राह्या इति भावः।"-(वर्षकृत्यप्रदीप)

यहां धर्मसिन्धुकार का भी मत है कि-मातामह के महालय में अपराह्णव्यापिनी प्रतिपदा लेनी चाहिए (अर्थात् यह श्राद्ध पार्वण होना चाहिए)–, यह अधिकतर आचार्यों का मत है, संगवव्यापिनी प्रतिपदा में यह होना चाहिए– यह मत बहुत कम आचार्यों का है–

"इयं प्रतिपदपराह्णव्यापिनी ग्राह्या–इति बहवः। संगवव्यापिनीति केचित्।"-(धर्मसिन्धु)

इस प्रकार अधिकतर विद्वानों के अभिप्राय के आधार पर हम पंचांग में इस श्राद्ध को पार्वणरूप में अपराह्णव्यापिनी प्रतिपदा में ही निर्दिष्ट करते हैं।

प्रसंगवश यहाँ यह भी जान लेना चाहिए कि-ऐसे दौहित्र को, जिसका पिता जीवित हो, इस श्राद्ध में पिण्डदान नहीं करना चाहिए।

समस्या– 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में देवशयन में भी विवाहादि मुहूर्त दिए जाते हैं, जबकि मुहूर्तशास्त्र में इस काल को शुभकृत्यों में वर्जित करना लिखा है ?

पंडित सांवर मल शास्त्री,
नोहर, हनुमानगढ़ (राज.)

समाधान–पंजाब आदि प्रदेशों में परम्परया इस काल में विवाहादि कृत्य किए जाते हैं। मुहूर्तशास्त्र ने परम्परा को भी शास्त्रवत् मान्यता देने की अनुमति दी है– **"दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्"।-(वराह)**

समस्या– ग्रहणशूल में खान–पान वर्जित माना गया है। लेकिन ग्रहणशूल तो ग्रहण के पूर्वदिन से लेकर अनन्तरवर्त्ती तीन दिन तक (कुल पांच दिन) विद्यमान रहता है, इतने दिनों तक खाना–पीना छोड़पाना कैसे सम्भव है ?

शेर सिंह राणा,
रामपुर, रूड़की (हरिद्वार) (उ.खं.)।

समाधान–आप भ्रान्त्या ग्रहणशूल को ग्रहणसूतक समझ रहे हैं। ग्रहणसूतककाल ग्रहणारम्भ से 9 या 12 घण्टा पूर्व प्रारम्भ होकर ग्रहणसमाप्ति तक रहता है। इस अवधि में बाल, वृद्ध, रोगियों के अलावा अन्य का खाना–पीना निषिद्ध है। ग्रहणशूल-काल में तो विवाहादि शुभकृत्य वर्जित होते हैं।

बार्हस्पत्य(गौरव)संवत्सर–साधन

लेखक – प्रियव्रत शर्मा,

वि. संवत् 2071 में गुरुमानेन संवत्सर (बार्हस्पत्य–संवत्सर=गुरु–संवत्सर) 'प्लवङ्ग' था या 'कीलक'– इस विषय में पंचांगकार (उ. भारतीय पंचांगकार) एकमत नहीं थे। कुछ पंचांगकारों ने इसे 'कीलक' लिखा था और अधिकतर पंचांगकारों ने 'प्लवङ्ग' । इस मतभेद से जनता में दुविधावश व्याकुलता रही; जिसके कारण इस बारे एक प्रामाणिक निर्णय के लिए लोगों से हमें भारी संख्या में पत्र प्राप्त हुए। उनकी इस दुविधा का समाधान मैंने एतत्सम्बन्धी सुविस्तृतमूल गणितप्रक्रिया द्वारा प्राप्त कर यहां निर्दिष्ट किया है। साथ ही भविष्य में पुनः ऐसी दुविधा उत्पन्न न हो, तदर्थ सन् 2050 ई. तक के बार्हस्पत्य–संवत्सरों के मिनट तक शुद्ध प्रारम्भ/समाप्तिकाल भी परिगणित कर यहां कोष्ठक (2) में दे दिए हैं। किंच–विक्रमसंवत् के परवर्त्ती अभीष्ट अन्य किसी भी वर्ष में घटित होने वाले गुरु–संवत्सर की संज्ञा और उसके सूक्ष्मतम प्रारम्भ/समाप्तिकाल जानने का एक बालबोध सरलतम प्रकार भी बतलाया है। गुरु–संवत्सर के बारे में मत–मतान्तर तथा अन्य बहुत सी ज्ञातव्य बातें भी आप इस मौलिक लेख में पढ़ेंगे–

गुरु–संवत्सर का निर्णय

गुरु–संवत्सर मुख्यतः दो प्रकार का है–

(i) विजयादि संवत्सर– ये संवत्सर 60 हैं, जिनके नाम क्रमशः विजय, जय...... आदि हैं। (स्पष्टता के लिए 'कोष्ठक (1)' देखें)

(ii) कार्त्तिकादि संवत्सर–ये कार्त्तिक, मार्गशीर्ष, पौष आदि नाम वाले 12 संवत्सर हैं।

विजयादि संवत्सरों का प्रयोग पंचांगों में अपेक्षाकृत कहीं अधिक है। अतः इसका हम पहिले (प्रामुख्येण) विवेचन करेंगे–

विजयादि बार्हस्पत्य–संवत्सरों का मूल **'सूर्यसिद्धान्त'** है । सूर्यसिद्धान्तानुसार सृष्ट्यादि एवं कलियुगादि में सभी मध्यमग्रह मेष के प्रारम्भबिन्दु (0^रा.–00^अं.–00^क.–00^वि.) पर थे। वहाँ से आज तक (हमारे अभीष्ट वि. संवत्, सृष्टिसंवत् या कलिसंवत् तक) बृहस्पति जितने भगण भोगता है*, उसे 12 से गुणने पर गुरु द्वारा सृष्ट्यादि से अभीष्ट सृष्टिसंवत् या कलिसंवत् तक भुक्त राशिसंख्या प्राप्त हो जाती है, उसे षष्टि–तष्टित करें (अर्थात् उसे 60 से भाग देकर, लब्धि को उपेक्षित कर शेष राशि एवं अंशादि स्वीकार करें)। यहां राशिसंख्या 60 से कम होगी– यह तो स्पष्ट है। राशिसंख्या से हमें ज्ञात हो जाएगा कि–हमारे अभीष्ट सृष्टि या कलिसंवत् के प्रारम्भ* में किस नाम वाला विजयादि गुरु–संवत्सर है, **(स्पष्टता के लिए कोष्ठक (1) देखिए,।)**

** 12 राशियों का एक भगण होता है। ग्रह एक भगण भोगने (चलने) में जितना काल लेता है, उसे उस ग्रह का भगणकाल या भगणभोगकाल कहा जाता है।*

** यहाँ सृष्टि, कलि एवं विक्रमसंवत् का वास्तव प्रारम्भ मध्यम मेष–संक्रांतिकाल से माना गया है।*

सूर्यसिद्धान्त का निम्नांकित श्लोक यही बात बतला रहा है–

"द्वादशघ्नाः गुरोः याता भगणाः वर्त्तमानकैः।
राशिभिः सहिताः शुद्धाः षष्ट्या स्युः विजयादयः।।"

सृष्ट्यादि एवं कल्यादि–दोनों में मध्यम गुरु अन्य ग्रहों के साथ मेष आदि में था (अर्थात् वह $0^{रा}-00^{अं.}-00^{क}-00^{वि}$ पर था) तथा वहां प्रथम गुरुसंवत्सर **'विजय'** प्रारम्भ हो रहा था। अतः हम सुविधा (लाघव) के लिए बहुत लम्बी संख्या वाले सृष्टिसंवत् की जगह यहाँ अपेक्षाकृत अल्प संख्या वाले कलिसंवत् के माध्यम से अभीष्ट वि.संवत् के प्रारम्भकालिक विजयादि संवत्सरों का प्रारम्भकाल ज्ञात करेंगे। **हम उदाहरण के तौर पर कलिसंवत् 5115 (वि.सं. 2071) के प्रारम्भ में कौन–सा गुरुसंवत् कितना भुक्त था , यह ज्ञात करेंगे–**

गुरु एक महायुगीय वर्षों (43,20,000) में मध्यम 36 4,220 भगण भोगता है तो वह 5115 कलि संवत्–वर्षों में कितने भगण भोगेगा; यह अनुपात द्वारा इस प्रकार ज्ञात होगा–

2071 विक्रमाब्द तक गुरु–भुक्त भगण $= \frac{3,64,220 \times 5115}{43,20,000}$

2071 विक्रमाब्द तक गुरु–भुक्त भगण $= 431.246597222$

2071 विक्रमाब्द तक गुरु–भुक्त राशियां $= 431.246597222 \times 12$

2071 विक्रमाब्द तक गुरु–भुक्त राशियां $= 5174.95916666$

इसे षष्टि-तष्टित करने पर "$14^{रा.}-28^{अं.}-46^{क.}-30^{वि.}$" प्राप्त हुआ।

अर्थात् वि.सं. 2071 के प्रारम्भ में मध्यम मेष संक्रांति के समय* **[13घं. 24मि. (भा.स्टैं.टा) पर] 16 अप्रैल 2014 ई. को 15 वां ('प्लवङ्ग' नामक) गुरुसंवत्सर $28^{अं.}-46^{क.}-30^{वि}$ बीत चुका था (यानि 'प्लवङ्ग' संवत्सर के प्रारम्भक्षण के बाद मध्यम गुरु $28^{अं.}-46^{क.}-30^{वि}$ भोग चुका था) ।**

ध्यान दें– हमने गुरु की मध्यमगति के आधार पर त्रैराशिक द्वारा इस **'प्लवङ्ग'** संवत्सर का प्रारम्भक्षण ज्ञात किया है°, जो 5 मई, 2013 ई. को 6 घं. 32 मि. (भा.स्टैं.टा.) है। इसका निष्कर्ष यह है कि–यह **'प्लवङ्ग' संवत्सर** वि. संवत् 2070 में 5 मई, 2013 ई. को 6 घं. 32 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ हुआ था।

***** *वि. संवत् 2071 के प्रारम्भ में मध्यम मेष संक्रान्ति की यह तारीख और समय सूर्यसिद्धान्तानुसार परिगणित (Calculate) किया गया है। विस्तारभय से इसकी गणित यहां नहीं दर्साई गई है।*

° *इस त्रैराशिक का स्पष्टीकरण इस प्रकार है –*

एक राशि (30°) भोगने में मध्यमगुरु 361.0267 दिन लेता है तो $28^{अं}-46^{क}-30^{वि}$ भोगने में कितना समय लेगा ? इस त्रैराशिक से प्राप्त दिनादि–संख्या को वि. सं. 2071 के मध्यम मेष संक्रान्तिकाल में से घटा दिया गया है।

कोष्ठक–(1)

विजयादि 60 संवत्सरों के क्रमांक एंवम् नाम

क्रमांक	नाम	क्रमांक	नाम	क्रमांक	नाम	क्रमांक	नाम	क्रमांक	नाम
1	विजय	13	विश्वावसु	25	पिंगल	37	शुक्ल	49	वृष
2	जय	14	परामव	26	कालयुक्त	38	प्रमोद	50	चित्रमानु
3	मन्मथ	15	प्लवंग	27	सिद्धार्थी	39	प्रजापति	51	सुमानु
4	दुर्मुख	16	कीलक	28	रौद्र	40	अंगिरा	52	तारण
5	हेमलम्ब	17	सौम्य	29	दुर्मति	41	श्रीमुख	53	पार्थिव
6	विलम्ब	18	साधारण	30	दुन्दुभि	42	माव	54	व्यय
7	विकारी	19	विरोधकृत्	31	रुधिरोद्गारी	43	युवा	55	सर्वजित्
8	शार्वरी	20	परिघावी	32	रक्ताक्ष	44	घाता	56	सर्वधारी
9	प्लव	21	प्रमादी	33	क्रोधन	45	ईश्वर	57	विरोधी
10	शुमकृत्	22	आनन्द	34	क्षय	46	बहुधान्य	58	विकृत
11	शोमन	23	राक्षस	35	प्रभव	47	प्रमाथी	59	खर
12	क्रोधी	24	नल	36	विमव	48	विक्रम	60	नन्दन

मध्यम गुरु द्वारा इष्टकाल तक भुक्त राशिसंख्या को 60 से तष्टित करने पर शेष बची राशिसंख्या को यहां 'क्रमांक' (संवत्सर–क्रमांक) लिखा गया है। इन क्रमांकों को 12 से तष्टित करने पर शेष संख्या मध्यम गुरु की तात्कालिक राशि होगी। जैसे– 28 क्रमांक बतलाता है, मध्यम गुरु इस संवत्सर (रौद्र) के समय *28-12×2=4* राशि (अर्थात् कर्क राशि) में होगा।

प्लवंग संवत्सर (15 क्रमांक संवत्सर) का प्रारम्भ वि. संवत् 2070 में 5 मई, 2013 को 6 घं. 32 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर हुआ था– यह ज्ञात हो जाने पर अब हम भावी किसी भी अभीष्ट 16,17 आदि क्रमांकों वाले (कीलक, सौम्य, साधारण आदि) गुरु-संवत्सरों के प्रारम्भ होने का वर्ष–मास एवं काल आसानी से जान सकते हैं; क्योंकि हमे ज्ञात है, गुरु मध्यगति से एक राशि का भोग 361.0267 दिनों में करता है। अतः गुरु के इस राशि भोगकाल को इस प्लवंग संवत्सर के उक्त प्रारम्भकाल में उत्तरोत्तर जोड़ते रहने पर हमें अग्रिम संवत्सरों का यथार्थ प्रारम्भकाल ज्ञात होता जाएगा। इसी आधार पर हमने आगे पृष्ठ 303 पर कोष्ठक (2) में आगामी 37 वर्षों के (30 नवं., 2049 तक के) गौरव संवत्सरों के प्रारम्भकाल दिए हैं, जो मिनट तक शुद्ध हैं। इससे आप समझ गए होंगे– **किसी वर्ष के गौरव संवत्सर का प्रारम्भकाल जानने के लिए तत्पूर्ववर्त्ती वर्ष-सम्बन्धी गौरव संवत्सर के ज्ञात प्रारम्भकाल में 361.0267 दिन जोड़ देने मात्र से आपके अमीष्ट वर्ष में आगामी गौरव संवत्सर का सूक्ष्म प्रारम्भकाल (वर्ष, मास एवं समय ज्ञात हो जाएगा)।**

कोष्ठक–(2)

संवत् 2070 से 2107 वि. तक के बार्हस्पत्य संवत्सरों के प्रारम्भ और समाप्तिकाल

कलि संवत्	विक्रमी संवत्	वि. संवत् की कालावधि — प्रारम्भ: चैत्रशुक्ल–प्रतिपदा तारीख	वि. संवत् की कालावधि — समाप्त: चैत्रकृष्ण–अमा तारीख	गौरव–संवत्सर प्रारम्भ — संवत्सर–नाम*	समय (मा.स्टैं.टा.) घं. मि.	तारीख
5114	2070	11 अप्रैल, 2013 ई.	30 मार्च, 2014 ई.	प्लवग (15)	06 32	05 मई, 2013 ई.
5115	2071	31 मार्च, 2014 ई.	20 मार्च, 2015 ई.	कीलकं (16)	07 11	01 मई, 2014 ई.
5116	2072	21 मार्च, 2015 ई.	07 अप्रैल, 2016 ई.	सौम्य (17)	07 49	27 अप्रैल, 2015 ई.
5117	2073	8 अप्रैल, 2016 ई.	28 मार्च, 2017 ई.	साधारण (18)	08 27	22 अप्रैल, 2016 ई.
5118	2074	29 मार्च, 2017 ई.	17 मार्च, 2018 ई.	विरोधकृत् (19)	09 05	18 अप्रैल, 2017 ई.
5119	2075	18 मार्च, 2018 ई.	05 अप्रैल, 2019 ई.	परिधावी (20)	09 43	14 अप्रैल, 2018 ई.
5120	2076	06 अप्रैल, 2019 ई.	24 मार्च, 2020 ई.	प्रमादी (21)	10 21	10 अप्रैल, 2019 ई.
5121	2077	25 मार्च, 2020 ई.	12 अप्रैल, 2021 ई.	आनन्द (22)	11 00	05 अप्रैल, 2020 ई.
5122	2078	13 अप्रैल, 2021 ई.	01 अप्रैल, 2022 ई.	राक्षस (23)	11 38	01 अप्रैल, 2021 ई.
5123	2079	02 अप्रैल, 2022 ई.	21 मार्च, 2023 ई.	नल (24)	12 16	28 मार्च, 2022 ई.
5124	2080	22 मार्च, 2023 ई.	08 अप्रैल, 2024 ई.	पिंगल (25)	12 54	24 मार्च, 2023 ई.
5125	2081	09 अप्रैल, 2024 ई.	29 मार्च, 2025 ई.	कालयुक्त (26)	13 32	19 मार्च, 2024 ई.
5126	2082	30 मार्च, 2025 ई.	19 मार्च, 2026 ई.	सिद्धार्थी (27)	14 11	15 मार्च, 2025 ई.
5127	2083	20 मार्च, 2026 ई.	06 अप्रैल, 2027 ई.	रौद्र (28)	14 49	11 मार्च, 2026 ई.
5128	2084	07 अप्रैल, 2027 ई.	26 मार्च, 2028 ई.	दुर्मति (29)	15 28	07 मार्च, 2027 ई.
5129	2085	27 मार्च, 2028 ई.	15 मार्च, 2029 ई.	दुन्दुभि (30)	16 06	02 मार्च, 2028 ई.
5130	2086	16 मार्च, 2029 ई.	02 अप्रैल, 2030 ई.	रुधिरोद्गारी (31)	16 45	26 फरवरी, 2029 ई.
5131	2087	03 अप्रैल, 2030 ई.	23 मार्च, 2031 ई.	रक्ताक्ष (32)	17 23	22 फरवरी, 2030 ई.
5132	2088	24 मार्च, 2031 ई.	10 अप्रैल, 2032 ई.	क्रोधन (33)	18 02	18 फरवरी, 2031 ई.
5133	2089	11 अप्रैल, 2032 ई.	30 मार्च, 2033 ई.	क्षय (34)	18 40	14 फरवरी, 2032 ई.
5134	2090	31 मार्च, 2033 ई.	20 मार्च, 2034 ई.	प्रभव (35)	19 19	09 फरवरी, 2033 ई.
5135	2091	21 मार्च, 2034 ई.	08 अप्रैल, 2035 ई.	विभव (36)	19 57	05 फरवरी, 2034 ई.
5136	2092	09 अप्रैल, 2035 ई.	27 मार्च, 2036 ई.	शुक्ल (37)	20 36	01 फरवरी, 2035 ई.
5137	2093	28 मार्च, 2036 ई.	16 मार्च, 2037 ई.	प्रमोद (38)	21 14	28 जनवरी, 2036 ई.
5138	2094	17 मार्च, 2037 ई.	04 अप्रैल, 2038 ई.	प्रजापति (39)	21 53	23 जनवरी, 2037 ई.
5139	2095	05 अप्रैल, 2038 ई.	24 मार्च, 2039 ई.	अंगिरा (40)	22 31	19 जनवरी, 2038 ई.
5140	2096	25 मार्च, 2039 ई.	11 अप्रैल, 2040 ई.	श्रीमुख (41)	23 10	15 जनवरी, 2039 ई.
5141	2097	12 अप्रैल, 2040 ई.	01 अप्रैल, 2041 ई.	भाव (42)	23 48	11 जनवरी, 2040 ई.
5142	2098	01 अप्रैल, 2041 ई.	21 मार्च, 2042 ई.	युवा (43)	00 27	07 जनवरी, 2041 ई.
5143	2099	22 मार्च, 2042 ई.	09 अप्रैल, 2043 ई.	धाता (44)	01 05	03 जनवरी, 2042 ई.
5144	2100	10 अप्रैल, 2043 ई.	29 मार्च, 2044 ई.	ईश्वर (45)	01 44	30 दिसम्बर, 2042 ई.
5145	2101	30 मार्च, 2044 ई.	18 मार्च, 2045 ई.	बहुधान्य (46)	02 22	26 दिसम्बर, 2043 ई.
5146	2102	19 मार्च, 2045 ई.	06 अप्रैल, 2046 ई.	प्रमाथी (47)	03 01	21 दिसम्बर, 2044 ई.
5147	2103	07 अप्रैल, 2046 ई.	26 मार्च, 2047 ई.	विक्रम (48)	03 39	17 दिसम्बर, 2045 ई.
5148	2104	27 मार्च, 2047 ई.	14 मार्च, 2048 ई.	वृष (49)	04 18	13 दिसम्बर, 2046 ई.
5149	2105	15 मार्च, 2048 ई.	02 अप्रैल, 2049 ई.	चित्रभानु (50)	04 56	09 दिसम्बर, 2047 ई.
5150	2106	03 अप्रैल, 2049 ई.	23 मार्च, 2050 ई.	सुभानु (51)	05 35	04 दिसम्बर, 2048 ई.
5151	2107	23 मार्च, 2050 ई.	-- --	तारण (52)	06 13	30 नवंबर, 2049 ई.

* ब्रेकेटों (*Brackets*) में संवत्सर–क्रमांक हैं।

ध्यान रहे– गौरव संवत्सर का प्रारम्भकाल जानने के लिए सूर्यसिद्धान्तीय मध्यम गुरु में, जैसा कि– कुछ ज्योतिर्विद् करते हैं, बीज संस्कार नहीं करना चाहिए; क्योंकि ऐसा करने से सृष्ट्यादि या कल्यादि की सूर्यसिद्धान्तीय परिभाषा यानि वह क्षण जब सभी सूर्यादि मध्यमग्रह $0^{\text{रा}}-0^{\text{अं}}-0^{\text{क}}-0^{\text{वि}}$ होते हैं, खण्डित हो जाती है। यदि हम यहाँ गौरव संवत्सर–निर्धारण में दृक्सिद्ध स्थिति को आधार बनाना चाहेंगे तो हमें वह नया सृष्टि और कलि का आरम्भकाल ढूँढना होगा, जहाँ गुरु के साथ अन्य सभी ग्रहों के मध्यमभोग $0^{\text{रा}}-0^{\text{अं}}-0^{\text{क}}-0^{\text{वि}}$ हों। इसे ढूँढ पाना भागीरथ-प्रयत्नापेक्षी है । अगर हम ढूँढ भी लें, तो भी वह सूर्यसिद्धान्तीय सृष्ट्यादि/कल्यादि वर्षों से असह्यरूप में अन्तरित होगा, जिससे गौरव संवत्सर–निर्धारण में मध्यम गुरु को बीजसंस्कृत कर प्रयोग में लाना सर्वथा असैद्धान्तिक होगा। अतः गौरव संवत्सर–निर्णय में सूर्यसिद्धांतीय परिभाषा को ही आँख मून्दकर आगम–प्रामाण्येन प्रयोग में लाना होगा।

कोष्ठक (2) का प्रयोग समझ लेना चाहिए

इस कोष्ठक के प्रथम–द्वितीय कॉलमों में क्रमशः कलिसंवत् व वि.संवत् हैं, तीसरे, चौथे, कॉलमों में वि. संवत् के प्रारम्भ (चैत्रशुक्ल–प्रतिपदा) और समाप्ति (चैत्रकृष्ण–अमा) की अंग्रेजी तारीखें दी गई हैं। पाँचवें, छठे व सातवें कॉलमों में क्रमशः गौरवसंवत्सर–नाम एवं उसका क्रमांक, गौरव संवत्सर का प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.) तथा उसकी तारीख दी गई है।

परम्परया यह माना जा रहा है कि–वि. संवत् के प्रारम्भ (चैत्रशुक्ल–प्रतिपदा) में जो गौरव संवत्सर हो, उसे ही संवत् के अंत (चैत्र–अमा) तक धर्म–कर्म–संकल्पादि में प्रयुक्त किया जाए। इस कोष्ठक में दिए गए वि. संवत् के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखों तथा गौरव संवत्सरों के प्रारम्भक्षणों से यह आसानी से जाना जा सकता है कि–किस वि. संवत् के प्रारम्भ में कौन सा गौरव संवत्सर पड़ता है*।

यह परम्परा कि "वि. संवत् के प्रारम्भ में (चैत्र शुक्ल–प्रतिपदा के समय) जो गौरव संवत्सर विद्यमान हो, उसे ही वर्षान्त (वि.संवत् के अन्त) तक (यानि चैत्र–अमा तक) संकल्पादि में प्रयुक्त किया जाए, भले ही उस संवत् में दूसरा गौरव संवत्सर भी प्रवृत्त हो जाए"– वस्तुतः विचारणीय है। इस परम्परा का उद्गम किस शास्त्रनिर्देश से हुआ है,– मैं नहीं जानता। क्योंकि प्रान्तभेद से वि. संवत् का प्रारम्भ भिन्न–भिन्न मासों में होता है,✦ जिससे इन पंचांगों में गौरव संवत्सर अनेकदा मतभेद का कारण बना रहता है। मेरा मत है – संवत् के आदिम क्षण में वर्तमान गौरव संवत्सर को वर्षान्त तक प्रवृत्त मानने की परम्परा शायद इसलिए बनी होगी, क्योंकि संवत्सर के सूक्ष्म(यथार्थ)प्रारम्भक्षण के साधन की पंचांगकारों ने उपेक्षा की। अधिकतर पंचांगों में संवत्सर का प्रारम्भक्षण निर्दिष्ट नहीं रहता– इससे भी मेरे

****देखिए–वि. सं. 2071 के प्रारम्भ में 'प्लवंग गौरव संवत्सर' था, यह इस कोष्ठक से स्पष्ट है । अतः यह स्पष्ट है, वि. संवत् 2071 के पंचांग में 'प्लवंग' का ही निर्देश होना चाहिए था, 'कीलक' का निर्देश करने वाले पंचांगकार भ्रान्त थे।***

✦ *जैसे– उ. भारत में इसका प्रारम्भ चैत्र शुक्ल–प्रतिपदा से और गुजरात, महाराष्ट्र आदि में कार्तिक शुक्ल–प्रतिपदा से माना जाता है।*

इस मत की पुष्टि होती है। यहाँ यही नियम होना चाहिए– प्रत्येक गौरव संवत्सर का प्रारम्भ उसके अपने गणितागत काल से ही माना जाए, संकल्पादि में उसी का प्रयोग हो। इस नियम के अनुसरण से इस विषय का प्रान्तभेदजन्य मतभेद तो समाप्त होगा ही, साथ ही गौरव संवत्सर को भी गलत परम्परा से आरोपित इस कल्पित कालक्षेत्र के स्थान पर उसका अपना वास्तव कालक्षेत्र भी प्राप्त हो जाएगा। इससे "एक वि.संवत् में दो गौरव संवत्सरों की प्रवृत्ति से उत्पन्न एक गौरव संवत्सर के लोप की घटना" भी समाप्त हो जाएगी।

अब हम दूसरे प्रकार के 'गौरव संवत्सर' का संक्षिप्त विवरण देकर इस विषय को विराम देंगे–

जैसा कि–पहले बतला चुके हैं–दूसरे प्रकार का गौरव संवत्सर **कार्तिक, मार्गशीर्ष** आदि 12 चान्द्रमासों की संज्ञाएं रखता हैं। **इसकी इन संज्ञाओं का आधार स्पष्ट गुरु के सूर्यकैन्द्रिक उदयकालिक नक्षत्रों पर निर्भर है, जोकि इस प्रकार है–**

(i) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि कृत्तिका, रोहिणी में हो तो गौरव संवत्सर **कार्तिक** प्रारम्भ ।
(ii) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि मृग., आर्द्रा में हो तो गौरव संवत्सर **मार्गशीर्ष** प्रारम्भ ।
(iii) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि पुन., पुष्य में हो तो गौरव संवत्सर **पौष** प्रारम्भ ।
(iv) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि आश्ले., मघा में हो तो गौरव संवत्सर **माघ** प्रारम्भ ।
(v) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि पू. फा.,उ.फा., हस्त में हो तो गौरव संवत्सर **फाल्गुन** प्रारम्भ ।
(vi) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि चित्रा, स्वाती में हो तो गौरव संवत्सर **चैत्र** प्रारम्भ ।
(vii) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि विशा., अनु. में हो तो गौरव संवत्सर **वैशाख** प्रारम्भ ।
(viii) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि ज्येष्ठा, मूल में हो तो गौरव संवत्सर **ज्येष्ठ** प्रारम्भ ।
(ix) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि पू. षा., उ. षा. में हो तो गौरव संवत्सर **आषाढ़** प्रारम्भ ।
(x) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि श्रव., धनि. में हो तो गौरव संवत्सर **श्रावण** प्रारम्भ ।
(xi) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि शत., पू.भा., उ.भा. में हो तो गौरव संवत्सर **भाद्रपद** प्रारम्भ ।
(xii) लुप्त(अस्त)गुरु का उदय यदि रेव. अश्वि., भर. में हो तो गौरव संवत्सर **आश्विन** प्रारम्भ ।

इन सभी (विजयादि तथा कार्तिकादि) गौरव संवत्सरों का फल 'बृहत्संहिता' में देखना चाहिए।

क्या दैवज्ञ आपकी आयुसीमा बतला सकते हैं ?

[विगत तीन वर्षों से श्रीमार्त्तण्डपंचांग में चली आ रही "आयुसाधन" लेखमाला का उपसंहार]

(प्रियव्रत शर्मा)

जीवनावधि का अज्ञान मानव के लिए एक प्रच्छन्न वरदान है। जीवन के अन्तिम क्षण के यत्किंचित् पूर्वाभास में भी पलभर जीना उसे दूभर हो जाता है, पुनरपि वह किसी विशेष कारणवश अपनी जीवनावधि के पूर्वाभास के लिए अनेकदा दैवज्ञों की शरण में जाता देखा गया है। एतदर्थ मैंने जातक की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के आधार पर उसकी आयु के निर्धारण की ज्योतिष–शास्त्रीय कुछ विधाओं का विश्लेषण इस लेखमाला में किया है। यहां पाठकों को मैं यह बतलाना चाहता हूँ, कि ज्योतिष–शास्त्र भविष्य-प्रकाशन की अन्य असंख्य विधाओं की भान्ति जातक की जीवनावधि के निर्धारण में भी सर्वथा अक्षम है;– यह मुझे पूरी तरह स्पष्ट है। तथापि अपने अनेक पाठक-जिज्ञासुओं को, जो इस विषय में भ्रान्त-धारणा लिए हुए हैं, यथार्थता से अवगत करा देने के लिए संवत् 2069 वि. के **'श्री मार्त्तण्ड पंचांग'** से एतत्–सम्बद्ध मत–मतान्तरों को विवेचनपूर्वक उद्धृत करना मैंने प्रारम्भ किया है। यह विवेचन विगत तीन वर्षों तक पंचांग में सप्रपंच प्रकाशित हुआ है। 'आयु–निर्णय' की गणितात्मक पद्धति, जिसे दैवज्ञ लोग सर्वाधिक महत्त्व देते हैं, मैंने इन वर्षों में विस्तार से स्पष्ट की है। जैमिनि, सत्याचार्य, यवन एवं केशव के गणितीय-आयुसाधन के चार प्रकार मैं सुस्पष्ट कर चुका हूँ। पाठक यदि इन प्रकारों में प्रयुक्त निर्णायक पदार्थों को सामान्य दृष्टि से भी देखेंगे, तो उन्हें इनके परिणामों में भारी विषमता आपाततः स्पष्ट लक्षित होगी। किसी एक ही जातक की आयु की अवधि इनसे कदापि एक रूप में नहीं आ सकती– यह इनमें प्रयुक्त परस्पर सर्वथा विजातीय तत्त्वों पर दृष्टिपातमात्र से ही कोई भी समझ सकता है। पुनरपि यदि कोई पाठक स्वयं इस तथ्य की परीक्षा करना चाहता है, तो वह अपने दिवंगत किसी सम्बन्धी या अन्य किसी परिचित व्यक्ति की जन्मकालिक ग्रहस्थित्यादि के अनुसार उसकी जीवनावधि का इन विभिन्न आयु–साधन–प्रकारों से परीक्षण कर सकता है। उसे इनसे प्राप्त परिणामों में आश्चर्यजनक विभिन्नताएं नजर आएंगी। जातक के आयुपरिमाण को जानना देवताओं के भी वश की बात नहीं,– यह विचार आयुसाधनार्थ प्रयत्नशील दैवज्ञों ने स्वयं भी व्यक्त किए हैं, पराशर का यह वाक्य देखें– **"कथयाम्यायुषो ज्ञानं दुर्ज्ञेयं यत्सुरैरपि।"**

ध्यान दें– इन विगत दो वर्षों में मैंने 'आयुसाधन' के ये जो चार (जैमिनि, सत्याचार्य, मय एवं केशव द्वारा प्रतिपादित) प्रकार बतलाए हैं, इनसे अतिरिक्त भी बीसों अन्य आयुसाधन के गणितीय प्रकार फलित–ग्रन्थों में बिखरे पड़े है, वे भी इसी तरह परस्पर विरोधी परिणाम ही देते हैं। आश्चर्य की बात है, शताब्दियों से चली आ रही इन प्रक्रियाओं में से किसी एक को भी प्रामाणिकता का प्रमाणपत्र किसी आचार्य ने कभी नहीं दिया। इसीलिए दैवज्ञों की भविष्यवाणियों के सफल–विफल चक्र–जाल में फलित–श्रद्धालु लोग शताब्दियों से बुरी तरह फंसे हुए चले आ रहे हैं।

आयु–साधन की इन गणितीय प्रक्रियाओं के अतिरिक्त भी अन्य असंख्य विधाएं ज्योतिष–शाखाओं में उपलब्ध हैं, जिनमें मुहूर्त, जातक, ताजिक, संहिता एवं पराशर–कृतियां प्रमुख हैं। इन फलित-शाखाओं में जो जातक की आयु पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालने वाले योगायोग हैं, उनका भी यदि आयुर्दाय–निर्णय में विचार किया जाए तो यह विषय परस्पर विरोधी निर्णय–जाल में और भी बुरी तरह उलझ जाता है;– यह सभी विज्ञ दैवज्ञ जानते हैं। **'लघुपाराशरी'** कार ने मारकत्व की जो परिभाषा एवं व्याख्या 'मारकाध्याय' में की है, वह इतनी विराट्‌रूप में व्यापक है, उसके अनुसार जातक के जीवन का शायद ही कोई भाग मारकदशा–साम्राज्य से अस्पृष्ट रहता हो। तदनुसार वह किसी भी समय दिवंगत हो सकता है। जातक की जन्मकुण्डली में एक वर्ष की आयु से 120 वर्ष तक की आयु के योगायोगों का निर्देश करने वाली ग्रहस्थितियां लगभग प्रत्येक जातक–ग्रन्थ में ठूंस–ठूंस कर भर दी गई हैं। यदि उन ग्रहस्थितियों की जैमिनि, सत्याचार्य, मय, मणित्थ, केशव एवं श्रीपति आदि द्वारा निर्दिष्ट किसी भी गणित–प्रक्रिया द्वारा परीक्षा की जाए, तो कोई दिव्य चमत्कार ही होगा, जिसके कारण उनमें से कोई एक योग भी उनके अनुरूप परिणाम दिखा सके।

सारांश यह है;– जातक की आयु की अवधि, मृत्यु का समय एवं कारण आदि बतलाने वाले मुहूर्त, संहिता एवं जातक आदि ग्रन्थों में दिए गए निरवशेष योगायोग आदि पदे-पदे व्यभिचरणशील हैं। इनकी सत्यता आकस्मिक है, अतः इन्हें दिव्यद्रष्टा ऋषि–मुनियों के चिन्तन का परिणाम समझकर प्रामाणिक एवं विश्वसनीय मान बैठना बुद्धिमत्ता नहीं।

अन्त मे कल्याणवर्मा द्वारा 'सारावली' में निर्दिष्ट इस वाक्य की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करता हूँ जो जातक की जन्मकालिक ग्रहों की उच्चादि में स्थिति आदि को नहीं, अपितु उसके सद्वृत्त, पथ्याशन, जितेन्द्रियता व सुशील को दीर्घायु का निर्णायक बतलाता है–

"पथ्याशिनां शीलवतां नराणां सदवृत्तभाजां विजितेन्द्रियाणाम्।
एवं - विधानामिदमायुरत्र चिन्त्यं सदा वृद्धमुनि–प्रणीतम्।।"

इसके साथ ही सन्तकवि श्रीतुलसीदास के इस उपदेश–वाक्य को भी उन्हें हृदयंगम कर लेना चाहिए, जो हमे समझाता है कि जीवन–मरण विधिज्ञ (दैवज्ञ) के हाथ नहीं, विधि (विधाता) के हाथ है–

"लाभ–हानि, जीवन–मरण, जस–अपजस विधि-हाथ"।

....

पृष्ठ संख्या 271
चिरस्थायी बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

व्रतपर्व–विवेक

साईज़-24x18¼ C.M.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

[व्रतपर्वों की तिथियों (तारीखों) के निर्णायक नियमों पर सरल–सुबोध भाषा–शैली में लिखा एक प्रामाणिक अपूर्व प्रकाशन]

[सन् 2001 से 2050 ई. तक के रामनवमी, दशहरा, दीपावली आदि सभी हिन्दु व्रतपर्वों की तारीखों की तैयार लम्बी सूची।]

इस पुस्तक में हिन्दुओं के चैत्र आदि 12 मासों के व्रतपर्वों के निर्णय का विशद् विवेचन, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु आदि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के प्रमाण–वाक्यों के आधार पर ऐसी सरल भाषा–शैली में किया गया है कि– हिन्दी जानने वाला कोई भी इसे पढ़कर, रामनवमी आदि किसी भी व्रतपर्व की तारीख का निर्णय आसानी से कर सकता है। विभिन्न पंचांगों में किसी व्रतपर्व की तारीख के बारे में मतभेद होने पर इस पुस्तक में दिए गए नियमों के अनुसार यह निर्णय आप अधिकारपूर्वक कर सकते हैं कि– किस पंचांग की तारीख शुद्ध है।

व्रतपर्वों की तारीख का निर्णय पञ्चांङ्गकार किन नियमों के आधार पर करते हैं– यह सब शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विस्तारपूर्वक हिन्दी में समझाया गया है। व्रतपर्वों के निर्णायक धर्मशास्त्रीय सैकड़ों संस्कृतवाक्य, श्लोक हिन्दी–अनुवादसहित उद्धृत किए गए हैं। प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, प्रदोष, अरुणोदय, निशीथ, पूर्वविद्धा–परविद्धा तिथि आदि सभी पारिभाषिक कठिन शब्दों की (जिनका प्रयोग व्रतपर्व–निर्णय के प्रसंग में बार–बार आता है) सुस्पष्ट व्याख्या की गई है और इन्हें जानने की गणितप्रक्रिया से मुक्ति दिलाने वाले अनेक कोष्ठक आपको यहां मिलेंगे।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्वपूर्ण विषयों में से कुछेक की ओर हम पाठकों का ध्यान यहां आकृष्ट करते हैं:–

(i) हिन्दु व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों–सिद्धान्तों की सरल व्याख्या दी गई है।

(ii) हिन्दु व्रतपर्वों में यदा–कदा पैदा होने वाले मतभेद के कारण और उनके प्रतिकार बतलाए गए हैं।

(iii) चैत्रादि 12 चान्द्रमासों के 24 पक्षों में मनाए जाने वाले नवरात्रारम्भ, श्रीरामनवमी, अक्षयतृतीया, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्राद्धारम्भ–समाप्ति, दीपावली आदि सभी व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों का विस्तृत विवेचन तथा धर्मशास्त्रों के सभी अपेक्षित व्रतपर्वनिर्धारक संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को उद्धृत कर, इन व्रतपर्वों की तिथि (तारीख) का निर्धारण–प्रकार सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

(iv) किस व्रतपर्व के मनाने का शास्त्रीय–विधान क्या है ? व्रतदिन की चर्या कैसी हो ? व्रतदिन में पूजा–पाठ कैसे किया जाए ? व्रतदेवता की पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजा कैसे, किस मन्त्र से, किन उपकरणों (सामग्री) से की जाए, व्रत में देवता का ध्यानमन्त्र क्या है ? व्रत मे क्या खाएं, क्या न खाएं ? व्रती के लिए क्या विधि–निषेध है ? व्रतपारणा (व्रत के अन्त में किए जाने वाले भोजन) का समय क्या है ? पारणा में कौन–कौन से पदार्थ भक्ष्य और कौन से वर्ज्य हैं ? सूतक–पातक में व्रत कैसे किया जाए ? रजस्वला स्त्री व्रत के दिन क्या करे ? व्रतभंग होने पर क्या प्रायश्चित्त है ? सूर्य–चन्द्रग्रहण के समय स्नान–दान–जपादि का क्या विधान है ? – इत्यादि पचासों ज्ञातव्य विषयों पर सप्रमाण पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

(v) आधुनिक युग के व्यस्त जीवन को दृष्टि में रखते हुए व्रतदेवता की पूजादि का सारगर्भ संक्षिप्त विधान दिया गया है, जिसे 10–15 मिनटों में ही कोई भी व्यक्ति स्वयं कर्मकाण्डी विद्वान् की सहायता के बिना ही कर सकता है। नवरात्र–घटस्थापन, रामनवमी–पूजा, श्राद्ध–तर्पण, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजनादि सभी व्रतपर्वसम्बन्धी अनुष्ठानों को आप स्वयं कर सकें– ऐसी बालबोध शैली में समझाया गया है। लगभग सभी व्रतदेवताओं के संस्कृत–स्तोत्र भी दिए गए हैं।

(vi) करवाचौथ आदि व्रतपर्वों के उद्यापन की सरल प्रक्रिया बिना किसी विशेषज्ञ की मदद के कोई भी गृहिणी स्वयं कर सके–ऐसा सरल विधानसहित निर्देश है।

(vii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के नवरात्रारम्भ, प्रदोषव्रत, एकादशीव्रत, दशहरा, दीपावली आदि लगभग सभी हिन्दु–व्रतपर्वों की अंग्रेजी तारीखों की लम्बी सूची दी गई है।

(viii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक, उज्जैन के कुम्भपर्वों की तारीखें।

(ix) सन् 2001 से 2050 ई. तक के गुरु–शुक्रास्तकाल, गजच्छाया, अर्धोदय आदि पर्व।

(x) सन् 2001 से 2050 ई. तक के प्रमुख–प्रमुख जैन–पर्वों की तारीखें।

(xi) सन् 2001 से 2050 ई. तक के चैत्रादि मासों के चन्द्रदर्शन की तारीखें, तदनुसार मुहर्रम आदि मुस्लिम मासों की प्रारम्भ–तारीखें एवम् मुहर्रम, ईद–उल–फित्र आदि मुस्लिम त्योहारों की तारीखों का ज्ञानप्रकार।

(xii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सिक्ख–गुरुपर्वों की तारीखें।

(xiii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के ईस्टर सण्डे, गुडफ्राईडे की तारीखें और तदनुसार अन्य क्रिश्चियन पर्वों की तारीखों का तुरन्त निर्णय करने वाली अद्भुत तालिका।

(xiv) सभी प्रमुख व्रतों की माहात्म्य कथाएं।

(xv) सभी प्रमुख व्रतों के देवी–देवताओ की आरतियां एवं स्तोत्र।

इन उपरोक्त विषयों के अलावा व्रतपर्वों से सम्बद्ध अन्य बीसों विषय आपको इस पुस्तक में मिलेंगे। इसे खरीद लीजिए। बस, आगामी 43 वर्षों तक (सन् 2050 ई. तक) व्रतपर्वों की तारीखें जानने के लिए पंचांग, डायरी या कैलेण्डर खरीदने की आपको ज़रुरत नहीं होगी।

मूल्य Rs. 525/– + Rs. 50/– डाकव्यय

हमारी पुस्तकें केवल "अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59/6, पंचकूला से ही मिलेंगी। इन्हें बेचने का अधिकार अन्य किसी भी बुक्सेलर को नहीं दिया गया है।

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

पृष्ठ संख्या 272 साईज़ 24 X 18 सें. मी. उत्कृष्ट बहुमूल्य पेपर पर मुद्रित आकर्षक बहुरंगा आवरण

ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

[मेलापकसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला अद्वितीय प्रकाशन]

[दूसरा संस्करण]

विवाह–सम्बन्ध के निर्णय के लिए वर और कन्या के अष्टकूटों के गुणों की गणना और उनकी कुण्डलियों के मिलान पर आज तक कोई प्रमाणिक पुस्तक नहीं लिखी गई है। " ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन " पुस्तक इस अभाव की शतप्रतिशत पूर्ति करती है। यह पुस्तक छः अध्यायों में विभाजित है– **प्रथम अध्याय** में अष्टकूट का सांगोपांग विस्तृत विवेचन, **द्वितीय अध्याय** में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, **तृतीय अध्याय** में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है। **चतुर्थ अध्याय** में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश तथा ऐसे अनेक मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से सन् 1971 ई. से 2000 ई. तक (30 वर्षों में) पैदा हुए वर–कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली बिना पुराने पंचांगों की सहायता के 10–15 मिनटों में ही जानकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। **पंचम और छठे अध्याय** मे फलित एवं सिद्धान्त ज्योतिषसम्बन्धी शोधपूर्ण ज्ञानवर्धक ग्यारह (11) मौलिक निबन्ध दिए गए हैं, जो ज्योतिष के चौंका देने वाले अज्ञात रहस्य उद्घाटित करते हैं।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से इन कुछेक विषयों पर दृष्टिपात कीजिए:-

(1) वर-कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी36 बड़े पृष्ठों पर फैली है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त देखे जा सकते हैं। इस प्रकार की परमोपयोगी विलक्षण महान् मिलानसारणी का निर्माण सचमुच एक अपूर्व ऐतिहासिक प्रयास है। नितान्त श्रमसाध्य इस विशाल सारणी के निर्माण के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया है। इस मिलानसारणी के अलावा दो और भिन्न प्रकार की मिलानसारणियां भी इस पुस्तक में दी गई हैं।

(2) वर्ण, गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक परिहारवाक्यों का सोपपात्तिक सप्रमाण विवेचन तथा उनका तार्किक विश्लेषण एवं **"नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्"** और **" एक नक्षत्रजातानां नाड़ीदोषो न विद्यते"** आदि बीसों निराधार परिहारवाक्यों का सप्रमाण निराकरण किया गया है।

(3) मंगलदोष के बारे में प्रचलित **"द्वितीये भौमदोषस्तु युग्म-कन्यकयोर्विना"** और **"गुरु-मंगल संयोगे भौमदोषो न विद्यते"** - आदि अनेक परिहारवाक्यों की प्रामाणिकता पर विस्तृत सप्रपञ्च विचार-विमर्श एवं इन परिहार-वाक्यों का विश्लेषण-पूर्वक सप्रमाण खण्डन-मण्डन किया गया है।

(4) कुज (मंगल) दोष की मात्रा का सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ निर्णय दैवज्ञों की भारी समस्या है। इसके लिए इस पुस्तक में सात 'कुजदोष कोष्ठक' दिए गए हैं, जिनकी सहायता से जोड़-घटावमात्र जानने वाला कोई भी दैवज्ञ मौखिक गणित द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिकमान (Numerical Values) 20-25 मिनटों में ही सरलतापूर्वक ज्ञात कर सकता है और उनकी तुलना द्वारा वह वर-कन्या के विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का निर्णय प्रामाणिक रूप में कर सकता है। कुजदोषमात्रा का आंकिक मान ज्ञात करने की प्रक्रिया को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है।

(5) मिलान में उपयोगी अन्य बीसों मौलिक सारणियां दी गई हैं, जो लेखक के विस्तृत, गम्भीर अध्ययन एवं अथक परिश्रम का परिणाम हैं।

(6) मिलान पर मिलने वाले विभिन्न मत–मतान्तरों का विश्लेषण विस्तारपूर्वक किया गया है। प्रतिपाद्य विषयों के खण्डन–मण्डन के समर्थन में लगभग 90 मूल ग्रन्थों (संहिता, होरा, मुहूर्त्त आदि) से सैकड़ों प्रमाणवाक्य (श्लोक) पदे–पदे उद्धृत किए गए हैं।

इसके अलावा इस पुस्तक में अनेक ऐसे विषय आपको मिलेंगे, जो गुणमिलान और कुण्डलीमिलान पर आपकी विशेष ज्ञानवृद्धि करेंगे। " नाड़ीदोष होने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है", " वर–कन्या की कुण्डलियों का मिलान न होने पर भी सम्बन्ध करने का ज्योतिषशास्त्र में निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान क्या है?" – इस प्रकार की अनेक मिलान–सम्बन्धी समस्याओं का शास्त्रप्रतिपादित समाधान विस्तारपूर्वक इस पुस्तक मे सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है। विषकन्या योग और मंगलीक दोष के उद्गम तथा विकास पर विशेष ऐतिहासिक विवेचन दिया गया है।

यह पुस्तक आपको वह सब कुछ बतलाएगी, जो मिलान के लिए अपेक्षित है। इसे पढ़कर आपको आश्चर्य होगा कि– मिलान में अनेक मूर्धन्य दैवज्ञ भी कितनी अक्षम्य त्रुटियां करते हैं और इस विषय में उनका ज्ञान कितना अधूरा है।

मूल्य Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–

पुस्तक मिलने का पताः– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172.2565 303